॥ आयुर्वेद प्रादुर्भाव ॥

श्रीप्रभु परममंगल परमपुरुप श्रीऋषभ देवभगवांन पहलीसम्यक्त पायके १३ भव किया जिसमें नवमें भवमें प्रभु ज़ीवानंदनामके सर्वविद्यासंपन्न वैद्य भये फेर तीर्थंकर नांम पुण्य पैदाकर सर्वार्थ सिद्ध विमान १२ में भवमें गये उहां निर्मल तीन ज्ञानयुक्त मरु-देवीराणीनाभराजाके पुत्रपणे युग ईश्वर १३ में भवमें भये सर्व संसारधर्म चलाया आगे लोकोंकों रोगाग्रसित जाण ऋषभसंहिता या ब्रह्मसंहिता नांम आयुर्वेद तीनकाल भूत १ भविष्यद् २ वर्त्तमान ३ विधियुक्त मनुष्योंके हितार्थ रचनाकी अष्टांगोपांग समेत पूर्वकृत अभ्यास औरमति १ श्रुति २ अवधि ३ इस तीनज्ञानके निर्मल बलसें धनंजय कोपमें ऋषभदेवका नाम ब्रह्मालिखा है, समवसरणमें चार मुखसे देशना देणेसे फेर जंगलमेंसें अनेक औषधी और पृथ्वीगत धातु उपधातु वगेरे रस रसायणरूप रोग दूर करणेकों अनेक युक्तियां निकाली फेर अपणे संतानोंकों यह विद्या सीखाकर परंपरा चढाई जिसमे आत्रेयने ये विद्या पूर्ण सीखी दिनपर दिन रसायणविद्याकी उन्नतीकी ध्वजा फरकणेलगी नई २ बुद्धिकी खोज निकासने लगे तद पीछे स्वामी इस प्रजाके सुख-जीवनके लिये तयांसी पूर्व लाखवर्ष राज्यंपाला पीछे अयोध्यामें राजा भरतचक्रवर्त्ती भये राजा भरतकूं इंद्र भी लोकीकशास्त्रवालोंने लिखा है, राजा भरतने ही वेद बनाकर ब्राह्मणोकों पढाया या राजाभरतने ही ब्राह्मण वंशकी स्थापना करी तद पीछे वैद्यकविद्या वो ब्राह्मणोंनें सीखी ओर रोगीयोंका रोग मिटाने लगे एसें असंख्य वर्षतक चलते रहा बाद इहां भरतवर्षमें मांस खाणा मदिरा पीने आदिकी कर्त्तव्यताचली ब्राह्मणलोक भी केइयक इसही प्रवृत्तिमें लगकर तरे २ के आसवोंके और तरे २ के मांसके गुण ओगुण प्रकास करनेकी खोजमें रहकर नये २ ग्रंथ अपणे २ नांमोंसें रचकर उसमें आसुरी चिकित्साभी लिखी तबसें चिकित्साके तीन अंग होगये दैवी १ मानुषी २ ओर आसुरी ३ दैवी चिकित्सामें धातु उपधातु रत्न उपरत्नोंका सोधन मारण और परीक्षाकर रोगींपर अनुपानोंसे चावल रत्ती अधरत्ती देकर बडे भयंकर रोगोंको खोदेणा देवता जैसी कुदरत रखनेवाली दवासो दैवी कहलाती है, सो रसायण रसमात्रा १ (२ रसायणं यथा प्रोक्तं जराव्याधिविनाशकं) रसायण उसीका नांम है, जो बुढापा ओर रोगोको मिटावे अच्छी रीतीकी बनी धातुवगेरे रसायण धीरे २ पथ्यमें रहनेसें देरसें फायदा देती है, कच्ची फुंकी भई धातु एकवेर मुंख तुरत खोल देती और रमनक दिखाती है, लेकिन् पीछेसें उसका फल बुरा है, केइक मूर्खों एसा कहते हैं जईसरचीसें फुंकी जाय धातु सो अच्छी धातुसे या उपधातुमें फुंके सो अछी नही यह बात वे समझाते है, परमात्मा ऋषभ देवादिकोंसें कोइ वस्तु छिपी नही थी उन सर्वज्ञ ऋषिने एसी विधि दर्शाकरके लिखी है, सो कोइ भी समय कालकमें लेकर सुहनक कभी नुकसान नही करे जिस २ प्रका-

रसें धातु उपधातुओंको जडीपत्तीसें या धातु उपधातुमें फूंकणी बनाई है, सो ही प्रकार अमृतरूप है, विनासास्त्र मूर्लके कहणेसें या अणपढ जोगी फकीरोंकी फूंकी दवाका विश्वास कभी नहीं करना इस वैधक विद्यामें गुरुउपदेश और प्रमाणीकशास्त्र और अनुभवीक्रिया कुशलताही प्रमांण है, १ दूसरी जडीपत्तीसें बने जो दवा सोमानुषी इलाज कहलाता है चीरणा दाग गुलदेणा वगेरे २ तीसरा जलचर थलचर खचर इन प्रानीयोंके अंगोपांगकी बणी दवा मद्य प्रमुख यह सब आसुरी चिकित्सा है, ३ यह तीनो संसारमें प्रचलित है, रोगीकूं रोग मुजब पथ्य जरूर करणा पथ्य करनेसे, बिना दवा भी रोग जाता है, विना पथ्य कितनाही इलाजकरनेसें भी रोग नहींजाता, हांवा जे बखत कुपथ्य करते भी रोग चलाजाता है, सो हजारोंमें एकका, उसमें जो कारण है, सो हम आगे लिखेंगे, जहां चेतनशक्ति बलवान होती है, और वेदनी कर्मके परमाणु कम जोर होजाते हैं, तहां यह स्वरूप बणता है, बाकी तो अग्नीमें हाथ देणेसें जलहीगा इस तरे कुपथ्य समझणा (प्रश्न) डाकदरी दवामें परहेज नहीं सो क्याकारण उत्तर पथ्य जरूर है, नहीं कोण कहता है, उन लोकोंका भावार्थ एसा है, सो तुम समझते नहीं जो हमेसा खाणेकी जिसकी खुराक है, वह नुकसान कम करती है, और करती भी है, इसमें बुद्धिका कांम है, जिसकों जो चीज खाणेसें रोग भया है, अगर वह रोगी वही चीज खाते जायगा और दवाभी खायगा देखलेणा फायदेके बदले नुकशांन उठायगा चेतनशक्ति प्रबल होणेपर बिनादवा भी रोग जायगा युरुपीयनदवा अत्यंत शीतदेशीयोंके वास्ते और करडेमेदेवालोके वास्ते बहोत फायदेबंद है, अपणा देश उष्ण, और नरम वीर्यके मनुष्य है, इसवास्ते दवाका बरताबा देस मुजब ही श्रेष्ठ है, दुसरे आसुरी दवा जिसमें जानवरोंका अंग और मदिरा टिंचर मिली भई दवा धर्मीयोकों विचारणा चाहीये, फेर तो वहबात है, मरता क्या नहीं करता, रुचे सो पचे, सरकारी असपतालोंमें ना वारिसकों धर्मादा गरीबोंके लिये बहोत ही उपगारणी है, डाकदरलोक इल्मचीरणे फाडणेमें पास होते हैं दवा बणानेवाले लंदनमें दुसरे व्यापारी है, जगन्नाथ वैद्य प्रागवाला लिखता है, दरसाल बारेकोडरुपये हिंदसे दवाकी विकरीके विलायत जाते हैं, हिंदवाले उद्योगवान होते तो परदेश जाता हुवाधन इहांही नहीं रहता मूर्ख विद्याहीनोंने वैधक विद्याका इतना दरजा घटादिया सो अंग्रेजी पढेभये लोक देशी वैद्योंकों एक जातके पशु समझते हैं, सो सचाही है, प्रजाभी एसी अणपढ है, सो मूर्ख और ... एकसीहीसमझती हैं, मूर्खोंसें इलाज कराते २ असाध्य रोगी होजाते हैं, ... यह भी रुजगार समझ लिया है, सो पचास रोगोंके इलाज लिखकर वैद्य ...ते हैं, इसवास्ते खुसामदीसें बेरबेर उसरोगीके घर जाणा और पेसे टकेकी उंठ... देणा एसोंसें दुनिया बडी राजी रोगी मरे चाहे जिये कारण पढाहुआ वैद्य

मोतव्वर दवाकीलागत और फी लेता वे बखत आताभी नहीं मूर्खोंसे चाहे बिगाडभी होतारहै लेकिन् पैसा नहीं खरच पडे सो अछा मूर्ख वैद्योसें कोइ सहज चेतनशक्तीवाला आरामभी भाग्ययोगसें होजाता है, जेसें अंधा अदमी पथर फेके किसीके न किसीके लगहीजाय लेकिन् निसाणे चोट मारणेवाला कभी नही कहलावेगा एसें समझणा जब एसे मूर्खोंसें अत्यंत बेमारी बढजाती है, तब डाकदर या पंडित वैद्योंके तरफ दोडते हैं, स्यात् कष्टसाध्य होय तो सोमें पचास सुधर भी जाते हैं, असाध्यका इलाज ही क्या है, अगर एसी बेमारीमें वैद्य दवाके दाम मांगे तो केइयक मोतव्वर होकरके भी सुणके सरद होजाते हैं, बाहिरजाके लोकोंसें कहते हैं, हमने तो इनोंमें कुछ नही देखा और बडे लोभी है, इत्यादि मनमानी बातें बणाते हैं, लेकिन् एसे लोकोंको इतनेपर ही विचारलेणा चहिये एक देशीडाकदर आता है, तो दोरुपे फी लेता है, और दवा सरकारी सफाखाणेकी देता है, जोकी सरकारके पैसे कीहै, और एककी च्याररुपे फी है, एककी असरफी भी है, इसका कारण क्या है, असल कारण इसका यही है, जेसा २ इल्म जादातर होगा उसकी फी भी उसी मुजब होगी बलके देशीवैद्योंकों घरकी तो दवादेणा और न किसीका नोकर है, सर्व खरच इसीपर चलाये चाहता है, इतनाभी विचार नहीं करते यह सब मूर्खताइकी अंधाधूंधी मचरही है, इसवास्ते सर्व प्रजाहितकारक जीवन प्राणरक्षक परभव और इस भवका सुधारक यह वैद्यदीपक ग्रंथ मेनें भाषामें बणाकर अज्ञान अंधकार दूर करणेकों मनमंदिरमें यह ग्रंथ दीपकवत उजाला करेगा इसमें जरा संदेह नही जो इस ग्रंथसे वैद्यकीकी आर्जीविका करेगा तो भी सफल होगा और भाग्यवांन ग्रहस्थोकों अपने आत्माकी रक्षा कुटुंबकी रक्षा करणेकों यह ग्रंथ उद्योतकारक है, मुर्ख वैद्योकों पहचाणनेकूं यह ग्रंथ कसोटी है, विना पढे एसा होता है, दुहा। सोना पीतलसारखा पीलेकी परतीत। गुण औगुण जाणे नहीं सबकुं कहे अतीत ॥१॥ सो अंधकार जरूरही मिटजायगा जब पूर्ण वैद्य नहीं मिले तब आप इसग्रंथकूं पूर्ण वैद्य समझकर इसकी दवा लो जो इसके लिखे अनुसार तुमारा रोग असाध्यमालुम देतो कुटुंबका बंदोबस्तकर मोहजाल छोडकर परभव साधो इह परभवकी सिद्धि इस ग्रंथमें है, इसग्रंथमें देशी अजमायस दवा हकीमी डाकदरी होमियापेथिक सब च्यारों इलाजोंका संग्रह है, यद्यपिमें प्राकृत संस्कृत शास्त्रीसिवाय अंग्रेजी नहीं पढाहुं तो भी अंग्रेजी पढे फारसी तेलिंग महाराष्ट्रादि देसवासीयोंकी सोहबत तथा अंग्रेजी दवायोंका शास्त्रोंमें बंगला गुजरातीमें उलथा इत्यादि ग्रंथोंसे वरतावा देखके डाकतरी और होमिया पेथिक दवायें लिखी है, में दक्षण हेद्राबादमें रहकर मुसलमीन हकीमोंमें तजुरबेकी ये नुकसे बहोतही हासिल किये हैं, बाकी वैद्यक शास्त्र जो जो मेने परिश्रमसें पढाहूं सो संक्षेपमें जीवनचरित्र आगे लिखा सो देखो रोगीके आराम होनेमें चिकित्साके चार

पाये हैं, रोगीकी परिक्षाकरणेवाला वैद्य सो साध्य १ कष्टसाध्य २ और असाध्यकुं पहचान करे साधारण रोगमें बडा इलाज नहीं करे कष्टकारी बडे रोगमें छोटा इलाज नहीं करे देसकाल अवस्था रोगका और रोगीका बल पहचान करणेवाला वैद्य प्रथम पाया १ रोगकुं मिटाणेवाली सास्त्रकेलिखे मुजब नई या पुराणी शुद्ध दवा मिलणी दुसरा पाया २ रोगीका टहल बंदगी करणेवाला पथ्य तइयार करणेकी चतुराईवाला वैद्यके वचन मुजब कर्त्ता होणा तीसरा पाया ३ रोगी वैद्यके कहे मुजब खारी कडवी दवा अमृतसमान करके पीवै जो रोगी दवा लेणेकुं इनकार करे सो रोग मिटणा मुसकल है, कहे मुजब ही पथ्यकरे तो निश्चै आराम होय ये चोथा पाया ४ (वैद्य एसा होणा चाहिये) (श्लोक)–तत्वाधिगतशास्त्रार्थो दृष्टकर्मास्स्वयंकृतिः। लघुहस्तः शुचिः शूरः सज्जोपस्कृतभेषजः॥ प्रत्युत्पन्नमतिर्धीमान्व्यवसायी प्रियंवदः। सत्यधर्मपरो यश्च वैद्य ईदृक् प्रशस्यते ॥ २ ॥ (अर्थ)–गुरूसें अछीतरे शास्त्रकुं पढाहुवा होय दूसरे बडे वैद्योकों इलाज करते जिसनें देखा होय और आप रोगकुं पहचानकर चिकत्सा करणेमें चतुर होय और सिद्धहस्त अर्थात् जिस रोगीका इलाजकरे सो जलदी अच्छा होय सरीर मन और वस्त्रोसें पवित्र होय शूरवीर होय अच्छी २ औषधी चंद्रोदय प्रतापलंकेश्वर लक्ष्मीविलास चिंतामणि मृत्युंजय रामबाण सूचीभरण महास्त्रादिक जिसके पास तइयार होय तत्काल जिसकी बुद्धि फिरती होय रोगोंके अनुपानादिकमें बुद्धिमान होय संसारव्यवहारका जाणनेवाला होय प्यारा वचन बोलेणवाला होय सत्य और दयाधर्मका धारणेवाला होय एसा वैद्य लायक तारीफके होता है ॥ २ ॥ (श्लोक)–व्याधेः तत्वपरिज्ञानं वेदनायाश्च निग्रहः। एतद्वैद्यस्य वैद्यत्वं न वैद्यप्रभुरायुषः ॥३॥ (अर्थ)–रोगोंके पहचाणनेका पांच कारण जो निदानादिक उस तत्वका जांणकार होय रोग मिटाणेकी औषधी पथ्य बताणेवाला होय वैद्यकी वैद्यकता इतनेमें हीं है, लेकिन् आयुष्य देणे समर्थ नहीं ॥ ३ ॥ (अथ निषेध वैद्यके लक्षण) (श्लोक)–कुचैलः कर्कशः स्तब्धः कुग्रामी स्वयमागतः। पंच वैद्या न पूज्यन्ते धन्वंतरिसमा अपि ॥ ४ ॥ (अर्थ)–देही और वस्त्रकरके मलीन करडा कठोर वचन बोलणेवाला अभिमानी खोटे गांमका वासिंदा और संसार व्यवहारका नहीं जाणनेवाला विगर बुलाये चला आवे ये पांच वैद्य धन्वंतर जेसा भी होय तो भी पूजणेलायक नहीं॥४॥ (अथ रोगीके लक्षण) (श्लोक)–आयुष्मान् सत्ववान्साध्यो द्रव्यवानात्मवानपि। उच्यते व्याधितः पादो वैद्यवाक्यकृदास्तिकः ॥ ५ ॥ (अर्थ)–आयुवाला होय बलयुक्त साध्य द्रव्यवान् होय ज्ञानी वैद्यका आज्ञाकारी और आस्तिक अर्थात् वैद्यपर श्रद्धा रखणेवाला होणा ॥ ५ ॥ (उत्तम औषधीका लक्षण) (श्लोक)–प्रशस्तदेशसंभूतं प्रशस्तेहनि चोद्धृतं। अल्पमात्रं महागुणं गंधवर्णरसान्वितम् ॥ ६ ॥ (अर्थ)–उत्तम जगेमें पैदा भई होय और शुभ- [illegible] निकाली होय थोडी भी देणेसे गुण बहोतकरे दुर्गंधरहित देखणेमें अच्छी रसयुक्त

एसी औषध उत्तम है ॥ ६ ॥ (खराब औषधीके लक्षण) (श्लोक)–वल्मीककुत्सितानूपस्मशानोखरमार्गजाः । जंतुवन्हिहिमव्याप्ता नोषध्यः कार्यसाधकाः ॥ ७ ॥ (अर्थ)–इतनीं जगेकी औषधी रोग मिटाणीवाली नहीं होती सांपके वंबीकी खोटी जमीनकी जलके पासकी श्मसाणकी ऊखरकी जहां चूना निकलता होय उस जमीनकी और रस्तेकी कीडोंकी खाई भई अग्निसें जलीभई जाडेकी जलीभई एसी दवा रोगोंकों नहीं मिटासकती ॥ ७ ॥ (श्लोक)–स्निग्धोऽजुगुप्सुर्वलवान्युक्तो व्याधितरक्षणे । वैद्यवाक्यकृदश्रांतः पादः परिचरः स्मृतः ॥ ८ ॥ (अर्थ)– दूतके लक्षण) नवी अवस्थाका ताकतवर रोगीकी रक्षाकरणेमें तत्पर वैद्यके हुकमका करणेवाला आलसरहित एसा टहल वंदगी करणेवाला परिचारक दूत होणा ये च्यार पाये विना रोगीकी लंबी ऊमर-विना नहीं मिलते संसारमें सर्व इल्म सीखणा फायदेवंद है, जिसमें भी दोयसें तो जरूर वाकव होणा चहिये प्रथम तो तन दुरस्तीका इल्म सोशास्त्रोंमें लिखाभी है, (श्लोक) धर्मार्थकाममोक्षाणां शरीरं साधनंयतः । अतो सम्यक्तनुं रक्षेन्नरकर्मविपाकवित् ॥ ९ ॥ (अर्थ)–धर्म १ धन २ काम ३ और मोक्ष ४ ये च्यारोंका साधन शरीरसें होता है, इसवास्ते कर्मोके फल जाणनेवाले पुरुषोंनें रोगोंसें शरीरकूं हमेसां वचाणा यह श्लोक सारंगधर संहिताका है, वाद सरकारी कायदेसें जरूर वाकव होणा नहीं तो तन मन धन तीनोंकों तकलीफ पोहचती है, यद्यपि सर्वज्ञका धर्म पूरा जांणके शक्ति मुजव और समय मुजव चलणेवाला इस शरीरका सुख और सरकारके कायदोंकी पाया वंधीवाला ही होता है, तोभी विशेषज्ञान करणेकों वैद्यदीपक ग्रंथकूं परमें जरूरही रखना शरीरका साधन है, और कायदेकुं समझणेवास्ते ताजी रायत हिंन्द समझणा जरूर है, इसग्रंथमें एसी दवायोंका संग्रह है, सो सबसें वणसके इसीवास्ते ही डाकटरी और होमिया पैथिक इलाज भी लिखा है, यह दवायां बहोत जगे मोल विकती है, जो नियम रखते हैं, उनोकेवास्ते शुद्ध देशी इलाज लिखा है, मेरे इसग्रंथके जाहिरकरणेका यही मतलब है, के शरीर तो नासमान है, जो कुछ अजमायसी कांम और इलाज है, उसकूं जगतमें जाहिरकर देणा इल्म लेकर वांटणा यही कल्याण है, छिरा २ के रख-णेपर आर्योंकी यह दशा होगई ये वात नापसंद है, धन्य है, सरकार अंग्रेजका राज्य जिशमें इल्म सिखाणेकूं जगे २ इस्कूल रोगियोंके लिये दवा खाना सडकें दरखत पानीके नल रोसनी चिठी मणियाडरमाल वगेरे घर वेठे पोहचाणेको पोष्ट जो पुस्तक सोरंनमें नहीं लिखाइ जाती सो आज २ च्यार रुपेमें शुद्ध और जिल्दवंधी हमेन लिखे हमीं एसे छापाखाने कहांतक तारीफ लिखें हमारे वडे २ एसेंथे वो वात क्याकरन हमारे आंखें चलता प्रत्यक्ष उपगार सरकार अंग्रेजका हम देखते हैं, इनका राज्य शासन अमर रहे यह हम अंतःकरणसें चाहते हैं, जिसके राज्यमें सिंह और वकरी एक घाटपर पानी

पीरही है, अर्थात् घदमास दुष्टोंको दंड और सज्जनोंका प्रतिपालन होता है, राजधर्म एसाही श्रेयकारी है, किं बहुना.

पुस्तकमिलणेका ठिकाणा बीकानेर राजपूताना बडा उपासरामें उपाध्याय श्रीरामलालजीकी विद्याशालामें ये पुस्तक मिलेगा निछरावल रु ७।) पोष्ट खरच परदेशी ग्राहकोंकुं जुदा पडेगा दसपुस्तक एक संग लेणेवालेकूं रु. १०) सइकडे कमीशन मिलेगा.

हमारे इहां इतनी पुस्तकें छपीभयी तइयार है.

करुणावत्तीसी दादा गुरुदेव गायनपूजा.	।)
श्लोकचाणक्य स्वरोदय शकुनावली भाषा.	।।।)
सिद्धमूर्त्तिविवेकविलास मूर्त्तिमंडणका अद्भुत ग्रंथ.	।।)
खरतरगच्छतप गच्छ ३७ पूजा गायनविधि स्तवनों समेत.	३)
श्रावग व्यवहार चतुराईका चमत्कार अनेक दृष्टांत.	१।)
रत्नसमुच्चय जैनीयोंका सर्व धर्मकर्त्तव्य रत्नसागरसें दोयसे वस्तु ज्यादा.	५।)
वैद्यदीपक भाग पहिला.	रु. ७)
भाग दुसरा छपेगा.	रु. ३।।)

रोग नहीं होणेके सामान्यकारण फागुण चेतके महीनेमें गुड नहीं खाणा आसोज कातीमें बहोत नहीं खाणा पोसके महीनेमें भूखा नहीं रहणा तो अदमीके रोग नहीं होता वेशाख जेठके महीने टाल दस महीनेदिनका सोणा नहीं दस्त पेसाबकुं रोकणा नहीं रातकूं जागणा नहीं वसंतऋतू टालके, बहोत जल पीणा नहीं टेमसें ज्यादा या कम गरिष्ट पदार्थ खाणा नहीं असाढ सावण भादवे तीन महीनेमें मैथुन करणा नहीं बरसात बरसतेमें कुपथ्य नहीं, सरदऋतूमें जल ज्यादा पीणा भोजन करके ऊपरसें जल पीणा नहीं बिना मिठे डालाभया गरम किया भया दूध भोजनपर पीणा हाजमा नहीं होय तो सींधानिमक भुनाजीरा डाल छाछ पीणा दूध पीणा नहीं भोजनकर २।। घंटे पहले मैथुन नहीं करणा स्नान नहीं करणा २।। घंटे पहली तेल नहीं मसलाणा पग चंपी नहीं करणा भोजनकर रस्ते चलणा नहीं दोडणा कुस्ती वगेरे २।। घंटेतक करणा नहीं भोजन कियेबाद २ घडीबाद थोडा २ जल पीणा २ बखत हद ४ बखत रातके भोजन करणेसे प्राय हेजा और जलंदर रोग होता है, पांनवीडेमे १३ गुण है, तोभी खूनकी तासीर तथा पित्तरोगीकूं खाणा नहीं पांनवीडेके पहिलेके दो पीक थूक देणा तीसरा गिटणा पांनकी डंडी तोडदेणा पांच घंटे बीतेविगर भोजन करणा नहीं गरमीकी मोसममें ज्यादा मैथुन करणा नहीं भोजन करणेके पहले जल पीणा नहीं भूखा प्यासा रस्ते चलाभया दस्त पेसाबकी संकायुक्त मैथुन करणा नहीं पांव उघराणे फिरणा नहीं सिरपर बोझा उठाणा नहीं उकडू आसन बहोत बैठणा नहीं रातकूं सातघंटेसे ज्यादा नींद

लेणा नहीं च्यार घडीके तडके पीछे मैथुन करणा नहीं तुरतका जमाया दही खाणा नहीं ऋतुधर्म बंध भई वृद्धास्त्रीसें रजश्वलासें रोगीस्त्रीसे चंडालादि अधमजातिसें मैथुन करणा नहीं मैथुनबाद जलपीणा नहीं दूध पीणा पांन बीडी खाणा हवाखाणा शरीर दबाणा गरम सुहावते जलसें स्नान करणा ॥ सूर्यकी धूप ज्यादा लेणी नही ठंडकालमें पीठकी तरफ धूप लेणी अग्नि ठंडकालमे सामनें दूर धरणी जहरी चीजोंका धूंआ लेणा नहीं गांजा सुलफा मदत चंडूल पीणा नहीं अशुद्ध और अग्निमें कची रही धातू उपधातु यानाज वगेरे खाणा नहीं कसके पगडी बांधणी नहीं गरमागरम भोजन करणा नहीं ज्यों वहोत ठंडाभी खाणा नहीं विनाकारण क्रोध और अहंकार करणा नहीं उचित समय चूकणा नहीं, विश्वास प्रतीती होय तोही करणा असलसेखता नहीं कमसलसें नफा नहीं। नीमें हकीम खतरे ज्यांन नीमें मुला खतरे इमान १ अर्थात् हकीम और उपदेशक ये दोनों पूरे पंडितहीकी दवा और उपदेश कबूल करणा गलीमें २ दवा फूंकी धातु वेचे उनोंसें लेणी नहीं लेणी तो जो वो दवा अछी तरे फूंक जाणता होय उसकी आज्ञासें लेणी विना जाणी कोइभी चीज मूंमें डालणी नहीं राजका महसूल चोरणा नहीं विना-कारण जीवदया टाल झूट बोलणा नहीं चोरी छोटी या वडी करणी नहीं औरतोंकीमें फिलमें रातदिन बैठणा नहीं काम व्यवहार विचारके करणा वडे २ भाग्यवांन पंडि-तोंकी और संकटमें सहाय करे एसोंसें दोस्ती करणी अणजाणे जलमें घुसणा नहीं ठंडे जलसे स्नान कर गरम भोजन करणा नही गरम जलसे स्नान कर ठंडा भोजन करणा नहीं रोगी आदमीके संग भोजन करणा नहीं उसके विछाणे सोणा नहीं धूपमें फिर कर गरम शरीरसें जल पीणा नहीं स्नान करणा नहीं जहरी जांनवर तथा दुष्ट पाडोसी होय तो निशंक सोणा नहीं लड्डु वगेरे खानपान रंग पदले दुरगंध आवे मुदत वीते वाद खाणा नहीं पत्तोंका साग जादा मिरच मसाला खटाइ हींग तेल गुल खाणा नहीं रोगके मुजब पथ्य करणा यथाशक्ति दांन ग्यान हमेसां सीखणा या सुणना इल्मकी और सत्य बोलणेवालेकी कदर देव गुरुका दरसण कर स्तवना करणी इनवातोंसे दीर्घायु और रोग नहीं आता इति ॥

(प्रश्न) आप यह अपूर्व वैद्यक ग्रंथकेसें अभ्यास किया क्योंके मारवाडमें इन दिनोंमें रस विद्याका प्रचार वैद्योमें नहीं देखनेमें आता है और जो कुछ रसकपूर हिंगूल पारा वगेरेकी असुद्ध दवाका धूंआ पीणा वफारा मूंआणा इत्यादिक सुजाक गरमी गंठिया भगंदर कीडी नगरा आदि रोगोंमें देते हैं उसमें कितने एक रोगी एक वेर आराम हो जाते हैं फेर अनेक नासूर कोट रगतपित्त गंठीया वाल्वा गलणा स्वरभंग शरीरपर पकचे देह भयानक रूप सोजा आदि अनेक रोगोंकों भोगने मरणांत कष्ट पाते हैं फेर चतुर वैद्योंमेंभी एकाएक नहीं सुधरते इसवास्ते हमारे मारवाडी अज्ञानी वैद्यक विनाही

ग पूंछके एसा कहते हैं की धातू सर्वथा नहीं लेणी इहांतक रसोंका विश्वास जाता रहा और आपने वडे२ भयंकर रोग मिटाये सो इसधातुहीकी दवायोंसें वारा वर्षसें हम देख रहे हैं आपके रसोंसें विगाड आजतक किसीका नहीं देखा यहभी आपके अनुभवका विज्ञान अधिक देखा सो रोगी जो असाध्य होय तो उसका नहीं सुधरणा जो आप फुरमाते हो वो सइकडों जगे हमने पतवाणा है फेर किसी वैद्योंसे हमने सुधारता नहीं देखा नही सुणा है इस वैद्यविद्याकी आपके इलाजोंकी प्रसंसा हमने वहोत२ ब्राह्मणोंसें जेनीयोंसें अनेक दिसावरोंके अच्छे२ पंडितोसें सुणी है हम तो आपके कृपाभिलाषी विद्यार्थी शिष्य हैं तारीफ लिखे जितनी लिख सकते हैं लेकिन् हाथ कंगणकों आरसी क्या हजारों वैद्य गणतारोमें आप चंद्र है धर्मके न्याय पक्षमें आप सूर्य है जो किसी समझदारने आपके मुखारविंदकी अनेक नयोंकरके युक्त वाणी और समय२के दृष्टांत सुणा है वो तो धन्यवाद दिये विगर कभी रहा नहीं और रहेगा नहीं और आपकेपास इस वैद्य विद्याकी जिसने संथा ली है वो जगतमें अवस्य मांनने और पूजा प्रतिष्ठाके दरजे पहुंचा है, ओर आपका हृदय इस विद्या दानमें एसा निर्मल कल्पवृक्षकी उपम हें सो अंतःकरणसे आप सिखा देते हैं कपट विलकुल नहीं रखते ईश्वरसे हमारी यही प्रार्थना है आपका यह अमूल्य चिंतामणी रत्नरूप जीवितारोग्य चिरस्थाई रहे जिसमें विद्या भास्करके प्रकाशसें दुष्ट कुमतिरूप अंधकार आर्योंके हृदयसें निकलता जाय किंबहुना कलम पुष्करणा मुहता पं० विष्णुदत्तशर्मा विद्यार्थी शिष्य हाल मु० लातुरका गोंड पं० कमलनयनशर्मा विद्यार्थी शिष्य हाल मुकाम कुरुक्षेत्र का उ० श्रीउदयचंदजीगणिः वीकानेर विद्यार्थी पं० श्रीजीवणमलमुनिः विद्यार्थी मु० वीकानेर श्रीजगन्नाथदाधीचमिश्र शर्मा विद्यार्थी शिष्य मु० वीकानेर से। श्रीनथमल विद्यार्थी मु० कलकत्ता पं० भेरुंलाल आसोपा विद्यार्थी शिष्य दाधीचशर्मा इत्यादि अनेक विद्यार्थीयोंके प्रशंसापत्र शुभं ॥

(उत्तर)—अहो प्रिय पाठकगणो मेरी जन्मभूमि वंगाल देशमें मुख्य राजधानीमें मुरसिदावाद वालूचर जीयागंज है उहां कोटंविक द्विज सारस्वत गोकुलचंद्र मेरे पिताका नाम है. माताका नांम वसंती था जब में सात वर्षका भया तव पिताने वंगला सीखणे विठलाया लेकिन् माष्टरके भयसें फेर सीखणे नहीं गया ये वात इकवीसे सालकी है विक्रमसनाब्द् उगणीसके खेल कुतुहलमें मस्त रहता मेरा पिता नोकरीवास्ते रंगपुर गया पीछेमे २२ का काल पडा मेरी मां कईया साथ असपतोंके इहां कार्य करणे रही में रायवहादुर श्रीलक्ष्मीपतिसिंघजीकी कोठीमें रहता राजा वावू छत्रसिंघजीके पास [illegible]रा मेटमें मग्न रहता उस वखत मुलतानका कोठारी मोतीलाल जो वडी कोठीके [illegible] में गंगाकिनारे रहता था उसने मुझे रेल दिखाणेके वाहने अजीमगंज ले गया [illegible] धन्नु देखे यह वात साल तेईसके पोषकी है मुझे कहा रेल चढेगा मेंने वडे

दर्पसें कहा चढ्ंगा उस दिनोंमें मेरा पिता पांवमें किसी जखमी फोडेसे लाचार होय घालूचर आया था हलचल नहीं सकता था मेरे माइ या बहन नहीं थी एकाएक था उस वणिक धूर्त्तने मुझसें बोला तेरे पिछाडी कोन है मेंनें मावाप बताया तब उसनें सोचा होगा स्यात् सरकारी एलमें पकडा न जाउं तब मुझे पीछा धरमगोदारेमें बिठलाके घालूचर भेज दिया जबसें में मेरी मांसि रेल चढा ये नित हठ किया करता दिन १५ या २० बाद एक दिन सडकपर लाखकी टिप्पी खेलतेकूं पूर्वोक्त धूर्त्तनें मुझे फेर बतलाया मेने कहा रेल चढाओ उसने कहा तेरी मांसे पूछवा दे में उसका हाथ धर घरकी तरफ ले चला वो धूर्त्त मेरे पिताके भयसे घरके पास सडकपर खडा रहकर मेरेकूं बोला तेरी माकूं इहां बुला ला में जबरदस्ती रोकर माकूं बुला लाया मेरा बाप पीडासे विकल था धूर्त्तने कहा में नलहट्टी जाताहुं तुमारा लडका केइ दिनोसें रेल चढणेवास्ते कहता है अगर तुमारी इजाजत हो तो में परसुं पीछा आउंगा सो लेते आउंगा मेरी मांने रहनेका पत्ता उसका पूछा और आज दिनतक किसी साहूकारने उहां एसी कपटता करी नहीं थी भवतव्यता प्रबल दुसरे दिन प्रभातमूं आंधारे रेलपर मुझें लेगया उहां एक बुड्ढेभी टिकटले आवेंठे वो परम पूज्य श्रीसाधूजी महाराज धनरूपजी नांमके यती थे ऊमर उनोकी ६० की थी बस दिल्ली पहुंचे वो धूर्त्त उनोसें खरचा लेकर मुलतान चल धरा हमारे आधार उस परम पुरषका रह गया २३ के फल्गुनमें बीकानेर पहुंचे वडे शांतशील पुरुषोत्तमनें पढाणा सरू किया आखिर हेमकोश तक पढ गया पीछे व्याकरणचंद्रिका डीड वाणेके वासिंदे ओदीच्य ब्राह्मन श्रीरामचंद्रजी पद् शास्त्रीसे डेढ वर्षके करीब पढा कुछ गुचूजी गुसांइसेंभी पढा जब बारे मासी धर्म कर्त्तव्य जीव विचारादि पद् प्रकरण सूत्र पूज्यने पढाये अनुक्रमसें अठाईसकी साल माघवदि तेरसकों पंडित पदकी दिक्षा देकर द्विजन्मा बणाया हमारे पूज्यके वडे दो शिष्य थे पं० श्रीहर्षचंदजीमुनिः पं० करमचंदजीमुनिः वडे शिष्य गुरूसें अलग रहते थे पूज्यने मकसूदाबाद जाते अपणा सर्वस्व द्रव्य वोसिराय छोटे शिष्यके सुप्रत कर दिया था ये पढणेमें लिखणेमें पूठे फांटीये बणाणे कतरणीके कांम कोरणी करणेमें पुस्तककी पटडी गत्ता बणाणेमें अद्वितीय विश्वकर्मा थे गूंथणा रंगणा सीणा और तंत्रविद्यामें वडेही प्रवीण थे उनोंनें केइयक चमत्कारीक तंत्रभी मुझें सिखलाये थे बाद किसी कारण योगसें उनोंका मेरेपर द्वेष पड गया सत्य है क्रोधादिकषाय गुणस्थानक चढते उपशम श्रेणिसें इग्यारमें गुणठाणसें मुनियोकों नीचे गिराता है अज्ञानके वस सब अकृत्यवण आता है, आजकलके मनुष्योंकी तो चकारीही क्या में संगतसे भंग पीणा और मेहका फाटका करणे लगा संगतका असर बुरा है (दुहा) सतसंगसें सुधरे नही, सो मोटा निरभाग, कूसंगसें विगडे नहीं, ताका मोटा भाग १ उनका द्वेषभी मेरे हितके वास्ते भया निर्वाहका

फिकर लगा इसी कारण में लिखणाभी वहोत जलदी सीखा और पुस्तकें लिखणे लगा उस वखत श्रीपूज्यजी हंससूरजी तीसकी सालमें मुझें दफतरीका कायदा वगसा वहोत ग्रंथोके देखणेसें में जोडन कला भाषाकी सामान्य कविताईभी करणे लगा गायन कला भी सीखा पांप्र श्रीमोतीचंद्रजीमुनिः पास सुभाषित और उवाई सूत्रवृत्ति सव सूत्रोंकी माई पढी दफतरके प्रताप ओस वंशकी वंशावली चवदेसे चम्मालीस गोत्रोंकी इतिहास समेत जाणनेमें आई ये प्रताप सव गणेश्वरकी कृपाका था वाद पं० श्रीधनजी जतीके संग मुंवईके आदेशपर गया उहां प्रतिक्रमणविधि मंडल पूजादि विधि सीखणेमें आई ३२का चोमासा मुंवई चिंतामणजीके पाटिये किया उहां सोनाटोलीके धूर्तोंके हाथ सो रुपे ठगाये अक्षर इहांतक जम गया सो अंबालाल गुजराती जैन पांच रुपे हजार श्लोकोंका देणे लगा उहां पूनेका महाराष्ट्र पंडित पट्शास्त्रीसे लालवागमें गीतगोविंदकाव्य श्रीकृष्ण विहारीका तथा वैद्यजीवन लोलिंवराज ये दोय काव्य पढा वखतावर जीमुनि पासपन्नवणा सूत्र पढा उहांसे तेतीसका चोमासा हेदरावादका किया वेगम वजारमें उहां अमलीका कट्ट मिरच हींग खाणेसें उपदंश मालम पडा एक वेकूव वैद्यनें रस कपूर दिया खुराक गोचरीमें पूर्वोक्त सव खाता उसनें मना कुछ नहीं किया सव व्याधीकी जड फिरंगकी गंठिया सांधे पकड गये फेर जिस वैद्योंकों वुलाया वोभी पांच२ चार२ रुपे लेगये और अशुद्ध पारा देणे लगे मसूंडे फूलतेही पारा समझ छोड देता एसे पांच च्यार शठोंसे धोखा पाया मुझकों इस विद्या सीखणेकी वहोत खयास भई उस पीडासें मरणांत कष्ट तक पहुंचा जव फेर चोतीसके कार्त्तिक में मुंवई पहुंचा उहां लूंपक गच्छी श्रीमाणक-चंदजी जतीनें मेरा सव पूर्वावस्था पूछके वमनकी गुटिका देकर क्यालोमेल अंग्रेजी रस कपूर मखनमें चटाया तीसरे दिन मसूडे फूले मंजन कराया फेर मेरी भूख खुली उनोंनें केइयक पात्र जांण सव जैन मंत्र चमत्कारीक तंत्रभी सिखलाया पूत्राम्नायका सव फल तिजयपताका यंत्रभी सिखाया केइ२ औषधी अनुभविक सिखाई फेर मिगसर शुक्लांतमें पूज्य पादके दरशणकुं वीकानेरकुं आया मेरा आणेपर पारखोके खणका पूठिया श्रीजीनें मुझें सुप्रश्न किया इहां उत्तराध्ययन सूत्रका जयघोष विजयघोष ब्राह्मणोंके अध्ययनका व्याख्यान किया महावल मलया सुंदरीकी चतुष्पदी वांची पैतीसकी सालका आदेश श्रीजीके हुकमसें अमरावतीका चातुर्मास किया इहां रूपचंद वालापुरके श्रावकसें झुलाप मदन केइयक अजमायस चुटकले सीखा ये श्रावक फूलचंदजी लोंका गच्छके जतीसें सीखाथा मोमटकी किया वहोतही सवफलदभी मुझें सिखलाई इहां अंवादेवीके मंदिर पास एक दिगंवर अग्रवाल और एक परवाल वणियेकी संगतसें में कुछ २ दिगांवर जैनोंके वातोंमेंभी वाकव भया कर्मयोगसें नायका भेद ग्रंथ सीखणेकी चटपटी एक मैं[illegible] [illegible]टमांनसे मुझें दगी इहां इस कदणा वटकीभी परीक्षा होगई (हुदा) यो खावे

अरुवोडसें, उनका जहरी अंग, इन तीनोंसें वचता रहणा, भोजक भूत भुजंग १ और सेवडेकी जातकूं सिलाम सात कीजीयें इसकी परीक्षा कुछ तौ पहली हेदरावादमें कीथी इहां दृढ विश्वास पाया इहांसें नागपुर गया इहां राजवैद्यके घराणादार केशवचंदजी पंडित जती वडे उदार और दयाल थे हमारी हिफाजत वहोत करी उहां भाव हर्ष गच्छके श्रीपूज्यजी चंद्रसूरजीके संग वडे विद्वान सभा चतुर सुभाषित भंडार श्रीजुहारमलजी पंडितवरनें मुझें जंबूद्वीप पन्नत्ती सूत्र तथा चार प्रकरण जीव विचार नवतत्व दंडक संग्रहणी ये सबोंका अर्थ दोय महीनेमें खूवही सिखा दिया औरभी जैनधर्मकी केइवातें सीखी उहां खरतरगच्छी रायचंदजी जती एक राजवैद्य एक महाराष्ट्र ब्राह्मण एक हकीम मुसलमीनभी नांमी था उनोंकीभी संगत कभी २ होती उहांसे पीछा अमरावती आया वरोडे गया चंदकी चोपइ वांची फेर वेद मुंहता पदमसी नेणसीके मुनीम पूनमचंदजीनें तीन चिठी मुझकूं हेदरावाद कोठीमें वुलाणेकुं दी उहांसे अंतरीकजी पार्श्वनाजीकी यात्रा कर माणपुरके १८ मंदिरोंके दरशण कर हेदरावाद गया उहां मेंनें व्याख्यान सरू कीया निहालचंद पूनमचंदजी गोलछावडा गुणका रागी और उक्त मूनीमजी दोनोंनें वडे अनुरागसें मेरा इल्म वधाणेकूं किसन गढके पारखके मुनीम लोढा जालमचंदजीकों व्याख्यान सुणने वुलाया मेरे विद्यावृद्धिका वखत आया ये श्रावक लूंणीयागजमलजीके पासही छोटेसे वडा अजमेरमें भया था इसने मुझें अनेक जैन शास्त्रोंके रहस्य और वागभट्टादि शास्त्रोंके वैद्यक रहस्य प्रतिवादियोंके कुतर्कका खंडन हकीमी यूनानी नुसके सरवत मुरब्बा चटनी घी तेल प्रमुख वणानेकी क्रिया मुख जवानीसें वताते रहा उस वखत माहाराष्ट्री भाषा संयुक्त तीन भाग निघंट रत्नाकर च्यार लाख श्लोकोंकी एक संहिता मेंनें पाई जिसमें वैद्य वैद्यके चीरणा और गोली शस्त्र निकालणे शस्त्रविद्या टाल और संपूर्ण सातोंइ अंगतीनोंइ चिकित्साथी संस्कृतका बोध था जालमचंदजीकी शिक्षासें इस सातोंइ अंगके अर्थसें सामान्य तौर वाकब हुवा नायका भेद ज्ञातयोवना अज्ञात योवनादि भेदभेदांतर कुछ२ समझणे लगा कविताई वदी तत्वोंका कुछ२ वाकफकार भया पैंतालीस आगमकी पूजा तीसकी सालमें वीकानेरमें वनाई थी इहांपर वीस विहरमानजीकी वणाइ स्तवन छंद लावण्यां वगेरे तो हजोरोंही वनाये लेकिन् कंठाग्र पाठ ज्यादा श्लोक नही थे इधर परम गुरु ४ दिनके अणसणमें वीकानेरमें स्वर्ग पधारे वडा अपसोस उनोके उपगारका आया मेंने उनोंकी चाकरी नहीं वजाई फेर उहां एक पूनमचंद भोजक वडा चमत्कारी तांत्रिक देवी उपासी था उसकूं मेंने वीस चमत्कार सवतांत्रिक दिखलाये इस सीखणेके वदले उसनें दोयमे अजवी तंत्र गुरुकों हस्तामल कराया जबसें मासिक दश रुपया उसकूं में देणे लगा वो वडा मस्त स्वभावी और कुंवारा था उहांसें मेंनें गुलवरगे चोमासा किया उहां मंत्रादि चमत्कारोंमें

जतियोंके नामका डंका वजाया वाद वेगम वजार हेदरावाद इकतालीसमें मकान भाडे लेकर जा रहा वैद्यक परिश्रम करणा सरू किया रातको दो वजेसें ७ वजे तक पढता पांच ग्रंथ मूंकर लिये माधवनिदान योगचिंतामणी सारंगधर वैद्यजीवन और कामिल २ श्लोक निघंट रत्नाकरके खैर इसही अभ्यासमें हमारे श्रीपूज्यजी महाराज चंद्रसूरजी उहां पधारे उनोंकी सरवरावास्ते सेठ संघमुख्य मगनमलजी श्रावकसें मुलाखात भई महाराजकी सरवरा वहोतही करी लेकिन् मेरे पढी विद्याका रमणक और राज्य सभाकी वाकवी और इल्मका तजुरवा इसी पुरुषकी संगतसें वढते चला में इहांतक सरलथाकी धूर्तोंके हाथ हजारों रुपे विश्वाससें दे देकर ठगाये गया व्याजके लालचसें वहोतोनें गिरीवीमें खोटा माल विश्वाससें धर२के ठग लिया मीयां कमावे मुठेर अल्ला ले गया उंठेर वो हाल लातूर पेठ तीन वखत साहूकारोनें इलाजकेवास्ते बुलाया उहां सातोंइ धातू क्रमसें फूंकी विद्यार्थी विष्णुदत्त जव हमारे पासही रहता था अभ्यास करणे हैदराबादमें करीव १० ब्राह्मन आते थे विद्या वहोत पुखत और तरकी परथी रोगोंका इलाजभी होणे लगा जस वढणे लगा वडे२ वैद्य च्यारोंसे मोहवत वंधी संभइया तैलंग ब्राह्मण वैद्य धुरंधर ७० वर्षका सिधू मुनरवाड तैलंग ये डाकटरी और रसक्रियामें वडाही प्रवीण था इसकी संगत और इस रसोंकी नइ२ तरकी वकी हमेस पहर२ भर गोष्टी भया करती रामलालजी पारीक ब्राह्मण थे आत्मारामजी दादू पंथी बूंदीवाला साक्षात दुसरा धन्वंतरी था उसका विद्यार्थी गणेशलालजी जो कोटेमें रहते हैं उनोंकी खरल इनोंने छ वर्ष घोटी थी इनोंसें मेरी घडी प्रीती थी इन तीनोके संग मेरा इलाजोंका रोगीयोंपर केइ वखत काम पडा था चोथा लोका वापू तैलंग ब्राह्मन अनुपानके वदलणेमें और रसोंके वरतणेमें वडा नामी था उसका इलाजभी शिवलाल मोतीलाल पीतीकी वेटीका जापेमें हिस्टिरीया तथा और दोचार जगे इलाज देखणेमें आया संभइयेने केइयक धातु तांवेश्वरकी अभ्रककी सहज तरकीव फूंकणेकी वताइ कची धातू रह जाय उसकी परीक्षा वताई काष्टादिक तथा जहरादिकोंके सोधणेकी तरकीव वताई सेठ श्रीमगनमलजी के इहां दो वखत जीमणा दोनों वखत उनोसें वातचीत हरेक वात धर्म संवंधी वैद्यकके सातों अंगकी भया करती उनोंके सहारेसे नफे नुकसांनकाभी कुछ खयाल भया दोनों भवोंका राजमृगांक पारदभस्म हेमगर्भ पोटलीरसभी इनोंकों मेनें वणाकर दी हेमगर्भ पोटली रस इंकला कचे गांधीनें वणाणी सिखलाई जिससे वुद्धिद्वारा सव पोटलीरस मुझे वनाना आगया चंद्रोदयभी मेनें अपणे हाथसे दो वखत वणा लिया पारेके शुद्ध करणेके अठोंइ संस्कार मेंनें केइ वरान कर टाला इस संस्कार विधिकों संभइया महाराष्ट्र द्रविड विद्वान वपोनें मुझे धनीय२ धन्यवाद दिया साल पेतालीसमें हमारे गुरु [illegible] पधारे उनोंकी सेवा पांचमे रोसें करी तव उनोनें प्रसन्न होकर

रावण पताका सूर्य पताका आदि ३५ यंत्र और जैनाम्नायके रोग मिटाणेके सो मंत्रविधि समेत पतवाणे भये बताये सो सब सत्य फलद थे वो फेर सिद्धगिरी गिरनार यात्रा कर बीकानेर पधारे हमारे शिष्य श्रीमाली ब्राह्मनकूं दीक्षा जा करदी बाद ढूंढक मत परास्त नाटक गुजराती छापेका एक जेठा कच्छी श्रावकने भेट की वंसीधरलालाने अज्ञान तिमर भास्कर और आर्य देशविवस्था भेट की इन तीनोंके पढणेसें वेदशास्त्र व्यवस्था और दयानंदजीका छद्म इत्यादिमें वहोत वाकब हुवा साल छयालीसमें गोविंददास सराव-गीका इलाज करणे मुंबइ गया पीछा जब आया तब आर्यासमाजी याज्ञेश्वरानंदकी सभा भई केइयक ब्राह्मन विद्वान चर्चामें साक्षी थे नियम था ना जबाब होय सो धर्म छोडे तीन दिन बडी चर्चामें खंडन मंडन विषय बहोत चला आखिर सब जुबाबोंकी विजय पाकर श्रीनेमचंदजी जैपुरवालोंके समक्ष १० जती और छया लीसकी आखा तीजकूं शिष्य हमारा जती बणाया सभामें तथा शिष्यने युक्ति वारिधिः पद लिखा मुंबइमें श्रीधर शिवलालसें विक्रियार्थ २५ रुपे सइकडे कमीसनसें व्याकरण काव्य कोश वेदांत न्याय छंद अलंकार नाटक ज्योतिष वैधक भारत वाल्मीक संप्रदायोंके अनेक शास्त्र कमीशन द्वारा बेचणे लगा और बांचते रहता दो वर्षमें अन्य मतांतरीयोंके पौराणादिक अनेक पूर्वोक्त शास्त्रोंके रहस्यका जांणकार होगया लक्ष्मणभट्टकों मेंनें वडे कष्टसें बचाया था वो श्रीरा-मपंडित निजाम सरकारका पांचसे रुपे मासिक पगार पाणेवालेकों वेद पढाया करता उसके भाइका जीर्णज्वर उपद्रव संयुक्त मेंनें इलाज किया आमदरफतसें जर्मनके छपे वेद साठ हजार मुझे बतलाया ब्राह्मन सिवाय वेद कभी ब्राह्मन सुणना पढणा तो दूर रहा लेकिन आंखोंसें पुस्तक कभी नहीं दिखाते लेकिन् संसारमें धन्य२ महिमा है, इस वैद्यविद्याके उपगारकी सो वो भट्टजी और पंडित श्रीरामजी अंतरंगसें सब मूल और अर्थ मुझे बतादिया जब जैनोंकी बातकभी मूंपर लाते तो आखिर उनकों जबाबमें मौन ही करणा पडता इस तरे चारोंही वेदोंका सारांस समझणेमें आया और केइयक हस्त लाघवता रसायण क्रिया अनेक चालाकोंसें अपणे जाती कायदेसें हासलकी (सर्वे धूर्त्त श्वेतांबरा) इति वचनात् संवत सैंतालीस तक बीकानेर आणेका दिलमें विचार बिल-कुल नहीं था फकत शिखरगिरीकी यात्रा और कुटंब यात्रा आदि कल्याणकभूमि परमेश्व-रोंकी उमेद किया करता हीरालाल अग्रवालाकी सोबत दिगंबरसें समयसार नाटक और तत्त्वार्थ सूत्र दसुं पटे तबसें दिगंबर वार्तालापसें सनातन धर्मवाटोंमें तर्क पैदा होने लगी कारण दिगांबर मत जिन शेनाचार्य पुर्वधारी एकका शास्त्र लिखा भया है सनातन श्वेतांबरोंका शास्त्र पांचसे आचार्योंकी सम्मतीका लिखा भया है मुख्य देवर्द्धि गणी आचार्य और बारे हजार साधु जमा भये थे उहांसे चीणासहन होकर मटेवागमें चौवी मलघाई यंदरमें सेंतालीसका चतुर्मास किदा बाद हैदराबाद आया जिसमें लिख-

ताका चिन्ह पैदा भया एक दिन उपवास पारणे एका सणा एसा दो महीने किया गरम जल पीणा सचित्तका त्याग उभय टंक प्रतिक्रमण आगे हमेसा दुविहार व्रत रात्रीका था तपसें नित्त चोविहार और नवकारसी धारे हजारका नगद हाथसें रसोइ करणेका त्याग इत्यादि वहोतसे आरंभ घटाया व्रत साफ किया उहांसें माघमें कलकत्ते गया उहां टाटागिरधारी लालजीसें वहोत शास्त्रार्थका लाभ भया २५ दिन रहकर शिखरगिरिराजकी यात्रा करी मकसूदाबाद वालूचर गया कुटंबके२ च्यार अदमी मिले मातापिताका देहांत हुये वहोत अरसा भया सुणा वालूचरमें संघके आग्रहसें अडतालीसका चतुर्मास किया उत्तराध्ययनजी विपाकजी वीश स्थानक चरित्र आचारांग शात व्यसन चरित्र श्रेनिक चरित्र हरिश्चंद्र चोपई मानतूंग चोपई शुकराज चोपइ आदि केइयक अपुर्व ग्रंथ वांचे समवायांगजी सूत्रभी विचारा वाद श्रावक श्रावकएयोंसंग चंपापुरी पावापुरी राजग्रही गुन शिलादि पूर्वकी वहोतसी यात्रा करी फेर मकसूदाबाद जाकर गुरुजी करमचंदजी हेदराबाद फेर गये और सर्व सामान मांगके भाडे वेचकर दवायां और लिखत पुस्तक लेकर वीकानेर चलपेरे जयवास्ते पुस्तकोंके मेंभी वीकानेर अडतालीसके फागुनमें आया सुद १४ को बडे उपासरेमें रहा महीनेबाद श्रीपूज्यजी नागोरसें मंडोवर पधारने मेरंजारी यात्रावास्ते मेंभी गया उहां पूजा आधी रातकूं पूज्य और जती लोक करने लगे मे संघके आगेर अडग्गा खडा रहा और आधी घंटेसे स्वतः मेसमेरि जमका मकनातीस मालम दिया ये बातमें प्रकाश कर नहीं सकता उस दिनसें ये चमत्कार देखनेका मेंने पाया रोगोंपर दृष्टिपात हस्तपासादि क्रिया व्यवहार पास अलक्षताकी सिद्धि लोगोंकी केइ कामोंकी भई जो एक कसर वीस वर्षकी उमर पहले उगणीसमें होगइ थी मगर वीस पे हो जाने तो वहोतभी सिद्धियां में पूर्व पुरुष जतीयोंके सिद्ध [illegible] कर सकता हे सिवा अष्टांग योगके अंदरहीकी है ऊपर लिखा सो नांग एक [illegible] भया हुवा है फेर तो जागनी मन्त्रा जागनी ओत वगेर केइ पुस्तके देखी इस [illegible] थी पार [illegible] अनुभव इस विद्याका प्रकाश किया [illegible] नहीं था लेकिन [illegible] ज्ञानी ध्यानी और समयानुसार [illegible] जाना जो हाल यनना मो [illegible] श्रीजिनमुक्तसूरिजी [illegible] है गुरु लेग वृद्ध है तब उनोंने [illegible] किया और [illegible] वीकानेरमें [illegible]

अपणे जतियोंका इल्म प्रगट करो वो हित शिक्षाकूं मेंने तीन दिन विचारी उसमें ये श्लोक याद आया यतः माया श्वेतांबरे प्रोक्ता, पैशुन्यं च दिगांबरे, बुद्धिर्वसति बौद्धेषु, मूर्खत्वं शिवशासने १ तब उनोंसे कहा पौरपशी भीख मुझे मांगणी नहीं उपगार करणा और कलाकौशल और विद्यासेंही निर्वाह करणा गुरु परंपरा श्रीसाधूजी महाराज छोकरे पढाते पूंजणीमाला पुस्तकादि धर्म व्यवसाय करते थे मुझे पुनर्ये विद्या लब्धि फेरणी सरू करणी पडी जबसें ये ग्रंथभी वैद्यदीपकका संग्रह सरू करणा किया पत वाण २ लिखता गया डाकतरीकी वडी किताब गुजराती अक्षरोमें २० हजार करीब ग्रंथ एक फारसीकी बणाई मगनमलजी पासथी उसकूं में बरसों तक पढी थी अब इहांपर बहोत ग्रंथ मुझकों मिले और पढा उ० श्रीहिमतमलजीसें प्रश्नोत्तर सार्धशतक हीर प्रश्न सेन प्रश्न विशेष शतक धर्मानंद प्रश्न संदेह दोलावली औसवंसावली इत्यादि १५ ग्रंथ मेंने लिखे और लिखाकर पढा संवेगी साधु श्रीहंसविजैजीसें इग्यारे अपूर्व ग्रंथ लेकर लिखाये पढे स्यादवाद मंजरी स्याद्वादरत्नावतारिका द्विज मुख चपेटीका दिगंबर चौरासी बोलके प्रश्नोत्तर सम्यक्त सप्तति अर्हन्नीति आदिक मुनी पूनमचंदजीसें अंगचूलिया सूत्र बंगचूलिया सूत्र मुनी संवेगी भक्तिविजैजीसें गायत्रीकी पद्मतोंकी व्याख्या इत्यादि हजार रुपेके अपूर्व ग्रंथ लिखवाया छापेके जैनतत्वादर्श समकित शल्योद्धार ढूंढक मत समीक्षा चतुर्थ स्तुतीनिर्णय गप्पदीपका समीर पालनपुर प्रश्नोत्तर संबोध सत्तरी योगशास्त्र भरतेश्वर बाहुबली वृत्ति धूर्त्ताख्यान क्रिश्चियनमत समीक्षा सीत्तर पुस्तक जैनके छापेके पढे और मोल लिये चार अपूर्व ग्रंथ सेठ चांदमलजी ढढाके पाससे लेकर पढे संगीत शास्त्र १ मेसमेरिजम विद्या २ गौतमजीका न्यायसूत्र ३ सत्यामृत नास्तिकोंका ४ आगम प्रकाश सत्यार्थ प्रकाश इत्यादि केइयक ग्रंथ स्वर्ग नरक नहीं मानणेवाले और ईश्वरकूं जगत्कर्त्ता मानकर कलंक लगाणेवाले नास्तिकोंका पढा आस्तिक नास्तिक संवाद मनुस्मृती गणित लीलावती शिक्षा दर्पण मतलब संग्रह रुकमणीका व्यावला अमरकोश टीका छंद वृत्त रत्नाकर पिंगल धन्वंतरी कोश देशी नाममाला मेघदूत काव्य मेघमाला भड्डली प्रश्नग्रंथ पंचपक्षी स्वरोदय जैन तथा शिवचरणदासकृत ताजीरायतहिंद इत्यादिक दोयसें पुस्तक फेर वैद्यक भावप्रकाश वैद्यरहस्य अमृतसागर कालज्ञान योगशतक वैद्यरत्न बृहन्निघंटुरत्नाकर भाग ८ अजीर्णमंजरी चरक सुश्रुत वागभट्ट अष्टांगहृदय योगतरंगणी आदि साठ ग्रंथ पट्पंचाशिका पाराशरी मानसागरी जोतिषके इत्यादि अनेक शास्त्र पढे सो मेरे उपाश्रयमें हाजर है, सं० १९५२ में कसतूरचंदजी जतीके चेले नेमचंदजीनें जो उपासरा पं० हुकमचंदजी जतीकों बेचा था सो तेइससे रुपेमें मेंने खरीद कर पुस्तकोंका भंडार स्थापन करा तेरा पंथी शिवराजजी हुकमचंदजी पनालालजीकी श्रद्धाशुद्ध कराय चेलाकर जती भेष दिया नंदीसूत्रकी टीका षट्दर्शन न्याय व्याकरणकी पुनरावृत्ती पं० जयदया-

१

पणा मांनते हैं इसवास्ते अपणी ईश्वरता याने (ऐश्वर्यता प्रगट करणेकों) मायाकूं अग्रे श्वरीपणा दिया था विना जैन दीक्षा लिये सूत्रोंका तत्त्व नहीं पढाणा आदि अन्य दर्शनी योकूं अपणी चमत्कारीपणेकी विद्या नहीं सिखलाणे आदि वहोत वातोंमें माया रखते थे इसवास्तेही सर्वदर्शनियोंकी परीक्षा करणेपर विद्या मंत्र तंत्र गायन वादित्रादि एकसो आठ विधान समकालमें वादसाह पिरोजसाहके सांमने जतियोनें करके दिखाई अमावसकी पूनम मकाननाडोलाइका मंदिर आदि एक जगेसें सइकडो कोस एक रात्रीमें उडाके लेजा धरणे आदि संवत् विक्रमके सोलेसे तक कर बताई इत्यादि वाते सब दर्शनी जतीयोंका प्रसिद्धपणें जानते हैं, राजा वादसा और प्रजा सब गुरू करके वतलाते थे और गौरव बढाकर मांन रखते थे इसवास्तेही गढ चितोडके किलेमें और जेसलमेरके किलेमें इत्यादि अनेक राजमहलोंके पास जैन मंदिर अभी सईकडों किलोंमें मौजूद है, जैन मंदिरमें नहीं जाणा इत्यादि वातोंके गपोडोंपर राजोंका दिल नहीं खिचाया अगर एसा होता तो जैन मंदिर महलोंके नजीक कब वणणे पाते रावलपिंडीके किलेतक जैनोका मंदिर मौजूद है उहांतकही आर्योंकी शीमाथी ये सब पूर्ण माया धारी जैन उपदेशक महिमा धारी जतियोंके मायापणेका है, अकबरनें सभामें खुद फरमाया था प्रत्यक्ष जंगम खुदा जिनचंद सूर है, जिसकों में आंखोंसें देख रहा हुं जगत्कर्ता खुदा तो अनुमांनसें लोक और में मानता हूं वस ये प्रतिष्ठा जतियोनें अपणी ईश्वरता दिखलाणेके लिये मायाकूं अग्रेश्वरी वणाई थी अब ये माया उस वातोंसें तो हटी जती २ योंके आपसमें फेठी पुस्तक लिखणे वांचणेकूं नहीं देणा और लेजावे सो फेर पीछीभी नहीं देणा विद्या चमत्कार आपसमें सीखणा नहीं जो उनोंके पास सीखे सो उनोंकीही पीछी निंदा और जमावट उखेडणा गुण किसीमें होय तो वो सूंपरभी नहीं लाणा और औगुण जराभी नहीं होय तो हरतरेसे लोकोंमें प्रगट करणा मर्मोकों उघाडणा कोई चेला सुधरता होय आप धनके लालचकु शीख देकर विगाड देणा पुस्तकें अन्य दर्शनियोंकूं वेचणी आपसमें देणी नहीं कुलकी रीत पढणा लिखणा पढाणेका वो आजियाका छोड सरकार दरवार गवा जमानत खेती आदि प्रगटपणे करणी एक लाजका छोडणा है सो सब औगणकी जड है, सो आज जतियोमें विरलोमें रही है नइ रोसनी वाले जतियोंमेंसे अटग छंटे है, वो माया रखते हैं कुछ२ तो जैनवर्ग पूजते हैं लेकिन् वो चमत्कार और पूजा तो वो कहना घट होगई सोना गया कर्णके साथ ॥ पैशुन्यता पहले दिगांबर जैन नांम धारियोंमें थी पराया छिद्र दरसाणा या चुगली करणा किसीका न्याय संयत वचन देश क्षेत्र कालभावकी अपेक्षाके होय उसकूंभी नहीं मानना इसका नांम पिशुनता है, जब ये पिशुनता अन्य मतवालोंपर चलाते थे तब अपणे मतमें दूषण भूषण और मतमेंही परस्परकी घनोवाधी आदिकी कहना देखकर अन्य दर्शनी

लोक इनोंका धर्म कबूल करते थे दक्षणमें राजा और प्रजा और मंदिर सब दिगांबर जैनोका हो गया था भट्टारक जिनशेनाचार्यने श्रावगी गोत्र ८४ लोहाचार्यने गर्गाचार्यनें अग्रवाल गोत्र राजा और सुनारोंका बणाया बिना अदमी पालखी दिल्हीमें वादसाहोके सामनें एक भट्टारकनें चलाइ थे पिशुनताभी इनके वृद्धिका हेतु था बस अब इनसें उलटा परिणाम चला भट्टारक लोक अपणे द्रव्यके लालच जातीमेंसें बेकसूर श्रावगीकूं निकाल देणा भमर (भोजनके वखत) अडजाणा ये इतना रुपया देगा तो पारणा करूंगा इत्यादि पिशुनताके कारण उन वणियोमें पिशुनता फैली सो उनोका वीस पंथ प्राचीन खंडन कर तेरा पंथ गुमान पंथ निकाला भट्टारकोंकी आजिविका तोडी मंदिरमें आपही पंच और आपही पांडे बणे इस कारण चतुर्विधसंघ भगवंतनें इकीस हजार वर्ष तक चलेगा एसा लेख जिन शेनाचार्यने अपणे बनाये उत्तर पुराणमें लिखा था सो बिलकुल प्राय अस्त होकर दो संघ श्रावक श्रावक ण्योंइ रह गई वात तो एसी करणेकी थी सो भट्टारक और जाति कायदा सुधर जाता लेकिन् आपशमें पिशुनताने फैलाव किया भट्टारकभी थोडे रहे नग्न मुनि तो है इनहीं भट्टारकोंको नइ रोसणीवाले गुरु मांनते नही वीसपंथी मांनते हैं इतिश्री ॥ बुद्धिबोद्धोंमेंथी जब चीन ब्रह्मा जपान आदि पांच वादसाहेंके गुरु पूंगी थे मुडदा खाने आदि उपदेश और लांवा गुरू आदि एकसो वीस वर्षसें फेर चोलाबदलके फेर पीछे वोही ६ महीनेका बालक होजाणा पूंगी लोकोंके धर्मस्थानपर अकस्मात् विना अदमीके लाये चाह दूध भोजन टेवलपर वखतपर स्वत हाजर होजाणा जिनोंकी परिक्षा बडे २ युरोपियन डाकटरोनें करी लेकिन् पता नहीं लगा आखिरकों यही कहणा पडा वडे तांत्रिक है, ये सर्व महिमा उनोंके योगविद्या और बुद्धिका था, लकडेके घोडे अदमी, कागजोका कपडा, छापा शिलाका, काचकी चीजों लकडीका कांम पुलपाणीपर एसी मजबूत और जलदी बांधणी इत्यादि अनेक बुद्धिकी कारीगरीपणा इल्म और धन इत्यादि जो उनोंके ग्रहस्थों पास था बुद्धिसें आजकल औरही मामला चला जपानने मुडदे खानेसें खूनका ठंडापणा होता है बहादुरी नहीं रहती इत्यादि गौतम बुद्ध और पूंगियोंका उपदेश छोड मारके ताजा खाणा इत्यादि केइवातें अपणी प्रत्यक्षपणे सिद्धकर अभीतो वडे सूरवीर इल्मदार वादस्याहीके दरजे पोहचे हैं एसी बुद्धि विचार बौद्धका उपदेश एक बुद्धमूर्ति टाल अन्य देव नहीं पूजणा उससें उलटा विचार चीणोका है हजारो देव पूजने लगे बुद्धि घटेगी तब दूसरे जैर करेंगें और कर दिया इतिश्री मूर्खत्वं शिवशासने जब मूर्खपणा शिवमतमें था तब शैव लोकोंकी वृद्धि थी दयानंदजी शिवविष्णु आचार्योंकों मूर्ख लिखते हैं जैसें जैनके जती अपणा सूत्र अन्य दर्शनीकूं नहीं पढाते योगविगर तैसें सन्यासी ब्राह्मण दुसरोकों वेद कभी नहीं पढाते लेकिन् इतनातो जैनोंकी निशल्पता है, सो सूत्रोंका अर्थ जनी लोक

वांचके ग्रहस्थोंकों यथार्थ सुणा देते हैं मगर ये तो अर्थभी नहीं सुणाते तोभी इनोंके मतावलंबी वेदपर वडायकीन सब लोक रखते हैं इहांतक लोकोंकों खबर नहीं थीके वेदमें क्या लिखा हैं वेद ईश्वरकृत है. इतनी श्रद्धापर लाखों करोडो अदमी वेदोंकों माननेवाले बधते जाते थे सृष्टिकी उत्पत्तीमें पुराण पुराणोंके आपसमें रातदिनका अंतर एक पुराण दैवीभागवतमें सुकदेवजीके पांच पुत्र भये श्रीमद्भागवतमें उस सुकदेवकूं जन्म ब्रह्मचारी इत्यादि एक पुराणसें दुसरे पुराणकी बात नहीं मिलती तोभी मूर्खताके सबब मतकी हमेसां वृद्धि थी दयानंदजीनें लिखा है, फेर वेदोमें सब जीवोकों मारके होमणेका हुकम यज्ञमें मांस खाणेका हुकम और वैष्णव संप्रदाय ४ और निरंजनी रामानंदी रामसनेही आदि भक्तिमार्गवालोनें यज्ञादि वेदोंकी कर्त्तव्यता तो नहीं मानी दया वैराग्य कबूल करकेभी वेदोकों ईश्वरकृत मांनते थे इन मतावलंबियोंने वेदोंकों कबूलभी किया और उस कर्तव्यताकी निंदा अपणी वणाई वाणीयोंमें करी इस वातकूंभी मूर्खपणा दयानंदजी सत्यार्थ प्रकाशमें लिखते हैं, तोभी मतकी वृद्धि थी भक्तमाला ग्रंथमें चोरी कर स्त्रीपर पुरुपसें जारीकर मनुष्योंकों मारकर लोंकोकों जबरन् लूंटकरकेभी वैष्णव मतके साधुओंको खिलावे सो परमेश्वरका भक्त कहावे और वैकुंठ जावै ऐसी २ कथाओंपरभी मूर्खताकेभरे इमान लाणेवाले एसा दयानंदजी लिखते हैं इतनी वाते रहतेभी वैष्णवमतके साधूओंकी वृद्धि थी ब्राह्मण और गृहस्थ विष्णुमतकी पूजा करते थे और करतेभी है बस अब इस मतके द्वेषी दयानंदस्वामी प्रगटे सो वडी चलाकी और पडिताईके जोरसोरसे आर्यासमाज मत चला दिया वेद उनोंने पढा लेकिन अपणे पूर्व ऋपियोंके अर्थोसे घृणा आई अब चतुरतासे विचार किया जो में जैनधर्मवालोंकी तरे वेद छोड दूंगा तो मेरा उपदेश कोण मानेगा क्योंके जैनियोंका कहणा है जिस शास्त्रोंमें अनेक जीवोंकोमार होम करणा लिखा उस वेदोकों परमेश्वरका कहा कोण बुद्धिवान मांन सकता है तब आपने भाष्य बणाया जिसमें दया धर्मका अर्थ धातूओंकों खेचताणके कर दिया और लिखा वेदका अर्थ ब्राह्मण मांसाहारी मूर्खोंने विगाड दिया ब्राह्मणोके तीर्थोकी श्राद्ध गरुड पुराणादिककी बहोतही निंदा लिखके ब्राह्मणोकी आजीविका तोडणे केइ ढंग बणाये दयानंदजीका अर्थ शैव विष्णुमतके आचार्य नहीं मांनते हैं जो कभी ब्राह्मणोंकी आजीविका स्वामीजी कायम रखके शंकर स्वामी रामानुज वल्लभ माधवाचारी वगेरोंकी तरे ग्रंथ बणाते तो हिंदुस्थानके सब ब्राह्मण स्वामीजीकों स्यात् कलंकी भगवानका अवतारही लिख मारते लेकिन् तोभी अंग्रेजी पढे जो कृश्चियनोंकी तरफ झुकणवाले थे उनोंकों स्वामीजीने और समाजने वडा उपगार कर हिंदुधर्म दयाके नमूने कायम रख लिया पंडिताईने मूर्खताकों हटाया ॐ शांतिः ॐ शांतिः ॐ शांतिः

॥ संक्षेप जीवनचरित्र ॥

मारवाडी प्रजा तथा गुजराती महाराष्ट्रादि सर्व देसवाले जब परदेश स्वजनोकों कागद देते हैं तो लिखते हैं भाईजी डीलारा घणा जावता राखी जो सारी मुदारडी लासूं छै लेकिन शरीरका यत्न किसतरे होता है सो बिलकुल नहीं जाणते इसवातकी सफलता मेने इस ग्रंथमें कर दिखाई अब लेके पढणा और इस रस्ते चलणा प्रजाके हाथ है, येभी जगतमें मसहूर है के एसा कोण मूर्ख होगा सो अपणी और अपणे कुटं-बकी तनदुरस्ती नहीं चाहते होंगे निश्चै चाहते हैं.

जैनधर्ममें संवेगी साधू यती ढूंढिये तेरा पंथी वगेरे फिरके साधूओंके है दिगंबर जैन भट्टारक तथा पंडित लोक हैं वो अपणा और पराया सबका भला चाहते हैं शैव विष्णु मतमेंभी अच्छै शांतशील कषायरहित शास्त्रोंकेवेत्ता ब्राह्मण और साधू अभी मोजूद है, वोभी स्वार्थ परमार्थ दोनों करके जन्म सफल करते हैं तथा अनेक गुणवंत साढीबारे जातिके वैस्य ओसवाल श्रीमाल पोरवाल अग्रवाल श्रावगी महेश्वरी आदि गुणज्ञ जो धर्मपारायण है तेसे २ अन्यभी वर्णोंमें जो जो शांत सज्जन है उन सर्व प्रजागणके तथा हमारे बीकानेरके महाराज बहादुर राठोड वंश मुकुटमणि छत्रपति न्यायसंपन्न खटदर्शनादि प्रजा प्रतिपालक १०८ श्रीगंगासिंहजी साहिब और सर्व राज्य वर्ग स्वामिभक्त दिवान प्रमुख सर्व साहिबोंकों अर्पण में इस ग्रंथको कर्त्ता हूं मेरे प्रयासकों सफलता कर चिरंजीव आप लोक रहे ॥

इस ग्रंथका सर्वस्व हक स्वाधीन है, कोई हमारी विना इजाजत छापेगा वो कठोर हृदयवाला ईश्वरकातथा राजदंडके कामल होगा इतनी महनत होनेपरभी दांम अल्पही लगाये हैं सबका भला होय ।श्रीरस्तुः॥ ग्रंथ छपाके प्रसिद्ध कर्त्ता पं० क्षेमचंद पेमचंद.

अनुक्रमणिका ।

विषय.	पृष्ट.
प्रकाश पहला १ सृष्टिक्रम.	
मंगलाचरण. ...	१
ग्रंथ बणाणेका प्रयोजन.	१
छव द्रव्यका स्वरूप.	२
जीवके कर्मबंधका स्वरूप.	३
आठकर्मोंकी प्रकृतिका वरणन.	४
कर्मजड क्या करसकता है इसका समाधान.	१२
ईश्वर सृष्टिका कर्ता है या नहीं प्रश्नोत्तर	१३
पांच समवायोंसें सब काम होते हैं.	१३
जैनदर्शन सर्वज्ञका स्वरूप.	१८
अमल जैनपक्षपात रहित न्यायसंपन्न.	२०
पांच इंद्रियोंका स्वरूप ३ प्रकृतीका स्वरूप.	२१
प्रकाश २ रा शारीर किरण १.	२९
गर्भकी उत्पत्ति वरणन.	२९
गर्भकी उत्पत्ति और वृद्धिका स्वरूप	३१
गर्भ रहणेरा संका समाधान.	३२
वीर्यरज जीव पैदा करता है	३३
सर्वज्ञथे तो रेलतारादि क्यों नहीं बणाये उत्तर.	३४
हिंदुस्थान सर्व विद्याका भंडार.	३५
गर्भकी व्यवस्था.	४३
हाडोंका वरणन.	४५
हाडोंके अंदरके पदार्थोंका यंत्र.	४९
कूर्चे सांधोंका वर्णन.	५०
मांसके लोचे तथा नसोंका वर्णन.	५२
नसोंके बंधनोंका वर्णन.	५३
संयोजक तथा चरबीका वर्णन.	५४
चमडीका वर्णन.	५५
किरण २ री.	
शरीरके मुख्य भाग.	५५
शिरकी खोपरीका वर्णन.	५८
मगजका वर्णन.	५८
आंखका वर्णन.	६१
कानका वर्णन.	६३
नाकका वर्णन.	६३
जीभका वर्णन.	६४
चमडीका वर्णन.	६५
छातीके फेफसेका वर्णन.	६८
रक्ताशयका वर्णन दिलका	६८
छाती तथा पेटके पडदेका वर्णन.	७१
अन्न नलका वर्णन.	७४
होजरी आमाशयका वर्णन.	७५
आंतोंका वर्णन.	७६
कलेजेका वर्णन.	७९
पित्ताशयका वर्णन.	८०
तिल्लीका वर्णन.	८०
गुरदेका वर्णन.	८१
मूत्राशयका वर्णन.	८१
उत्पत्ति अवयवका वर्णन	८२
स्तनका वर्णन.	८६
किरण ३ री सातधातु.	
धातुओंका अन्यरूप तथा मैल.	८८
वायुपित्त कफका वर्णन.	९१
पांच वायूका वर्णन.	९३
पित्तका वर्णन.	९४
कफका वर्णन.	९५
किरण ४ थी शरीरकी अलग २ क्रिया.	
मज्जातंतुज्ञानतंतुओंका वर्णन.	९६
खूनका वर्णन.	१००
श्वासोश्वासका वर्णन.	१०५
पाचनक्रियाका वर्णन.	१११
बदनकी सबक्रिया तथा १३ वेग वर्णन.	११५
प्रकाश ३ रा शरीररक्षा किर्ण १	१२१
हवामें मिलेभये तत्व.	१२४
हवा बिगडनेके कारण	१२६
कुदरतसे हवाका साफ होना.	१३०

प्रकाश ५ मां दवायोंका गुणावगुण.

किरण २ री निघंट दवायोंका गुण.

विषय.	पृष्ठ.

किरण ३ री अंग्रेजी दवा.

प्रकाश ६ ठा बुखारके सहचारी रोग.

१४ किरणोंकी तपसील किरण १.

अथ वैद्यदीपक ग्रन्थ ॥

श्रीसरस्वत्यैनमः--अथ वैद्यदीपक ग्रन्थस्य प्रस्तावना ॥. युगादौव्यहाराद्ध्वा सर्वोयेनप्रकाशितः स श्री वृषभयोगींद्रो दद्याद्वोव्यय संपदं १ वंदेहं लोकनाथाय आयुर्धर्मप्रकाशके धन्वंतरीं युगादीशं श्री नाभि नृप सूनवे २ अविद्यांध मनुष्याणां विद्यादानशलाकया चक्षुरुद्घाटितंयेन तस्मै श्री गुरुवे नमः ३ वैद्यदीपक ग्रन्थोयं द्योतकृतहृदिमंदिरं रोग शत्रु प्रणाशाय रामवाणावलीमिव ४ ॥

प्रकाश पहिला ॥

सृष्टिक्रम ॥

जब अपने आस पास की निर्जीवी चीजों का ज्ञान धराते हैं तो अपने आप क्या हैं, अपना शरीर काहे का बना हुआ है तैसे ही उस में कैसी २ शक्ति कैसा २ काम करती है, इतना ज्ञान जो

अपने में नहीं तो बड़ी शर्मिन्दगी की वात है. जगत में जो अज्ञान हैं सो ही दुःख की जड़ हैं उस में भी शरीर संबन्धी अज्ञान तो बड़े ही क्लेश का कारण है, सूक्ष्म नज़र से देखे तो जगत में जितनी जानने योग्य वस्तु है उसका सम्पूर्ण ज्ञान भी शरीर में से मिल सकता है शरीर की रचना नाम कर्म की एक सौ तीन प्रकृति से जीव और कर्म दोनों शामिल होके शरीर के संबन्ध में रचना रचता है सर्व चौरासी लाख जीवायोनि में मनुष्य जैसी कोई योनि नहीं है क्योंकि अनेक संसारिक अद्भुत कार्यों का करने वाला है सो तो विद्या बुद्धि बल से रेल, तार, अग्निबोट, विजली, विमान आदि अनेक पूरा वे प्रत्यत्त पने मनुष्य कृत हैं तैसे ही जप, तप, इन्द्रियदमन, अष्टांग योग का पारंगामी होकर अनंत ज्ञान रूप केवल लक्ष्मी प्राप्त करके जन्म मरण से रहित होकर पूर्ण ब्रह्म परमेश्वर यह पुरुष हो जाता है वस सर्वोपरि मनुष्य जन्म है द्रव्यार्थिकनय की अपेक्षा यह संसार नित्य है १ तीनों काल में पर्यायार्थिकनय की अपेक्षा संसार अनित्य है २ द्रव्य ६ हैं. धर्मास्तिकाय १, अधर्मास्तिकाय २, आकाशास्ति-काय ३, जीवास्तिकाय ४, पुद्गलास्तिकाय ५, और काल ६. जीव और पुद्गल को चलने का सहाय देवे सो धर्मास्तिकाय १ जीव और पुद्गल को थिर रहने का सहाय देवे सो अधर्मास्तिकाय २ जीव और पुद्गल को रहने को अवकाश देवे सो आकाशास्तिकाय ३ चेतन शक्ति ज्ञान १ दर्शन २ कर्म काटने की शक्ति सोचारित्र ३ और तप ४ यह स्वरूप वाला चर्म चत्तु से अरूपी कर्म के संवन्ध से जीव कहलाता है और कर्म जड़ से रहित होने से ईश्वर होने वाला अनंत शक्ति वाला

जीवास्तिकाय है ४ पूर्ण और गलन अर्थात् कभी भर जाय कभी विखर जाय फिर रूप १ स्पर्श २ गंध ३ और रस ४ परमाणुओं करके शोभित सो पुद्गलास्तिकाय है ५ वर्त्तने का स्वभाव है नई को पुरानी करे पुरानी को नई करे समय १ काष्ठा २ लव ३ मुहुर्त्त ४ दिन ५ रात पक्ष मास वर्ष इत्यादिक पहचान करके काल द्रव्य है ६ यह सब द्रव्य जहां है सो लोग है वही संसार है जिस में चार गति हैं नरक गति १ तिर्यंच गति २ मनुष्य गति ३ देव गति ४ इस में नीचे पृथ्वी के सात नरक हैं बहुत पाप करने वाला जीव नरक जाता है इसी तरह कर्मों के शुभ अशुभ योग से जीव पूर्वोक्त चारों गति में भटकता है जैसे डोर में बंधी चकरी लेकिन डोर अलग वस्तु है और चकरी अलग वस्तु है जीव अशुभ उद्यम से बांधता है जीव शुभ उद्यम से खोल सकता है ऐसे जीव और कर्म जुदे २ द्रव्य हैं और अशुभ योग से बंधा हुवा भी है इस वास्ते जीव और कर्म का संबन्ध आदि भी है और अनादी भी है क्योंकि किसी भी मत वादी ने जीव बनने की आदि नहीं लिखी आत्रेय महर्षि अग्नि-वेशचरक वृद्धवागभट्ट और शुश्रुतादिकों ने अपनी रची संहिता में जीव द्रव्यकों अजर अमर अविनाशी अक्षय ही लिखा है जब संसार में जीव की आदि नहीं तो कर्म के संबन्ध विना अकेला जीव तो संसार में रह ही नहीं सकता अकेला भया फिर तो मुक्ति होकर अचल पद में ही लोकाग्र पर जाके ठहरेगा निर्मल भये बाद कर्म नहीं लगेगा जब कर्म रहित होगा तो जन्म मरण से भी बचेगा इस वास्ते जीव बनने की आदि नहीं तो कर्म भी आदि

रहित है ये दोनों इस अपेक्षा आदि करके रहित है
सहचारी हैं जिस वस्तु की आदि नहीं उसका अंत भी न
है इतना विशेष है भवो भव में जीव अशुभ क्रिया अठार
स्थानकों से मन १ वचन २ काया ३ इन में करना १ कराना
और पाप करते २ को अच्छा समझना ३ इस से जीव समय २
बांधता है और शुभ क्रिया दान शील तप और भावना इन
कारणों से अथवा अकामनिर्जरा अज्ञान पने कष्ट सहने से
समय २ कर्म तोड़ता भी है इस तरह कर्मों का आदि भी है
अंत भी है जैसे सोना जीवों के उद्यम से धूड़ में से जुदा भी होता
और फिर परमाणु बिखरता २ मिट्टी में ही मिल जाता है लेकिन
में कोई नहीं बता सकता कि मिट्टी और सोना कब शामिल भये
ऐसे जीव और कर्म का संबन्ध नित्यानित्य जानना जो वस्तु
स्थिर है उसका नाश भी नहीं है जैसे आकाश, और जो
वस्तु घट है सो उसका नाश भी है, तैसे कर्म जीव करता है वह
नाश भी हो जाता है, जीव सर्वस्थिर है तो वह नाश भी नहीं है

दर्शन कर सकता है लेकिन पहरेदार दर्शन नहीं करने देता २ वेदनी कर्म से सुख और दुःख जीव भोगता है वह कर्म शहत लगी-तलवार के चाटने समान है चाटते मीठा पीछे जीभ कट जाती है ३ मोहनी कर्म मदिरा के नशे समान है जैसे नशे में सुध नहीं रहे ऐसे मोह के वश सब सुध बुध भूल जाता है ४ नाम कर्म चितारे जैसा है जैसे चितारा अच्छी बुरी शकल बनाता है इस वजह देव मनुष्य का सुन्दर रूप नरक तिर्यचका कुरूप इस कर्म के वश बनता है ५ गोत्र कर्म कुंभार जैसा है जैसे कुंभार एक चीज ऐसी बनाता है सो पूजने योग्य दूसरी अपूज्य इस तरह इस कर्म से ऊंच नीच गोत्र होता है ६ आयु कर्म कैदी के खोड़े जैसा अर्थात् बेड़ी समान है जिस २ योनि का आयु कर्म बांधा है वह भोगने से छुट-कवारा होता है ७ अंतराय कर्म राजा के भंडारी समान है राजा हुक्म देता है इस को फलानी चीज देदो लेकिन भंडारी दे नहीं इस तरह जीव दान दिये चाहता लाभ लिये चाहता भोग उप भोग भोगे चाहता वीर्य शक्ति फिराये चाहता लेकिन अंतराय इन बातों को रोके सो अंतराय कर्म है ज्ञानावरणी की ५ प्रकृति है मति ज्ञानाव-रणी १ श्रुति ज्ञानावरणी २ अवधि ज्ञानावरणी ३ मन पर्यव ज्ञाना-वरणी ४ केवल ज्ञानावरणी ५ ऐसे पांच ज्ञान हैं जिसको जो ढके सो ज्ञानावरणी कर्म है जैसा २ आवरण ज्ञान के बहुमान करने से अलग होता जाता है तैसे २ प्रकाश होता जाता है जैसे पूर्ण मासी के चन्द्र का उजाला है तैसे जीव शक्ति में लोका लोक जानने का उजाला है लेकिन बद्दलों की तरह कर्म का आवरण

जानना ज्यों २ वायु से बद्दल अलग होते हैं त्यों २ प्रकाश दिखाई देता है ऐसे शुभ क्रिया और शुभ भाव उस आवरणों को दूर करता है दर्शनावरणी की नव प्रकृति हैं निद्रा १ निद्रानिद्रा २ प्रचला ३ प्रचलाप्रचला ४ स्त्यानर्धि ५ चक्षु दर्शनावरणी ६ अचक्षु दर्शनावरणी ७ अवधि दर्शनावरणी ८ केवल दर्शनावरणी ९ वेदनी की २ प्रकृति, सुख वेदनी १ दुःख वेदनी २ मोहनी कर्म की २८ प्रकृति क्रोध १ मान २ माया ३ लोभ ४ इन ऐकेक को चार गुणा करना सो इस तरह अनंतानुबंधी क्रोध १ प्रत्याख्यानी क्रोध २ अप्रत्याख्यानी क्रोध ३ संज्वलना क्रोध ४ इस तरह मान के ४ भेद माया कपटाई के ४ भेद लोभ के ४ भेद यह तो शोलिकषाय हैं अनंतानुबंधी क्रोध वज्र पर लकीर जैसा है सो जावजीव क्रोध जीव से जाता ही नहीं यह क्रोध १ और मान और माया और लोभ वाला निश्चय नरक गति जाता है प्रत्याख्यानी क्रोध तलाव का पानी सूखे बाद जमीन फटे जैसा सो पीछा बरसात होने से सब लकीरें मिट जाती है इसी तरह कोई संवत्सरीपर्वादि कारण बनने से क्रोध दिल से मिटा देता है इस की अवधि वर्ष दिन की है यह मोहनी कर्म वाला तिर्यंच गति में जाता है २ अप्रत्याख्यानी क्रोध वेलू पर हवा से लकीरें पड़ने जैसा है इस क्रोध की अवधि पन्द्रह दिनों की है जब दूसरी हवा जोर से चली तब वह वेलू की लकीरें मिट जाती हैं इस तरह यह कषाय वाला पन्द्रह दिनों के पीछे निशल्प हो जाता है यह जीव मर के मनुष्य गति में जाता है ३ संज्वलना क्रोध १ मान २ माया ३ और लोभ ४ वाले की थिति बहुत थोड़ी है संज्वलना क्रोध पानी

के लकीर जैसा है ऐसा मोहनी कर्म वाला देव गति में जाता है इसी तरह मान के १ माया के २ लोभ के ३ वज्र के थंभा जैसा आदि दृष्टांत उत्तराध्यन प्रमुख सूत्रों से जानना नवनोपायक है हास्य १ रति २ अरति ३ भय ४ शोक ५ दुगंछा ६ स्त्री वेद ७ पुरुष की इच्छा करे सो, पुरुष वेद ८ स्त्री की इच्छा करे सो, नपुंसक वेद ९ दोनों की इच्छा करे सो, सम्यक्त मोहनी १० मिश्र मोहनी ११ मिथ्यात्व मोहनी १२ सम्यक्त जो शुद्ध देव शुद्ध गुरु शुद्ध धर्म इस में जीव को मूर्छित कर देवे सो सम्यक्त मोहनी, मिथ्यात्व और सम्यक्त इन दोनों में जीव को मूर्छा देवे अर्थात् नहीं पहचानने देवे सो मिश्र मोहनी इसी तरह कुदेव कुगुरु कुधर्म में मूर्छा देवे सो मिथ्यात्व मोहनी यह २८ प्रकृति मोहनी कर्म की है यह कर्म सब कर्मों का राजा है इन्हों का अर्थ विस्तार कर्मग्रन्थ पंचसंग्रह गोमठसार सूत्रादिकों से जानना सूचना मात्र यहां लिखा है अब सब अंगोपांग की रचना करने वाला नाम कर्म की एक सो तीन प्रकृति सो संक्षेप करके नाम मात्र यहां लिखता हूं इस कर्म का सहचारी होकर जीव तरह २ का शरीर रचता है बहुत ईश्वर कर्त्ता मानने वाले गर्भादि रचना में ईश्वर की कारीगरी बतलाते हैं सो तत्व के अजान हैं कर्मों की प्रकृति के अजान हैं जीव और कर्मों की कारीगरी है ईश्वर ऐसे गलीच स्थान में क्यों प्रवेश कर रचना की कारीगरी पना करता है (प्रश्न) ईश्वर और माया इन दोनों ने मिलके रचना रची है (उत्तर) तुम्हारे समझ में आई सो बात एक नय से सची भी है, जीव है सो निज रूप शक्ति करके ईश्वर ही है, माया कपट छल यह नाम सब कर्म

ही है पूर्ण ब्रह्म परमेश्वर माया कर्म से रहित है वह माया से अलग है इस वास्ते हम जो जीव और कर्म की कुदरत लिखते हैं वह न्याय संपन्न है ईश्वर की शक्ति से सृष्टि की रचना मानना यह सब बात वन्ध्या पुत्रवत् खकुसुमवत् है एक अशुद्ध नैगमनय की अपेक्षा करके ईश्वर कर्त्ता मानने वालों के वाक्य सच्चे हैं, जैसे एक सुथार पायली बनाने वास्ते जंगल में लकड़ी लेने को चला किसी ने पूछा कहां जाते हो सुथार बोला पायली लाने को इसी तरह जीव ईश्वर सत्ता करके है लेकिन अभी कर्म सहचारी होने से भया नहीं, हो गया तो फिर सृष्टि में रचना करेगा नहीं इस वास्ते ईश्वर तत्व निर्णय हमारा बनाया भाषा ग्रन्थ देखो संसार की बहुत सी रचना घट पटादिक मनुष्य कृत है पांच समवायों के मिलने से सो हम आगे लिखेंगे और कई एक स्वसत्ता रूप ६ द्रव्य है सो पहली लिखा ही है, अथ नाम कर्म की प्रकृति १०३ लिखते हैं नरक गति नाम कर्म १ तिर्यच गति नाम कर्म २ मनुष्य गति नाम कर्म ३ देव गति नाम कर्म ४ एकेन्द्री जाति ५ बेन्द्री जाति ६ तेंद्री जाति ७ चोरेंद्री जाति ८ पंचेंद्री जाति ९ उदारिक शरीर १० वैक्रिय शरीर ११ आहारक शरीर १२ तेजस शरीर १३ कार्मण शरीर १४ औदारिक अंगोपांग १५ वैक्रिय अंगोपांग १६ आहारक अंगो-पांग १७ औदारिक औदारिक बंधन १८ औदारिक तेजस बंधन १९ औदारिक कार्मण बंधन २० औदारिक तेजस कार्मण बंधन २१ वैक्रिय बंधन २२ वैक्रिय तेजस बंधन २३ वैक्रिय कार्मण बंधन २४ वैक्रिय तेजस कार्मण बंधन २५ आहारक आहारक बंधन २६

आहारक तेजस बंधन २७ आहारक कार्मण बंधन २८ आहारक तेजस कार्मण बंधन २९ तेजस, तेजस बंधन ३० तेजस कार्मण बंधन ३१ कार्मण कार्मण बंधन ३२ औदारिक संघातन ३३ वैक्रियसंघातन ३४ आहारकसंघातन ३५ तैजससंघातन ३६ कार्मणसंघातन ३७ वज्रऋषभनाराचसंघयण ३८ ऋषभनाराचसंघयण ३९ नाराचसंघयण ४० अर्द्धनाराचसंघयण ४१ कीलिकासंघयण ४२ छेवट्ठासंघयण ४३ समचौरससंस्थान ४४ न्यग्रोधसंस्थान ४५ सादिसंस्थान ४६ वामनसंस्थान ४७ कुब्जसंस्थान ४८ हुंडकसंस्थान ४९ कृष्णवर्ण ५० नीलवर्ण ५१ लोहितवर्ण ५२ हारिद्रवर्ण ५३ श्वेतवर्ण ५४ सुरभिगंध ५५ दुरभिगंध ५६ तिक्तरस ५७ कटुकरस ५८ कषायरस ५९ आम्लरस ६० मधुररस ६१ कर्कसस्पर्श ६२ मृदुस्पर्श ६३ गुरुस्पर्श ६४ लघुस्पर्श ६५ शीतस्पर्श ६६ उष्णस्पर्श ६७ स्निग्धस्पर्श ६८ रूक्षस्पर्श ६९ नरकानुपूर्वी ७० तिर्यगानुपूर्वी ७१ मनुष्यानुपूर्वी ७२ देवानुपूर्वी ७३ शुभविहायोगति ७४ अशुभविहायोगति ७५ परघात ७६ उच्छ्वासनामकर्म ७७ आतपनामकर्म ७८ उद्योतनामकर्म ७९ अगुरुलघुनामकर्म ८० तीर्थंकरनामकर्म ८१ निर्माणनामकर्म ८२ उपघातनामकर्म ८३ त्रसनामकर्म ८४ बादरनामकर्म ८५ पर्याप्तनामकर्म ८६ प्रत्येकनामकर्म ८७ स्थिरनामकर्म ८८ शुभनामकर्म ८९ सौभाग्यनामकर्म ९० सुस्वरनामकर्म ९१ आदेयनामकर्म ९२ यशःकीर्तिनाम कर्म ९३ स्थावरनामकर्म ९४ सूक्ष्मनामकर्म ९५ अपर्याप्तनामकर्म ९६ साधारणनामकर्म ९७ अस्थिरनामकर्म ९८ अशुभनामकर्म ९९

दुर्भगनामकर्म १०० दुःस्वरनामकर्म १०१ अनादेयनामकर्म १०२ अपयश अकीर्तिनामकर्म १०३ इस तरह इस नामकर्म ने शरीर संबन्धी रचना रची है औदारिक शरीर एकेन्द्रीय पृथ्वी १ पानी २ अग्नि ३ हवा ४ और वनस्पति ५ इन पांचों से लेकर बेंद्रीय २ तेंद्रीय ३ चोरेंद्रीय ४ और तिर्यंच पंचेन्द्रीय और मनुष्यों का जानना देवता और नारकियों का शरीर वैक्रिय जानना चौदेपूर्वधारी साधु आहारक शरीर रचता है खाये पीये को हजम करे सो तेजस शरीर ४ कार्मण शरीर से काया रची जाती ५ यह दोय शरीर सूक्ष्म है जीव चारों गति वालों के संग में रहता है संघयण हाड़ों की मजबूती का नाम है संस्थान शरीर के शकल का नाम है बाकी शब्द पर अर्थ जानना विस्तार इन्हों का गुरु गम जैन पंडितों से सीखना, आयु कर्म की चार प्रकृति है, देवायु १ नरकायु २ तिर्यंचायु ३ मनुष्यायु ४ अंतरायकर्म की ५ प्रकृति है दानांतराय १ लाभांतराय २ भोगांतराय ३ उपभोगांतराय ४ वीर्यांतराय ५ इस तरह इन आठों कर्मों की एक सौ अट्ठावन मूल प्रकृति है, सांख्यमत कर्त्ता कपिल देवजी ने प्रकृति और पुरुष से सृष्टि मानी है सो प्रकृति याने स्वभाव कर्मों का पुरुष सो जीव इन दोनों से संसार नित्य है ऐसा माना है सो पूर्वोक्त कहने से मिलता है कपिल देवजी ने २५ तत्त्व माने हैं सर्वज्ञ के उपदेश में नव तत्त्व हैं जो वस्तु विस्तार वाली होती है उसका नाम तत्त्व है जैसे जीव तत्त्व १ अजीव तत्त्व २ पुण्य तत्त्व ३ पाप तत्त्व ४ आश्रव तत्त्व ५ संवर तत्त्व ६ निर्जरा तत्त्व ७ बन्धतत्त्व ८ मोक्ष तत्त्व ९ जीव

अजीव का वर्णन पहली छव द्रव्य में कर ही दिया है नवप्रकार से जीव शुभ कर्म सहचारी होकर पुण्य बांधता है ४२ प्रकार से सुख भोगता है पाप ८२ प्रकार से जीव भोगता है मिथ्यात्व और अव्रत से अठारे पाप स्थानक से जीव पाप बांधता है पाप आने का द्वार सो आश्रव ५ उस द्वार को रोकना सो संवर ६ सत्ता में बंधे भये कर्मों को जलावे सो निर्जरा १२ भेद का तप, बंध जीव कर्मो का ४ तरह से, मोक्ष जीव कर्मों से रहित होना सो, नव भेद से, इसका विस्तार नव तत्व प्रकरण से समझना, कपिल देवजी रज १सत २ तम ३ ऐसे तीन गुण का मन परिणाम कहते हैं, सर्वज्ञ देव छव कहते हैं कृष्ण लेस्या १ नील लेस्या २ कापोत लेस्या ३ तेजो लेस्या ४ पद्म लेस्या ५ शुक्ल लेस्या ६ कपिल देवजी पांच ज्ञान इन्द्रिय पांच कर्म इन्द्रिय हाथ पांव गुदा आदि को कर्मेंद्रिया कहते हैं सर्वज्ञ देव दश प्राणों को धारने वाला पुरुष अथवा पंचेंद्रिय तिर्यंच कहते हैं इन प्राणों से रहित होना उस को मरण कहते हैं, स्पर्शन इन्द्रिय इसके आठ विषय हैं १ रसना इन्द्रिय इसके पांच विषय हैं २ घ्राण इन्द्रिय इस के दो विषय हैं ३ चक्षु इन्द्रिय इस के पांच विषय हैं ४ श्रोत्र इन्द्रिय इस के तीन विषय हैं ५ एवं ५ श्वासो श्वास ६ आयु ७ मनोबल ८ वचनबल ९ कायबल १० इत्यादि सृष्टि का क्रम संक्षेप कर बतलाया. (प्रश्न) तुम ने जो कर्मों का स्वरूप लिखा सो हमने किसी भी वैद्यकशास्त्र में देखा नहीं. (उत्तर) तुम ने देखा है लेकिन उन बातों को समझते नहीं, जगह २ प्रकृति और पुरुष लिखा है उस प्रकृति का विस्तार सर्वज्ञकथित शास्त्रों में है

औरों में नहीं, इस वास्ते प्रकृतिबंध है सो ही ८ कर्मों की मूल प्रकृति का स्वरूप है. (प्रश्न) कर्म तो जड़ है वह जीव को सुख दुःख कैसे भुगा सकता. (उत्तर) जड़ पदार्थ मदिरा और जहरादिक है सो खाने पीने से चेतन की कहो क्या गति होती है, प्रत्यक्षपने परवश होकर सुध बुध भूल दुःख पाता है, और प्रत्यक्ष देखते हो संसार में सर्व वस्तुओं का बनना जीव के उद्यम से जड़ पदार्थ लोह पत्थर लकड़ी के औजारों से अनेक पदार्थों की सिद्धि होती है. (प्रश्न) जीव तो सर्व सुख चाहता है फिर दुःख का काम कैसे करता है. (उत्तर) जैसे मक्खी शहद घी में सुख की अभिलाषा कर प्रवेश करती है फिर तो जो हाल है सो तुम हम देखते हैं. (प्रश्न) मक्खी में तो ज्ञान नहीं है मनुष्य में तो ज्ञान है फिर दुःख का काम कैसे करता है. (उत्तर) मक्खी के क्षयोपशम माफक मक्खी में भी ज्ञान है मनुष्यों के क्षयोपशम माफक मनुष्य में भी ज्ञान है उन्हों में भी आपस में तरतमता है तो आप को विचार करना चाहिये चोरी जुआ, रंडीबाजी, रोगों पर कुपथ्य करने आदि से दुःख क्यों पाता है, कहोगे कि अज्ञान से, तो विचार लो अज्ञान कर्म उस ने पहले बांधा है तभी तो उस को आगे कष्टकारी वस्तुओं की बुद्धि पैदा होती है, सो कहा भी है " दोहा—को सुख को दुःख देत है कर्म देत झकझोर, उलझत सुलझत आप ही धजा पवन के जोर." " बुद्धिः कर्मानुसारिणी " फिर कृष्ण ने अर्जुन से कहा है. " यतः अवश्यमेव भोक्तव्यं, कृतं कर्म शुभाशुभं, कृतकर्मस्य क्षयो नास्ति, कल्पकोटिशतैरपि. " अर्थ इस का प्रकट है

(प्रश्न) हम तो यों जानते हैं कि परमेश्वर ही जीवों को सुख दुःख देता है, हुक्म वगैर कुछ नहीं होता. (उत्तर) तुम को अज्ञान का उदय है इस वास्ते ऐसा कहते हो, भला तुम को हम पूछते हैं, एक ने एक आदमी को मारा, एक ने चोरी करी, ये तुम्हारी समझ मुजिब तो ईश्वर के हुक्म से ही ठहरेगा तो फिर इसकी सजा राजा वा ईश्वर देगा या नहीं, तो कहोगे, देगा. भला पहले तो उस को हुक्म दिया फिर सजा क्यों, तो कहोगे ईश्वर ने हुक्म ऐसे कामों का नहीं दिया उसने शैतान के बहकाने से किया, बस सोच लो वह कर्म जो है उसी को तुम शैतान कहते हो, बोली का फर्क है राजा तो सर्वशक्तिमान् है नहीं और न उसको त्रिकालदर्शी ज्ञान है इस वास्ते पुलिस आदि महकमे बनाकर गवाह (साक्षी) पर अन्याय को रोक चाहता है जिस पर भी अन्यायी तो तरह २ से अन्याय करने से बंद नहीं होते, ईश्वर सर्वशक्तिमान् है और परम कृपावंत है, तो फिर प्रथम पाप करते प्राणियों को रोक ही क्यों नहीं देता फिर सजा देने में तसदी लेता है, तुम बुद्धि खर्चो न तो ईश्वर पाप वा पुण्य कराता न सजा देता सब कर्मों की रचना है, (प्रश्न) हम को इस पर ईश्वर की रचना मालूम देती है, दिन रात ऋतु वगैरः मर्यादा किस ने बांधी है इत्यादि अनेक बातें हैं. (उत्तर) यह संसार में पांच समवायों का संबन्ध है सो हम तुम को समझाते हैं, इस संसार में छव दर्शन हैं. कालवादी १, स्वभाववादी २, भवितव्यतावादी ३, कर्मवादी ४, पुरुषकृत उद्यमवादी ५ और छठादर्शन सर्वज्ञस्याद्वादी ६. (प्रश्न) हम समझे नहीं, यह

क्या बात है? (उत्तर) कालवादी कहता है, काल ही से सब कुछ होता है, जैसे काल से ही सृष्टि की उत्पत्ति होती है, काल से ही नाश होता है; ऋतुकाल पर औरत गर्भ धारती है, काल से पुत्र जनती है, काल से बोलना, काल से चलना, काल से दूध का दही होता है, काल से दरख्त के फल लगना है, काल से तरह २ के पदार्थ होते है, काल से चौबीस तीर्थंकर, बारह चक्रवर्त्त, नवनारायण, नव प्रतिवासुदेव, नव बलदेव, नव नारद, ग्यारह रुद्र होते हैं, काल से उत्सर्पणी अवसर्पणी के छः आरे होते हैं. सतयुग, द्वापर, त्रेता, कलियुग दिन, रात, पक्ष, मास, ऋतुधर्म होता है. काल से बालक विलास, काल से यौवन में काले केश होते हैं, काल से बुढ़ापे में इन्द्रियों का शिथिल होना इत्यादिक बातें सब कालवादी काल से ही बतलाता है, काल को ही ईश्वर मानता है २, तब स्वभाववादी कहने लगा अरे ! काल से क्या होता है, सब वस्तु स्वभाव से ही पैदा होती है और स्वभाव से ही विनाश होती हैं, देखो छतेयोग यौवनवती स्त्री बांझनी के सन्तान नहीं होता औरत के मुंह पर तथा हथेली पगथली में बाल नहीं उगते, नीम के दरख्त के आम नहीं लगते, बसंत में बागों की हरियाली होती है पंखों में चित्राम कौन करता है, सांझ की वक्त बद्दलों में रंग करता है, जीवायोनि में तरह २ की अंगोपांग की रचना, हिरनों सुंदर नेत्र, बोर बबूल आदि के तीखे कांटे, रूप और रंग गुण २ वस्तुओं में, जुदे २ सांप में जहर, उसके मस्तक की मणि जहर देवे, पहाड़ थिर, हवा का चलना, अग्नि की झाल ऊंची

जाना मछली और तुंबा जल में तिरे, कौआ ऊंट पत्थर डूब जावे, पांखों वाले जानवर उड़ें, सूंठ से वाय मिटे, हरड़े आदि से दस्त लगे, कोरडू सीजे नहीं, देश की तासीर से जमीन में लकड़ी का पत्थर हो जाय, सूर्य गरम चन्द्रमा ठंडा भव्य जीव मोक्ष जाय, छओं द्रव्य अपना २ स्वभाव नहीं छोड़ें, ऐसे स्वभाववादिओं का कहना है २, तव भवितव्यतावादी कहने लगा, अरे ! काल और स्वभाव से क्या होता है, भवितव्यता वगैर कोई काम सिद्ध नहीं होता, दरियाव में तिरे चाहे जंगल में भटके क्रोड़ों भी यत्न करे अनहुई होय नहीं भवितव्यता होती है सो ही होता है, आम के वसंत में मांजर लगती है; कोई हवा से अथवा मनुष्य जानवर खंखेर भी देवे तो भी आम लगने हैं सो लगे ही जिधर की तरफ भवितव्यता होती है, प्राणी का मन उधर ही दौड़ता है सौ वर्ष उद्यम करे वह वस्तु नहीं मिले भवितव्यता के वश वगैर विचारे आय मिलती है, आठवां चक्रवर्त्ति सभूम दरियाव में डूबा, ब्रह्मदत्त बारमें चक्रवर्त्ति की आंख गोवाल ने फोड़ी, कृष्ण नारायण की द्वारिका जली, पांवों में बाण लगा, कोयल पर शिकारी ने बाण तका ऊपर से सिकरा तक रहा है, कोयल कूक रही है, हाय प्राण कैसे बचेंगे अकस्मात् बाण टूटा सो सिकरे के लगा, शिकारी को सांपने डंक मारा, कोयल के प्राण बचे यहां भी नियति बलवती रही शस्त्र से मारे आदमी भी, जी जाते हैं और हजारों यत्न करने वाले मकानों में बैठे भी मर जाते हैं, इत्यादि बातों से नियतिवादी भवितव्यता सिद्ध करता है ३, तब कर्मवादी बोला—काल स्वभाव भवितव्यता से क्या होता

है, कर्म करता है सो होता है, कर्मों के वश नरक तिर्यंच मनुष्य देव गति में जीव जाता है, कर्म के वश राम बनवास में रहे, सीता को कलंक चढ़ा, कर्म से लंकापति रावण का राज्य गया और लक्ष्मण के हाथ मारा गया, कर्म से जीव चींटी और कर्म से रोग सोग जीव भोगता है, कर्म के वश ऋषभदेव जगत्कर्त्ता परम पुरुष को वर्ष भर अन्न जल नहीं मिला, चौबीसवें अरिहंत जगद्गुरु के कानों में गोवाल ने कीले ठोक दिये, एक घोड़े पालकी चढ़े फिरते हैं और एक उन्हीं के सामने पैदल दौड़ते हैं, उद्यम हजारों जगत में लोग करते हैं लेकिन कर्म बिदून फल प्राप्त नहीं, उंदर एक ने उद्यम किया, सो छाबड़ी काटी अंदर बहुत दिनों का भूखा सांप बैठा था सो उस मूसे को खाकर जंगल में चल धरा. इस वास्ते उद्यम कर्म बिना सिद्धि नहीं इत्यादि बातें कर्मवादी कहता है ४, तब ईश्वरवादी अर्थात् उद्यमवादी कहने लगा—पूर्वोक्त चारों ही सामर्थ्यहीन है, सब कामों का साधनेवाला एक उद्यम है, उद्यम से क्या २ काम नहीं सिद्ध होता, रामचंद्र ने उद्यम से लंका का राज्य लिया कर्म और भवितव्यता के भरोसे सत्वहीन पुरुष रहा करते हैं, देखो उद्यम से तिल में से तेल निकलता है, उद्यम से एकेंद्रिय बेल है सो दरख्त के ऊपर चढ़ती है, एक वक्त जो उद्यम से नहीं बने सो दुबारा बुद्धि से उद्यम करे तो बन जाता है, उद्यम बिना अन्न नहीं खाया जाता, मुंह में ग्रास बिना उद्यम नहीं प्रवेश करता, कर्म तो पत्र है, उद्यम है सो बाप है, क्योंकि उद्यम करने से कर्म दूर होता कर्मों के मर्म का विचार करने से मालूम देता है, दृढ़प्रहारी ने

चोरी करते वक्त गौ हत्या, स्त्री हत्या, बाल हत्या और ब्रह्म हत्या करी थी सो क्षमावंत तपेश्वरी बनके छः महीने में कर्म खपाय केवली अरिहंत हो गये, बूंद २ से तलाव भर जाता है कंकर २ से गढ़ बन जाता हैं, यहां उद्यम ही प्रधान है, उद्यम से पानी पहाड़ में से रस्ता कर देता है. उद्यम से मूर्ख पंडित हो जाता है, उद्यम से निर्धन धनवंत हो जाता है. ऐसे इस संसार में उद्यम से सर्व कार्य की सिद्धि है इत्यादि युक्ति ईश्वर कर्त्ता वादी उद्यम वादी का कहना है ५, यह पांचों प्रति वादी अदल इन्साफी श्री सर्वज्ञस्याद्वादी के पास लड़ते २ आये, तब श्री सर्वज्ञस्याद्वादी इन्हों का इन्साफ किया, अहो ! प्रति वादियो तुम लोगों ने एक २ नय पकड़ा है सो मिथ्यात्व है. ये पांचों ही समवाय मिले बगैर कोई भी काम सिद्ध नहीं होता, जैसे पांचों अंगली इकट्ठी होती हैं तब सब कामों की सिद्धि है एक २ अंगली का दृष्टांत श्राद्ध विधि ग्रंथ में हैं कोई पुरुष युद्ध में सेनापति को बड़ाई देता है लेकिन समस्त फौज मिलके रण जीतती है एक आगे वान होता है, ऐसे ही किसी कार्य में काल अग्रेश्वरी चार समवाय पिछाड़ी कहीं ही स्वभाव अग्रेश्वरी चार इसके पिछाड़ी इस तरह पांचों का समवाय संबन्ध है कोई भी काम विना पांचों के होता ही नहीं जैसे सूत के तांतुओं का स्वभाव है वस्त्र बनने का, काल के क्रम से बनता है. भवितव्यता होय तो ही बने नहीं तो कितने ही विघ्न होते हैं. जुलाहे का उद्यम पहरने वाले के कर्म, इस वास्ते समस्त कामों की सिद्धि पांचों समवायों करके है, एक को कर्त्ता मानना सो एकांत नय हठ ग्राही

मिथ्यात्व है. धन्य है सर्वज्ञस्याद्वादी अरिहंत भगवंत जिसने यथार्थ न्याय सर्वांगनय से ठहराया. जैसे पांच अंधों ने एक हाथी के एक २ अंग पकड़ा सूंड, पकड़ने वाला लोह की दांतरड़ी घास काटने की उसकी शकल वाला यह जानवर है. दूसरे अंधे ने कान पकड़ा सो बोला यह जानवर छाज जैसा है. तीसरे अंधे ने पांव पकड़ा सो बोला जाड़े मूसल जैसा यह जानवर है. पूंछ पकड़ने वाला अंधा बोला यह जानवर बुहारी जैसा है पांचवां अंधा पीठ पर हाथ फेर के बोला यह जानवर मांचे जैसा है इत्यादि अपने २ हठ से पकड़े हुवे वाद से आपस में लड़ने लगे. यह अंधे कुल ग्राम के वाशिंदे थे, पहली इन्हों ने हाथी देखा नहीं था, इतने में हाथी का जानने वाला सूझता हुवा पुरुष आया उसने कहा क्यों लड़ते हो यह पांचों ही अंग का धारणे वाला एक यह हाथी नाम का जानवर है जो २ अंग तुमने पकड़ा है सो एक पक्ष सच्चा ही है बाद उन पांचों को पांचों ही अंग समझाय एक हाथी सिद्ध किया. इस दृष्टान्त मुजब संसार में पांच दर्शन हैं छठादर्शन जैन सर्वज्ञस्याद्वादी का है. इसका न्याय सर्वांगनय से अंकित है. (प्रश्न) मनुष्य सर्वज्ञ होता ही नहीं, तुमने मताभिमान से अरिहंत को सर्वज्ञ लिखा है [illegible] मनुष्य भी हो [illegible] बुद्धिमान कहो, सर्वज्ञ [illegible] (उत्तर) [illegible] हो, और न्यायवंत हो [illegible] उनकी मान्यता हुई [illegible] कोई वादी दोषी न माने [illegible] समझ लो [illegible]

पुरुष की मूर्त्ति ही सर्वज्ञ पना सिद्ध करती है कि ऐसी योग मुद्रा धारण करने वाला पुरुष अल्पज्ञ नहीं था तदउपरांत उन्हों के जीवन चरित्र से सर्वज्ञ पना सिद्ध है, संसार में भटकने की जड़ राग द्वेषादिक अठारह दूषण सो उन्हों का लेप भी केवल ज्ञान प्राप्त भये बाद उन्हों में नहीं था क्रोड़ानकोड़ इन्द्रादिक देवता जिस की सेवा करते थे. चौंतीस अतिशय, पैंतीस वाणी के गुण, आकाश में छत्र चमर देव दुंदभि आदि गुण और किसी देवों में नहीं था इस वास्ते तीर्थंकर केवली सर्वज्ञ थे. (प्रश्न) हम क्योंकर प्रतीत करें कि तीर्थंकर केवली सर्वज्ञ थे, न मालूम पीछे से तुम लोगों ने ऐसे अपूर्व गुण उन्हों के लिख दिये होंगे. (उत्तर) क्यों जी हमने लिख लिया होगा तो हम पूछते हैं और २ मतवादियों का हाथ किसने पकड़ा था कि तुम अपने इष्ट देवों का ऐसे गुण मत लिखो लिखा वही है कि जैसा २ गुण उन्हों में था और जैसा २ काम उन्हों ने किया था बस उन्हीं कामों के करने से उन्हों को ईश्वर माना है (प्रश्न) तुम को क्या खबर भई कि अर्हत सर्वज्ञ थे. (उत्तर) हम सम्प्रदाय परम्परा से सुनते आये हैं कि मन में जो कुछ जिसने विचारा उसको तीनों कालों की बात अर्हत परमेश्वर कहते थे इस उपरांत और यह आगम जो सिद्धांत है सो उन्हों का सर्वज्ञ वीतरागी पना सिद्ध करता है, उन्हों के कहे शास्त्र में किसी भी जगह स्वार्थ सिद्ध पना अथवा अपने शिष्य प्रशिष्यों की आजीवका सिद्धि नहीं लिखी है; केवल सर्व मोहादिक त्यागने से मुक्ति होती है ऐसा त्याग वैराग्य और दया की बारीकी का विचार विना जैन आगम

टाल और किसी मत के ग्रन्थों में नहीं है, न्याय इसका ऐसा मजबूत है सो किसी भी प्रतिवादी से खंडित नहीं हो सकता जैसे व्याकरण पढ़ा, व्याकरण पढ़ने वाले की परिक्षा कर सकता हैं, तैसे ही प्रेक्षावान न्याय वेत्ता उस सर्वज्ञ के आगम को सुन के पढ़के अर्हत परमेश्वर सर्वज्ञ थे ऐसा जान सकता है जिस परमेश्वर के वचन पूर्वा पर विरोध कर के रहित है बुद्धिमान डाक्टर बुहलर ऐसा लिखता है. जैन के तीर्थकर श्री महावीर तो दूर रहा लेकिन जैन धर्म का एक आचार्य श्री हेमचंद्र के साढ़े तीन करोड़ श्लोकों की रचना शब्दानुशासन देख के मेरी कलम सर्वज्ञ लिख सकती है ऐसा बहुत से अंगरेजों ने निश्चय किया है. नाम कहां तक लिखें और विद्या से हीन हैं तथा पक्षपाती हैं, उन्हों को तो क्या खबर होय. (प्रश्न) दूसरे धर्मों में क्या पण्डित हुये नहीं, या हैं नहीं उन्हों ने तो अर्हत को सर्वज्ञ नहीं लिखा. (उत्तर) जो वे अर्हत को सर्वज्ञ माने तो दूसरा धर्म ही उनके क्यों रहे. मिथ्यात्व मोहनी के उदय से उन्हों को यथार्थ सूझा नहीं जैसे सन्निपात रोगी को पांडु रोगी को सफेद वस्तु भी अन्य रूप से दिखाई देती है और फिर मत पक्ष ने इतना विरोध जाहिर किया कि जैन मन्दिर में नहीं जाना, हाथी से मरना कबूल, ऐसे द्वेषी अर्हन्नागम कब सुने और बांचे जिन २ पुरुषों ने देखा वा सुना उन्हों ने तो समझ ही लिया [illegible] हरिभद्र मलयगिरि गुणाकर [illegible] ने, [illegible] किसी को झूठा नहीं कहना न निन्दा तो किसी मत की भी नहीं करना. निन्दा महा पाप

काहेतु हैं जैसे हरि भद्राचार्य ने लिखा है. " पक्षपात नमेवीरे, न द्वेष कपिलादिषु, युक्ति मद्वचनंयस्य, तस्यकार्यः परिग्रहः " १ हमने तो सर्वांग संपन्न सर्वज्ञ का शास्त्र देखा और उस में जो २ कथन हैं सो मात्र सिद्धांत है, संसार में सर्वाचार ज्ञान उस ने ही प्रकट करा उस में ही यह आयुर्वेद है, यद्यपि वीत रागी हुये बाद फिर संसार कया नहीं विचारते पूछे जिसका प्रत्युत्तर सर्वज्ञ निश्चय देवे बाकी तो षट् शास्त्र आठ निमित्त उन्हों के उपदेशित मोक्ष मार्ग साधक धर्मोपदेश में मिला हुवा है, " किंबहुना " इस बात को समझकर यह समझना चाहिये जीव और शरीर का आरोग्य संबन्ध है वहां तक सब काम चलता है सो अपने देखते हैं, जीव शरीर में से निकल के जाता है और क्या २ कार्य करता है, सो नहीं दीखता इस वास्ते मार्ग मुद्दारडीला नु छे यह लिखावट सची है, चेतन और प्रकृति से बुद्धि और मन का सहचारी पना है, पांच ज्ञान इन्द्री; हैं जैसे चमड़ी से स्पर्श का, १ नेत्र से रूप का २ इत्यादि पांचों का ज्ञान प्रकट है, कर्मेंद्रिय से बोलना, पकड़ना, चलना, पेशाब करना, और मल त्याग करना सो, वाणी १, हाथ २, पांव ३, लिंगेंद्री ४, गुदा ५, यह जानना. जल १, अग्नि २, हवा ३, पृथ्वी ४, और आकाश ५, इन पांचों में जो २ गुण रहा है ऐसे गुण इस शरीर में मालूम देता है. वाहिर जो इन्द्रियों की शकल दिखाई देती है, सो ज्ञान इन्द्री नहीं है इन्हीं के अन्दर जो इंद्रिय शक्ति है सो अपना २ काम करती है ज्ञान इंद्रिय वगैरह बाहिर की दीखने वाली शकल मांस खून और हाडों से बनी हुई है लेकिन असल में

जो अन्दर ज्ञान इन्द्रियें और कर्म इन्द्रियें कुदरत का काम देने वाली ज्ञान तंतु और गति तंतु है सो ज्ञान इन्द्रियें और कर्मेंद्रियों का काम देती है ऐसे शरीर में जीवात्मा ने निवास किया है. इस जीव के बाबत अनेक मतांतरियों ने संकल्प विकल्प किया है. जीव है सो क्या चीज है; इसका प्रत्यक्ष प्रमाण तो कुछ नहीं. कोई तो कहता है शरीर में से चलती रसायणिक क्रिया में से उत्पन्न भया चेतन है, इस प्रश्न के करने वाले चार्वाक् बृहस्पति नाम के आदि में भये हैं. यह प्रश्न बहुत कठिन है इसका शंका समाधान नन्दी सूत्र की टीका में बहुत है, पदार्थ वादियों के मत में भी यही बात है शरीर और चेतन जुदा २ नहीं है. शरीर में खून है सो जीवन है और इस खून का फिग्ना दूसरा जो चेतन वाला पदार्थ उसके ऊपर अधार रक्खे है, वह पदार्थ प्राणवायु है. अंगरेजी में उसको आक्सिजन कहते हैं, यह प्राणवायु खून को साफ करती है. इस से प्राण धारण रहता है; इस वास्ते वैद्यक में इस वायु का नाम सार्थक धरा है. यह प्राणवायु शरीर की क्रिया वास्ते जितनी चाहिये इतनी नहीं मिले, तब शरीर का चेतन काम पड़ जाता है, और बिलकुल नहीं मिले तब शरीर की सब क्रिया बंद हो जाती है, उसको मौत कहते हैं, जिस में जीवित तत्व कम होता है, उस में चेतन वाला खून कम होता है. शुद्ध और प्रमाण वाले खून से मनुष्य में चेतन और बल जियादा होता है जो आदमी नाताकत और दुबले होते हैं, उसका भी यही कारण है. लम्बी उमर और कम उमर भी इसी खून से तासीर रखती है, कितनेक आदमियों का

जीव एकाएक कोई भी बीमारी बनते ही निकल जाता है और कितनेक रोगों में जिंदगी का अंश क्रम २ से कम होता जाता है और चेतन कम होता २ आखिर बंद हो जाता है. आत्मवादी कहता है जीव शरीर जुदे २ हैं, आत्मा परमात्मा रूप है, लेकिन प्रकृति से बंधा भया वीर्य और स्त्री के आर्त्तव का आहार पर्याप्ति करता शरीर पर्याप्ति बांधता है, इस वास्ते जीव कहलाता है पीछे इन्द्रिय पर्याप्ति ३ फिर सासोश्वास पर्याप्ति बांधता है ४, मन पर्याप्ति ५, और भाषा पर्याप्ति ६, ऐसे छः पर्याप्ति मनुष्य बांधता है. ६ कई एक पदार्थवादी ऐसा कहते हैं, जीव कहां से आय के प्रवेश नहीं करता है. वीर्य में और स्त्री के आर्त्तव में रहे भये जीव हैं सो ही प्रवेश करते हैं उस पर ऐसा दृष्टांत देते हैं जैसे सूरज की किरण में अग्नि है और सूर्य कांतमणी में भी अग्नि है ये दोनों अलग २ होय जहां तक बादर (थूल) अग्नि पैदा नहीं होती इस दृष्टांत मूजब रज और वीर्य में रहे जीव ही पैदा होता है इति, वह जीवात्मा सर्व विषयों को जानता है क्योंकि ज्ञानानंद पूर्ण पवित्र हैं इस वास्ते जीभ से पांच रस. अथवा छः रस जानता है, आंख से पांच रंग, नाक से सुर भी गंध १ दूर भी गंध २, कान से जीव शब्द १ अजीव शब्द २ और इन दोनों से मिल के निकले सो मिश्र शब्द ३ जानता है. स्पर्श ८ ठंडा १, गर्म २, हलका ३, भारी ४, सुंहाला ५, खरधरा ६, लूखा ७ और चुपड़ा ८ इत्यादि इन्द्रियों द्वारा इन स्वरूपों का भोक्ता बन रहा है. अब पुरुषों स्वभाव ३ तरह होता है और ६ तरह का भी होता है लेकिन यहां तीन का स्वरूप दिखाते हैं. सत्वगुणी प्रकृति, धर्म दयावंत

आस्तिक पना नव तत्वों पर, उदारता सम्भावना क्रोध रहित पना सत्यवचन बुद्धिवान् धीरज क्षमा ज्ञान सरलपणा निंदा विकथा अशुभ कर्म करता शंके इच्छा रहित करे बड़ा विनयवान १; रजोगुणी प्रकृति, क्रोधी दूसरे को मारने की इच्छा सुख की अधिकार इच्छा करे, कपटी कामी बुरे वचन बोलने वाला अधैर्य अहंकार और भटकने की इच्छा २ तमोगुणी प्रकृति, नास्तिक पना, स्वर्ग नरक मोक्ष पाप पुण्य माने नहीं बहुत खेद बड़ा आलस्य दुष्ट बुद्धि अति निंदित काम अति निंदित सुख में प्रीति बहुत नींद अज्ञान अति क्रोध महा मूर्ख पना पहली १५८ प्रकृति में यह सब आ गया है तो भी जियादा समझने को यहां फिर लिख दिया है इस में फिर कोई में दोय गुण की प्रकृति कोई में तीनों हो मिले भये इत्यादि अनेक भेदों के मिले भये भी मनुष्यों की प्रकृति देखने में आती है आत्मा है सो शरीर रूपी घर का राजा है प्रकृति से बंधा हुवा इस से सर्व व्यवहार करता है शरीर बिना पहचाने नहीं जाता जीव बिना शरीर कुछ कार्य नहीं कर सकता इस राजा के सब कामों में इधर उधर फिरने वाला मनरूपी प्रधान है मार मार बात को समझाने वाला अंतःकरण रूपी न्यायाधीश है और बुद्धि चित्त वगैरा उसके सलाहगीर हैं, जहां तक ये सब कारबारी अपने २ योग्य रीति का काम बजावें जहां तक शरीर का भोक्ता जीव राजा बहुत वर्षों तक सुख और २ से राजधानी भोगता है जब दुर्योग कारबारी अपना २ धर्म का [illegible] रीति पर चलने लगते हैं तब शरीर रूप घर में [illegible] रोग पैदा होता है उस बलवे को दबाने को जीवात्मा

आप उपाय नहीं करता है तब शरीर की दशा बिगड़ती है. जैसे टूटा हुवा किला निरुपयोगी होने से उस में रहने वाला राजा छोड़ दूसरे मजबूत किले का आसरा लेता है इस तरह यह जीव बिगड़े शरीर को छोड़ बड़ा दुःखी होकर निकल कर दूसरे शरीर की रचना रचता है, शरीर में सुख होने से जीव सुख मानता है और शरीर के दुःख से दुःख लोग कहते हैं. जीव है सो शरीर रूपी कैद खाने में पड़ा है, सच है, जिस शरीर में वह दुःख पाता है, तो वह कैद खाने से भी जियादा दुःख की जड़ है और जो सुख पाता है तो यही शरीर सुख शांति का भुवन हो जाता है और इसी शरीर सेती प्रकृति (कर्म की) उपाधि छोड़ मुक्ति प्राप्ति कर लेता है, शरीर से भव भ्रमण भी पैदा कर लेता है. स्वर्ग और नरक भी शरीर से ही जीव बांधता है, उमर की कुछ मुद्दत नहीं है तो भी इस वक्त सौ वर्ष की उमर गिनने में आती है. इस मध्य क्षेत्र आर्यावर्त्त आश्री, सुख से शरीर का निरभाव चले तो, नहीं तो थोड़े ही मुद्दत में पूराकर निकलता है, जैसे भोजन कर दौड़े भोग करे तेल मसलावे पगचंपी करवावे, स्नान करे, अथवा भोजन कर दिन को सो जावे, इन वार्तों से उपक्रम लग के उमर पूरी थोड़ी मुद्दत में ही कर गुजरता है, इत्यादि आयुक्षय करने का अनेक वरताव है आगे दिन रात्रि चर्या में लिखेंगे. उस मूजब चलना, इस संसार में चिंता शोग दुःख और रोग वगैर का विरला आदमी होगा यह सब खराबी की जड़ अज्ञानता है और यह अज्ञानता जीव ने ही कर्मों के संबन्ध से पहली बांधी है, इस वास्ते शुभ उद्यम से शरीर को

सुखदाई योग में आत्मा को बहुत मुद्दत तक कायम रखना यह अपना फर्ज है, फिर शुभ कर्त्तव्य करता हुआ परमेश्वर पद को प्राप्त करना. (प्रश्न) तुमने पेश्तर लिखा है सुख दुःख कर्मों से होता है, फिर आरोग्य शरीर को रखना, परम पद का उद्यम करना लिखते हो. (उत्तर) हे मित्र ! हमने तो सब लिखा है तुम अच्छी तरह विचारो कर्म किस का नाम है, किया जाय सो कर्म वह तो उद्यम जीव से ही होता है, पांच समवायों में हमने सिद्ध कर दिया हैकोई भी काम पांचों समवाय मिले बगैर नहीं होता, इस उपरान्त फिर तुम्हें समझाते हैं. सर्वज्ञ भगवान् कहते हैं कहां तो कर्म बलवान होता है तो जीव को दबा लेता है, कभी जीव बलवान होता है, तब कर्म को हटा देता है. शरीमें सब दोष बराबर हैं, तब तक तो रोग नहीं होता, गर्म और ठंड बराबर है, २ तो व्याधि नहीं होती, ठंड बधेगी तब तो कफ, और बादी की बीमारी होती है, गर्मी बधने से पित्त की, पहली कहे भये तीन गुण में से एक सतोगुण भी आनंद देता नहीं, इसी तरह रज और तम भी आनंद देता नहीं, संसार में जो फक्त शांति पने कर बैठे रहते हैं, वह भी सुखी नहीं हैं और जो कोई बुद्धि बिगर तामसी स्वभाव रखकर आलसु होय ऊंघते रहते हैं जैसे फक्त मीठा अन्न ही को खाया करे और वह पोषण कारक वस्तु है, तो भी फक्त सतोगुणी होने से आनंद नहीं आता उस के साथ रजोगुण वाला दाल, साग और तमोगुण वाला मिर्ची मसालों का स्वाद होता है तभी जिह्वा इंद्रिय मजा पाती है, रजो गुणी शक्कर में मीठा जियादा लडू वगैरः में जियादा डाला जावे तो मिठास जियादा होने

के सबब खाया नहीं जाता और तमोगुणी आटा जो जियादा डालने में आवे और शक्कर कम डालने में आवे तो वायु जियादा होकर पचे नहीं तब दस्त की बीमारी पैदा होती है इस तरह जगत में जहां देखो तहां समानता अथवा योग्य प्रमाण में ही स्वाद देखने में आता है और जहां २ प्रकृति का हीन योग अथवा अति योग देखने में आता है, वहां एकता समानता और सुख का नाश देखने में आता है, जैसे अपने हिंद के मनुष्यों में सतोगुण का अति योग दाखिल भया जिस से सब पृथ्वी की प्रजा को सब के पिछाड़ी रहना पड़ा, जिसमें भी अग्रेश्वरी वणिक जाति, जब तक तीनों गुण जगह की जगह वरतते थे तब तक यह दशा हिंद की नहीं थी, संसार से जिन्हों ने विरक्तता धारली है, उन्हों में तो पूरा सतोगुण ही चाहिये सो भी विरले हैं. रजोगुण के अति योग से मुसलमानों की बादशाही टूट गई, तैसे ही यूरोप की प्रवृत्ति पूजा, प्रजा की घटती का वक्त चला आता है और तमोगुणी पने से पहाड़ों के बाशिंदे भील वगैरः हमेशा दुष्ट बुद्धि करके वह जंगली हालत में जिंदगी गुजारते हैं, जिन लोगों में सतोगुण का अति योग है वहां अप्रवृत्ति अर्थात कम उद्यमी पना अथवा संसार से विरक्तता के कारण दरिद्र पना देखने में आता है, ऐसा होना चाहिये जैसे राम सतोगुणी न्याय-संपन्न दयावंत थे परंतु रावण अन्याई पर कैसा रजोगुण और तमोगुण बतलाया और जहां रजोगुण का अति योग है, वहां भी थोड़ा उद्यमी पना अथवा संसार में बहुत अनुराग (प्रेम) होने से भी दरिद्री पना देखने में आता है फिर वहां राग, द्वेष, कुसंप, क्लेश,

झूठ, कपट और कजिये की बढ़ोतरी देखने में आती है और जहां तमोगुण जियादा है, वहां बुद्धि का भ्रष्ट पना, अधम पना अति क्रोध, बहुत आलस्य और बहुत अज्ञान पना देखने में आता है और जहां पर इन तीनों की समानता है और जितने २ अंशों करके यह तीनों गुण रहे भये हैं, इतने मात्र ही सुख संपत्ति शांति अच्छा उद्यम देखने में आता है. हिंदुस्थान की प्रजा में अंदर २ कुसंप देश में कुसंप जाति में कुसंप न्यात में कुसंप कुटुम्ब में कुसंप आखिर घर में कुसंप और शरीर में भी कुसंप यह तीनों ही प्रकृति की असमानता सब तरह के बिगाड़ का हेतु है. वास्ते प्रकृति का एक पना और समानता यत्न से रखना यही अपना कर्त्तव्य है यही सुख की जड़ है. यही निरोगी पना है, यही वैद्यगी का सार है. शरीर और मन में प्रकृति का फेर फार नहीं होने देना यही वैद्य विद्या का पहला कर्त्तव्य है और अज्ञान पने से अथवा पूर्व कृत पाप कर्म के उदय से प्रकृति बिगड़े बाद उसको समानता लाने का यत्न करना यह वैद्य विद्या का दूसरा कर्त्तव्य है, रोग मिटाने के अथवा पहली से रोग होवे ही नहीं ऐसे उपाय आगे बताये हैं जिसको बेर २ ध्यान में रखने की जरूरी है, जिसमें भी रोग मिटाने के उपायों से रोग होवे ही नहीं ऐसी विधि से चलने की विधि को ध्यान में लाने की बहुत जरूरी है इस ग्रंथ में अच्छी तरह से यह बात लिखी है ॥

इति श्रीमद्जैन धर्माचार्य संग्रहीते उपाध्याय राम ऋद्धिसागरगणिः विरचिते वैद्यदीपक ग्रन्थे सृष्टि-वर्णनो नाम प्रथमः प्रकाशः ॥ १ ॥

प्रकाश दूसरा ॥
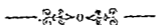
किरन पहली, शरीर ॥

शरीर की रचना का विस्तार और सूक्ष्म ज्ञान मात्र ग्रन्थ वांचने से नहीं मिल सकता है, सब वैद्य लोग शरीर का सूक्ष्म ज्ञान समझ नहीं सके ऐसा भी नहीं हो सकता तो भी अशक्य है तो भी सामान्य ज्ञान तो हर मनुष्यों को समझना चाहिये, दूसरी विद्या का अपने चाहे जितना सूक्ष्म ज्ञान सीख भी लिया, लेकिन जहां तक शारीरक विद्या संबन्धी थोड़ा भी ज्ञान नहीं सीखा तहां तक मनुष्यों की पर्षदा में तथा ज्ञानियों की सभा में अपने पिछाड़ी ही है, ऐसा मानना चाहिये, इस वास्ते यह विद्या की वाकिफकारी होने को क्यों जुदे २ ग्रन्थ वांचने की तसदी लेते हो जो वर्णन शरीर संम्बधी इस ग्रन्थ में किया है, उसमें से सामान्य ज्ञान तो वांचने वालों को जरूर ही होगा ऐसी आशा है ॥

गर्भ की उत्पत्ति ॥

जो बाहर की शकल देखने में आती है, उसके वर्णन करने की जरूरी नहीं दिखती. शरीर जीवात्मा [illegible]

के अंदर जितनी तैयारी होती है, तैसी ही इस शरीर में सब तरह का साधन मौजूद है, मनुष्य का शरीर यह कुदरती अद्भुत कर्मों की रचना का एक उम्दा नमूना है, जैसे आदमी जड़ पदार्थों से घड़ियाल में चलने की शक्ति धर देता है, तैसे शरीर रूपी घड़ियाल में चेतन का उद्यम प्रकृति रूप जड़ पदार्थ से बना हुवा है. ज्ञान और गमन करने वाला जीव है, जैसे घड़ियाल का चक्र घस जाने से अथवा अकस्मात् कोई कारण बनने से चलते चक्र अटक जाते हैं उस ही तरह यह शरीर रूपी घड़ियाल भी बन्द पड़ जाती है कर्म रूप का सहचारी चतुर कारीगर चेतन का बनाया घड़ियाल जो शरीर सो मनुष्य वह भी स्त्री पुरुष के संयोग से बनाता भी है और नहीं भी बना सकता तो एक हिसाब मनुष्य से शरीर की रचना की कारीगरी किसी किस्म रच के जीवात्मा नहीं डाले जाता यह कुदरती मामला है, तो भी इस घड़ियाल का संचा और काम और उसके चक्र को पण्डितों ने उखेल २ कर उसका सूक्ष्म ज्ञान मनुष्यों ने समझ लिया है. विचार तो यहां तक है कुदरती कारीगरी के संचे में कोई हरज पहुंचा होय तो मनुष्य की अकल और चातुरी शक्ति बने जहां तक सुधार तो सकती है यह भी काम मनुष्य बुद्धिवानों का कम नहीं है, जिस से वह शरीर रूपी घड़ियाल बहुत दिनों ... चल सकती है, ऐसी तजवीज कर सकता है इतने वर्षों तक .स शरीर घड़ियाल का जितना ज्ञान मैंने प्राप्त किया सो सबों के समझने वास्ते लिखता हूं ॥

गर्भ की उत्पत्ति और वृद्धि ॥

गर्भ में यह शरीर किस क्रम से बंधता है और वृद्धि पाता है तो पहले जानने की जरूरत है, इस में वह तो बड़ा बारीक विचार है कि गर्भ किस तरह पैदा होता है सो तो पूरा समझना बड़ी कठिन बात है. अपने लोगों में यहां तक अजान पना गतानुगत गडर प्रवाह से चला आता है और बगैर इस शरीर विद्या के अजान होने से इन २ वार्तों को सच्ची भी मानते चले आये जैसे कि हनुमान जी कान में पैदा भये, नासकेत जी नाक में, कीचक बांस की भूंगली में, मानधाता राजा पुरुष के गर्भ पेट में, रह गया इत्यादिक अनेक गपोड़ों को मानना और कहना उसको फलाने का शाप था और कहीं किसी का वरदान था – [illegible] का कारण है ॥

है. (प्रश्न) क्यों जी यह पुरुष और स्त्री के सम्बन्ध से ही गर्भ पैदा लिखी है, वह झूठ कैसे हों मनुष्यों का तो और एकेंद्री से लेकर कलम मे लिखा गया सो सब बिना माता पिता के गर्भ बगैर समूर्छिम तब तो जिसके मन में आवे वह [illegible] प्रकट ही है. एकेंद्री किसे और आप अपने चोरी झूठ बोलना जी[illegible] यह संक्षेप समझ जीव- भी अपने सत्कर्त्तव्य में लिख के ठहरा लेगा मनुष्य तिर्यचों के विष्ठा लेगा कि मैं ही परम पूज्य अंतरयामी ईश्वर हूं. [illegible]र्यच भी काम शरीर [illegible] लाखों को बुद्धिमान् बुद्धि से तपास करके फि[illegible]रन्त ही मर जाते और झूठे को झूठा मानेंगे. (उत्तर) तो बस तूने ज्ञानद्वारा देखा और समझ से ही इन्साफ हो गया, कि समझ से कांचद्वारा भी

दीखने लगा यह भी सर्वज्ञ भगवान् की सर्वज्ञता सिद्धपना प्रत्यक्ष आज के जमाने में प्रतीति करने लायक जाहिरा भई, उन्हों ने तो पहले ही से कहा था कि वीर्य और खून वगैरों में जीव है परन्तु मिथ्यात्वी कहते थे यह जैनों का गपोड़ा है, लेकिन खुर्दबीन वगैरा वाले बुद्धिमानों ने तो सर्वज्ञ का वचन सत्य २ कर बतलाया. (प्रश्न) क्योंजी तुम्हारे सर्वज्ञों ने तार, बिजली, रेल, खुर्दबीन, फोनोग्राफ वगैरा क्यों नहीं बनाये, फिर सर्वज्ञता कैसी. (उत्तर) तुम को यह तो खबर है ही नहीं कि सर्वज्ञ कैसे होता है घनघाती कर्म के क्षय करने से तो केवलज्ञान होता है संसार का कोई भी काम उन्हों के करना बाकी नहीं रहा सो संसार का काम करें और कराये फक्त उन्हों के तो आप संसार से तिरना और सत उपदेश दे जीवों को तारना इतना ही वह शरीर रहा जहां तक था तुम वहां तक क्यों जाते हो. यह सर्व विद्या श्री ऋषभदेव सर्वज्ञ नहीं थे थे और तीन ज्ञान युक्त थे गृहस्थपने में ही थे जभी उन्हों ने बहत्तर कलायें चलाय दी थी. जो कुछ कलाविज्ञान तुम को आज के जमाने में देख के आश्चर्य होता है वह सब बहत्तर कला के अन्दर ही की है. (प्रश्न) अगर अन्दर की है तो यहां इन बातों का क्यों नहीं रहा ? (उत्तर) कई बातें कोई वक्त प्रकट होती हैं कोई वक्त लोप हो जाती हैं. (प्रश्न) हम तो यही जानते . विद्या पहले यहां नहीं थी इस वक्त अन्य देशांतरी बुद्धिमानों प्रकट की है, प्रत्यक्ष देखें हम तो वही सच्ची मानते हैं, हक नाहक ...र्च वालों की कलाकुशलता आगे ऐसी २ चीजों की थी के

हम कैसे मानें. (उत्तर) हम तुम्हें पूछते हैं क्या तुम प्रत्यक्ष टाल और कुछ प्रमाण नहीं करते हो अगर नहीं मानते हो तो बतलाओ तुम्हारा परदादा था या नहीं, दूर से धूआं देखते हो, अग्नि नहीं दीखती तो वहां पर अग्नि है, ऐसा मानते हो या नहीं, दरियाव का यह पार तो देखा है; पहला पार तो किसी ने देखा नहीं इस वास्ते पहला पार है या नहीं, इत्यादि अनेक बातों को नहीं देखा है, सो मानते हो या नहीं. (प्रश्न) यह बातें तो हम मानते हैं, अनुमान प्रमाण से, वह हमारा अनुमान प्रत्यक्ष से सम्बन्ध रखता है, जैसे हमने रसोई में अग्नि का धुआं देखा है, तब हम को अनुमान भया है कि जहां धुआं दिखाई देवे वहां जरूर अग्नि होती है, ऐसे ही बहुतों के परदादे हमने प्रत्यक्ष देखे हैं, इस से अनुमान होता है कि हमारा परदादा भी जरूर होगा. ब्रह्मपुत्र, सिंधु, गंगा वगैरः नदियों का पहला पार पांच चार दिन नाव में बैठ के जाने से देखा है इस वास्ते अनुमान करते हैं कि दरियाव का भी पहला पार होगा लेकिन तुम किस अनुमान से कहते हो कि हमारे आर्यवर्त्त में इत्यादि अनेक कलकुशलता मौजूद थी. (उत्तर) हमारा अनुमान भी प्रत्यक्ष से सम्बन्ध रखता है कि हमारे इस आर्यावर्त्त में बड़ी २ चमत्कारिक विद्या थीं, सुनो ! प्रथम तो हमारे देश में ऐसी कहनावत है कि "पानी की रेल कैसे जोर से चल रही है, फलाने आदमी की बात क्या तार बंधी है. अर्थात् क्या तार बंध बात करते हैं" इस से अनुमान होता है कि इस संसार में जो २ उपमा देने योग्य चीज होती है उस ही की उपमा दी जाती है; आकाश के फूलों की उपमा या

मनुष्य के सींग की उपमा नहीं दी जाती अर्थात जो वस्तु होती नहीं उसकी उपमा किसी जगह भी नहीं सुनी. दूसरा हमारा यह अनुमान प्रत्यक्ष से संबन्ध रखता है, हमारे इस देश के कारीगरों की बनाई भई अनेक चीजों को पहले अपने देश में ले जाते हैं, फिर उसी नमूने को देखकर बनाके यहां भेजते हैं, हमने देखा है जैसे ढाकाई मलमल का नमूना देख इकतारी मलमल बनाई, काश्मीरी दुशाले के नमूने पर ऊनी कपड़े बीकानेर से चमड़े की कुप्पियां इंगीज के विलायत जाती हैं, इत्यादि कहां तक लिखें नजर पसार के देखो. इस देश में बायता चंदेरी के दुपट्टे आदि कैसे २ कपड़ों की कारीगरी थी. आज बनना बन्द हो गया तो भी ८० वर्ष के आदमियों ने पहरा है और देखा है तो इस वक्त नहीं बनने के सबब उसकी क्या नास्ती मानी जायगी, परदेशियों की चीज की रमणीक और दाम कम, इस वास्ते लोग लेते हैं तब यहां वालों की वस्तु बिकती नहीं तब कारना बन्द भया लेकिन इन देशी परदेशियों की चीज एक भाव पड़ती है इस के दाम जियादा, ज्यों चले भी जियादा, परदेशी कारीगरी कलों की चीजें टूटे फूटे फटे बाद कोई काम नहीं देतीं, बुद्धि से विचारो बहुत कारीगरी के मकानात और अनेक वस्तुवें तो दंगे फिसादों में जाहिलों ने मिट्टी में मिला दीं रहे सबै भी आबू के जैन मन्दिरों की कोरणी, ताजबीबी का रोजा क्या देखने से बड़े २ विद्वान अंगरेज भी चकराते हैं और इस का नमूना नहीं बन सकता, बहुत नमूने रूप चीजों को अंगरेज सर्कार लंदन ले

तीसरा हमारे पास आगम प्रमाण कलाकुशलता का मौजूद है

सुदेव हिंड चरित्र में कल का हाथी एक पहर में सौ योजन चलने-
वाला बनाकर भेजा गया था उस के पेट में आदमी बैठाये गये थे.
वह ग्रन्थ अढ़ाई हजार वर्ष का बना मौजूद है राजा अशोक चंद्र
का चरित्र, कल से घोड़े रथ स्वतः चलने के बनाये गये थे, रामचंद्र
और कृष्ण के वक्त विमान चलते थे सो रामायण और प्रद्युम्नचरित्र
से साबित है. हमारे ग्रन्थों में तो विद्याधरों की बहुत ही कला-
कुशलता का बयान है. कहां तक लिखें उस कलाविज्ञान के
करोड़ में हिस्से की विद्या फैलनी नहीं है (प्रश्न) ग्रन्थों में तो
कविताई का दखल बहुत है थोड़ीसी बात का विस्तार और बड़ाई
बहुत की है उन सभों को सचा कैसे मानें. (उत्तर) कविताई का
दखल नगरी राजा रानी हाथी घोड़े आदि पदार्थों में जरूर है सो तो
साहित्य की मर्यादा है, अलंकार, नव रसादि रस बगैर साहित्य और ग्रन्थों
की शोभा नहीं दीखती लेकिन वह उपमा सत्य ही माननी चाहिये, जैसे
उववाईसूत्र में चम्पा नगरी का वर्णन, जैसे मुम्बई, कलकत्ता, जैपुर
आदि शहर प्रत्यक्ष हैं. राजा अशोक चंद्र का वर्णन जैसे आज है ॥

इस तरह कोई बात उस वक्त जियादा थी तो कोई बात इन्हों
में जियादा है, इस तरह तारतम्यता पुण्य के फेरफार से मनुष्यों
में होती ही है, जैसे दोहा—" पाग भाग सुकृत प्रकृत वाणी चाल
विवेक, अक्षर लिखे न एकसा देखो मुल्क अनेक" यह तो सब
एक सरीखे होते ही नहीं और इन वर्णन ग्रन्थों को सुन के अपनी २
उन्नति का कर्तव्य भी चारों वर्ण के बुद्धिमान् सीख के करने
भी लग जाते हैं अपनी २ हैसियत मूजब, जैसे हमारे बीकानेर के

राजाधिराज महाराज श्रीमान् गंगासिंह जी बहादुर ने अपने पूर्वज वीर पुरुषों का चरित्र सुन के छोटी ही उमर में वीर पुरुषों के अग्रेश्वरी बनकर चीन पर चढ़ाई करी और मान पाया, इस वास्ते ग्रन्थों का वर्णन भी हितकारी है व्यर्थ नहीं समझना, और जो जो यथार्थ इतिहास हैं सो तो जैसा भया वैसा ही लिखा है, उदाहरण कृष्ण ने गोवर्द्धन पर्वत उठाया यह तो सच्ची बात है, इन्द्र का मानहरण ईश्वरता का कर्त्तव्य, यह कविताई का दखल कहो या यकीन लाना तुम्हारी श्रद्धा पर है इसी तरह जो २ इतिहास में यथार्थ है सो और उसका वर्णन जुदा २ स्वतः बुद्धिमान् समझ लेते हैं जिस में अलंकार नहीं वह ग्रन्थ शून्य है, जैसे शृंगाररहित सधवा स्त्री. (प्रश्न) हम तो ग्रन्थों की सब बातों पर यकीन नहीं लाते, मानने योग्य होय तो मान भी लेते हैं. (उत्तर) हमारा भी यही सिद्धांत है, यथार्थ ही को हम मानते हैं, लेकिन जिन बातों पर न्याय से प्रमाण ठहरा है, अथवा उस ग्रन्थ का रचयिता क्रोध लोभ से रहित था, ऐसों के वचन हम प्रमाण करते हैं, वह चाहे आगम प्रमाण ही है, प्रत्यक्ष अनुमान से संबन्ध भी नहीं रखता होय, जैसे—स्वर्ग और नरक मोक्ष इत्यादिक जो २ बात हो, यही बात न्यायमत का प्रवर्त्तक गोतम भी अपने न्यायसूत्र में लिखता है कि वीतराग का वचन है सो ही यथार्थ है, बाकी अल्पज्ञों के वचन एक २ नय से सच्चे भी हैं, सर्वांग नय से झूठे भी हैं, लेकिन हम तुम्हें पूछते हैं कि प्रमाणीक यथार्थ इतिहासों में कलाकुशलता आर्यावर्त्त में थी आज के जमाने से करोड़ों दरजे, सो तुम मंजूर करते हो या नहीं. (प्रश्न) तुम्हारी इन युक्तियों से हम लाजवाब हैं, तो भी इतनी कसर सी हमारे

ज़रूर है कि क्या जानें ऐसी संप और बुद्धि का फैलावा अंगरेजों के जैसा उद्यम हिंद में कैसे था, इस वास्ते कला कौशल होने का विचार पड़ता है. (उत्तर) हमारे आर्यावर्त्त के लोग इन तीनों बातों में पहले पूरे थे, संप तो विद्या पर होता है सो तो हम क्या लिखें यहां के लोगों के बनाये भये ग्रन्थों के उल्थे अंगरेजी या और २ भाषा में करले गये और अभी भी कर रहे हैं, थोड़ासा पूरावा देता हूं जरा बानगी देखने से बुद्धिमान् सब ढिगार कर लेते हैं वैद्यकविद्या का अंगरेजी में पहले उल्था भया जिसका कारण पहले ऐसे भया ज्योतिष्विद्या का प्रथम चलना इस आर्यावर्त्त से भया, ईरानी लोग इस विद्या को यहां से ले गये, यूनानियों से यूरोप में फैली, वेली और प्रेफेअर यूरोपी विद्वान् इस बात को कबूल करके लिखते हैं कि यह विद्या पांच हजार वर्ष पहले भारत में प्रचलित थी: वह समय आर्यों की बहुत उन्नति का था, इस विद्या का पूरा अंग हिंद से ही हमारे यहां यूनानियों के मारफत प्राप्त भया. रेखागणित, अंक गणित, बीज गणित, त्रिकोणादि गणितों में आर्य पूरे थे, ऐसे ही व्याकरण, गानविद्या, वास्तुविद्या में यहां के कारीगर नामी थे. बादशाह सिकंदर इस विद्या के सीखने को अपने कारीगरों को यहां छोड़ गया था, इस तरह इस विद्या ने भी यहां से यूनानियों द्वारा यूरोप में प्रवेश किया, इस तरह युद्धविद्या में भी यह देश वाले बड़े जबर थे, मुक्त, अमुक्त, मुक्तामुक्त और यन्त्र मुक्त आदि अस्त्र, शस्त्र, गदा, वीरघातनी, शक्ति, शतघ्नी, सहस्रघ्नी आदि बना जानते थे और चलाते थे, व्यूहादिक रचते थे, हजारों इतिहास मौजूद हैं, अन्य देशांतरी लोग

आर्यों के ताबे थे, इसी तरह चरक, सुश्रुत, वाग्भट्ट आदि ग्रन्थों का उल्था पहले बारह सौ वर्ष के अरबी में भया, फिर हैलर ने इसका अनुवाद लेटिन में किया और वुजरस ने जर्मनभाषा में किया, इस वास्ते सर्व विद्यावंत यहां थे, यहां से धीरे २ आगे से आगे फैलता गया, इस वास्ते बड़ा संत था, बुद्धि का फैलावा था और उद्यम भी था, लेकिन सिकंदर के आक्रमण पीछे यह दशा हिंद की दिन पर दिन घटती का चला आया, जो सच्चे ग्रन्थों का लेख मंजूर नहीं करोगे तब तो यह ग्रन्थ देशांतरियों की चलाई आज तो यह विद्या तुम हम प्रत्यक्ष देखते हैं जब यह बात कभी तो अपने शास्त्रों में लिखेंगे ही, लेकिन जब यह विद्या लुप्त हो जायगी और इस रेल तार के वर्णनरूप शास्त्र को देख तुम्हारी तरह यकीन नहीं लावेंगे लोग कि शास्त्रों में योंही लिख दिया है, कभी ऐसी बात भी हो सकती है, सम्यक्तवंत तो न इस वक्त इस विद्या को नई कहते हैं न उस वक्त प्रमाणिक लेख को झूठा कहेंगे. (प्रश्न) अब हम को यकीन भया कि तुम्हारा लेख सर्व न्याय संपन्न सच्चा है, पूरावे बहुत मजबूत दिये. (उत्तर) तुम्हारी बुद्धि का आशय जैसा हमने जाना कि यह अंगरेजी पढ़े भये और चाहे कितना ही मजबूत प्रमाण और पूरावा रखता होय तो भी मन्जूर नहीं करते और जो बात अंगरेज विद्वानों ने लिख्या है वह सब सच है इस वास्ते हमने वैसे ही पूरावे लिखे, इस पर तुम्हारा ऐसा सवाल होगा कि यह लोग झूठ नहीं लिखते जैसा प्रमाण प्रत्यक्ष में इन्हों ने पाया है वैसा ही लिखते हैं, अच्छा ही, लेकिन एक इस में भी विचार है, प्रत्यक्ष देखा सो तो

न्हों का लिखना कथंचित् सचा भी है लेकिन दो हजार चार
ज़ार वर्ष के पहले की बात में प्रत्यक्षपना उन्हों को कैसे हो
सके, जिस पर तुम कहोगे रुपया, पैसा, मोहर, जयस्थंभ, कीर्तिस्थंभ
शेवालय, जिनमंदिर, जिनमूर्त्ति, शिलस्थंभ इन्हों पर खुदा भया
जो लेख मिला अथवा अन्य देशांतरियों ने हिंद में आके जो इति-
हास पहले लिख ले गये उन्हों में जो २ लिखा पुरावा मिला, सो ही
अंगरेजों ने लिखा है इस वास्ते हमको प्रतीति है, यह बात तुम्हारी
कोई २ अंश करके सची भी है, लेकिन सर्वांग सची नहीं, कहोगे
क्यों, देखो, दो सौ वर्ष से इन्हों का प्रचार हिंद में भया उस में
किसी साहिब को कुछ मिला, किसी को कुछ, पहले किसी को कुछ
मिला, बाद उस ही बात को झूठ करने वाला दूसरे साहिब को दूसरा
कालान्तर से मिला, ज्यों २ मिलता गया सो २ उन्हों ने अपने ग्रन्थ
में लिखा, पहले पुरावे का लेख पिछला पुरावा झूठा ठहराता है, इस
तरह पर थोड़ासा यहां लिखता हूं बुद्धिमान् तो इतने में ही समझ
लेंगे, पहले एक साहिब ने लिखा है भारतवर्ष के सब पुस्तकों से
पहला पुस्तक वेद है, आर्यावर्त्त की सोध से लाख वर्ष का बना
ठहरता है. अब दूसरे साहिब मेक्समूलर अभी भये वह प्रमाण देते
हैं कि वेद का मंत्रभाग बने उन्तीस सौ वर्ष भये और छन्दभाग को
बने इकतीस सौ वर्ष, ब्राह्मण पुकारते हैं सतयुग के शुरू में
ब्रह्मा ने वेद रचे हैं जिसको चालीस लाख वर्ष बतलाते हैं. कहो
अब आप इन दोनों साहिबों के लेख में से किस को मंजूर करोगे
अंगरेजी पढ़े आर्यसमाजी. और शैव वैष्णव तो वेद के मानने वाले

पहली कलम मंजूर करेंगे क्योंकि मीठा २ गडपप्प कडवा २ थू थू वेद के विरोधी मुसल्मान, अंगरेज, बौद्ध चीन वाले आदि ... लेख मंजूर करेंगे, अब दूसरा प्रमाण अंगरेजी पढ़े नाम जैनों के वास्ते लिखता हूं, जिन्हों ने फक्त जैन जाति में जन्म लिया है, जैन के तत्वों के अजान उन के वास्ते, एक साहिब मेक्समूलर लिखता है जैन और बौद्ध एक हैं, दूसरे जनेलकनिंग होम साहिब लिखते हैं जैन धर्म सब धर्मों से आदि है और बौद्ध धर्म प्राचीन नहीं है, एक साहिब लिखते हैं, जैन धर्म में से बौद्ध धर्म पचीस सौ वर्ष के लगभग गया के मुल्क में निकला है, इन तीनों में से पिछला लेख नामी विद्वान् विद्यमान डाक्टर यूरोपी बुहलर साहिब का है, इन तीनों लेखों में से कौनसा सच्चा मानते हो (प्रश्न) हम तो वही मानते हैं जो पूरी साबूती और पूरे पुरावे का है (उत्तर) यह कहना न्यायसंपन्न है, जो फिर चाहे अंगरेज होय चाहे दूसरा, पक्षपातरहित वचन मानना वही लेख सच्चा है यही हमारा सिद्धांत है अलंविस्तरेण ॥

अब गर्भ की व्यवस्था लिखते हैं ॥

वीर्य और खून के संयोग से उस में से सजीव पिंड बंधता है. मर्द की [illegible] में जो धातु होता है उस में बारीक २ तंतु जैसा [illegible] होता है, सूक्ष्मदर्शक कांच से देखने से वह तंतु बारीक २ और कूदते चलते हलते हजारों जीव दिखाई देते हैं. सम्बन्ध

भया पीछे कमल के मुंह में गिर कर गर्भस्थान में जाता है औरत के गर्भस्थान के बाजू पर गांठें होती हैं उस में बारीक अंडों के जैसा कण पैदा होता है, वह कण पकने के समय पर ऊपर तिरके आता है और गर्भस्थान की नली का एक छेड़ा उस के लग जाता है, पीछे यह अंडा जैसा कण उस लगी हुई नली में फूटता है और उन में से गर्भ रहने लायक पदार्थ गर्भस्थान में दाखिल होता है और आया भया वीर्य के साथ मिलता है, इन दोनों के संयोग से गर्भ रहता है, इस तरह गर्भ रहा भया गर्भस्थान की नली में से होकर गर्भाशय में जाता है तब गर्भाशय का पड़ जाड़ा पड़ता है और गर्भवाले पदार्थ के आस पास वींटीज कर एक थैली जैसा हो जाता है, इधर गर्भ बधता है, कारण माता के खून की नशों की शाखा उस में जाके ९ या १० महीने तक पोषण करता है, एक महीने का गर्भ पाव से आधा इंच जितना लम्बा होता है और उस में अंगोपांग की प्रकटता नहीं दीखती लेकिन मुंह की जगह छोटीसी फाड़ होती है और दो आंखों की जगह काला दाग दिखाई देता है. अब दो महीने का गर्भ सवा से डेढ़ इंच लम्बा होता है और आसरे डेढ़ रुपया भर वजन होता है और मुंह, नाक, कान, आंख वगैरह चहरे का अवयव खुला दीखे ऐसा होता है और हाथ पांव के कितने एक भाग अलग पड़े भये दीखते हैं और आंख के ऊपर की कवान होती मालूम पड़ती है, तीसरे महीने में हाड बनने शुरू होते हैं और दो से अढ़ाई इंच लंबा होता है, २॥ से ४। तोला वजन में होता है और मांस के लोचाओं की निशानियां मालूम देती हैं, चेहरा और सिर बराबर हो जाता है,

आंख के पोपचे ढके भये, भांपने की कोर छोटी, मुंह बंद, हाथ पांव प्रकट और हाथ की अंगुलियां छोटी मालूम देती हैं. चौथे महीने का गर्भ ५ से ६ इंच तक लम्बा और ७ से ७॥ रुपये भर वजन में होता है, चमड़ी गुलाबी रंग की, मुंह खुला, आंख पर पतला पर्दा, नख होना शुरू होता है और जाति स्त्री पुरुष की मालूम होती है, शरीर के सब अंग उपांग बन जाते हैं, हृदय बनता है इस वास्ते चेतना धातु प्रकट होती है, उस से गर्भरूपी जीव रूप, रस, गन्ध वगैरह की इच्छा करता है, पांचवें महीने का गर्भ ६ से ७ इंच लम्बा और १२ से १८ रुपये भर वजन में होता है, इस महीने में हाड और मांस बधता है, सिर का क़द बड़ा होता है नख प्रकट दीखते हैं सिर के बाल दीखना शुरू होता है और मन चेतनावाला होता है, छठे महीने का गर्भ ९ से १० इंच लम्बा और एक रतल वजन में होता है, आंख मिची हुई होती हैं और चेहरा लाल जामुन के रंग जैसा, बाल रुपहरी रंग का होता है, इस महीने में बुद्धि पैदा होती है. सातवें महीने का गर्भ १३ से १५ इंच लम्बा ३ से ४ रतल तक वजन में होता है, चमड़ी गुलाबी रंग की जाड़ी, नख बड़ा लेकिन आखिर तक नहीं पहुंचा भया, आंख के पर्दे दूर भये भये. आठवें महीने का गर्भ १४ से १६ इंच लम्बा ४ से ५ रतल वजन में होता है. आगे से चमड़ी जाड़ी और नख पूरे होते हैं, नवें महीने का गर्भ १७ से २१ इंच लम्बा और ५ से ९ रतल वजन सरासरी ७ रतल वजन में होता है. इस तरह नवें महीने तक गर्भ का बधना होता है माता बाहर आता है उस वक्त तक उस का शरीर पूरा

होता है उसकी हड्डी पूरी नहीं और कची होती है जैसे २ वधता जाता है तैसे २ हड्डी और दूसरे पदार्थ धातु वगैरह सम्पूर्ण होता जाता है इस तरह सम्पूर्ण परिपक्व भया मनुष्य का शरीर सरासरी १४० रतल का होता है शरीर के बांधे में हाड पिंजर मांस और स्नायु अर्थात् संधि बंधन का मुख्य भाग गजता है, इस वास्ते उन जुदे २ भागों का वर्णन करते हैं ॥

हाड पिंजर, (स्केलेटन *Skeleton*).

शरीर की मजबूती हाड पिंजर ऊपर है, शरीर के दूसरे सर्व भाग हाड पिंजरों के लगे भये रहे हैं और इस शरीर का रचण भी हाडों से है, माथे की खोपड़ी, छाती का पिंजर और पेट की वखोल यह तीनों पोलार की जगह हैं और यह सब हाड पिंजर के बीच में आये भये हैं. इन तीनों पोलारों में जिंदगी के वहुत जरूरी का अवयव धरने में आया भया है और हाडों से उनका रचण होता है, हाड पिंजरों से हाथ पांव वने भये हैं जिस के ऊपर हाल चाल वगैरः तरह वार गति वन रही है. हाड पिंजरों का जुदा २ हाड, मांस के बंधनों से ऐसा मजबूत बंधा भया है और मांस से ढका भया है सो एक दम टूट नहीं सकता, एक सौ चालीस रतल सरासरी वजन इस शरीर का गिना गया, जिस में से हाड पिंजर का सरासरी वजन २५ रतल आसरे है. हाड पिंजर के हाडों की जुदे २ पंडितों ने जुदी २ गिनती करी है, उस में कुछ २ तफावत

पास जा सकते हैं, और मांस के तंतु उन्हों पर मजबूत होकर लग सकते हैं, हरएक हाडों की सपाटी पर एक अथवा जियादा भी छिद्र होते हैं जिस में से धोरी नश का फांटा हाडों को पोषण करने को हाडों के बीच में जाता है ॥

हाड जहां २ संधे भये हैं उन २ संधों पर कूर्चे लपेटे होते हैं और बाकी के हाडों के सब भागों की सपाटी पर एक मजबूत पड़त लपटा हुवा होता है. हाडों को बाहर का पड़त सफ़ेद तंतुमई होता है, उस में हाडों के सपाटी के पोषण वास्ते खून की रगें पसरी भई होती हैं, जो कोई भी जखम होने के सबब बाहर का पडत उखड़ जाता है तो हाडों का उतना भाग निर्जीव हो जाता है लम्बे हाडों के बीच में पोल की जगह नरम लाल मावा होता है और अंदर दूसरा पड़त होता है, वह हाडों का अंतरपट अथवा आवरण कहलाता है उस पड़त में से खून नलियों के लिये हाडों के अंदर के भाग का पोषण होता है इस वास्ते देखा जाता है कि शरीर के हाडों को हमेशा पोषण मिलता रहता है, कोई भी कारण से पोषण नहीं मिलता है तब हाडों में विकार होता है ॥

हाड मुख्य दो पदार्थों का बना हुवा है. चिकनास वाले पदार्थ से और खनीज अथवा खार पदार्थ से, चिकनास वाले पदार्थ से हाड मजबुत चिकने, तरावटवाले रहते हैं और खार के लिये सख्त रहते हैं, हवा में हाडों को जलाने से चिकनास का भाग जल जाता है वाला पदार्थ बाकी रहता है, ऐसे हाडों को मसलने से है और हाडों को शोरे के तेजाब में भीजा रक्खे तो

का भाग खाईज जाकर चिकनाम वाला पदार्थ बाकी रहने से हाड नरम होता है, रसायण रीति से जुदा २ करने पर पंडितों को नीचे लिखी वस्तुयें मिली हैं ॥

हाडों का अंदर का पदार्थ.	हाड कोका १०० भाग का भाग.
चिकनाम अथवा तराट की वस्तु खनिज खारकी वस्तु.	३३ भाग.
फास्फेट आफ लाइम, चूना खार	५१ भाग.
कारबोनेट आफ लाइम, चाक जैसा	१२ भाग.
फ्लोराइड आफ केलशियम	२ भाग.
मेगनीशिया	१ भाग.
नमक सोडा वगैरः दूसरे खार	१ भाग.

उमर मूजब हाड़ों के अंदर के पदार्थों में वध घट होता है, बचपन के हाड़ों में खार खनिज का भाग पुख्त उमर करते थोड़ा होता है और चिकनास का भाग जियादे होता है जिस से बचे के हाड नरम होते हैं और थोड़े जोर से मुड जाते हैं, इस से उलटा बुढ़ापे में खार का भाग वध जाता है और चिकनास का भाग घट जाता है जिस से बुड्ढे का हाड बरडा होने से थोड़े जोर से टूट जाता है, उमर में फेरफार की तफसील नीचे मूजब है ॥

हाडों के अंदर का पदार्थ.	बाजपने.	जवानी में.	बुढ़ापे में.
चिकनास का पदार्थ	४७भाग.	२० भाग.	१३भाग.
खनिज अथवा खार	४८भाग.	७५भाग.	८२ भाग.

कूर्चा तथा सांधे (कार्टीलेज *Cartilage*).

हाडों का पहला स्वरूप कूर्चा है, यह कूर्चा एक तरह का नरम आधा हाड है, वह कर्रा, स्थितिस्थापक, बरड़ और जाडे रबड़ जैसा सफेद पदार्थ है, वह हाडों जैसा सख्त और बरड नहीं है परंतु उस में हाडों जैसा गुण धर्म रहा भया है, गर्भ में पहले कूर्चा, पीछे उन में से हाड तैयार होते हैं और कितने एक कूर्चे जवानी में हाड हो जाते हैं और कितने एक कूर्चे बुढ़ापे में हाड हो जाते हैं और कितने एक कूर्चे अंत तक कूर्चे ही बने रहते हैं, कान, नाक, भांपने, पांसली और सांधाओं में रहे कूर्चे हमेशा कूर्चे ही रहते हैं ॥

सांधें, (ज्वाइन्टस *Joints*).

दो हाड जहां संधते हैं, उसको सांध कहते हैं, शरीर में ऐसे सांधे बहुत हैं, कितने एक सांधे तो जरा भी हलते चलते नहीं दीखता—जैसे सिर की खोपड़ी में और चेहरे के सांधे बहुत से इस किस्म के हैं सो एक दूसरे हाड के संग ऐसा मजबूत संधा भया है सो ऐसा बाहर से दिखाई देता है, जाने एक ही है, ऐसा मालूम देता है, दूसरी तरह के सांधे थोड़े २ हलचल करते हैं, ऐसी संधि में हाडों का सीधा अड़ोंअड़ होना नहीं, लेकिन दो हाडों के बीच में गादी जैसा पदार्थ होता है, जैसे कमर तथा गर्दन के सांधे, ऐसे [illegible] के सांधों से संधा भया अवयव चारों तरफ फिर सकता है

इन सांधों में एक तरफ वो हाड के गोल दड़ी जैसा सिर होता है और सामने के हाड में छेड़े पर दड़ी बैठ जाय ऐसा गोल खड्डा होता है और गोल होने के सबब वह चोतरफ फिर सकता है, हाथ के खवे और पग के थापों में इस तरह के सांधे हैं, फिर कितने एक सांधे खीली नाकीवाले होते हैं, नरामादगी की तरह कोहनी, पोंहचे, गोडे और गिरिये. यह आठों में नरामादगी है, उस से संदूक के ऊपरले ढकने मूजब दो तरफ ही फिर सकते हैं, हाडों का दोनों नाके जहां आगे शामिल होते हैं, उस पर कूर्चे का एक थर होता है. ये कूर्चे स्थितिस्थापक अर्थात् फिरे ऐसे होने से सांधों पर जोर को धक्का लगने पर भी उन कूर्चों के सबब उन हाडों का बचाव होता है, सांधों के चारों तरफ पड़त लपटा होता है उस में चिकना-रस पैदा होता है और वह रस सांधाओं का पोषण करता है, सांचों में जैसे तैल की जरूरत पड़ती है तैसे सांधों को नरम रखने को इस रस की जरूरत है, दो सांधों को जुड़ा रखने को एक अथवा जियादे बन्धन होते हैं, सो संधिबन्धन कहलाते हैं, यह बन्धन मांस की बनी सफेद तांतुओं का होता है, कितने एक बन्धन पाट जैसे होते हैं और पग के हाथ के थापे के बन्धन थैली जैसे होते हैं, मतलब के जैसे सांधे होते हैं तैसे हीज उस के वेसते भये बन्धन होते हैं, इन बन्धनों के सिवाय आस पास आये भये मांस के लोंचे जिन्हों को स्नायु नाम से कहते हैं वह भी सांधों को मजबूत करते हैं ॥

मांस का लोचा स्नायु, (मस्सल्स Muscles).

शरीर के सब जगह जो मांस देखने में आता है वह सब इकट्ठा जयाबन्द नहीं है, लेकिन जुदा २ मांस के लोचाओं से बना भया है हाथ और पांव की पिंडली मांस के बड़े लोचों से बनी भई ऐसी दीखती हैं लेकिन ऐसा है नहीं इन पींडियों में मांस के जुदे २ टुकड़े हैं यह बहुत सफाई के संग जुड़े भये होने के सबब एक जैसा मालूम देता है ये मांस के लोचे सब एक तरह के नहीं हैं, बड़े, छोटे, लम्बे ओछे, गोल, चिपटे, चोरस, तिखूने, ऐसे जुदे २ शकल और कद के होते हैं और जहां जैसा चाहिये ऐसे बने भये हैं ये लोचे मांस के रेशों का बना भया है, कितने एक लोचे रेशों की जूड़ी अथवा बंडलों का बना भया है ॥

शरीर का हाड पिंजर, यह सब हाडों का खोखा है इस खोखे के आस पास सब जगह लोचाओं से ढका भया है उस सेती ही चलन वलन होता है, शरीर की गति और सब काम इन स्नायुओं से हीज हो रहा है, चलना, खाना, हाथ हिलाना, बोलना, आंख के तक का काम शरीर के छोटे बड़े सब कामों में स्नायु की पड़ती है, चेहरे पर आनन्द, क्रोध, दिल्लगी, मन के विकार, इस से ही सम्बन्ध रखता है, यह मांस के लोचे स्नायु वगैरह दो का है, एक तरह के स्नायु अपनी इच्छा के प्रमाण चलता और दूसरी तरह के स्नायु अपनी इच्छा के आधीन नहीं हाथ पांव अंगुलियों का चलना, मुडना, आंख के डोल

नाक की फुरड़ियों का चौड़ा करना, वगैरः अवयव के स्नायुओं को अपनी मन मूजब चला सकते हैं, लेकिन आंतों की गति अपनी इच्छा से नहीं है, हवा तथा अन्न जाने की नलियां, होजरी, गुत के फुन्दे, गर्भस्थान और धोरी नशों वगैरः अवयवों के मास के लोचे अपने आप ही संकोचते हैं और फूलते हैं और उन लोचाओं पर अपना इख्तियार नहीं चलता जो उन्हों को संकोचा देवें या चौड़ा कर देवें, ये दोनों ही लोचे ऐसा रेशे का बना भया है, लेकिन इस दूसरी तरह के स्नायु इच्छा मूजब काम देने वाले स्नायु की तरह लाल और बड़ा नहीं है, लेकिन वे एक पड़त की तरह पसरे भये होते हैं और उन्हों को बन्धन की जुरूरत नहीं है, मांस के लोचे और स्नायुओं का काम संकेचने का है, उन्हों के संकोचने से गति पैदा होती है, जबाड़ी के स्नायु संकोचने से जबाड़ी चलती है, और खुराक चबाया जाता है, हाथ के स्नायु संकोचने से हाथ चलता, मुड़ता है, पांवों के स्नायुओं के संकोच से पांवों से चला जाता है, कितने एक स्नायु एक दूसरे के विरुद्ध गुण के होते हैं, जैसे एक से तो आंख और मुट्ठी उघड़ती है और दूसरे स्नायुओं से बन्द होती है, इन स्नायुओं में चैतन्य गुण है तहां तक तो काम देता रहता है, शरीर में ऐसे मांस के लोचे ५०० आसरे हैं ॥

स्नायु बन्धन (टेंडंस *Tendons*).

हरएक स्नायु के नाके सफेद चिकने मजबूत डोरे जैसा होता है उन डोरों से हाडों के मजबूतपने से लगे रहते हैं, इन डोरों को

स्नायूबंधन कहते हैं, ये स्नायुबंधन बहुत मज़बूत होते हैं, कितनी एक वक्त हाड टूटने पर भी वह बन्धन टूटते नहीं ऐसे मजबूत होते हैं हाथ पावों की अंगुलियां हिलाती वक्त जो डोरी जैसी रंग दीखते हैं वह स्नायुबंधन हैं, जिस जगह शरीर में स्नायुबंधन लगे भये होते हैं उन २ भागों को स्नायुबंधन हलाता है ॥

संयोजक, (कनेक्टिव टिस्यु Connective Tissue).

शरीर में हाडों के ऊपर का पड़त स्नायु खून की नलियां मज्जा तंतु और चमड़ी वगैरः भाग एक दूसरे के साथ सफड़ जुड़े भये हैं सो गोंद अथवा लेई की तरह शरीर में एक चिपनेवाला चिकना पदार्थ है सो सब शरीर में फैलकर सब शरीर के अवयवों को ऊपरा ऊपरी जोड़ के रखता है, वह पदार्थ बारीक तंतु अथवा परमाणुओं से बना भया है सो जोड़ने का काम करता है, इस वास्ते ऐसे पदार्थ संयोजक ऐसे नाम से करके मैंने लिखा है ॥

चर्बी, (फेट Fat).

संयोजक नाम का जो पदार्थ हाड मांस के लोचे तथा उ के बन्धनों को संग में जुड़ने का काम देता है उस के संग पीले रंग का दूसरा पदार्थ होता है उस को चर्बी या मेद कहते में पीले रंग के लोचे चर्बी के होते हैं, चर्बी कारबोन

हैड्रोजन की बनती है उस से कारबोन वाले पदार्थ जैसे दूध मीठा दही आदि के बने गरिष्ठ पदार्थों के जियादा खाने से, तैसे ही शरीर को चाहिये इतनी कसरत के नहीं करने से, तैसे ही मेदवृद्धि-रोग में कई कारणों से चर्बी बढ़ती है, चर्बी का जमाव जियादा करके जांघ, चूतड़ और पेट पर होता है जिस के बधने से आदमी वृथा पुष्ट बन जाता है ॥

त्वचा चमड़ी, (स्किन *Skin*).

हाड पिंजर वगैरः सब अवयवों के ऊपर के पड़त को चमड़ी कहने में आती है, चमड़ी से शरीर के अंदर के वस्तुओं का रक्षण होता है और उस चमड़ी से स्पर्श के आठों विषयों का ज्ञान होता है, पसीना निकलता है बाहर के पदार्थों को चूस लेने का काम करती है इसका विशेष वर्णन इस प्रकाश के चौथे किरण में करेंगे ॥

किरण दूसरी, शरीर का मुख्य भाग ॥

अपने देशी लोग इन बाबतों को कुछ नहीं जानते हैं, इस वास्ते शरीर के दर्दों में कुछ नहीं जानते हैं और डाक्टर वैद्यों को भी भूल चक्कर में गिरा देते हैं, ऐसे मूर्ख रोगियों की जुबान पर विश्वास नहीं लाकर डाक्टर वैद्य लोगों ने निज से तपासना चाहिये, दर्द कलेजे में होता है और बताता है तिल्ली में, दर्द आंत में होता है

बताता है कलेजे में, इतना अजानपना होना तो नहीं चाहिये शरीर के अन्दर का चाहिये तो सूक्ष्म ज्ञान लेकिन सामान्य ज्ञान तो जरूर ही सीखना. हाड का पिंजर तो शरीर का मुख्य पद है, मांस और मांस के लोचों से शरीर की आकृति बने है और आदमी सुडौल दीखता है, शरीर का हाल चाल होता है, धोरी नसों से और आसमानी नसों से खून फिरता है और शरीर के जुदे २ भागों में पहुंचता है, ज्ञानतंतुओं से शरीर के जुदे २ भागों के ज्ञान का ज्ञान होता है, शरीर के सर्व से जरूरी के अन्दर के अवयव जैसे मगज, फेफड़ा, अंतःकरण, कलेजा और आंतड़े, यह सब जीव का जीवस्थान है, इन अवयवों पर शरीर के हयाती का आधार है, यों तो जीव असंख्य प्रदेशों करके सर्व शरीर में व्याप्त है, दूसरे हरएक भाग का वर्णन सम्पूर्ण तौर से शरीरविद्या में है, इन अवयवों का विस्तार वर्णन करें तो ग्रन्थ बहुत बढ़ जाय, इस वास्ते मतलब पूरता वर्णन यहां लिखेंगे, शरीर में सिर और धड़ ये दो मुख्य अङ्ग हैं, ये दोनों गर्दन से जुड़े भये हैं, जो गर्दन से जुदे २ कर दिये जांय तो शरीर का सब व्यवहार बन्द हो जाय, गर्दन कहलाती है, माथा सिर एक शरीर का उत्तम अंग कहलाता है, क्योंकि सब शरीर पर अधिकार भोगने वाले का महल मस्तक में आया भया है सो मगज अथवा भेजा कहलाता है, सो बाहर नजर पड़ते अवयवों में खोपरी अथवा मगज की रक्षा, देखने को दो आंख, सुनने को दो कान, सूंघने को दो नसकोरे, बोलने को मुंह, ये सब अवयव उस अधिकारी के उपयोग के

महल के आस पास कर्म कारीगर से बना है, सिर में मुख्य दो झरोखे अथवा पोल है, एक तो खोपड़ी में पोल, दूसरी मुंह में पोल उस अधिकारी का घर खोपड़ी की पोल में हैं, इस घर में ज्ञान तंतु और गति तंतु का संग्रह भया है, इस संग्रह का मगज नाम है, मुंह की पोल में जीभ दांत वगैरः आये भये हैं, मुंह के गोखले में से एक नली कण्ठ में से होकर छाती में होकर पेट में उतरती है, सो अन्न नल कहाता है और खोपड़ी की पोल में से एक नल पिछली पीठ की करोड़ में उतरे है, सो करोड़ रज्जु नल कहलाता है, वास्तव में इन तीनों नलों के रास्ते सब शरीर का व्यवहार चलता है।

धड़ एक में माथे की तरह दो बड़ी पोल है, एक तो छाती , दूसरी पेट की, छाती की पोल अथवा पिंजर एक कोठरी जैसा छाती की पोल में दो तो फेफसे और हृदय ये दो मुख्य जीव जगह है, इस के अलावा मुंह की पोल में से कण्ठ में से उतरा ा अन्न नल छाती में होकर पेट में उतरता है, इन अवयवों के ाथ औरतों के दो स्तन होते हैं, छाती तथा पेट की पोल के बीच मांस के गुंमट की आकार का एक गोल परदा दिवाल की तरह ाया भया है, अन्न नल ये दिवाल को भेद कर पेट में उतरता है, ट की पोल के ऊपरले भाग में यकृत याने कलेजा प्लीह याने ाह्ली आमाशय याने होजरी पक्वाशय याने आंतरड़ा आया भया है ोजरी के ऊपर के नाके पर अन्न नल मिलता है और नीचे के छेड़े ा छोटे आंतों की शुरूआत होती है, पेट की पोल के नीचले भाग ें मूत्राशय याने पुके आये भये हैं, जिस में से मुत्र, मूत्र की नली

के रास्ते बाहर आता है, मूत्र की नली के नीचे वृषण की कोथली आई भई है, जिसके आधार सब शरीर टटा भया है, करोड़ में हाडो की एक पोली नली उतरी भई है, ये नली अखीर ऊपर की तरफ मगज से सम्बन्ध रखती है और नीचे कमर तक जा पहुंची है धड़ के अन्दर छाती और पेट इन दोनों पोलों के सिवाय दो तरफ दो हाथ और नीचे दो पांव आये भये हैं, मगज में रहे अधिकारी के हुक्म से पदार्थों को पकड़ते हैं, छोड़ते हैं, इस शरीर को एक जगह से दूसरी जगह ले जाते हैं ॥

माथा, सिर की तूमड़ी, (स्काल Skill).

इसकी हकीकत पीछे लिखी जिस मूजब है, मुख्य तीन इस शरीर में हैं, खोपड़ी की, छाती की, और पेट की शरीर सब चैतन्य वाले भाग इन तीनों में आये भये हैं, शरीर सब अवयवों की जुदी २ क्रिया वही जीवन है, इन जीवन स्थानों में यह मगज सर्वोपरि स्थान है इस वास्ते उस रचाण भी बहुत मजबूत किले में भया है, वह किला सिर की है, इस सिर की खोपड़ी में चार मुख्य इन्द्री आंख, नाक, मुंह आये भये हैं ॥

मगज, भेजा, मन, (ब्रेन Brain).

मगज खोपड़ी की पोल में बराबर बैठा भया है, खोपड़ी की मगज की मरादी के लगनी है, इतने उस के खड्डे खांचरे हैं,

ं मगज बराबर बैठा भया है, खोपड़ी में मगज के वास्ते तीन
ढकने याने पुड़त हैं, सब से ऊपर का पुड़ जाडा और मजबूत है
और खोपड़ी के चारों तरफ आया भया है, उसका एक फांटा मगज
के दो भागों के बीच में उतरता है, मगज में से जो खून फिर के
पीछा जाता है, इस वास्ते बाहर के पुड़ में नली जैसा रास्ता होता
है, दूसरा पुड़ भेजे के बीच में हैं, सो पुड़ दोलड़ा है और उस
की पोल में प्रवाही पानी जैसा निर्मल है उस में थोड़ा खार का
भाग होता है, तीसरा पुड़ मगज के लगों लग आया भया है, उसको
अन्तर पुड़ कहते हैं. मगज के पोषण वास्ते उस में खून की नलियों
का जाल पसरा भया है, मगज के चार भाग हैं जिस में से दो
मुख्य हैं, अगला भाग सो तो बड़ा भेंजा पिछला भाग सो छोटा
भेजा, बड़ा भेजा सिर के अगले तरफ और ऊपर के तरफ धरा
गया है, भुमारों के जरा ऊपर से दोनों, कानों के छेद के आगे
होकर सिफ़ाकों आस पास एक लकीर खेंचने से भेजे की हद का
अड़गड़ा मन में आ सकता है, इस पर से गोल टोपसी जैसा और
खर खोंदरा दीखता है, उसके बीच में एक फाड़ होने से बीच में
उसके दो भाग, अर्ध गोलाकार से भया २ है, इस बड़े मगज के
गहरास में तीन छोटी २ पोलार की जगह है और उसके तले से
कितने एक तंतु निकलकर नाक, आंख, कान, जीभ वगैरः में फैली
है, छोटा भेजा सिर के पिछले हाडों के मांहे में [illegible] भया है, वह बड़े
भेजे की तरह टोपसी जैसा नहीं, लेकिन किताब के पन्नों की [illegible]
उस में पुड़त होता है, उनको भी अर्ध गोल [illegible] है, उसका [illegible]

जैसा है, छोटे भेजे को काटे तो अंदर झाड जैसा दिखाई देता है मगज के सङ्ग दूसरे छोटे २ भाग हैं, उन में से एक भाग सब के नीचे आया भया है, वह पीठ की करोड़ रज्जु के संग सम्बन्ध रखता है, इस भाग की मदद से श्वांस लेने का काम चलता है, इस भाग को तथा ऊपरले वड़े तथा छोटे भाग को जोड़ने वाला एक चौथा मगज का भाग है, सो आड़ा पड़ा भया है, वह सब से छोटा भाग है सामने ललाट का जो बड़ा मगज है, उसको किसी ने काट भी डाला होय तो भी जहां तक पिछला छोटा मगज कायम रहता है, वहां तक श्वांस लेने की क्रिया तो शुरू ही रहती है, सब मगज का एक दर सरासरी वजन आसरे तीन रतल गिना जाता है औरत का मगज मर्द के मगज से कुछ एक छोटा होता है, मगज जिस का बड़ा अकल उस में जियादा होयगी, छोटे वाले में कम उमर की सङ्ग मगज भी बढ़ता है तीस वर्ष से लेकर ४० वर्ष तक मगज सम्पूर्ण हालत में आता है, इस उमर पीछे मगज का वजन घटना शुरू होता है, किसी २ बहुत बुद्धिमान् विचक्षण का मगज च रतल तक वजन में होता है और मूर्ख से मूर्ख आदमी का भेजा रतल वजन में होता है, हाथी और मगरमच्छ सिवाय दूसरे प्राणियों से मनुष्य का मगज जियादा भारी होता है, हाथी का ८ रतल से १० रतल तक और मगरमच्छ का ५० रतल का है ॥ इति मगज वर्णन ॥

नेत्र. आंख, दृष्टेंद्री (आई Eyes).

आंख दो हैं. भुंमारा भांपणा वगैरः बाहर के दीखते भाग हैं, इस इन्द्री से देखने का काम होता है, नाक के दोनों तरफ के खड्डों में धरा भया है, डोले के ऊपर तीन पुड़त हैं, सब से बाहर का पुड़त सफेद रंग का है, वह अपार दर्शक है, उस में से प्रकाश अन्दर नहीं जा सकता. इस पुड़त की सख्ताई के सबब डोले की गोलाकृति कायम रह सकती है, लेकिन उसका अगला पिछला भाग कांच जैसा निर्मल है, इस वास्ते उस में से उजाला जा सकता है, आंख के सफेद पुड़त के नीचे दूसरा काला पुड़त है, सो बारीक नसों से तन्तुओं का बना भया है, इस के रंग से ऊपर का डोला काला अथवा मांजरा दीखता है, आंख के अन्दर गोल चक्कर जो दीखता है, सो कीकी का पर्दा है, उस के बीच में एक नाका है, जिसको कीकी अथवा पुतली कहते हैं, कीकी के नाके पर फक्त पहले पुड़ का नाजुक अगला भाग है, कीकी पर्दे के संकोचने प्रमाण कीकी एक से बीस तक और एक से तीन इंच तक छोटी और बड़ी हो सकती है और उस पर से कितने एक रोगों की परिचा हो सकती है, आंख का तीसरा पुड़ अन्दर है और आंख की दृष्टि तन्तुओं डोले में पसर कर वह पुड़ बना है, वह तन्तु वाला पुड़ कहलाता है, आंख के बाहर के पुड़त साथ मांस के छः छोटे लोचे लगे भये हैं, जिस करके डोला अपने चारों तरफ फेर सकते हैं, आंख के अन्दर तीन कोथली जैसी जगह है जिस में आंख का

पानी तथा रत्न जैसी जरूरी चीजें रह सकती हैं, अगली कोयली आंख के निर्मल सफेद पुड़ के और रत्न की कोयली के बीच में हैं वह कोयली सब से छोटी है उस में आंख का पानी रहता है इसका वजन पांच गेहूं भर है. आंख की बिचली कोयली सख्त पुड़की बनी भई है, उस में आंख का रत्न लटका भया है, यह रत्न आगे से पीछे से गोल हीरा जैसा पार दर्शक है, आंख की तीसरी कोयली सब से बड़ी है, जो सब के नीचे पुड़त में है जिस में बिल्लौर जैसा निर्मल पदार्थ इन भागों की मदद से अपने बाहर का पदार्थ देख सकते है, जो चीज अपने देखते हैं उस के ऊपर से निकलते उजा वालों के किरण डोले के सफेद स्वच्छ पड़दे के अन्दर से आंख के अन्दर दाखिल होता है उस में से पूर्वोक्त कोयली में से होकर कीकी में से ये किरणों जैसा प्रचार होता है किरणों अन्दर इकट्ठी होकर रत्न में दाखिल होकर एक मिलते हैं, बाद रत्न में से निकाल, सब से पिछली कोयली के बिल्लौर में घुस के वहां से तले वाले पुड़त पर इकट्ठे होते हैं. वहां मूल पदार्थ की आकृति का प्रति बिम्ब उस पर पड़ता है, उसकी खबर मगज को पहुंचते ही उस चीज की शकल रूप रंग वगैरः का जीव को ज्ञान होता है, अंधेरे में पड़ी चीज में से किरणों निकलते नहीं इस से उसकी परछाईं रत्न पुड़ पर पड़ता नहीं इस वास्ते अंधेरी में पड़ी चीजों को आंख देख नहीं सकते सो दर्शनावरण कर्म है. आंख के कोनों में डोले समान एक २ मांस की गांठ देखने में आती है, उसको अश्रु कहते हैं, उन में आंसू पैदा होता है, ये आंसू आंख को बहुत ...

ेद है, उस आंसू से डोले भीगे और ताजे रहते हैं और आंख में कोई फूस फांटा जाता है, उसको आंसू धोकर बाहर निकाल डालता है आंखों के कोने में नाक के जड़ के पास एक बारीक छेद है, उस में से आंसू आधे इंच जितनी लम्बी नली के रास्ते नाक में उतरता है, भांपने बार २ मिचते रहते हैं, उस से आंख की रक्षा याने हिफाजत होती है, इतना ही नहीं लेकिन डोले के ऊपर के आंसू कोने के तरफ ढकेली जकर उस पूर्वोक्त नली के रास्ते नाके में हवा का आना जाना होता है, उस हवा से वह आंसू के सूक्ष्म परमाणु होकर उड़ जाते हैं, इस वास्ते नाक में आंसू मालूम नहीं पड़ते हैं, जब कोई भी बीमारी के सबब आंख के आंसू नाक में बहता बन्द होता है, तब वह आंसू आंख का गाल पर बहने लग जाता है, उसको नाक स्वर का दर्द कहते हैं ॥

कान, श्रवणेंद्रि, (इयर *Ear* .)

सुनने की इन्द्री को कान कहते हैं, कान का जो बाहर का भाग दीखता है, सो नरम हाडों का याने कूर्चा का बना भया है हरएक कान में एक २ छेद हैं, ये छेद के आगे से एक छोटी नली शुरू है, सो आसरे डेढ़ इंच लम्बी है, इस नल पर चमड़ी का पुड़त है, कान की अगली नली का नरम भाग नरम हाड याने कूर्चे का बना भया है और पिछला भाग हाड का बना भया है, कान के अंदर की चमड़ी बहुत पतली होती है, कान में जो मैल होता है सो

बाहर से नहीं आता इस चमड़ी में से पैदा होता है, कान के बि
ले भाग में खड़ा है उस के तथा बाहर के कर्ण नली के बीच
एक बारीक पर्दा आया भया है, उसके भाग में से एक महीन
निकलकर अन्दर के भाग में उतरी है, इस से और कान के बि
भाग में से मुंह के सम्बन्ध रहा भया है, कान का आखीर
का भाग सब से जरूरी का है क्योंकि उस में सुनने के त
आये भये हैं, इस भाग का वर्णन सहज में समझ में नहीं आ
ऐसा है, लेकिन मगज में से आये भये श्रवण तन्तुओं इस भ
दाखिल भया है, उस तांतुओं के प्रवेश वास्ते उस में महीन
हैं, कान बाहर हवा में जो कुछ आवाज होता है, उस हवा का
पुद्गल कान के अन्दर पर्दे पर पड़ता है, तब वह शब्द मृदं
पुड़त की तरह उस आवाज को अन्दर श्रवण तन्तु मगज
पहुंचाता है, वहां सुनने का ज्ञान उस जीव को प्राप्त होता है

नाक घ्राणेंद्री, (नोज़ *Nose*)

नाक का अगला भाग पांच नरम हाडों का अर्थात् कूर्चा
बना भया है, बाहर दो छेद दीखता है उसको नसकोरा क
आता है, नाक के दो भाग है, एक तो बाहर दीखे सो दूसर
का बाहर के नाक की जड़ कपाल के साथ है, जैसे बाहर
हैं, तैसे अन्दर भी दो छेद हैं वे मुंह के पिछले भाग से त
के साथ सम्बन्ध रखता है, दो नसकोरों के बीच में एक प

सकोरों के मुंह आगे बाल उगते हैं वह बाल नाक के अंदर जाते ये धूल वगैरः का अटकाव करता है, मगज के जो तंतु नाक में उतरे है वह खसबोई वगैरः परखने की शक्ति रखते हैं ये सुगंध दुर्गंध के पुद्गल पहली नाक के गीलास वाले पदार्थ में जब प्रवेश करते हैं, तभी खुसबो की भावना पैदा होती है जब नाक सूखा होता है तब बासना का ज्ञान नहीं होता है, खूसबो की बराबर समझ पड़ने को उस सुगंध दुर्गंध पदार्थ को जब हवा से ऊपर चढ़ाते हैं तब हवा से जियादा असर मालूम पड़ता है, मगज के तंतुओं में से पहला जोड़ा सूंघने की क्रिया करता है, वह मगज में से नीचे उतरे बाद उसकी बारीक शाखायें नाक के ऊपरले भाग में पसरे हैं और वेही सुगंध दुर्गंध को परखे है नाक के नीचे का भाग मुंह तथा फेफसों के संग सम्बन्ध रखता है जिस से यह श्वांस लेने का तथा जुदी २ आवाज निकालने के काम में उपयोगी होता है सब प्राणियों की खुशबू परखने की शक्ति बराबर नहीं है कारण कर्मों के आवरण के क्षयोपशम मूजब है इस आवरणों के मुताबिक ही मगज के संग सम्बन्ध रखने वाले प्राण तंतुओं जैसे जिसके होते हैं तैसी ही उस में शक्ति होती है कोई आदमी तो बहुत तरह के खुसबू परख सकता है कोई नहीं परख सकता है एक आदमी को एक चीज की खूसबू अच्छी लगती है वो ही खूसबू दूसरे को अच्छी नहीं लगती ॥

जीभ स्वादेन्द्रि, (टंग Tongue).

स्वाद की जानने वाली इन्द्रीय जीभ है जीभ आस पास के भाग

तालुवा पडजीभ वगैरों में भी कुछ २ स्वाद जानने की शक्ति मालू
देती है जीभ के अग्रभाग पर दाना २ होता है उस दानों तक म
गज के स्वाद इन्द्रियों के तंतू पसरे भये होते है जिस से जीभ को
अनेक वस्तु का स्पर्श होते ही स्वाद की परीक्षा हो सकती है जो
पदार्थ जैसे ज्यादा पतला होता है वो जल्दी जीभ के तंतूओं
घुसकर जल्दी स्वाद का असर करता है और कठिन पदार्थों के प
रमाणु जीभ से पैदा हो लेरस में प्रवेश जब करता है तब रस के
स्वाद मालूम पड़ता है जीभ के अंदर के तंतूओं को जो स्वाद का
ज्ञान होता है वो ज्ञान मगज को तंतू पहुंचाते हैं तब अपने को
उस २ रस का ज्ञान होता है जीभ मांस के लोचों से बनी है चारों
तरफ से स्नायु जीभ के लगे भये हैं इस वास्ते जीभ इधर उधर
फिरती है खुराक चावने में जीभ बहुत मदद करती है खुराक को
फेर २ दांत के नीचे लाती है और जीभ की अणी खुराक को नरम
करती है और बोलने के काम में जीभ का मुख्य उपयोग है ॥

चमड़ी त्वचा स्पर्शेंद्रि (स्किन Skin).

मगज के ज्ञान इन्द्रियों में पांचमी त्वचा है उस करके
का ज्ञान होता है चमड़ी शरीर के अन्दर के भागों को
[illegible] का [illegible] करती है प्राचीन वैद्यों के शास्त्रप्रमाण से सात
म है और डाक्टरों ने इस के दो पुड़त माने हैं जिसमें ऊपर
[illegible] पड़त मलीन पतला है जिसमें जलने से इस पर फफोला

ाता है सो ऊपर के पड़त का है इस के नीचे दूसरा पड़त है वह
हुत सख्त और जाडा है उस पर छोटी २ बहुत अणियां होती है उस में
ान तंतुओं के जाल पसरे भये होते हैं चमड़ी के नीचे छोटी गां-
होती है उस में से पसीना पैदा होता है और चमड़ी के महीन
द्रों में से बहार निकलता है चमड़ी के ये छेदों की गिनती जैना-
दिक प्राचीन ग्रन्थकारों ने साढ़ा तीन क्रोड़ की संख्या मानी है डा-
क्टरों के अनुमान से एक इंच चोरस जगह में २८०० छेदों की
गिनती करने में आई है सब शरीर पर इस हिसाब से ७० लाख
पसीने का छेद है प्राचीन पंडितों की गिन्ती शरीर के बढ़ाई पर है
क्योंकि कोई कालांतर में प्राचीन पंडित उमर और शरीर की बढ़ाई
मानते चले आये वेदों में युग के हिसाब पर घटत बढ़त है जैनों
के अरोकी गिन्ती मुजब है इस की चर्चा यहां नहीं लिखते ग्रन्थ
बढ़ जावे पसीना पानी जैसा पदार्थ है वो हमेशा निकलता रहता है
लेकिन हवासे सूख जाता है सो हमेशा अपने नजर नहीं आता
सब दिन रात में सरासरी तीन रतल पसीना पैदा होता है पसीने
के संग खून में से कितनी एक खराब वस्तु शरीर में से निकल
जाती है पसीने सिवाय चमड़ी में से एक चिकना तेल जैसा पदार्थ
निकलता है जिस से चमड़ी हमेशा नरम और सुंआली रहती है
और चमड़ी में शोषण करने की भी शक्ति है जिस से लेप तेल
वगैरः को अन्दर खेंचती है ॥

छाती, फेफसा, छाती की पोल, (चेस्ट *Chest*).

छाती की पोल में रक्ताशय बड़ी खून बहनी नस और दो फेफसे आये भये हैं, अन्न नल भी छाती में होकर पेट में उतरा है और श्वास नली का भी थोड़ा हिस्सा छाती के पोल में भया है, छाती के दोनों तरफ दो फेफसे हैं और बीच में (हार्ट) है, छाती के दोनों तरफ बारह २ पांसलियां हैं, छाती पीछे पीठ की तरफ बीच में करोड़ है और छाती के अगली उरोस्थि अर्थात् छाती का हाड है, जिस के सङ्ग पांसलियां भई है, ये सीने का हाड आसरे पांच इंच लम्बा है, ये सीने के हाड अव्वल से तो बहुत टुकड़ा २ होता है, लेकिन पीछे से पर आपस में जुड़ जाते हैं, ये सीने का हाड गले के तरफ होता है और नीचे की तरफ सांकड़ा होता है कोडी के पास दार होता है, पीठ की तरफ बारह ही पांसलियां करोड़ के मनियों संग जुड़ी भई है और अगली तरफ सात पांसलियां सीने की हड्डी संग जुड़ी भई है, नीचे की तीन पांसलियों का अग्रभाग खुला पांसलियां स्थिती स्थापक है नर्म और झुक सकती है, इस श्वासों श्वास की क्रिया में मदद देने वाली है ॥

फेफसा फुप्फुस (लंग्स *Lungs*).

फेफसे दो हैं वह छाती के दोनों तरफ आये भये हैं, की शकल मृदंग जैसी है, ऊपर से संकड़ा नीचे से चौड़ा

है और गुण इसका बदली जैसा होता है, दरेक फेफसे का वजन डेढ रतल का होता है, बायें फेफसे से दाहिना फेफसा जरा जियादा वजन में होता है, लेकिन दाहिने फेफसे से बायां लम्बा जियादा होता है, फेफसे स्थिति स्थापक और बादल जैसे होने करके दबता है और फूलता है फेफसे के अन्दर छोटे २ बहुत छेद होते हैं अथवा पोले दाने होते है वह हवा से भरे भये होते हैं, उस के छेदों की गिनती डाक्टरों ने करी है, जिसका अनुमान ३० करोड़ छेदों का है, जो फेफसा फक्त कोथली जैसा होता तो उस में हवा को बहुत थोड़ी जगह मिलती लेकिन करोड़ों छेद होने के सबब हवा को बहुत जगह मिलती है, हरएक फेफसे में हवा से भरे छेद एकंदर १४०० चोरस फुट जितनी जगह रोके इतनी हवा है, पीठ के तीसरे मनियें के सामने से श्वास नली के दो शाखायें हैं, सो दाहिनी शाखा दाहिने फेफसे में जाती है, बाइ बायें फेफसे में पहुंचते २ वह श्वास नली के शाखाओं का उत्तरोत्तर भाग विभाग होकर आखिर बारीक शाखा पर बारीक पर पोटे होकर ठहरता है श्वास नालियों के असंख्य अग्रभाग जहां आगे फेफसे को मिलते हैं वहां हवा और खून आपस में सम्बन्ध होते ही खून शुद्ध होता है ॥

रक्ताशय, हृदय, अंतःकरण दिल (हार्ट *Heart*).

रक्ताशय ये छाती की पोलार में दोनों फेफसे के बीच में कुछ बाई तरफ तिरछी पड़ी भई एक मांस की थैली है बाई तरफ

की ऊपर की तीसरी पांसली से नीचे छटी पांसली तक
लम्बाई पांच इंच की है, ये थेली अथवा रक्ताशय यह खून का
है, इस में से खून सब शरीर को पहुंचता है, छाती के बा
की पांचमी और छटी पांसली पर हाथ धर के रखने से जो फ
ता मालूम देता है वह रक्ताशय का है, रक्ताशय का कद
आदमी की मुट्ठी जितना है और वजन आसरे पोन रतल क
औरतों के दिल का वजन आधे रतल का है, वह अन्दर से
है और बीच में एक पर्दा है, जिस करके उस के दो हिस्से है,
तो दाहिना भाग दुसरा बायां भाग एक २ हर भाग का पीछे
विभाग हैं दाहिनी तरफ काला खून है बांये तरफ लाल खून
दोनों भागों के बीच में छेद होता है उस छेद के पर्दा होता
जो नीचे के भाग की तरफ खुलता है औ बन्द होता है जब
रहता है तब एक खणका खून दूसरे खण में जा सकता है
जब बन्द हो जाता है तब उस के पर्दे ऐसे सजड़ हो जाते हैं
आगे गया दूसरे खण का खून पीछा उस खण में नहीं आ
हरएक भाग में आसरे पांच तोला खून माता है रक्ताशय के
खंडों का बड़ी रक्त वाहिनी नस के साथ सम्बन्ध है दाहिने
खगड के संग शरीर की ऊपर की और नीचे की दो बड़ी
जुड़ी भई है दाहिने नीच के भाग में से बड़ी धमनी निकल
उस के दो भाग होकर एक भाग हरएक फिफसे में गया है
रक्त के ऊपर के भाग में से तीन चार सिरा बहती है और
नीचे के भाग में से एक बड़ी धमनी नाड़ी निकली है

बायें होकर सब शरीर में फैली हैं हरएक धमनी के मुंह पर
र्द्धचन्द्राकार पर्दा होता है वह पर्दे धमनी बड़ी नाड़ी के तरफ
खुलते हैं और नीचे के भाग के तरफ बन्द होते हैं रक्ताशय का
काम सब शरीर में खून पहुंचाने का है उस के मांस के लोचे तंग
और ढीले होते हैं जिसकर के उस भाग में से खून निकलकर
बाहर नसों में धकेली जता है जैसे पिचकारे को दबाने से उस के
मुंह में से पानी जोर से निकलता है उसी तरह रक्ताशय का काम
सङ्कोचने का और फूलने का जिसकर के धमनी वगैरः रगों में
खून जोर से दौड़ता है शरीर के सब भागों में पहुंचता है रक्ताशय
के बायें भाग में इतना जोर है सो सङ्कोचाते वक्त उस के मुंह के
सामने अगर तीन रतल का वजन होय तो भी उसको ठेल डाले
रक्ताशय तंग और ढीला होती वक्त उस में से धड़का होता है एक
मिनट में सरासरी ७२ वक्त रक्तशय सङ्कोचीजता और फूलता है
एक मिनट में पल २॥ होते हैं फिर रक्ताशय के आस पास एक
मजबूत जाड़ा सफेद पर्दा बाहिरकर लगा भया है पर्दा बन्द करी भई
थैली जैसा है रक्ताशय के लगा भया नहीं है दूर है उस पर्दे में
पानी जैसा रस पैदा होता है जिस करके रक्ताशय का जाब्ता है
और घस्सा रक्ताशय को किसी तरह नहीं लग सकता ॥

छाती तथा पेट के बीच का पर्दा उरोदर पटल
(डायफ्रम *Daiframe*).

छाती तथा पेट के बीच में एक पर्दा है सो मांस के लोचे
का बना भया है वह गोल गुम्मट के जैसा है यह पर्दा पीछे से

तो पीठ की करोड़ के हाड के पसवाड़े साथ और आगे से
के भीतर की कोर संग चौतरफ लगा भया है इस पर्दे के
की तरफ संग बाईं दाहिनी तरफ तो फेफसा और बीच में
शय जुड़ा भया है और नीचे के पसवाड़े संग दाहिणी तरफ
कलेजा बायें तरफ तिल्ली और बीच में होजरी जुड़ी भई है
पर्दे में तीन छेद हैं जिस में से एक में से धोरी नस और
छेद में से अन्न नल छाती में से पेट में उतरे है तीसरे छेद में
काली नस पेट में से छाती में जाती है इन तीनों छेदों के
उस पर्दे में कितनेक महीन छेद है उन्हों में से ज्ञान तंतु
को रस्ता मिलता है ॥

पेट की पोल, उदर, पेट (अंडोमेन *Aundomen*)

शरीर में से सब से बड़ी पोल पेट की है. पेट की पोल
पिछले भाग में पीठ की करोड़ आई भाई है और ऊपर के
के बाजू पर पांसलियां है, आगे का और पसवाड़े का ढकना है
तथा चमड़ी का बना भया है ऊपर की तरफ छाती के और
के बीच में गुम्मट के आकार का पर्दा है और नीचे के
पेडू अथवा बस्ति स्थान है पेट को दबा के देखने से दुबले
का पेट ढकना आखर करोड के मनियें तक हाथ में लग जाता
यहां पेट का ढकना गर्भवती औरत का और मेद वाले तथा जलं
वगैरः उदर रोगियों का बहुत चढ़ जाता है पेट की दिवाल के

ख्वा में सूंड़ी का खड्डा है, उस के नीचे पेड़ू है और पेट के आखरी ऊपर के तरफ पांसलियों के बीच के भाग को फेफड़ा या कोड़ी कहते हैं बाजू वालों को पसवाड़े कहते हैं, पेट में होजरी कलेजा तिल्ली आंतिरयां मूत्राशय के गुर्दे वगैरः बहुत जरूरी के अवयव आये भये हैं, उन सबों की हद्द और जगह जानने के वास्ते पेट के चौतरफ दो तो आडी और दो खड़ी लकीर दोलड़ी कल्पने से उस पेट का नव हिस्सा होता है उस में नीचे लिखे यन्त्र मूजिब कोठे आये भये हैं ॥

१ दाहिनी पांसली पास के भाग में.	२ फेफड़े वाले मध्य भाग में.	३ बाई पसली के पास भागमें
कलेजा का दाहिना भाग पित्ता छोटे आंतों का पहला भाग बड़े आंत का दाहिना लपेटा दाहिने गुर्दे का ऊपरला भाग ॥	होजरी का बिचला भाग और दाहिना अग्रभाग कलेजा का बाया भाग.	होजरी का बाया अग्रभाग तिल्ली बड़े आतरों का लपेटा बाया गुर्दे का ऊपरला भाग.
४ दाहिना कमर तरफ भाग में.	५ सूंड़ी वाले मध्य भाग में.	६ बायें कमर तरफ भाग में.
ऊपर चढता बड़ा आंतरा दाहिने गुर्दे का नीचे का भाग छोटे आंतरों का थोड़ा भाग.	बड़े आतरे का आडा भाग छोटे आंतरों का थोडा गुचला.	बड़े आंतरे का नीचे उतरता भाग बायें गुर्दे का नीचेका भाग छोटे आतों का थोड़ा गुचला.
७ दाहिनी भाव तरफकेभागमें.	८ पेडू वाले नीचे के भाग में.	९ बायें भाव तरफ भाग में.
छोटे आंतरे का छेड़ा और बड़े आंत का गुल्मान का भाग पेशाब ले जाने वाली दाहिनी नली.	छोटी आन का गुंचला पेशाब का भरा फुका गर्भ मे बढ़ा भया गर्भस्थान.	बड़े आतरे का नीचे का और मफॅर का ऊपरका भाग पेशाब ले जाने वाली बाईं नली.

इस लिखे कोठे से सामान्य तौर पर इतना तो जरूर समझ में आ जायगा, पेट के दाहिने तरफ पांसली के नीचे कलेजा

(यकृत) कलेजे के नीचे थोड़ा तो छोटे तैसे ही बड़े आंतरे का भाग और मूत्राशय और सब के नीचे जांघ के पास मूत्र ले जाने वाली दाहिनी नली इतने अवयव आये भये हैं, पेट के बीच में ऊपर होजरी और कलेजे का थोड़ा भाग उस के नीचे सूंडी वाले भाग में बड़ा आड़ा पड़ा भया आंतरे का भाग और छोटे आंतरे और सब से नीचे पेड़ू में छोटे आंतरे और स्त्री का गर्भस्थान इतने भाग आये भये हैं, पेट के बाईं तरफ पांसलियों के नीचे होजरी का बायां छेड़ा तिल्ली और बड़ा आंतरा उस के भी नीचे बड़ा आंतरा तथा मूत्राशय और सब से नीचे जांघ के पास मूत ले जाने वाली दाहिनी नली इतना भाग आया भया है ॥

अन्न नल ॥

पेट की पोल के होजरी वगैर: भागों का वर्णन करने से पहले होजरी में अन्न कहां से होकर किस तरह आता है सो जानना चाहिये, खाया भया खुराक इस नल में होकर नीचे जाता है यह अन्न नल मांस मय स्नायुओं का बना भया है उस के संकोचने से खाया भया खुराक धक्के खाकर होजरी में जाता है, यह नल मुंह की खिड़की अथवा गले के नीचे के भाग से शुरू होता है, वह नल श्वास नली के पीछे और जरा बाईं तरफ करोड़ के आसरे नीचे उतरता है, पहले लिखा जो छाती और पेट के बीच में गुम्मट के आकार में होकर होजरी में पहुंचता है, इस नल का सम्बन्ध आखर गुदा द्वार तक पहुंचा है जैसा खुराक खाने में आता है सो अन्न

त के रस्ते होजरी में, उस होजरी के संग जुड़े भये छोटे आंतरे
ा उन्हों में उन छोटे आंतरों से जुड़े भये बड़े आंतरे में होकर
हरों में आता है, गले से लेकर होजरी के ऊपर के नाके तक
ुचता यह अन्न नल की लम्बाई १२ इंच की है अन्न नल श्वास
ी के पिछाड़ी है जिस से जिस वक्त खुराक निगलने में आता
तब उस खुराक का कोई भी दाना श्वास नली में नहीं उतर
के इस वास्ते श्वास नली का मुंह बन्द करने को एक छोटा
कना जीभ के संग लगता है, वह खुराक गले से उतरने वक्त
ास नली का मुंह ढक देता है तब उस के ऊपर होकर के खुराक
न नल में प्रवेश करता है ॥

होजरी, अन्नाशय, आमाशय ॥

गले से गुदा तक खुराक का एक ही रस्ता अथवा नल है,
जिस में होजरी खुराक का सब से पहला भाग है, होजरी पेट के
ापाड़ वाले मध्य भाग में नीचे की बाईं पसलियों के तरफ आया
गया है, होजरी के ऊपर उरोदल पटल और कलेजे का बायां भाग
है होजरी के बायें तरफ तिल्ली है, दाहिनी तरफ कलेजा है नीचे
आंतरा है पिछाड़ी करोड़ है, होजरी के ऊपर के छेड़े पर अन्न
नल का संयोग होता है और नीचे के छेड़े से आंतरा शुरू होता
है होजरी की शकल पानी की मशक अथवा थैली सरीखी दिखती
है, जब उस में खुराक जाता है तब वह मोटी होती है तब उसकी

और चिकनास का भाग होता है उसको पित्त जल्दी पिघलाता है पित्त से आंतरों को जल्दी गति मिलती है और दस्त खुलास आता है पित्त का थोड़ा भाग दस्त के रास्ते बाहर निकलता है उस से दस्त का रंग पीला होता है चौबीस घन्टे में तीन रतल पित्त पैदा होता है ॥

पित्ताशय, पित्ता (गालब्लंडर Galblinder).

कलेजे में पित्त का स्थान है यह पित्ता कलेजे के नीचे के तरफ लगा भया है यह एक गाजर जैसी थैली है पित्त की नली होजरी के नीचे छेडे से शुरू होता छोटे आंतरे से मिलता है इस पित्त की नली के संग दूसरी (पांक्रियाफ) नली का संयोग होता है इन दोनों की एक नली होकर आंतरे में प्रवेश करती है इस दूसरी नली में से थूक जैसा एक रस आंतरे से मिलके पाचन क्रिया में मदद करती है पित्त कलेजे में पैदा होकर पित्ताशय में इकट्ठा होकर पित्त की नली के रास्ते होकर आंतरे में जाता है ॥

तिल्ली, प्लीहा (स्पलीन Spleen).

पेट की बांई तरफ पड़खे में नवमी दशमी ग्यारमी इन तीन पांसलियों से ढकी भई हैं वह तिल्ली है कलेजे की तरह ऊपर से दबाने से मालूम नहीं पड़ती उरोदर पटल और होजरी के रस पुडतों से संधी भई है उसका रंग बादली रंग की सलेट जैसा है वह पांच इंच लम्बी तीन इंच चौडी और १० से १५ तोला वजन में भी काम खून शुद्ध करने का है बुखार की बीमारी में

रह बढ़ती है यहां तक बड़ी हो जाती है कि एक सख्त पत्थर जैसी गांठ सब पेट में फैल जाती है ऐसी तिल्ली बधी भई २० से ३० रतल तक वजन की होती है जब मिटती है तो यहां तक छोटी हो जाती है उसका वजन एक तोले से वजन वैसी नहीं होता॥

॥ मूत्रपिंड-गुरदा ॥ (किडनी *Kiddney*)

मूत्रपिंड दो हैं मूत्रपिंड दोनों करोड के दोनों तरफ कमर के पिछले भाग में आये भये हैं हरएक गुर्दा ४ इञ्च लम्बा २ इञ्च चौड़ा १ इञ्च जाडा होता है उसका वजन आसरे १० से १२ रतल का है बाहर से वह साफ और लीसा है उसकी शकल उर्द के दाने जैसी है दाहिणा गुर्दा कलेज के संग लगा भया है और बांयें गुर्दे का ऊपर का भाग तिल्ली से ढका भया है गुर्दा बारीक नलियों का बना भया है इस नलियों के चौ तरफ नसों का जाल बंधा भया है उसमें से कितना एक खराब निकम्मा भाग जुदा होता है दूसरा मायना उसका ऐसा है मूत्र पेशाब का पैदा होना है सब दिन में २ से ३ रतल पेशाब पैदा होता है दोनों गुर्दे में पैदा होना है हर एक गुर्दे के अंदर के तरफ एक छोटा खम्भा होता है उस में से एक २ बारीक नली सरू होती है वह पेडू के भाग को लांघ कर मूत्राशय (ब्लांडर) में जाता है इस नली को मूत्र नली कहते हैं॥

॥ मूत्राशय-फुक्या ॥ (ब्लांडर *Blander*)

दोनों तरफ के मूत्र पिंड में मूत्र पैदा होता है मूत्र-नली के

रास्ते वह मूत्र बस्ति के आगे भाग में जहां इकठा होता है उस भाग को मूत्राशय कहते हैं मूत्राशय का आकार अण्डे से मिलता है यह मूत्राशय एक मांस की थैली है उस के अंदर तीन नाका है उस में से दो नाकों के रस्ते मूत्रपिण्ड में से मूत्र मूत्राशय में आता है और तीसरे नाके के रस्ते बाहर निकलता है गुड्दे में से पेशाब बूंद २ मूत्राशय में इकट्ठा होता है और जिस वक्त मूत्राशय भर जाता है तब उस को बाहर निकालने को मूत्राशय की मांस की साखायों संकोचा कर मूत्र को गति देती है ॥

॥ उत्पत्ति-अवयव ॥

जिस अवयवों से सन्तान पैदा होते हैं उस को जननेंद्रिय भी कहते हैं पुरुष अथवा स्त्री इन दोनों के उत्पत्ति अवयवों की रचना जुदी है वृषण वीर्याशय और लिंग यह तो पुरुष के उत्पत्ति अवयव हैं गर्भाशय उस के अन्दर का भाग और योनि यह औरतों के उत्पत्ति अवयव हैं अब यह दीपक मर्यादा की जमीन में रहा भया सब संक्षेप से जरूरी के अवयवों को प्रकाश कर दिखाता है वृषण (टेस्टीकल्स) आंडों की मांस मय यह थैली है इस के अंदर दो गोली थैली की रगों तथा नसों से लटक रही है गोली दोनों अंडे की शिकल गोल है दहनी गोली से बांई गोली जरा नीची और बड़ी है हरेक गोली की लम्बाई १ इंच से १॥ डेढ इंच तो लं- बाई, १॥ इंच चौड़ाई, १ इंच जाड़ाई, तन्दुरस्त शरीर में हरेक गो- ली का वजन [illegible] से २॥ तोला तक होता है आंडों की थैली के

ीच रेसा होता है जिस से थेली के दो हिस्से हैं गोली भी अलग २ हैं गर्भ में रहे बच्चे की गोली मूत्रपिण्ड के पास होती है बच्चा जब करीब आठ महीने का होता है तब वह गोली पेट की दिवाल में से रस्ता कर आंडों की थेली में उतरती है जन्म के समय किसी केसी बच्चे के वह गोली पेडू में होती है कोई वक्त एक ही गोली उतरती है दूसरी नहीं उतरती गोली के ऊपर एक जाडा मजबूत पुड होता है और उस के नीचे मकड़ी के जाले जैसा महीन पुडत होता है यह गोलियां आसरे आठ से बारीक नलियों की बनी भई है यह हरेक नली $\frac{1}{200}$ इंच अर्थात् एक इंच का दोसेमा भाग जितनी पतली होती है और लम्बाई में वह नलियां कम से कम १३ इंच की ज्यादा से ज्यादा ३३ इंच की होती है यह आठसे इन नलियों का बेड़ा सांध कर लम्बी की जावे तो पूणा माइल तक लम्बी डोरी हो जावे एसे बहुत तांतुओं की गोलियां बनी है गोलियों में ऐसे दो २ तीन तीन नलियों का गुच्छा होता है नली के बाहर धोरी नसों की महीन जाल पसरी भई होती है उसके खून में से धातु पैदा होता हे जिस रगों से डोरियों से थेली में गोलियां लटक रही हैं उस रगों में वीर्यनल धमनी और शिरा होती है शिराओं के अन्दर जब खून भर जाता है तब वह कोई वक्त सूज जाता है यह वीर्य नल धमनी तथा शिरा पेडू के छेदों में से पेट में दाखल होते हैं और शिरा तो बडी शिरा के संग मिलती है धमनी बड़ी धमनी में से निकली भई शाखा है और वीर्यनल मूत्राशय ऊपर होकर वीर्याशय को मिलता है अर्थात् कोयली में से निकली भई नलियां आगे जाते जुडकर

रह जब रागिन से पका भया खुराक का पहिले रस सारसत्व होता है वह जल जैसा प्रवाही सुफेद ठंडा मीठा चिकना और चलने वाला होता है ऐसा रस सब शरीर में है तो भी इस की मुख्य जगह हृदय है यह रस धोरी नसों के रस्ते होकर सब धातुओं में जाकर पोषण करता है जिस की मंद अग्नि है उस के खुराक का रस विदग्ध अर्थात् जला जाता है विदग्ध होने से रस तीखा और खट्टा होता है ऐसा रस बहुत रोगों को पैदा करता है उस कच्चे रस को आम कहते हैं वह जहर का काम करता है साधारण बोली में उस को रस विकार कहते हैं रक्त २ होजरी आमाशय में से जब वह रस कलेजे में जाता है तब पित्त के संयोग से रंगपाकर तथा पक कर उस का खून बनता है खून भी सब शरीर में रहा भया है जीव का सर्वोत्तम आधार है यह रक्त चिकना भारी मीठा तथा गमन करने वाला है खून बिगड़ने से पित्त जैसा खट्टा होकर रोग पैदा करता है इस विकार को लोही खून विकार कहते हैं कलेजा और तिल्ली यह रक्तों का मुख्य ठिकाना है मांस ३ खून में रही अग्नि कर के पका भया वायु कर के घट्ट भया खून इसी का नाम मांस है खून के स्थान में गया भया रस वह तो खून मांस में गया भया खून सो मांस ऐसे मांस से मेदा मेदे में से अस्थि हाड में से मींजी मींजी में से वीर्य पैदा होता है गरमी युक्त वायु पोली शिराओं का विभाग अर्थात् शाखाओं बनाती है तैसे वायु मांस में प्रवेश कर मांस की पेसियों बनाती हैं शरीर में ऐसे मांस की पेसी ५०० हैं शिराओं स्नायुओं हाड संधि यह सब मांस की

पेसीयों से ढकी भयी हैं जिस से यह सब ताकतवर और चलते हैं यह पेसियां सब शरीर में हैं मेद ४ ज्यादा अन्दर की अग्नि से पक कर ज्यादा घट्ट होता है उस को मेदा या चरबी कहते हैं मेद भारी चिकनी बल देने वाली शरीर को जाड़ा करती है मेद विशेष कर पेट में रहती है हाड ५ मेद अन्दर की अग्नि से पक कर वायु उस को शोषण करती है तब उस के रूप का पलटना वह हाड कहलाता है जैसे दरख्त अन्दर के सत्व से खडा रहता है तैसे मांस सूखने पर भी बहुत मुद्दत तक यह शरीर हाडों के आधार चलता है वह सत्व रूप है इस वास्ते शरीर में हाड तीनसौ ३०० मज्जा हाडों में रही अग्नि उस से पक कर जो घट्ट सार सत्व है तया पसीने की तरह हाडों में से अलग निकलता है उस का नाम मींजी है यह मज्जा ६ बडे हाडों में ज्यादा करके अन्दर रहता है वीर्य व धातुओं का आखरी सत्व सारभूत धातु वीर्य है ॥

धातुओं का अन्य रूप (लक्षण *Habit*)

शरीर में सातों ही धातुओं की हमेशा क्रिया चलती है जो खुराक खाने पीने में आती है वह पाचन क्रिया विषय में लिखेंगे उस मुजब होजरी में पक कर उस में से मल मूत्र अलग होता है उस में से सार पदार्थ रस पैदा होता है वह रस का ठिकाणा हृदय में जाकर मूल रस में मिलता है वहां से फैल कर सब शरीर को पोषण करता है हृदय में गये बाद इस रस का तीन हिस्सा होता है स्थूल १ सुक्ष्म २ और मल ३ स्थूलरस तो अपनी निज जगह में ही रहता है सुक्ष्मरस धातुओं में जाता है और मलरस धातुओं के

मिल में जा मिलता है जैसे अंगार से सांठे का रस पकता जाता है मैल ऊपर आता जाता है तैसे ही रस में रही अग्नि कर के आहार के रस का पचन होता है पचती वक्त वो रस पांच दिन डेढ घडी तक अपने मूल रस में ही रहता है पीछे वो रस खून में जाता है वहां भी इतनी ही मुदत रह कर मांस में जाता है इस तरह वीर्य में पहुंचते एक महीना के करीब मुदत होती है एकेक धातु का पाक होते उस में से मैल छूटते जाता है एकेक धातु का निकलता भया मैल इस मुजब पाचन होता आहार के रस में से मैल निकले सो कफ१ खून धातू में से मैल निकले सो पित्त२ मांस धातू में से मल निकले सो कान का मैल ३ मेद धातु में से मैल निकले सो पसीना ४ हाड धातू में मैल निकले सो नख ५ मज्जा धातू में से निकले मैल सो नेत्रमल ६ वीर्य में से मैल निकले सो गालों पर चिकणाई या जुवानी में खीलों का होना ७ रस धातू में से निकला भया कफ प्राण वायू में चलायमान धमनी नाडी में होकर शरीर के मूल कफ में मिल कर कफ को पोपण करता है आहार के रस में से मैल जुदा भया पीछे सारभूत रस का दो भाग होता है जिस में से सूक्ष्म रस व्याननाम के वायु कर के प्रेरित भया धमनी के रस्ते शरीर की गरमी को कम कर के शरीर के धातू को पोपण करता है, खून का भी दो भाग जिस में से स्थूल भाग व्यान वायु से प्रेरित धमनी के रस्ते मांस धातू में मिलता है वहां कान का मैल छूट कर व्यान वायु से शिराओं के रस्ते बाहिर आता है इसी तरह मांस का दो भाग स्थूल १ और सूक्ष्म २ जिस में से सूक्ष्म भाग तो मूल

पेसीयों से ढकी भयी है जिस से यह सब ताकतवर और चलते हैं यह पेसियां सब शरीर में हैं मेद ४ ज्यादा अन्दर की अग्नि से पक कर शरीर के मूल मेद धातु में ... या चरबी कहते हैं मेद भारी सीना निकलता है शरीर की गरमी से तप कर ... विशेष कर के रस्ते बाहर निकलता है जीभ दांत कांख वगैरे में मैल निकलता है वो भी मेद चरबी का मैल है कितनेक आचार्य ऐसा कहते हैं इसी तरह मेद भी दो तरह का होता है जिस में सूक्ष्म भाग तो पेट में रहकर मेद धातु का पोषण करता हैं स्थूल भाग व्यानवायु से प्रेरित धमनी के रस्ते हाड में जाता है वहां अग्नि से पकते व्यान वायु से शिराओं में होकर उस का मैल नख बनता है शरीर के रुं भी हाडों का मैल है ऐसा भी मानते हैं इसी तरह हाड के दो भाग सूक्ष्म १ स्थूल २ सूक्ष्म भाग तो मूल हाड में रहकर उनों का पोषण करता है स्थूल भाग व्यान वायु द्वारा प्रेरित मज्जा में वहां पकते वखत मैल जो निकलता है सो पूर्व की तरह नेत्रों में मैल तथा चिपडी आंख होती है इसी तरह मज्जा का दो भाग जिस में से सूक्ष्म तो मूल मज्जा में रहकर मज्जा का पोषण करता है स्थूल का वीर्य बनता है उस वखत मैल नहीं निकलता सांठे का आगरी रस मिश्री को निखारणे के दृष्टांत एसा केइ आचार्य मानते हैं केइ आचार्य युवानी में मूं पर खीलों का होना सो धातु के पकते समय में मैल मानते हैं धातु काम पैदा जब होने लगता है या ज्यादा निकल जाता है तब वह मैल थोड़ा होने पर दिखाई नहीं देता मिश्री को निखारते ज्यों थोडा मैल आता है तैसे मज्जा से वीर्य बनते भी थोडा मैल आता है सो गाल वगैरे पर खील अथवा चिरू

ल में जा मिलता है जैसे अंगार से सोंठ का रस पकता जाता है
ल ऊपर आता जाता है तैसे ही ... वीर्य का मैल नहीं मानते आखिर
रस का पचन ... बनते तीस दिन के लगभग होता है यह दोनों का
क ही सिद्धांत है यह पाचन क्रिया में शरीर में कमबेसी गरमी के
लिये जितनी कसर रहती है तब धातुओं की पुष्टी में और मैल के
जये में बध घट होती है कितनेक आदमीयों के कफ जादा होता है
कितने एक के पित्त जादा होता है कितने एक के कान में मैल
ज्यादा होता है कितनों के पसीना ज्यादा होता है कितनों के रूं तथा नख
जादा बढता है कितनों के आंख में गीड तथा आंखों चिपडी होती
है कितनों के खीलें तथा गालों पर चिकणास जादा होता है ऊपर
लिखी सातोंइ धातूओं की अंदर की पाचन क्रिया में कमबेसी पणे
से ही एसा लक्षण होता होगा इस लचणों द्वारा अनुमान करने में
आता है ॥

॥ तीन दोप-वात-पित्त-कफ ॥

ऊ वींड वाईल फलेग्म

ऊपर लिखा सात धातू का उत्पत्ति क्रम वह मुख्य तीन ची-
जों से शरीर में क्रिया चलती है आहार के रस को तैसेइ उस में
से क्रम से बणते धातुओं को अपने २ ठिकाणे लेजाने का काम
वायु करती है यह वायु सब शरीर में फैली भई है आहार के रस
की चाल से यह भी मालम होता है के शरीर में पाचन क्रिया फ-
कत होजरी में और आंतों में ही होती है ऐसा नहीं है किन्तु अ-

ग्नि सब शरीर में है इतना तो है पक्वाशय के आसरे ही शरीर की सब गरमी और पाचन शक्ति का आधार है इस से मालम भया के पित्त नाम का एक अग्नि शरीर में अपना हक धराता है तीसरा मुख्य पदार्थ कफ है सो रस का मैल है या रस का दूसरा वर्णे सो पदार्थ है यह भी सब शरीर में व्यापक और शरीर को पोषणे वाला है इस वास्ते वैद्यक शास्त्र में इन तीनों की प्रधानता इन तीनों की वध घट से रोगीपणा समानता से निरोगीपणा इत्यादि प्रकृती जानने को आधार रक्खा है येवाय पित्त कफ या मैल मल जब बिगड के रोग करता है इस वासते तीनों को दोष भी कहते हैं जगत में धारण करने को चंद्रमा १ सूर्य२ और वायु३ कि जैसी क्रिया है ऐसी ही क्रिया शरीर को धारण करने को इन तीनों की है चंद्र जैसे दूसरे को ठंडता देता है तब ताकत वढती है तैसे कफ का धर्म है, सूर्य गरमी द्वारा सब को हरण करता है तैसे पित्त का धर्म है, वायु फेंक देती है विक्षेप करती है सो वायु का धर्म है यह तीनों बिगडे तो शरीर का नास कर देती है अवस्था में १ दिन में२ रात में३ और भोजन में ४ इन चारों में आदि में मध्य में और अंत में इन तीनों का वखत है, सो इस मुजब बालकपणे में कफ की अधिकता १ दिन के प्रथम भाग में कफ की अधिकता २ भोजन के अंत में कफ की अधिकता ३ जवानी में पित्त का जोर १ दिन के मध्यान्ह में पित्त का जोर २ भोजन के मध्य में पित्त का जोर ३ वृद्ध अवस्था में वायु का जोर १ दिन के अंत भाग में वायु का जोर २ भोजन की सरुआत में वायु का

ोर ३ रात के प्रथम भाग में कफ का जोर १ भोजन के पीछे
चने के अन्त में कफ का जोर १ रात्री के मध्य भाग में पित्त
ा जोर १ भोजन पचने मध्य मे पित्त का जोर २ रात के अंत
वायु का जोर १ भोजन पचने के आदि में वायु का जोर २ ॥

॥ पांच वायु ॥ (उ विंड)

वायु का लक्षण दोष धातु मल वगेरों को एक जगह से दूसरी जगह ले जाती है शरीर की क्रिया को चपलता देती है वायु शरीर में जहां तक शुद्ध होय तहां तक शरीर में फुरती चैन सब चेष्टाओं की प्रवृत्ति कर के धातुओं को अच्छी तरह गति देकर इंद्रियों को चपलता शरीर के सब क्रिया में मदद देती है वायुकार जो गुण हैं सूक्ष्म शीतल रूखा हलका चलने वाला यह उस के मुख्य गुण हैं वायु पांच तरह का हैं १ उदान कंठ में रहता है २ प्राण हृदय में रहता है ३ समान आंतरों में रहता है ४ अपान मलाशय में रहता है ५ व्यान सब शरीर में रहता है उदान वायु ऊंची गति करती है उस से बोलना गाना वगेरः होता है जब वह उदान वायु बिगडती है तब स्वर भंग तथा हांस के ऊपर के भाग में रोग पैदा करता है प्राण वायु का कार्य मुंमेगति करता है और आहार को रस्ता देता है प्राणों को धारण करता है प्राण वायु जब बिगडती है तब हिचकी रोग श्वास रोगादिक होता है उदान प्राण वायू का शुद्ध संयोग है सो ही आयु है समान वायु का कार्य आमाशय (होजरी) तथा पक्वाशय (आंतरा) में फिरे हैं जठराग्नि के संग मिल के आहार को पचावे है पाचन क्रिया में पैदा हो

ते रस को जुदा करता है मल मूत्र को जुदा २ निकाल के गिरावे है समानवायु जब बिगडती है तब मंदाग्नि अति सारदरत और गोला वगेरः अनेक रोगों को पैदा करे है अपानवायु का कार्य बडे आंतरे में तथा सफरे में रहकर मल मूत्र वीर्य गर्भ स्त्री के रितुधर्म (खून) वगेरः को नीचे के द्वार तरफ खेंचकर लेजाने का काम करता है अपानवायु जब बिगडती हैं तब वस्ति गुदा स्थान वीर्य का रोग प्रमेह वगेरः बडे २ भयंकर रोगों को यह वायु पैदा करती है व्यान वायु का कार्य सब शरीर में फिरता है रस को धमनी तथा शिराओं में चढावे है पसीना तथा खून को बहाता है गति पास में लाना दूर फेंकना आंखमूंचणी खोलणी इत्यादि काम व्यान वायु का है व्यान वायु जब बिगडती है तब सब शरीर में रोगों का जन्म पैदा करती है कोई वखत यह सब वायु एकदम बिगडती है तब बडे कष्ट से प्राणी मर जाता है ॥

॥ पित्त ॥ (बाइल)

पित्त का स्वरूप गरम प्रवाही पीला हरा सारक तीखा कडवा हलका चिकणा पित्त पकती वखत खट्टा है आमवाला पित्त हरा है आम विगर का पीला है स्वभाव पित्तकास तो गुणि है वह पित्त पांच प्रकार का है पाचक पित्त १ पक्वाशय आंतरों में है १ रंजक पित्त कलेजे में और तिल्ली में है २ साधक पित्त हृदय में है ३ आलोचक पित्त आंखों में रहता है ४ भ्राजक पित्त चमडी में रहता है पाचक पित्त खुराक को पचाता है अग्नि को बढाता है मल

ई यह तंतु बारीक तांतों जैसी है इस की ओपमा बिजली के तार जैसी है सब तांतणे काच की बारीक नली जैसे है उस के अंदर तेल जैसा निर्मल पदार्थ है बिजली के तार में जैसे अंदर धातु और ऊपर गटापरचा का लेप होता है तैसे ही तांतणों के अंदर का पदार्थ प्रवाही धातु का काम करता है और ऊपर का बारीक पुडत गटापरचे का काम साधता है ऐसे कितनेक तांतुओं मिल के बंडल होता है ऐसे कितनेक बंडल इकट्ठे मिलके तंतु होते हैं हरेक तंतु के दो नाके होते हैं जिस में से एक छेडा मगज में अथवा करोड रज्जू में होता है दूसरा छेडा जिधर के तरफ तंतु जाता है उस भाग में होता है स्पर्श रूपादिक पांचों इंद्रियों का समाचार मगज को पहुंचता है तब उसका ज्ञान होता है एक चीज को हाथ में लेने का मन होता है और उस को लेने को हाथ को मगज की प्रेरणा होती है तब लंबा करके उस चीज को हाथ उठा लेती है इसी तरह धर देना होता है मगज अथवा मनका बाहर के पदार्थों के साथ का व्यापार मगज अथवा करोड रज्जु से चलता है ज्ञानतंतु तथा गति तंतु यह दो तरह के है कितनेक तंतु बहार का व्यवहार किसी भी इंद्री पर चले उस की खबर मगज को देकर सावचेत करे उस को ज्ञानतंतु कहते हैं यह ज्ञानतंतु मगज और करोड रज्जू और मज्जा की जगह से निकल कर शरीर में फैलाया करती है और दूसरी तरह के तंतु भेजने का हुकम शरीर के हर किसी जगह पहुंचा कर गति अथवा क्रिया पैदा करती है इस तरह के तंतु ओं को गति तंतु कहते हैं इन दोनों तंतुओं के जाल सब शरीर

में सेल भेल होकर फैलाव किया है तिस पर भी वह अपना २ काम करती हैं मगज के तंतु खोपरी के भेजे का चार हिस्सा है जिस में से सब से बडा हिस्सा और ऊपर के मगज में से कितनेक तंतु सीधी खोपरी के छेदों के रस्ते निकल कर इस में मुख्य पांच ज्ञान इंद्रियों के तंतु हैं इनों की सीधी क्रिया मगज के संग चलती है इन सबों की क्रिया आपस में जुदी २ है आंख में गई तंतु बाहर के प्रकाश को लेकर मगज को पहुंचाती है तब अपणे देख सकते हैं इसी तरह शब्दादिक चारों इंद्रियों का व्यापार समझ लेना इस तरह मगज को खबर उस तंतुओं द्वारा पहुंचती है तब जिस जगह शब्दरूपादि पांच मुख्य विषयों का भेदांतरों के जगह वगेरा का मगज में ज्ञान होता है करोड रज्जू खोपडी के पिछाडी के नीचे के मगज में से कितनेक तंतु पीठ की करोड में उतरे भये हैं इस तंतुओं का नाम करोड रज्जू है पीठ की करोड में से ३१ जोड तंतु निकलती है उस की शाखा हाथ पैर छाती पीठ वगेरः सब धड में फैल गई है जो इस दोनों तंतुओं में कसर हो जाय तो उन उन इंद्रियों को ज्ञान में कसर होती है तार की डोरी बीच में टूटे बाद समाचार नहीं पहुंचा सके तैसे दृष्टांत जो ज्ञान तंतु पीठ की करोड रज्जू में से हाथ की अंगली तक पहुंचती है उस से अंगलियों को ज्ञान हो रहा है जो वो तंतुओं को बीच में से काट दिया जावे तो पीछे अंगलियों को जो स्पर्श होय उस का मगज को ज्ञान नहीं होता कटे बाद वह भाग अलग हो जाने से नीचे का भाग झूठा पड जाता है उस को जलावे अथवा सूई चुभावे (

भी मालम नहीं देता इस तरह गति तंतु की मारफत मगज अथवा करोड रज्जू का हुकम जिधर के तरफ गति तंतु गई है उधर की तरफ ही जाता है हाथ के अंदर गया भया गति तंतु को काट डाले तो पीछे हाथ के अंदर गति उत्पन्न करने वाली कुदरत कटे भये ऊपर के भाग में रहेगी नहीं क्योंकि कटे बाद मगज का हुकम उस भाग में चल सकता नहीं नीचे की तरफ फेर जो काम अपनी इच्छा से होता है उस का व्यापार मगज के संग चलता है और जिस १ काम में अपनी इच्छा की जरूरी नहीं उसका व्यापार करोड रज्जू के संग चलता है हाथ पांव वगेरः शरीर के कितनेक भागों को हलचल करने की अपने को इच्छा होती है तब उस २ भागों को क्रिया में जोडने को मगज है सो गति तंतु के मारफत हुकम पहुंचता है गति तंतु का अगला नाका उस भाग के स्नायुओं को अर्थात मांस के तांतों को मगज का हुकम सुनाता है तब वह स्नायु काम करने लग जाते हैं यह काम तो मनुष्य की इच्छा के आधीन है और होजरी हृदय आंतरों वगेरो में जो क्रिया होती हैं उस पर अपनी सत्ता अथवा इच्छा काम नहीं कर सकती उस २ भाग में जो गति तंतु है सो अपनी निज कुदरत से काम किया करती है करोड रज्जू का हुकम उस गति तंतु पर चलता है तब होजरी में अपनी क्रिया करती है यह हुकम बिना कारण होना नहीं होजरी जहां तक खाली रहती है तब तक उस की क्रिया बन्ध रहती है होजरी में जब खुराक गिरता है तब आस पास की गांठों (ग्लांडों) को खबर पहुंचते ही होजरी में रस क्रिया करने का

हुकम देता है शरीर की सब क्रिया मगज महाराज के आधीन है तंतू उस के हलकारे हैं ज्ञानतंतुओं शरीर के जुदी २ जगह की खबर पहुंचाने को पहरायत है गतितंतू मगज महाराज के द्वार पर खडे भये पहरायत है सो मालक का हुकम जुदी २ जगह पहुंचाते हैं इस करके हाथ पकडने का पांव चलने का आंख खोलने मूंदने का मुंह चावने का काम करता है जब इस में कोई भी जघह की क्रिया बन्ध पडे अथवा बराबर नहीं चले तो समझ लेना उस २ भागों के तंतुओं में कसर हो गई शरीर जड होता है वातरक्त गलत कोढ शुनवहरी कमर के नीचे का भाग रह जाय लकवा हो जाने वगेरे रोग ज्ञानतंतु गतितंतुओ का व्यापार अटकने से होता हैं उन्माद (पागलपणा) अपस्मार (मिरगी) वाइ (हिस्टीरिया) हिचका वगेरः रोग भी मगज के बिगाड से अथवा मन के बिगाड से पैदा होते हैं ॥

॥ रुधिर-खून-लोही ॥ (ब्लड *Blood*)

खून का काम शरीर में मुख्य जीवतव्यता का आधार है सब शरीर का पोषण खून से होता है खुराक को पोषण करने वाला सार रूप हिस्सा कितना एक रसायण क्रिया में अलग होकर खून के संग मिलता है तब इस हिस्से को खून अपनी गति में जुदे २ भागों को चहिये जितने प्रमाण का बांट देता है उस भागों के अंदर निकम्मे पदार्थो को अथवा मैल कचरे को अपने प्रवाह में खेंच कर शरीर के बाहिर निकालने की जगह में फेंक देता है अथवा

शुद्ध करने की जगह में अपने संग खेंचके ले जाता है दूसरा खून का जरूरी का काम वदन में गरमी देने का है जब खून नहीं फिरता है तो छाती के भाग पर जैसी गरमी मालम दे है ऐसी हथेली पगथली पर लगती नहीं है जब किसी भी बेमारी में खून का फिरना बराबर नहीं रहता तब पहले हाथ पांव ठंडे होते हैं जब खून जलदी २ फिरता है तब सब वदन में बराबर गरमी रखता है देसी केइयक आचार्य ऐसा भी मानते हैं शरीर में जब कफ बिगडेगा और पित्त हाथ पैरों में जाकर ठहरेगा तब शरीर ठंडा हाथ पैर गरम और शरीर में पित्त बिगडेगा और कफ हाथ पैरों में जाकर ठहरेगा तब वदन तो गरम और हाथ पैर ढंडे हो जाते हैं शरीर में जो खून फिरता है सो दो तरह का है हृदय के बांये खण में धमनी या धोरी नसों में लाल किरमची रंग का खून होता है और कलेजे के दहणे खंड में और काली नसों में मैला और जामुन के रंग जैसा स्याह खून होता है इस काले रंग के खून को लोक जानते हैं जैसा नुकसान करने वाला नहीं है फेफसे में जाकर शुद्ध भये वाद यही खून शरीर को पोषण करता है लोही जरा खट्टा चिकणा औ॰ पाणी से कुछ भारी है स्वाद में जरा खारा है खून में गरमी सो डिग्री है खून के दो भाग हैं एक तो रक्तरजकण दूसरा रक्तजल रक्तरजकण खून में असंख्याता है जिस में खून लाल दिखता है खून का जल जैसा प्रवाही भाग दूसरा उस में रंग नहीं है यह रक्तजल दो पदार्थों का बना भया है जिस को अंग्रेजी में फिब्रिन और सीरम कहते हैं खून के एक हजार भाग

में ७९० भाग पाणी का १३० भाग खून के दाणे का ६७ भाग आलब्यु मेन का २ भाग फिब्रिन का बाकी रहे इग्यारह भाग जिस में चूना मेगनेसिया सोडा लोह वगेरः पदार्थ है इस तरह रसायण प्रयोग से जुदा २ करने वाले विद्वानों को मालम पडा है खून का फिरना वडी धमनी नसां फेफसा केशवाहनी यह खून की छोटी वडी नदियों हैं अपने शरीर में खून चक्कर की तरह फिरता है उस का मुख्य साधन रक्ताशय है रक्ताशय यह खून का होद है बांये बाजु के रक्ताशय में से शुद्ध खून का एक नल (धोरी नस) निकलती है जिस की एक वडी शाखा पेट तथा दोनों पैरों में जाती है और दूसरी शाखाओं दोनों हाथ तथा शिर में जाती है आगे जाते दरख्त के माफक इस वडी शाखाओं में से बारीक नसें उस में से आखिर केशवाहनी बाल जैसी सूक्ष्म नलियां जाल के माफक आखर चमडी तक फेलाव किया है इस जाल में से लाल खून फिर रहे पीछे बाद उस में से पीछे ऐसी हीज महीन फस्तें निकलती हैं और जैसे छोटे २ वाह्ले मिल के आगे जाते एक वडी नदी हो जाती है अथवा दरख्त का दृष्टांत समझना छोटी २ डालियों के समुदाय मिल कर नीचे जाते वडा थड हो जाता है इस वजह छोटी २ अनेक फस्त एक ही मिल के एक वडी फस्त शरीर के नीचे के भाग में से और दूसरी वडी नस दो हाथ तथा शिर के तरफ से शाखाओं में से ऊपर के भाग में से ऐसे दो वडी फस्त काला खून लेकर रक्ताशय के दहणी खंड में उतरे हैं वहां खून को ठलता है यहां से काले खून का दो फांटा होकर फेफसा दोनों

रफ के भाग में फेफसे में जाता है फेफसे में गई भई रगों भी
शिरावाहिनी नसों की तरह जाल के माफक फैल जाती है और फे-
फसे में हवा के खाडों की महीन नसों की जाल के सम्बन्ध में
आता यह काला खून वहां शुद्ध होकर केशवाहनीयों के रस्ते सा-
फ लाल खून वहां से पीछा फिरता है और यह जाल आगे जाते
इकट्ठी मिल कर उसकी एक धमनी होती है वह शुद्ध खून को
पीछा रक्ताशय के बांये खंड में दाखिल करती है जैसे पहले लि-
खा है उस मुजब शुद्ध खून सब से बडी धमनी के रस्ते निकला था
इस तरह ही शुद्ध खून रक्ताशय के बांये खंड में से बडी धमनी
के रस्ते निकल कर शरीर में सब जगह फैलता है और वहां से
काला खून बडी शिराओं के रस्ते रक्ताशय के दहने खंड में दाख-
ल होकर वहां से पीछा दो फस्तों के रस्ते फेफसे में जाता है फे-
फसे में यह काला खून शुद्ध होकर पीछा रक्ताशय के दहणे खंड
में दाखल होकर वहां से फिर शरीर के पोषण वास्ते धमनी के र-
स्ते फैलता है खून का एसा फिराव होते १॥ मिनट लगता है
होजरी आंतरा और तिल्ली के शिराओं का खून परबारा रक्ताशयमें
नहीं जाकर कलेजे में जाता है वहां फेफसे की तरह उस की म-
हीन सार्खे फैल कर उस खून की शुद्धि होती है और पीछे रक्ता-
शय की तरफ वहता है औरतों के गर्भाशय में इस खून की चाल
फेर दूसरी है लिखा है गर्भावस्था में फेफसा काम नहीं करते हैं
गर्भ को ताजा खून मिलता है गर्भ की नाभि में नाल होता है उस
रस्ते कितनाएक खून लाल रंग का गर्भ के पेट में जाता है और

बाकी का खून इस से अलग और थोडा कलेजे में होकर रक्ता-
शय तथा फेफसे में फिर कर फेर गर्भ नाल की धमनी के रस्ते
शुद्ध होने को जाता है एसा कितनेक पंडित कहते हैं खून शरीर
में किस कारण से जलदी २ फिरता है सो लिखते हैं रक्ताशय
मांस की कोथली का बना भया है उस के अंदर के स्नायुओं तंग
और ढीला होते रहता है जब कोथली खून से भर जाती है तब
तो वह स्नायु तंग होकर खून को बाहिर निकालती है पीछे ओही
स्नायु ढीले होकर कोथली को चौडी कर खून दूसरे को आने को
जाय देती है स्नायुओं का एसा धर्म है रक्ताशय में जुदे २ खंड
हैं उस के बीच में पडदे वाले दरवाजे हैं वह दम २ में खुलते हैं
और भिडते हैं रक्ताशय के एक खंड में खून भरता है तब तो सं-
कोच पाता है उसी वखत सामने का खंड चौडा होता है जिसे वो
खून उस खंड में धकेलीजता है वहां से धमनियों में धकेलीजता
है रक्ताशय के खंड वारा फिरते तंग और ढीला भया करता है
उस से खून को धका लगता रहता है फिर धमनियों में खून की
जोडा जोड हवा होती है वह हवा भी खून को गति दिया करती
है इस के अलावा खून को धकेलने वाले दूसरे भी छोटे२ कारण
भी बहुत हैं धमनियां स्थिति स्थापक है इस वास्ते भी खून को ग-
ति मिलती है शरीर के स्नायुओं की हमेस गति होने में नजीक के
रक्त शिराओं पर दबावट होणे से भी खून आगे धकेलीजता है सा-
सोश्वास से भी खून की गति को भी कुछ मदद मिलती है इ-
त्यादि अनेक कारण खून को फिरता रखता है यह क्रियायें ही

रीर का चेतन्य है नाडी को भी खून से सम्बन्ध है वांये रक्ताशय
। खंड में से खून बडी धमनी में जाता है जिस से धमनी चौडी
ाती है उस का धक्का धमनी के आखरी नाके तक पहुंचता है इस
ो नाडी का ठमका कहते हैं हरेक वखत रक्ताशय के संकोचासे
। नाडी का ठवका पैदा होता है यह ठमके जुवान आदमी के ना-
ी का एक मिनट में आसरे ७५ वखत होता है ॥

॥ सासोश्वास ॥ (रेस्पीरेशन *Respiration*)

सासोश्वास की इस शरीर में वडी जवर क्रिया है खून जैसे शरीर
का जीवन है लेकिन इस खून को सजीवन करने वाला सासोश्वा-
स की क्रिया है खून शरीर में फिरता है फेफसे में शुद्ध होता है
प्राण को देने वाला हवा को अंदर दाखल करने वाला और वाहर
से फेफसे में प्राणों को हरणे वाली एसी एक जहरी हवा को बाहर
निकालने वाली श्वासोश्वास की क्रिया है अपने उश्वास लेते हैं
तब बाहर की हवा अंदर जाती है और श्वास लेते हैं याने छोडते
हैं तब अन्दर की हवा बाहर निकलती है यह सब आदमी जानते
हैं जरूर जानने की बात इस में जो है सो हम लिखते हैं शरीर
के अंदर पहले लिखी जो ज्ञानतंतु गतितंतुओं की अपार जुडीयां
और धमनियां तैसे रगों वाल से भी वहुत महीन उनोंका जाल सब
जगह फैला भया है ऐसे ही दोय बडी जाल दोनों फेफसे में वायु
नली की फैली भई हैं नाक के नस को रों से फेफसे तक के र-
स्ते को वायु मार्ग अथवा श्वास नली कहते हैं हवा नाक के रस्ते

गले के पिछले भाग में से स्वर नली में होकर श्वास नली में से फेफसे में जाती है स्वर नली और श्वास नली यह दोनों एक ही रस्ता है लेकिन उस की जुदी २ क्रिया समझणे को उस के दो भाग ठहराये गये हैं ऊपर का भाग जो जीभ की जड गले के नल गोटे याने घांटे तक आया भया है उस को स्वर नल कहते हैं और नीचे के भाग को श्वास नली कहते हैं श्वास नली का ऊपर का भाग चोडा और बडा हैं गले के ऊपर के भाग में बाहर से जो ऊंचा टेकरे जैसा दिखाई देता है यह स्वर नली का भाग है उस को घांटा लोक कहते हैं कंठ भी कहते हैं इस स्वर नली का काम आवाज पैदा करने का है इस के बीच रस्ते के दो तरफ दो तार है वो दोनों तार तंबूरे के तारका काम करते हैं अर्थात जुदा २ स्वर पैदा करते है इस तार के बीच का रस्ता लंबा सांकडा और त्रिकोणार है उस में से हवा आती जाती है वह कंठ द्वार है यह तार स्नायुओं के सम्बन्ध से हिलता है तब वह रस्ता सांकडा चौडा अथवा बंध होता है इस रस्ते से हवा बिगर और कोई भी पदार्थ जा नहीं सकता जो अकस्मात कोई भी पदार्थ इधर के तरफ जाने का बनता है तब उसी वखत यह रस्ता बंध हो जाता है जल पीते खाते हसणे से गले में गया पदार्थ अपना रस्ता छोड स्वर नली की तरफ जाता है तब स्वर नली कंठ को अटका देती है उस को इस स्वर नली के नीचे के रस्ते को श्वास नली कहते हैं श्वासोश्वास की क्रिया श्वास नली नीचे छाती में उतरे पीछे उस के दो भाग होते हैं एक तो बांये फेफसे में जाता है एक दहणे फेफ-

मे में पहुंचने के पहिले श्वास नली के विभागों पर विभाग होकर आखर महीन नलियां होकर फैलाया करती है और आखरी के नाके पर जल के छोटे परपोटे जैसे परपोटे होकर ठहरता है तब फेफसे के अन्दर और ऊपर ऐसे परपोटे रहे भये हैं इन परपोटों पर खून के बाल जैसी पतली रगों का जाल पसरा भया होता है और उस में रक्ताशय में से आये भये बिगड़ा खून बहता है और स्वच्छ साफ होता है अपने अच्छी हवा का जो श्वास लेते हैं वह आखर उन परपोटों तक पहुंचता है और जैसे हवा ज्यादा अच्छी होगी तैसाही उस के संग आने वाला खून ज्यादा साफ होता है खून के अंदर हवा (कारबोनिक असिड ग्यास) परपोटे के अंदर की हवा में मिलता है और उस हवा के अन्दर की प्राणवायु (आक्सिजन) खून में घुसती है वह प्राणवायु को संग लेकर फेफसे में शुद्ध भया खून रक्ताशय में पीछा फिरता है श्वासोश्वास की क्रिया में शरीर के खून में फेरफार होता है जरूरी का सो इस मूजब १ फेफसे में खून के संग बाहर की हवा का मिलना होते ही अशुद्ध खून काला बदल कर शुद्ध लाल खून बन जाता है जो कि शरीर को पोषण करता है २ श्वासोश्वास से खून की गरमी एक दो डिगरी बढती है ३ श्वासोश्वास से फिब्रिन नाम का तत्व बढता है ४ श्वासोश्वास से खून में प्राणवायु की वृद्धि होती है और उस के अन्दर का कारबोनिक असिड तैसे ही नाइट्रोजन का कमीपणा होता है इस के अलावा हसणा रोणा वै दस्त पैशाब स्त्री का प्रसव छींक डकार हिचकी खासी इत्यादि सब कामों में श्वासोश्वास

मददगार है बाहिर की हवा अंदर अंदर की बाहर यह
मेश चलती है यह क्रिया जिन्दगानी को बहुत मददगार
इस तरह से है शरीर में एक जहरी पदार्थ बढते रहता है
माण मुजब ही चाहिये बढे सो बाहर निकलना चाहिये
कारबोनिक असिड कहते हैं हवा में जुदे २ तत्व रहे
हवा के संग जुदे २ पदार्थों का मिलाप होते ही उस में
फेरफार होते रहता है यह बात रसायण शास्त्र से सिध हो
बाहर की हवा भी अंदर जाकर रसायणीक फेरफार करती
सा पंडितों ने अनुभव से सिद्ध कार लिया है ऐसे रसायणी
से एक तरह का असिड पैदा होता है लेकिन जो अंदाज
वह असिड जादा रह जाय शरीर में तो खून फिरना बंध
ता है और मर जाता है प्राणवायु और कारबोनिक असिड
नों काले और लाल खून में होते हैं प्राणवायू (आक्सी
असिड ज्यादा होता है प्राणवायु तथा कारबोन इन दो प
योग से कारबोनिक असिड बनता है ऐसी समझ में सुनने
ई है प्राणवायु का कितनाएक भाग खून के संग रहकर
फिरता है इस वजह खून के संग फिरते उस के संयोग से
कारबोनिक आसीड बन कर खून के संग फेफसे में आता
श्वास नली से हवा के संग मिल के बाहर निकल गिरता
सो भाग चलाना या बंध करना मगज के आधीन नहीं है
श्वासो श्वास पर अपनी मरजी चलाये चाहे तो थोड़ी देर
सकता है लेकिन श्वासो श्वास को जादा देर तक बंध कर

जोर से चलाणे से जिन्दगी को जोखम पहुंचता है तो यह श्वासो श्वास किस की प्रेरणा से चलता है शरीर का सब जीवन व्यापार तो कर्म बद्ध चेतन अद्भुत शक्ति वाला जो अंदर व्यापक है उस का है लेकिन जुदी क्रिया शरीर की अद्भुत रचना के संचों से ही चल रही है जीव और कार्मण शरीर का काय योग का सामिल संयोग ही सिध होता है इस मुजब तत्वदृष्टि के विचार से शरीर के अवलोकन याने देखने से श्वासो श्वास की क्रिया का कितनाएक अनुमान हो सकता है जो वस्तु स्थिति स्थापक होती है उस के संग में आने वाली वस्तुओं को रस्ता देती है लेकिन उसका एसा ही गुण है सो पीछा संकुडा कर उस वस्तुओं को निकालने का प्रयत्न करता है कलेजा फेफसा पांसलियां छाती पेडू के बीच का पडदा वगैर: कितनेक अवयवों में हमेस संकोचणा और फूलने का गुण है हवा का स्वभाव जहां आकाश याने रस्ता पोल मिले वहां ही घुसणे का है बाहर की हवा नाक तथा मुंह के रस्ते श्वासनली में दाखल होने का प्रयत्न करती है श्वासनली उस को फेफसे त-क लेजाती है फेफसे पोले होणे से उस हवा को रस्ता देता है और फेफसा फूल जाता है तब आस पास की पसलियां और छा-ती के नीचे का भाग उरोदर पटल का पडदा नीचे झुकाकर रस्ता देता है एसी गति में तो आघात के संग याने यह तो हवा के घु-सने का स्वरूप अब इस के संग प्रत्याघात लगता है याने पीछी इस हवा को निकालने का प्रयत्न होता है सो इस तरह स्थिति स्थापक पणे का एसा गति स्वभाव है उस में ये ही पांसलियां उ-

रोदर पटल और फेफसा पीछा संकोचा कर हवा को धक्का मारता है जिस से तुरत ही वह हवा नाक और मुंह के रस्ते पीछी बाहर निकल पडती है एसी क्रिया हमेशा चलती है श्वासो श्वास में हवा फेफसा और पांसलियां छाती के नीचे का पडदा यह सब क्रिया करने वाले पदार्थ मददगार है श्वासोश्वास में हवा का प्रमाण इस मुजब हर वक्त श्वास लेते कितनी हवा तो बाहर से अंदर जाती है और निश्वास से कितनी हवा बाहिर निकलती है ये जाने पीछे अपने आस पास की हवा का भी विचार बांध सकते हैं इस विचार में तारतम्पता तो बहुत है कहां तक लिखें लेकिन मध्यम उमर का तनदुरस्त आदमी दर श्वास में सरासरी ३० से घन इंच हवा ३५ तक लेता है और पीछा निकालता है इस हिसाब से दिन रात २४ घंटे में एक आदमी को छ लाख छयासी हजार अथवा सात लाख घन इंच हवा आसरे चाहिये महनत का काम करने वाले आदमी को इस से ज्यादा अर्थात दूणी हवा चाहिये अब इस आसरे पर हिसाब लगाने से हर किसी घर में या कोठे में कितनी हवा है और वह कितने आदमीयों के पूरे जितनी है उस का ख्याल हो सकता है फेर एक आदमी के अंदर से निकले जो श्वास के संग हवा वह आस पास की कितनी हवा को बिगाडती है इस पर से यह भी आदमी जान सकता है इस सब ज्ञान से विवेकी आदमी अपने रहने के स्थल में जितनी साफ हवा चाहिये आवागमन होय एसा उपाय कर लेना युवान तन्दुरस्त आदमी का एक मिनट में आसरे २० श्वासो श्वास चलता है इस का विस्तार

खुराक हवा में तीसरे प्रकाश में लिखा है ॥

॥ पाचन क्रिया ॥ (डाईजेश्चन *Digestion*)

पाचन क्रिया शरीर का मुख्य जीवन है क्योंकि खून का पोः षण पाचन क्रिया से बणते रस से होता है इस की व्यवस्था जा-णने की जरूरी है खुराक का रस्ता मुंह में से सरू होता हैं और गुदा के द्वार तक उस का नाका आया है उस खुराक के रस्ते की लंबाई ३५ फीट है इस बात से आदमी को आश्चर्य पैदा होगा के आदमी की लंबाई सिर से लेकर पांवों की अंगली तक जादे से जादा ६ से ७ फीट की है तो फिर गले से लेकर गुदा तक खुराक मार्ग की लंबाई पांच गुणी छ गुणी जादा कहां से आगई उस का खुलासा इस तरह है मुंह के दरवाजे से होजरी तक तो नल सीधा उतरा भया है होजरी के नीचे वो नल आंतरों के रूप से गुंचला याने आंटे खाता गुदा द्वार तक पहुंचा है इस वास्ते खुराक मार्ग इतना लंबा है खुराक पहले अन्न नल में होकर होः जरी में होजरी में से छोटे आंतरों में फेर बड़े आंतरों में फेर स-फरे में होकर खा या खुराक गुदा पास आता है यह सब एक ही नल संग्रह है लेकिन जुदा २ ठिकाना क्रिया अलग २ इस वास्ते जुदे २ नाम है खुराक का निकम्मा हिस्सा जो मल गुदा द्वार पर आने के पहले जो २ क्रिया खुराक की होती है सो पाचन क्रिया में लिखते हैं पाचन क्रिया का ठिकाना मुंह होजरी कलेजा पाक्रि-याम आंतरे यह पाचन क्रिया के वास्ते जुदे २ रस पैदा करने वा

ले अवयव हैं थूक जठररस पित्त तथा आंतरों में तरह का २ रस पाचक क्रिया करने वाले रस हैं मुंह में थूक की क्रिया मुंह में चावणे का काम होता है और थूक इस काम को मदद करता है पाचन के काम में थूक की बहुत जरूरी है थूक को पैदा करने वाली मुख्य छ पिंड मुंह में है दोय तो कान के नजीक दोय जीभ नीचे दोय जबाडो के नीचे मुंह में थूक किस २ जगह पैदा होता है उस का अनुभव कर अनुमान बांधना और ऊपर लिखे छ पिंड अथवा थूक नलियों का भी निर्णय करना थूक खुराक के संग मिल के जुदा २ काम बजाता है ॥ १ थूक से मुंह और जीभ हमेसा भीजा रहता है जिस से बोलने चालने का जीभ को सहज से काम होता है २ ॥ खाणे का पदार्थ दांत से चाबे जाता है उस को थूक एक रस बनाता है उस से स्वाद की भी खबर पडती है ३ थूक खुराक में मिल के उस को नरम करता है जिस से चाबणे का निगलने का काम सहज से होता है ४ थूक खुराक में मिल के उस में रसायणी क्रिया करता है और विशेष कर के स्टार्च वाले खुराक को पचाणे के काम में मदद करता है होजरी में होती पाचन क्रिया अन्न नल के रस्ते आकर होजरी में पहुंचता है उस खुराक के संग जठररस मिलता है होजरी के अंदर का पुड मधुमक्खी के छाते जैसा होता हैं उस में महीन २ असंख्याते छेद होते हैं यह छेद उस के अंदर की नलियों का मुंह है उनों में से एक तरह का रस होजरी में झरता है जिस को जठररस अथवा पाचन रस कहते हैं यह जठरस हमेशा दस बीस रतल तक पैदा

खून में से पित्त जुदा भया पीछे बाकी का खून रक्ताशय में जाता है पित्ताशय के अंदर का पित्त आंतरे में पाचन क्रिया चलती है तभी उस में वहता है पाचन क्रिया जब बंध होती है तब पित्ताशय में से जाता भया पित्त आंतरों में उसका छेद बंध होता है पित्त खुराक को पचाने वाला मुख्य पदार्थ है पित्त कितनेक दरजे जुलाब की गरज सारता है उस से आंतरों का रस सहज से आगे धकेलीजता है अनुभव से भी यह बात सिद्ध होती है कि जब पित्त आंतरों में ज्यादा जाता है तब दस्त खुलास आता है अथवा बहुत वखत अतीसार होजाता है प्रमाण से कम जब पित्त आंतरों में जाता है तब दस्त की कबजी होती है और पांडु पालिया कमले का रोग होता है पीलीयेकी बिमारीका मुख्य कारण एसा है के खूनमें से जितना पित्त होना चाहिये इतना पैदा नहीं होय तब वह खून में ही रहता है उस का के खून में पित्त का भाग वढने से शरीर पीला पड जाता है छोटे आंतरों में पाचन ॥ होजरी में जो पाचन क्रिया बाकी रह गई हो सो पूरा यहां होता है चरबीका भाग आंतरों में गलता है पाचन होता रस का शोषण होकर खून में चढना शुरू होता है पाचन और शोषण होते बाकी के पदार्थ नीचे उतरते जाता है जैसे २ नीचे उतरता है तैसे २ सार भूतरस खून में सूकता जाता है और निरुपयोगी मलके मिलता भाग आगे धकेलीजता जाता है और बडे आंतरे में प्रवेश करता है बडे आंतरे में खुराक जाता है तब वह खुराक मलके लगभग पतला होता है बडे आंतरे में कुछ जादा जाने की पाचन क्रिया होनी नहीं तो भी उस में जो कुछ सारभूत त

वगेरः बाहर का पदार्थ छिद्रों के रस्ते शरीर में प्रवेश करता है खून की शुद्धि तथा गति को उत्तेजन देता है शोपण क्रिया शरीर के कितनेक भागों में शोपण क्रिया हमेशा चलती हैं रस को चूस के अंदर चढाना उस को शोपण क्रिया कहते हैं फेफसा होजरी आंतरे और सब शरीर की चमडी में शोपण क्रिया चलती है इस अवयवों के अंतरपुड के अंदर बहुत बारीक छेद हैं यह हरेक छेद एक २ महीन नलियों का मुख समझणा यह छेद उन २ अवयवों का रस को चूस कर नलियों के रस्ते चढाता है उस पर कितनीक क्रिया भये बाद वह रस खून में मिलता है यह नालियां उनों का मूंह से रस का चूसणा करती है और उस नलियों के अंतर पुड भी छेद वाला होता है जिस से उस नलियों में सर्व जगह शोपण क्रिया चलतीं हैं काली नसां याने शिराओं जिस रस को चूसती है वह रस कलेजे में तैसे ही फेफसे में जाकर वहां वह रस शुद्ध होता है और होजरी तथा आंतरों की नलियां जिस रस को चूसती है वह उन नलियों के रस्ते पहले रस को शोधने वाली कितनीक थेलियां होती है उस में शुद्ध होकर रक्ताशय में जाता है. फेफसे की नलियां कारबोनिक असिड को बाहर निकाल देकर प्राण वायु को अंदर लेती है यह भी काम शोपण क्रिया से होता है चैतन्यक्रिया शरीर में गति अथवा चलन वलन का काम चलता है सो सब काम स्नायुओं से है और फिर स्नायुओं से भी महीन है जैसे तंतु शरीर के कितनेक भाग में आये भये हैं वह शरीर में कापणे की तरह थरथर धूजा करते हैं इस तरह स्नायुओं का सं

कोचाणा इन सूक्ष्म तंतुओं का धूजना इस कारण कितनेक पदार्थों को गति दिया करती है रसोत्पादक क्रिया शरीर में तरह२ की रस क्रिया चलती है इस रस क्रिया से कितनेक रस पैदा होते हैं थूक पित्त वीर्य वगेर रस तो शरीर के पोषण क्रिया में काम देता है कितनेक रस निकम्मे हैं जैसे कि पेशाब पसीना बगल वगेर में रहे दूबरस इत्यादि पित्त वगेर का मिलरस शरीर के जुदे२ संचों में तैय्यार होता है कलेजे में पित्त वीर्याशय में वीर्य स्तन में दूध तैय्यार होता हैं और पीछे वह जुदी क्रिया से जुदा२ होकर बाहिर निकलता है अगर जो बाहिर नहीं निकलेगा तो जरूर बिमारी हो कर नुकसानी करेगा उपयोगी रस भी चाहिये जिस से ज्यादा या कम पैदा होगा तो शरीर में हरकत पैदा करेगा कलेजे में पित्त रस कम पैदा होता है तो पाचन शक्ति मंद हो जाती है और जो ज्यादा पैदा होय तो तब दस्त की बिमारी और भी पित्त सम्बन्धी अनेक रोग पैदा करता है इस तरह थूक कम पैदा होय तो पाचन क्रिया बराबर नहीं होती है और ज्यादा बढ कर बाहिर निकले तो भी पाचन क्रिया में नुकसान होता है जो चिकणा रस सांधों को मजबूत पोषण करता है वह अगर कम पैदा होगा तो सांधों को धक्का लगता है घसता है और जादा पैदा भयातो चरबी बधनेसे चलने की शक्ति कम पड जाती है स्वाभाविक वेग १३ इस शरीर में ऊपर लिखी क्रिया के अलग भी कितनेक वेग स्वभाव से पैदा होते हैं और जिन्दगानी को यह क्रियाओं की बहुत जरूरी है थोनेरे वेग अपनी भूलप्रमाद से अज्ञान अथवा आलस से अटकाता है तो शरीर को

नुकसान पहुंचता है अब उन वेगों की तफसील इस मुजब है॥ १ मूत्र ॥ पाचन क्रिया में रस शरीर में चढता है बाकी रहा निकम्मा पदार्थ में से जाडा मलसोदस्त होकर निकल जाता है और उस में का प्रवाही पदार्थ सो मूत्रपिंड में होकर पेशाव के रस्ते बाहिर आता है मूत्रपिंड महीन नलियों का बना भया है उन नलियें के आस पास जाल जैसी महीन नलियों का जाल पसरा भया है उस में से उन नलियों का शोषण करने वाले पर माणु पेशाव को खेंचता है पीछे मूत्र नल के रस्ते मूत्राशय में जाता है इस तरह बूंद २ मूत्राशय में एकठा होता है जब वह आशय भर जाता है तब वह स्नायु दबते हैं और पेशाव की शंका होती है और गति होती है इस में कितनेक गतितंतु मन के इच्छा के आधीन, मगज से लगे भये हैं वह अगर पेशाव को रोकना चाहे तो कितनीक देर रोक सकते हैं किसी काम की जरूरी से जो आदमी रोक सकता है वह इस बात का प्रत्यक्ष पूरावा है लेकिन इस स्वभावी वेग की हाजत को रोकना इस से नेत्रों में नुकसान गुडदे पोते में दरद वगेर होता है कारण पेशाव के संग दूसरे क्षारादिक जो पदार्थ जाता है उस में एकाध पदार्थ जहरी है वह पेशाव के रस्ते निकलना ही अच्छा है पेशाब को रोकणे से वह पदार्थ जब बाहिर नहीं निकलता खून में रहता है तब नुकसान करता है तनदुरस्त आदमी को हमेश २४ घंटे में सो १०० से १२५ सवासे रुपये भर पेशाव होता है मौसम ऋतु के फेरसे पसीना ज्यादा होता हैं तो पेशाव कम होता है कोई ऋतु में पेशाव ज्यादा तो प-

सीना कम होता है इस प्रमाण को ख्याल में लाये उपरांत जो ज्यादा बढे या ज्यादा घटे तो कोई भी बिमारी रोग समझना वह मूत्र प्रमेहादि जननेंद्रियों की रगों में दरद मूत्रकृछ शिर में दरद पेशाब का रुकणा और इस के संग मल की भी रुकावट होती है २ । मल ॥ खुराक का सार भूतरस खेंच्यों के बाद निकम्मा कचरा बडे आंतरे में धकेलीजता २ सफरे में आता है सफरे के स्नायु ढीले होते हैं तो भी मल को गति नहीं दे सकता तैसे वायु से मल का अवरोध होता है तो भी मल की प्रवृत्ति नहीं होती लेकिन कितनेक आदमी हाजत भये पीछे जान कर दस्त को रोकता है उस से सफरे में तथा आंतरे में वायु का कोप होता है पीछे उस में दरद होता है होजरी में भी दरद शिर में शूल नीचे वायु अटके तो आफरा भी हो जाता है ॥३ वीर्य ॥ वीर्य यह खुराक की पाचन क्रिया आखरी सारभूत तत्व है जैसे दूध पर क्रिया होणे से आखर घी निकलता है तैसे वीर्य बन कर आंडों में से वीर्य नल के रस्ते वृषण रज्जू में होकर पेडु में जाता है मूत्रपिंड में से जैसे मूत्र पेडु में मूत्राशय में एकठा होता है तैसे वृषण आंडों में का वीर्य मूत्राशय के नीचे चोतरफ एकेक वीर्याशय है उस में वह वीर्य एकठा होता है वीर्य तरुण अवस्था में होना शुरू होता है और पूरी जवानी में पूरा होता है वृषण के अन्दर के वहणे वाले वीर्य में कितनेक परमाणू होते हैं इस में चैतन्य वाले तंतू होते हैं जिस से स्त्री पुरुष के संयोग से गर्भ रहता है यह खुलासा गर्भोत्पत्ती बार में लिख दिया है मलमूत्र की तरह वीर्य की वारम्वार प्रवृत्ती नहीं

होती लेकिन जिस वक्त वीर्याशय वीर्य से पूरा भर जाता है तब उस को रस्ता देना चाहिये स्त्री पुरुष के आपस में वीर्य के खेंचने वाले औरत मर्द ही है यह जीव कर्म की कुदरत आकर्षण शक्ति एसा भी सिद्ध करती है वीर्य की प्रवृत्ती भी आपस में ही औरत मर्द से ही होणी दूसरी तरह नहीं करनी वीर्य के प्रगट भये वेग के रोकने से जननेंद्रिय में शूल चलती है वीर्य की पथरी बंध जाती है धातु भरने लग जाता हैं स्वप्न में बेर २ वीर्य जाता है और शरीर नाताकत हो जाता है प्रदर प्रमेह वगेरः रोग होते हैं पेशाब अटकता है अंग में पीडा छाती में दरद होता है ॥ अधोवायु । ४ ॥ गुदा के रस्ते जो हवा निकलती है उस को अधोवायु कहते हैं सफरा यह अधोवायु की जगह है जैसे स्नायु मल को गति देता है तैसे वायु भी मल को गति देता है जो यह वायु का कोप होता है तो दस्त की कवजी हो जाती है और पेशाब खुलास नहीं आता थाफरा होता है मगज घूमता है पेट गुड २ करता हैं इस वासते जवरदस्ती अधोवायु कभी रोकणा नहीं इंद्री में चमचमाट बूंद २ पेशाव का आना इस कै रोकने से होता है ॥ ५ ॥ उलटी (कै) कै होती होय तो दवा से बन्ध करना लेकिन उस को गला या मुंह बंध कर आती कै को रोकना नहीं इस के रोकने से अरुचि पित्त विकार सोजा पांडु ज्वर कोड चंधार वातरक्त गलतकुष्ट पित्तीके ददोडे आदि अनेक रोग पैदा होते हैं ॥ ६ ॥ छींक ॥ छींक के रोकने से शिर दुखने लगजाता है अर्दित वायु याने आधा चहरा जवाड़ी रह जाती है आंधासीसी

शरदी से या पेट में क्रमि पडने से छींक आती होय तो इलाज़ करना लेकिन आती छींक को रोकनी नहीं ॥ ७ ॥ डकार ॥ आती डकार को रोकने से हिचकी खासी अरुचि कांपणी और छाती में गोटे उठकर दरद होता है ॥ ८ ॥ बगासी ॥ बगासी आती को रोकने से शिर भिल जाता है दरद होता हैं अंग टूटता है चमडी शून्य जैसी हो जाती है सांधे संकोचीजते हैं तैसे आंखे मुंह नाक और कान में दरद पैदा होता है ॥ ९ ॥ भूख ॥ शरीर में रात दिन की महनत से जो तत्व कम पड जाता है उसकी भरती करने को दूसरे पोषण तत्व की जरूरी पडती है इस पोषण तत्व की कमीपणे को जताने वाली वृत्ति को भूख कहने में आती है यह भूख भी स्वभाविक वेग है पोषण की जरूरी पडती है तभी भूख लगती है उस वक्त जो भूख को मारते हैं याने रोकते हैं उस से शरीर सूकता है ताकत घटती है तेजक्रांति घटती है शरीर के सांधे २ टूटते हैं शिर घूमता है आंखों का तेज घटता है इस वासते भूख की टेम पर भोजन करना देरी नहीं करना ॥१०॥ प्यास यह प्यास भी स्वभावी वेग है कंठ होठ का सूकना यह प्यास की निशानी है प्यास के रोकने से मुंह में शोष पडता है कानों से सुनने की शक्ति कम होती है थकेला चढता है श्वास चढता है छाती में दरद होता है ॥ ११ ॥ आंसु ॥ हर्ष अथवा शोक से अथवा कोई पदार्थ आंख में घुसने से आंसु आंख में आते हैं यह आंख का स्वभाव है इस वेग को रोकने से आंख के रोग छाती का दरद अरुचि शिर में चक्कर वगेरः रोग पैदा होता है ॥ १२ ॥ श्वास ॥ श्वास के बाबत पिछाडी विस्तार से लिख आये हैं ..

के रोकने से गोले का रोग हृदय का रोग (हार्ट डिसीस) ये
दरद पैदा हो जाते हैं ॥१३॥ नींद ॥ शरीर का संचा सब दिन
लने से थक जाता है हाथ पांव ढीले पडते हैं और मन नि
पडता है इनों की विश्रांति याने विसाई के लिये दर्शनावर्णी क
कारीगर की प्रवृत्ती से नींद आती है इन नींद से बहुतसी क्रि
औं बंध होकर शरीर जउवन मालम देता है पांचों इंद्रियों को
शुद्धि आ जाना देखने का आवरण आंख को सोवन दर्शनावर
बाकी च्यार इंद्रियों की अपने २ विषयों का आवर्ण सो अच
दर्शनावरणी कर्म का उदय भाव है जो नींद स्वभावी वेग है नं
में यह तीन क्रिया चलती रहती है श्वासोश्वास खून का फिर
और पाचन क्रिया मृत्यु में इन तीनों की क्रिया नहीं रहती बा
दशा सब नींद में मृत्यु कैसी है नींद की वखत टालने से आल
अजीर्ण शिर का दरद चक्कर वगेरः बिमारी पैदा होती है इन ते
वेगों को जबरन पैदा करना नहीं जैसे कई आदमी कपडे की
त्ती डाल के छींक लेते हैं बिना प्यास जबरन जल पीते हैं इत्य
दि तेरोंई का जबरन पैदा करना नहीं भये वेग को रोकना नं
इस के अलावा जिस २ रोग में जो २ कामों की मनाई है अ
था उस रोग में पथ्य है वह करना पथ्यापथ्य मुजब विद्वान वै
डाक्टर जिस की दवा करनी उस दवा मुजब पथ्य करना अथ
अपनी बुद्धि पूर्वक इस दीपक के उजाले में चलना ॥

इति श्री जैन धर्माचार्य संग्रहीते उपाध्याय राम ऋद्धि
सारगणिः विरचिते वैद्यदीपक ग्रंथे द्वितीयो प्रकाश॥

प्रकाश ३

॥ शरीरका यत्न ॥

शरीररचना उसके अवयव और क्रिया जाणे पीछे उस क्रियाकूं यथायोग्य नियममें रखणेवास्ते शरीरका संरक्षण और पुष्टिकारक पदार्थ तथा उनोंका गुण और धर्म समझणा विद्यामें ये तीसरा प्रकाश बडा हितकारी है क्योंके पदार्थोंका गुण तथा धर्म जाणे र उसका वरतावा करणेसें उससे बहोतसी बेमारियां पैदा होती है इतनाही नहीं सें अथवा दुसरे कारणोंसें जो दरद पैदा होता है उस दरदोंकों . मिटाणेकूं इनही र्थोंका उपयोग करणेमें आता है बलके बाजे वखत दवासेंभी जादे गुण येही पदार्थ ा देते हैं इसवास्ते हमेसां वरतावमें आते भये पदार्थ जैसेंकी हवा पाणी और खुराक कसरत नींद वगेरे दुसरेभी जानने योग्य बाबतोंकों जरूर जाणना चाहिये शरीरके बनका मुख्य दो प्रकार है तन दुरस्तही रहे रोग आणे पावे नहीं एसा जो ज्ञान र्ममेंभी उद्यमकी प्रबलता वैसें वरतावसें चलना दुसरे प्रकारमे कर्मयोगसे जो रोग हो वे इसमें कर्मकी प्रबलता बाद उपायोंका करणा इसमें जीवका उद्यम अच्छा होणा न णा कर्मोंकी प्रबलता इतिस्याद्वादः ॥ इस प्रकाशमें रोग हो नहीं सके एसा जो पुरुष ा उद्यम उसका निर्णय लिखेंगें इस प्रकाशमें च्यार किरण है १ पहलीमें हवा पाणीका र्णय २ दुसरीमें खुराक निर्णय ३ तीसरीमें ऋतुचर्या ४ चोथीमें दिनचर्या रात्रिचर्या लपालणेके नियम इत्यादि विवरण लिखा जायगा शरीर निरोग रहणा ये पूर्व जन्ममें ादया जिसने पाली है भूखे प्यासे दीनहीणकूं सब तरेसें जिसनें सुख दिया है वो णी निरोग शरीरवंत लंबी ऊमरके साधनकी बुद्धि सर्व सामग्री उसकूं मिलती है सात खमें मुख्य सुख निरोगी काया है कुटुंबमें माता पिता भाई बेटा बेटी बहिन आदि ोईभी बेमार पडे तबभी अदमीके दिलमें बहोत चिंता इधर उधर वैद्य डाकतरोंके ास जाणा कमाईमें हरज फेर दवा दारूमें धनका नाश जो मूरख वैद्य विद्याहीण मराजका दूत मिले तो शरीरकाभी नाश घरके काम संभालणेवाली माता स्त्री वगेरे मार पडणेपर बाल बच्चोंकी सार संभाल रसोई वगेरे कामोंमें जो जो हरजा प- ़ता है सो प्राणियोंके प्रत्यक्ष है जो कमाणेवाला होय वोही बेमार होजाय तो उस रकी क्या दशा होती है और जो निच कमावे नित्त घरखरच चलावे उसके बेमार डणेपर क्या दशा होती है शिरपर करजाभी जिनोंकों नहीं मिले उनोंकी बेमारी पर या दशा होती है कलियुगमें वैद्य विद्याभी एक दुकानदारीका रुजगार बण गया या वैद्य क्या डाकटर गरीब मोहताजोंसेंभी विगर पैसे बात नहीं करते जो ८। हाथ मिलावे उसकी दाद फरियाद सुणते हैं भाग्यवान तो अपणे ख्यालमें मस्त

दा सफा खाना सरकारने बणवाया है वो असलमें पारसे गोहताजोंके है जीमे रहनवाले गरीबोंका इलाज भाग्यवान के मुजब करणा ये वैद्य डाकटरोंका फरज है दवा पानी वनसपती ये तीनों कुदरती दवा पृथ्वीपर सगाय जन्य हाजर है परम कृपालु परमेश्वर ऋषभदेवने इनोंका शुभयोग और इनोंसे होता अशुभयोगका ज्ञान तथा न्याय वाले गुरुद्वारा आत्रेय पुत्र आदि प्रजाकूं उपदेश देकर आरोग्यता सीखाई इन तीनोंका मुवदाई योग जाणना दुसरेकूं बताणा इसमें क्या खरच लगता है जिस दवा बनाते खरच लगता है वो तो अपणे शक्ति अनुसार देणा नुकसा लिखणेमें हरज करणा नहीं भाग्यवानोंकों चहिये सो पूर्ण वैद्योंकों द्रव्यकी मदत देकर गरिबोंकों दवा दिलाणा सरकार अंग्रेजभी दोदानोंकोंही परसन किया है विद्या दान और औषधी दान सच है रोग संयुक्त अगर राजाभी है तो दुखी है निरोगी करसाण अपणी झूंपडीकोंही राज्यभुवन मानता है इस कलियुगमें अणपढभी वैद्यवणे फिरकर अपणी आजिवका चलाते हैं क्योंके लोक तो रोगग्रस्त भयेबाद दोडादोडी करते हैं लेकिन् किस तरे वर्तणेसें बेमारी आवेही नहीं ये बात थोडेही लोक जाणतेहैं ये अज्ञान दुखकी जड है इस अज्ञानके वस अपणी और पराइ सबके शरीरकी खराबी प्राणी करते हैं तनदुरस्तीके साधन जितनेअदमीके स्वाधीन है उसके पालणेका यत्न जरूरसें करणा आते रोगकों बंध कर देणा लेकिन् तनदुरस्तीके सर्व उपाय अदमीके हाथ नहीं है कितनेक तो दैवाधीन है, यानेकर्मस्वभाव वस है कितनेक राज्याधीन है कितनेक नियम लोक समुदायाधीन है कितनेक नियमप्रत्येक अदमीओंके स्वाधीन है रुतुओंका एकदम फेरफार होणा हैजा मरी विस्फोटक (प्लेग) यह तो दैवाधीन समुदाई कर्मके आधीन है शहर सफाई खातेके अमलदारोकी ये दरकारी होकर रोगगींदकीसें होता है इत्यादिकेइ वातें राज्याधीन है लोकरूढी बचपणेमें विवाह जीमणवार वगेरे कुचालोंसें जो जो रोग पैदा होते हैं ये बात जाति समाजके आधीन है और प्रत्येक अदमी खानपानादिकके अज्ञानसें अपणे शरीरमें रोग पैदा कर लेवे ये धात प्रत्येक अदमीके स्वाधीन है आदमी प्रत्येककों तनदुरस्तीके नियमोंका ज्ञान होय तब तो समाज और जाति सुधरे और समाजके मुख्य २ सहर सफाइ म्युनिसपलमें रहणेसें वोभी सुधारा होसके इस तरे कितनेक दरजेजो अदमीके वस नहीं वो बहोतोसें बण सके एसा है लेकिन् निकाचित कर्मबद्धआखरप्रबल है ॥ इस जाणकार मनुष्यके तनदुरस्तीके उपाय वरतणेसें अपणेकूं कुटंबकूं और विवेकी पडोसियोंकोभी तनदुरस्तीका फल लिमता है शरीर संरक्षणका ग्यान और उसका नियम पालना इत्यादि बाते बडी कोलेजमें सीखणेसेंही मिलता एसा एकांत पक्ष नहीं है घर अथवा कुटुंब येही सांमान्य ज्ञान सिखाणेकू अनुभविक पाठशाला है अगर पाठशाला कोलेजमें चतुराईका नियम सीखेबादमी घरकी पाठशालाका चलता अभ्यासकूं सीखणा और उस मुजब चल-

णेकी जरूरी है कडुंबेके मावाप घर पाठशालाके माष्टर है, अपणे कुलपरंपरासें चलता आया जो दयाधर्मका खानपान विचारसे बंधा हुआ आचारसें जिनोंके मावाप वरतते है बालक प्रायें वैसाही सीखता है जिसमें मावापोंकी अछी चाल चलण पुन्यवान सपूतही ीखता है सात विसनोंमेंका व्यसन दुराचार तो दुसरेकी देखादेख विगर कहे बहोत द्धिहीन सीख लेते है कारण इस मिथ्या मोहनीके संग जीवकूं अनादि कालका परिचय और आगेभी उसको कष्ट आपदा भोगणे हैं फेर दुर्गतीमें तथा संसारमें रुलणा है तो ो आनुपूर्वी उस प्राणीकूं उस बुद्धिद्वारा उसी तरफ खेंचती हैं माता पिता गुरु वगेरे ीखाते तोभी नहीं सीखता है अछी आचरणकूं. बुरीमें झट चित्त देता है तो भी माता ताकी चतुराईका असर केइकतो पूराही सीख लेते हैं केइयक आधा इत्यादि कर्माधीन ारतम्यता है और जिसके घेडेरे कडुंबेके लोक स्नान दांतण नहीं करते कपडे मेले पह ा ते पाणी विगर छाणे पीते नसां पीते है इत्यादि बहोत आदते वो बालकभी सीख लेते ः वाजे पुन्यवान वीस कुटुंबे वालोंसेभी बढकर अछी क्रिया नियम सीख लेते हैं और ्यवान विनयवान दातार निकल आते है उसपर ऐसा दृष्टांत देते है पिता अंधा, मूरख, ाणा, निर्धन, होय तो क्या. पुत्रकोंभी एसा होणा, क्या द्रव्य नहिं कमाणा, बस इसमेंभी ाद्वाद है तोभी उद्यम तो अछाही करणा, ओर सिखाणा, शरीर सबकों प्यारा है बहोत ोकतो अज्ञान याने पथ्या पथ्य नहीं जाणते बेमार होते हैं. जाणके बेमार थोडे होते हैं, ादनी कर्म अशाता जब उदयमें आणा होता है तब जाणता वृद्धताभी कुपथ्य आचरता ै, यह तो जीव और कर्मका झगडा है, ज्ञानसें चलणेमें जीव बलवान, अज्ञानसें चलणेमें र्म बलवान, हम तो ज्ञानसेंही सिद्धि मानतेहैं, इस वास्ते हमारा कहणा सर्वज्ञकी ाज्ञानुसार यही है पहले तो सदाचरणाअसदाचरणा सुखदाइयोगसो पथ्य, दुखदाई योग ो कुपथ्य, इसकूं अछी तेरे समझलो, यह तो ज्ञान, फेर उस मुजब चलोये क्रिया, ज्ञान क्रियासें मोक्ष है, यह बात संसार पक्ष और मुक्ति पक्ष दोनों तरफ समझणा, जिस पु- रुषने अपणी आत्माका भला चाहा है, उसने सब जुगका भला चाहा, जिसने अपणे शरीर संरक्षणका नियम पाला वो दुसरेकुं नियम पलाया जैसा है, कारण मात पिताके रस्तेप्राये पुत्र चलते है.

किरण पहली १

हवा तथा पाणी

हवा तथा पाणी और खुराक ये जीवनके मुख्य तीन पदार्थ है, खुराकबिना आदमी कंयेक दिन निकाल सकते हैं, पाणीविगर कितनेकघंटे निकाल सकते किन् हवाविगर थोडी देरभी जीणा मुश्किल है, इस हिसाबसें खुब मालम . .

ये सबसे ज्यादे उपयोगी चीज है, दुसरे दरजे जल है, तीसरे दरजे खुराक है, तोभी एक चीज इनोंमेसें हाजर नहीं होय तो दुसरे पदार्थ एक दुसरेका काम नहीं दे सक्ता है, फकत हवासेया फक्त पाणीसे याफक्त खुराकसें, अथवा इनोंमेंसें दो चीजोंसेंभी जिंदगानी नहीं रहसकतीहे, येतीनोसें जिंदगानी चलती है, और वखतपर मौतकी नौबत णीभी इन तीनोंसें वण जाती है जो पदार्थ शरीरकूं उपयोगी है वोही पदार्थ बिगडे भये होय तो, अथवा चहिये जिस उन मानसें कम या वैसी होय तो, अथवा हरेकके मिजाजतासीरकूं नहीं माफगत होय तो शरीरकूं नुकशान पंहुचा देती है इन सब बातोंका ज्ञान शरीर संरक्षणमें आ जाता है.

हवा (अएर)

जगतमे सर्व जीव आसपासकी हवा लेते हैं वो हवा जब बाहर निकलके पीछी नहीं फिरती बस वो अंतक्रिया है जीवतव्यका रक्षण मुख्य हवा है; हवा अपणे नजरसें नहीं देख सकते हैं जब वो स्थिर हो जाती है तो उसका स्पर्शभी मालम नहीं देता हवा चलती है तब वो पवन कहलाती है जो जो काम करती है सो नेंत्रोसें जगत देखता है उसका ज्ञानस्पर्शसे जाहिरहै समस्त जगत् पवन महासागरसें ढका भयाहै हवारूपी महासागर कमसें कम सो मील उंडा याने गहिरा है ये कथन डाकतर अर्वाचीन विद्वानोंका है प्राचीन आचार्य तो चवदे राज लोकके आस पास घनोदधी घनवात मानते है अर्थात् हवा और पाणीकेही आधार ये चवदे राजलोक है लेकिन् एसा तो है जैसें २ ऊपर चढणेमें आवे तैसें २ हवा जादे पतली मालम देती है.

साफ हवाके तत्व

लोक मनमें यूं धारते होंगें की हवा स्नात् एकही पदार्थकी घणी भई है लेकिन विद्वानोका निश्चयकीया भया है हवामें मुख्य चार वस्तू हैं वो बहोत चतुराई और आश्चर्यके साथ एकठी मिली है प्राण वायु (आ क्सि जन) नाइट्रो जन (शुद्ध हवा) कार्बानिक एसिड ग्यास) ये चावलोकेकोयलेके संग प्राण वायु जब मिलती है तबए बनती है। और पाणीके सुक्ष्म परमाणु (वराल) ऐसी च्यार वस्तु हवाके संग मिली भई है अपणे आस पास तीन तरेकी वस्तुओं है कितनीक तो पत्थर लकड जैसी कठन कितनीक पाणी और दूध जैसी पतली प्रवाही बाकी कितनी एक तो हवा जैसी वायु रूपसें दिखती है जो जलके सुक्ष्म परमाणुओंसें (अर्थात् वरालोंसें) हवा घणी भई है वो तो जुदी होकर उसका माप हो सकता है उसमेंसें एक प्राण वायु (जो आक्सिजन) कहलाती है प्राणका व्यापारभी मुख्यपणे उसी वायुसें है प्राण वायु विगर चराकभी जलती नहीं है ऐसाभी है जो सब हवा प्राण वायुही होती तो जगतमें जीव किसी तरे जीते नहीं कि तुरतही मर जाने कारण जीवोंकों जितनी चहीये उससें जादे सक्त होजाती है

वास्ते प्राणवायूके संग दुसरी हवा कुदरती मिली भई है वो हवा प्राणके आधारभूत नहीं है और उस हवामे जलती चराक रखणेसें बुझ जाती है, श्वास लेनेमें और चीजोंके जलाती वखत उनमान माफक ये दो हवा मिली भई काम देती है अदमीके हाथमें एक अंगूठा और च्यार अंगुलियां है उसकूं याद करणेसें तुमकों याद आवेगा की हवामें एक भाग प्राणवायूका है च्यार भाग खाली हवा याने (नाईट्रोजनका है) और हवा इन दोनोंसें मिली भई है, दुसरे दो हवाके भाग इनोंमें मिले भये है वो बहोत थोडे हैं तोभी वो भाग बहोत दोनुं उपयोगी हैं कोयला क्या चीज है सो तो अपणे जाणतेहैं जंगल जलके जमीनमें दट जाता है उसके काले पत्थर जैसें जमीनमेसें निकलते हैं उसकूं कोयला कहते हैं जो रेलके इंजनमें जलाये जाते है चावलोंमेसें एक तरेके कोयले हो शकते है चावलोंके कोयले (कारबान) कहलाते है अंग्रेजीमें प्राणवायु और कोयलोंके मिलणेसें क तरेकी हवा मणती है उसकूं कारबोनिक एसिड ग्यास अंग्रेजीमें कहते हैं ये हवामें सरी वस्तु है ये हवा बहोत भारी वजनदार है सो कोइ २ वखत गहरा उंडा खालीकूं के तले एकठी होके रहती है कुंवरेमें तथा बहुत दिनोंके बंध मकानमेंभी रहती है एसी वामें रखी भई सिलगती बत्ती बुझ जाती है जो अदमी उस हवामें दम लेता है वो कदम मर जाता है लेकिन् ये हवाभी वनस्पतीकूं पोषण करती है इस हवा विगर नस्पती ऊग सकती नहीं दिनकों उसका भाग दरखतकी जड वनस्पती चूस लेती है इस वाके अढाइ हजार भागमें एक भाग इस जहरी हवाका है इतनी थोडी होणेसें वो हवा अपणेकूं कुछ हरकत नहीं पोहचाती है लेकिन् जो हवामें उस हवाका भाग जरामी दा होय तो लोक बैमार हो जाते हैं हवामें चोथा भाग पाणीके परमाणुओंका है याने-राल है जो लोक थालीमें थोडा पाणी धर देवे तो वो धीमे २ उड जाता है अर्वाचीन विद्वान डाकटरोंका कहणा है, के सूर्यकी गरमी हमेसां पाणीकूं बरालरूपसें खेचती है सर्वज्ञके कहे सूत्रोंमें लिखा है के जल वायूके योगसें सुक्ष्म होकर परमाणु रूपसे आकाशमें मिल जाता है वोही पीछा हमेसा ओस हो हो कर आठोंह पहर झरता है, लेकिन एसा है, की दो घडी दिनवाकी रहणेसें जादा मालम देता है, दो घडी दिन चढे जहांतक, बादसूर्यकी किरणोंकी उष्मा द्वारा सूक जाता है वोही बराल सुक्ष्म परमाणुओंके बादर पुद्गल बंधकर यानें बादल होकर या धूंअर होकर बरसता है जो हवामें पाणीके परमाणु नहीं होतेतो सूर्यके तापकी गरमीसें शरीर जल जाता, और झाड वनस्पती जल जाती.लोक मर जाते. इस कारण जहां जलकी नदी दरियाव वनस्पती बहोत है उहां प्रायः भावे बहोत होती है रेतीके मुलकमें कम इस उपरांत प्राणियोंके पुन्य वा पापकी वशीसें कर्मादिक पांच समवायोंके संयोगसे कभी तो रेतीली जमीनमेंभी बहोत होती है और हमेसा जल और वनस्पती जादा उहां बरसात बिलकुल नहीं

यहांभी स्याद्वाद है ॥ उनमान मुजब योग्य प्रमाणमें ये चारोंही मिली हवा है सो तो स्वछ है याने साफ है इस हवासे तनदुरस्ती रहती है.

॥ हवाकूं बिगाडणेके कारण ॥

दुनियामें बहोत तरेके जहर हैं जिससें बहोत अदमी मरते हैं एक तरफ विचारके देखें तो खराब हवा बराबर कोइ भी जहर नहीं है अंग्रेजोंके इतिहास हिन्दमें आयेका पढा उसमें लिखा है कलकत्तेके केदखानेमें एक छोटी कोटडीमें १४६ गोरोंकों डाला गया उसके फकत दो छोटी बारियोंथी दरवजा बंध कर दिया था दुसरे दिन फजरमें दरवजा खोला तब फकत २३ अदमी जीते मिले बाकी सब मर गयेथे उनोंकों किसने मारा खराब हवानें, कारण हवाका जहां थोडा आणा जाणा एसी छोटी कोटडीमें बहोत अदम्योंकों बंध कर देणेसें उनोंके श्वाससें कोटडीकी हवा बिगड कर उन अदम्योंकी जान गई, इन लोकोंकी तरे एक रातमें इन बिचारोंकी जेसें जान गई एसें तो विरलीबखे मरते होंगे लेकिन इतना तो है ताजी हवा नहीं मिलणेसें बहोत अदमी सब जिंदगानी तक, नाताकत और बैमारतो रहतेही हैं, हवा बिगडणेके कारण नीचे मुजब १ श्वासके रस्ते निकलती अशुद्ध हवा ॥ अपने हमेसा श्वास लेते हैं लेकिन बाहरकी जो हवा श्वासके रस्ते अंदर लेते हैं उससे बाहर निकालते हैं सो हवा फकत जुदी है, शरीरकी सफाई और स्नान हे वोही शौच है इसीसें ही वैकुंठ मिलती है ऐसे माननेवाले और मुं धोणा हाथ पाव दस २ में धोणा लेकिन शरीरके अंदरकी मलीनताका । क्या हाल है उस बाबतका विचार थोडोंकोहीं भया होगा श्वासोश्वाससें जो हवा अपने अंदर लेते हैं वो अपने शरीरके अंदरके भागकूं धोकर कुछ २ मलीनताकूं तो बाहिर ले जाती है इसी वास्ते योग विद्याके स्वरोदय ज्ञानके वेत्ता इस श्वासा द्वारा केइयक नेती धोती बस्ती करते है जिनोंकों पूरा ज्ञान नहीं भया है वो तो इस कर्त्तव्यसे श्वासद्वारा रोग मिटाते है और पूरे स्वरोदय ज्ञानवाले नवली रसकपालभाती आदि श्वासाके कर्त्तव्यसे निरारंभी होकर रोग मिटाते हैं मेसमेरेजम (देवाकर्षण) सें पराये रोग मिटाणे आदि सब योगविद्याकी कर्त्तव्यता श्वासासें अनेक चमत्कारोंका संबंध है ॥ श्वासके संग निकलती हवा श्वासके संग तीन चीजोंकों बाहिर ले जाती है १ कारबानिकऐसिडग्यास, २ हवामें मिलाहुवा पानी ३ गंदाकचरा, पहली चीज स्वच्छ हवामें बहोत थोडी होती है लेकिन जो हवा श्वासके संग बाहर निकलती है उसमें जहरी हवाका भाग सो गुणा विशेष प्रमाणमें होता है अपनेकूं वो दिखती नहीं है जैसे अंगारमेंसें धूंआ निकलता है तैसे वो बाहिर निकलती है एक संकडी कोटडीमें चूला जलाया जावे जैमें वो धूंएमें मर जाती है इस तरे अदमी सांकडी कोटडीमें सूता है तो उसके मूंसेंमें जहरी हवा निकलकर अपने आसपास हवाकूं भी बिगाड देती है अगर उस कोटडीमें साफ ताजी हवाकूं आने

आनेकूं खुलास जगे नहीं होय तो अपने मूंमेंसे नीकली भई जहरी हवा फेर अपनेही सासके रस्ते अंदर जानेसें मोतकी नीसानी आपहुंचती है लेकिन दरवजोंमेंसें, छप्परमेंसें बारीयोंमेंसें, कितनीक हवा बाहर निकल जाती है, और कितनी एक बाहरकी खुली हवा अंदर आती है इस वास्ते ही वास्तुक शास्त्रकार सोनेके मकानोंमें हवाके खुलासा वास्ते बारी जाली झरोखे बणाते हैं श्वासके संग दुसरी चीज बाहिर पाणी (भिजाणेकी)वस्तु निकलती है इस मूंकी हवामें पाणी है या नहीं अगर उसकी चोकस तपास करणी होय तो सिलट पाटीपर या राजस चकूपर श्वास डालो उसी वखत भीजके दव्वा पडेगा इसमे समझा जाता है के श्वासके संग पाणी निकलता है, तीसरा पदार्थ गंदा कचरा निकलता है श्वासका पाणी साफ नहीं होता है वो बरतणके धोवण जैसा मैला और गंधा होता है उसमें सडा पदार्थ मिला भया होता है वो जो शरीरपर रहणे देनेमें आवे तो बेमारी निश्चै होती है श्वासके अंदरका मलीन पदार्थ जहरी हवा जितनी खराबी करती है हर-दम बुकाणी जो वस्त्रसे बांधके रखते है वो रसायणिक योगसें बहोत नुकसानकारक है मुंपर दाग मूंके बाल उड जाणा और जहरी हवा साफ निकलने नहीं पाती है इसीवास्ते जैनीयोंके आचारांग सूत्रमें लिखा है खासी करते डकार लेते छींक लेते बगासी लेते वखत साधू हाथ देकर वस्त्र देकर ये बेगोंकों छोडे कारण इस बेगोंके भये पीछे श्वासके खेंचणेका जोर रहता है उसमें जहरी जानवर या चहिये जिससे जादा हवा अंदर नहीं जा सके बाकी हरवखत श्वास लेते हाथ या वस्त्र देणा नहीं लिखा है देखो प्रत्यक्ष उ-दाहरण दुसरे अदमी मुं लगाकर पाणी पीणेमें बहोत अदमी गंदकी समझते हैं उससे दुसरेका जूठा पाणी नहीं पीते हैं ये बात बहोत अछी है लेकिन वो जूठा जल नहीं पीणा इसका असली मतलब क्या है सो वो लोक नहीं जाणते फेर संकडी कोटडीमें बहोत अदम्योंके एकठे होणेसें एक दुसरेके फेफसेमेंसें निकलती भई खराब हवा और गंदा पदार्थ वो लोक फेर २ श्वासके संग अंदर खेंचते हैं वो जूठा अन्न और पाणीसें सोगुणी खराबी ज्यादे करता है इसतरे गाय भैंस उंट बकरे कुत्ते वगेरे जानवर भी अदम्योंकी तरे श्वासके संग जहरी हवा निकालते हैं वो भी हवाकूं बिगाडते हैं २ चम-डीके छेदोंमेंसें पसीना जो बाफ (बराल) निकलती है वो भी हवाकूं खराब करती है एक अदमीके बदनमेंसें २४ घंटेमें सरासरी ३० ओंस पसीना (बराल) बाहर निकलता है, ३ चीजोंके जलानेकी क्रियासें हवा बिगडती है लोक इस बातकूं सुणके आश्चर्य पांवगे जहां कुछ जलानेका काम होय उहांकी हवा केसें बिगडती है प्राण वायु बिगर तो अंगार सिलगेगी नहीं जो चराककूं एक संकडे बरतणमें तुम सिलगाके रख दो झनुझ जायगा क्योंके उस बरतणका सब प्राण वायु नष्ट हो जाता है इस दृष्टांत मुजब संकडे जादे घगासलेटी जादा करनेमें आवे तो प्राण वायु तुरत उहांकी पूरी होकर

निक ऐसिडगेस (जहरी हवा) घढ जाती है और उस घरमें रहनेवालोंकों बेमार ह
लती है लेकिन् इस बातोंकी समझ हमारे आर्यावर्त्तमें नहीं होनेसें इस वर्तमानमें बेम
रीका पक्का कारण नहीं पिछान सकते फेर वर्तमान चिकित्साकोंकी क्या तारीफ क
जावे दोनूं ढंगे एकोढाल जैगोपालसा जैगोपाल इतिश्री इसवास्ते चराक मैणवती अं
सिगडी (अंगीटी) सें हवा बिगडती है इसवास्ते बेमार अदमीके संकडे कोठेमें अपस
जू वैद्य और प्रजा इन २ बातोंकों करके हवाकूं बहोतही बिगाड देतेहैं ४ ॥ दुर्गं
हवा ॥ जेसें सडीचीजमेंसें उडती भई जहरीहवा बहोत खराबी करतीहै जिसवखत द
खत अथवा प्राणीनास पाताहै तब वो तुरतही सडणेलगताहै उस सडेमेसें बहोत नुक
सानकारी हवा उडतीहै और उसका पुद्गल याने रजकण हवासें बहोत दूरतक फैलता
इसवास्ते जैन सूत्रोंमें मुरदा जिसघरमें पडाहोय उसके संलग्न सोहाथतक सूतक माना
बीचमें रस्ता पडा होय तो नहीं मानते कारण हवासें दुरगंध के परमाणु उडके को
दूर चलेजाते है जो अपणी आंख अपणे सूंघणेके नाक इंद्रीजेसी तीखी होतीतो सडते प्रा
णीमेंसें उडकर उंचेजाते और हवामें फेलाते असंख्य छोटे २ जंतु अपणे देखसकते मत
लब एसी सडी हवामें होकर जातेभये अपणे नाकके पास जो दुरगंध आती भई मा
मदेती है वो दुसरी कुछ नहीं है उस सडी वस्तुमेंसें उडते सूक्ष्मजंतू छोटे २ जीव
जो श्वासके रस्ते अपणे शरीरमें घुसजाते हैं एसा डाकदर लोक इस वखत कहतेहै जै
नोके पन्नवणा सूत्रमें चौदे जो सडी जगे प्राणीके मुडदे वीर्य खून पित्त खंखार थूक मो
री मलमूत्र इत्यादि जगोंमें समुर्छिम अंगुलके असंख्यातमेहिस्से जितना छोटा जिनोंके
चर्मनेत्रवाले नहीं देखसके सर्वज्ञने केवल ज्ञानद्वारा देखा एसें असंक्षाजीव अंतर्मुहूर्त
बाद पैदा होता है एसा लिखाहै ये बात अर्वाचीन डाकटर विद्वानोनें भी प्रत्यक्ष पणे
चूल कियाहै इसतरेही घरमेंसें साग तरकारीके छौंतूं तथा कचरांफूस आंगणमें अथवा
घरके पास लोक फेंक देते हैं अथवा घर अंगण वगैरे नहीं झाडते इससें हवा बिगडती
है इसीवास्तें जैनसूत्रोंमें साधूओंको प्रतिलेखना प्रमार्जना काजानिकालणा दिनमें दो
वखतका हुकम लिखाहै, चमारलोक कसाईलोक रंगरेजे एसे रुजगार वाले दुसरे भी
लोक उनोके कामोंसें भी हवा बिगडती हे एसी जगोसें नाक मूं बंधकरके निकलणा
विपाकसूत्रमें गौतमगणधर ने मृगालोढेकी दुरगंधी बाबत नाकमूं मुखवस्त्रिका जो हाथ
मेंथी उससें मृगाराणीके कहणे सेंढका एसा लिखाहै फेर मुंडदागाडणेकीजगे बालणेकी
जगे अदम्योंकी वस्तीसें बहोत दूर रखणी चहिये गाडणेसें जलाणेमें हवा कम बिगड
ती है जिसमें भी जेसें जंबूद्वीप पन्नत्ती सूत्रमें ऋषभ देव वगैरे बहोत साधूओंकों देवतोंने
जळाया जिसमे बढिया चंदन कपूर आदिअनेक खसबोदार वस्तुओंसे अग्नि संस्कार
मतलब सुगंधीचीजोंसें हवामें जहरका असर नहीं फैलता जमीनमेंसे बाफ अथवा

घराल निकलती है हवा उसमें थोडी दाखल होती है और ये जमीनके अंदरकी हवा
की हवाके साथ मिलती है जिसमें भी जब जमीन भीगी भई होती है तबतो सडी
बहोत नुकशान करती है भाजीपाला सडा भया बहोतकरके बुखारके उपद्रवका
है मारवाडमें ये बात प्रत्यक्ष हमनें अनुभव करी है जब बहोत बरसात होकर
डी मतीरे टींडसी वगेरेके बेलों आदि सडती है तब जाट वगेरे ग्रामीणोकों शीतज्वर
चीजें सहरमें आके जब पडी २ सडती है तब हवामें जहर फैटकर सहरवालोंकों
ज्वर आदि रोग हवाके बिगाडसें होता है ५ घरके गलीचीमेंसें खराब हवा होजाती
घाके खालकुंडी मोरी वाडे अकूरडे और जाजरू ये गलीचीकी जगे है इसवास्ते हम
साफ रखवाणा जैनोके सूत्रोंमें इस २ जगोमें जीवोंकी उत्पत्ति और इन २ में बचणा
ही दया है लेकिन् बडे सहरोंमें गृहस्थियोंकों माफरखाणेका उद्यमही बण आवे तो
है साधूओंको एसी वस्तीमें रहणाही क्यों ऊपरकी बाबते हवा बिगडणेके कारण साधू
गृहस्थियोंकों तदनमना है ६ कारखाने जैमें कोयलेकी खाण लोहेके कारखाणे ऊन
रेसम बणणेकी कलें मील तैमेंइ दुर्गंधी धातु तथा रंग बणाणेके कारखाने तैमेंइ
२ की कारीगरी बणाणेके कारखाने हैं सो असलीमें हवाकूं बिगाडनेके कारखानेही है
कारखानेमेंसें कोयले रूरंग तैमें पत्थरकी कोरणी करणेवालोंके पत्थरकी खंक और
२ धातुओंके महीन २ रजकण उडउडके काम करणेवालोंके शरीरमें घुमकर श्वास
नलीके फेफसेके छातीके रोगोंकूं पैदा करते हैं ७ चिलम चुट्टा चिलमका और चुरटोंका
पीना ये बैसें पीणेवालोंकी छातीकूं बिगाडती है तैमें बाहरकी हवाकूंभी बिगाडती है ये
व्यसन दक्षण गुजरात मारवाडमें बहोत चल रहा है बीडियों और चिलमोंके पीणेमें
हवा निश्चें बिगडती है तैमें हवा बिगडणेके बहोत कारण है इन सब बातोंमें बचणा
कर्मोके स्वाधीनताईकी बात है कर्मोकी विचित्रतामें जो बुद्धि मनुष्योंने पाई है उसका
कछा उपयोग नहीं करते पशुओंकी तेर फकत ऐसा घमंड रखते है जो कर्मोंमें लिखा है
सो होगा ऐसे एकांतपक्षी लेकिन ऐसा नहीं विचारते वो तुमारे कर्मोंने आगे बिगाड
होणेवास्तेही तुमारी समझमें मनुष्यकी बुद्धिकों फेर दी है स्याद्वादमत श्रीजिनवरको नहि
कहिये एकांत ॥ उस कुकर्मोका फल ऐसें पशुओंको मिले उसमें नवाई क्या ऐसे वे
एकांतपनेसें कटुफल भोगते २ अमूल्य मनुष्य जन्म काम श्वास क्षय वगेरे रोगोंसें गमाते सेके
बहु भोगते २ आधी उमरमें जाते है गांजा सुलफे पीणवालेकूं हमनें प्रत्यक्ष दुर्दशा
भोगते देखे हैं इस संसारमें आके विद्या नहीं पढी धन नहीं कमाया देश जाति
उपगार नहीं किया और न परभवका साधनरूप ज्ञानयुक्त मन निरमलो नहीं पाया
कमनेसें मनुष्यजन्म पशुओंकी तेर पाकर धूर्वाकू धोड मारी.

स्वभाव कुदरतसें हवा साफ.

देखो पांचो समवायोंके योगसें प्रथम तो हवा बिगडतीकुं बंध करणेमें म
है स्वाभाविक पांचो समवाय मिलके हवाकूं साफ करणेकामी
अदद है जो भी अगर नही होता तो सृष्टीमें उत्पन्न होणा स्थिती रहणामी न
कारण है सो भी इनहीं समवायोंसें बिगडके प्राणियोका प्रलय करता है तैसें
है कारण ऐसे पांचों समवाय मिलणेसें बिगडी हवाकूं साफभी करती हे इन समवाय ...
ईधर मानलो हवामें चलन स्वभाव धर्म है उससें बिगडी हवाकूं पवनके झपटेसें
हो जाती है हुए परमाणु छिन्नभिन्न हो जाते हैं और ताजी हवा मिलणेसें जो
पहुंचना था । इतना नुकशान नही पोंहचता हे ऊपर लिखी जो हवा एक
रंग मिल जाती है जैसें थोडा दूध पाणीमें एकमेक हो जाताहे चूलेका धूआं
देर पीछे दिखता नहीं ऐसें श्वास वगेरेसे सब बिगडी हवा साफ जादा हवामें
पतली हो जाती है इसवास्ते इजा कम करती है हवा कोइ वखत जादा कोइ
कम चलती हे क्योंके हवामें वैक्रिय शरीर रचणेका स्वभाव है. दृष्टांत जैसें कृष्ण
थे लेकिन् सब राणियोंके महलमें नारदजीनें कृष्णकूं देखा वैक्रियसे कोइ इस
नहीं माने उनोने वैक्रिय शरीरका दृष्टांत इसमुजब जांणनां जैसें लिंगेंद्री पडी दशामें
अंगुल होती हे जिसकी तेजी दशामें कितनी बढोतरी होती हे इस मुजब वै
शरीर वायू करती है अथवा किरडा जैसे रंग बदलता हे वैसा वैक्रिय शरीर
जाणनी खुसकर्ता ताजी हवा चलती है जिस्सें हवा साफ रहती है श्वास प्राणवा
अंदर लेती है और कारबोनिक एसिड गेसकू बाहर निकालती है झाड वनस्पती
उलटीही चाल करती है वनस्पती दिनकूं कारबोनकूं अंदर चूसती हे और प्राणवा
बाहर निकालती है इससेंभी वायुके आवरणकी हवा अर्थात् दिनकूं दरखतोंकी
साफ होती है और रातकूं वनस्पती प्राणवायूकों अंदर खेंचती है और कारबोनिक ए
गेसकू बाहर निकालती है. लेकिन् इसमेंभी इतना फरक है रातकूं जितनी प्राणवा
वनस्पती खेंचती है जिससें दिनकूं प्राणवायूकों जादा निकालती है इसवास्तेही दरखतं
नीचे रातकूं सोणेकी मनाइ विवेक विलाशग्रंथमें जिनदत्तसूरिजीने लिखा है इसतरे ह
एक दूसरेके संग मिलणेसें पवनसें और दरखतोंसें हवा साफ होती है बरसादभी हवा
साफ करणेमें मदतगार है इसवास्ते इन सब क्रियाकूं बंध नहीं करणा साफ ह
बहोत अमोल वस्तु है उसके मिलनेका यत्न हमेसा करणा बस्तीमें दटी भई हवा है
वास्ते हमेस खुली हवा खाणेकूं जाणा चाहिये इसमें शरीरकूं बहोत फायदा मिलता
फिरणेसें शरीरके अवयवोकूं कसरत मिलती है ताजी हवा कसरतसेंभी जादे फायदे
दिनमें तो फिरण घिरणेसें ताजी हवा मिल जाती है लेकिन् रातकूं घरमें सोणेसें

ाका मिलणा इमारत वणाणेवाले चतुर कारीगर और वास्तुकशास्त्र पढे इंजनेरोंके
। है आगेके कुंढोके वनाये मकान होय तो उसकूं सुधराणा चहिये ये सब काम धन-
और जाणकार दिलदलेलोकाहे तोभी अपणी हेसियत मुजब तो जरूरही वणे
ांतक प्रयत्न करणा वाकी तो वो वात है मन चले लेकिन् टट्टू नहीं चले उद्यम
ते सीधा और उलटा फल होय तो कर्मोंकी रचना प्रवल समझणी. मलीन कचरा और
ती चीजोंमेंसे उडती गलीच हवासें प्राणी एकदम नहीं मरता है लेकिन् इस वजे
त दिनोंतक रहनेमें आवे तो मरण निश्चे होय क्योंके जैन सूत्रोंमें उपक्रम लगके
ोकी आयु टूटती हे जिसके मुख्य सो भेद हे निश्चे मृत्यु एक है ऐसा लिखा है उस-
े ऐसें २ कारण है लेकिन् वो अपने प्रत्यक्ष नहीं जाण सकते हैं वहोत अदमी तो
गसें ही मरते हैं वो रोग काहेसें होता है अगर पूरा निदान किया जावे तो वहोतसे
गोंका कारण खराव हवा ही निकलेगी खराव सकूथ जहर पेटमें जानेसें एकदम प्राणी
र जाता है लेकिन् ऐसा नहीं समझना के थोडा २ जहर अफीम वगेरे नुकशान नहीं
रता मगर वो भी कोई वखत सखत् जहरका काम कर गुजरता है इस तरे हमेसों की
ोडी २ खराव हवाका जहर शरीरमें वडे नुकशानका कारण वण जाता है फेर वेमार
दमीके आसपासकी हवा जलदी विगडती है इस वास्ते वेमार अदमीके पास जादा
रवा वंध साफ हवा आणे देनी जेसें शरीरके वाहर ताजी हवा चहिये तैसे शरीरके
ंदर भी ताजी हवा लेनेकी जरूरी है जेसें वादलीका अथवा कपडेका टुकडा कवले याने
रम हाथसें पकडा भया होय तो वहोत पाणी चुसता है और उसकूं दावके पकडा होय
ो वो टुकडा कम पाणी चुसता है ये हाल अंदरके फेफसेका है जो फेफसा थोडा दवा
ुवा होय तो उसमें जादा हवा प्रवेश करती है उससें खून अछी तरे साफ होता है
सवास्ते लिखने वांचते इत्यादि हजारों काम करते फेफसे वहोत दवे ऐसा टेढा वांका
ोकर नहीं वेठणा क्योंके अंदर हवा जा नहीं सकती इत्यादि ॥

॥ अदमी प्रति हवाकी जरूरी ॥

हेक अदमी २४ घंटेमें सरासरी ४०० घन फीट हवा श्वासोश्वासमें लेता है शरीरके
ंदर इसका हिसाव ॥ सात फीट लंवा सात फीट चोडा सात फीट उंचा एसी एक
ोटडीमें जितनी हवा अटे इतनी हवा एक अदमी हमेसां फेफसेमें लेता है श्वासोश्वासके
लेनी मंद हवामें कारवोनिक एसिडगेसका नुकशान करनेवाला पदार्थ हजार भाग मा
हवामें ४ से १० भाग जितनी है लेकिन् जो हवा शरीरमेंसें वाहिर निकलती है
हजार भागमें कारवोनिक एसिडगेसका ४० भाग है अर्थात् ग्यारां हजार भा
ुणा है इसमें सिद्ध भयाके अपणे चोतरफकी हवा अपने ही भाग्यसें विगडती
ताक तो जहां हवाकूं वनरपनी चुस लेनी है दुसरी तरफसें वातावरणकी

उस हवाकूं खेंचके ले जाती है लेकिन् मकानमें हवाके आणे जानेका रस्ता नहीं है तो कुदरती समवाय सुलटे सो उलटे हो जाते है एक अदमीकूं ७ सें १० फीट चो जगे अथवा खणकी जरूरी है जो इतनी जगेमें एकसें जादा अदमी बैठे या सोवे उस जगेकी हवा जरूर ही बिगडे हवाके निकास पेसारपर जगेकी विस्तारका आधार हवा जो जादा खुलास आती होय तो जादे अदमी भी थोडी जगेमें रह सकते हैं ऐ नहीं होय तो बडी जगेमें भी थोडे अदम्योंकों सुखदाई हवा नहीं मिल सकती जो कान बहोत घरोंके बीचमें आया भया होय तो उसमें उजाला या हवाके वास्ते छप्पर भी हवाका निकास पेसार रखवाणेकी जरूरी है अदम्योंके मूंमेंसें खराब गंध आती सो अंदरसें निकलती खराब गंधकी वो है इससें हवाका बिगाड और बहोत अदम्यों एकठे होनेसें जो अदमीका जी घभराता है तब खुली हवामें जानेसें जीवकूं आराम मिल है ये बातसें अदमी अनुभव कर सकता है के घरकी हवा बिगडी भई है या अछी बाहरसें आये अदमीकूं खराब गंध आवै या जी घभरावे तो समझ लेना इस मकान हवा अछी नहीं है शुद्ध वातावरणकी हवाके हजार भागमें १० भाग कारबोनिक एसि डगेसका है अगर इस प्रमाणसें बढकर १० भाग हो जाय तो भी बैमारी नहीं होती इ हिसाबसें एक अथवा इससें जादा बढ जाय तो ऐसें हवावाले मकानमें रहनेसें बहोत नु कशान होता है ये परिक्षा हवाकी दुरगंधीके फेरफारसें मालुम हो सकती है ॥

॥ उदक, अप्प, जल । वाटर ॥

जिंदगीकूं मदतगार दूसरी जरूरीकी वस्तु जल है. पाणी प्रवाहीरूपसें ही काम देते है इतनाही नहीं खानपानकी दुसरी चीजोंमें भी पाणीका अंश रहा भया है छोटे बा कोंका इकेले दूधसें पोषण होता है उसमें भी जादे हिस्सा जलका है इस वास्ते उन्हें जादे पाणीकी गरज नहीं होती अपणे शरीरमें रस रक्त मांस वगेरे धातुओंमें भी जलक मुख्य भाग है मनुष्यका शरीर सरासरी वजन ७५ सेर गिणें तो उसमें ५६ सेर आसरे पाणी यानें पतला प्रवाही पदार्थ आया भया है जिस अनाज वनस्पतीसें अपणा शरीर पोषीजता है वो सब पाणीसें ही तइयार होती है मलीनता ये बहोत रोगोंका कारन है सो भी पाणीसें ही धुपके साफ होती है अगर जो जरादेर प्यास लगे बाद जल नहीं मिले तो प्राण तडफडने लग जाते हैं अर्थात् प्राण भी निकल जाता है पाणी बिना प्राण केसें जाता है उसकूं जाणनेकी समझ इस तरे है शरीरके सब अवयवोंका पोषण प्रवाही रसमें होता है जैसें दरखतकी जडमें डाला भया जल वो रसरूप पेडमें टालोंमें बडे डालोंमें छोटी डालियोंमें इस क्रममें सब अंगोपांगमें पोंहचके तेजी हरा भरा रखता है तैसें शरीरमें भी पीया भया जल खुराककूं रस रूप बणाकर है, सब अंग पोंहचाता है जो जल कम [illegible] और मन नाश होना सरू होता

आखर जाडा होते २ गति बंध होकर मृत्यु होती है खूनके फिरणेकी कितनीक नलियां घाल जैसी महीन होतीहै तो उसमें जादा व जाडा खून महीन नलियोंमें चक्कर नहीं खा सकता. पाणी इतना गुणकारी है वो भी जादा पीणेमें आवे या मलीन बिगडा भया होय तो निश्चै प्राणोंका हरणेवाला होता है. खराब जलसें बडे २ नुकशान होता है इय बात दुनिया सब पूकारती है परदेशमें कोइ बेमार गिरजावे तो कहते है पाणी लग गया लेकिन् घर बैठे बेमार गलीच पाणीसें हो जाते हैं उसकी और मलीन जल कैसा होता इसका परीक्षा है क्या क्या बेमारी पैदा करता है उसके सुधारणेकी क्या तजवीज है इस बातोंकूं नहीं जाणकर रोगोंके मिटाणेका इलाज बैलोंसें कराते २ लाचार हो बैठ जाते हैं लेकिन् उसका मूल कारण समझे विगर इलाज होता नहीं इस तरेका अज्ञान चल रहा है देखो इस दीपकका उजाला सो अंधकार मिटे ॥

॥ पाणीका नमुना ॥

जल खारा मीठा लूणीया हलका भारी मैला और साफ दुरगंध या गंधरहित वगैरेका होना जमीनकी तासीरपर है अथवा आस पासकी चीजोंपर आधार है इसपरसे ये भी सिद्ध होता है आकाशके बद्दलोंमेंसें जो जल बरसता है वो सर्वोत्तम उसमें भी आसोजकातीका वो पीणे लायक होता है और जमीनपर गिरे पीछे उस जलमें अनेक पदार्थोंका मेल होनेसें बिगडता है. पृथ्वीपरका और आकाशका पाणी तो एकही है लेकिन् दुसरे पदार्थोंके संयोगसें गुणमें तफावत होता है हरसाल हर वखत बहोत जल अनेक स्थलोंमें बरसते रहता है और जमीनपर पडा भया जल असंख्य नदी नालोंद्वारा दरियावमें जाता है ऐसा है तो भी दरियाव भरके कभी उथलता याने छिलकता नहीं है उसका कारण ऐसा है के वो दरियावका पाणी सुक्ष्म परमाणु होकर पीछा याने बरालरूपसें आकाशमें जाता है सुक्ष्म हो गया जिस लब्जको बिगाड लोकोंनें सूक गया ऐसा बणा दिया है वो बराल बदलके धूंअर बरसात और बरफ ओले हो जाते हैं तलाव कूंए बावडीका और गिराये जायजो पाणीइत्यादि सबके परमाणु उडते हैं सो आकाशमें चढता हैं सखत गरमीकी मोसममें पाणीका सूक्ष्म परमाणू बहोत उंचा चढता है इस कारण ही उष्णकालमें नदी नाले जलाशय सूक जाते हैं बरसात किस २ तरे २ होता है इसका बयान श्रीभगवती सूत्रमें है इस जलकी उत्पत्ती स्थिती और नासका जो प्रकार है ऐसा सर्व जड चेतन पदार्थोंका घटत वढत जाणलेणा द्रव्य नित्य है गुण भी नित्य है पर्याय अनित्य है बरसातका कितना एक पाणी नदी और तलावोंमें जाता है कितना एक जल जमीनमें घुमकर जमीनकूं गीला करती है बलके उस जलसें कूए वगैरेमें सेजा जाकर उनोंमें भी जलकी बढोतरी होती है जहां ठंड बहोत है उहां बरसातका पाणी जमके बरफ हो जाता है गरमीमें गलकर बडी नदियोंके प्रवाहमें बहता है इस तरे ५१

होणा घराल उंचा चढणा ये सब संसारमें अनादि अनंत है जीव विचार प्रकरणमें इस के अनेक भेद पाणीके अनेक भेद लिखा है उसमें पाणीके मुख्य दो भेद हैं १ अंतरि जल १ भूमी जल २ आकाशमेंसें जल जो बरसता है उसकूं अधर झेल टंका वो अंतरिक्ष जल है जमीनमें पडे पीछे नदी कूआ तलावसें जो मिले सो भूमी जल है आ काशमें भी कितनेक मलीन पदार्थ फिरता है उसके संयोगसें आकाशके पाणीमें कुछ विकार होता है तो भी जमीनपर पडे जलसें अच्छा होता है आसोज कार्तीका जल पह लेके वरसादसे जादा अच्छा होता है इसवास्ते उपाशकदशा सूत्रमें आनंद श्रावक वगेरों आसोजकातीका अंतरीक्ष जल जन्मभर पीणारख्का है ऐसा लिखा है फेर मोसम बिगरक वरसाभया पाणी जेसें पोसमाहका वरसाभया अंतरीक्ष जलभी नुकशान करताहै तेसें मोस मकाभी वरसा नुकशानकारी है जेसें अश्लेषा नक्षत्रका वरसाभया जल बहोत हानी कर्ता है नालक वचन है वेदांघर वधावणा अश्लेषावूठां ॥ आकाशमेंसें जो गडे याने ओले गिरते है उसका जल तो अमृत जैसा मीठा और अच्छा है लेकिन् वो बंधाभया खाणा बंधीतर फकाखाणा जैनसूत्रोंमें अभक्ष लिखा है अभक्ष सूत्रकारोंने जो जो वस्तुकूं लिखीहै वो सब रोगकर्ता समज लेणा इनोंका गलाभया जल केइयक रोगोंमें अच्छा है वरसा तकी धाराका जल जाडेकपडेकी झोली बांधके पात्रमे लिया जाय या साफ आगोरके टांकेका जल ये सब जल उपयोगी है भूमीजलका दो प्रकार है जांगल १ और आनूप २ जो मुल्क थोडे जलवाला थोडे वृक्षवाला पित्त तथा खूनके विगाडके उपद्रव वाला होय वो जांगल देश कहलाता है उसकाजलसो जांगल जल तेसें जो मुल्क बहोत जलवाला बहोत वृक्षोंवाला और वायु तथा कफके उपद्रववाला होय उसका जो जल सो आनूप जल कहलाता है जंगलका जल स्वादमें खारा मलमला पाचन करनेमें हलका पथ्य और बहोत विकारोंकूं मिटाता है अनूपका जल मीठा और भारी होणेसें सरदी तथा कफका विकार पैदा करता है इसके सिवाय साधारण देशका जल जिसमें नहीं जादा जल हमेशां पडा रहता होय और न बहोत दरखतोंका झूंड होय याने दोनुं सरासरी होय वो देश हेद्राबाद नागपुर अमरावती खानदेश आदि समझना इनोका जल और जुदे २ जलाश योंके भेद गुण दोष नीचे मुजब ॥ नदीका जल पडे जलसे बहोत अछा बहोतसी बडी नदियोंका जल जमीनके तलेमुजब अछे और बुरे स्वाद मट्टीके तासीर मुजब होता है बरसातकी मोसममें नदीके जलमें धूल कचरा और गंदकी वहकर एकठी होती है उस वखत वो जल पीणेलायक नहीं होता दो च्यार दिन पडे रखनेसें साफ नीतरकर पीणेके लायक होताहै झाडीमें वहते नदी नाले देखनेमें तो साफ दिखते है और वो जल पीणेमें भी मीठा लगता है लेकिन् अनेक दरखतोंकी जडसें लगकर वहणेसें वो जल महा [illegible] होता है उस जलसें बुखारकी पैदास होती है और ऐसी हवामें रहनेसें भी बहोत

नुकशान होता है जैसे शिखरगिरी पार्श्वनाथ पहाड आबू गिरनार आदि पहाडोंके नदी नालोंका जल पीनेवाले बुखार ताप तिल्ली वगेरे रोगोंसें दुखी रहते हैं यही हाल बंगालेके पास अडंग देश रायपुर वगेरे झाडीका जल समझना ऐसे जलकूं तीन उकालेसें शेरका तीन पाव रखकर गरम कर पीछे ठंडा कर जाडे वस्त्रसें छाण कर पीना केइ यक नदी छोटी २ होती है जिसका जल धीमें २ चलता है फेर उस पर मनुष्योंकी और जानवरोंकी गंदकी मैल चला आता है (जैसें) दक्षण हैद्राबादकी मूसा नदी एसोंका जल पीणे लायक नहीं नल होनेके पहले कलकत्तेकी गंगा नदीका जल भी बहोत नुकशान करता था अद्न्योंका स्नान मैल आदि गंधकीसे, दुसरे बंगालेमें जलदागकी प्रथासें मुडदेकूं गंगामें ही डाल देते थे उस गंधसे भी पाणी बहोत बिगड जाता था नलके पाणीमें कबजीयत देखनेमें आती है मुंबई कलकत्ता वगेरे शहरोंमें, बहोतसे शहर तथा गामडोंमें पाणीकी तंगीके लिये कूवा वगेरे जलाशय नहीं होनेके सबब एसी गंधे जलवाली नदियोंसें निर्वाह करणा पडता है इस कारण सब वस्तीवालोंके तन दुरस्तीमें बिगाड होता है खुली साफ हवामें महनत मजुरी कर शरीरकूं अछी तरे कसरत देनेवाले गांमडोंके वासिंदोकूं बुखार सताता है उसका असल मतलब गंदा खराब पाणी ही समझना जिस जगे जलका एक ही स्थल तलाव वगेरे होता है तब लोक उसीमें स्नान करते हैं मैले कपडे धोते हैं जानवर नाहते हैं और वो ही जल पीते हैं इससें बहोत नुकशान होता है इसवास्ते हमारे जैनी श्रावक विमल मंत्री वस्तुपाल तेजपालादिकोंनें प्रजाहितार्थ हजारों कूआ बावडी पुष्करणीयां करवाई ऐसा लिखा है जैसलमेरु पास लोद्रवकुंड रामदेहरे पास उदयकुंड अजमेरु पास पुष्करकुंड ऐसे तीन अखूट जल पुष्करणी राजा उदाई सींधु देशवालेके पाणीकी तंगी फोजमें होणेसें पद्मावती देवीने तीन जलाशय बणाये इत्यादि, राजा अशोक चंद्रादिकोंनें दरखत और सडक जलके नहरे अपने चंपा वगेरे जलके तंग स्थलमें बणवाणा सरू कियाथा तवारीकोंसे साबित है, चाहिये सरकार राजा माहाराजा शेठ साहुकार अथवा सामान्य प्रजा भी मिलके जलकी तंगी मिटानेका जलके सुधारणेका प्रयत्न करे अगर जो पाणी पीनेकी एक ही नदी होय तो ऊपरके तरफका जल पीणेकूं लेणा वस्तीके निकासकी तरफ अर्थात् नीचेकी तरफ स्नान कपडा धोणा जानवरोंकूं पाणी पिलाणा गजरदम जल साफ रहता है उस वखत जल भरवा लेना लोकोंके सुखके वास्ते सरकारकूं चहिये जल स्थानपर पहरा बिठलाणा और न्हाणा धोणा ढोरोंकूं धोणा मरे आदमीकी जलाई भई राख उस जलोंमें डालतेकूं बंध करवाणा जोरसे जो नदी बहोत पाणीकी बहती है उसका मैल कचरा तले बैठ जाता है या किनारे जा लगता है लेकिन जो नदी छोटी धीरे चलणेवाली तथा तलाव कूआ वगेरोंमें बहनी जोरकी नदीका पाणी अच्छा होता है इस पाणीके सुधारणेकूं जैनियोंके सूत्र सिद्धांतमें

नसे, जीवे जीव आहार विना जीव जीवे नहीं भगवत कहो विचार दया धर्म किसविधपले १ उत्तर भगवानका (दुहा) जीवे जीव आहार जयणासें वर तो सदा गौतम सुणो विचार टले जितनोही टालिये २ करुणावंतपणा है वो ही दया धर्मपणा हे नलका पाणी, नदियोंका या तलावोंमेंसें छणणेके वास्ते गहरे कूवेमे लिये जाता है उहांसें छाणकर (फील्टर) होकर नलमें आता है साफ कीये जाता हे नदीके जलसें ये अच्छा हे वादस्याही अमल राजोंके अमलदारीमे नदीके इधर क्यारे वणाये जातेथे उसमेंसेजा आकर जो जल जमा होताथा सो अछा होताथा घरोंमें नल किसीराज वियोनें लाख वर्षमें तो लगाये नही आगेकी क्या खबर विना प्रमाण लिख नही सकते सहरोंके वाहरतो दूर २ से जलकी नेहरे राजोनें बंधवाईथी यहतो इतिहास है और किसी राजवीने लगाया होगा नल तो आपकेही घरमें लेकिन प्रजाके नही, आगे पाणीकूं दूर पोंहचाणेकूं चमडेके बंबे पिचकारे वगैरे यंत्र तो प्रचलितये नलके पाणीसें आदमी गोरा और वृथा पुष्ट थोडे दिनमें दिखणे लगता है अंदर सत्व कम होता है लेकिन जिस २ जगेके जलकी लागसे हजारो आलम मरतेथे वो तो सुधारा हो गया मुंबई कलकत्ते वगेरे बडे सहरोंमें नीचे गटरकी गंधी सरदीसें बुखार (प्लेग) दुष्ट विस्फोटक रोग प्रजाकूं भारत वर्षमे बहोत दिक्कर रक्खा है ये सर्व महिमा दुष्ट गंध गटर मोरियोकी हवा और तरीसें चल रही है। सं। विक्रमके तेपनसें मुंबईसे सरूभया सात वर्ष भया अगर उद्यम आदि पांचो समवाय सुलटे होकर वर्ते जरूर मिटेगा, जंगल खुसक मुलकमें ये रोग होणा नहीं पांचो समवाय सीधे हें जहांतक, तलावका, पाणी कितनेक तलाव तो तलसीके जलका होता है जिसके नीचे या आसपास तलावके पहाडका झरणा होता है उसका तो अखूट जल होता है कितनेक वरसाती जलका होता है इसमेंभी आसपासके गंधे कचरे वगेरे जलके पूरमें वहके आते है दोय च्यार दिनवादनीचे जमता है तव जल साफ होता है लेकिन जिस तलावमें लोक नदीका हाल लिया है वेसेंही नाहणा धोणा वगेरे होता होय तो वो जल पीणेकूं नही लेणा तलावका पाणी मीठा भारी रुचिकर त्रिदोषहर और सरदी करता है लेकिन मैला जल वहोत वेमारियोंको पैदा करता है पाणी विगडणेके कारण नदी तलाव का एक है नदीका जल वहता है तलावका बंधा भया है इस्वास्ते नदीसें तलावके पाणीसे जादा विगाड होणा संभव है, ऋतुमुजव पाणीका उपयोग लिखते है, सो वणआणा राजा महा राजोंसेंभी दुस्वार है लेकिन जानरना होणा येभी वडी वात है, हेमंत ऋतु तथा। शिशिर ऋतुमें सरोवर तलावका जल पीना अछा है वसंत और ग्रीष्म ऋतुमें कूवेका वावडीका तथा पहाडके झरणेका पाणी अछा है वर्षाऋतुमें आकाससें गिरता झेलाभया जल अथवा कूवेका जल अछा है सरद ऋतुमें नदी जल अथवा जिस जलपर दिनभर तो सूर्यकी किरण पडती होय रातकूं चांदकी ५

एसा जलपथ्य है ये जल अंतरीक्ष जल जेगागुणकारी है रसायन रूप है ताकतार है
पवित्र पड़ा हलका अमृत जैसा है एक प्राचीन आचार्यने एसाभी लिखा है पौसमें
वरका माघमे तलावका फागुनमे कूएका चैत्रमें पहाडोंके कुंडका वैशाखमें झरे
जेठमे जमीनकूं चीरडाले एसे जोरसे पहते गये नालेका, या नदीका अशाडमे झरे
श्रावणमे अंतरीक्षजल भादवेमेकूएका आसोजमे पहाडके कुंडोका कार्ती मिगसर
सबजलाशयका जल पीणे लायक है लक्ष्मीवल्लभ जैन निघंटसे पूर्वोक्त विवरण लिखा है

॥ खराब जलसे प्रगट बेमारी ॥

खराब जलसें अनेक रोग होते है उसमें मुख्य २ रोग लिखते हैं, कितनेक रोग जीवोंसे याने कृमीसें पैदा होते हैं लेकिन उन जीवोंके पैदासकी जगे असलमें खराब जल है, जमीनके संयोगसें पाणीमें खार मिलणेसें पाणीमें मिठास और पाचनशक्ति पडती है लेकिन जो खारका अंस जादा होता है तो येही जल कितनेक रोगोंका कारण बण जाता है जलमें वनस्पतीका सडना और मेरे जानवरोंके दुरगंधित परमाणु जो मिलता है तो बहोतही खराबी करता है बुखारठंड देके (ज्वर) तेसें विषमज्वर और मेलेरिया नाम हवासें पैदा होणेवाले तावका कारण खराब पाणी है पाणीकेबिगाडणेसें हवा बिगडती है हवा बिगडणेसें पाचनशक्ति मंद पडती है तब बुखार आता है जंगल देशका जल लगणेसें जो रोग होता है सो पाणी लगे कहलाता है, दस्त मरोडा ॥ २ ॥ ये दस्त मरोडेकी बेमारी खराब पाणीसें पैदा होती है क्यूंके ये रोग चोमासेमें जादा पैदा होता है मतलबबरसातके जलमें मैला कचरा वहकर आय मिलता है एसा जल पीणेसे अति सारकी बैमारी पैदा होती है (३) कबजीयत । अजीर्ण भारीअन्न खराब जलसें अजीर्ण अथवा कबजियतका रोग होताहे (४) कृमि जंतु खराब पाणीसें शरीरके अंदर तेसें बाहर कृमियोंका उपद्रव होता है साफ पाणी चमडीमें पैदा होणेवाले कृमियोंके मिटाता है गंधेजलसें पैदास होती है (नारू) नारूके दरदसें बहोत लोक दुःख पाकर मरजातेहे ये नारू खराब जलके स्पर्शसें अथवा विगरछाणे या गंधेजलके पीणेसे होता है (६) चमडीका रोग दाद खाज गडगुमड वगेरे खराब जलसें होता है कृमि नाशक दवाओंसें ये रोग मिटता है इसरोगमें जीव खराब जलसें पैदा होता है ये अनुभव है (७) हैजा [कोलेरा] कितनेक आचार्य लिखते है विशूचिका रोग अजीर्णसें होता है और कितनेक कहते हैं पाणी तथा हवाके अंदरके जहरी जानवरोंसें होता है इसमें जादा फरक नहीं है कारण अजीर्णसे कृमि कृमीसें अजीर्ण होता है [८] पथरी [अस्मरी] जलके विकारसें पैदा होती है लोकीकका एसा कहणा है धूल कंकर खाणेसें पथरी बंध जाती है ये तदन झूठ है असलमें जादा खारवाला जल पीणेसे पथरी होती है येबात माधवाचारीके भी देखणेमें नही आई दूसरे तो माधवकूं सर्वोपरि

निदान समझते हैं प्राचीन जैन शोमाचार्यने लिखी सो बात डाक्तर भी मांनते है इत्यादि प्रत्यक्ष अनुभविक पाणीके रोग मैंनें लिखा है सो यथार्थ है नमाने सो पतपाण लेवे ॥

॥ जलकी परिक्षा साफ करणेकी विधि ॥

साफ जल रंग खसबो स्वाद रहित तथा निर्मल और पारदर्शक होता है याने आर [पा]र साफ होता है सेवाल तथा वनस्पतीके योगसें जल हरा रंग पकडता है और प्राणि[यों]के शरीरका कोई भी द्रव्य जलमें मिला भया होता है तब जल पीलास पकडता है [इ]सकी परिक्षा बहोत तरे हो सकती है जिसमें सहज परीक्षा इस तरेसें है साफ काचके [स]फेद प्याले पारदर्शकमें जल भरके वो प्याला उजालेमें धरणेसें उसका निज रंग अथवा [म]ापणा मालम हो सकता है पाणीमें दुरगंध होय वो पीणेसें यासूंघनेसें एकदम उस[क]ी खबर पडणी मुसकिल है लेकिन उसकूं उकालकर उसकी खसबो सूंघी जावे तो [उ]सके गंधकी मालम हो सकती है यह तो प्राचीन जैनीयोंकी चलती परीक्षा है डाक्टरी [पर]ीक्षा लिखते हैं पाणीकूं एक शीसीमें भरकर पीछे खूब हिलायकर वो पाणी सूंघणा [ज]लमें पोटास डालणेसें जो बो (गंध) आवे तो समझना जल अछा नहीं है जलमें दो पदा[र्थो]का भेल है एक तरेका पदार्थ पिघलके पाणीके संग मिला भया होता है दुसरी तरेका [प]दार्थ पाणीसें अलग होजानेवाला लेकिन जलमें मिला भया होता है प्यालेमें जल [भ]रके थोडी देर स्थिर रखनेसें जो नीचे बैठता है तो समझ लेणा इस जलमें दुसरी व[स्]तुका भेल है पाणीमें खार वगेरे पदार्थ कितनाक है वो जाननेके वास्ते थोडा जल तो[ल]कर बरतणमें जलाणा पाणी सब जलेबाद तपेलीकेतले जो खार वगेरे पदार्थ रहे [उ]सकूं तोलनेसें मालम होगा की इतने जलमें इतना खारका भाग है एक ग्यालन [ज]लमें खार वगेरे पदार्थ १५ रत्ती होय उहांतक वो जल पीणे लायक है खार ज्यों कम [ह]ोय सो जल अछा लेकिन खार बिगरका अछा जल भी स्वाद नहीं देता खार मिला [ज]ल पीणेमें मीठा और पाचन शक्तिकूं मदत देता है खार जादा होय तो जल खारा लगता [है] और नुकशान भी करता है पाणीकूं साफ करने और अछा करनेका अनेक उपाय है [स]हज उपाय जैनोंकी प्रसिद्ध क्रिया है ॥ पाणीकूं शेरका तीन पाव उकालके मट्टीके बर[त]णमें ठारके पीणा ये जलकूं कल्पसूत्रमें शुद्ध लिखा है साफ है गुणकारी है और हलका [है] जलमें फिटकडी और निर्मली वांटके डालनेसें पाणीके मेलकूं तले बिठलाती है जल [छ]ाणे बिगर कभी पीणा नहीं नातणा जाडे मजबूत वस्त्रका होना, अथ डाकतरी क्रिया॥ [ए]क मटकीके नीचे महीन छेद करना उसमें आधेतक वेलू तथा कोयलेका भूका भरना [उ]सपर दुसरा मटका जिसके तले छेदकर उसमें डोरा पोकर लटका देना उसमें जल [भर]णा तीसरा खाली मटका रेती कोयलेवालेके नीचे धरना उसमें टपक २ जो जल [आवे स]ो पीणे लायक होता है स्टेसनोंपर ऐसा देखा है ॥

॥ पाणीका दवा मुजब वर्त्ताव ॥

जैसें खराब जल कितनीक बेमारियां पैदा करता है तैसें कितनेक रोगोंकूं मिटानेमें दवाका काम करता है जो जो बेमारी अशुद्ध जलसें पैदा होती है वो शुद्ध जलसें होती नहीं इलाजके तरीके गरम जल तथा ठंडा जल दोनुं काम देता है सो इस मुजब १ शी- तोपचार ठंडे जलका गुण, रक्त स्तंभक दाह शामक और संकोचकारक होणेसें खून गि- रतेकूं बंध करता है इसवास्ते इतने रोगोंकों फायदे बंद है १ खूनकागिरणा नकसीर बहती है तब तालवेपर ठंडा जल डालनेसें बंध होता है ऐसे बंध नहीं होय तो नाकमें छाचके या पिचकारी मारणेसें उसी वखत खून बंध होता है जखमके खूनकूं ठंडे पाणी- का पाटा एकदम बंध करता है हाथमें चकु वगेरे कोई हथियार लगा होय तो ठंडे जल- का पाटा बांधणेका रिवाज है चोट वगेरे लगके खून नहीं निकला और लील जमणेका संभव है जलका भींगा वस्त्र बांधे रखनेसें तुरत खून विखरके दरद मिटता है तरवार वगेरेका जादा जखमपर हरदम गीला पाटा रखनेसें जलदी आराम होता है सुवारो- कुसुवावड यानें अधूरा गिरणा जब खून गिरणासरू होता है तब गर्भाशयपर ठंडा पाणी डालनेसें अथवा उसमें बरफका टुकडा धरणेसें खून गिरता बंध होजाता है पेडू साथल और जांघ उत्पत्ति अवयवपर ठंडा पाणीका भीगा वस्त्र धरनेसें फायदा होता है लेकिन गर्भ- पातके चिन्ह मालम पडते ही ये इलाज करना मासिक ऋतु धर्मका खून अगर जादा जाने लगे तब भी इसीतरे ठंडे पाणीके इलाजसें मिटता है मूर्छा मृगी हिस्टिरिया वगेरे तथा मेसमेरिजमसें बेसुद्धी वगेरे रोगादिकोंमें आंख तथा शिरपर ठंडा पाणी छांटनेसें जलदी जाग्रत अवस्था होती है, २ संकोचन ॥ ठंडा जल स्नायुओंकों संकुडाता है इस- वास्ते आंडोमें सूजन हो जावे अथवा आंतरे उतरकर बहोत दरद करे तब वृषणपर ठंडे पाणीका भीगा वस्त्र धरणा अथवा बरफ धरणा जिस्सें आंतरे सकुडा कर चढ जाती है प्रदर और तोके धुपणी सुपेद पाणी गिरनेका रोग होता है जिस्सें सुपेद लाल वगेरे मिश्र रंगका खून गिरता है वो ठंडा पाणीके छांटनेसें या पिचकारीसें बंध हो जाता है इसतरे औरतोका शरीर नाताकत बालककी कांच निकलती है ये दोनू ठंडे पाणीकी धार देनेसें संकुडा कर अंदर चली जाती है शरीरका आवाज बैठते ऊठते औरतोंके मूत्र मार्गमें बवाज भया करती है वो भी ठंडा पाणी उसपर छाटणेसें फायदा होता है पुरुषके वीर्य गिरणे अथवा स्वप्न दोष होणा तब रातकू सूती वखत पेडू तथा कमरपर जल छिडकणेसें वीर्यकी गरमी कम होती है वीर्यकूं वहनेवाली नसो मजबूत और दृढ हो- टाती है ऐसा होनेसे कितनेक दर जे फायदा पहुचता है ३ दाह शमन । ठंडा जल शरीरके अंदरकी और बाहरके दाहकी शांति कर्त्ता है आंखकी गरमी जैसें खूनसें आंख ~ हो गई होय तो मूमें ठंडा पाणी भर लेना ऊपरसें ठंडा पाणी छांटणा मिट जाती

है और निरर्थक द्रिग्गा पादिर निकल्ना है मल मूत्र तथा पसीनेके रूपमें शरीरमेंसें जाता
है वो शरीरका क्षय कहलाता है इय हमेसां होता है और इसक्षयका वदला खुराक
दवा और पाणीसें पूरा होता है अदमी जो महननका काम जादा करता है त्यों जादा
पसारा लगता है और जो जादा क्षय होगा तो पोषण कारक पदार्थ जादा चहियेगा चलने
बोलणेमें धांचणेमें और ध्यांगमटकारणे जेसी क्रियानकर्मे शरीरके परमाणु समय २ में
गिरता है और उसकी जगे नये परमाणु आते जाते हैं इसपर विद्वानोंनें एसी भी गिणती
री है सात २ वर्षमें अपणे शरीरका सावत खोखा नयाही बंधता है मतलब आगे जो
ातवर्ष पहिले अपणे शरीरमें जो हाड मांस खून वगेरे था सो सब खिरते २ खिरजाता
और क्रम २ सें नये २ रजकणोसें शरीरकुं दुसरे परमाणुओंसें नयाही घणा देता है
ांपकूं कांचली गिराते तो आदमी देखते हैं लेकिन् वो तो मुदतपर छोडता है । अदमी
ार सब तरेकी जीवायोनि समय २ में कांचली गिराते हैं और नई धारण करते है
सवास्ते जैनसूत्रकार शरीरकूं पुद्गल कहते हैं शरीरमेंसें हमेस एक वडाजया नासपाते
ाता है नख तथा वाल बढता है और गिरते भये अपणे नजरोंसें देखते हैं लेकिन्
ाखों सूक्ष्मरजकणे शरीरमेंसें उडते है सो अपणेकुं दिखता नहीं शरीरमें लाखों छेद मल
ूत्र और श्वासवगेरोंके दुसरे द्वारोसें शरीरका भाग विनास होते जाता है समय २ में
ो परमाणु शरीरमेंसें खिरते जाते है अगर भरती नही होय तो सूक २ कर प्राणी
रजाते क्षय राजरोग इसीका नाम है उत्पत्ति स्थिती और नाश ये तीनों सृष्टिका
ो नित्यनियम है सो क्रम अपणे शरीरमें हमेसां चलता है ऐसा देखकर सब
ृष्टिका प्रवाह इसीतरे नित्यानित्य समझ लेणा शरीरके पुराणे पडे भाग बुड्ढे अद-
ाकीनेर अपणा २ काम नहीं कर सकते वो विखरकर उसकी जगे नये पर्याय लग
ाणा ये कुदरती स्वभाव है उस नियमकूं चलानेवाला क्षुधा वेदनी कर्म याने भूख ना-
का हलकारा टेमोटेम शरीरके भागोकूं भरने वास्ते अन्न पान मांग लेता है जो मांग-
ीका अनादर किया जावे या देरीसें दिया जावे तो उसकी मदतगार अशाता नाम वेद-
ी कर्म वो जोर करके नाश अथवा जादा परमाणुओंका विखरना इसकूं कोई रोक नहीं
कता अर्थात् बेमारीका हो जाणा ये उस कर्मकी सावूती मिल जाती है क्योंके जितना
ल्दी शरीरके परमाणु नास होते हैं इतने जल्दी रोगके कारण वो परमाणु पीछे नहीं
रती होते जैसे चराकके रोसनी लायक तैल नहीं भरणेमें आता है तो चराक बुझ जाता
ै इस तरे शरीरकी घसाई नुकशानी भरनेके वास्ते कुछ बाहरके ... ती
ै उसका नाम खुराक है खुराक जरूरी वस्तु है तो भी ...
ाणेवालेकी प्रकृतीका विचार करेविगर खाणेमें आवे तो वो
ोगोंकों पैदा कर देता है खुराकका वजन सबोके

पदरोगमे विद्रधी अंदर पेटमें या बाहर पकनेवाली गांठमे मस्तक रोगमे कर्न रोगमें रोगमे नाककेरोगमे गुदा रोगमे सूजनके रोगमे पथरीके रोगमे शूलके रोगमे पसीना जलसे निकालना औरतके जापेके रोगमे नरम थोडा पसीना निकालना विष रोगमे लकी धारा और स्नान कराना जिस २ रोगोमे वायूकी और कफकी प्रबलता है वो ऊपर लिखे सो सब आराम होते है मैने अनुभव किया है सो ही लिखा है ये रोगोकी जो निदान मैने आगे लिखा है उस प्रकार रोगोकी परिक्षा कर लेना अब ना निकालनेकी विधि लिखते हैं, पहली तेल या घीमे सींधा निमक मिलाकर घंटे श रीर मसलाणा फेर एकांत कोठेमे हवा न आतीहोय जहां बैठ कंबल या रजाई शरीर सब ढाककर संकडे मूंके घडेमे खुब उकाला भया जल झमोलके अंदर पसीना पूछके साफ करते जाणा जब बाफ बंध हो जाय तब कपडे पहन लेना सूके बाद फेर बाहर आणा पूर्वोक्त रोगी बहोत निर्बल होय तो पसीना थोडा सर्वथा देना ही नही पित्तसे उठे रोगोमे पसीना देना नहीं इसीतरे वाय कफके सर्व गोमे शेरका तीन पाव रहा जल पथ्य है अति सारके रोगमे दशांस सोले शेरका सो शेरका शेर औटाया जल सो दवाकी एक दवा है जल उकालती वखत वाय कर्त्ता कफ हरण कर्त्ता रोगोके अनुसार दवाये भी मिलाते हैं पसीने निकालनेवाले लमे दवायोका असर बाफसे अंदर पोहचके गुण करता है।

॥ किरण दूसरी २ खुराककी जरूरी ॥

अदमीका शरीर एक जीवित चलता सांचा है एनजिनका दृष्टांत शरीर ऊपर है जिसतरे अंजन चल शके इसवास्ते बलीता हवा और पाणीकी जरूरत पडती है तरे शरीरके चलनेवास्ते खुराक पाणी और हवाकी जरूरत है इंजनकूं हांकनेवाला पगार बंध एनजीनीयर चाहिये तैसें अदमीके शरीरमें कर्म बद्ध स्वभाव शक्ति सिद्ध इस शरीरका चलानेवाला है इसवास्ते बाहरकी गतीकी उसकूं जरूरत है नहीं कलोंकों कारीगर सुधारते है तैसें वैद्य डाकटर इस शरीर संचेके सुधारनेवाले है ये माविक गती कायम रखनेकूं उसकूं खुराक हवा पाणीकी जरूरत पडती है शरीर जन्मके संग ही ओछे अधिक प्रमाणमें कोईकूं कोइ तरे हमेस किया करताही रहता जैसें एनजीन उसकी कियामें धूआं और राख वगेरे निकम्मे पदार्थकूं बाहिर फेंक है तैसें शरीरभी चमडी फेफसा मलाशय मूत्राशय द्वारा निरर्थक पदार्थ पसीना तथा पैसाब रूपकों बाहर फेंक देता है ऐनजीनके अंदर बलीता जल और हवा ऐनजीनसें पूरा होता है तो भी उस अंजनसें अलग रहता है लेकिन अदमी जिस राक हवा पाणीकूं शरीरके अंदर लेता है वो चीजों शरीरमें क्षय पाणेके पहले उस संग मिल जाता है और उससें उस वस्तुओंका पोषण कारक भाग शरीरमें मिल

र्वाह करेंगी क्योंके असी १ मसी २ कृपी ३ इन तीनों कर्मोका प्रलय होगा वनस्पती
ोगी नहीं ऐसा अनंती वेरहोचूका ओर फेर भी होगा हितकारी खाणा अहितकारी छोडणा
विचार ज्ञानसे हैं, बुद्धेः फलं तत्वविचारणं च । अर्थात् बुद्धि पानेका फल यही है
सुखकारी सदा चरणा करे ॥ इन दो वर्गोमेंसें प्रजालोकोंमें मांसाहारियोंका जथा
ोत है अगर इन दोनों प्रकारके जत्थेका विचारकी बारीकीमें जंगली लोकोंकों टाल
ये जावे तो बाकीकी सुधरी भई प्रजा समुदायमें विशेष पणे वनस्पतीके खुराकसें नि-
ह करते मालम देते हैं क्योंकी जो वेजीटेरियन है वो तो फकत वनस्पती पर ही
ते हैं और जो मांसाहारी है उनोके खुराकमें भी जादा भाग तो वनस्पतीका ही है
सें ये बात सिद्ध है के वनस्पतीसें वहोत लोक जी रहे हैं अब ये दो तरेका खुराक
लेकिन् मनुष्य अदमीके लायक और पौष्टिक खुराक तो मुख्य वनस्पती ही है जो
व वनसतीमें रहे भये हैं उसके अनुमान कुछ अंशांस तत्व मांसमें है ऐसा मांसाहा-
रोंका निश्चय है क्योंके केवल मांसाहारी लोक मांस खानेसें जीते है उसमें भी हम
द्धद्वारा अनुमान करते है के उन मांसोमें मुख्यपने वनस्पतीकाही तत्व है सो ही
वन है बकरी भेड गाय सूअर हिरण भेंसें वगेरे जो जानवर मुख्यपणे वनस्पतीके
नेवाले है केवल मांसाहारी जानवर सिंह चीता स्याल वगेरेका मांस वो लोक खाकर
दगानी कभी नहीं निभासके अर्थात् खाय तो निश्चे मरे इस वास्ते सर्व प्रजाके वास्ते
कत वनसतीके आहारकी ही जरूरी है १ इस भारत वर्षमें तरे २ के अनाज और
ल फ़ुलेल वनस्पतीका बडा पाक होता है इस भूमी बरावर कोइ भूमी नहीं है क्योंके
दरत स्वभाव सिद्ध शुद्ध खान पान हाजर रहते क्यों अभक्ष खाणा २ मनुष्य जातीका
रीर मांसाहारके लायक नहीं है जैन वैद्यक आयुज्ञानार्णव ग्रंथमें खूब निश्चय कीया
और डाकतर लोकोंके भी आपसमें इस बातपर बहोत तकरार है तो भी टेव प्रकृती
वा पाणीका विचार करनेपर इस आर्यावर्त्तके लोकोंकी होजरी बिलकुल मांस पचा
हीं सकती यह तो खूब निश्चय हो गया है ३ जन्मसे टेव पड जानेसें इस देशमें भी कि-
नेक मांसाहारी लोक मांसाहार करते है और कावलसेंपरे शीत कटिबंधके बहोत लो-
के मांसाहार जत्था बंध करते है यह हमेसेका मावरा और शरीरके अंदरकी गरमीसें
ऐसा निर्दइ खुराक होजरी स्यात् धारण करती होगी लेकिन् हमारा देशका थोडा भाग
उष्ण कटिबंधमें बाकीका सब समशीतोष्ण कटिबंधमें है इस वास्ते इनोंकी होजरी
बिलकुल मांस पचाणे लायक नहीं ४ मावरेसे लोक सोमल अफीम भी बढा लेते है आखिर
उनोंकी प्रत्यक्ष दशा बिगडती है यह चोथा निर्णय बहोत ही बुद्धिवानीका है ॥ मांसा-
ी लोकोंकुं वनसतीके खुराक विगर चलता नहीं और वनस्पतीके खुराककी धारणा-
ो मांसकी जरूरी कीसी वखत भी नहीं होती ५ ॥ वनस्पतीके खुराकसे शरी-

शरीरका कद धंधा प्रकृती तथा कसरत मेहनतपर खुराकका प्रमाण रहता है बल्के अपणे २ खुराकका प्रमाण आपही करसकता है इसवातका निश्चय वैद्य वाडाक्टर नहीं बांध सकते अपनी बुद्धि द्वारा निश्चयकर खुराकका अनुमान बांधकर उस प्रमाण मुजब हमेसां खाना पीणा करणा चाहिये हमेसां कमसे कम ४० हपियेभर खुराक पोपनकूं जरूरही चहिये जादेमे जादा सेर या सवासेर खुराक दुरस्त है लेकिन् मथुरे चोवे औरभी बहोतसे लोक बे प्रमाण खानेवाले होते है उनोकूं ये प्रमानसे कम होसकता है महनती लोक जाट कुनबी मल वगेरे तो महनत कसरतके सबबसूंही जियादा खाते है महनतमें जितना क्षय उतनी भरती परमाणुओंकी होनीही चहिये फेर बहार बाहर साफ आव हवाकी कसरतसें प्राणी दुगुणा आहार करते है ये भी एक कसरतही समझना लेकिन् एसा तो प्रत्यक्ष देखते है बाजे तो थोडे खाणेवाले निरोगी होते है और बाजे बहोत खाणेवाले रोगी, लेकिन सामान्य बात तो इतनीही है कद और महनत मुजब कम खुराक खाना चहिये देखते है बडे एनजीनमें बडा बोइलर होता है सो जादा कोयला खाता है छोटा थोडा खाता है काम दोनुं करता है चलता है शक्तिमें फेरफार जरूर होता है इस मुजब ही आदम्योंका समझणा प्रकृती तासीरका भी बहोत विचार है एक उमर बराबर कदके दो अदम्योंमें एक कफकी तासीरवाला जादा नहीं खा सकता और दुसरा पित्त प्रकृतीवाला जादा खा सकता है थोडे खाणेवाले बहोत खानेवालेकी निंदा किया करते है और बहोत खानेवाले थोडे खानेवालेकी असलमें दोनोंकी भूल है शेरभरकी खुराक निरोग शरीरवालेकी चाहे तीन शेर तककी होय, लेकिन उद्यमी और सूरवीरता आठ पहोर रहित प्रमाणोपेत निद्रा ये सब पूर्व पुण्यकी निशाणी है क्योंके आहारमें विवहारमें चातुर इतनी जाय लज्जा न चाहिये थोडा खाना मंदाग्नि छोटा शरीर ये पापकी निशाणी. थोडा खाके नाजुक बणना मरदमीका चिन्ह नहीं और बहोत खाके वृथा पुष्ट बणना नहीं महनत करे नहीं ऐसे मांगखानेवाले सब भिक्षुक जानना, मांगखाना उनहींको अच्छा है जो संसारकी ममता त्याग परमेश्वरकी भक्तीमें ही एक तल्लीन है शरीरके घसणेसें मनकी इछा जो खुराक लेणेकी होती है सो भूख कहलाती है भूख मुजब हरअदमीकूं खुराक लेना चहिये कम लेनेसें पूरा पोषण मिलता नहीं और चहिये जिससें जादा लेनेसें पच कर पचता नहीं इन दोनों कारणोंसें शरीरमें तरे २ की बेमारियां पैदा होती है॥

॥ खुराककी तपशील ॥

सृष्टीका प्रवाह चलते प्रजापति ऋषभ जगदीश्वरने सरीकूं हितकारी वनस्पतीकी खुराक चलाइ १ इस वास्ते प्रथम खुराक वनसपती १ बाद वनसती, और मांस, ये दुसरी अदम्योंने काळादिकोंमें अन्नादिक नहीं मिळनेसें सरूकी २ ऐसा जैन सूत्रोंमें है अब साढी अठारे हजार वर्ष बीतनेपर भारत वर्षकी प्रजा फकत मांसाहारसेंही

र निवृत्तीमें जादा फल लिखा है दुनियांमें जैनियोंकी दयाके बारीकीका विचार विख्यात नालक वचन भी है, दुहा, शिव भक्ती अरु जैन दया, मूसलमीन इकतार, तीन बात ठ करे, उतरे वेडा पार, ॥

॥ जिंदगीकूं जरूर खुराक ॥

जिंदगीकूं कायम रखनेवास्ते हमेसां चहिये उस खुराककी पांच जात है नाइट्रोजन अर्थात् पुष्टिवाला १ चरबीवाला २ आटेका सत्ववाला ३ जिसकूं अंग्रेजीमें स्टार्च हते है सो, खार ४ पाणी ५ अपने शरीरमें बहोत तरेका तत्व है सबोंका इन पांच तरेके राकसें पोषण होता है इस वास्ते अपनी नित्य खुराकमें इन पांच प्रकारोंकी जरूरी है न पांचोमें दुसरे सब तत्वोका समावेस हो जाता है १ पौष्टिक खुराक शरीरकूं पोषण धा बढानेकूं जरूरका है कोइअनाजमें जादा नाइट्रोजन, कोईमें कम होता है अपने मेस वापरनेवाले पदार्थ घी मक्कन सकर और साबू दाणोंमें पौष्टिक तत्व बिलकुल ही है ऐसा विद्वानोने निश्चय किया है घी मक्कणमें तो मुख्य भाग चरबीका है सकर और साबू दाणोमें स्टार्च आटेका सत्व है लेकिन् ये चारोंही पदार्थ शरीरकी गरमी कायम रखनेका काम करते हैं २ चरबीवाले पदार्थोमें मुख्य घी मक्कण तेल वगेरे है, अनाजोमें चरबीका भाग सइकडेमें १ (गहुंमे है) जादे मे जादा सइकडेमें ६ (मकीमें है) चरबीवाले पदार्थ ठंड कालेमें जादे खाणा चहिये ३ स्टार्च याने आटेके सत्ववाले पदार्थोमें मुख्य मिश्री खांड गुड चावल और दुसरे अनाज है शरीरमें श्वासो श्वासकी जो क्रिया चलती है वो कार्बोन नामके पदार्थसें होता है और वोकारबोन इसतरेके खुराकमेंसे तैसें चरबीवाले पदार्थोमेंसें पैदा होता है गरम देश मारवाड अरबस्थानादिकोंमें तैसें गरमीकी मोसममें स्टार्च तत्ववाला पदार्थ जादे माफगत आता है ४ क्षार, शरीरका हरेक भाग खारके मेलसें बणा भया है दूधमें भी खार है अनमें भी खार है खार तो खानेकी चीजोंमें थोडा और बहोत अंसों करके रहा भया ही है हाडतो मुख्य खारसें ही बणा भया है इसवास्ते हाडोके पुष्टिवास्ते खारकी बहोत जरूरी है खार कमती होनेसें हाड पोचे और बरडे होकर तूटे ऐसे हो जाते हैं छोटे बालकोंका दूधसें पोषण होता है और उसमें स्वभाव सिद्ध खार होता ही है इसवास्ते खुराकमें उनमान मुजब खार लेणा ही चहिये ५ (पाणी) शरीरके पोपणकूं पाणी जैसे प्रवाही पदार्थकी जरूरी है क्योंके खूनके प्रमाणो पेत फिरनेपर जिंदगीका आधार है वो खून पतला है इसवास्ते ही फिर सकता है जो शरीरमें प्रवाही भाग कम हो जाय तो खुन जाडा पडके फिरते बंध हो जाता है ये प्रवाही तत्व जैसें पाणीसें मिलता है तैसें दुसरे खानेके हरेक पदार्थसें भी शरीरकूं मिलता है गहुं बाजरी चावल वगेरे जो कुछ खानेमें आता है उसमें पाणीका भाग है सागतरकारीमें फलादिकोमें पाणीका बहोत भाग होता है इन पांच तरेके खुराकमेंसें

रसे: जितना नुकसान होनेका संभव है उससे मांसाहारसे नुकसान होना ज्यादे है प्रत्यक्ष देखो मांस जल्दी बिगड जाता है फेर प्रत्यक्ष आंखोंसे देखनेमें कोई परिक्षा जैसे शाक वनस्पतीकी हो जाती है वैसी परिक्षा मांसकी नहीं हो सकती जानवरका है या रोगीका है वनस्पतीका अजीर्ण ऐसा नुकसान नहीं करता है अजीर्ण बहोत ही नुकसान करनेवाला प्राण घाती अनेक रोगोंका कारन है जिसे थोडा फायदा बहोत ऐसा व्यवहार विशेष पसंद करने लायक होता है ये कुद-रति नियम है ॥६॥ बहोतसी बेमारियोंमें हमेस मांस खानेवाले अदम्योंको मना करके वनस्पतीके खुराकका आसरा लेना होता है मतलब वनस्पतीका खुराक पथ्य (प्रकृतीके) अनुकूल है इस वास्ते डाकटर भी विशेषपने पसन करते है॥ जो अदमी मांसमें जादा ताकत बतलाते हैं उसका दृष्टांत और प्रमान हम बाते हैं मांसाहारी सिंह चीता स्याल काग चील वगेरे सब जानवर महा आलसु पेशा प्रकृती प्रजाघाती महाशठ इत्यादि, वनस्पतीके खानेवाले घोडे जिससें सुवारी जीते, बलद सब कामके धोरी हस्थी जो इतनी ताकत धराता है की सिखाई भई णी सी जाती होकर नाहरकूं ठोकरसें मार डालती है, और हिरणकेसी शीघ्र गति है इस वास्ते विचार लेणा चहिये ये वनस्पतीमें घास है सो हलकीमें हलकी उ वो खानेवाले उद्यमी साहस सत्वधारी और सरल बुद्धीवाले होते है इस दृष्टांतसें की ताकत कैसी कहे सो बुद्धिवान समझ लेंगें ॥८॥ अदमियोंके खूनमें एक हजार तीन भाग फीब्रीन नामका एक तत्व होनेकी जरूरी है वनस्पतीके खुराकसें वो बराबर बणके रहता है लेकिन मांसमें फीब्रीनका तत्व जादा है इस वास्ते मांस योंके खूनमें फीब्रीनका तत्व चहिये जिससें जादा बध कर बहोत बखत अनेक रो कारण हो जाता है ॥९॥ डाकटर पार्क नामका एक यूरोपि विद्वान प्राणी जन्य औ स्पती जन्य आहार विवरण लिखता भया जताता है के उत्तम मांसमें उष्णता उत्साहकूं पैदा करनेवाला तत्व सो भागमें ३ भागका है और गहुं चावल वैसें नाजमें ये तत्व सो भागमें ४५ सें लेकर ८० तक होता है ऐडमस्मिथ नामक यूरोपि विद्वान वेल्थ ओफनेशन्स अर्थात् प्रजाकी दोलत इस नामके ग्रंथमें लिखता मांस खाने विगर अनाज घी दूध और दुसरी वनस्पतीसें शारीरक और मानसिक और बहोत ही अछी तन दुरस्ती अदमीयोंमें पैदा हो सकती है इसतरे और भी स डाकटर विद्वान वनस्पतीके खुराककों पसन कर रहे हैं ॥१०॥ वैद्यक विचार धर्म बहोत दूर जे संबंध रखता है अगर धर्म शास्त्रका सारांश विचारके देखे तो मांस सकत मनाई जैनोके सूत्र सिद्धांतमें है अहिंसा परमोधर्मः ये सबोंके सम्मत है ...ते पुराण, बाइबल, कुरान, अवस्ता, लेकिन् इन २ ग्रंथोमें प्रवृत्ति भी म

उडद	२४॥।	१।	५८॥	३	१२॥
तूर	२२	१	६२	३	१०
मटर	२२	२	५३	२	१५
मसूर	२५	१।	६०	२	११॥।
जव	१३	२	६८	२	१५
मकी	१०	६॥।	६४॥	१॥	१३॥
कुलथी	२३।	२॥	५९।	३।	१२
आलू	१॥	१०	२३॥	१	७४
कोबीज	-।	-॥	५॥	-॥।	९१
गाजर	-॥	-।	८॥	-॥।	९०
कर्मिश्री	०	०	९६॥	-॥	३
दूध	४	३॥।	५	-॥	८६॥।
मख्कण	-।	९१	०	२॥।	६
घी	-।	१००	०	०	०

रसायण शास्त्री विद्वानोंने रसायणिक प्रयोगोसें जुदा २ भाग छांट कर वस्तुवोंका ऊपर लिखे मुजब तत्व सोधके निकाला है इसके प्रताप सब लोक तत्वोके जाणकार इस पदार्थोंसे भया है इय सोध यूरोपी विद्वानोका है हमकूं प्राचीन शास्त्रोमें ऐसी तपसील मिली नहीं अगर भंडारोंमें बंध होगा तो होगा बाकी तो मतांतरोके द्वेपियोंने जलादिये पाणीमें गलादिये वर्त्तमान सोधकोंका उपकार कबूल कर इस ग्रंथमें दाखिल किया है ॥ गुण मुजब खुराककी दो जात है पुष्टिकारक, और गरमी देणेवाला २ जो शरीरमेंके खिरे परमाणुवोंकों भरती करे सो तो पुष्टिकारक और शरीरके गरमीकूं कायम रखे सो गरमी दाता खुराक, पुष्टिकारक खुराककी चीजों बहोत है लेकिन् हरेकके अंदरका पौष्टिक तत्वोंका गुण एक दुसरेसें मिलता है पौष्टिक खुराकमें नाइट्रोजनका तत्व जादा है और गरमी देणेवालेमें कारबोनका तत्व जादा है ऐसा जुदे २ करणे वालेने निश्चय किया है गरम खुराकसे मोसम पलटणे पर भी शरीरकी गरमी बराबर रहती है जिंदगीके मिलते सब काम गरमी बिगरचल नहीं सकते बाहरकी हवामे चाहे जितनाफेर होय लेकिन गरमी देणेवाली खुराकसें शररकी गरमी एक हालतसें रहती है जिस जगे ठंड बहोत पाणीका बरफ जम जाता है पारेकी घडीमें पारा ३२ डिग्रीसेंभी नीचे जाता है और गरम देशोंमें जहां पारा १२५ डिग्रीसेभी उंचा चढता है उहांभी बदनकी गरमी तो ९० सें सो १०० डिग्री हमेसां रहती है जो खुराक शरीरकी अंदर गरमीकूं जगे परकायम रखती है उस खुराकमें मुख्य दोय तत्व है १ कारबोन और २ हाइड्रोजन और ये दोय तत्व प्राण वायूके संग रसायण संयोगसें जब मिलता है तब गरमी पैदा होती है ये संयोग हर वखत होते रहता है जब किसी रोगके कारण फेरफार होता है

हरेकका कितना वजन शरीरके पोषण वास्ते हमेस जरूरीका है शरीर रचना टेव
मावरा) प्रकृती याने तासीर देशकी हवा पाणी तैसें ही ऊमर मुजब जादा कौ
खुराक लेनेमें आता है तो भी विचले दरजे कोनसा २ खुराक कितने २ वजनसें ल
चहिये उसका प्रमाण नीचे मुजब ॥

१ पोष्टिक तत्ववाला खुराक हमेस	१० रु भर.
२ चरवीवाला खुराक	८ रु भर.
३ आटेका सत्ववाला खुराक	३० रु भर.
४ खार	४ रु भर.
५ पाणी	१५० रु भर.

ऊपर लिखा है के पाणी और प्रवाही तत्व चरवीवाले पदार्थकूं टालके और
तरेके पदार्थोंमें रहा भया है ऊपरके कोठेमें पहिले चार प्रकारका खुराकका जो प्रम
लिखा है उसमें प्रवाही तत्व वाद करके लिखा है जो इन चारों प्रकारके पदार्थोंमें प्र
वाही तत्व साथ गिणे तो लगभग दुगुणा प्रमाण आवे मतलब ऊपर (५२) रुपि
भर चारों लिखा है मध्यम प्रमाणसें उसके वदले संग १०० रुपिया भर खुराक
अदमीकों जरूरत है और जल १५० रुपिये भर अलग गिणना चहिये ॥

खुराककी मुख्य चीजोंमें ऊपर लिखा पांच
तत्वोंके प्रमाणका यंत्र ॥

खुराकके मुख्य २ वस्तुओंमें पौष्टिक तत्व (नाइट्रोजन) चरवी आटेका सत्व (
रवीवाले और आटेके सत्ववाले पदार्थमें कारवोन बहोत है खार और पाणी ये हो
वस्तुओंमें १०० सइकडे कितना भाग है सो नीचेके कोठेसे मालम होजायगा क
मछीयोंका तथा इंडोंका भाग आर्य वैद्यक ग्रंथनें लिखणा परसन नहीं किया यह दे
रमाईतोंका वैद्यक ग्रंथ है आगे जो डाकदरी दवा हम लिखेंगें सो तो वणी भई त
और लोक अजाण पने आपत्काले मर्यादा नास्ति इसवास्ते वर्तमान प्रवाह है
तीयों नही लिखता है के तुम निश्चे वो हीलो ॥

खुराककी चीज	नाइट्रोजनका पौष्टिकतत्व	चरवीका तत्व	स्टार्च याने आटेका तत्व	क्षारका तत्व	पाणीका प्रवाही तत्व
चवल	५	-॥।	८३।	-॥	१०
राणा	०	०	८२	०	१८
	१४॥	१	६९	१॥	१४
	१२॥	४	७०	१॥	१२
	१०	४॥	७१।	२॥	११॥।
	२२	३	६२	२	

उद्द	२४॥।	१।	५८॥	३	१२॥
तूर	२२	१	६२	३	१०
मटर	२२	२	५३	२	१५
मसूर	२५	१।	६०	२	११॥।
[illegible]	१३	२	६८	२	१५
[illegible]	१०	६॥।	६४॥	१॥	१३॥
[illegible]	२३।	२॥	५९।	३।	१२
[illegible]	१॥	१०	२३॥	१	७४
[illegible]	-।	-॥	५॥	-॥।	९१
[illegible]	-॥	-।	८॥	-॥।	९०
[illegible]	०	०	९६॥	-॥	३
[illegible]	४	३॥।	५	-॥	८६॥।
[illegible]	-।	९९	०	२॥।	६
	-।	१००	०	०	०

... शास्त्री विद्वानोंने रसायणिक प्रयोगोसें जुदा २ भाग छांट कर वस्तुओंका [illegible] मुजब तत्व सोधके निकाला है इसके प्रताप सब लोक तत्वोके जाणकार इस [illegible] भया है इय सोध यूरोपी विद्वानोका है हमकूं प्राचीन शास्त्रोमें ऐसी तपसील नहीं अगर भंडारोमें ग्रंथ होगा तो होगा बाकी तो मतांतरोके द्वेपियोंने जलादिये [illegible] गलादिये वर्त्तमान सोधकोंका उपकार कबूल कर इस ग्रंथमें दाखिल किया है ॥ [illegible] खुराककी दो जात है पुष्टिकारक, और गरमी देणेवाला २ जो शरीरमेंके [illegible] भरती करे सो तो पुष्टिकारक और शरीरके गरमीकूं कायम रखे सो दाता खुराक, पुष्टिकारक खुराककी चीजों बहोत है लेकिन् हरेकके अंदरका पौष्टिक [illegible] गुण एक दुसरेसें मिलता है पौष्टिक खुराकमें नाइट्रोजनका तत्व जादा है और [illegible] देणेवालेमें कारबोनका तत्व जादा है ऐसा जुदे २ करणे वालोने निश्चय किया है [illegible] खुराकसे मोसम पलटणे पर भी शरीरकी गरमी बराबर रहती है जिंदगीके [illegible] सब काम गरमी विगरचल नहीं सकते बाहरकी हवामें चाहे जितनाफेर [illegible] लेकिन गरमी देणेवाली खुराकसें शरकी गरमी एक हालतसें रहती है जिस जगे ठंड [illegible] पाणीका बरफ जम जाता है पारेकी घडीमें पारा ३२ डिग्रीसेंभी नीचे जाता है [illegible] गरम देशोंमें जहां पारा १२५ डिग्रीसेभी उंचा चढता है उहांभी बदनकी गरमी ९० सें सो १०० डिग्री हमेसां रहती है जो खुराक शरीरकी अंदर गरमीकूं जगे [illegible] रखती है उस खुराकमें मुख्य दोय तत्व है १ कारबोन और २ हाइड्रोजन [illegible] तत्व प्राण वायूके संग रसायण संयोगसें जब मिलता है तब गरमी पैदा [illegible]संयोग हर वखत होते रहता है जब किसी रोगके कारण फेरफार होता है

हरेकका कितना वजन शरीरके पोषण वास्ते हमेस जरूरीका है शरीर रचना टेव (याने मावरा) प्रकृती याने तासीर देशकी हवा पाणी तैसें ही ऊमर मुजब जादा और कम खुराक लेनेमें आता है तो भी विचले दरजे कोनसा २ खुराक कितने २ वजनमें लेना चहिये उसका प्रमाण नीचे मुजब ॥

१ पोष्टिक तत्ववाला खुराक हमेस	१० रु भर.
२ चरबीवाला खुराक	८ रु भर.
३ आटेका सत्ववाला खुराक	३० रु भर.
४ खार	४ रु भर.
५ पाणी	१५० रु भर.

ऊपर लिखा है के पाणी और प्रवाही तत्व चरबीवाले पदार्थकूं टालके और सब तरेके पदार्थोंमें रहा भया है ऊपरके कोठेमें पहिले चार प्रकारका खुराकका जो प्रमाण लिखा है उसमें प्रवाही तत्व बाद करके लिखा है जो इन चारों प्रकारके पदार्थोंकों प्रवाही तत्व साथ गिणे तो लगभग दुगुणा प्रमाण आवे मतलब ऊपर (५२) रुपिया भर चारों लिखा है मध्यम प्रमाणसें उसके बदले संग १०० रुपिया भर खुराककी हरेक अदमीकों जरूरत है और जल १५० रुपिये भर अलग गिणना चहिये ॥

खुराककी मुख्य चीजोंमें ऊपर लिखा पांच तत्वोंके प्रमाणका यंत्र ॥

खुराकके मुख्य २ वस्तुओंमें पौष्टिक तत्व (नाइट्रोजन) चरबी आटेका सत्व (चरबीवाले और आटेके सत्ववाले पदार्थमें कारबोन बहोत है खार और पाणी ये हरेक वस्तुओंमें १०० सइकडे कितना भाग है सो नीचेके कोठेसे मालम होजायगा मांस मछीयोंका तथा इंडोंका भाग आर्य वैद्यक ग्रंथनें लिखणा परसन नहीं किया यह तो परमार्हतोंका वैद्यक ग्रंथ है आगे जो डाकदरी दवा हम लिखेंगें सो तो वणी भई तइयार है और लोक अजाण पने आपत्काले मर्यादा नास्ति इसवास्ते वर्त्तमान प्रवाह है ग्रंथ कर्त्तायों नहीं लिखता है के तुम निश्चे वो हीलो ॥

खुराककी चीज	नाइट्रोजनका पौष्टिकतत्व	चरबीका तत्व	स्टार्च याने आटेका तत्व	क्षारका तत्व	पाणीका प्रवाही तत्व
चावल	५	-।।।	८३।	-।।	१०
साबूदाणा	०	०	८२	०	१८
गहूं	१४।।	१	६९	१।।	१४
ज्वार	१२।।	४	७०	१।।	१२
बाजरी	१०	४।।	७१।	२।।	११।।।
चिना	२२	३	६२	२	११

उडद	२४॥।	१।	५८॥	३	१२॥
तूर	२२	१	६२	३	१०
मटर	२२	२	५३	२	१५
मसूर	२५	१।	६०	२	११॥।
जव	१३	२	६८	२	१५
मकी	१०	६॥।	६४॥	१॥	१३॥
कुलथी	२३।	२॥	५९।	३।	१२
[illegible]ालू	१॥	१०	२३॥	१	७४
[illegible]ोचीज	-।	-॥	५॥	-॥।	९१
[illegible]ाजर	-॥	-।	८॥	-॥।	९०
[illegible]रमिश्री	०	०	९६॥	-॥	३
[illegible]ध	४	३॥।	५	-॥	८६॥।
[illegible]रस्कण	-।	९१	०	२॥।	६
[illegible]ी	-।	१००	०	०	०

रसायण शास्त्री विद्वानोंने रसायणिक प्रयोगोंसें जुदा २ भाग छांट कर वस्तुओंका पर लिखे मुजब तत्व सोधके निकाला है इसके प्रताप सब लोक तत्वोंके जानकार इस [illegible]योंसे भया है इय सोध यूरोपी विद्वानोका है इनकूं प्राचीन शास्त्रोमें ऐसी तफसील [illegible]टी नहीं अगर भंडारोंमें बंध होगा तो होगा बाकी तो मतांतरोंके द्वेषियोंने जलादिये [illegible]णीमें गलादिये वर्त्तमान सोधकोंका उपकार कबूल कर इस ग्रंथमें दाखिल किया है ॥ [illegible]ग मुजब खुराककी दो जात है पुष्टिकारक, और गरमी देणवाला २ जो शरीरमेंके [illegible]रें परमाणुओंकों भरती करे सो तो पुष्टिकारक और शरीरके गरमीकूं कायम रखे सो [illegible]रमी दाता खुराक, पुष्टिकारक खुराककी चीजों बहोत है लेकिन् दोनकें अंदरका पौष्टिक [illegible]त्वोंका गुण एक दुसरेसें मिलता है पौष्टिक खुराकमें नाइट्रोजनका तत्व जादा है और [illegible]रमी देणवालेमें कारबोनका तत्व जादा है ऐसा जुदे २ करणे वालोंने निश्चय किया है [illegible]रम खुराकसे मोसम पलटणे पर भी शरीरकी गरमी बराबर रहती है [illegible] [illegible]लते सब काम गरमी विगरचल नहीं सकते बाहरकी हवाने चाहे जितना[illegible] [illegible]य लेकिन गरमी देणेवाली खुराकसें शररकी गरमी एक हालतमें रहती है जिस जगे टट [illegible]होत पाणीका बरफ जम जाता है पारेकी घडीमें पारा ३२ डिग्रीसेंभी नीचे जाता है [illegible]ार गरम देशोंमें जहां पारा १२५ डिग्रीसेभी उंचा चढता है उहांभी बदनकी गरमी [illegible] ९० सें सो १०० डिग्री हमेसां रहती है जो खुराक शरीरके अंदर गरमीकूं [illegible] [illegible]रसायण रखती है उस खुराकमें मुख्य दोय तत्व है १ कारबोन और २ हाइड्रोजन [illegible]ार ये दोय तत्व प्राण वायूके संग रसायण संयोगसें [illegible] मिलता है [illegible] [illegible] है ये संयोग हर वखत होते रहता है जब किसी रोगके कारण [illegible] है

चेकणा ठंडा कोमल तथा हलका लूखा गरम और तेज पहिले चार तरेका खुराकशीत
वीर्य है इसवास्ते चंद्रमाका गुण है पिछला चार तरेका खुराक उष्णवीर्य है इसवास्ते
सूर्यका गुण है रसके भेदसें आहारके छव भेदभी है मधुर (मीठा) अम्ल
(खट्टा) लवण (खारा) कटुक तिक्त (कडवा) और कषायला प्रभावसें आहारका
तीन भेद है पथ्य. पथ्यापथ्य. कुपथ्य. पथ्य तो सुखकारी, पथ्यापथ्य हित अहित दोनूंका
करणेवाला कुपथ्य बिलकुल नुकसान करणेवाला इन तीनोंका विस्तार लिखेंगें खानपानके
पदार्थोका ऐसे सुक्ष्म भेद बहोत है तोभी सामान्य तरे समझ सके इसवास्ते वांचणेवा-
लोंकों छवरस और पथ्यापथ्यकी जाणनेकी जरूरी है, अपणे शरीरके पोपणवास्ते मुख्य
खुराकमें छवरस है पृथ्वी पाणीके गुणकी अधिकतासें मीठा रस पैदा होता है पृथ्वी
तथा अग्निके गुणकी अधिकतासें खट्टा रस पैदा होता है, पाणी तथा अग्निके गुणकी अधिक-
तासें खारा रस पैदा होता है, वायु तथा अग्निकेगुणकी अधिकतासे तीखा रस पैदा होता
है वायु तथा आकाशके गुणकी अधिकतासे कडवा रस पैदा होता है, पृथ्वी तथा वायुके
गुणकी अधिकतासें कषायला रस पैदा होता है.

इन (छ व) रसोमें.

मीठा खट्टा खारा ये तीन रस वायु नासक है, कषायला रस वायुके जैसा गुण लक्षणवाला है,
मीठा कडवा कषायला तीनो पित्त नासक है, तीखारस पित्तके जैसा गुणलक्षणवाला है.
तीखा कडवा कषायला कफनाशक है, मीठा रस कफके जैसा गुण लक्षणवाला है.

मीठा रस खून. मांस. मेद. हाड. मींजी. ओज. वीर्य. स्तनका दूध वधाता है, आंखोकों
हितकर थाल, और रंगकूं साफ करता है, बल वधानेवाला तूटे हाडोंकों सांधनेवाला बुड्ढे-
कों जखमसें क्षीणकों हितकारी हैं. प्यास मूर्छा दाहकूं मिटाता है सब इंद्रियोंकों प्रसन्न
करता कृमि तथा कफकूं वधानेवाला बहोत खानेसें खासी श्वास अलसक के (उर्दि)भूंमीठा
गलेका बिगाड. कृमिरोग. कंठमाल. अर्बुद. श्लीपद. वस्ति. पेडूका रोग. मधुप्रमेह
वगेरे पेसाबका रोग अभिस्यंद वगेरे रोग पैदा करता है, १ खट्टारस आहार वातादिक
दोष सोजा तथा आमकूं पचावे. वादीका नाश करे. वायु मल तथा मूत्रकूं सुलास करे
पेटमें अग्नि करे. लेपकरनेसें ठंडक करे. हृदयकूं हितकारी. बहोत खानेसें दांतखट्टे. अंधी
वे नेत्र बंध हो जाय. रूखडे होय, कफका नाश होय शरीर ढीला हो जाय कंठ छाती
हृदयमें दाह होय २ खारा रस मल शुद्ध करे खराब व्रण फोडोंकूं साफ करे. गलाहवे मृग-
कफकूं पचावे. शरीरकूं ढीला करे गरमी करे अवयवोंकूं नरम करे. बहोत खानेमें गुमडी
फोट. सोजा. थोथर हो जाय चमडीका रंग बिगडे. मरदमीका नाश होय. आंखोका और
इंद्रियोका व्यापार कम हो जाय. मूंपक जावे. आंख दूखे. रक्त पित्त. वातरक्त. खर्ज
वगेरे दुष्ट रोग पैदा होता है. ३ तीखा रस अग्नि दीपक. पाचन. मल मूत्रका शोधन व
शरीरका जाडापणा. आलस. कफ. कृमि. जहरसें पैदा होनेवाले रोग और गुमडी ॰

रोगोंकूं मिटावे सांधोंकोंढीला करे. उत्साह कम करे. स्तनका दूध वीर्य तथा मेदका नाश करे, वहोत खानेसें भ्रम. मद गलेमें तालवेमें होठमें सूकापणा शरीरमें गरमी ताकतका नाश कंप पीडा वगेरे रोग पैदा करे, हाथ पांव तथा पीठमे वादी करके शूल पैदा करे ४ कडवा रस खुजली. खाज. पित्त. प्यास. मूर्छा. बुखार वगेरेकों शांत करे. स्तनके दूधको साफ करे, मल मूत्र मेंद चरवी पीप वगेरेकूं सुकाय डाले वहोत खानेसें गरदनकी नसें जकडा देवे. नसां खिंचने लग जावै. वदनमें दरद होय. भ्रम होय. शरीर तूटे. सरणें जैसे कटता होय ऐसा मालमदे. भूखमें मीठापनी कम होजाय. ५ कपायलारस दस्तकूं रोके शरीरके अवयवोंकों मजबूत करे, व्रण. तथा प्रमेहको. शुद्ध करे. व्रण वगेरेमें घुसके उसके दोषोंकों निकलता है, क्वेदयाने, गारे जैसा पदार्थ पीप पकावका सोधन करे, वहोत खानेसें हृदयमें दरद होय. मूं सूके. पेटमें आफरा नसे जकड जाती है शरीर फुरकता है कांपनें होय तथा शरीर संकुडाता है ६ खानेके पदार्थोंमें अपने अदमी छउं रस खाता है कषायला और कडवा रस खानेमें जादा जाहरा देखनेमें नहीं आता तो भी कितनेक पदार्थोंमें ये रस गुप्तपनें रहे भये हैं वाकीके चार रस तो खानेमें जाहरा दिखता है जादा ये रसोंके खानेसें वहोत नुकशान है सो ऊपर लिखा ही है मीठा रस जादा उपयोगी है तो भी हद उपरांत खानेसें वहोत नुकशान करता है ॥

॥ उजाला २ धान्य वर्ग ॥

चावल, गुण मीठा, अग्निदीपक, वलवर्द्धक, कांतिकर, धातुवर्द्धक, त्रिदोपहर, और मूत्र वर्द्धक, विचार, चावलोंकी वहोत जाति है. सामान्यतरे कमोद चावल अछे होते है. सबसे साठी चावल पथ्य है, लेकिन वो लाल और मोटा होता है, इस वास्ते लोक खाते नहीं है सोखीनलोक तो महींन और लंबे खसबोदारकों परसन करते है, मुलकोंकी भांत वधिया चावलोंका नाम अलग, २ हे, चावलोंमें चिकणास (याने) चरवी थोडी है. उससे जलदी पचता है और हलका है वालकोंको वैमारोकों इसीवास्ते अनुकूल आते हैं सावू दाणे चावलकी जात नहीं है लेकिन गुणमें वो चावलोंसें हलका है इसवास्ते वचोंकूं और वैमारोंकों खिलाया जाता है. डाकटर या मारवाडी लोक चावल खाणेसे संका करते उसका कारण ऐसा मालम देता है. के लोक चावलोंको वरावर सिजाते नहीं जादा आंच देकर जल्दी उतारा भया वरावर मीजता नहीं, तैसें दाल होनेवाले सब अनाज (बगैरे) उपालकरके लोक खाते हैं. लेकिन. उनोंकों मंद आंचपर वहोत देरतक चुलेपर रखके अछी तरे मीजते हैं पूरे सीझणेकी परिक्षा इसतरेसे हैं थालीमें डालनेसें ठण २ अवाज करे. फूल जेसे हलके हो जाय. हाथमें मसलनेसें मक्खन जैसा मुलायम होय चपटीमें दबाते चावलोंमें जितना जोर लगे उतनांही कचा समझणा. लोक चावलोंकों वायु कर्ता कहते हैं. सो ऐसा वायु करता नहीं है. कितनेक सस्ते दामोके चावल थोडा वादी करते हैं सब नहीं. वादी तो भिजानेकी वे शुद्धीसें वायु करते हैं. ऐसा मालम देता है. चावल

र उपरांत पुराणे होना भातके संग दाल घी मिलणेसें वायु कम हो जाती है निमक
होना दाल चावल अलग २ रांधनेसें फेर मिलाकर खानेसें जलदी पचता है सामल
नेसें खीचडी होती है वो पचनेमें जरा भारी है खीचडी मूंग तूर वगेरेंकी होती है
हूंका गुण) पुष्टिकर धातुवर्द्धक बलवर्द्धक मीठा ठंडा भारी रुचिकर तूटीहड्डीकूं सांधने-
त्र भ्रणकूं मिटानेवाला दस्तकूं साफ लानेवाला (विचार) गहूंकी मुख्य दोय जात है
त्र और वाजिया (सुपेद और लाल) सुपेदसें लाल जादा पुष्टिकारक है गहूंमें पुष्टिका
ां गरमीका तत्व रहा भया है इसवास्ते दुसरे अनाजोंसें ये विशेष उपयोगी और उ-
म पोषणकी वस्तु है गहूंमें खार तथा चरबीका भाग बहोत थोडा है इसवास्ते लोक
मिक दाल फेर रोटी वगेरे बनाते है द्रव्यानुसार घी मक्खन और मलाई वगेरेके संग
ाना। जादा फायदेवंद है गहूंका मैदा पचनेमें भारी इसवास्ते मंदाग्निवालेनें मैदेकी
ोरी पुडी खानी नहीं मकसुदावादी ओसवालोंके इहां नित्य खुराक मैदा है इसवास्ते
नेत बदाण दालमें अमचूर बहोत डालते है दोनों खुराक निर्बलताका हेतु है फकत
द्द्र विदामकी कतलीसें जिंदगानीका आधारउन लोकोंका है गहूंके आटेसें बहोत पदार्थ
बनते है गहूंकी राब पचनेमें हलकी है जिसकूं पटोलिया कहते हैं उससे रोटी भारी
पर पींठ पूडी हलवा लड्डू मगध गुलपपडी वगेरे अनुक्रमें पचनेमें एकएकसें भारी है गहू
थींके संग खानेमें बादी नहीं करता (बाजरीका) गुण गरम लूखी पुष्ट हृदयकूं हितकारक
स्त्रियोंमें कामकूं बढानेवाला पचनेमें भारी और वीर्यकूं नुकशान करता (विचार) बाजरी
गरम है इसवास्ते पित्तकूं खराब करती है इसवास्ते बने जहांतक पित्त प्रकृतीवालेकूं
पचणा बहा है रूखी होनेसें वायू करती है जिन २ मुलकोंमें बाजरीकी पैदास जादा
है और अनाज कम पकता है तब उहांके लोकोंकों नित्यके मावरेसें बाजरी पथ्य हो
जाती है जैसें बीकानेर जिलेमें बाजरीका खतक है मोठ बाजरी और तरबूज (कालिंगा)
इस बर्तान जैसा और कहांइ भी नहीं होता पोषणका तत्व गहूंके लगभग बाजरीमें है
लेकिन गहूंमें चर्बीका तत्व जादा है इसवास्ते घी बिगरभी नुकशान नहीं करती है
(ज्वारका गुण) टेडी मीठी हलकी लुखी पुष्ट (विचार) ज्वारमें बाजरी जेसाही पोषणका
तत्व है चर्बी भी बाजरी जितनी ही है ज्वार करडी और लुखी है इसवास्ते वायु करती है
लेकिन निरंके कन्यासी मरेठे कुणबी गुजरात काठियावाड वगेरेके गरीब लोक विशेष
ज्वार और तूरकी दालमें काम चलाते हैं (मूंगका गुण) ठंडा ग्राही हलका स्वादिष्ट
कफकूं मिटानेवाला आंखोंकों हितकर कुछ वायु करता है(विचार)दालोंकी जातें
हैं बाकेर ब्राह्मण उपासक दशा सूत्रमें मुंगकूं श्रेष्ठ दाल समझके मोकला रखा है
धानें छाशी दाल तथा ओसामण किनंनक दरजे दूधकी गरज सारता है
विकार जसमें जहां दूधकी मनाई है उसमेंभी मुंगकी दालका पाणी हितकारी

दिनोके उपवासके पारणेमें भी यही पाणी हितकर है सामित मुंग वायु करता है इसे
दालकूं जरा कोरी तवेपर सेककर भीजाकर उसकी दाल या बोगागन पूप दयन देवे
तथा किसी भी बेमारीमें वायु नहीं करतादे मुंगकी बहोत जात है उनमें हरे मुंग गुण
हे (तुंबरका गुण) मीठी तुरी भारी रुचिकर आदी ठंडी त्रिदोष दर होकर कुछ वायु क
हे(विचार)खून विकार मरसा(अर्स)बुखार और गोलेके रोगमें फायदा करता है दखन मे
पूरवधरामें इसकी दाल मुख्य हे उहां इसकी पैदास है चावल तूरकी दाल और
मिलाके खानेसें वायू नहीं करती गुजरातवाले इस दालमें कोकम अंबटी वगेरेकी ख
कोइयक दही और गरम मसाला देते हैं इससें वायटी नही होती दालकी वस्तुमें द
छाछ कचा मिलानेसें दो इंद्रीवाले जीव थूकके स्पर्शसें पैदास होते हैं इसवास्ते बन्द
है अभक्ष चीज रोग कर्त्ता होती है इसवास्ते कडी राइता वगेरे द्विदलके बनाना हो
तो पहली गोरसमें बाफ निकले ऐसा गरम कर फेर बेसण वगेरे द्विदल मिलाना ऐ
नहीं कर्त्ता दही खीचडी इस मुजब ही खाना बे समझ लोक गोरस खीचडा खाते
गोरस गरम किये विगर,सो, बडा नुकशान कर्त्ता है, बावीस बडे अभक्ष जैनाचार्योंने रो
होनेके कारण मना किये हैं,देखो अतीचार सूत्र (उडदके गुण) बडापुष्ट वीर्य वधानेवाल
मीठा तृप्तिकारक पेसाब लानेवाला मलकूं जुदा करनेवाला स्तनमें दुध वधानेवाला मे
मेदेकी वृद्धि करता ताकत देनेवाला वायुकूं तोडनेवाला पित्त कफकूं वधानेवाला (विचार
श्वास बकेला अर्दितवायु जिससें मुं टेढा पडजाय और भी केइयक वायू रोगमें उड
पथ्य है ठंडकालेमें तथावादीकी तासीरवालेकूं फायदेवंद है पचेबाद उडद गरम औ
खट्टा रस पैदा करता है इसवास्ते पित्त तथा कफकी प्रकृतीवालेकूं तथा इन दोनों
रोगीकूं नुकशान करता है दिल्लीकी चोतरफ पंजाबतक इसकी दाल हमेसां खाते है का
ठियावाडवाले इसके लड्डू पुष्टिके वास्ते बहोत खाते है (चणेका गुण) हलका ठंडा लूखा
तुरा रुचिकर रंग सुधारक ताकतवर (विचार) कफ तथा पित्तके रोगमें फायदे बंद कुछ
ज्वरकूं भी मिटाता है लेकिन् वादी कर्त्ता कबजी करता अथवा जादा दस्त लगावे गु
राकमें चिणेकी बहोत चीजें बणती है साबूत आटा और दाल तीनोंतरे काम देता है
मोतीचूरका ताजा लड्डू पित्तीके रोगकूं जलदी मिटाता है गुजरातवाले तेलके संयोगमें
चने वापरते है चणेमें चरबीका भाग कम है इसवास्ते इसमें घी तेल वगैरे जादा डा
लना तासीर मुजब उन मान माफक खानेसें नुकशान नहीं करता घी कम होनेसें इसके
पदार्थ सब नुकशान करते हैं (मोठका गुण) रुचिकर पुष्टिकारक मीठा लुक्खा ग्राही बल
वर्धक हलका कफ तथा पित्तकूं मिटानेवाला और वायू करता है रक्तपित्तमें पथ्य है
दाहमें कृमिरोगमें उन्मादरोगमें पथ्य है. (चवलोंका गुण) मीठा तुरा भारी दस्त
लुक्खा वायुकर्त्ता रुचिकर स्तनमें दूध वधानेवाला वीर्यकूं बिगाडनेवाला गरम

है(विचार)वहोतवायु कर्त्ता है इसवास्ते इस चीजकूं जादे खाना नहीं जैन ग्रंथोंमें लिखा हे महाकंजूस मम्मण शेठ अडबों सोनइयोंका मालक तैलके छमके चवला खातां था और वेटे वहुओंकों खिलाता था खानेमें मीठा पचे वाद खटा रस पैदा करता है ताकतवर है लेकिन् लूखा और भारी है इसवास्ते पेटमें घोशा कर वायू करता है गरम दाहकारी वदनकूं सुकाता है वीर्य नास कर्त्ता है चवला शरीरके जहरका नाश करता है लेकिन् आंखोंके तेजका भी नाश करता है(मटरका)गुण रुचिकर मधुर पुष्टिकर लुखा ग्राही ताकत वढानेवाला हलका पित्त कफकूं मिटानेवाला और वायु करता है निघंटुराजमें जो जो गुण अवगुण हेमाचार्यने लिखा है उसमेंके गुणापगुण विशेषपणे वणानेकी कियामें रहता ही है यह तो सामान्यवात है वाकी संस्कारके फेरफारसें गुणोंमें फेरफार भी होता है(दाखला)पुराणे चावलोके रांधे भये भात हलका है लेकिन् उसके चुरमुरे पवा वहोत भारी है फेर खीचडी भारी कफ पित्तकूं पैदा करनेवाली मुसकिलसें पचे बुद्धिकूं अडचल करनेवाली दस्त पैसावकूं वधानेवाली फेर थोडे जलमें पकाया भात जलदी पचता नहीं चावलोंकों अछीतरे धोकर पांचगुणे पाणीमें खूब सिजाय गरमहीकूं ओसाय डालणा ऐसा भात हलका और गुणकारी खीचडीकूं मंद २ आंचमें वहोत देरतक पकाणा तब फायदेमंद होती है चणे चवले मोठ वगेरे वायडे हैं फेर कितनेक अनाज पचनेमें खराब होते हैं तो भी घीके संग खानेसें पचता है और वादी कम करता है बीकानेर फलोधीवाले जैसे ज्वारका खीचड और वहोत घी आखातीजकूं खाकर ऊपरसें अमलीका सरवत पीते हैं ग्रीष्म ऋतुमें और तासीर देस मुजब पचजाता है. ऋषभ देवजीने तो सांठे ऊखका रस इस दिन पीया था श्रेयांस पड पोतेने वर्षभरके भूखेकों सुपात्र दान दिया अखय सुख उपार्जन किया इसवास्ते अक्षयतृतीया नाम भया॥

॥ उजाला ३ शाक वर्ग ॥

नित्य खान पानमें शाक तरकारी वहोत कम उपयोगी है समस्त शाग दस्तकूं रोकनेवाले पचनेमें भारी लूखा वहोत मलकूं पैदा करनेवाला और पवनकूं वधानेवाला शरीरके हाडोंकों भेदनेवाला आंखके तेजकूं कम करता शरीरका रंग खून तथा कांतिकों घटानेवाला बुद्धिका क्षय करनेवाला वालोंकों सुपेद करनेवाला यादशक्ति और गतिकूं कम करता है सब सागोमें रोग रहता है वो रोग शरीरका नाश कर्त्ता है इसवास्ते विवेकी लोकोंकूं साग नहीं खाना जैन सूत्रकार शरीर रक्षणकूं ही ऐसा वर्ताव वताया है रोगादिकारणमें जतना लिखना है इस मुजब ही चरकादिकोंका मत है जो दोष गरिष्ट पदार्थोंमें है उसके मिलते वहोत दोष सागोंमें है यह तो सामान्य अभिप्राय है पश्चिमके पंडितोंने एसा भी निश्चय किया है के ताजा फल साग तरकारी बिलकुल नहीं खानेसे स्वर्वी पाने रक्त पित्तका रोग होता है शाक फलादि उत्तम होता मारक सर .

योग करना ऐसा वो लोक कहते हैं एक तरफसें ताजे साग फलोंमें बहोत कम तो फायदा
दुसरे तरफ अपणे बजारमें बिकने साग फल वगेरेकी दशा उसके बेदरकारी बातसें
होता गया बेहद नुकसान इन दोनों बातोंका मुकाबला करणेपर आखिर बहोती कटनाई
ही चलणा हददरजे हितकारीपणा ठहरता है हरी चीजोंका बहोत सावचेतकि साथ
पणे जहांतक थोडाही बरताव करणा बुद्धिमानोंका काम है सामान्य अभिप्राय सब
वैधक ग्रंथोका एसा है तोभी अपणे लोकोमें साग तरकारीका बेहद बरताव देखनें
आता है जिसमें भी गुजराती भाटिये वैष्णव शैव संप्रदाई तथा जिन्माके लोटणी, धर्म
सुधारणेमें अज्ञानजो जैन इसवास्ते इन सबोकों अंकुसरूप शाग तरकारीका गुण दोष कहा
लिखताहूं जिस वनस्पतीमें ताकत देणेवाला तथा गरमी देणेवाला भाग थोडा होय
पाणीका भाग जादा होय इस तरेकी ताजी वनस्पती थोडी खाणी, येसिद्धांत है पान
फूल फल कंद वगेरे शागकी कितनीक तरा हैं ये अनुक्रमसें एकके पीछे एक जादा भारी
है पानोका साग सबसें हलका है कंदका साग सबसें भारी है जो की जैन पन्नवणा सूत्र
में बत्तीस अनंत काय लिखी है वो महाभरिष्ट रोगकर्त्ता कष्टसें पचता है चंदलिया
(चौलाई) । हलका ठंडा रूखा मलमूत्रकूं उतारणेवाला रुचिकर्त्ता अग्निकूं दीपन करता
जहरकूं हरणेवाला पित्त कफ तथा खूनके बिगाडकूं मिटाणेवाला सब रोगोंमें प्राय चंद
लिया सर्वोंकी प्रकृतिमें पथ्य है वो जैसें सागमें पथ्य है तेसें स्त्रीके प्रदरमें इसकी जड
बालकके दस्तकबजीमे उकाले भये पत्ते तथा जड कोढ वातरक्त खून बिगाड रक्तपित्त
चमडीके खाजदाद फुनसी वगेरे दरदोमें इसका साग बिना लाल मिरचके खाणेमें आवे
तो दाह खुजली सब मिट जाती है इय ठंडा है तोभी वाय पित्त कफ तीनोंकों शांत
करता है दस्त पेसाब साफ लाता है पेसाबकी गरमीकूं शांत करता है खून शुद्ध करता
है पित्तका बिगाड मिटाता है किसीभी बिगडी दवाकी गरमी अथवा जहर उकालके सं
सहतया मिश्री डाल पीणेसें या साग खाणेसें जहर, दस्त पेसाबके रस्ते निकलजाता है
चंदलियेकुं जैसें जादा बाफा जाय तैसें जादा स्वाद और गुण करता होता है,
रक्तपित्त शीलस त्रिदोष ज्वर कफ खांसी दस्तकी बेमारीमें बहोत फायदेवंद है (पा
अग्निप्रदीपक-पाचक मलशुद्धिकारक रुचिकर तथा उष्ण है सोजा विषदोष हरस गृह
मंदाग्निमें हितकारक है (बथवा) बथवेका साग अथवा चीलका साग पाचक रुचिकर
हलका दस्तकूं साफ लाणेवाला तापतिल्ली खूनबिगाड पित्त हरस कृमि त्रिदोषमें फायदे
वंद है (पत्तागोभी) यह फूल गोभीकी चार जातसें अलग होती है भारी है ग्राही है मधुर
रुचिकर वातादिक तीनों दोषोंमें पथ्य है स्तनकादूध वीर्यकूं वधाणेवाली है (लवेकी
भाजी) तीनों दोषोंकों हरणेवाली बुद्धिकूं हितकारक रुचिकर और सामान्य तोर सब
ोंमें पथ्य(सुणीकी भाजी)गरम तुरी मधुर रुचिकर और पाचक है(सरसूंके पत्ते) त्रिदो

पहर रुचिकर और पाचक है (मेथीके पत्ते) पित्त करता तथा ग्राही है लेकिन् कफ वायु तथा कृमीका नास करता है रुचिकर तथा पाचक है (अरथीके पत्ते) अरथीके पत्तोंका साग रक्तपित्तमें अच्छा है लेकिन् दस्तकूं कबजकर वायुकूं कोपाता है इसमें दस्त मरोडा हो जाता है (मोगरी) तीक्ष्ण तथा उष्ण है लेकिन कफ वायुकी प्रकृतीवालेकूं अच्छी है (गल जीर्मके) पत्ते हलके हैं कोढ प्रमेह खूनविगाड मूत्रकृच्छ्र तथा बुखारकूं फायदे बंद है (मूलीके पत्ते) मूलेके ताजे पान पाचक हलके रुचिकर और गरम मुलेकेपत्तोंकों बीकानेर गुजरात काठियावाडी तेलमें पकाते है सो तीनों दोषमें अच्छा गिणते है लेकिन कचे पत्ते पित्त और कफकूं विगाडते है, जेसलमेरके रावलजीने तो एसा फुरमाया है मूलामूल नखाव जो सुख चाहे जीवरो, कची मूली बहोत रोगोंमें पथ्य भी लिखी है(परवल)हृदयकूं हितकर बलवर्द्धक पाचक उष्ण रुचिकर कामवर्द्धक हलका और चिकणा खासी खून विगाड बुखार त्रिदोष सन्निपात कृमिके दरदोंमें बहोत फायदे बंद है फलोंके सागोंमें सर्वोत्तम साग परवल है,(दुधी) मीठी धातुवर्द्धक पौष्टिक शीतल और रुचिकर है लेकिन पचणेमें भारी कफ करता दस्तकूं बंध करता गर्भकूं सुकाणेवाला दुधीका साग जिसकूं कदु मीठातूंबा लवार्भी कहते हैं इसका सीराभी बणता है (कोला पेठा) इसकी दो जात है एक तो पीला टाल सोतो कोला, जिसका साग होता है दुसरेका पेठा आगराई मुरब्बा बणता है वो सुपेद होता है बहोत मीठा ठंडा रुचिकर तृप्तिकर पुष्टिकारक वीर्यवर्द्धक है भ्रांति और थकेलेकों मिटाता पित्त खूनविगाड दाह वायूकों मिटाता है छोटाकोला ठंडा और पित्तकूं मिटाता है विचलेकदका कोला कफ करता है और बडे कदका कोला बहोत ठंडा नहीं मीठा है खारवाला अग्निदीपक हलका मूत्राशयकूं साफकरता पित्तके रोगोंकों मिटाणेवाला एक कविने कहा है, बेंगन कोमल पथ्य है, कोला कचा जहर है हरडे कची और पकी सदा पथ्य है बेर कचा पका सदा कुपथ्य है, बैंगण वृंताक, बेंगणकी दो जात है काला और सुपेद, काला नींद लाणेवाला है रुचिकारक है भारी तथा पौष्टिक [illegible] दाह तथा चमडीका दरद पैदा करता है सामान्यतरे बेंगण गरम वायुहर [illegible] चक कहलाता है एक दुसरीतरेके गोल काचर नींबू जैसें गोल बेंगण होता है [illegible] कफ तथा वायु प्रकृतीवालेकूं अछा है तैसें खुजली वातरक्त बुखार कामला और अरुचिरोगवालेकूं हितकारी है(घीया तुराई)स्वादिष्ट तथा मीठी है वायु पित्तकूं मिटाती है बुखारके रोगीकूंभी अछी है (तोरी) बायडी हैं ठंडी तथा मीठी है कफ करती है लेकिन पित्त दमा श्वास बुखार कृमि इतने रोगोंमें अछी है (करेला) कडवा गरम रुचिर हलका अग्निदीपक माफक सर खावे तो सब प्रकृतीके अनुकूल है अरुचि कृमि ज्वर में पथ्य है(काकेडा) (कंटोला)हलके अग्निदीपक रुचिकर मधुर पचेवाद तीक्ष्ण है शूल पित्त कफ खास श्वास ज्वर प्रमेह अरुचि कोढ वायु तृषा हृदयके रोगोंमें

(टीडोरा) भारी है ठंडा है पाचक है मोल उलटी करा देवे एसा है स्तनका दूध वधाता
है दस्त कब्ज करता है पित्त रक्तदोष सोजा दाह तथा श्वास रोगमें पथ्य है टींडा
बुद्धिकों बिगाडती है(पंडोला)वातहर पित्तहर ताकतवर रुचिकर शोषणकरता दिनकारक
परवलसें गुणमें कुछ कम है(ककडी)इसकी जात बहोत है जिसमें क्षीरा नांमकी है जिसे
आनंद श्रावकने मोकली रखी है उपाशक दशा सूत्रमें,उसके गुण, कच्ची ठंडी है लूखी है
दस्तकूं रोकती है मीठी है भारी है रुचिकर है पित्त हरता है पकी ककडी अग्नि दाह
पित्तकूं बढाती है मारवाडकी ककडी जिसकूं गुजराती चीभडा कहते हैं ये तीनों दोषोंके
कोपातीहै इसवास्ते खाणे और साग लायक बिलकुल नहीं है(कालिंगा,)मतीरा,तरबूज कफका
रक वायुकारक लोक कहते हैं पित्तवालेकूं अच्छा है मतीरेसें क्षयकी बेमारी पैदा होती है
इसकूं तरबूज भी कहते है जो गरमी मोसममें पैदा होता है, ककडी और मतीरा निश्चै तीनों
दोषोंकों बिगाडणेवाला है इसवास्ते किसीकामके नहीं बीकानेरवाले कचेका साग पकेकूं
हेमंतऋतुमें खाते हैं सो तदन खराब है जब करसान लोक कचीबाजरीका मोरण साथ
ऊपरसें कालिंगे खाते है उससें किसी अंशमें कम नुकशान करते हैं लेकिन् महीनोंतक
सीत दाहज्वरका मजाभी वोही लोक चाखते है (वालोल) सेमकी फली,मीठी ठंडी भारी
इसवास्ते वायडी है पित्तकूं मिटाती है ताकत देणेवाली है(गुंवार फली)लूखी भारी और
कफ करता अग्निदीपक सारक पित्तहर लेकिन् बहोत वायु करती है (सहजनेकी फली)
मीठी तुरी कफहर पित्तहर और अत्यंत अग्निदीपक है शूल कोढ क्षय श्वास तथा गो-
लेके रोगमें बहोत पथ्य है, सहजनेकी फली टाल बाकी सब फलियां बायडी है (सूरणकंद)
अग्निदीपक लूखा तुरा हलका पाचक पित्तकरतां तीक्ष्ण मलस्तंभक रुचिकर हरस शूल
गोला कृमि कफ मेद वाय अरुचि श्वास तिल्ली खासी इन सब रोगोमें फायदे बंद है दाद
कोढ रक्तपित्त वालेकूं महा खराब है हरसकी बेमारीमें शाक इसकी रोटी पुडी सीरा
वगेरे करके खाणेसे दवाका काम करता है कंदसाकमें सूरणका साग श्रेष्ठ है(अ...) ठंडा
मीठा रूखा मलमूत्रकूं रोकणेवाला पोषणकारक बलवर्द्धक स्तनकादूध वी. सुपेद है
वाला रक्तपित्तका नासकरता कुछ वायु करता है जादा घीके संग खाणेसें पा... नहीं
करता अंगारमे बाफ करके अथवा घीमें तलकर पांच दस वर्षके बालकोंकों खिलाणेसें
पोषण अच्छी तरे करता है हाडोंकों वधाता है(रतालु) (तथा सक्करकंद)पौष्टिक तथा मीठा
है मल रोकणेवाला कफ करता है (मूले) भारी है मलकूं रोकता है तीखा है इसमें
गरम है अग्निदीपक रुचिकर है हरस गुल्म श्वास कफ ज्वर वायु नाकके रोगोंमें
हितकारी है कच्ची मूली तीनों प्रकृतीमें अच्छी है पक्के मूले (बडे मूले) लुखे
और कुपथ्य है मूलेके ऊपरके छिलके भारी है और तीखा है सो अच्छा नहीं
गरम जलमें बाफके फेर जादा घीमें या तेलमें तलते है सो तीनों प्रकृ

तीकूं अनुकूल पडता है गाजर मीठा रुचिकर तथा ग्राही है खुजली और खून बिगाडके रोगोंमें अछा नहीं है कितनेक रोगोमें अच्छाभी है लेकिन वीर्यकूं बिगाडता हैं इसवास्ते इसकूं समझदार लोक नहीं वरतते है जैनकोम इसीवास्ते जमीकंदोसें विशेष परहेजरखती है (कांदे) डूंगली बलवर्द्धक तीखा भारी मधुर रुचिकर वीर्यवर्द्धक कफ तथा नींद पैदा करै क्षीणता रक्तपित्त उलटी हैजा कृमि अरुचि पसीना सोजा खूनके सब रोगोंमें हितकारी है इसके साग मुरब्बे पाक वगेरे लोकवणाते है दुरंगध इसमें बहोत है कांदे और लसणकूं तो गोकुल वैष्णव बिलकुल छीते नहीं बचे हैं सो अछे हैं रांधणेकी युक्ति और दुसरी चीजोंके संयोगसे साग तरकारीके गुणोंमे फेरफार होता है जो साग वायु करता होता है वो बहोत घी तेलके संयोगसें वायु नहीं करता जो साग पचणेमें भारी होता है उसकूं पहली खूब जलमें बाफके फेर घीमें तेलमें लोक छमकते है सूरण आलु वगेरे कंदोकों वो नुकशांन नहीं करता बहोत लाल मिरच मसाला खाणा अछा नहीं क्योंके जादा मसालोंसें पाचन शक्ति कम होकर दस्त संग्रहणी आम्लपित्त रक्तपित्त कुष्टादिक खून विकार हो जाता है.

॥ उजाला ४ दूध विचार ॥

(सामान्य गुण) दूधका मीठा ठंडा पित्तहर पोषण करता दस्त साफलानेवाला वीर्यकूं जलदी पैदा करनेवाला बल बुद्धि वधानेवाला मैथुनशक्ति वधानेवाला अवस्था स्थिर कर्ता ऊमर वधानेवाला रसायणरूप तुटे हाडोंकों सांधनेवाला भूखेकूं बचेकूं वृद्धकूं तृप्तिदेनेवाला स्त्री भोगादिकसें क्षीणकों तथा जखम वालेकों जीर्णज्वर भ्रम मूर्छा मन संबंधी रोग शोष हरस गुल्म उदररोग पांडु पेसाबका रोग रक्तपित्त थकेला तृषा दाह छातीके रोग शूल आफरा अतीसार गर्भश्राव इनोमें दूध पथ्य है विशेष रोगोमें दूध पथ्य है,सन्निपात नवीनज्वर वातरक्त कोढादिकमें मना है नवीनज्वरमें कोनेनपर डाकदर पीलाते है (सन्निपातकी अवस्थामें दूध जहर है) निश्चय सिद्धांत है सुजाक फिरंगकी तरुण अवस्थामें भी दूध खराब है जिस्सी पीते है वो गंठियाकी जड है) धातृकीवृद्धि जितनी दूधसें होती है एसी कोइभी चीजसें नहीं होती (दुहा) वीर्यवधावण बलकरण मोद पूछो कोय पयसमान तिहुं लोकमें अवरनऔषध होय १ गायका दूध ये सब गुण धराता है ऊपर लिखे मुजब (काली गायका दूध) वायु हरता और जादा गुण करता है (लाल गायका) वात हर पित्त हरभी है (सुपेदगायका दूध) जरा कफ करता तुरतकी जणी भई तथा बछडे बिगरकी गायका दूध तीनों दोषोंको पैदा करती है वाखडी याने ब्यायेकूं दोय चार महीने वीतने वाली गायका दूध उत्तम है इस उपरांत जैसा खानेमें आवे गुण दोषका आधार उसपर है (भैंसका दूध) गुणोंमें कितनेक दरजे मिलता है मीठाजादा जाडाजादा भारी वीर्यजादावधानेवाला कफकरता

वधानेवाला वेमारकूं गायका जादा पथ्य है भैंसकाकम (वकरीका दूध) तुरा मधुर ठंडा
हलका रक्तपित्त अतिसार क्षय खास वुखारके जीर्ण रोगोंकी अवस्थामें पथ्य है (गाडरका)
दूध खारा मीठा गरम पथरीकूं मिटानेवाला(घोडीका दूध)लूखा गरम वल देनेवाला श्वास
तथा वायुकूं मिटानेवाला खट्टा खारा और हलका है (उंठणीका दूध) हलका मीठा खारा
अग्निदीपक दस्तलानेवाला कृमि कोढ कफ पेटका आफरा सोजा जलंदर वगेरे पेटके
दरदोकों मिटाता है (स्त्रीका दूध) हलका ठंडा अग्निदीपक वायु पित्त नेत्ररोग शूल पछा-
टकूं मिटाता है (धारोष्ण दूध)ताकतवर हलका ठंडा अग्निदीपक और त्रिदोपहर है(गरम
तथा ठंडा दूध) दो है पीछै ठंडा पड जाय तो गरमकर पीछे उपयोगमें लेना तथा भैंसके
दूध टाल और सव तरेका कच्चा दूध सरदी तथा आम पैदा करता है इसवास्ते कुपथ्य
है गरम किया भया दूध वायु कफवालेकूं सुहावता गरम पीणा फायदे वंद है जादा गर-
मसें मुं उसल जाता है पित्त प्रकृतीकूं नुकशान करता है इसवास्ते ठंडा करके पीना दूधके
वजनसें आधावजन पाणी डाल पीछे उकाल पाणी जलेवाद जो दूध रहै वो वहोत हलका
तीनों प्रकृतीमें तथा वेमारकं पथ्य है रढा भया दूध भारी होता है इस वास्ते वैमारोंको
तथा मंद पाचन शक्तिवालेकूं अछा नहीं दूधमेसें तीन हिस्सा पाणी जल जावै एक हिस्सा
जल रह जावै एसा दूध पीणा, रढा भया दूध ताकतदार है लेकिन पूरी पाचन शक्तिवा-
लेकूं तथा कसरती जवानोंकों पचता है खराव दूध विगडा भया दूध जिसका रंग वदल
गया होय स्वाद वदलजाय खट्टा पड जाय खराव वो आवै और फिदकडी वंध जावै एसा
दूध नुकशान करता है तीन घडी दो है पीछे वासी दूधकूं गरम नहीं करे तो नुकशान
करता है जैनसिद्धांतमे इसीवास्ते दो घडी वाद कच्चे दूधकूं नुकशानकारी लिखा है
और जिसका रंग खसवो स्वाद रूप वदल जाय एसी खाणे पीणेकी सव चीजोंकों अभक्ष
लिखा है इसवास्ते इय उपयोग सव जगे याद रखणा एसीं अभक्ष वस्तु जरूर रोगका कारन
समझ लेणा पांच घडीतक दोहा भया दूध कच्चा पडा रहे तो विक्रिया करता है अर्थात् तरेर
के रोगका हेतु एक आचार्य कहता है गरम किया भया दूध दस घडी वाद विगड
जाता है जैन भक्षाभक्ष निर्णयकार गरम दूध जवसे दोहा तवसे सात घंटे वाद अभक्ष
मानता है इय वात मेनें अनुभवभी कर लियां है खट्टा होजाता है इसवास्ते दो है
पीछे या गरम किये पीछे वहोत देरतक वासी रखणा नहीं (सवेरका दूध)रातकूं जानवर
फिरते नहीं इसवास्ते परिश्रम नहीं होता ओर रात ठंडी होती है इसवास्ते सांझके दूधसें
फजरका दूध कुछ भारी होता सांझका दूध सूर्यकी गरमी जानवरोके फिरणेकी कसरतसें
फजरके दूधसें सांझका दूध हलका होता है वायु तथा कफ प्रकृतीवालेकूं सांझका
जादे माफगत आता है पोपणके पदार्थोंमें दूध वहोत उत्तम पदार्थ है जिसमें पे
तत्व आये भये है इस दूधपर वेमार साजे योगी टोक वरतों गुजरा न च

और तन दुरस्तीमें जिंदगानी गुजारते हैं कितनेक लोकोंकूं दूधसें दस्त आता है कितनों-
कों कब्ज होजाता है तत्वमें इतनी ही बात है उनोके दूध पीनेका मावरा नहीं है
लेकिन् एसे कारण होनेपरभी दूध उनोंकों नुकशानकारी कभी नहीं समझना मावरा
पडनेसें वाजे अदमी सोमलभी वे प्रमाण खातोकों मैंने देखा है तब तो अमृत जैसी
चीज दूध माफगत मावरा डालनेसें नहीं आवे ये बात कभी संभव नहीं हो सकती इस
वास्ते घणे जहांतक दूधका सेवन हमेस करणा चाहिये पारसी अंग्रेज वगेरे श्रीमंत लोक
दूध और दूधमेंसें निकले भये पदार्थ मख्कन मलाई पनीर वगेरे पदार्थोंका जादा उप-
योग करते हैं और आर्य कोमके श्रीमंत शाग राईता और लाल मिरचोंका पूर मसालोंके
शोखमें पडे भये मालम देते हैं तो पीछे साधारण गरीब लोकोंकी बात ही क्याकरणी
दूधकी खुराकमें मारवाडी प्रजा तदन मूल खारही है तो शरीरकी स्थितीकी दशा कैसें
सुधरे भाग्यवान लोक जैसे गाडी घोडे घर बाहिर रखते है तैसें गाय भैंसे रखनी च-
हिये गाडी घोडोंसे श्रीमंताइ टिक नहीं सकती लेकिन् गाय भैंसोंसें लडकोंकी बुद्धि टि-
केगी और वधेगी तो श्रीमंताई जरूर टिकके रहेगी जितनी गाय भैंस पृथ्वीपर जादा
होगी जितना दूध घी सस्ता जादा होगा जैनियोंके उपाशक दशा सूत्रमें दस बडे श्रीमंत
श्रावकोंका अधिकार चला है जिणोमें काम देवजीके ८० हजार गइया आनंदजीके ४०
हजार इसतरे दसोंके गोकुल लिखा है ऊपर लिखे जानवरोंसें बहोत फायदा होता है
इनोकी पूरी हिफाजत तन दुरस्ती रखणी गरीब और तालेवर सबका निर्वाह इन जान-
वरोंसे है जब आर्यावर्त्त अपने पूरे प्रकाश परथा तब इन जानवरोंकी असंक्षा कोटी थी
मांसाहारियोंने इन जानवरोंकों मार २ आर्यावर्त्तकों सब तरे लाचार कर दिया दूधमें
खार तथा खटाईका जितना तत्व रहा भया है उससें जादा खार खटाईका योग हो
जाता है तब नुकशान कर्ता है, गुण नहीं करता, इसवास्ते विवेकसें उपयोग करणा कि-
तनीक बातें ध्यान समझने जैसी है खार तथा खटाई दूधमें मिलनेसें दूध फट जाता है
इसवास्ते खार तथा खटाईके संग दूध खानेमें आवे जरूर नुकशान करता है वैद्यक
ग्रंथोंमें एसा लिखा है दूध भोजनकी वखत खाना होय तो ऊपरसें पीणा या भातके
संग खाना जैसें कच्छके जैन ओसवाल खाते है अथवा भोजनमें दूधके विरोधी पदार्थ
नहीं होय तो भोजनमें भी खणा दूधके संग कितनेक पदार्थ मित्रका काम करते
है, कितनेक शत्रुका, (दूधके मित्र) दूधमें छवरस है और इन छवरसोंके मिलते स्वभावके
पदार्थ इस मुजब है, दूधमें खट्टा रस है उस खटाईका दोस्त आंवला है, दूधमें मीठा
रस मीठारसका मित्र बूरा मिश्री है, दूधमें कडवा रस है उस कडवेरसका दोस्तपरवल
मेंथी तीखा रस है, उस तीखे रसका दोस्त सूंठ तथा आदा है, दूधमें कषायला
कषायले रसका दोस्त हरडे है, दूधमें खारा रस है, उस खारे रसका दोस्त

निमक है, इस उपरांत गहूंकेपदार्थ पूडी रोटी चावल भी मध्यरूप कार्यमिश्र औषधियां पाकोंमें डाले जाय ऐसी पुष्ट दीपन चीज भी दूधके मित्र वर्ग है, (दूधके दुस्मन) खीरा निमक दाल सब तरेका खार, दूधके गुणकूं बिगाड डालता है, आंवले टाल सब तरेकी खटाई, गुड मूंग मूले साग दारू मछी मांस दूधके संग मिलके दुस्मनका काम करता है दूधके संग निमक खार तथा गुड खानेसें कोढ प्रमेह मूत्रकृछ्र वगैरे रोग पैदा करता है दूधके संग मूंग मोठ मुले गुड तथा मछी मांस कोढ चमडीका रोग करता है दूधके संग बहोत साग दारू आसव खानेसें पित्तके रोग होकर मर जाता है ऊपर लिखी चीजोंसे दूधके संग खाने पीनेसें अवगुण होता है ये बातकी तुरत खबर नहीं पडती लेकिन् सर्वज्ञ परमात्मानें भक्षाभक्ष निर्णय जो फुरमाया सो जिन दत्तसूरि महाराजने विवेक विलास चर्चरी आदि ग्रंथोंमें लिखा ऐसे महा पुरुष विद्वानोंके वचनोंपर प्रतीति रखना और सर्व जीव हितकारक परम पुरुषकी आज्ञा मुजब चलना ये सलामत रस्ता है जो इन बातें प्रजाकूं नुकशानका रस्ता सर्वज्ञ महावीरकूं दीख पडा सो कहा वो वचन पूर्वानुगत बडे दादा साहिबनें तथा और २ ग्रंथोमें उमास्वाती वाचकादिकोनें भी ऐसा ही लिखा सत्य वचन सदा पथ्य है सइकडों अदमी जुदे २ नहीं समझ शके ऐसे रोगोंके सपाटें आते है तब अदम्योंकों आश्चर्य आता है मतलब बहोत दिनपहले जो ऐसे विरुद्धखान पान करा होता है उन २ रोगोंका दूरकारण वो विरुद्ध पूर्वोक्त बाबते समझनी इस संयोगी जहर जाणना, सदापथ्य और प्रमाणोपेत आहार करनेवालोंको अचानक जो रोग हो जाता है सो अज्ञानपनेसें ऐसे संयोग विरुद्ध खान पान कभी करते हैं या किया भया होता है वो ही समय पाय समवायोके संग झट रोगी कर देता है इसके अलावा संयोग विरुद्ध और भी खान पान बहोत है क्रम २ सें लिखेंगें ॥

॥ घी-घृत ॥

(घीके सामान्य गुण) रसायण मधुर नेत्रोंकोंहितकर अग्निदीपक शीतवीर्यवाला बुद्धि वधानेवाला जीवनदाता शरीरकुंनरमकरता बल कांति वीर्यकूं वधानेवाला मलकूं निकालनेवाला भोजनमें मीठास दाता वायुके पदार्थोंका वायु, संग खानेसें मिटानेवाला गर्मी गुमडकूं मिटानेवाला जखमीकूं बलदाता कंठ तथा गायन सुधारनेवाला मेद कफकूं वधानेवाला अंगारसेंजलेकूं फायदेबंद वातरक्त अजीर्ण नसा शूल गोला दाह सोज क्षय कानका मस्तकका खून विगाड इत्यादि रोगोंमें फायदे बंद है सामज्वर याने आम संयुक्त नये बुखारमें सन्निपात बुखारमें कुपथ्य है, सादे बुखारमें बारेदिन बीते पीछे कुपथ्य नहीं, बालक वृद्धकूं बधेभये क्षयरोगीकूं कफकेरोगमें आमवातवालेकुं खुराकमें हैजेमे मलबंधमें बहोत दारू पीनेसें भये मदात्यय रोगमें और मंदाग्निमें इन रोगोंमें घी नुकशान करता है, सादे अदमीके हर वखत भोजनमें थकेलेमें क्षीणतामें पां

कारक रुचिकारक और मीठा होनेसें पित्तकूं बहोत वधातानहीं, जो कपडेमेंबांध पाणी टपकादियाजावे उस दहीका इतना गुण है, अब ऐसेदहीमें मिश्री मिलाय खानेसें प्यास पित्त खूनविगाड तथा दाहकूं मिटाता है गुडडालके खायाभयादही वायुकों मिटाता है पुष्टिकरता भारी है, रातकूं सब भोजनकी मनाई वैद्यकशास्त्र और धर्मशास्त्र करता है जिसमें भी दही खानेकी बिलकुल रातकूं मनाई है कोइमहाभयंकररोगके कारण वैद्य बतावे तो इतनी चीजोंमें की कोईभी चीजका संयोग होना, जैसें लूंण जल घी सक्कर बूरामिश्री वंग सहत मूंगकीदालके संग वाफनिकाला दहीं आंवला वगेरे मिलाया अनुपान होना तो पित्त तथा कफ संबंधी कोइ भी रोग शरीरमें होय तो ऊपर लिखी चीजे डालकर खानेसें नुकशान रातकूं होगा, ऋतु प्रमाणसें दही खानेका विचार देखे तो) हेमंत शिशिर वर्षा ये तीन ऋतुमें दही दुरस्त है और (शरद) आसो काती(ग्रीष्म)वैशाख ज्येष्ठ(वसंत) फागुण चैत्र इनोंमें सबकूं दही मना है इस ऊपर लिखे नियम विगर बीकानेरवाले के सवालोकेतरे अपनी इछासुजब चाहेजैसा बहोतदही खानेवाले बुखार खूनविगाड पित्त वातरक्त कोढ पांडू भ्रम और भयंकर कामला सोजा कुडजाणा बुढापेमें खाज निद्रानास कमऊमर हो जाणा इत्यादि विकार जरूर होजायगा क्षयरोगी वादीकारोगी पीनसकारोगी कफकारोगी इनोनें खाली दही भूल चूक कभी नही खाना संयोगसें जैसें गुड कालीमिरच औरदहीसें तो प्रायें पीनस मिट जाता है खानेसें इत्यादि, दहीका योग याने दोस्त) लूण,खार घी सक्कर बूरामिश्री सहत आंवले इनोके संग दही खाना, गरमागरम चीजोंकेसंग दहीखाना जहर जैसा है,घीके संग दही वायु हरता है आंवलेकेसंगखायाभया कफ हरता है सहतके संग खानेसें पाचनशक्ति वढती है तथा थोडासा विगाड भी करता है मिश्री बूरा कंदके संग दही दाह खून पित्त तथा प्यासकूं मिटाता है गुडके संग खायाभया दही ताकतदेता है वायुकूं दूर करता है तृप्ति करता है निमक जीरा और जल डालके दही खानेमें आवे तो विशेप नुकशान नहीं करता तो भी जिस रोगोंमें दही मना है उस रोगमेंतो निमक जल मिलानेपर भी दही विकार करता है ॥

॥ तक्र–छाछ ॥

(छाछकी जाति और गुण)जादा पाणी डालनेसें या कम डालनेसें अथवा विगर पाणी की छाछके गुणोंमें फेरफार होता है पाणी डाले विगर तेसें दहीकीमलाई विगर निकाले जो विलोया जावे वो घोलिया कहलाता है, मलाई निकालकर विलोया भया मथित कहलाता है, आधादही आधाजळ डाल विलोया दही उदश्वित् कहलाता है जिसमें पाणी जादाडालके मक्खन विलोयकरबिलकुल निकाल लिया जावे सो छासि कहलाती है, घोलमें मीठा डालकर खावे तो कैरीके रस जैसा गुण करता है, मथित वायुकूं पित्तकूं तथा कफकूं हरनेवाला और प्यारा लगता है, तक्रउसका नाम है दहीके सेर भरमें पाव पाणी डाला जावे सो छाछ दस्तकूं रोकती है पचती वखत

मीठी है इसवास्ते पित्त नहीं करती और तुरा उष्ण वीर्य तथा लुखी होनेसें कफकूं तो-
ती है योगचिंतामणि तथा श्रीआयुर्ज्ञानार्णव महासंहितामें श्रीहेमचंद्र लिखता है
क्रका यथा योगसेवणेवाला कभी विवहारनयसें रोगी नहिं होता और तक्रसें जले
ये रोग फेर पीछे कभी होतेभी नहीं जैसें स्वर्गके देवतोकूं अमृत सुख देता है तैसें
त्यु लोकमें अदम्योंको तक्र अमृत समान है तक्रमें इतना गुण लिखा है लेकिन् वो
गुणोका मुख्य आधार जिस तरेके दहीमेंसें छाछ करनेमें आवे उसपर समझणा, उदश्वित
ातकी छाछ कफ करती है, ताकतवढाती है, और आगकूं मिटाती है, छछिका हलकी
पेत्तकूं थकेलेकूं प्यासकूं मिटाणेवाली वायुकूं मिटाणेवाली कफकूं करनेवाली है, निमक
डाल उपयोगमें लीभई छाछ अग्नि प्रदीप्त करता और कफकूं कम करती है, दही खराब
होय उसकी छाछ भी अवगुणकारी होती है (छाछ पीणेकी विधि) वायुकी प्रकृतीवालेनें
अथवा वायुके रोगीनें खट्टी छाछमें सींधा निमक डाल पीणी अछी है, पित्त प्रकृतीवालेने
अथवा पित्तके रोगीनें मिश्री डाल मीठी छाछ पीणी अछी है, कफ प्रकृतीवालेने अथवा
कफकेरोगमें संचलनिमक सुंठ मिरच पींपरका चूर्ण मिलाकर पीणी अछी है, ठंड
कालेमें अग्नि मंदमें कफके भये रोगोंमें मल मूत्र साफ नहीं ऊतरता होय जिसमें जठ-
राग्निके विगाड उदररोगमें गोलेकेरोगमें ववासीरकेरोगमें इकेली छाछका ऐसा प्रयोग
है सो असाध्य संग्रहणी तथा दरस जैसा भयंकर रोग अछे होते है, लेकिन् देशी पूर्ण
विद्वान वैद्यकी सलाहसें उपयोग करना कारण आम्लपित्त संग्रहणी एक सदश प्राय
रोग है वैद्यकी पूरी अकल वरी निदान याने रोग परीक्षामें हीं है अम्ल पित्तकूं तक्र जहर
है ॥ (छाछ पीनेकी मनाई) चोटलगेभयेजखमी सोजेकानिजरोग जोकी मलसे होता है,
आमकेरोगीकूं, शरीरसूककर दुर्वल हो गया होय जिसकूं, मूर्छा भ्रम उन्माद फकूत प्यास
के रोगीकूं रक्तपित्तके रोगीकूं वैशाख जेठके महीनेमें आसोजकाती केमहीनेमें राजयक्ष्मा
तथा उरःक्षत रोगीकूं तरुणज्वर सन्निपातज्वरीकों इत्यादि रोगीकूं छाछ पीणा नहीं पीनेसे
दूसरे अनेक रोग पैदा होनेका संभव है ॥

॥ पुष्पमाला ५ मा फल वर्ग ॥

अपणे मुलकमें अनेक फलों लोक वरताधा करते हैं जिसमें मुख्य(केरी)सामान्यतरे
केरी हितकारी है कचीकेरी गरम खटी रुचिकर ग्राही तथा रुचिकर है पित्त वायु कफ
तथा खून विगाड करती है लेकिन् कंठके रोग वायु प्रमेह योनिदोष व्रण अतीसार तैंमें
प्रमेह रोगमें अछी है, (पकीकेरी) वीर्यवर्द्धक है कांतिकारक तृप्तिकारक मांस तथा बल
वधानेवाली है कुछ कफ करती है इसवास्ते इसके रसमें सुंठ थोडीसी डालके उपयोग
करना (कचीमीठीकेरी) मलमूत्रदार रुं होती है जातिभेदसें कुछ २ विशेष गुणमें
फार भी होता है(सामान्य गुण) [illegible] सब केरीका समझना (आंमून)मलकूं [illegible]

मीठा कफका नासकरे रुचिकरता वायुकोंमिटाणेवाला प्रमेदकोंमिटानेवाला इस कारणंइसकारस अथवा सिरका अजीर्ण मंदाग्नि मिटादेता है (पोर) अनेक जातिके है लेकिन् (खट्टा और मीठा)कफकरता बुखार गर्मी इनोंकों पैदा करता है इनोंके लटें होती हैं इत्यादि तुफकलोकों जेन सूत्र अभक्ष लिखता है इस वास्ते सुखा खाणा अच्छानहीं है (अनार) सर्वोत्तम फल है तीनों दोषोंमें हितकर है अतीसारके फायदेपंद है ऊमदा जातिकाफलकी है यानी कंधार जोधपुर पूना वगेरेकी है (केला) केलाभारी है ठंडा रुचिकर पित्त नाशक है बलदायक है वृष्य है वीर्य क है तृप्तिकारक है मांसवर्द्धक है कफकर्त्ता है दुर्जर याने पचनेमें भारी है ग्लानी पित्त रक्तविकार प्रमेह भूख नेत्ररोगोंकूं मिटाता है भस्मकरोग जिसमें कितना भी खाय लेकिन् तृप्तिनहींहोय उस रोगमें केला फायदे पंद है (आंवला) दमें तुरा तथा खट्टा है गुणमें रसायण पित्तशामक त्रिदोषहर सारक बलबुद्धि वीर्यसुधारक पौष्टिक स्मृतिदाता थोडेसेमें समझलेना सर्वोत्तम फल है (गीले) हरे लोमें इतनेगुण है लोकसमझते नहीं इसवास्ते जहां बजारोंमें बिकते है उहां कोइ लेता भी नहीं, फकत दिल्ली बनारस वगेरे शहरोमें मुरबा और आचार भी हैं लेकिन् मुरबा जेसा बनारसका है वैसा और जगे नहीं देखा, शेरकेआठ ही सूके आंवले काली मिरच मिलाके चेत आसोजमें भोजनपर फक्की बीकानेरवाले बहोतलेते हैं हरकिसीरोगमें लेकिन् तैलका वरतावाबहोत इसवास्ते गुण है, आंवले सूकेकूं हरेआमलेके रसकीया सूके आंवलेके क्वाथकी, भावना सो सुकाता जाय बाद इसका सेवन करे ऊपरसें दूध पीवे इसके गुणोकी संख्यामें नहीं सकता, प्राये सर्व रोग जाकर बूढापा जरा बिलकुल नहीं आती गहूं घी बूरा मुंगकी दाल पथ्य खाना, इसके कचेफलभी कभी नुकशान नहीं करते मुरब्बे वगेरे खाना लाभकारी है, (नारंगी) संतरे मधुर रुचिकर शीतल पौष्टिक वृष्य जठराग्नि हृदयकूं हितकर त्रिदोषहारक शूल तथा कृमिहारक मंदाग्नी स्वास वायु पित्त कफ शोष अरुचि ओकारी वगेरे रोगोंमें पथ्य है, नारंगीकी मुख्य दोय जात है खट्टी मीठी उसमेंसे खट्टी नहीं खाणी (करने जंभीरी) वगेरेयं दश जात है, सर्वोपरी नागपुर क्षणका संतरा ऊमदा होता है (दाख अंगूर) गीलेदाख खट्टी औरमीठी तैसें और सुपेद मुंबईमें कार्फर्डमारकीटमें मणो बंध हमेसां मिलती है और भी जगे गूरकी पेटियां विकती है खट्टीदाख नहींखानी हर्रादाख कफ करती है इसवास्ते थोडासा सींधानिमक लगाके खानेसें कफ नहीं होता दाख उत्तम मेवा है सूकी मुनक्का कालीदाख सब प्रकृतीके और सब रोगोंमें पथ्य है बेमारोकों वैद्य मना भी नहीं करते है तृप्ती करती है नेत्रोंको अछी है ठंडी है भ्रमनाशक है सारक याने दस्त

साफ लाणेवाली है पैसाब खुलास लाती है पौष्टिक है खूनविकार दाह
प मुर्छा बुखार श्वास खास मदिरापीनेसैंभयेरोग उलटी सोजा वातरक्त
रे रोगोंकों फायदेमंद है (नींबु) नींबु खट्टे और मीठे दो जातके होते है
ठा पूरबदेशमें बहोत है जिसमें बडेकूं चकोतरा कहते है फलोंमें मीठेकी गिणती है
ट्टेकूं एकेला कोइ खाताभी नहीं डाक्टर सूजनपर मसूडे पककर खूनगिरता होय जिसपर
खाते भी है सिकंजी जलमें डालके पिलातेभी है बाकी तो प्रजा आचार चटणी मसाला
ल सागमें रसडालके खाते हैं लेकिन चूसके हमेश कोइ खाता नहीं संयोगसें
ट्टे नींबु फायदा करता है (मीठा नींबू) स्वाद मीठा तृषीकरता अतिरुचिकारक हलका
फ वायु उलटी खास कंठरोग क्षय पित्त ... त्रिदोष मिटाणेवाला मलस्तंभक है हेजा
ामवात गोला और कृमि पेटमें कीडोकू... जिसकापेट जकडगयाहोय दस्तबंद
कर बद्धगुदोदररोग ... होय ... पीणेकी अरुचि भई होय पेटमें वायू तथा
लका रोग होय किसी तरे ... पचटा होय इन सब रोगोमें नींबू देणा अछा
नींबूकी खटाईसे ... करते नहीं लेकिन ये ना समझपणेकी बात है
बुखार जैसी बेमारीमें भी ... से आपरे तो नुकशानके बदले फायदा करता है
यार फाड एकमें सूंठ सींधा ... ाली मिरच, एकमें मिश्री, एकमे डीकामाली, ये
सासेणेसें । जी मचलाणा के ... ुखार प्रमुख मिटजाता है और अनेक युक्तियां
(खजुर) पौष्टिक स्वादिष्ट ... ी खून साफ करता हृदयकूं हितकर त्रिदोषहर
ास थकेला क्षय विष प्यास ... दनमूर्छा, आम्लपित्त जैसे महाभयंकर
गमें पथ्य और हितकारक है ... अवगुण है पचणेमेंभारी कृमि पैदा करता
इसवास्ते छोटे बचोंकूं खजुर ... भी खाणे नहीं देणी खजुरकूं घीमे तलणेसें
र ये दोनों दोष कितनेक द ... जाते है फेर गरमीकी मोसममें खजुरका
पीकर उसमें जरासा अमली ... ाणीदेकर सरबतकी तरे पीणेमें आवे तो
यदा करता है (पींड खजुर) ... क खजुरही है गुणमें जरा फरक है (फालसे)तैसें
पील) तैसें करोंटके फल पित्त ... ामवायूका नास करता है सब तरेके प्रमेह रोगीकूं
ायदेमंद है (सीताफल) मधुर ... पौष्टिक है लेकिन कफ वायु करता है दक्षण देदरा-
दके गरीब लोक खाकर पेटमें पाणी पीकर टंक टालते है (जाम फल) स्वादिष्ट ठंडा
ष्य रुचिकर वीर्यवर्धक और त्रिदोषहर है लेकिन तीक्षण है भारी है कफ करता है
ती है उन्म रोगी पागलकूं अछा है (सफरजंद) मधुर रुचिकर हृदयकूं हितकर
हरी और पित्तहर है अतीसार रोगीकूं फायदेमंद है और उसका मुरब्बाभी ठीक
है (आलु) हृदयकूं हितकर ठंडा भारी उष्ण जठ ग्राही तथा धातुवर्धक प्रमेह
या वायुका नास करता है (अंजीर) ठंडा और भारी है प्रमेह मिटाता है (

मोठ गुवारफली चिणे वगेरे वायडी चीजोंमें मिरच मसालोसें लजितदार होणेसें मोठके भुजिये चणेकीसेव तो सब मुलकोंमें गरीब और तालेवर जगे २ तेलकी वहोत खाते है मारवाडमें तो बीकानेरवाले बहोत तेल खाते है गुजरातमें मिठाईतक तेलकी बंगालियोका तो जीवनही तेल बण रहाहै, जोधपुर मेंवाड नागोर मेडताआदि बाकीके इकीस रजवाडोमें प्रजा कम तेल खातीहै इसवास्ते तेलका खास गुणदोष जाणनेकी जरूरी है मसलाणेसे शरीरकूं मजबूत करे है बलवर्धक है चमडीका रंग अच्छ करे है वायुकूं मिटाता है पुष्टिदेता है, अग्निप्रदीप्त करे है, शरीरमें जलदी प्रवेशकरता है, कृमिकूं दूर करता है कानकीशूल योनिशूल शिरकीशूल शरीरकूं हलका करता है, हड्डीतूटे बंधे और सा[illegible] मुरडाया दबाभया कटाभया पछाडा भया जलेभयेकूं तिलका तेल अच्[illegible]ती चटणियां सर्व गुण कल्पसूत्रमें [illegible]लके मसलाणेमें लिखा है वोभी किसी औषधीके[illegible]ग्रत करे है जठराग्नि[illegible]णा, खालीतेलमें [illegible]सा गुण नहीं है, गरमी पित्तवालेकूं ठंडी और [illegible]क जठराग्नि कृत्रिम[illegible] दवाइयां, कफ [illegible]र वायुमें उष्ण कफकूं काटणेवाली दवायां होणा, नारा[illegible]णेसें [illegible] गाडियां[illegible]स पटबिंदु चंद-[illegible]दि लाक्षादि शतपक्क सहस्रपक्कादि अनेक पूर्वोक्तगुण इन तैलोंका [illegible]ती है [illegible]री भीदी जाती है [illegible]णेमें जैसें मालकांगणीका इस उपरांत गरीबलोक खाणेमें तलणेमें अनेक [illegible] वधारमें बरते [illegible] कांनमें नाकमें डालते है, इस कामोमें तिलका तेल दुरस्त है, (अवगुण) सांधोंकों ढीला [illegible]र धातुओंकों नरमकर डालता है रक्तपित्तरोगकूं करता है शरीरके मसलाणेसें पूर्वोक्त [illegible]ायदेमंद है, शरीर बाल चमडी तथा आंखोंकों फायदेमंद है लेकिन् तेलपेटमें तिलीका [illegible] सरसूंका खालीखाणेसें इनतीनोंकूं नुकशान करता है हेमंत और सिसिर रुतुमें [illegible]वालेकूं सदा पथ्य है.

॥ निमक तथा खार ॥

[illegible] जमी[illegible]मेंसें पेदा होता खार लोक हमेस खाते है दक्षिण प्रांत देशतक लोक जो [illegible] है वो दरियावके खारे जलसे जमाये जाता है सेंभरपद्रा सो सपन्लूण सेंभरमें [illegible]ते हैं पंचपदरेका लूण, और निमकोंसें श्रेष्ठ है, लूणकरणसर बीकानेरमेंभी [illegible]आदि स्थान निमक मारवाडमे है लेकिन सींध आदि देशोंमें जमीनमें [illegible] है जिनमेंसें खोदके निकालते हैं वो सींधा निमक कहलाता है ये [illegible]त्तम निमक है धमारकों तथा धातुवेगेर रस रसायण देवी इलाजोंमें [illegible]निमक बताया [illegible]रते हैं बुद्धिवानलोक हमेस सींधा निमकही खाते है [illegible]अंगरेज-साल्ट जो निमक आता है वो बहोत अच्छा डाकटरलोक बतलाते हैं [illegible] खाणेकी चीजोंमें निमक ये बडा जरूरीका पदार्थ है यहभी निश्चय हो चुका है निमक बिगर अदमीकी जिंदगानी बहोत दिनोंतक नहीं रह सकती है दूधमें जो लोक बग्गैर गुजरान चलाते हैं उसका कारण एसा है के दूधमें खारका भाग चहिये जिसके [illegible]

आया भया है खानपानमें निमक स्वाद और रुचि पैदा करे है हाडोंकों मजबूतकरा है निमकमें कितनेक अवगुणभी है निमकका अथवा खारका स्वभाव सडाणेका बगर गालणेका है इसवास्ते प्रमाणसें जादा लेनेमें आवे तो शरीरकें धातुओंकों गलाकर बिगा देता है बहोतसें अदम्योंकों सोख पड जाता है सो भोजनकी चीजोंमें निमक खारा खाते हैं, गहुं बाजरीमें दूध वगेरे चीजोंमें कुदरती खार थोडा २ होताही है और दाल साग वगेरेमें जितना चहिये सो पूरा डालणेसें होता है अपणे लोकोंमे क्षारवाले पदार्थ जादा हमेसां खाणेमें आता है जैसें दाल साग चटणी राईता पापड आचार इन सबोंमें निमक है थोडा २ [illegible] हो जाता है जादा खार निमक खाणेमें आजाता है सरीरमेंगरमी शरीर [illegible] वगेरे तुरत मालम देता. है तापतिल्ली वगे पेटकी गांठ मिटाणे [illegible] मारोंकों जादा खार खिलाते हैं उसका नतीजा आगे बुरा मालम [illegible] ते रहता है उसमें मुख्यपणे जादा खार खाने सेंही बिगाड सि[illegible] खार जादा वीर्यका नास करता है इय. बात हमेस ध्यानमें रखणेकी [illegible] माणसर खाणा अति निमक अंधाकरदेता है कल्पसूत्रकी टीकामें लिखा है.

॥ दाल सागके मसाले ॥

जैसें २ प्राणियोंकी विषय वासना वधते चली उसकूं मिटाणे धातु पुष्टि तथा स्तंभनकी कितनीक नुकशानकारी दवाइयोंके उलटे सुलटे रस्ते लोक चढ रहे हैं सराप गांजे भांग माजम कोकिन इत्यादि औरभी कइ किस्मकी नुकशानकारी जहरी चीजोंकों खाते है ये सब जीवतव्यकी खराबीका निशान है, तैसेही हमेसाके खुराकमें तरे २ के उत्तेजक मसाला स्वादमें लोकोंका सत्यानास करणा सरू कर दिया है प्राचीन पंडित एसा कहते हैं जगतका बहोत सुधारा और हुन्नर कलाने लोकोंकूं दुर्बल और निसत्व गरीब कर डाला है अन्य देसांतरी द्रव्य लिये जा रहे है शरीरका बल जरूर प्राणियोंका घट गया इस बात सब सचीही मालम देती है लेकिन् इसतरे खानपानमें बहोत स्वादीपणा वेहद शोकीनपणेने बहोत खराबी कर डाली है और फेर होगा एसाबी समझदार लोक विचारते हैं सादे खुराककी तारीफ अगले विद्वानोंने तथा वर्त्तमांन विद्वानोने करी हैं लेकिन इस बातोंकेतरफ थोडोंका ख्याल है रस्ता उलटा चलरहा है दाल चावल घी गहूं बाजरे जुवारकी रोटी घी मूंग मोठ तूरकी दाल धाणा हलदी जीरा निमक उनमान मुजब हरी मिरच ये सामान्य खुराकका थोडासा नमूना है लेकिन् व्यसन स्वाद और सोख इनमें थोडासा सादरा और मान मिलता है तबतो बेहद बढ जाता है और उनके करणेवाले वटने वसके स्वादमें और शोखमें डूबा देते हैं इसकेसंग तीन चीजोंकी प्रत्यक्ष नुकशानी होती है धन जाय १ शरीर बिगडे २ इजत कमाई और अमोलक वखत जाता है।

मसालोंमें वापरणेमें वस्तुओं तनदुरस्त अदमीके हमेसकेवास्ते घणी भई नही है उसमेंके कितनेक पदार्थ इंद्रियोंकों पहकानेवाली उत्तेजक है शरीरके बेमारीमें दवाकी तोर युक्तिसें देणेमें आवे तो वो चीजें शरीरकूं फायदेमंद है जैसें इलायची बडी छोटी लोंग जीरा स्याहजीरा दालचीणी तेजपत्ता काली मिरच इत्यादि अलग २ दवाका कांम देती है और येही गरम मसाले हैं, हमेस खुराकमें गरम मसाला खाते हैं सो अच्छा नहीं है तेजस्वभावकी जठराग्निकूं दुसरे मसालोंकी बनावटी गरमीसें बधाकर खुराक जादा खाणा बिलकुल अछा नहीं इलाज और खुराक वोही अच्छा है के जिसका आखरी द-जा अछा होय कोइ समेंमेंभी बिगाड नहिं करे ये बात वैद्य और सामान्य प्रजाकूं हमेस याद रखणेकी है इसवास्ते गरममसाला चमचमाटकरती चटणियां सब अदम्योंकों एक सदृश कभी हितकारक होती नहीं रुचिकूं जादा जाग्रत करे है जठराग्निकूं जादा तेज करे है जिससें खाणेमें तो जादा आता है लेकिन् स्वाभाविक जठराग्नि कृत्रिम अग्निकूं होजरी पचा नहीं सकती जैसें एनजीनमे बोइलेरकूं जादाजोरमिलणेसें गाडियोंकों जोरसें तो चलाता है लेकिन बोइलरका माप और प्रमाणसें गरमी बढ जाती है तो बहोतभार खेंचता भया कभी फटभीजाता है जादा वोझा खेंचनेकूं बोइलरकूं जादा गरमीदेना ये नियम नही है लेकिन् जादाबोझा खेंचणेकू बडे एनजिन और बडा बोइलर जोडना यह तो नियम है जन्मसे छोटे कद्वाला अदमी दिलमें एसा विचारे गरम मसाले या गरम दवासें जादा खुराक खाकर कदमें और ताकतमें बढजाउं इस समझसें ऐसें खुराक और दवासे असली निजताकतभी खो बैठता है जादा जोरके काम करणेकूं जैसा बडा एनजिन बडा बोइलेर बनाना पडता हैं तैसें जादा ताकत बढाणेकुं अदम्योंकों ब्रह्मचर्य व्रतपालणा उचित वर्तावसें चलता भया एकसे एक जादा ताकतवर बडे कदका संतान उत्पन्न करना चहिये ऐसें मनुष्योंको नकली उपचार करनेकी कोइ जरूरी नहीं रहती आर्यराजा राठोडवारे २ वर्ष दिलीमें बादशाह पास रहते थे ब्रह्मव्रत पालते और जब रुतुदान देतेथे तो केसरीसिंह बदमसिंह जेसे राठोड जैसिंघ कछावा, प्रतापसिंघ सिसोदिया, जैसे नरसिंह पैदा होते थे, खुराक इनोकी साधारण थी मगर वर्ताव ऊमदाथा, लोक समझेगें गरम मसालोंकी शास्त्र कारने बिलकुल निंदाकीहै एसाभी मत समझणा जिस बातपर निषेध कियाहै उस बाबतपर मनाई है स्याद्वादपक्ष हम जैन धर्मियोंका है, अंगीकार इस पक्षसें करणा सो लिखते हैं बहोत वायुकी तासीर होय तब व [illegible] शरीरमें बराबर रखणेवास्ते खुराककेसंग माफकसर गरम मसाला लेना तेसें गरीष्ट पद [illegible] मिठाई वगैरे खाणेका होय उसके संगभी गरम म-साले चटणी खाणी चहिये सादे खुराकमे विशेषकी जरूरी नहीं, भारी पदार्थ पचाणे जो गरम मसाले मिरचोंकी चटणी आणी वोभी उनमान मुजब, बहोतसे लोक तथा मुमुक्षन ब्राम्हणोंकों जब मिष्टान खानेकूं मिलता है तब एभी झोपडोकीतरे घरके हमेस खुराकमें

दूणातिगुना माल खा जाते हैं ऊपरसें चगचगाट साग दाल अचार चटणीनी [illegible]
उससे पाचन शक्ति बराबर रहणी मुशकिल है अधसेर अनाज अथवा तरावट माल [illegible]
वाला एक १ टंको भर गरम मसाला खाकर एसा हिसाब लगावे की २ भर गरम [illegible]
सेर माल हजम करलुंगा एसें पांच रुपये भरसें पांच सेर नहीं तो तीन सेर तो [illegible]
हजम करलुंगा ये भिरासीका हिसाब खुराकमें काम आवेगा नहीं अजीर्णहोकर [illegible]
पडेगा मतलब इतनाही है साग दालमें बहोत मिरच अंबली अचार चटणी वगैरे
मसाला खाणेका रिवाज बहोत बढता जा रहा है इससें रस बिगडता है खून गरम [illegible]
जाता है पित्तबिगडके रस्ता छोड देता है इसीसे तरे २ के रोगोका जन्म होता है [illegible]
का वर्णन कहांतक करें बहोत गरम प्रकृतीवालेकूं सादामसाला धणा जीरा मिश्री [illegible]
मक और सबकूं माफगत आवे जैसा मसाला है चरकासकूं पथ्य काली मिरच है लेकिन
लाल मिरच खाणेका बहोत प्रचार बढगया है ये चीज बहोत नुकशान कर्ता है बीका-
नेरके ओसवाल और तेलंगदेसवाले जितना मिरच खाते हैं एसा कोइ विरली [illegible]
खाती होगी लेकिन् ओसवाल घी तो खूब डालते हैं आज कल तो ओसवालों
बीकानेरमें प्राये तिलोकचंदजीका बरताबा बहोत है तैलिंग तो चावल और [illegible]
मिरचोकी चटणी लूखीही खाते हैं मलेबारवाले कचे नारेल और थोडी मिरचोंकी [illegible]
णी भात संग खाते घीका और खुदाका तोमूं किसने देखा है इसहालतमें गरीब लो[illegible]
जिंदगानी गुजारते हैं चरकासकी चाहवालोनें मिरचकूं छोड आदा काली मिरच [illegible]
पींपर वरतणा शूद्रोके बरतावमें लसण देखणेमें आता है जिनोकूं लाल मिरचका बडे
मावरा पडा है उन लोकोनें जैपुर जिलेकी लाल मिरच बीज निकाल रातकूं एक [illegible]
जलमें भिगाकर पीस घीमें सेक फेर थोडी वरतणी अथवा घीमे कूट थोडी खाणी [illegible]
रसका तोड निमक है निमकका तो [illegible] रस है खट्टे रसमें नींबू अमचूर कोकम [illegible]
योग्य है लेकि[illegible] कूं माने तो [illegible] ार देणेमें जीरा हींग राई मेथी [illegible]
वस्तुओं [illegible] की प्रकृतीमें [illegible]

नचके रहो मारवाडी गुजराती वगैरे इनही घातोंसें जादा बेमार होते है, मिरचलाल आगरे दिल्लीसें लेकर मम्हाके देसतक लोक नहीं खाते, बंगाल सरसूंका तेल और मछी नंबंधी कुपथ्य हमेस खाते है, उनोमें वैष्णव मांस मच्छी नहिं खाते हैं

चा

आजकल घरघरमें चाहकी उकाली चल रही है अपने देशमें चा चीनसें आती है केतनेक बरससें नीलगिरि तथा आसाम जिलेमेभी चा पैदा होणे लगी है अपने देशकी चा उतरते दरजे बजारमें विकती है चीन जेसी चा कहांइभी पैदा होती नहीं रतलका आठ आनासें सो रुपे रतल तक एसी कीमती और इससे जादा कीमतकीभी चीन देशमें पैदा होती है एसें अवल दरजेकी चा बजारमें विकते देखाभी नहीं और लेमी कौन इहां तो सस्तादाम और चोखा कामहोना सो तो वणनामुसकिल है चा दर खतके सूकाये ये पत्ते है मैंने सेंतालीसकें फागुणमे शिखर गिरि पहाडपर ये दरखतोके छोटे २ झुंम देखे सूकेबाद इन पत्तोंकों गरम करते हैं तब उसकी सुगंध और स्वाद अछा होता है एक थोडे नसेकी चीज है इसवास्ते हमेस पीणेसें दुसरें नसोंकी चीजे अफीम गांजा सुफा तमाखू सराप भंग धतुरेकी तरे जादा नुकसान नही करती है चाहमें सइकडेके हिसाब गुण करनेवाला भाग १ से ६ तक होता है सबसे हलकी चा में १ बधियासे बधियामें ६ पोष्टिक तत्व हे, सइकडे में १५ भाग और तत्वहे, कबजी करनेवाला तत्व बहोत थोडा है, काली और हरी चा एकही दरखतकी होती है पीछे बनावटी रंगमें फेरफार होता है चाहके ताजे पत्तोंकूं गरम कढाइपर अथवा पाणीकी वाफसे सूकाय गरम करनेसें वो रंगमे काली अथवा हरी होती है लेकिन हरी चाहकूं रंग देनेवास्ते नीला थोथा अथवा प्रस्यन ब्लू नामकी जहरी वस्तु किसी बखत लोक देते हैं उसका असर बहोत खराब होता है चा जनमें बहोत थोडी पीणेसें शरीरमें सुस्ती पैदा होती है और थोडी नींद लाती है और जादा वजनमें पीणेसें अंगमें गरमी और हुसियारी आती है नींद आती होय सोभी उडी जाती है नींद रोकनेकों कितनेक लोक रातकूं चा पीते है उससें नींदतो नहीं आती लेकिन बेचैनी पैदा होती है नींद रोकणेकों जो रातकूं बेर २ चाह पीते है और नींद रोकते है इसमें मगजकूं नुकसान पोहचता है जो अदमी अछा ताकतवाला खुराक (टमोटम) खाते हैं वोलोक प्रमाण ... चाह पिये तो कुछ नुकसान नहीं लेकिन हलका और थोडा खानेवाले अर्थात् गरी... नें थोडी चाह(जो थोडी तेज होय सो)पीणी ...यों के हलके खुराक वालोंकों ... धीमें २ नुकशान करती है बहोत चा पीणेसें मगज तथा मगजके तंतुओंकों ... है निर्बलपणेसें भमल भ्रांति हो जाती है ...नेक कहते हैं चा खून जला ... नुकस कुछ सचभी हैं चा दूधके संग पीणी ...पसें चाहका कैफ याने नशे ... र पोषण मिलता है कितनेक अदमी

लाचारीसेंभी लोक लेते है जैसें संग्रहणीमे सेकी भांग या पुराणा अफीम खासीके रोगमें, निजुलके दरदमें तमाखुसूंघणा इत्यादि समझना तैसें चा और काफी माफकसर(युक्तिसें अपनी तासीर मुजब जो)पीते है उनकूं फायदा देता है, सात व्यसन जैनकारने घडे घताये है वो इस भव परभव दोनों विगाड देते हैं जैसें जूवा तो सात सनोंका राजा १ चोरी २ परस्त्रीगमन ३ वेश्यागमन ४ मदिरा नसा पीना ५ मांस ना ६ सिकार खेलना ७ इन सातोंसें बचे सो जगतमें धन्य है छोटे २ इसके अंतर्गत भी बहोत है जूवा कोडीका तो नहीं खेलें अनेक तरेका फाटका करे १ चीजोंमें नई णी खोटे तोल दगाबाजी ठगाई ये सब चोरी है २ परस्त्री टाल दासीके गमन करे और अनेक तरेके नसा करे ४ घरका असबावभी बेचै लेकिन मोल मंगाकर हमेस ठाई खावे ५ रातकूं खाये बिगर चैन नही पडे ६ सच नहीं बोले ७ ये सब जिनोंकों सन पड जाते हैं वो बरबाद सब तरेसें होते है फिर छूटनाभी मुसकल है(दुहा)डाकण मंत्र फीमरस, तस्करने जूआ, परघर रीझीकामणी, येछूटसी मूंआ ॥ १ काफीके भूकेकी थेली गाकर तपेलीके उकलते जलमें पांच सात मिंट रखकर उतारणेसें काफी तइयार होती चा तथा काफीमें बहोत मीठा डालणेसे निर्बल कोठेवालेकों जरूर नुकसान करती है. कारण) विशेप पीणेमें ये दोनुं चीज आवे तो थोडा मीठा अच्छा है, काफीके पाणीमें चोथा ग दूध डालना इन दोनो चीजोंकों गरम पीनेसै पाचनशक्ति कम पडती है धातूमें भी कसान होता है अपणे गरम देशमें काफी गरमी पैदा कर नींदका नास करती है इसस्ते रातकूं पीनी नहीं फजरका वखत पीणेका है,किसीने जहर खाया होय तो उसकूं नींद ही लेना चाहिये इसवास्ते जाग्रत रखणेकूं बेर २ काफी पिलाया करते हैं १ बहोत डे शरीरवाला अथवा बहोत खाणेवाला चा और काफी पीणी अछी है २ दुबले अदमी और निर्बल अदमी बणें जहांतक चा काफी पीणी नहीं, बहोत तेजभी पीणी नहीं, अछी रे दूध मिलाकर पीणा ३ हलका लुखा सूका खुराक खाणेवालेनें और जो उपवास यंबिल एकासना उनोदरी वगेरे तपस्या करनेवालोने चा काफी पीणी नहीं पीणी तो डी हलकी पीणी ४ फजरमें पुडी वगेरे नास्तेके संग चाकाफी पीणी अछी है भोजन टसर किया पीछे पांच चार घंटे बीते बिगर पीना नहीं ५ निर्बल कोठेवालेनें बहोत ठी बहोत सखत उकाली [illegible] अथवा गरमागरम पीनी नहीं थोडा मीठा और दूधमिलार फूंकके जल जैसी गरम पीनी [illegible] तासीर मुजब है ॥

॥ [illegible]) पथ्यापथ्य वर्ग ॥

[illegible] खानपानकी किननीक [illegible] मनुष्योंकी थोडासा विगाड [illegible] किननीक चीजें [illegible]
[illegible] और सब देसोंमें अनुकूल [illegible] अनुकूल, इसी [illegible]
[illegible] तासीरपुं नामाफगन, ए[illegible]

देशमें अनुकूल, दूसरे देशमें प्रतिकूल, होती है, (३) और कितनीक चीजें सबकी प्रकृतीमें सब मोसममें और सब देशोंमें हमेस नुकसानही करनेवाली है। पहिले अंककी वस्तुपथ्य, दूसरे अंककी पथ्यापथ्य, तीसरेकी कुपथ्य, पथ्य सो हितकर्ता, पथ्य सो किसीकूं गाफगत किसीकूं नहीं, कुपथ्य याने सबकूं नुकशान करना, ऐसे और हमारा अनुभव किया भया ये विचार विश्वास रखनेलायक है सो लि

पथ्यपदार्थ:

(अनाज) चावल गहूं जव मूंग तूर चणा मोठ मसूर मटर ये सब साधारण लोकों हितकारी है. ये चीजों हमेस खानेमें आवे तो कोइ तरेकाभी नुकशान नहीं करता सब अनाजोंमें जुदे २ गुण रहे भये हैं, इसवास्ते इनोका गुण और अपनी ताकतके सार थोडा या जादा वरताव करना, चनोंकों, पथ्यवर्गमें गिणाया है, तोभी जादा पेटमें हवा भरकर पेट फूलता है चावल वर्षभरपीछे उतार अछे होते हैं तूरकी दाल खानेसें बिलकुल वायु करेनहीं, मूंग वायु करे, लेकिन दालका पाणी त्रिदोषहर रोगमेंभी पथ्य, फेरदेश २ वालोंके अवलसें मावरेकी चीज उनोंके वोभी पथ्य जाती है (शाग) चंदलियेकेपत्ते परवल पालका वथुआ खरवोडी पोथीकीभाजी पूरवमें अलता कहते है, रंग होता है, सूरणकंद पानमेथी तोरी भींडी कदू वगेरे पदार्थ, गऊका दूध, गऊका घी। छाछ मीठी गऊकी, मिश्री, अदरक, आंवले, मक, अनारमीठी, मुनका, मीठी दाख, अब दुसरे पदार्थोंकी उत्तमता दिख लाते हैं, चावलें लाल साठी तथा कमोद, अनाजोंमें गहुं ... ोंमें मूंग ... में मिश्री सागमें चंदलिया, फल सागोमें परबल, ... निम
दूधमें गऊका, पाणीमें वरसादका, अधर ... वि
दाख (मसालेमें) आदा धाणा जीरा ये ।
सब देसोंमें, तोभी किसी रोगमें कोइ वस्तु ...
थारे दिनतक घी, इकी ... ये प
अज्ञानपणे जिनोनें खाय ... र
पूर्वरूपमें घृतपान लिखा ... है
ही होगा, इसवास्ते सामा
तीन वातसेंही निकलता है,
खाना, अथवा आते भये पसी
भया पानी पीना, या एसी
दिन पहले जुलाब संबंधी हरडे
दवाका देना, इस वास्तोंमें मलिन

विष शस्त्रसेंभी पचता है, तैसें आयु प्रबल समझना, नयेज्वरमें पश्चिमके विद्वान सबमें दूध पिलाते हैं, ये बातका निश्चय अमीस्यात् भया नहीं, या किसी दवाका अनुपान होगा मगर विचारने लायक बात है, तैसें कफके रोगीकूं तथा (सूआ) जापेके रोगवालीऔरतकूं मिश्री इसबजे और २ चीजोंकाभी समझ लेना.

पथ्यापथ्यपदार्थ.

बाजरी उडद वाल याने (चवला) कुलथी गुड खांड मक्खन दहीं छाछ भेसकादूध आलू तोरी कांदा करेला ककेडा गुवारफली दूधी (लवा) कोला मेथी मोगरी मूला जर काचर ककडी गोभी घीयातोरी, केला अननास आंब जामुन करोंदे अंजीर ंगी नींबूजामफल सफरजंद पीलू गूंदा तरवूज वगेरे ये सब पदार्थ नित्य लोक वाप- है परंतु प्रकृतीका और मोसमका विचार विगर किये खावे तो तुरत नुकसान करताहै, ं दही शरदऋतुमें शत्रुका काम करता है, वर्षाऋतू हेमंतऋतूमें हितकर है, गरमीकी सम जेठ वैशाखके महीनेमें मिश्रीकेसंग खानेसेही फायदा करता है, तैसें ज्वरवालेकूं कुपथ्य और अतिसारवालेकूं पथ्य है, इसतरे हरेक वस्तुका स्वभाव समझकर समझदार पूरे ्रकी या इस दीपककी सल्लालेकर ये वस्तु खानेमें आवे तो नुकसान नही करती.

कुपथ्य पदार्थ.

दाहकरणेवाला, जलाणेवाला गालणेवाला सडाणेकीकुदरतवाला जहरकागुण कर- वाला पदार्थ कुपथ्य कहलाता है, ये पांच तरेके पदार्थ जो अगर बुद्धि पूर्वक रोग ज्ञ वरतणेमें आवे तो फायदाभी करता है, तोभी ये चीजें एकंदर शरीरकूं नुकशानही रणेवाली है, क्योंके एसी चीज एक रोगकों मिटावे तो दूसरेकूं पैदा कर देती है खार र्यात् निमक जादा खाणेमें आवे तो पेटकीवायु गोळा या गांठकूं गलाती है, लेकिन ीरकी धातूकों विगाड मरदमीकूं नुकशान कर्ता है, दाहकरणेवालापदार्थ, पित्तकूं बगाड अनेक किस्मके रोग पैदा करे है, अंबली वगेरे अति खट्टा पदार्थ, शरीरकूं गलाकर ... गलाकर मरदमी कम करती है, एसे २ पदार्थोंसें एकदम नुकशान तो देखणेमें ... पाता लेकिन बहोत दिनोंतक सेवन करणेसें एसा मिजाज बिगाड देता है सो ...र किया पीछे पांच चोका मकान बण जाता है, इसवास्ते पहले जो पथ्य वर्ग लिखा है ... बहोत सख्त ... , और पथ्या पथ्यमे लिखा है, उसका थोडा वरताव रखणा ... गरम ... अनुसार, और ... पदार्थ तो रोगोंपर दवा मुजबही वरतणा, ... तो, इमसके ... कर्मे एसे कुपथ्य पदार्थ कभी वापरणा नहीं, ...

॥ उजाला ... पथ्यापथ्य पद... सोभी जिणोंकों नित्यका अभ्यास खानेका ... खानपानकी कितनीक चीजें तर्जे कभी नुकशानणे ... ती, जेमें बाजरी गुड उडद दाल दही ... र इस देशमें अनुकूल आता है ... मुजब जेसें पथ्य ..., तसें कुपथ्यभी है, लेकिन मारवाडमें ... तासीरकूं नायाफगन, एक में

यही चार चीज हमेस बहोत लोक वापरते है,उड़द पंजाबवाले,लेकिन उनोंकों नुकशान नहीं करता,इसवास्ते मावरा है सो पचायका कारण है,नुकशान करताभी है, तो थोडे प्रमाणमें सो मालुम नहीं देता, दूध पथ्य है, तोभी किसीकूं नहीं मदता दस्त होता है, इसमें एसा निश्चय भयाके खानपानमें अपनीतासीर शरीरकाबंधा निलकालमान इ और रोगकी परीक्षा इनसबोंका विचारकर खानपान करणा चहिये जैसे एक पदार्थमें प्रकृती और ऋतुभेदसें पथ्य कुपथ्य दोनों गुण रहा भया है, तैसे येक पदार्थ रसायणी संयोग अर्थात् दुसरी चीजोंके मिलणेसें जिसकूं तंत्र कहते हैं उसमें पदार्थ धर्म बदलकर तीसराही गुण प्रगट होता है, वो नुकशान करणेवाला नहीं, वह इसका पूरा प्रमाण जहांतक किसीकूं नहीं है, उनोकेवास्ते सीधा और अछा रस्ता है के, वैद्य विद्याके हुकमके अनुसारही चलणा, सहत अछा पदार्थ है त्रिदोषहर है गरम पाणीके संग, या हर कोई गरमागरम वस्तुके या गरम चीजोंके संग, या ज्वरमें, देणेसें नुकशान करता है, दूधपथ्य पदार्थ है, तोभी मूलेके मूंगके क्षार अथवा एरंड टाल वाकीके तेलके संग खाणेमें आवे तो जरूर नुकशान करता है, योगसें वस्तुओमें फेरफार गुणोंमें हो जाता है, खटाइ तांबे पीतलके वरतणमें तथा इसीतरे घी कांसीके वरतणमें थोडी देर रहे तो नुकशान करता है, सात दिन रहे तो प्राणीकों प्राणांत कष्ट पोहचाता है, फेर दूधकेसंग खट्टेफल गुड दही खीचडी खाणेमें आवे तो नुकशान करता है, बुद्धिवानों विचार करो सर्वज्ञ भगवानने विषका वर्णन वैद्यक शास्त्रमें किया उसके पढे सुणे विगर इन २ वातोंकी खबर पडे एसाही सूत्रप्रकीर्णोमें किया है, उहां कुपथ्यका नाम अभक्ष लिखा है, एसे कु का फल कुछ तुरत मिलता नहीं है,लेकिन् जब बहोत दोष एकठा हो जाता है, तब रूपसें दिखाई देता है, उसवखत उसका कारण लोक समझ नहीं सकते ये विरुद्ध खान पानसे अनेक रोग पैदा होता है.

सामान्य पथ्यापथ्य आहार विहार

पथ्य आहार

पुराणाचावल जव गहूं तूर चिणा बाजरीदेसी, गरमबाजर थोडी खाणी, मखण छाछ सहत मिश्री वूरा पतासा सरसूंकातेल गोमूत्र आकाशका पाणी पाणी हंसोदकजल परवल सूरण चंदलिया बथुआ मेथी मामालुणी मूले मोगरी घीयातोरी बेंगण तोरी करेला कंकेडा भींडी गोभी, वालोल (थोडी खाणी) केलेकासाग दाख अनार अद्रक आंवला नींबू बीजोरा कवीठ हलदी धाणा केसर हींग संठ मिरचकाली पीपरामूल इलायची जीरा सींधानिमक हरडे इलायची तज सूंफ, पाननागरबेलतकसंग (कथेकी गोली) गहूंकेआटेकी

भात मीठाभात बुंदिया मोतीचूरकालड्डू जलेबी चूरमा दिलखुसाल पूरणपोली खडी दूधपाक खीर श्रीखंड वासुंदी (थोडी खाणी) दाळकेलड्डू घेवर सकरपारे विदामपाक पीकेतलेमोठके थोडेभुजिये; वडे, दूधघी डालीभइ सेव, रसगुल्ला गुलाबजामुन कडाकंद ग्गकंद सरवत मुरब्बा चिरोंजी पिस्ता, राईतादाखोंका, मीठा तथा चरका दाणोंका, मूंग मोठकी वडी दाल जाडी पतली ।

कुपथ्य आहार

उडद चवला वाल मोठ मटर ज्वार मकाई ककडी काचर खरबूजा गुवार कोला पत्ते जामफल सीताफल फणस करोंदा गूंदा गरमर अंजीर जामून बोर आंबली तरबूज दूध दही, तेल नयागुड दरखतोकेझुंडकापाणी वहोतसाएकदम पाणीकापीणा, शरठंडापाणी पीणा, मैथुन करके पीणा, वासीअन्न, छाछदहीके संग खीचड, खी- वगेरे दाल मिले भये पदार्थ, सूर्यकेप्रकाशभयेबिगरखाणा, आचार, लगबगबखत नकरणा सबजातकेजहर, ठंडीखीर, सब दूधके पदार्थ, वासीचासणी और खो- टालके, गुजरातमें चोंटियालड्डू, केलाकेलड्डू, रायणकेलड्डू, गुलपपडी तीन भेलकी , पंचभेलीदाल, करडा, कच्चा गरिष्ठ मैदेकी मैदेकी चीज पुडी सत्तू पेडा वरफी चाव- ा चिवडा रातकाभोजन दस्तबंधकर देवे एसी कोईभी चीज मूंजलेएसा गरमागरम पान, उलटी, पिचकारीदेदेकर, दस्त कराणा येवात अभीके डाकटरलोक परसन । है, हमारे प्राचीनशास्त्रकारोने हमेस सलाईसे पेसाब और वस्ती (पिचकारीसे) । कराणापरसन नहीं किया, और हमेसअच्छाहेभीनहीं कारणविशेपदेखणा, चपीणा ाणा, पांच घंटे विनावीते भोजनपर भोजन करणा, वहोत भूखे मरणा, शरीरतथा मेला रखना, परनिंदा, देव गुरूसें द्वेप करणा ॥

विहार पथ्य

वस्त्र धोये भये साफ पहरना, और शक्ति होय तो अतर गुलाबजल केवडाजलसें सित करणा, पोसाखी अतर, पनडी औरखस ठंडकालेमें हीना मसाला १ विछोणे पिलंग वगेरे सोनेके साधन, साफ सुघडपणे रखना २ हवा दक्षिणकीसर्वोत्तम है र्णो ३ हायपेर कान और गुप्तजगे मैलजमणे नहिं देणा ४ गरमी मोसममें महीन कपडे ना, थंड कालेमें गरम, वो कपडे वृजनमें, ज्यों कम होय त्यों अच्छा ५ पांच २ दिनसें तकराय दलिद्र निकाल देणा इससें [illegible] संचरता है ६ कसरतकरणी प्रमाणगुजब खाणी, घोडे वगेरे असवारीपर सुखसें वैठीजे तो वैठणा, कष्ट मालूम एसानहीं वैठणा हण हलके वजनके, जिसमें मनुष्यकों हार कुंडल अंगूठी, आनंद श्रावकने उपासग मेंकुंडल अंगूठी दोयही मोकली पहरणे [illegible] ८ मल मुत्रकी संका रोकणी नहीं, न संका पैदा करणी नहीं, मूत्र तथा दस्तकी हाजतरहते स्त्री गमन करणा नहीं

संगका यहोत नियम रखणा ९ चित्तकी वृत्तिमें यहोत सतोगुणी आनंदीपना रखके वास्ते गुणीपणा रखणेकूं सतोगुणवाले भोजन करणा, दो घडी प्रमान, दो घडी ग्रंथकूं ... परिणाम सब जीवोंपर धरणा, फेर वखत मिले तो, दोपटी सद्गुरुके मंडलमें ... निर्दोष बात (व्याख्यान) सुणना, संसार अनित्य है, इत्यादि विचार करणा, जिस वर्तने रोगहोय इज्जतजाय धनजाय फेर धनकी थामंद होय नहीं, एसावर्तन है ... कुपथ्य है, इनही बातोंसे परभव बिगडता है, ये पथ्यापथ्यका विचार विवेक ... आचार दिनकर तथा राज निघंटसे संक्षेप मात्र लिखा है.

उजाला ८ दुबले अदमीके खाणे योग्य खुराक

बहोत अदमी दिखणेमें पतले और इकेली हड्डीके दिखते हैं, लेकिन ताकतवर हैं है, वाजे पुष्ट और जाडे होकरभी ना ताकत होते हैं, बहोत जाडापणा है सो तनदुरुस्ती पणा नहीं समझणा, और बहोत दुबलापणा और बहोत स्थूलपणा है सो प्राये ... तीका निशान है, शरीरभी बेडोळ दिखता है, खुराकके फेरफारसें, योग्य उपायसें, अदमी ताजे पुष्ट हो जातेहैं चरबीबढकरजाडाभयाअदमी उपायसेंपतले होजाते अब दुबले अदम्योंकों पुष्ट होणे वास्ते नीचे लिखे सो उपाय करणा, दूध ... मिश्री मिलाय थोडा२ दूध दिनमें बहोत वखत पीणा, उनमान मुजब कसरत करणी दंड बैठक मोगरी शक्ति मुजब फेरणी, वो नहीं बणे तो, फजर सांझकीवखत ... कामकरणा, या साफ हवामें फिरणा, जिससे कसरत मिलके दूध हजम होजाय, हमारे दवाखानाकी अमृतवटी, वो पुष्टिकाकाम, पुष्टि खुराकका काम करती है, क्रम २ से, दससेरसें वीससेरतक दूधकों हजम करती है, शरीरमें पुष्टि और ताकत पैदा कर देती हैं, दिन४०लेणा चहिये, तोलेके रु३०। लगते है,गहूं जव मठी चावल दाल इनोमें पुष्टिकारक तत्व रहा भया है, दुबले अदमीके कामका है, केला केरी सफरजंद पनीर ये सब पुष्ट वस्तु खाणे योग्य है, येसब पुष्टिकारक दुर्बलकूं ताकत देती है, लेकिन् इस खुराककूं पचाणे वास्ते महनत करणा चहिये, खुराक खाकर पूरी कसरत शरीरकूं नहीं मिले तो चरबीबढकर शरीर जाडा पड जाता और अशक्त हो जाता है एसी खुराकसे शरीर मजबूत और पुष्ट होणेपीछे ... बदल देणा चाहिये, तनदुरस्तरहे एसा खुराक खाते रहणा, बेमारी होय जिसमें ... चन शक्ति मंद होय उहांतक पुष्टिकारक खुराक ...णा नहीं,और परिश्रमभी नहीं बेमारी मंदाग्नि मिटायकर पीछे पुष्टता करणी.

जाडे आदमीलायक खुराक

जाडे अदमी सब नातकत नहीं ...ते, खूनवाले पुष्ट आदमी शरीरमें मेद चरबी तथा मेदवायूसें जिनोंका शरीर फूलता है वो अशक्त

अदमी पुष्टिकारक खुराक जैसें घी मक्खन तेल मीठा मिश्री वगेरे जो हमेस बहोत खाते हैं विना महनत कियेबिगर एक जगे बैठे रहते हैं, वो ऐसे अथा पुष्ट हो जाते हैं, घी मक्खनादिक शरीरकी गरमीकायम रखणेकूं लोकखातेहै, वो प्रमाणसरही खाणा चहिये जादा खानेमें आवे तो वो पाचन नहीं होकर चरवी शरीरमें एकठी होती है और बेडोल हो जाता है, स्नायु वगेरे चरबीसें रुक जाकर अशक्त करदेता है चरबीके उपर पुड चढ जाता है, ताकतवर जाडे अदमीका शरीर लाल मजबूत सखत र स्थिती स्थापक स्नायुओंकेटुकडोसें बना भया है, और उसपर चरबीका बहोत छोटा तर लगा भया है, ये चरबी खुराककी तंगीसे अथवा उपवास करे तब कमहोती है र फेर चरबी शरीरकूं खपसुरत सुघाट रखती है बधीभइ चरबीसे बहोत स्थूलता र श्वास आखर प्राणांततकभी हो जाता है, मीठा और आटेके सत्ववाला पदार्थभी हनत नहीं करनेवाले अदमीके शरीरमें चरबी बढाता है, फेर दवा थोडाफायदा भाग्य-गसेंही करती है,खुराककी निगेदास्ती उपयोग रखकरप्रमाणमुजब करणा कसरतके अभ्या सें शरीरका जाडा पणा और वजन कम होता है, अति स्थूल शरीरवालेके(खानेलायक दार्थ) चरबीवालेपदार्थ घी मक्खन खांड और आटेके सत्ववाला पदार्थ बहोत थोडा ना, और पुष्टिवाला खुराक जादा हेसो खाना, गहुं जव मटर दाल चना पनीर छाछ हरी कारी कोबिज सफरजंद सलगम नारंगी वगेरे फल पथ्य है, (नहींखानेलायक) अथवा डा खानेलायक पदार्थ, घी मक्खन मलाई तेल खांड (अनाज) साबूदाना चावल मकी गपोली कोकम केरी दाख केला जिसमें तेल है इस तरेका सब सुका मेवा, बिदाम ता निमजा चिरोंजी किष्टा वगेरे तैमें आलू सूरन सकरकंद अरबी वगेरे खाना नहीं, थोडा खाना चा काफी पीनेकी टेब होय तो उसमें दूध बहोत थोडा डालना अथवा सें सुवासित करकेही पीना.

॥ उजाला ९. मगजमज्जातंतूकूं मजबूत करनेवाला खुराक ॥

जिसमें आल्ब्युमीन नामका तत्व जादा होता है वो मगजके मज्जातंतूओंकी पोषन ता है, पौष्टिकतत्ववाले खुराकमें आल्ब्युमीनका कुछ २ अंश होता है, लेकिन वर नामकी बनसपतीमें इसका अंश बहोतही होता है, इसवास्ते सतावर बगेरे किन- उत्तम बनसपतीका पाक तथा मुरब्बा बनाकर खाना चहिये, मगज तथा वीर्यकी इनीवास्ते वैद्यकशास्त्रमें कितनीक उत्तम बनसपती खानी बतलाई है वो दवा मुजब खुराक मुजब खानी बतलाई है गुणमें [illegible] करती है.

भूकोला, शतावर, आसगंध, गोखरु, कौंचकाबीज, आंवले, शंखाहुली.

ये बनस्पती गुणवाली औरभी मुरब्बा बनाकर लइ बनाकर अवलेहीबाटनेसेंभी आवे तो मगजके मज्जातंतू मजबूत होते है बलबुद्धिवीर्य बढता है और मनसंबंधी अधिरना दूर होती है.

निकाला भया मांड वो ठंडा और पोषणकारक होता है इग्लंड वगेरे और मुलकोंमें हेजे की बेमारीमें सूप और ब्राथ देतें है उससें अपणे मुलकमें इस बेमारकों चावलोंका मांड बहोत माफगत आता है एसा पत चाणे गया है (अतीसार) दस्तकी सामान्य बेमारीमे चावलोंका ओसामण दवाका काम देती है दस्त बंध कर देती है दाल हिन्दु लोकोंका जरूरीका नित्य खुराक है, एसा जीमणवार कम होगा जिसमें दाल नहीं होती गी. दाल पोषणकारक पदार्थ है, पुष्टितत्व दालमें बहोत है, कितनीक दालोंमें मांसभी पौष्टिक तत्व जादा है, दालोंकी अनेक जातमें मुख्य मूंग है,मसूरकी दालभी हलकी बहोत निर्बल अदमीकों दाल अछीतरे बाफ उसमें सींढ्यानिमक हींग धाणा जीरा णेके पत्ते डालके निताराभयाजल दियाजाता है, तो पुष्टि और दवाका काम देती है, मूंग वोंपरिहे तूरकी दुसरे नंबरकी दाल है, सो पीछाडी लिखाही है, दूधभी बेमारको बहोत छी खुराकहे पुष्ट करे पेटमे बोझाभी नहीं करता है लेकिन् किसी २ कूं माफगत नहीं ता है, दूधकूं बहोत ऊकालणा नहीं पचणेमें भारी हो जाता है, और उसके अंदरका ष्टितत्त्वभी कम हो जाता है, दूहाभया दूधमेसें हवा निकालणे अथवा दूधमें कोई नुकनिकारक वस्तुकूं निकाऊणेकूं पांच मीन्ट अंदाजन जरा गरम करणा दूध नहीं देणेमें वि एसें रोग बहोत कम है, मंदाग्निवालेकूं दूधसें आधा पाणी अथवा तीसरे भागका ड समेत गरम कर पिलाणा, माके दूधकी गेर हाजरीमें बचेकूंभी एसा जलवाला दूध लाणा जल डालणेसें जो लोक नुकशान मानते है, वेसा दूध जल डालाभया कोई नुकन नहीं करता, (अमृतवटी) बालक तथा वुड्ढेकी बेमारको दूध मिश्रीके संग देणेसें दुरस्त कर देती है, जीर्णज्वर दुबला हो गया होय अतिसार संग्रहणी मस्सा उलटी क्तपित्त मरोडा क्षय वादी पित्तकाकास इतने रोगोंकों मिटाकर वदनमें खून वीर्य क्त बढाती है, आयु बढाती है, पाचनशक्ति बढाती है, कोडलीवरआइल डाकदरी ा दवामें देते है, पुष्ट है, इसवास्ते रोगीके खुराकमें दाखिल किया है, ताकतवरी ा या खुराक जिस रोगमें देणा होय जहां कोडलीवरआइल डाकदर लोक देते हैं, रोग, मूख मरणेमें भये रोग कंठवेल कान नाकमेंसें पीप वहताहे, सो रोग फेफसे गेजा (न्यूमोनिया) कास श्वास (ब्रोनकाइटीस) फेफसेके पुडतका वरम खुलखुगा (बचेका बडाखास) निर्मलता इन सबोंमे वो लोक देते हैं, इसमें बदवो हलके दरजे मीं होती है बढियामें नहीं गरम पैता है, दूधमें इसकी टिकिडियां सहजसें लिये ा है माल्टाइनके संगका कोडलीवर [illegible] राककी गरज सारती है, और जलदी म होती है,माल्टाइन जव तथा ओट नामके [illegible]के मिलते धनाजमेंसें वनाई जाती है ारके पीणे लायक जल) साफ निर्मल पाणी बेमार और तनदुरस्त दोनोंकों अछा गंदी खाईका जल सुबुद्धि प्रधाननें एसा साफ कर राजा जितशत्रूकूं पिलाया ।

पड़ा आश्चर्यवंत हुआ) ये वृत्तांत ज्ञाना मृगमें है इनमेंसें या अंग्रेजी दवाईसें (रिमर्डत) फ्र
अथवा पहले लिखा ज्यूं तीन उफालका उकाला ठंडा भया छानकर देना डाक्टर लो
देशमें सख्त बुखारकी प्यासमें एसे जलमें थोडा २ बरफ मिलाकर पिलाते हैं. (नि
का पानक) कितनेक बुखारमें नीबूका पानी देते है, नीबूकी दो फाड कर एक बरतनमें
मिश्रीपीसकर दोनोंको भरना उसपर उकलता पानी डालना ठंडा भये बाद लि
या नींबूका पानी २॥ तोला मिश्री १। तोला दोनोंको एकजगे मिलाकर उकलता
डालना इस जलसें कफ श्लेष्म खांसी कंठ पेटका रोग ये सब मिटता है, (जवखार
छड़ेगये जव एक पड़ा चमचाभर दो तीन चीमटीभर बूरा नींबूकी फाड एक बर
रखकर ऊपरसे उकलता जल डालना ठंडा भयेबाद छानकर पीना इसजलमें मूत्र
का दरद अग्नीउष्णीयेसब मिटती है.

॥ किरण ३ री ऋतुचर्या आहार तथा विहार ॥

रोग होनेके बहोतसे कारण विवहारनयसें मनुष्यकृत है, तेसें निश्चयनयसें
स्वभावजन्य कर्मकृतभी हैं, उसमें पांच समवायोंमेंसे काल अप्रेश्वरीपना या
ऋतुओंके, फेरफारका समावेश होता है, बहोत गरमी और बहोत ठंड ये क
कुदरती कृत्य है, मनुष्य उसकूं किसीतरे रोक नहीं सकता और वस्तुओंके संयोग
रासायणिक प्रयोगोंसें कुदरती मामलेमें फेरफार ऊपर अदमी थोडीदेर जय पा स
जेंसेके मोसम विगर वरसाद वरसा देणा लेकिन् जो अपने स्वभाव वस कुदरती
होते रहता है वो सब प्राणियोंके हितका विचार करे तो अछा है इसवास्ते अदमी
वातका उद्यम करना फजूल है, कुदरती ऋतूके फेरफारसें हवामें फेरफार होकर
अंदरकी गरमीसरदीमें हेरफेर होता है, इसवास्ते एसी वखतमें हवाकूं सुधारना
असर नहीं होसके एसा उपाय करना ये मनुष्यका काम है, वर्षकी जुदी २ ऋतुमें
और ठंडीसें अपने आसपासकी हवामें और हवाके योगसें अपने शरीरमें जो जो
होताहै उसके अनुसार आहार विहारका नियम रखना इसका नाम ऋतुचर्या है. हवामें
और ठंडी ये दोय गुण मुख्य रहा भया है इन दोनोंका प्रमाण हमेस एक सदृश
नहीं द्रव्यक्षेत्र कालभावसें उनोंमें फेरफार देखनेमें आता है भरतक्षेत्रकी पृथ्वीके
और दक्षिण किनारेपर आयेभये प्रदेशोंमें अत्यंत ठंड गिरती है, इस पृथ्वीके गोलेके
रेखाके आस पासके प्रदेशोंमें बहोत गरमी पडती है और दोनुं अर्द्धगोले के
प्रदेशोंमें गरमी और ठंड बराबर रहती किनारे क्षेत्रका विचार करे तो उत्तर
आसपासके प्रदेशोंमें अर्थात् सेवेरिया वगेर मुलकोंमें ठंड बहोत गिरती है, उसके
तातार टीबेट और अपने हिन्दुस्तानके उत्तरभागमें गरमी और ठंड बराबर
उसकी नीचे विषुवद्वृत्तके आसपासके मुलकोंमें अर्थात् दक्षिण हिन्दुस्तान और।

याने लंकामें धूप घहोत गिरती है, और ऋतुके फेरफारसे उहां फेरफारभी होता है, अर्थात् इन देशोंमें चारे मास एक सदृश ठंड या एक जैसी गरमी नहीं रहती ठंड और गरम ऋतूकी पृथ्वीपर सूर्यकी चालपर आधार है भरतक्षेत्रके उत्तर तथा दक्षिण किनारेपर देशोंमें सूर्य कभीभी सिरेपर सीधी लकीरपर नहीं आता छ महीना उहांपर सूर्य दिखाई भी नहीं देता बाकीके छ महीनोमें उहां सूर्य अपने देशमें जेसाउदय अस्त होता जैसा शांखा प्रकास दिखाई देता है, कारण इसका एसा है, सूर्यके उदयहोणेके १८४ मंडल जंबूद्वीपपन्नती सूत्रमें लिखा है, जिसमें कितनेक मंडल तो पृथ्वीके ऊपर आकाश प्रदेशमें मेरूके पाससे सरू है कितनेक मंडल लवण समुद्रमें है सम भूतल मेरूके पास है; उहांसे सातसे नव्वे जोजन ऊपर आकाशमें तारामंडल सरू है, सूर्य पहले है, एकसो दश योजनमें सच नक्षत्र तारामंडल है, जमीनसे नवसें जोजनपर अंत है, सूर्यके विमाण पृथ्वीसे चंद्रकी विमान पृथ्वी असी जोजन उंची है, सच तारे मेरूकी प्रदक्षणा फिरते है सात ऋषिके तारे मृगादिक ध्रुवकी प्रदक्षणा फिरते है, हमेसांके वास्ते मुलकोकी

। या ठंडी कायम सिद्ध नहीं होती जिस हिमालयके पास आजदिन वरफाण ह ठंडा देस चण रहा है, ये देस किसी कालमें गरम था एसा सिद्ध होता है, ग गरमीके समच जच वरफाण गलता है, तब नीचेसें मैंमांथ याने मरेभये हाथी लते है, ये हाथी विनागरम देशविना होते नहीं और वरफाणमें क्या खाते थे वस लक कोइदिन गरम ओजपर था हाथीयोके रहनेलायक चन था एकाएक चरफ गिरा दचगये सो केइ चेर निकल चूके है, चरफमें दबी वस्तु केइ कालतक नहीं बिगडती य मध्य हिन्दुस्तान समशीतोष्ण देशमेंभी सूर्यके नजीक पणेसें अथवा दूरपणेसें जुदे उकोंमें कम वेसी गरम और ठंड गिरती है, इसवास्ते वर्षके अथवा ऋतूके दो अयन गिणे है उत्तरायन उष्णकाल दक्षणायन शीतकाल पृथ्वीके गोलका एक नाम मुकररकर उसके में पूर्व पश्चिम एक लकीर कल्पनकर उसका नाम पश्चिमी विद्वानोंनें विषुववृत धरा नधर्मवाले मध्य प्रदेशकानाम मेरूधराहै हमारे सर्वज्ञ सिद्धांतसें पृथ्वी गोल थालकी सि है, असली दरियाव खाईके तोर जंबुद्वीपचीचमें लाख जोजनका, जिसके बाहिरकर दो त योजनका है, पश्चिमी विद्वान गेंदया नारंगीके डोल पृथ्वीकी गोलाई मानी है, और न घहोत थोडी मानते है, सर्व पृथ्वीकी परिक्रमा ८२ दिनकी रेल वोट द्वारा देणका कहते जो कुछ देखा स्यात् कथंचित् सत्य होता है, [illegible] दिवालचीण पास दक्षणदिसाकी थोडी तीहै बाकी वरफमे दबणेसे नहीं दिखती, जंगत [illegible] होत लंबी चोडी है, दरियाव सगर चक्र की वखत दक्षिणकी तरफसें खुली ज[illegible] पृथ्[illegible] या घहोत जमीन जलमें चली गई उ- मेंभी दरियाव चक्कर इधरहीसे खा गया ऋषभदेवके वखत जो नकसा भरत क्षेत्र दीपका था सो विगड गया औरही सिकल दिखणे लगी दरियावके आये जलमें चर-

वडा आश्चर्यवंत हुवा) ये वृत्तांत ज्ञाता सूत्रमें है इसतरेसें या अंग्रेजोंकीतरे (डिसटीलड) ...
अथवा पहले लिखा ज्यूं तीन उकालेका उकाला ठंडा साफ छाणकर देणा डाक्टर ...
हेजेमें सखत बुखारकी प्यासमें एसे जलमें थोडा २ बरफ मिलाकर पिलाते हैं, (नीं...
का पानक) कितनेक बुखारमें नींबूका पाणी देते है, नींबूकी दो फाड कर एक
मिश्रीपीसकर दोनोंकों धरणा उसपर ऊकलता पाणी डालणा ठंडा भये बाद
या गूंदका पाणी २॥ तोला मिश्री १। तोला दोनोंकों एकजगे मिलाकर ऊकलत
डालना इस जलसें कफ श्लेषम हांफणी कंठवेलका रोग ये सब मिटता है, (जवन
छडेभये जव एक वडा चमचाभर दो तीन चीमठीभर चूरा नींबूकी छाल एक
रखकर ऊपरसे ऊकलता जल डालणा ठंडा भयेबाद छाणकर पीणा इसजलसें बुख
का दरद अमूंझणीयेसब मिटती है.

॥ किरण ३ री ऋतुचर्या आहार तथा विहार ॥

रोग होनेके बहोतसे कारण विवहारनयसें मनुष्यकृत है, तैसें निश्चयनयसें ...
स्वभावजन्य कर्मकृतभी हैं, उसमैं पांच समवायोंमेंसे काल अग्रेश्वरीपणा धार
ऋतुओंके, फेरफारका समावेश होता है, बहोत गरमी और बहोत ठंड ये काल
कुदरती कृत्य है, मनुष्य उसकूं किसीतरे रोक नहीं सकता और वस्तुओंके संयोगसें
रासायणिक प्रयोगोंसें कुदरती मामलेमें फेरफार ऊपर अदमी थोडीदेर जय पा सक
जैसेके मोसम विगर वरसाद वरसा देणा लेकिन् जो अपने स्वभाव वस कुदरती ...
होते रहता है वो सब प्राणियोंके हितका विचार करे तो अछा है इसवास्ते अदमीं...
वातका उद्यम करना फजूल है, कुदरती ऋतूके फेरफारसें हवामें फेरफार होकर ...
अंदरकी गरमीसरदीमें हेरफेर होता है, इसवास्ते एसी वखतमें हवाकूं सुधारना ...
असर नहीं होसके एसा उपाय करना ये मनुष्यका काम है, वर्षकी जुदी २ ऋतुमें ...
और ठंडीसें अपने आसपासकी हवामें और हवाके योगसें अपने शरीरमें जो जो ...
होताहै उसके अनुसार आहार विहारका नियम रखना इसका नाम ऋतुचर्या है. हवामें ...
और ठंडी ये दोय गुण मुख्य रहा भया है इन दोनोंका प्रमाण हमेस एक सरखा
नहीं द्रव्यक्षेत्र कालमावसें उनोंमें फेरफार देखनेमें आता है भरतक्षेत्रकी पृथ्वीके ...
और दक्षिण किनारेपर आयेभये प्रदेशोंमें अत्यंत ठंड गिरती है, इस पृथ्वीके गोलेके
रेखाके आस पासके प्रदेशोंमें बहोत [illegible] रहती है और दोनुं अर्द्धगोलेके
प्रदेशोंमें गरमी और ठंड बराबर रह [illegible] क्षेत्रका विचार करे तो उत्तर ...
आसपासके प्रदेशोंमें अर्थात् सेवेरिया वगैर मुल्कोंमें ठंड बहोत गिरती है, उसके ...
तातार टीबेट और अपने हिन्दुस्तानके उत्तरभागमें गरमी और ठंड बराबर ...
[illegible] नीचे विषुववृतके आसपासके मुल्कोंमें अर्थात दक्षिण हिन्दुस्तान और ...

याने लंकामें धूप बहोत गिरती है, और ऋतुके फेरफारसे उहां फेरफारभी होता है, अर्थात् इन देशोंमें बारे मास एक सदृश ठंड या एक जैसी गरमी नहीं रहती ठंड और गरम ऋतूकी पृथ्वीपर सूर्यकी चालपर आधार है भरतक्षेत्रके उत्तर तथा दक्षिण किनारेपर में सूर्य कभीभी सिरेपर सीधी लकीरपर नहीं आता छछ महीना उहांपर सूर्य दिखाई नहीं देता बाकीके छछ महीनोमें उहां सूर्य अपने देशमें जेसाउदय अस्त होता जैसा ही प्रकास दिखाई देता है, कारण इसका एसा है, सूर्यके उदयहोणेके १८४ मंडल जंबूद्वीपपन्नती सूत्रमें लिखा है, जिसमें कितनेक मंडल तो पृथ्वीके ऊपर आकाश प्रदेशमें मेरूके पाससे सरू है कितनेक मंडल लवण समुद्रमें है सम भूतल मेरूके पास है; जिसे सातसे नव्वे जोजन ऊपर आकाशमें तारामंडल सरू है, सूर्य पहले है, एकसो दश योजनमें सब नक्षत्र तारामंडल है, जमीनसे नवसें जोजनपर अंत है, सूर्यके प्रमाण पृथ्वीसे चंद्रकी विमान पृथ्वी असी जोजन उंची है, सब तारे मेरूकी प्रदक्षणा करते है सात ऋषिके तारे मृगादिक ध्रुवकी प्रदक्षणा फिरते है, हमेसांके वास्ते मुलकोकी गरमी या ठंडी कायम सिद्ध नहीं होती जिस हिमालयके पास आजदिन वरफाण करके ठंढा देस बण रहा है, ये देस किसी कालमें गरम था एसा सिद्ध होता है, कारण गरमीके सबब जब वरफाण गलता है, तब नीचेसें मेंमांथ याने मेरभये हाथी निकलते है, ये हाथी विनागरम देशविना होते नहीं और वरफाणमें क्या खाते थे बस ये मुलक कोइदिन गरम ओजपर था हाथीयोके रहनेलायक वन था एकाएक वरफ गिरा और वे दबगये सो केइ वेर निकल चूके है, वरफमें दबी वस्तु केइ कालतक नहीं विगडती है अब मध्य हिन्दुस्तान समशीतोष्ण देशमेंभी सूर्यके नजीक पणेसें अथवा दूरपणेसें जुदे जुदे मुलकोंमें कम वैसी गरम और ठंड गिरती है, इसवास्ते वर्षके अथवा ऋतूके दो अयन गिणे जाते है उत्तरायन उष्णकाल दक्षणायन शीतकाल पृथ्वीके गोलका एक नाम मुकररकर उसके बीचमें पूर्व पश्चिम एक लकीर कल्पनकर उसका नाम पश्चिमी विद्वानोंनें विषुववृत धरा है, जैनधर्मवाले मध्य प्रदेशकानाम मेरूधरा है हमारे सर्वज्ञ सिद्धांतसें पृथ्वी गोल थालकी सि... है, असली दरियाव खाईके तोर जंबुद्वीपबीचमें लाख जोजनका, जिसके बाहिरकर दो लाख योजनका है, पश्चिमी विद्वान गेंदया नारंगीके होल पृथ्वीकी गोलाई मानी है, और जमीन बहोत थोडी मानते है, सर्व पृथ्वीकी परिक्रमा ८२ दिनकी रेल बोट द्वारा देणका कहते है, जो कुछ देखा स्यात् कथंचित् सत्य है ... की दिवालचीण पास दक्षणदिसाकी थोडी ... है बाकी वरफमें दबणेसे नहीं दिखे, जगत ... बहोत लंबी चोडी है, दरियाव सगर चक्र ... के वखत दक्षिणकी तरफमें खुली जमें पृथ्वी ... या बहोत जमीन जलमें चली गई उ... समेंभी दरियाव चक्कर इधरहीसे खा गया ऋषभदेवके वखत जो नकसा भरत क्षेत्र ... द्वीपका था सो विगड गया औरही सिकल दिखणे लगी दरियावके आपे जलमें वर-

फाण जमगया बुद्धिवान् फिरते हैं, मगर जा नहीं सकते है, खोज करते २ जैसे अमे
रिका नई दुनियाका पता लगा कालांतरमें खोजी ओर बुद्धिवान उद्यमीकों फेर भी
पते मिलेंगे सर्वज्ञ तीर्थंकरने जो केवल ज्ञानद्वारा देखके प्रकाश किया है, सो तो स
यथार्थहे वाकी सब पदार्थ निर्णय उनोंका कहा सत्य दीख रहा है, और सत्य है तो
केसें सच न होगा हमारे समझमें जो बात नहीं बेठे वो हमारी भूल है, इतनीभी व
नमें गोलाइ पृथ्वीकी मानणी प्रमाणसें सिद्ध नहीं होती लेकिन भरत क्षेत्रकी देश
ये हिसाब हम न्याय पूर्वक मंजूर करते हैं, सूर्य छ महीने तक लकीरके उत्तर त
उष्ण कटिबंधमें फिरता है, छ महीने विषुववृतकी दक्षण तरफके उष्ण कटिबंधमें फि
है, जब सूर्य उत्तरके तरफ फिरता है, तब उत्तरके तरफका उष्ण कटिबंधके प्रदे
उत्तर सूर्यकी किरणे सीधी गिरती है, इससे उस प्रदेशोमें सखत ताप गिरता है नि
दक्षिण तरफ जब फिरता है, तब दक्षण तरफके उष्ण कटिबंधके प्रदेशोपर दक्षण
की किरणे सीधी गिरती है तब सखत ताप गिरता है, अपणा हिन्दुस्थान देश नि
याने मध्यरेखाकी उत्तर तरफ आया भया है दक्षिण हिन्दुस्थान उष्ण कटिबंधमें
वाकीका सब उत्तर हिन्दूस्थान समशीतोष्ण कटिबंधमें है, इसतरे सूर्य उत्तरा
महीनेका होता है, तब उत्तर तरफ ताप जादा गिरता है, दक्षण तरफ कम, सूर्य द
णायन छ महीनेका होता है, तब दक्षण तरफ गरमी जादा उत्तर तरफ कम, उत्तरा
छ महीने फागण चैत वैशाख जेठ आषाढ सावण दक्षणायनके छ महीने भादवा आ
काती मिगसर पोह माह छ महीने उत्तरायनके क्रमसें ताकत घटाणेवाले हैं, दक्षणा
उपनर २ क्रमसें ताकत वढाणेवाले हैं, वर्ष भरमें सूर्य बारे रासीपर फिरता है रा
रासीमें ऋतु बदलती हैं एक वर्षकी छ ऋतु कुदरती है न्यारें २ क्षेत्रोंमें जुदी २
एकही वखत नहीं बेठती है, तोभी प्राये आर्यावर्त हिन्दुस्तानके देशोमें इस
तोर ऋतू इसमुजब गिणे जाती है वसंत ऋतू फागुण चैत, ग्रीष्म ऋतु वैशाख जेठ,
प्रावृट ऋतु असाढ सावण, वर्षाऋतू भादवा आसोज, शरदऋतू कार्तिक मिगसर, हे
[illegible] पोह माह, इहां वसंतऋतूका आरंभ फागुणमें गिणा है लेकिन अपणे
[illegible] जैनाचार्योंनें चिंतामणी ग्रंथमें संक्राती पर लगाई है और यथार्थभी है जैसे
वृषकी संक्रती ग्रीष्म ऋतू, मिथुन कर्ककी प्रावृट ऋतू, सिंह कन्याकी वर्षाऋतू, तु
[illegible] शरदऋतू, धन मकरकी हेमंतऋतू, [illegible] मेष वरसे ओले गिरे तो [illegible]
[illegible] है [illegible] लिखेंगें, तेसें [illegible] हेमंतऋतू वसंतऋतू, संक्राती [illegible]
[illegible] [illegible] पर्वा धीमे २ [illegible] अगली ऋतुकी प्रदन [illegible]
[illegible] हो, [illegible] है सो [illegible] थाम थाकी पनानी है, जेसे टंड [illegible]
[illegible] इच्छा, [illegible] [illegible] तप [illegible] टंड जल आदि [illegible]

छा प्राणी स्वतः साधन करताहे केइयक इंग्लंड कावल वगेरे देशमे ठंड हमेश जादा उहां वैसाही साधन प्राणी करता है देखो इस हिन्दुस्थानमें ग्रीष्म ऋतुमें क्षेत्रकी सीरसे चार पहाड वहोत ठंडे है उत्तरार्धमें विजयार्द्ध जिसकूं इस वखत लोक हेमा-
या कहते है, दक्षणमें नीलगिरी, पश्चिममें आबू, पुरबमें दरजलिंग, कालांतरमें इनोकी
सीर वदल जाना ताजुब नहीं गरमसेंसरद, सरदसें गरम, हवाके फेरफारोंकों तों
पणे समझ सकते हैं, जितना समझतें है, उस मुजब यथा शक्ति उपायभी करते हैं,
किन ठंढ और ताप ऋतूओंका फेरफार अपणे वदनमे क्या क्या फेरफार करता है,
ौर अलग २ छव ऋतू दो दो महीने वातावरणमें किस २ तरेका फेरफार करता है,
सकी अपने शरीरकूं कैसी असर होती है, ये वात अपने लोकोंमें वहोत कम समझते
गें इसवास्ते छव ऋतूओंका संक्षेपवर्णन इहां करता हूं, शरीरकी हिफाजत और निरोग
खणेवाले समझदारोंकों ये निर्णय वहोतही फायदेमंद होगा, हेमंत तथा शिशिर
ऋतूमरठंड कालेमें खाये भये पदार्थोंसें वदनमे रस याने कफका संग्रह होता है वसंत
तू लगते गरमी गिरणी सुरू होती है, उससें शरीरके अंदरका कफ पिघलणे लगता
जो उसका शमन इलाज नहीं करणेमें आवे तो खास कफ ज्वर मरोडा वगेरे
ा होता है, वसंतमें कफकी शांति भये पीछे ग्रीष्मके सखत तापसें शरीरके
दरका जरूरी चहिये एसा रहा भया कफ जलणे याने क्षय होणा सुरू होता है, तब
यु वदनमें गुप्तपणे एकठी होणी सरू होती है, वर्षाऋतूकी हवा चलतेही दस्त उलटी
हार वगेरे वायुसें सन्निपातादि कोप अग्नि मंद खून विकारादि होता है, उस वायुकों
टाणे गरम इलाज करणा अथवा अज्ञानपणे गरम खानपानसें पित्तका संचय होता है
दऋतू लगतेही सूर्यकी किरण तुलसंक्रांतीमें सोलेसे होकर सखत ताप गिरता है,
ेसी किरण और किसी संक्रांतिमें भी नहीं होती है, ये वात सूर्यपन्नत्तीसूत्र तथा
सूत्रकी लक्ष्मीवल्लभी टीकामें लिखा है लोकीक कहना वटभी है (दुहा–आसोजोंकी
में, जोगी होगये जाट ॥ ब्राम्हण होगयेसेवडे, करसे धण गये भाट ॥ १ ॥ धूपके
से पित्तका कोप होकर पित्तका बुखार मोतीझरा पाणीझरा सन्निपात उलटी वगेरे अनेक
द होता है, तब यातो ठंडे इलाजोंसें अथवा हेमंतऋतूकी ठंडी हवासें या शिशिरऋ-
ी तेज ठंडसे पित्त शांत होता है, लेकिन् उस हेमंतकी ठंडसें खानपानमें पौष्टिक तत्व
ो जाता है, जिससें कफका संग्रह होता है, वो वसंतऋतूमें कोप करता है, हेमंतमें
का संचय वसंतमें कोप, ग्रीष्ममें वायुका संचय प्रावृट्में कोप, वर्षामें पित्तकासंचय
में कोप, इसवास्ते वसंत वर्षा और शरद इन तीनोंही ऋतूमें रोगकी जादा उत्पती
ी है, खानपान तथा विपरीत विहारसें वाय पित्त कफ विगडकर सब ऋतूओंमें रोग
ाता है अपणा २ ऋतूमें जादा कोप करता है, जिसमेंभी वैसी २ प्रकृती

वालोंकू जादा, वसंतमें कफ सर्वोके उपद्रव करता है, लेकिन् कफकी तासीरवालेकूं जा
इसीतरे औरोंकाभी समझ लेना.

॥ वसंतऋतू ॥

वसंतऋतू, जो ठंड कालेमें चिकणा और पुष्ट खुराक खाये जाता है उससे कफका संच
होकर ठंढ है सो कफकूं अछीतरे शरीरमें रखता है वसंतकी धूपसें गलना सरू होता
कफ जादेतर मगज छाती और सांधोंमें रहता है, शिरका कफ पिघलकर गलेमें उतर
है उससें जुखाम कफ खासीका रोग होता है छातीका कफ पिघलकर होजरीमें उ
है, उससें अग्नि मंद होती है और मरोडा होता है, इसवास्ते वसंतऋतू लगतेही क
कफका यत्न करणा मुख्य इलाज दो तीन है जो तासीरकूं माने सो कर लेना
शांति करणी आहार विहारसें, १ या उलटी जुलावकी दवासें कफकूं निकाल डाल
जिसकूं कफकी वहोत तकलीप होय और शरीरमें शक्ति होय वो तो उलटी जुलाव
बालक बुढ्ढा नाताकत कभी लेना नहीं सोले वर्षतक हरडे रेवचीणीका सत वगेरे
रोगपर सामान्य दस्त देना तेज जुलाव देना नहीं, (वसंतऋतूका नियम) । भारी
ठंडाअन्न, दिनकी नींद, चिकणा खट्टा तथा मीठा पदार्थ नया अनाज इनोंको छ
एक वर्षका पुराणा अन्न सहत कसरत जंगलमें फिरणा तेलमर्दन पगचंपी ई
उपाय कफकी शांति करता है पुराना अनाज कफकूं कम करे सहत
तोडे, कसरत तेलमर्दन दवाणा शरीरके कफकी जगे छुडाय देता है, लूखी रोटी
महनत मजूरी करनेवाले गरीबोंकों ये मोसम बिगाड नहीं करती माल खाकर ए
बैठणेवालेकूं नुकशांन करती है तभी तो पूर्ण वैद्योकी सलासे मदनमहोत्सव राग रंग
जल अबीर गुलालादि खेल बगीचोमें जाणा,इत्यादि चला होगाजिसमें धर्मी पुरुष तो
दावादमें परमेश्वरका रथ फागुण महोछवादिक निकालकर सैल करते है,कामी पुरुषोंका
महोछ्व गवरां तथा होली वगेरोंसें परिश्रम करते हैं, दालिये बडे कफोछेदक
खेलतमासेके वाहने रातकूं जाग परिश्रमसें कफ घटाते हैं, लेकिन् होलीमें असंबद्ध
बोलते हैं, ये रूढी बहोत खराब है इस भंडचेष्टाकूं छोडणा अछा है इस बकणेसें
तंतु कम जोर होकर बदनमें तथा बुद्धिमें खराबी होती है प्राये दो हजार वर्षसें ये
चेष्टा वाममार्गियोके मतकी है लोकोने ए मंगलीक माना है कूंडापंथियोका ये
मुख्य है ॥ मारवाड लोकोंमें बडी भूल है, जिस्सें नुकशांनी पाते है, लेकिन्
नहीं ऋतु विपरीत मनोकल्पित आचरणा चली अब तो कूएमे भंग गिर गई
वो कहणा वट, सत्य वणपडी के, हमकूं तो रातींधा भाभेजीने भजलोई राम, सोमरा
तो बाजे २ इस बातोंकों रोकेभी चाहे लेकिन् परधणियाणीयोंके सामनें विलीसें
डरनाही पडे वसंतमें ठंडा खानेसे बडाई नुकशान सो शीलसातमकूं सब ठंडा

। नुकशानकारी, इस ऋतूमें सो गुडराव गुलपपडी अवस्य इस मोसममें खाते हैं,
ीके नामका बाहना अरे कुलवंती लक्ष्मीयों विचार करो दयाधर्मसें विरुद्ध और
नुकशान करता एसा खानपानसे क्या फायदा है, जिस शीतलादेवीकूं पूजते
पीढिया गुजर गई जब बच्चोंकों ये रोग माके दूधका विकार निकलता था तो काणे
दरूप लुले लंगडे होते थे हजारों मरते थे जिसकों खोदके निकाल डाला बालकों
संकट टाल दिया ऐसे प्रत्यक्ष देव तुम अंगरेजोंकों क्यो नहीं पूजते वो आज
के नामसे विख्यात तुम कलयुगमें इनोंकों दशमा अवतार प्रत्यक्ष विष्णुका स-
रुढीपर नहीं चलना, तत्वविचारणा वाजे औरते तीन २ दिन ठंडा खाती है,
मतलब क्या निकलता है, रोग शीतलाकातो डाकदरोंनें निजोखम कर दिया,
में किसी महापुरुषनें सत्तमीकों शीळपालणा चूलेकों नहीं सिलगाणा अर्थात् उप-
रना कहा होगा, जिससे कफकी और कर्मोकी निवृत्ती हो जावै, तुम लोकोंनें
लके वसये मामला सरू कर दिया अवल तो एक दोयनेही सरू किया होगा क्रमसें
;, जैसें दिल्लीमें, पनघटपर किसी औरतका घाघरा खुल गया लोकोंनें कहा
पड गयारे घाघरा पड गया, दूर खडेकूं सुनाई दिया आगरा जल गया, आख
साहतक पहुंचीके आगरा जल गया आखर तहकीकातसे घाघरा पडणा सिद्ध
दुनियाका तो ऐसा ढंग है ॥

॥ ग्रीष्म ऋतु ॥

ग्रीष्म)गरमीमें बदनका कफ सूकणे लगताहै तब उस कफकी खाली जगे(हवा)वायु
रती है इस मोसममें जैसें सूर्यका ताप जमीन केऊ परके रसकसकूं खेंच लेता है तैसें
योंके शरीरके अंदरके कफरूप प्रवाही बहणेवाला पदार्थोंकूं शोषण करता है इस
सावधानपणेसें उपाय जरूर करना इस मोसममें जो गरम पदार्थ खानेमें आवे
डा नुकशान होता है रस सूके जितना जो पीछा भरती होताजावे वायुकूं जगे
मिले ऐसे पदार्थ खाने पीणे चाहिये कुदरती पैदा भई वस्तु मधुर रसवाली इस
ममें चहिये, सो मिलती भी है देशांतरोंमें, जैसें केरी, आंब, फालसा, संतरा, नारंगी,
ी नेबु जामुन वगैरे इस मुजब वरताव करना, १ खारा तीखा खट्टा और लूखा
थं कसरत तेमें धूप अग्नि ये सब चीजें रसकूं सुकाकर गरमी बधाती है तैसें
न मसाला अथाणा चटणियां मिरचां वगैरे हमेसां ही बहोत खानेमें नुकशान करती
स मोसममें बहोतही करती है मीठा ठंडा हलका और रसवाले पदार्थ जादे खाना
समें क्षय होता रस पैदा होता है भाग्यवान लोकोंनें दहीका पाणी हार मिश्री मिलाय
रंद खाणा शरबत मुरब्बा पना इत्यादि खाना पीना तळघर तह खानेमें बैठना रक्त-
त रोगमें जो पथ्य आगे लिखा है सो सब इन मोसममें पथ्य समझना स्त्री गमन ६

दिनसें अथवा पनरे दिनसें पथ्य लिखा है दुपहरकों, शक्ती मुजब, गरीब साधारण
गुलाब अनार नारंगीके बढिया सरबतोंकी एवजीमें अंबलीका पाणी कर उसमें
अथवा पुराणा गुड मिलाकर पीणा अंबली हमेसां खाने लायक चीज नहीं है
तीकूं माफगत आवे तो गरमीकी सखत मोसममें साल उतार अमलीका सरबत
करता है रोटीके संग खानेसें भी फायदेवंद है ॥

॥ वर्षा प्रावृट् ऋतु ॥

चार महीने बरसातके है मारवाडमें आद्रासें, दक्षिणमें मृग नक्षत्रसे, वर्षात
सरू होती है ग्रीष्ममें वायूका संचय भया होता है रस सूकनेसे ताकत घटी
है जठराग्नि मंद भई होती है जलके कणों समेत जब बरसाती हवा चलती है
सता है पुरानेमें नया पाणी मिलता है ठंडा पाणी बरसणेसें शरीरकी गरमी
होकर पित्तकूं बिगाडती है जमीनकी बाफ और खटासवालापाक पित्तकूं बधाय
कफकूं दबानेका प्रयत्न करता है और पालर पाणी मेला कफकूं बढाय वाय पित्त
ता है इसतरे इस मोसममें तीनों दोषोंके आपसमें झगडा चलता है इसवास्ते
दोषोंकी शांतिवास्ते युक्ति पूर्वक आहार विहार रखणा वर्षाऋतूका बरताव
करणा, जठराग्नि प्रदीप्त करे सब दोषोंकों बराबर रखे ऐसा खान पान करणा
रस खाना १ बण सके तो ऋतू लगते ही हलकासा जुलाब लेणा खुराकमें
पुराणा अनाज बरतणा २ मूंग और तूरकी दालका ओसावण उसमें छाछ डालके
फायदेवंद है इस मोसममें दहीमें सेंचल सींधा या सादा निमक डालके खाणा
है लोक मूर्खताईसें गरमी मोसममें दही खाणा अछा समझते हैं वेसा है नहीं,
मालम देता है लेकिन् पचती बखत पित्त बढाता है उलटा गरमी करता है
खानेसें पित्त शांत करता है बरसादमें दही वायूकों शमाता है अग्नि प्रदीप्त
युक्ति विना खाया भया दही सब ऋतूमें नुकशान करता है बरसात तथा हेमंत
डाला भया दही पथ्य है ३ छाछ नीबु केरी वगेरे खट्टे पदार्थ और मोसमसें इस
जादा पथ्य है प्रकृतिके अनुसार प्रमाण मुजब सबकूं ये चीज इस मोसममें
नदी तलाव कूएके पाणीमें बरसादका मेला पाणी मिलता है इसवास्ते इनोंका
लायक नहीं जिस कूएमें या कुंडमें बरसाती पाणी नहीं मिलता होय सो पीना
ठंडे दिनोंमें क्षारवाला पदार्थ पापड काचरी आचार वगेरे तैसें घी तेलवाले पदार्थ
बडे चोंटिए बेसनी कचोरी जादा फायदे बंद है ६ तल घरका बैठणा नहीं तलाव
गुह दिनसें नींद धूपका लेना कसरत इतनी बातोंकों बरसातकी मोसममें
इस मोसममें रूखे पदार्थ खाना नहीं, वायू बढाना है, ठंडी हवा लेनी नहीं
गीली जमीनपर पांव उघाडे फिरना नहीं भींगे कपडे पहरणा नहीं वाय

ापड खीचिया वगेरे अंतमे खाना इस क्रमसें उलट पुलट खावे तो जरूर नुकशान
ारता है, क्योंके शरद ऋतूका पित्त हेमंतके पहले पक्षमें शरीरमें कुछयकरहा भया
ोता है, सो पहले खट्टा खारा रस खानेमें आवे तो उलटा नुकशान होता है (हेमंत ऋतू-
वरताव इस मुजब करना) जुलाब लेणा नहीं, तीखा और तुरा पदार्थका जादा सेवन
गा नहीं, खुली जगेमें सोणा नहीं, ठंडे पाणीसे नाहणा नहीं, दिनका सूणा नहीं १
ोतेरे पोषण करे ऐसा पुष्टिकारक खुराक खाना, स्त्री सेवन, तेलका मालिस, कसरत,
कारक दवा, पौष्टिक खुराक, पाक, गरम कपडे, अंगीठीसें मकान गरम रखणा हेमंत
शेरका एकही वरतावा है, ये दोनों ऋतू वीर्य सुधारणेकूं बहोत अछी है सब ऋतूमें
ार विहारका नियम पालनेसें शरीरका सुधारा होता है लेकिन् वीर्य सुधरे विगर
ीरका सुधारा कुछ भी नहीं समझणा वीर्य सुधारणेकूं ठंडी मोसम ठंडी प्रकृती ठंडा
। विशेप अनुकूल होता है ठंडी तासीर ठंडी मोसम ठंडे देशके वसणेवालोंका वीर्य
दा मजबूत होता है लेकिन् इन तीनोंकी अनुकूलता अपणे देशवासिंदोकों पूरी तोर
सिल नहीं है क्योंके अपना देश समशीतोष्ण है प्रकृती तथा ऋतुकी अनुकूलता तो
णे आधीन है अपणी प्रकृतीकूं ठंडी, याने दृढता, और सत्व गुणवाली करणी, ये अपणे
धीनताकी वात है तैसें वीर्य सुधारणेवास्ते तथा गर्भ धारण करणेवास्ते शीत कालकूं
सन करणा येभी अपणे स्वाधीनकी वात है इसवास्ते इस मोसममें अछे वैद्य या डाक-
की सलासें पौष्टिक दवा पाक और खुराक खाणेसे बहोत ही फायदा होता है इस
ुमें शरीरकूं जो पोषण देणेमें आता है वो वाकीके आठ महीनेतक ताकत रखता है
ीरकूं मजबूत करता है ये ऊपर छव ऋतुओंका पथ्य लिखा है सो निरोगी मिजाज
ोंकेवास्ते है रोगीका पथ्य रोग प्रकरणमें लिखेंगे देश अपणी तासीरकूं पहचान कर
य करणा विशेप विवेचन वैद्य डाकदरोंकी सलासे समझणा ॥

किरण ४ थी दिनचर्या.

रोगरहित अदमियोंनें आयुष्यकी रक्षावास्ते पिछली चार घडी रात रहे तब उठणा जादा
द्रा आती होय तो पांच बजेके पहले उठजाणा जिनके सोते २ सूर्य उदय हो जाता है
नका वीर्य धैर्य और आयु कम हो जाता है, निरोग अदमी सूर्य उदयतक सोता रहे
के शरीरकी चिन विन और सुस्ती कभी मिटती भी नहीं अदमी रोगी सोनारहे तो प्राणांत
जाता है, जलदी उठणेसें मन उछाहमें रहता है दिनमें काम काज अछी तरे होना है
के उठणेसें अथवा जागते भी विछोणेमें पडे रहणेसें आलस बढता है प्रभातसमें बुद्धि
रहती यादशक्तीभी तेज रहती है इसवास्ते पढणा और शत्रू मित्रपर सम परिणाम
. पदका साधन पहले दो घडी निश्चय करणा फेर इस भवके परभवके दोनोंके
प्रयत्न विचारणा परमेष्ठि परमेश्वरका स्मरण करणा (सो इसतरे है) [illegible]

जुलाव पित्त सामक एसा गुणवाला लेना हरडे अमरसरी जवा हरडे अथवा निशो
छाल चूरा मिलाय फकी लेनी, दालभात पतला पथ्य लेना जादा दस्त काली निशो
छालसे आता है, लकडी धीचकी निकाल डालणी शरदऋतूका वरताव इस मुजब
१ फजरकी ओस पूरबकी हवा क्षार पेटभर भोजन दही तेल खटाई तीखा सुंठ मि
दिक हींग खारा चरबीवाला जादा पदार्थ सूर्य तथा अग्निका तप तेजदारू दिनकी
इतनी वस्तुओंका त्याग करना शरीरके निरोगार्थ त्याग है, सो तप है, इछा रोक
सो तप है १ मिश्री बूरा कंद कमोद साठीचावल दूध ऊख थोडा निमक गहूं,
मूंग नदी तथा तलावका पाणी चंदन चंद्रमाकी किरण फूलोंकी माला सुपेद वस्त्र ये
शरदऋतुमें पथ्य है २ वैद्यकशास्त्र कहता है, ग्रीष्मऋतूमें दिनकूं सोणा, पोसमाह
हेमंतमें गरम पुष्टिदार खुराक खाना शरदऋतूमें दूध मिश्री पीणा इसतरेंसें प्राणी
दीर्घायु होता है३ शरदऋतूमें भारी खुराक खाणा नहीं आसोज काती तुलवृश्चि
संक्रांतीमें वहोत पेटभर खानेसें वहोत नुकशान है, काती वद अष्टमीसे मिगसरके
दिन वाकी रहे जहांतक यमदाढ कहलाती है, जो इन दिनोंमें थोडा और हलका
करता है सो मौतकी दाढसे वचता है, शरदऋतूमें खीचडी कुपथ्य है रक्तपित्तवा
इस मोसममें पथ्य है, नदी तलाव जिसपर दिनकी सूर्यकी किरण पडे रातकूं
एसा जल पीणा पथ्य है.

॥ हेमंतऋतु ॥

ग्रीष्मऋतू जैसें अदमीकी ताकतकूं खेंच लेती है, तैसे हेमंत शिशिरऋतू ताकतव
तरी कर देती है, सूर्य ताकत पदार्थोंका खेंचनेवाला, चंद्र ताकत देनेवाला, शरदऋतू
सूर्य दक्षणायन होता है हेमंतमे चंद्रकी शीतलता वढनेसें अदम्योंमे ताकत वढणा सरू
है सूर्यका उदय दरियावमें होता है वाहर ठंड रहणेसें अंदरकी जठराग्नि तेज होणेसें
जादा हजम होता है, गरमीमें सुस्ती रहती है ठंड कालेमें तेजी, उसका यही कार
जठराग्नि जिसकी तेज उसकूं पौष्टिक खुराक लेणा चहिये मंदाग्निवालेनें हलका और
खुराक लेना चहिये तेजाग्निवाला पूरा पुष्ट खुराक नहीं खावे तो वो अग्नि रस सूक
रेकूं सुकाय डालती है मंदाग्निवालोंकूं पुष्ट खुराक खानेसें नुकशान होता है इस
मीठी चीज खट्टा और खारा पदार्थ खाणा चहिये मीठे रससें कफ वढता है तमी
भई जठराग्निका वरावर पोपण होता है मीठे रसके संग रुचि पैदा करणेकूं खट्टा
खारा रस जरूर खाणा चहिये फेर ये तीन रस अनुक्रमें भी खाणेका दिखता है
ऋतूके साठ दिनोंमेंसें पहले वीस दिनतक मीठा रस जादा खाना विचले वीस दि
खट्टा रस जादा खाणा अंतके वीस दिनोंमें खारा रस जादा खाणा मीठा रस
पहली लेणा पीछे नींबु कोकम दाड साग राईता कढी अचार वगेरेका ग्रास लेना

ल जाणा, वडे शहरोमें वणना मुसकिल है, कहा है, ओले सोवे ताजा खावे, पाव कोस ाना जावे, तिण घर वैद्य कमी नहीं आवे, निर्जीव साफजमीनपर मस्तकढांक मलका ग करणा दूसरेके किये मल मूत्रपर करणा नहीं दाद खाज सुजाक वगेरे रोग होना व है १ मलमूत्र करते वोलना नहीं २ जोर जवरनसें करना नहीं ३ गुदालिंग त्याग किये वाद जलसे धोकर साफ करणा ४ वाद हाथ पांव अछीतरे धोकर साफ णा वेलू वगेरेसें ५ ॥

मुखशुद्धि दांतण.

नियम वगेरे संभाल कर प्रत्याख्यानकी समाप्तीपर ईश्वरकूं यादकर फेर मंजन या तन करणा मैलकूं कफकूं और पित्तकूं साफ करे ऐसा वंबूलका तथा वोरका दांतण छा होता है दांतण सीधा होणा वांकाटेढा नहीं होणा खूना पकडके दांतका मैल उ- रा जावे इतना लंबा होणा वहोत जाडा नहीं होणा ज्यूं वहोत पतला नहीं होणा चीरा के जीभका मैल घसके उतार डालणा हर किसमका दांतण हाथ लगा सोई करणा ीं नफे नुकसानका गुण देखणा दक्षणके लोक दांत मजवूतीकूं मासेका दांतण वहोत छ वतलाते है दांतण नहीं करणेवालोंनें मंजन करणा, सींधा निमक, सेका भया जीरा सकपड छाण कर मसलणा, तथा पीसा भया सींधा निमक तिलके तेलमें मिलाकर डणेसें मूंके दांतोंके सव विकार दूर होते हैं, तथा जीरा हीराकसीस मांजू फल विदाम तुं जलाये कोयले १।२।४।८।१६ इस तोलसे क्रमसें लेकर चूर्ण करणा, मुख सुगंधी रणा होय तो जीरेके वदले आरती कपूर डालणा इससें दांत मूं साफ रहता है मूंके दरकी वदवो और रोग मिटता है ॥

कसरत तथा तैलमर्दन.

वण सके तो तनदुरस्त अदमियोनें शरीर निरोग रखनेवास्ते हमेस थोडी २ कसरत रनी मुदगर फेरणा दंड वैठक करणी चलणे फिरनेकी कसरत सवसें अछी है, कसरतसें दनका खून जलदी २ फिरता है, जहरी तत्व वहोत जलदी वाहिर निकल जाता है, ंग प्रफुल्लित रहता है, अवयव सुघाट हो जाते हैं, फुरती, काम करनेकी शक्ति वढती है फका नास होता है, जठराग्नि वढती है, शरीरका वेडोल जाडापणा मेदवृद्धि मिट जाती , एसा दवासें नहीं मिट सकता, एकाएक रोग पास नहीं आता, चिकणे माल खाने- लोंकूं भी कसरतसें वहोत फायदा है, ठंढकालेमें वसंतऋतुमें कसरत फायदेमंद है निरा- ार ठंढी वखत करनी, दम हांफणी नहीं चढे जहांतक करणी १ वुड्ढा वालक वेमार और शक्त अदमीनें दंड वेठकादिक तो नहीं करणी लेकिन् शक्ति और तासीर माफक थोडी २ खुली हवामें फिर आणा, इनोंकी वो कसरतही समझणी २ जुवान अदमीनेभी सरत माफकसरही करणी कसरत करते मूं सूके, पसीना होजावे, तव छोड देना ?

खास श्वास क्षय रक्तपित्त छातीकाजखम शरीरमें किसी जगेभी जखम होवे
वहोतदुबले रोगमें, कसरत करणी नहीं ४ भोजन किये पीछे, स्त्रीगमन किये
रस्ते चलकर उपवास करके चिंता मलमूत्रकी संकारहते कसरत करणी नहीं ५
कसरत करनेसें खासी बुखार उलटी ग्लानी प्यास क्षय मूर्छा श्वास तथा रक्तपित्त
रोग हो जाता हैं, तेल मसलाना यहभी एक तरेकी कसरत है, हमेस फजरमें स्नान
पहले तेलकी मालिस कराणी वहोतही फायदेवंद है निरोगपणा दीर्घायुकर
ताकत वढाणेवाली जरूर करणेलायक तेलकी मालिस है थोडे दिन करानेसें
फायदा आपही मालम देता है १ चमडी सुंहाली होती है चमडीका लूखापणा
औरभी चमडीका दरद जाते रहता है आगेके होय तो मिट जाते है २ वदनके
नरम और मजवूत होते है ३ रस और खूनकेवंधभये रस्ते खुले हो जाते है ४
भया खून खुला होकर वदनमें फिरणे लगता है, ५ खूनमें मिली वायू दूर होकर
रोग आते भये अटकते हैं ६ जीर्णज्वर तथा ताजे खूनसे तपा भया वदन ठंडा
है ७ हवामें उडते जहरी तथा चेपी रोगके जंतू । तथा परमाणू वदनमें विगाड न
सक्ते, कसरत जितना फायदा है ताकत और क्रांती वढती है पुरुषार्थपणा प्राप्त है
तेलमें मसाले ऋतू तथा अपनी तासीर मुजव डालके तयारकर मसलावे तो
अच्छा तेल वनानेकी मुख्य चार किस्म है लोंग मिलामा जमालगोटाका विशेषपने
यंत्रसे १ तथा उकालकर दवायोका रस तेलमे डाल पकाया जावै २ घाणीमें
फूलोंकी पुट देकर चंवेली मोगरे आदिका ३ सूके मसाले कूटकर जलमें मको
डाल मट्टीके वरतणका मूं वंधकर धूपमें धेरे रातकूं अंदर रक्खे महीने २० दिन
लेवे ४ सुलसा श्रावकणीके चरित्रमें लक्षपाक तेलका वर्णन है कल्पसूत्रकी
शतपाक सहस्रपाक लक्षपाक तेलराजा सिद्धार्थके मालसका वर्णन और गुण
सव रोगोकूं मिटाणे न्यारे २ तेल और घी दवाईसें वणते है इसकी रिवाज
अभी जारी है मगर चार महीने वाद वनानेके, हीन सत्व हो जाता है वेसा गु
रहता, तोभी सामान्य तोर तिलोका सादा तेल सवकूं फायदेवंद है शिरमें
कानमे टालणा, सव शरीरकी मालस नहीं वण आवे तो शिरमें कानमें पगकी
हाथ पावके तले तो जरूर तेलसें मसलणा, हमेस नहीं वने तो अठवाडे, वो
वने नो टंट कालेमें तो अवस्य मसलाना । चणेके आटेसें अथवा आंवलेसे
चिकनास दूरकर स्नान करणा या मसालेमे या आजकल साबूसें भी चिकनास दूर
करते हैं, देसी साबूमें चरवी नहीं गिरती.

स्नान परिकर्म.

प्रत्येक हेतू मनघेक स्नान करना लिखा है स्नानमें धर्म माननेवाले धर्मा

: २ नाहते हैं लेकिन् जिस कामके वास्ते नाहणा और जिस तरे स्नान करणा वो वात
रले विवेकी जाणते हैं स्नान करनेका मुख्य हेतु शरीरकी पवित्रताका है वस इसकूं
हि कितनेइ गाडे भरके धर्म समझो ऊपरके शरीरकी शुद्धि स्नान विगर कभी होणी
हीं है वो करके पीछे क्या करणा उसका खयाल वहुतोंकों नहीं है सो लिखते हैं, जैसें
गवती सूत्रमें तुंगीया नगरीके श्रावक साधूओंकों वांदणे चले तहां पहले (न्हाया कय-
लिकम्मा) अर्थ इसका ऐसा है वो श्रावक पहिले स्नान कर चलि कर्म याने देवकी पूजा
रे ऐसें सुदर्शन सेठका अधिकार भगवतीमें है जो भगवान महावीरकूं वांदने निकला,
हांभी एसाही लिखा है, ज्ञाता अंतगडदशा प्रमुख अनेक सूत्रोंमें जहां किसी श्रीमंत
हस्थका शुभकार्य करणा चला हैं, उहां न्हाया कयकलिकम्मा एसा पाठ है, उहां केइयक
कांत नयहठ ग्राही एसा कहते हैं कोइ कुलदेव पूजा होगा भगवतीजीमें खुलासा
गिया नगरीके श्रावकोंका सम्यक्त निश्चलका एसा पाठ है, नही चाहते हैं वो श्रावक
कसी यक्ष भूत नाग आदि किसी देवताका सहाय, एसे दृढ धर्मियोके, स्थापना अरिहंतही
वकूं पूजणा स्वतः सिद्ध है श्रावक दृढ सम्यक्तवंत अरिहंतदेव या (अरिहंतचैत्य) याने
नोंकी मुर्त्ति टाल अन्य देवकूं वंदे पूजे नहीं, उवाई सूत्रमें देखो अंवड संन्यासी श्राव-
कका अधिकार, आनंद श्रावकके अधिकार उपासक दशामें तों इहांतक निश्चय दिख-
गया है वो श्रावग वंदे पूजे अरिहंतके चैत्यकों, अन्यमतवाले जो हैं वो जिनराजकी
र्त्तिकों अपना देव वनाकरके पुजे तो आनंद कहता हैं हेवीर परमात्मा और देवतो
रिहरादिक नपुजूं सो तो नपुजूं, लेकिन् मेरा इष्ट अरिहंत देवकी मूर्त्ति अन्य रूप स्थापनासें
जे जाय, उसकूं पूजं तो वो अन्य देवकी लोक समझे तो मुझें सम्यक्तमें अती चारलगे
सें वद्रीनाथकी मुर्त्ति जगन्नाथजीकी मूर्त्तिके चोलेके अंदरकी बुद्ध भगवान पार्श्वनाथकी
र्त्ति और दक्षणमें नेमनाथजीकी काउसग्गधारी पांडरीनाथकी मुर्त्ति,गिरीकेवालाजीकी मुर्त्ति
गोरधननाथजीकी मूर्त्ति,जैपुरपासडिग्गीमें श्रीऋषभदेवजीकी कल्याणरायजीकी मूर्त्ति,यद्यपि
जैनराजकी मूर्त्तियां और मंदिर जैनियोंका कराया भया हजारों अन्य मतवालोनें अपणी
स्वतंत्रता कर पूजा और वेसमें फेरफार कियाहै ऐसे जिनराजकी मूर्त्ति अन्य तीर्थी ग्रहीतकी
आनंद ने खुलासा कियाहै स्वतंत्रता और विधि स्थापितकी ग्रहणता वंदना पूजा रक्खी है
मपर एकांत नयग्राही एसा कहते है, रायपसेणी सूत्रमें चित्रसारथीके अधिकारमें,
नी होणेके पहिले न्हाया कयवलि कम्माका लेख है, उसने कोनसा देवपूजा (उत्तर)
वेस २ धर्मवालेके जोजो अपणा इष्टदेव है, उसकी पूजा करके फेर दुसरे कार्यमे
गे अर्थाभी एसा है, शिवके इष्टवाले शिव, विष्णुवाले विष्णु, इत्यादि, मुसलमीन लोकों-
भी एसा दृढ निश्चय है, पलीतपणे निवाजगुजारे सो काफर, इल्म मंत्रादिक सिद्ध
रणेमें पाकी जा मुख्यपणे सबको मंजूर है, इसवास्ते स्नान करना, शरीर पवित्रकरणा देव

पूजाकेवास्ते, नास्तिकोंके कोई देवका इष्ट नहीं होता के इयक जैनलोक, क
कामधेनु चिंतामणी समान देवाधिदेवकी स्थापना छोड अन्य भूत प्रेतोंकी मूर्ति
जाते हैं, येभी एक बुद्धिकी विचित्रता है, कोइ पूछे तुम जैनी नाम धराके उप
धर्मके चलाणेवाले धर्म उपदेशककी मूर्त्ति क्यों नहीं वंदते पूजते, तो कहते हैं,
होती है और पाप लगता है, फिर पूछे इहां किस किसम पधारे हो तो कहतेहें जातें
फिर पूछे इहां क्या करते हो इसमें पाप नहीं, होता तो कहते है, संसार खाते
बुद्धिवान अन्यमती दिलमें सोचणे लगा इनोंकी समझ केसी है, सो देवकूं संसार
अलग ठहराया, इय तो हमने किसी भी धर्ममें सुणा नहीं सो दो तरेके देव होय,
मीन एक खुदा, अंग्रेज एक ईश्वर, जैन एक अरिहंत, शिवएक, विष्णु एक, वि
जो इष्ट है वो सब तरेके सुखकी चाहना, एकही परमेष्टसें चाहते हैं, और दमदार
पार भी होता है, देव प्रत्यक्ष तो ऐसे बुद्धिवानोकों कब भया होगा, सो रूबरू कह
होय के, हम तेरे संसारी नोकर हैं, सो तुम कहोगे सो करेंगे, इय लोक एकांतनय
ग्राही अन्य दर्शनीयोंकों कहतें है, भला इनोंमें कुछ कमी है, नाम धराते है,जैन
धर्मी हैश्रावक, तुमनें कोनसी हिंसा त्यागी है, अनाज वेचते,घी वगेरे रस वेचते हो,
चक्की खेती वाडी गाय भेस उंठ घोडे जूठ बोलते हो सेरका तीन पाव देते हो,
सेर लेते हो, इत्यादि तुमारे कर्त्तव्य तो पंचेंद्री जीवोंतक महा घोर हिंसाके है,
हिंसा भया नहीं पाप लगा नहीं और धर्मोपदेशक परमात्माकी मूर्त्ति पूजामें तुमकों
लगा जो की तुमारे सूत्रोंमें करणा लिखा हजारों मंदिर हजारो वर्षके मोजूद लाखों
मुर्त्तियां मौजूद है, औरंगाबादमें हमने तुमारे पद्मप्रभुजीका मंदिर पचीससें वर्षोंका
रिणीगांव वीकानेर तालकेमें नवसे वर्षका देखा है मित्र तुम सर्व संसार छोड
वाल लोच द्रव्य छोड द्रव्य पूजामें पाप मानते, और नहीं करते, तो हम तुमारा
और नहीं करणा मंजूर करते, स्यात् एक न्यायसें, क्योंके हमने कनीरामजी
साधूसें सुणा है श्रावक जब इग्यारे प्रतिमा धारता है तब ऊपरकी प्रतिमामें
छोडता है और स्नान छोडता है तब ही बलि कर्म याने देवकी द्रव्यपूजा छोडता
नहीं तो तुम हमकूं दिखावो पहले पोसाटालकर श्रावककूं किसं जगे स्नान और
पूजाकी मनाई लिखी है जैसें और २ कृत्यका नाम लेलेकर पाप बताया है ऐसा
बतलावो के श्रावक अरिहंत देवके मुर्त्तिकी पुष्पादिकसें पुजा करे सो पाप है, हां
तो द्रव्यके अभावसे द्रव्य पूजाकी मनाइ है मनाई महानिसीत सूत्रमें है
उत्सर्गनयसें जावजीव स्नानभी नहीं करणा है तो देव पूजा भी नहीं इतना
योगंयर गाम देश दक्षणका लखोटिये महेश्वरी रामसुखदासका यथार्थ
उचित समय लिखा है ये पुरुष बडा विवेकी था अन्य दर्शनमें

आदमी शांतशील परमार्थिक गुणवंत हमने देखे हैं जभी तो जैन ग्रंथोमें लिखा है (हे तम अन्यदर्शनीमें अभी एसे मौजूद है, सो एक भवकरके माहाविदेह क्षेत्रसें मुक्ति णेवाले अभी भरतमें हाजर है,) सत्य है ॥ नहीं कोई जातको कारण मन मानेकी वाता- ी भजे सो हरिका होय ऊंच नीच अंतर नहीं कोय ॥ स्नान करते वखत सर्व शरीरकूं मस- के धोणा(क्यूंके) मैला कुचीला रहणेसें चमडी संबंधी अनेक रोग पैदा हो जाता है जूं ोख चमजूं फूलण (जिसमे) फेर वदवो हो जाती है, तनदुरस्त अदमी तथा वडा छोटा ालककों दिनमें एक वेर तो स्नान जरूर करना, स्नानके इतने नियम है, १ शिरपर गरमागरम ाणी कभी डालना नहीं इससें आखोंकूं नुकशान पहुंचता है २ वेमार अदमी तथा ज्वर गये ाद जहांतक बदनमें ताकत नहीं आवे एसे अदमीकूं स्नान करना नहीं जिसमें फेर ढे जलसें तो बिलकुल नहीं करना, वेमार निर्वलने भूखे पेट नहाणा नहीं चा दूध गेरे नास्ता कर ठहरके नाहणा, धूप चढे पीछे नाहणा ३ सिरपर तो ठंढा जल या कुनकुना कूबेके निकले जल जेसा नीचेके धड परठीक गरम जल कमरके नीचे सुहा- वता गरम तेल जलमें नहाणा पित्तकी तासीरवाले जवान अदमीने ठंडे पाणीसें न्हाणा नुकशान नहीं करता, लेकिन सामान्यतोर थोडा गरम जलका स्नान सबकूं माफगत आवे सा है ४ वहोत हवावाली तेसें जाहर खुली जगामें नाहणा नहीं एकांत जगे विगर रा स्नान नहीं हो सकता पूरी पवित्रता विगर देवपूजा जो स्नानका हेतू है सो पार हीं पडता व बदनकूं पीठी उवटणेसें साफ करे या साबूसें रगडके धोकर साफ स्नान र सूके रुमालसें पोंछ डाले जिसमें मैल और जल साफ हो जावे, भीगे कपडेसे वो काम ासल नहीं हो सकता अपवाद मार्गमें जैन मुनि भीगे कपडेसे मैल उतार डाले ये वात गवती सूत्रके पचीसम शतकमें देह बकुशके निर्णयमें टीकाकारने लिखा है, तनकूं ाफ पूछणेसें खून अछीतरे फिरता है. चमडीपर तेज आता है, कसरत होती है, ५ बुखार दस्त जुखाम कफ वादीके रोगमें तेसें भोजन किये बाद तुरत न्हाणा नहीं जसने मगज वगैरे गरिष्ट पदार्थ वहोत पेटभर खाया होवे प्यास वहोत उसपर लगे ेटमें जल मावे नही एसें को जलमें गलेतक २ घंटे बैठाणा हजम हो जाता है, स्नानमें जठराग्नि प्रदीप्त होय आयुष्य और शक्ति बढे उत्साह वढे तेज प्रताप बढे मैल खाज थकेला पसीना आलस प्यास और जलण मिटती है, रगडके नाहणेमें चमडीके ऊपरके छेद खुले हो कर बदनके अंदरका निकम्मा पदार्थ जो पसीनासो बाहीर निकल सकता है स्नान करे पीछे शरीर और मन प्रफुल्ल होता है इंद्रिय शांत होती है [illegible] होता है ठंडे जलसें इसवास्ते निश्चित होकर करने १ इष्ट देवका आवश्यक [illegible] [illegible]में जो लिखा है कित्तिय १ वंदिय २ महिया ३ इसका अर्थ एसा है. [illegible] सिद्ध बुद्ध परमात्मा तुम कीर्तन करणे योग्य हो एसा विचार गुण [illegible]

पूजा करे १ है, परमात्मा तुम वंदना करणे योग्य हो एसा विचार कायासे दो हाथ दो पांवको जानू गोडे पांचमा मस्तक नमाय पंचांग प्रणाम वंदन करे २ है पूरण भव इंद्रादिक जो तीन ज्ञानयुक्त एका भवतारी सम्यक धारी कोटानकोटि देवतोंके जल १ चंदनादि सुगंध २ कमलादिक सुगंध उत्तम पुष्पोंसे ३ धूपसें ४ दीपसें ५ अक्षत ६ नेवेद्यसे ७ फुलसें ८ महिया याने द्रव्यादि पूजाके योग हो इसवास्ते है, प्रभूमे शरीर धारण किया कर्मोंके वस आहारी वन रहा हुं इसवास्ते ये चीजें आपके सन्मुख अर्पण कर ये प्रार्थना करता हूं है, दीनवंधु मे भोग उपभोग वस्तु ओंसे संतोप पाय निराहारी पदकों प्राप्त होवूं एसा करो जेसें आप भये एसा भावसे कर्म १ याने देवपूजा कर फेर सुपात्रोंको तथा दिन दुखियोंको भूखे अनाथकों गाय बैल प्रमुख अपणे स्वाधीन पराधीनकों कुलगुरु तथा भिक्षुकोंकों यथाशक्ति भोजन वस्त्र यथायोग्य दान करै । देवपूजाकी वखत केसर चंदनका तिलक करे उत्तम अंग मस्तक है, तेसेंइ केशर चंदन उत्तम पदार्थ है, सो तिलक पांच तरेका है, (सुदर्शन तिलक) नीचें चोडा उपरसें पतला १ (सुमेरु तिलक) नीचे उपर सम श्रेणिका २ (वडपत्र तिलक) नागर पत्र जेसा ३ (पूर्णचंद्र तिलक) विंदाकार थाल जेसा ४ (अर्ध चंद्राकार) शिद्धशिला के ५ ये तिलक आत्मा जो श्वासाके संग भृकुटीके वीचमे चक्रपर ठहरता है, फेर मस्तकमें जाकर करोड रज्जूं वंकनालमें होकर पीछा नाभीमे जाता है सो छः चक्र है, जिसमें पर चक्र केसर चंदनसे बुद्धिमान पहले पूजते हैं, निश्चय नयसें आत्मा है सो देव है आत्मा है, सो गुरु है, २ आत्मा है सो धर्म है, ३ आगम सारमे लिखा है, विवहार नयसें देव सो आठकर्मोकि हननेवाले गुरु शुद्ध सचा उपदेस देणेवाले २ धर्म केवल सर्वज्ञका कहा भया सो द्वादशांगमें लिखा भया ३ नाभिचक्र १ इहां आत्माका ७ रुचक प्रदेश निर्मल है जिसमें (सोहं) एसी ध्वनि श्वासाके संग ऊपरकों आती है, दुसरा (हृदय चक्र) २ जिसमे चेतनकूं सुखदुखका ज्ञान होता है २ (कंठचक्र) २ जिसमेसें सप्त स्वरोंका प्रकाश है ३ (भृकुटि मध्य चक्र) ४ दशमा द्वार भेजा (आत्मा चक्र) ५ इनोंका अहवाल २ दुसरे प्रकाशमें हमने लिखा है.

भोजन.

भोजनकी रिवाज न्यारे २ अदमियोंका न्यारा २ है, इसवास्ते इहां लिखणेका प्रयोजन नहीं लेकिन् कितनीएक वात सामान्यतोर सवकेलायकहै सो लिखते हैं, जदांनकवणे जहांतक उनमान मुजवही खाणा येवात तनदुरस्ती रखणेकूं और पचानेकूं हमेस ध्यानमें रखणे लायक है, अधूरी भूखमें तथा अजीर्णमें जीमना देना और सन्निपातमें तो दोप पके विगर खाणे देणा मोतकी निसाणी है, ... गे वाद भूख मारणी नहीं. ये दोनों कामोंमें सावधान रहणा नहींतो नुकसान है

भूख लगे वाद नही खाणेसें (जैसें लकडीके लगी अग्नि दुसरी लकडी नहीं मिलती तव उस लकडीकों जलाते जाती है, और आप बुझते जाती हैं,) तैसें शरीरकी बुझ जाती है, पक्की भूख लगे वोही वखत भोजनका है, ये नियम दिनका है, ा नहीं, शुद्ध और सादाभोजन करणा, भोजनकी जगे तथा वासणवरतण मांजेधोये रखणा भोजन घणाणेकी जगे१ भोजन करणेकी जगे२सीधी सामान रखणेकी जगे३ रखणेकी जगे ५ सोणेकी जगे ६ वैठणेकी जगे ७ देवपूजा करणेकी जगे मंदरीमें ान करणेकी जगे ९ उत्कृष्टनव जगे चंद्रवे बांधणे चहिये, मकडी गिलेरी वगैरे ज- जानवरोकी लाल मलमूत्रादिकसें अनेक रोग होता है, सो नहीं होवे, भोजनकी ा मन प्रसन्न रहे ऐसी तयारी होणी, ऐसीही वात करनी तथा सुणनी मनमें खेद ा तथा क्रोध होय ऐसी वस्तु नजरके सामने रहणे देणी नहीं प्रियमित्र स्त्री वगैरे नसंबंधीयोंकों पास रहते जीमणा, वहुत तीखामिरचादिक वहुत खट्टा वहोत खारा वहोत शाक मसालेवाला पदार्थ खाणा नहीं, मोसम और तासीरकूं देख स्वाद और ाला भोजन करणा भोजनमें जो रस जादा होता है, सब रस वैसाही वण जाता १ भोजन करती वखत सींधा निमक लगाय आद्रक तोलेभर पहली खाणा २ भोजन ी वखत रोटी रोटा वगैरे करडे पदार्थ घीसें पहले खाना, वाद दालसागसें खाणा ा तथा वायुप्रकृतीवाले मीठे पदार्थ भोजनके मध्यमे खाणा, पीछे दाल भात वगैरे नर- दार्थ खाकर अंतमें दूध या छाछ वगैरे पतला पदार्थ खाणा ३ स्वादविना आखकूं नहीं. तथा वासी अन्न खाणा नहीं. ४ गरमागरम उष्ण ताकतका नाश करता है, ंत ठंढा वायु कफ आंम पैदा करता है, ताजा तयार अन्न खाणा ५ मंदाग्निवालेको द वगैरे पदार्थ स्वभावसेंही भारी पडता है, मूंग मोठ चिणा तूर उनमानसें जादा य तो भारी पडता है, मिस्साकी पुडी या रोटी वडी नुकशानकारी है, मल और हवा में वढाती है, अतिसार संग्रहणी होणा ताजव नहीं. और दला भया अन्न वणाणेके फारसें भारी होता है, जेसें गेहूंका सादा वाट रांधे तो वैसा भारी नहीं और लपसी री गरिष्ट है, ६ भोजनके पहिले पाणी पीणेसें अग्नि मंद होती है, वीचमें थोडा २ ाथ दफे जलपिया भया घी जितना फायदा देता है, भोजनके अंत आचमन- त्र दो घूंट पीणा, जादा पीणेसें अन्न हजम नहीं होता है, ७ उडद वाजरी गहुं वगैरे आटेके वणें) पदार्थोंसें आधा पेट भरणा, मुंग तूरकी दाल तथा भातसें पूरा पेट भरणा, ध या छाछ गऊकी मीठी पीणी (क्योंके) हलका पदार्थ है, सो अंतमें पीणा८कितनेक दार्थ अमृत रूप हैं, लेकिन दुसरी चीजके संग मिलणेसें नुकशानकारी होता है, एक- मतो नफे नुकशानकी खवर नहीं पडती लेकिन सर्वज्ञ परमात्माने जो वैद्यकादिक शा- ोंमें हुकम दिया है सो हितके वास्तेही दिया है, उपगारीपणे तो ग्रंथही वणाया

जो दूधके संग विरुद्ध पदार्थ है, सो हम दूध प्रकरणमें लिख आये हैं, वाकी इहां लि
हैं दूध और मछलीके संग मिलणेसें जहर होता है, केला और छाछसें, केला और दहीं
दही और उष्ण पदार्थसें, घी और सहत वरावर तोल मिलणेसें, सहत और जल बरा
वजन मिलणेसें, वासी अन्नकूं फेर गरम करणेसें इत्यादि पदार्थ सांमिल मिलणेसें जहर
कार्य करता है, सांझकूं दो घडी दिन रहते भोजन हलका करणा रात्री भोजनमें टाल
काली च्यूंटी खाणेमें आवे तो बुद्धि भ्रष्ट होके पागलपणा, जूंसें जलंदर कांटेसे साल
मकडीसें पित्तीके ददोडे दाहके दस्तादि होते है, रातका अंधा भोजन है, यह इस
वगैरे अनेक रोग होणा संभव है, जादा इस रात्रीके भोजनके शरीर नुकशान संबं
दोष रात्रि भोजन निषेध चरित्रमें देखणा रोगादिकपर दवा (या) खुराक वैद्य कारण कर
पर वतलावे तो सोणेसें दो तीन घंटे पहली जतना करणी धन्य पुरुष तो वोहेजो सर्व
साक्षीसेही खान पांनकर व्रत निभावे १० जीमे वाद मूंकूं कुरलोंसे साफ करणा
राक मसूडोंमें या दांतोंकी छेकडमें रह जाय तो मूं मे वदवो आती है, और दांतोंका
का रोग पैदा करता है, ११ भोजनवाद तुरत मेहतनका काम करणा नहीं क्यों
आमवातका रोग होता है, भोजनकर तुरत सोणा नहीं क्यों के कफ वढकर अग्नि
नाश करता है, १२ भोजनकर तुरत नाहणा नहीं, क्यूंके, सरीरमें नुकाशान पहुंच
है, इत्यादि विवेचन (कल्पसूत्रकी टीका तथा) भोजन वागविलास ग्रंथमे है,

मुखसुगंध.

भोजनवाद मूं साफ करणेकूं पाणीके वहोतसे कुरलेकर अंगलीसें मूं साफ करणा, मु
सुगंधका कारण मूं साफ करणेका है. जैनमुनिभी आहार किये वाद दंत मार्जन क
है, एसा विवहार है, दांत मूं साफ अन्य उपायोंसें भयेवाद सोपारीके फालके वं
पान चावणेकी कोइ जरूरीभी नहीं हैं, मुखसुगंधमें अपणे देशमें सुपारी पांन इलाय
वगैरे मुख्य है. लेकिन इस वखतमें तो घरोघर चिलम चुट्टेका अग्रेश्वरीपणा दीखता है
आगे तो इसमें वडी एव समझे जातीथी लेकिन अव तो विछोणेसें उठतेही हरिभजन
वण रहाहै, इसकूं लोकोनें मुखवास ठहरा रक्खा है, मुखवासका कारण तो इतना
है, के दाढ तथा दांतमें कोइ अनाजका अंस रहगया होय तो कोइ चावणेकी चीज
चावके साफ करणा, फेर वो चीज खुसवोदार और फायदेवंद होय तो मुंख सुग
होय और थूक पैदा करणेवाली होय तो वो थूक होजरी में जाकर खाये भये खुराक
पचाणे मददगार होय, इसवास्ते नागरवेलके पांन कथा चूना केसर कस्तूरी सुग
इलायची भीमसेनी कपूर वगैरे पचखाण भाष्यकी टीकामें दुविहारके निर्णयमें मुखवा
लिखा है, और लोक खाते हैं, लेकिन तमाखू गांजा सुलफा चंडूलसें मूंकी खसवो
कि ऊंमदा होती है, सो तो दुनियांसें छिपी नही है, तमाखूमें थूक

ड़ा और पांव गरम रखणा चाहिये ७ देरसें सोणा नहीं बहोत पेटभर खाके तुरत
गा नहीं रातकूं जलदी सोणा फरजम जलदी उठणा ८ दुनियादारीकी चिंता सब
ड़ ब्यासरणा लेकर चारूं आहारका त्याग करणा, जीता रहा तो सूर्य उदयबाद
णापीणा बाकी है, चोरासी लाखजीवायोनिसें अपणे कसूरकी माफी मांगकरके सोणा
त घंटेकी पूरी नींद कहलाती है, फेर तो दलद्रियोंका काम है

॥ सर्वहितकारी कर्त्तव्य ॥

शरीरकूं निरोगपणा रखनेकी जो जो मुख्य २ बातें हैं, वो सब अदम्योंके जानने
ग्य है, और वैसेही चलणा चाहिये इस २ बातोंका संक्षेपसे संग्रह इस पुस्तकमें किया
या है; लोकोंके सामान्य सुखकेवास्ते जुदे २ अदम्योंनें अन्नपान और विवहा-
की निगेदास्तीसें सावचेती रखनेकी जरूरी है, तैसें सभालोकोनें तथा सरकारके मुकरर
ये सहरसफाई खातेके अमलदारोंनें तनदुरस्तीवास्ते पक्की देखरेख करनेकी जरूरी है,
नाके हस्तू जो जो तनदुरस्तीके उपाय है, उस बातोंसें अज्ञान प्रजालोक अनेक
पद्रव और रोगोके कारणमें जागिरते हैं, इस तनदुरस्तीके ज्ञानसें वाकब होणा छोटे
टे सब अदम्योंका जरूरी काम है, किसी वखतपर एक अदमीके अज्ञानसें हजारों
खों अदमियोंकी जानकूं जोखम पहुंच जाती है, इसवास्ते अज्ञान प्रजाकूं आहार
हारादिक आरोग्यताके बातोंसें वाकब करणेका फरज विद्वान वैद्य डाकतर और
कारका है, लोक सुखी रहे एसी कालजी रखनेवाले वैद्य डाकतरोंनें वैद्यकविद्याकूं
ढारकर ऐसें करणा चाहिये के जिस २ कारणोंसें रोगोंकी पैदास होती है, उन २
रणोंकों सोधकर बाहिर जाहिरकर देणा चाहिये ऐसे कारणा, फेर नहीं होसके उसका
ग्य इलाज कामपर लगाणा चाहिये प्रजाकूं ऐसें कारणोंसें जाणाकार करणा चाहिये
निसपाल कमेटीवाले बडे २ रस्ते गलीकूंची वेगरे महोलोंमें जाकर तपासकर चाहे
तनी सफाई रक्खे लेकिन् जहांतक लोक अपने घर अंगणमें एकठी भई रोग पैदा
नेवाली गंदकीकों तथा आहार विहारके चोकस नियमोंकों नहीं जानेंगें जहांतक
रसफाइका मुख्य हेतु पार पडेगाहि नहीं अज्ञानलोक बहोत है, पढे लिखेभी बहुत
रमी शरीररक्षाके नियमसें अजाण है, कोइ कहेगा अब तो इसकूलोंमें कला जो
खाई जाती है, उसके संग लोकोका अज्ञान दूर होणा सरू भया है, ये बातभी ठीक
है, इस वखत जो कलायें सिखाये जाती है, उसमें (अगर) पूरे दरजे ख्याल करे
शरीरसंरक्षणकी कोईभी शिक्षा देनेमें नहीं आती है, मारवाडमें तो विद्या पढाणेका
गला क्रम तो रहा नहीं ये लोक यातो इस दरजे पढते है अनुनासका ॥ क्यातो फेर
नि है लखो पचाईरा, खेर इनोंकी तो बातही रहणेदो गुजराती बंगाला माराठी अंग्रे-
जो पाठशालाओंकी किताबोंमें कसरत हवा पाणी उजाला वेगेरेका विषय दाखल

तबतो यथायोग्य आचार विचार सतसंगत रही नहीं, इनोंके सुधरणेकी जड़ पी
लिखा है, ऋतु और नित्य नियम पालणेकी विधि इसके आधीन है, इतनाही
तु घहोतसे भ्रष्टाचारोंसें बचणाभी अपणे सदाचारके आधीन है, भ्रष्टाचारोंकी मु
है, सो व्यसन है, उससें बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है, ये बात सब लोक जाणते हैं,
व्यसनोंके फंदसें विरलेही बचेहोगें सात विसनादि विवरण हमने पहली लिखा
फीम भांग तमाखू मदिरा आदि मुख्य है इससे शरीर न्यात जात कुटंब और
बहोतही खराबी होगई है, जैसे खराबी आज कल घडीमरी अमिरोदणी (ब्यूबोनि
नेभी नहीं करी होगी इसके मारे प्रजाकूं सरकार दबायके उपाय करती हैं,
जादा नुकशानतो इहां क्या लिखे लेकिन जो अदमी अपणा कुशल क्षेम शांति
होय तो इनसब जातकेनसा आदिसें बचणा भला है, एकवेर लगा तोफेर छुटणा दु

(शयन) निद्रा ॥

अच्छीनींद आणेका सरस उपाय महनत है, जो लोक दिनकूं महनत करे
आलसू होकर पडे रहते हैं, उनकूं रातकूं नींद अछीतरे आती नहीं है, सांझक
खाणेसें स्वप्न आया करते हैं, पक्की नींदका नास होता है, स्वप्ने आल जंजाल
ऐसा समझणा के मगजकूं बराबर चैन नहीं है, स्वभावी दर्शनावरणीकर्म अ
अच्छी होती है, स्वप्नशास्त्रमें स्वप्नोंका शुभाशुभ बहोत फललिखा है, वो निमि
है, वागूभट्टने रोग प्रकरणमें शकुन और स्वप्नोंका फल रोगकूं साध्यासाध्य ज
अच्छा प्रकरण लिखा है, ग्रंथ बढजाय इसवास्ते हमारा विचार अष्टांग निमित
करणेका है, समयानुसार देखा जायगा निमित्तशास्त्रकूं झूठा कहते हैं, वो
नहीं है, १ उत्तर या पूर्वके तरफ शिर करके सोणा २ सोणेकी जगा साफ एकांत
शब्दविगरकी और अच्छी हवावाली होणी ३ सोणेके बिछोणे साफ होणा मलीन
लीन बिछोणेमें मांकड सुरले वगेरे जानवरसताते हैं नींदमे खलल पहुंचती है
जमीनपर सोणा नही चूनेका गचि वायु कफ प्रकृतीवालेकूं सोणेसें नुकशान क
पिलंग वगैरे परसदा नरम बिछोणे सोणा चाहिये सायरोंने कहाभी है (दुहा) सा
साथरे माह उघाडे खाट, बिन मारे मर जायगा जो जेठ चलेगा वाट ४ खुली
कत ग्रीष्म ऋतुमें सोणा चहिये गरम तासीरवालेकूं चाकी तो खुली चांदणीमें सो
बदनपर जादा हवाका झपाटा सामने होय ऐसा खुला सोणा नहीं, तैसें सोणेके
मालियेके बिल्कुल दरवज्जा बंधकरसोणा नहीं क्यों के ताजी हवा आणे देणी ५
पढणे आदि अभ्याससें बहोत विचारसें नसाकरणेसें या दुसरे हर कोइ कारणसें
थका भया होय तो तुरत सोणा नहीं ६ सोणेके पहिले शिरकूं ठंडा रखणा, गर
तो ठंडे जलसें धोणा पांवके तलिये तेलसें रगडाकर गरम पाणीमें रखणा हमेंसा

न शांनी होनी है, चरकने लंघनकूं सर्वोपरी पथ्य दोषोकूंप्रकानेमें लिखा है, जिसमें
त और कफकेवास्ते तो कहनाहीक्या, आसोज सुद अष्टमी सतमीमें ओली जिसमें
की सनातन प्रजा आंबिल नवदिन करते हैं, मंदिरोमें स्नात्र अष्टप्रकारी नवपदादि
दीपधूपादिक करते हैं, जिसमें हवा इस सरदऋतूकी साफ होती है, क्योंकेइ
मकी हवा पहोत जहरी होती है, सरीरमें जो पित्तसें खूनसंबंधी विगाड होता है,
ांबिलका तप (यानें जिसमें सब रसोंका त्याग) करके एक चावल या गेहूं या चणा
ा उडद् ये पांच अनाजोंमेंसें एक अनाज विगर निमक खाया जाता है, जिससे वो
ल शांत हो जाता है, इसतरे ही वसंतकी हवा सुधारणेकूं(चैत सुद सप्तमी अष्टमीसें
किये जाती है, आसोज मुजब सब पूजा कीये जाती है, जिससें हवा साफ
है, और आंबिलसे कफकी शांति होजाती है इसतरेही जो जो पर्व बांधा है सो
ाेद्य विद्याके आधारसें ही धर्म व्यवस्थाका प्रसार उस सर्वज्ञने चलाणेका हुक-
ा है,॥श्राद्ध जो आश्विन वदीमें ब्राह्मणोनें भोजनार्थ चलाया है, इसमें एक नयका
ो वैद्यकसें संबंध कथंचित् वर्तमान श्राद्ध रखता है, मनुमें जो लिखा श्राद्ध(बकरे वा
वगैरेका मांस खाणेका)वेतो शरद ऋतूकी अपेक्षासें तदन विरुद्ध है,. और धर्म-
से तो विरुद्ध होय जिसमें तो कहणाही क्या, दया परमधर्म फेर कैसें ठहरेगा
(कि)मांस खाणेवालेके हृदयमें फेर दया कैसें सिद्ध हो सकती है, दूध और मीठा खाणेसें
शांत होता है, इय एक नय है,१सर्वांग नयसे श्राद्धकी क्रियामें इस ऋतूकी अपेक्षा
नुकशान है, वैद्यक शास्त्रसे क्षीरका भोजन इस ऋतूमें कुपथ्य है, पित्तकारी और गरम
वास्ते॥फेर श्राद्धके जीमणेवाले पेटभरके पराया माल खाते है, सो शरद ऋतूमें जादा
ा है, सो जमकी दाढमें जाणा है, फेर एकेक अदमीके आठ २ निहुते आते है,
गाके लालच भोजनपर भोजन करणा है सो अध्यशन सर्व रोगोंकी जड है, श्राद्ध
णेवालेका मतलब और होगा वैद्यक मुजब, लेकिन् अभीतो आचरणा रोगी पण-
ा है,॥नवरतोंमे जो बकरे भेंसें देवी पूजामें जगे २ मारे जाते हैं, इससे हवामें दुरगंधिके
ाणू फैलते हैं, धूप तथा दीपसें सुगंधीके परमाणू फैलकर हवाकूं साफ करता है,
ातमें ब्राह्मन लोक आसोज सुदि अष्टमीकों हवन करते है, उस(घी दूध चिरोंजी
म तिल जवके) होमसें स्वामी दयानंदजी सत्यार्थप्रकाशमें हवा साफ होती है ऐसा
ते हैं, अग्निका हवन जो लोकोंने माना है इसका कारण तो ऐसा मालम देता है,
ऋषभदेवके वखत कल्पवृक्ष फल कम देणे लगे कालके माहात्मसें तब भगवान
कूं भूखे मरते देखके कंदमूल फल और वनस्पती खाणेका हुकम युगलिक
ों दिया. उनोने खाया लेकिन् पेटमें पचा नही पेट दूखने लगा उनलोकोंने अपणे
कष्ट बयानकिया, भगवान प्रजाकी तनदुरस्ती निर्वाहका विचार करतेथे

बांससे बांस घसनेसें जंगलमें अंगार पैदाभई, क्योंके आगे अतीव होतहोती ...
पर्यंत सूक्ष्म अग्नि पदार्थोंमें व्यापक होके रहीथी स्थूल अग्नि नहींथी क्योंके अ
कालमें और अत्यंत स्निग्ध कालमें स्थूल अग्नि नहींहो सक्ती है, तब भ
लिकलोकोंकों हुकम दियाके आज पीछे सब धान अग्निमें डालकर पकाके ख
तबसें लोकोंने वैसाही किया बाद भगवान अपने हाथसें हंडी बनाकर अग्निमें
पाणी और जंगलमेंसे चावल मसलकर पकानेकी विधि सिखाकर भोजन करना
कोकूं सिखलाया फेर तो अनेक वनस्पती पदार्थोंकी भोजनकी तरकीब मनुने म
सलाई तबसें लोकोंने अग्निमें रसोई और दीपकका उजाला वगैरे देख अग्निहि दे
हवनादिक करणे लगे. बाद अग्नेशावर्प बीतनेमें हवनादिकमें घोडा बकरे आदि
होमके खाणे लगे, जैनीयोंके जो जो धर्म. पर्व या पूजा. स्नात्रादिक करना क
सब प्रजाके आरोग्यताके वास्ते वैद्यकशास्त्रकी आज्ञा मुजब है,॥सर्वज्ञके चलाये
आजकलके मनोमती अल्पज्ञ लोक अनेक तरकियां निकालते हैं, और साबको
समझतेहैं, और लोकोंकूं समझाते हैं, प्रत्यक्षमें वैद्यक शास्त्रकी बातोंसें प्रवाहे भी
अनेक लाभ हैं, और द्रव्यभावपूजामें भगवत भक्तीका जो लाभ है, उस पुन्यकातो कहन
है, एक पंथ दो काज श्री जिनराजकी मूर्ति पूजामें है, इसी मुजब देवकी दीप धूपादि
जासें हवाकी शुद्धि तो जरूरही होती है, मानना, न मानना, अपनी, २ खुशी
लाभ तो निश्चय सुधारेका प्रगट है, न्यायसें विचारके देख लेणा, इसवास्ते जित
आरोग्यताके साथ संबंध है, वो सब बातें पालणी और पलावणी, उसका हेतु
और समझाणा ये सब चतुर आदमियोंका काम है, जो बात हेतू समझाके कहे
उसकूं केइयक मानतेहैं बहोतसें नहीं मानते लेकिन् जो जो फायदेकी बातेंहैं
दाखल करदिया है, उसकूंतो प्राये प्रजा आस्तिकलोक धर्मके आग्रहसे निश्च
हैं, नास्तिकोंका तो हिसाबही जुदा है ॥ इतिश्री मज्जैनधर्माचार्यसंग्रहीते
रामऋद्धिसारगणिकृत वैद्यदीपक ग्रंथे आहारविहारादि पथ्यापथ्यवर्गे तृतीयः

प्रकाश ४ था.

रोगके सामान्यकारण.

निदान.

किरण १ पहली.

ादुरस्तीकी हालतमें फेरफार होणा उसका नाम रोग है,(लेकिन्) निरोगपणा और
ग. इन दोनोंके बीचमें की भईजो मर्यादा उसकी, कोइ साफ प्रगट पहिचान नही
वास्ते तनदुरस्तीका वर्णन करणा ये जरा मुस्कल बात है. अदमीकों खबर
डती नहीं और धीरे २ एक हालतसें दुसरी हालतमें जागिरता है, (याने नि-
ग रोगी बण जाता है) इस बातकी खबर नहीं पडती है, तोभी वांचणे-
इतना समझ जायगें तो बस है, इंद्रियोंका काम स्वभाविक रीतसें चलता रहे, और
श्वास अच्छी तरे चलतारहे, होजरी तथा आंतरोंमें खुराक अच्छी तरे पचता रहे खून
रगोंमें फिरता रहे इत्यादिक ठीक२समझणेसें तन दुरस्त रहता है, लेकिन् जो श्वास
ं अडचल मालम देवे या होजरीमें दरद होय, खूनकी चालमें सम विखम होय, या
रा होता होय, और पाचन क्रियामें कुछ खलल होय तो समझणाके तन दुरस्तठीक नहीं
होई न कोई रोग भया है.)ऐसा निश्चय समझणाके जब किसी जगेपर दरद होता होय
ग समझणा,विशेषपणे दाहयुक्त रोगोमें अथवा रोगकी सरुआतमें- अदमीकाशरीर नरम
ाता है. कोईभी तरेका दरद होता है, शरीरके अवयव थक जाते हैं शिरमें दरद होता
भूख नहीं लगते ऐसे लक्षणोंसें समझ लेणा कोइभी बेमारी होगई है, तब कामकाज
न छोडके रोग है नही और ये रोग काहेसे भया है, ऐसा निश्चय और इलाज
ा, तनदुरस्तीरहणाये जीवकी स्वाभाविक स्थिती है, लेकिन् अशाता वेदनी
कर्म जब अपणे उदयमें आता है. तब चाहे कितनीभी संभाल रक्खे लेकिन्
ीमें भूल हुवे बिगर हरगिज नहीं रहती. साता वेदनी कर्मके योगसें जहांतक तन्दु-
रस्ती कायदेके अनुसार चलता है, और जहांतक शरीरकुं साफ हवा पाणी और
का उपयोग करता है. वहांतक रोग आणेका डर नहीं रहता, लेकिन् अदमी चूके
ये असंभव बात है. तोभी विचारवंतअदमी शरीरके कायदेकुं अच्छी तरे समझके
होवत रहै तो बहोत रोगोंसें कायाकुं बचा सकता है, ज्ञानी तो कर्मकुं मायांथामसें. है,
ा है, सो अज्ञानी कोइ वर्षतक नरकादिकके कष्ट भोगकर भी नीड मुक्त नहीं
। भगवती सूत्रमें लिखा है.)कारण बिगर रोग होना नहीं, ये सब अदमीयोंको नि[illegible]
मे रखणेकी है" और रोगका कारण जाणे बिगर अच्छी तरे इलाज नहीं
इस बातकुं अदमी अच्छी तरे समझ लेवे तो फिर अदमी (मनुष्य) विचारवंत

अपने अपने रोगकी परीक्षाभी करसकता है, परीक्षा किये पीछे इलाज कर
स्वाधीन है, रोग होनेका कारण दूर किये पीछे रोग रहताभी नही अहलके
ज्ञानसें सुधारे, तब कुदरत अपना काम करके फेर तनदुरुस्तीसें ठे
जीवका स्वरूप अव्याबाध है, इसवास्ते शरीरमें रोगके कारणोंको अटकाणेकी स्व
भाविक शक्ती रही भई है, और पुन्य कृत्योंके करनेसेंभी शातावेदनी कर्म
रोगकूं रोकणेकी स्वाभाविक शक्ती रही भई है, इसवास्ते रोगके पहोनेके कारन
उपमसेंही कुदरती क्रियासें दूर होते जाते है, रोगके और कुदरती शक्तिके या
और अशाता वेदनीके. निश्चय नयसें जीव और कर्मके. आपसमें
करती है, शाता वेदनीकी जब जीत होती है, तो रोगकूं पैदा करनेवाले कारणोंका
असर नही होता, और उस शाता वेदनीकी हार होनेपर रोगके कारन उसी
गकूं पैदा करदेता है, पुन्यके योगमें तारुनपर अदर्मीके शातावेदनीपाने रोगके
अटकाणेवाली शक्ति जादा हो जाती है, निर्पटमें कम होती है, उससें नाताकत
घेर २ बेमार होता है, जीवकी कुदरत शक्ती अपने शरीरमें ऐसी है, उसनें
भये पीछेभी विगर उपाय केइकवस्त दब जाती है, या चली जाती है, ऐसें
रमें वो दाखले अनेक दीखते हैं, जैसें आंखमें कोईभी फूस फांटा चला जाय तोकु
आपसें पाणी झर २ करवो फांटा धुपकर बाहिर निकल पडता है, या
गीडके साथ निकलता है, आंख बिना इलाजके अच्छी होती है, किसी वखत
खाणेमें आता है, तो पेटमें बोझा और दरद होता है, तब बहोतसी वखत
बही उलटी और दस्त होकर मिट जाता है, ऐसी उलटी दस्तकूं
होता है, क्योंके जीवकी जो शाता वेदनी संबद्ध शक्ति है, वो पेट
दरदकूं मिटाणेवास्ते उलटी और दस्तकी क्रियावेपार करती है.
फोले छोटी गुमडियें होकर अपणे आपही मिट जाती है,
होकर बहोतवखत बिगरइलाजकिये अपणे आपही मिट जाती है,
होकर अपणे आपही चला जाता है, मतलब असातावेदनी प्रदेशबंध
वेदनी जो जीवने बांधी है, जिस्सें रोग दूर हो जाता है, जैसें पकी दिव
या धूलकी मुट्ठी डालणेसें थोडासा रहता है, बाकी तो गिरजाता है,
हवाके झपट्टेसें अलग हो जाता है, ऐसें वो रोग स्वतः मिटता है, इसपरसें
बंध सिद्ध भया कर्मोंका प्रकृती बंध १ जिसका स्वरूप हमने पहले प्रकाशमें
मूल स्वभाव लिखा है, १ स्थिती बंध, जेसें मोहनी कर्मकी अवधी सित्तर
सागरोपम वर्षोंकी हे, बंधे भये कर्म मुदतपर भोगणेसें छूटे सो स्थिती बंध
तोंकी मुदत है, २ अणु भाग बंध ३ प्रदेश बंध ४ इस चारों बंधोकों लड्डूके

दा होता है, कितनेक कुटुंबोमें खास व्यसन और दुराचार होणेसें उस कुटुंबके मेंबर-
क रोगी बण बैठते है, (३) जातिकारण, अपणी न्यात तथा जातका खोटा विवहार
र रूढी जो पडी भईसें रोगकी पैदासका कारण होय इसमें पुरुषका तथा स्त्री जातिका
रा २ नुकशान होणाभी आ जाता है, कितनीक जातोंमें बालविवाह वगेरे कुचाला होता
वो रोग उत्पत्तीका दूरका कारण बण जाता है, कितनीक जातोंमें जैसें, बोहरे वगेरोमें
गा पडदा होता है, जिससें ओरतें नाताकत और रोगी होती है ऐसें औरभी जाति का-
कि अनेक दृष्टांत है (४) देशकारण, कितनेक देशोंका हवा पाणी अथवा अदम्योंकी
कृती अपनेकूं माफगत नहीं आवै जिससें रोग पैदा होय एसा विवहार कल्पीजिसो
(५) कालकारण, बालपणा जवानी और बुढापा वगेरोमें जुदी २ अवस्थामें तेंसें छ
तुओंमें जो काम करणा चाहिये अथवा बरतणा चाहिये उसतरे न वरतीजे अथवा
परीत बरतीजे उस कारणोसें जो रोग पैदा होय सो (६) मंडली कारण, अदम्योंकी
ी २ मंडली एकठी होकर ऐसे नियम बांधे सो शरीर संरक्षणसें विरुद्ध होय जिस
रणोंमें रोग पैदा होय सो (७) राज्यकारण, राज्यके कायदे और धोरण एसे होय
लोकोंकी तासीर और हवा पाणीके विरुद्ध होय उससें बहोत रोग पैदा हो जाय
। अपणा गरम देशके लोकोंकूं सरापयाने-दारूका पीणा बहोतही नुकशान करनेवाला है,
। दारूके व्यसनसें बहोतसी बेमारिया हो जाती है, एसा है तोभी दारू वगेरे मादक
। मारणेवाली चीजोंकों बेचनेकूं जाहिर लाईसेन्स देणा इय राज्यकारण है, (८) ध-
ारण, सब सृष्टीके जीव मोतके डरमें आयपडे एसा कोइ व्यवहार धर्मे [illegible]
ोपान वगेरे शारीरक उन्नतीके शिखरपर लेजाणेवाली क्रियाकों [illegible] धर्मकी
रयक क्रियामें दाखल करके मानने थे सो अब सृष्टिके लोकोंमें [illegible]
। बंदोबस्तवाला कायदा नहीं होणेसें लोक मनोगती होकर [illegible], इससें सब
ों [illegible] डर तथा बहोत खराबी होती है सो देख कहो [illegible]
[illegible] हमने पांच समवाय लिखे है ये रोग होनेके सब कारण [illegible] निवारे
हार २ ये दोय नय विगर होते नहीं, बिजली या अकालादि [illegible]
[illegible] भवतव्यता समवायकूं अनिश्चरीपणा समझणा गरमी [illegible]
[illegible] अनिश्चरी (इयुम्योनिक) प्लेग, है जेके होनेमें समुदायी कर्म [illegible]
ि तो पांचो समवाय समझणा, निश्चयनयसें [illegible]
[illegible] हारनयमें उसमें उदय आहार विहारादिकका [illegible] रोग [illegible]
[illegible] णा, बहोतसे रोग विवहारनयसें [illegible]
[illegible] का स्वभाव तो वरतनेका है, सो [illegible]
[illegible] स्वभाव, पदार्थोंका स्वभाव, और ऋतुओंके [illegible]

मुरादाबादका छपा भया।। और ये निर्बलता बहोतसे रोगोंका मूल कारण है,।।(२)निज कुटंबमें विवाह होणा येभी निर्बलताका हेतू हैं, वैद्यकशास्त्रमें निषेध कीया है, तभी तो भगवान ऋषभदेव अपणी प्रजाकूं बलवंत करणेकेलिये युगला धर्म दूर किया, संगमे जन्मे जोडोंसे मैथुन होता था तब प्रजाकी वृद्धि नहीं थी. और नहीं वो कोइ पुरुषार्थका काम करते थे फकत पूर्वबद्ध पुन्यका फल कल्पवृक्षोंसें भोगते थें, कल्पवृक्षका हीनपणा देख प्रभूने पुरुषार्थ बढाणेकूं दुसरोंकी ओलादसे, विवाह करणेका हुकम दिया, कोइ कहेगा भगवान दो माताओंकी औलाद भरतबाहूबलसे ब्राह्मी सुंदरीका विवाह कैसें किया पिता तो दोनोंके आपही थे।।इसमे विचार ऐसा है, भगवान प्रजापतीने ये विधि इसवास्ते दिखलाईके तुम एक दुसरे कुटंबकों बेटी दो वो आपतो जाणतेथे मेरी दोनों बेटियां बाल ब्रह्मचारणी हैं, इनोंके तो रति या शंतानकी प्रवृत्ती होयगी नहीं,भगवानकूं ऐसा किया देख एकके संग जन्मा भया जोडा दुसरेके जन्में भये जोडोंसें विवाह दुनिया करणे लगी,बडी मनूमें ऐसाही हुकम है,और छोटी मनू भृगु ऋषीकी बनाइमें ऐसा लिखा है. माताके सपिंडमें नहीं होय और पिताके गोत्रमें नहीं होय ऐसी कन्या, उत्तम जातिवालोंकों विवाह करणा चहिये छोटी मनुनें नीच कोमका ये काम है, ऐसा बाकी रखा है, बडी मनूका जो कायदा है, उसका कायदाही अहन्नीती है, वो बडी और छोटी दो है, कुटंबमें लग्न करणेका निषेध बाबत अनेकीक कारण तो बहोत है, इहां लिखणेकूं जगे नहीं है, लेकिन् दुहिता जो नांम बेटीका संस्कृतमें धरा है, सो उसका अर्थ तो ऐसा होता है, के जिसके दूर जानेसें सबका हित होय, पचास वर्ष पहिले गोत्रमें विवाह करणेका बडा तिरस्कार होता था, अब तो कहीं २ उत्तम वर्णके हिंदुओंमें प्रचार चला है, पूर्व विद्वान तथा अर्वाचीन विद्वान अपणा कुटुंबमें व्याह करणेकी मनाई करते हैं, क्योंके जैसें रसायनिक योग दोनुं जुदे २ गुणोका तत्व मिलता है, तभी सिद्ध होता है. गोत्र विवाहमें जाहिर देखने कोईभी फायदा नहीं दिखता इसवास्ते कितनीक जात तो सगी बहिन काकाकी बेटीमें व्याह कर लेते हैं, शास्त्र और लोक मर्यादा तथा आदमके बांधे नियमकों तोडकर चलते हैं, ऐसें संबंधसे पैदा भयी औलाद शरीरशक्ती और मानसिक शक्तिसें उतरते जाते हैं, फेर जैसें दुसरे रूप और सुधारोंके साधनोंमें जैसा ताकतवर होणा चहिये ऐसी ओलाद बलवान नहीं होती है, जो की शास्त्रादिक ऊपर लिखे प्रमाणोंकों नहीं मानते उनोंनें अपनी औलादके हित सुखकेवास्ते इतना तो जरूरही ध्यानमें रखणा चाहिये जो के बापके तरफसें कहि तरेकाभी संबंध न लगता होय ऐसोंके संग व्याह करणा सबसें अच्छा है. दूर रहती कौमें व्याह करणा सर्वोत्तम संबंध है, (३) (बालविवाह) बालपणेमें जो व्याह कर देते हैं, उससे जो जो खराबियां होती हैं, सो तो किसीसें छिपी नहीं हैं. इनका बडा बया लिखे बचपणेमें जो विषय सेवते हैं. उनोंके शरीरमें इतनी दुरबलता

उपचार करणा प्राणीके हाथ है, कर्मगति विचित्र है, जो रोगके कारण,कुदरती पैदा होता है, वो अदमीयोंके रोगका कारण निरुलो के होता है, पानावरनेसें ओ फार होता है, सो तो रोग तथा रोगके कारणोंकों दूर करनेवाला है, लेकिन् कर्मवस प्राणी कइयक रोगी हो जाते है, इसवास्ते कुदरती ऋतुभोग्य करण याने दवाकी शुद्धीका है, लेकिन् जो रोगी हो जाते हैं उनोंकी अंज्ञा इ रोंको दैवकृत चाहे मान लो, असलमें हरकिसमेक भये रोगोंकू पहचानकर मिटाणा ये इस ग्रंथकी सम्मती है,

रोगी करनेके दूर कारण.

घरके अंदर रहणेवाले वहोत अदम्योंमेंसें एक किसी आदमीकूं कोलेरा मरी जाता है दुसरोंकों नहीं होता इसका क्या कारण है, इसके खुलासमें रोगके करनेवाले कारण आ जाते हैं, क्योंके आहार विहारके विरुद्ध वरतावसें तरफसें वारसे याने औलादमें मिली भई शरीरकी तासीरकी निबलाईसें फलाने शरीर फलाणे २ दोषोंसें जेर होगया है, और ये दोष इसी रोगकेलायक कारण होजाता है, ऐसे २ कारणोंसें फलाने २ दोषवाला शरीर फलाणे २ रोगों करणेकूं आगेसेंही तैयार भया २ होता है, इसवास्ते वो रोग उसी अदमीकूं ल दुसरेकूं नहीं लगता है, जिस कारणोसें रोग पैदा नहीं होता मगर बदनकूं कर दुसरें तुरतके कारणोंके लायक करदेवे सो रोगके लायक करनेवाला कहलाता है, जैसें बीज जमीनमें बोणा होय तब पहली जमीनकूं फाड डाल तईयार करते हैं जो जमीन बीजकेलायक होय तभी बीज ऊगता है इसतरेही कारण दोष शरीरकूं ऐसी हालतमें ले आता है, तब पीछे तुरतके घणे कारण पैदा कर देता है, रोगके लायक करणेवाले कारण बहोतसे घणते हैं, जिसमेंसे २ लिखते है, (१) माबापकी निर्बलता (२) सगे कुटंबमें ब्याह (३) ब्याह (४) औलादका बिगडणा (५) ऊमर(अवस्था) (६) जाति (७) धंधा (८) प्रकृती(तासीर)(१) माबापकी निर्बलता गर्भ रहती वखत दोनुं माब एकका शरीर ना ताकात होगा तो बालक जरूर ना ताकत होगा, तैसें बापसेती होत बडी ऊमरकी होगी अथवा मासें बाप जादा ऊमरका होगा, डेढी ऊमर पुरुषकी ऊमर तक तो जोडाही गिणे जाता है, हदउपरांत ऊमरकी तफावत गिणा जाता है, उनोसें पैदा भया बचा ना ताकत होता है, कामशास्त्रमें चार स्त्री चार जातके पुरुषोंका, समरति १ उचरत २ विषमरत ३ और नीचरत ४ बालक पैदा होय सो ताकतवर या नाताकत लंबी ऊमरवाला या ... ऊमर या दलद्री या सूरवीर होता है,इत्यादि लिखा है, देखो शंकरलाल जैन वैद्यकृत

सात धातें अच्छी तरे उपयोगमें लेणेसें शरीरकों पोषणकर तनदुरस्ती रखता है, और चीजोंकों चहिये जिससें कमलेवेया चहिये जिससें जादा लेवे चहिये जिससें उलटी लेवेतो वदनमें तरे २ के रोग पैदा कर देते हैं, इसमेंकी वहोतसी वातोंका वि हमने विस्तारसें तीसरें प्रकाशमें किया है, इहां हरेक वावतसें कोनसे २ रोग पैदा हैं, वो संक्षेपसें इहां लिखेंगे, वांचणेवालोंकों इसपरसें अनेक रोगके लायक कारणोंका मालम हो जायगा (१हवा)अच्छी हवा रोगकूं मिटाती है, खराव हवा रो पैदा करती है,खराव हवासें मेलेरीया याने विषमज्वर जीर्णज्वर नामका बुखार दस्त हैजा कामला आधासीसी शिरकादुखणा मंदाग्नि अजीर्ण कवजियत वगैरे रोग होता है, वहोतठंडीहवासें उधरस खास कफ दम सिसकणा सोजा संधिवायु दरद पैदा होता है, वहोत गरम हवासें जलण लूखास गरमवायु कटणा प्रस्वेद भ्रम अंधेरी चक्कर भमल वातरक्त गलतकोढ शीतला ओरी अछवडा हैजा दस्त वगैरे पैदा होता है, (२पाणी) निर्मल साफ पाणीका फायदा आगे पाणीके प्रकरणमें लिखा और खराव पाणीसें वहोत रोग पैदा होता है, खराव जलसें हैजा कृमि किरमीका बुखार दस्त कामला अरुचि मंदाग्नि अजीर्ण कवजियत मरोडा गलगंड फीकापणा वलाई दुर्वलता वगैरे रोग पैदा होता है, जादा खारवाले पाणीसें पथरी अजीर्ण कवजियत गलगंड वगैरे रोग होता है, वनस्पतीके अथवा दुसरी चीजोका सडा मिले पाणीसें दस्त ठंडदेकेतप कामला तापतिल्ली वगैरे रोग होता है, मेरभये जानवरों सडे पदार्थ मिले भये पाणीसें हैजा अतिसार और दुसरे भयंकर जहरी बुखार पैदा रता है, धातुओंके मिले पाणी याने जिसमें पारा सोमल सीसा वगैरे जहरी पदार्थ मिला भया होता है, ऐसा जलभी रोगोंकों पैदा करता है,(खुराक)शुद्ध और अच्छा तीके अनुकूल और वरावर सिजायाभया खुराक खाणेसें शरीरकूं पोषण करता है, सडाभया वासी विगडाभया कच्चा लूखा वहोत ठंडा वहोतगरम भारी, तथा अच्छाभी जादा खावे, अथवा पूरी खुराक नहीं खावे इससेभी वहोत रोग पैदा होता है, (१ सडे खुराकसें कृमि हैजा उलटी कोढ पित्त तथा दस्त इत्यादि रोग होता है, (२ कच्चा खुराकसें अजीर्ण दस्त पेटदुखणा कवजी कृमि वगैरे रोग होता है, (३) खुराकसें वायु शूल गोला दस्त कवजी दम श्वास वगैरे रोग पैदा होता है, (४) खुराकसें शूल पेटमें चूंक गोला तथा वायुकूं पैदा करता है, (५) वहोत गरम खु खांसी अम्लपित्त (खटी उलटी) रक्तपित्त (मूं वगैरे छेदोंमेंसें खूनका गिरणा) वगैरे रोग पैदा होता है, (६) वहोत ठंडा खुराकसें खास श्वास दम शरदी कफ वगैरे रोगपैदा होता है (७) भारी खुराकसें अपचा दस्त मरोडा रोग पैदा होता है, (८) जादा ... दस्त अजी... वगैरे पैदा है

पूरा खुराक नहीं खाणेसें क्षय निबलाई(चेहरा) वदनफीका बुखार वगैरे पैदा होता
इस उपरांत मट्टीके मिले खुराक खाणेसें पांडुरोग होता है, बहोत मसालेदार खुराक
सें यकृत् कलेजा याने लीवर विगडता है, और बहोत उपवास करणेसें शूल वायू
रोग पैदा होकर शरीरकूं निर्बल करता है, (४)(कसरत) पहली लिखे मुजब कस-
नियमानु सार शक्ति मुजब कसरतके याने महनतके करणेसें फायदा है, बहोत महनत
आलसु बण बैठे रहणेसें बहोत रोग होता है, बहोत खेचलसें बुखार अजीर्ण उरुस्तंभ
ने नीचेका तंग रह जाणा) श्वास वगैरे रोग होणा संभव है, अल्प श्रम (याने आलसु-
गेसें) अजीर्ण मंदाग्नि मेदवायु अशक्ति वगैरे रोग होता है, भोजनकर कसरत
गेसें कलेजेकूं हरकत पहुंचती है, भारीअनाज खाकर कसरत करणेसें आमवातका
सांधोंमे दरदका रोग होता है, कसरत २ तरेकी हे, शरीरकी १ और २ मनकी (१)
रकी कसरत हदसे जादा खेचल करणेसें हृदयमें धबका धडधडाट नसोंमें खून
त जलदी फिरता है, श्वासोश्वास बहोत जोरसे चलता है, उससें मगज तथा फेफसा
रे जरूरीके भागोंपर बहोत दबाव होणेसें उनोंका रोग होता है, बहोत खेचलसें भमळ
ती है, कानोंमें अवाज होती है, आंखोंमें अंधेरी आती है, भूख मारे जाती है,
जीर्ण होता है, नींद नहीं आती बेचैनी होती है (२) मनकी कसरत शक्ति उपरांत
बल देणेसें अदमीके मगजमें गुस्सा भरजाणेसें बेहोस हो जाता है बाजे वखत मरभी
ता है, बहोत खेचल करणेसें याने चिंता फिकरसें अंग तवाये जाता है शरीरमें
नबलाई घर करती है बहुत पढणे वांचणेसें बहोत विचारसें फेर मनपर बहोत दबाव
णेसें कामठा अजीर्ण वादी पागलपणा वगैरे रोग पैदा होता है स्त्रीयोंके योग्य
सरत नहीं मिलणेसें उनोंका शरीर फीका नाताकत और बेमार रहता है गरीब लोकोंसें
सवाले ऐसआरामवाले लोकोंके घरकी औरतें भागसभागी सुखी होती है जो औरतें
स बैठी रहती है उनोका हाथ पांव ठंढा चहराफीका शरीर तवाया भया दुबला
बदा बादीसें फूलाभया नाडीनिर्बल पेटकाफूलणा बदहजमी छातीमेंजलन खट्टी
कार हाथ पांवमेंकांपणी तथा बसका हिस्टीरियाका तरे २ का दुखदाई रोग और
तू धर्मसंबंधी केइ तरेकी बेमारी इत्यादिक रोग जो स्त्रियें अंगकूं पूरी कसरत नहीं
ती है उनोंके होता है (नींद) बहियें जिससें जादा देर नींद लेणेसें खून बराबर नहीं
रता है तब शरीरमें चरबीका भाग जमा होता है पेटकी दूंद बाहिर निकल्ती है
थूंक मेदवायु बढते हैं कफका जोर होता है उससे कफके केइयक रोग होना संभव
ता है और बहियें जिसमें थोडी नींद लेणेसें शूल उरस्तंभ रोग होताहै दिनकेसोनेसें कफ
टता है, कपडे जेसें शरीरकी हिफाजत करता है तेसें योग्य रीतसें ऋतु मुजब तासीर

मुजब नहीं पहरणेमें आवे तो उस कपडोंसें नुकशान पोहचता है, बच्चोंके वदनपर ठंडी असर जलदी होती है इसवास्ते गरम अछे कपडे पहराणा चाहिये, नहीं तो उनकूं छातीका तथा पेटका रोग होता है, पांवोंकों हमेसा खुला रखणेसें तथा पेर २ बंध रखणेसें सरीरमें नुकशांन होता है, क्षय (राजरोग) जैसे भयानक रोग पैदा हो जाता है। तंग (सक्थ) पोसाकसें छाती तथा कलेजे (लीवर)पर दबाव होणेसें ये अवयव अपना काम बराबर नहीं बजाता, तब फिरता खून अटकता है, उससें श्वास नलीका तैसें कलेजेके रोग पैदा होता है, गरम मुलकमें अथवा गरम मोसममें ढीले कपडे पहरना ठंडी मोसममें जरा तंग पहरणा चहिये इसतरेसें उलटा पहरनेमें आवे तो गरमी मोसममें गरमीका रोग ठंढ कालेमें ठंढका रोग पैदा होजाता है, मैले कपडे पहरनेसें चमडीका रोग हो जाता है, कपडे मैले और चिकणे होनेसें उडते भये चेपी रोग वदनकूं लगजाता है, (७) (विहार) विहारकूं इसजगे स्त्रियोंके भोगकूं लिया है, भोग करणा येभी शरीरका एक स्वभाव है, उसमें जो जादा करे या मैथुन करता बीचमें उठे या वेगकूं जबरन पैदा करे फेर वीर्यकूं रोके तो बहोतसे रोग पैदा होते हैं, बहोत विहारसें क्षय. धातुक्षीणता. शूल, प्रमेह, प्रदर, गरमी, रक्तपित्त, मृगी, उन्माद वगेरे रोग बहोतसा पैदा होजाता है। मन चंचल भयेबाद जादा वीर्यके रोकनेसे धातूका गिरणा, स्वप्नमें धातुका जाणा, ऐसे रोग होणा संभव है, (८) मलीनता, बहोतसे रोगोंकूं पैदा करती है, घरके अंदर तथा आसपासकी गंदकी खराब हवाकूं पैदाकर उस हवासें अनेक रोग होणा संभव है। वदनकी मलीनतासें चमडीके बहोतसे रोग हो जाते हैं, लूखापण, खुजली, गडगूमड ऐसे इस उपरांत मैलसें चमडीके छेदोंके रुक जाणेसें पसीना अंदरसें बाहिर निकलने नहीं पाता जिसकरके खून बराबर शुद्ध नहीं हो सकता, और केइयक रोग होजाता है, (९) व्यसन, सेवणेसें अनेक महाकष्ट देणेवाले रोग पैदा होजातें है, सराप ताडी सींधी अफीम भांग तमाखू(तबखीर)चा काफी वगेरे व्यसनकी बहोतसी चीजों है, ये चीजोंमेंसे केइयक चीजें रोग पर दवातरीके योग्य रीतसें वापरणेसें फायदा करता है, जैसें ज्ञातासूत्रमें सेलक ऋषिका मदिराके पीणेसें रोग गया, लेकिन बहोत वैद्यके हुकम बाहिर पीया तब बेशुद्ध होगये और (पंथक)चेलेनें नरकका रस्ता मयकूं छोडाय परम पद सधाया इसवास्ते ये मद्य वगेरे चीजें थोडे दिनतकभी जो वरतणेमें आवे तो व्यसन पड जाता है, व्यसनलगीके हमेस वापरणेमें इतने रोग पैदा हो जाते है, सरापसें रस बिगडणा बदहजमी उलटी दस्त कबजी पेटमें मरोड मंदाग्नि और मगजकी खराबी करता है, आलस सुस्ती हिम्मतहार डगमगपणा बेअक्कलपणा, दारू पीनेवालेके खास लक्षण है, दारूसे फेफसेकी दरद बेमारी बहुत याने लीवरका संकोच तथा पकणा क्षय, मधुप्रमेह, गुरदेका रोग ऐसे २ बडे २ भयकर रोग पैदा करता है, शरीरमें जहरका असर करता है.

रोग होजाते हे मुख्य २ तो ये है, (४) कृमि (५) बुखार (६) चूंक (
दस्तकी कबजी वगेरे (४) बुखारमेंसें तिल्ही (२) जीर्णज्वर (३) सोष (४)
(५) कास (६) श्वास (७) प्यास (८) उलटी (९) अतिसार वगेरे ५.
कृमिकी बेमारी जुदीगिणी गई है, उस करके (१) हिचकी (२) हृदयका रोग (
हिस्टिरीया (४) शिरका दर्द (५) छींक (६) दस्त (७) उलटी (८
गूमड वगेरे रोग होजाता है, ६ धातु बिगाडसें असाध्य क्षयकी बेमारी हो
जो उसका जावता नहिं करे तो फेर (२) मगजकी वायु बिचारवा
हो जाता है, बुद्धिका नाश होजाता है, पागल जैसा बण जाता है, ७
रोगका जावता नहीं करनेमें आवे तो वधकरके राजयक्ष्मा होजाता है, ८
सराप पीनेसे जो रोग होता है, उसकूं मदात्यय एसा कहते है, उसमें (
(२) दाह (३) पागलपणेका असाध्य रोग होता है, ९ उपदंश दुष्ट
पैदा भई गरमीके रोगसें (१) विस्फोटक (२) गांठ (३) वात
रगतपित्त (५) हरस (६) भगंदर (७) नासूर (८) गंडिया वगेरे
है, १० प्रमेह सुजाक पहले होकर प्रमेह होजाता है, इससें वद गाठ (१)
(२) मूत्राघात (३) प्रमेहपीडिका वगेरे उपदंसवाली सब बेमारियां होती

किरण २ दुसरी.

वाय पित्त कफसे पैदा होयसो रोग.

आर्यवैद्यक शास्त्रमुजब तमाम रोगोकी जड वाय पित्त कफ है, ये
बराबर अथवा अपणे मूलस्थितीपर होते हैं, तहांतक शरीर निरोग गिणे जाता है,
एक अथवा जादा दोष अपनी २ मर्यादा छोड उलटे रस्ते चलते है, तब
हो जाते हैं, ये तीनों दोष किसतरे मर्यादा छोडते हैं, उनोसें कोनसा २
होता है, सो लिखते हैं, बदनमें वायुका कोप होनेका कारण
दस्त पेसाबके वेगकूं रोकणा, तुरतसका खुलासाकर दिखाते हैं
रातकूं उजागरा करणा, बहोत श्रम होती है, लेकिन् बाजे
बहोत रस्ते चलना जादा बोलना ये कारण गरम है, रोग
कडवा तीखा पदार्थ खाना, उत्पत्ति सरदी समझ गरमी
इत्यादिक वायुकी कोपानेका यो गरम दवामें नहिं मिटे
बरसात बरसनेमें आनकियेपीछे गीर उसकी बताई दवा
बहोत जोरसे पवन (हवा) चलनीमें उलटी पड़कर रोगपूर्
८० प्रकारका रोग पैदा करती है, ऐसें, सो सो दोर्ग

स्वेदनाश ५९ वादी पसीनोके छेदोंकों रोक पसीना बंध करे सो.
दुर्बलत्व ६० वायुके कोपसें वदनकी ताकत जाती रहे सो.
बलक्षय ६१ वादीके कोपसें ताकतका बिलकुल नाश हो जाय सो.
शुक्रप्रवृत्ति ६२ वादीके कोपसें शुक्रवीर्य बहोत गिरा करे सो.
शुक्रकार्श्य ६३ वायु धातुमें मिलके धातूकूं सुकाय डाले सो.
शुक्रनाश ६४ वायुसें धातूका बिलकुल नास होजाय सो.
अनवस्थितचित्त ६५ वायु मगजमें जाकर चित्तकूं अस्थिर करे सो.
काठिन्य ६६ वायूके कोपसें वदन करडा होजाय सो.
विरसास्यता ६७ वायूके कोपसें मूंमें रसका स्वाद बिलकुल नहीं रहता.
कषायवक्रता ६८ वादीके कोपसें मूंका स्वाद कषायला रहे सो.
आध्मान ६९ वायुके कोपसें सूंटी धरणके नीचे आफरा चढे सो.
प्रत्याध्मान ७० हृदयके नीचे और सूंटीके उपर आफरा चढे सो.
शीतता ७१ वायूसें वदन ठंढा पड जाय सो.
रोमहर्ष ७२ वादीके कोपसे वदनके रूंखडे होय सो.
भीरुत्व ७३ वायुके कोपसे डर लगना रहे सो.
तोद ७४ वदनमें सूइयां चुभावे एसा लगे सो.
कंडू ७५ वदनमें खाज आवे वादीसें सो.
रसाज्ञता ७६ रसोंका स्वाद मालम नहीं देवे सो.
शब्दाज्ञता ७७ कानोंसें सुणीजे नहीं सो वायु.
प्रसुप्ति ७८ स्पर्शकी खबर नहीं पडे सो वादी
गंधाज्ञता ७९ गंधका ज्ञान खुसबोकी मालम नहीं पडे सो.
दृष्टिक्षय ८० निजर (दृष्टिमें) वायु प्रवेशकर देखणेकी शक्ति कम करे.

वायूके कोपसें वदनमें इसमेंके एक अथवा अनेक लक्षण दिखते हैं, [illegible] विचार रखना है, ये रोग वादीके हैं, खून और वादीका निकट संबंध है, वादी खूनमें मिलके अनेक खूनके विकार पैदा करती है, ऐसे रोगोंमें खूनकी शुद्धि और वादीकी शांति करे ऐसा इलाज करणा.

पित्तप्रकोपका कारण.

कटोर गरम तीखा खट्टा रूखा दाहकारी चीजोंके खानेपीनेसें [illegible] [illegible] [illegible] क्रोध अग्निसेवन [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पित्तका कोप होता है.

तरे वांका होय दृष्टि स्तब्ध होय कबूतरकी तरे गलेमें शब्द होय.
अंगभेद २९ सब बदन तूटाकरे उसकू अंगभेद कहते हैं.
अंगशोष ३० वादी सब बदनका खून सूकाय डाले बदनकूं सुका देवे.
मिणमिणत्व ३१ मुंमेंसें निकलनेके शब्द नाकमेंसें निकले गुंगापणा.
कलता ३२ हिचक २ कर अटकता थोडा २ बोले बकाई खाता बोले सो
अष्ठिलिका ३३ सूंडीनाभीके नीचे पत्थर जैसी गांठ होती है.
प्रत्यष्ठिला ३४ इसतरेहीकी गांठ पेटमें आडी होके रहती है.
वामनत्व ३५ गर्भमें प्राप्त होकर वादी गर्भविकार करे तब लडका वामना
कुजत्व ३६ पीठमें और छातीमें वायु भरकर कूब निकाल देती है.
अंगपीड ३७ सब बदनमें दरद होता है उसकूं अंगपीडा कहते हैं.
अंगशूल ३८ सब बदनमें चसके मारते है वो शूल कहलाती है.
संकोच ३९ वादी नसोंकों संकुडाकर शरीरकूं अकडाती है सो संकोच.
स्तंभ ४० वादीसे सब बदन झलजाता है उसकूं स्तंभवायु कहते हैं.
रूक्ष ४१ वादीके कोपसें बदन लूखा और निस्तेज होता है सो.
अंगभंग ४२ वादीसे जाने शरीर तूट जायगा एसा होय सो.
अंगविभ्रम ४३ बदनका एकाध भाग लकडे जैसा जड होय सो.
मूकत्व ४४ बोलनेकी नाडीमें वादीभरजाणेसें जुबान बंध होजाती है सो.
विड्ग्रह ४५ आंतरोंमें वायु भरकर दस्त पेसाबकी कबजी होय सो.
बद्धविट्कता ४६ वादीसें दस्त बहोत करडा आता है.
अतिजृंभा ४७ उबासी (जंभाई) वादीसे बहोत आवे सो.
प्रत्युद्गार ४८ वादीके कोपसें डकारे बहोत आया करती है.
अंत्रकूजन ४९ वादीके कोपसें आंतोमें कुर २ अवाज वेर २ होय सो.
वातप्रवृति ५० वादीके जोरसें अधोवायु पाद बहोत होय सो.
स्फुरण ५१ वादीके जोरसें कोईभी अंग फुरके आंख हाथ वगेरे सो.
शिरापूर्ण ५२ वादीसें नसों (शिराओं) सब भरजाती है सो.
कंपवायु ५३ वायुसें सब अंगया शिर कांपा करता है.
कार्श्य ५४ वादीके कोपसें बदन दिनपर दिन दुबला होते जाता है.
श्यामता ५५ वादीमें शरीर काला पडते जाता है.
प्रलाप ५६ जिस वादीमें बहमी बहोत बकता बोलता है सो.
क्षिप्रमूत्रता ५७ जिस वादीमें दम २ में पेसाब उतरा करे सो.
निद्रानाश ५८ जिस वादीमें नींद नहीं आवे सो.

पित्तके ४० रोग.

धूमोद्गार १ धूंये जैसी जली भई डकार आवे औधी. विदाह २ वदनमें जलण वहोत हो
उष्णांगत्व ३ वदन हरदम गरम रहे. मतिभ्रम ४ शिरचकडोलचढ घूमा करे.
क्रांतिहानी ५ वदनके तेजका नाश होय. कंठशोप ६ गलाखूके शोप पडे.
मुखशोप ७ मूंमे शोप पडे सूके. अल्पशुक्रता ८ धातू वीर्य कम होजावे.
तिक्तास्पता ९ मूं कडवा रहै. अम्लवक्रत्व १० मूंखट्टा रहै.
स्वेदश्राव ११ पसीना वहोत आवै. अंगपाकता १२ वदन पक जावे.
क्लम १३ ग्लानि तथा अशक्ति रहै. हरितवर्णत्व १४ वदनका रंग हरा दीखे.
अतृप्ति १५ भोजन करे तृप्ति न होवै. पीतकायता १६ वदनका रंग पीला दीखे.
रक्तश्राव १७ शरीरके किसी जगेसें खून जावै. अंगदरण १८ चमडी फटे.
लोहगंधास्पता १९ मूंमेसें लोह जैसी वो आवे. दौर्गंध्य २० मूंमेसें दुरगंध छूटे.
पीतमूत्रत्व २१ पेसाब पीला उतरे. अरति २२ पदार्थोपर अप्रीति रहै.
पित्तविट्कता २३ दस्त पीला आवै. पीतावलोकन २४ आंखसें पीला दीखे.
पीतनेत्रता २५ आंख पीली हो जाय. पीतदंतता २६ दांत पीले हो जाय.
शीतेछा २७ ठंढे पदार्थकी वांछा रहै. पीतनखता २८ नख पीले होय.
तेजोद्वेप २९ प्रकाशका तेज सहा न जाय. अल्पनिद्रता ३० नींद थोडी आवै.
कोप ३१ क्रोध (गुस्सा) चढे. गात्रसादर ३२ वदनमें पीडा होय.
भिन्नविट्कत्व ३३ दस्त पतला आवै. अंधता ३४ आंखसें आंधा होय.
उष्णोछ्वासत्व ३५ श्वास गरम निकले. उष्णमूत्रत्व ३६ पेसाब गरम आवै.
उष्णमलत्व ३७ दस्त गरम उतरे. तमोदर्शन ३८ आंखसे अंधेरी आवै.
पीतमंडलदर्शन ३९ पीले चक्कर दीखे. निःशरत्व ४० उलटी दस्तमे पित निकले.

पित्तके कोपसे इनोंमेंसें एक अथवा अनेक लक्षण दिखाइ देते हैं, मतिभ्रम बुद्धिका बिगाड तिक्तास्यता स्वेदश्राव क्लम अरति अल्पनिद्रता गात्रसादर भिन्नविट् तमोदर्शन वगेरे कितनेक पित्तके रोगोकूं साधारण अदमी अपणी समझ मुजब रोगमें गिणकर उसकूं मिटाणे गरम इलाज किया करते हैं, उससें उलटा रोग बढ वहोतसे रोग वाहरसें वायुकेसे दिखते हैं, लेकिन असलमें निश्चय करणेपर वो हि ठहरता है, वहोतसें रोग वाहरके लक्षणोसे पित्तका तथा गरमीका मालम दें निश्चयपर वो रोग वायुसे भये सिद्ध होते हैं, इस वास्ते रोगोका कारण सोचनेमें विचार शक्ति और सुक्ष्म बुद्धिसें तपासणेकी जरूरी है.

कफ प्रकोपका कारण.

मीठा गुड सकर बुरा मिश्री वगेरे घी मक्खन वगेरे चिकणे और भारी पदार्थ
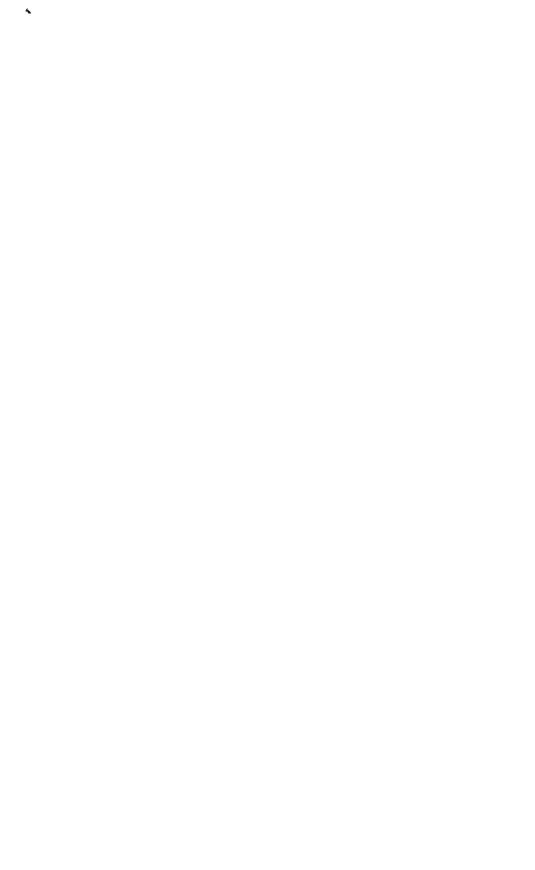
कुन अच्छा नहीं इसतरे स्वरोदय १ शकुन २ और स्वप्न ३ ये तीनोंसें विगर देखे निमित्तज्ञानसें रोगी जियेगा १ या बहोतदिन भुगतेगा २ या आराम ३ इत्यादिक वैद्य जांण सकता है लेकिन् ग्रंथ पढजाणेके समय इहां नहीं अष्टांगनिमित्त यथार्थ ज्ञानकूं झूठा कहे सो झूठा है अब रोगपरीक्षालोकीक मुख्य है उसका विस्तार वर्णन इहां लिखताहूं १ प्रकृतिपरीक्षा २ स्पर्शपरिक्षा ३ परीक्षा ४ प्रश्नपरीक्षा १) प्रकृतीपरिक्षा सो रोगकी प्रकृती वायु-प्रधान है या पित्त है या कफ-प्रधान है के रक्त-प्रधान है इस बाबतका निर्णय प्रकृतीके स्वरूप णेमें आवेगा २ स्पर्शपरिक्षा रोगीके शरीरका जुदा २ भागोकूं हाथके स्पर्श दुसरे साधनोंमें तपासकर देखणेकी परिक्षाका वर्णन करणेमें आवेगा स्पर्शपरिक्षा या थरमोमीटर (उष्णता मापक नली) सें और स्टेथोस्कोप (हृदय तथा श्वास क्रिया जांणनेकी भूंगली) वगेरे दुसरे साधनोंसें भी होसकती है, नाडी हृदय तथा चमडी ये स्पर्शपरीक्षाका अंग है ३ दर्शनपरिक्षा रोगीकावदन तथा उसके अवयव फकत नजरसें देखणे मात्रसेंही रोगका कितना एक निर्णय होसके इतनी बहोत बावतें आजाती है, रूप यानेचहरा त्वचा याने चमडी नेत्र जीभ मळ मूत्र वगेरेका रंग तथा उनोके दुसरे चिन्होंसें रोगकी परिक्षा होसकती है ४ रीक्षा, रोगीकी हकीगतमें तथा पूछणेसें जो जो बातकीवाकवी होय उसकूं इस परीक्षानाम दिया है.

प्रकृतीपरिक्षा.

आर्य वैद्यकशास्त्रका विशेषपणेसेंवाय पित्त कफ परही आधार रख्का भया है क्षामें भीयेही तीन है इसवास्ते इन तीनोंका विचार पहली करणेमें आता है, नाडी परिक्षाके विषयपर आवते पहली एसा निश्चय करणा चहिये के हरेक दोषप्रकृ तीका स्वरूप कैसा होता है, सब अदम्योंकों अपणी २ तासीरसें वाकब होना अपणी प्रकृती शांत है, के तामसी है, ये बात तो सब अदमी आपभी जाणते है उनके सहवासी यार दोस्तभी जाणते हैं, वैद्यक शास्त्रके नियमानुसार वायकी पित्त कफकी अपणी प्रकृती है, या खूनकी है, या मिश्र मिली भई है, ये जाणे बाद के पदार्थोंका सामान्य गुण दोप धर्म जब अछीतरे जाण लेता है, तो अपणी अछीतरे तनदुरस्त रख सकता है, इलाजभी रोगोंका कर सकता है, इन तीनों परिक्षामें बहोतसी परिक्षा सामान्य तोर आजाती है, सब अदम्योंमें वाय पित्त कफ खून होताही है, लेकिन बराबर सब अदम्योंका देखणेमें नहीं आता है, इन किसीके वदनमें एक प्रधान किसीके वदनमें दो, अदमीकूं उसी चीज एक प्रकृतीवालेकूं माफगत आती है, दुसरेकूं नही आती इसका मूल मतलब

ो, के अदम्योंकी प्रकृती जूदी २ होती है, इसतरे वस्तुओंका स्वभावभी जूदा२ होता है, तब अदमी आप अपणी प्रकृतीकूं नहीं जाण सकता तब खानपानकी वस्तु प्रकृतीकी रिक्षा करणेमें मदतगार होसकती है, जेसें दवासें रोगकी परीक्षा होती है, जिस वखत सरी तरे रोगकी परीक्षा नहीं होसकती तब चतुर वैद्य डाकतर ठंडा या गरम इलाजसेती गका कितनाएक निर्णयकर सकते हैं. तेसें खानपानके पदार्थोसें प्रकृतीकी परिक्षा सकती है, जेसें गरम वस्तु माफगत नहीं आवे तो समझणा तासीर पित्तकी है, ठंढी स्तु माफगत नहीं आवे तो प्रकृती वायूकी या कफकी है, प्रकृती मुख्य चारतरेकी है, तप्रधान प्रकृती १ पित्तप्रधान प्रकृती २ कफप्रधान प्रकृती ३ रक्तप्रधान प्रकृती ४ न चारोंका सेलमेल होकर लक्षण होय सो मिश्रप्रकृती जांणनी अब इन चारोंका वरण लिखते हैं.

वातप्रधाननामीरके अदमी.

शरीरके अवयव बडे लेकिन विवस्था विगरके छोटे बडे बेडोल शिरमोशरीरसें छोटा बडा. निलाड मूंमें छोटा. बदनसुका और लूखा बदनका रंग फीका झांखा और खून गरका आंखगहरी काले रंगकी बाल जाडे काले और छोटे चमडीनिजविगरकी लूखी केन् स्पर्शकाज्ञान जल्दी करणेवाली. मांसके लोचे करडे. लेकिन विखेर भये, चाल ल्दी चंचल और कांपती खूनका फिरणा वे प्रमाण. इसवास्ते कोईका शिर गरम तो थ पैर ठंडा, और कोइका शिर ठडातो हाथ पैर गरम. काम करणेमें प्रबल लेकिन चंचल अस्थिर, कामक्रोधादि वेरियोंका जीतणेमें अशक्त, प्रीति अप्रीति तथा डर जलदी होय, न्याय अन्यायका विचार करणेमे सुक्ष्म दृष्टि होती है, लेकिन अपणे इलमादी चारकूं अपणे अमलमे लाणा उसकु मुसकल होता है. सब जिंदगी अस्थिर चपल धिमें गुजारता है, सब कामोंमें जलदी करता है. उसके शरीरमें वेमार्ग बहोत जलदी ती है, उसका मिटणा भी मुसकिल वेमारीमद भी नहीं सकता कष्ट चोगुणा दिखा देता दुसरी २ प्रकृतीवालेका शरीर और मन ज्यूं ज्यूं अवस्था आती जाती है त्यों त्यों पिट और मंद पडता है. लेकिन वायुप्रधानप्रकृतिवालेका उलटा उमर बढणेपर मन ा और मजबूत होता जाता है. इस प्रकृतीवाले अदमीके अजीर्ण बधकुष्ट दस्त टकारोग शिरकादर्द चमका वातरक्त फेफसेकाश्रम क्षय उन्माद वगेरे रोगहोणा संभव है, पेर इसप्रकृतीवाले अदमीकी उमर तावत धन थोडा होता है, इसप्र- तीके अदमीकूं तीखा चमचमा गरमागरम तथा खारा पदार्थोपर जादा प्रीति होती है, मीठा ठंडा पदार्थोपर अप्रीति अरुचि होती है

२. पित्तप्रधान प्रकृतीके अदमी.

शरीरके अंग उपांग खपसूरत कदावंधा, मांसके लोचे टांटे होते है, बदनका रंग

लिये चालथोडे करवरे, जलदी सुपेद होय, तेसें वदनपर थोडी २ फुनसियां भयाकती है भूख प्यास जलदी लगे, मूंमेसें शिरमेंसें बगलमेंसें दुरगंध आवे, बुद्धिमानहोय होय आंख पैसाब तथा दस्तका रंग पीला होय, साहसीक उत्साही तथा कलेश सहणेकी शक्तिवाला, उसकी ताकत उमर द्रव्य तथा ज्ञान मध्यम होता है, इस वालेकूं अजीर्ण पित्त हरस वगेरे रोग होणा जादे संभव है, मीठा तेसें खट्टेरसपर प्रीति होती है, तीखा और खारेरसपर कम रुचि होती है.

३ कफप्रधान प्रकृतीके अदमी.

शरीरसुंवाला भराहुआ मजबूत अवयवसंपूर्ण वदनकारंगसुंदर चमडी वाल सुंवाले, रंगस्वच्छ आंखचिलकती सपेद तथा धूसर रंगकी, दांतमैला सुपेद, गंभीर, चल तथा नींद जादा, आहार थोडा, विचारशक्ति, कोमल, बोलणेकी शक्ति यादशक्ति और विवेकबुद्धि जादा, न्याययुक्त विचार, व्यवहार अच्छा, शरीरकी मनकी शक्ति जादा होती है, शरीरकी चाल मंद, लेकिन् मजबूत विशेषपणेकरतात और धनवान लंबी ऊमरवाला होता है, सामान्य कारणसें रोग होजाता है, कफके रसकी वृद्धि होती है, शरीरभारी मेदवाला होता हैं, उसकरके अशक्ति बढती बदन बहोत जाडा होता है, पेटकी दूंद छिटक पडती है, हाथ बडा सांधेभी बडे जाडे होते हैं, मांसके लोचे ढीले होते हैं, चहरा विरस और फीका होता है, शरीर जाडा मोटा दिखता है, वैसी अंदर ताकत नहीं रहती, निर्बलता सोजा जलवृद्धि जेसे पांव वगेरे, इस प्रकृतीके मुख्य रोग है, तीखा खारा पदार्थोंपर जादा प्रीति पदार्थोंपर कम रुचि होती है.

४ खूनप्रधान धातूके आदमी.

वात पित्त कफ ये तीन प्रकृतिसिवाय जिस अदमीमें खून जादा होता है, उनके लक्षण है, शरीरसें शिरछोटा, मूंचपटा चोखूणा, निलाडवडा और कितनोंका [illegible] ढलता, तथा छाती चौडी गंभीर और लंबी होती है, खडे रहणेसें सुंटी पेटकी [illegible] संग मिल जाती है, धाहरया अंदर दिखती नहीं, चरबी थोडी, वदनपुष्ट खूनमेंसें खपसूरत वालनरम पतले और आंटेदार चमडी करडी उसमेसें मांसके लोचे दिखे, नाडीपूर्ण और ताकतवर दांतमजबूत पीलास पडते भये, पीनेकीचीजपर [illegible] पाचनशक्ति प्रबल, महनत करनेकी शक्ति बहोत, मानसिक वृत्ति कोमल, बुद्धि [illegible] सहनशील संतोषी लोकोंपर उपगार करनेवाला बोलणेमेंचतुर सरलभाषी [illegible] खूनवालाअदमी हरदम कांममेंभी नहीं लगे रहता, और घरमें बैठके निकम्मा भी नहीं गमाये चाहता, दाद, फेफसेकावरम, निजला, दाहज्वर खूनकानिकलना जेस्यरोग, फेफ्सेका रोग होणा संभव है, धूप नहीं सहता, जुदी २ प्रकृतीकी

रूप (ई) त्वचा चमडी (उ) मूत्र याने पैसाब (ऊ) दस्त मल इतनी परिक्षा की गई है.

(अ) जीभपरीक्षा.

जीभकी हालतसें गलेकी होजरीकी और आंतरेके हालतकी खबर होती है, क्योंके जीमके ऊपरका बारीक पुडत गला होजरी और आंतरेके अंदरका बारीक पुडतके साथ जुडा भया और एक सदस मिला भया है, जीभपरसें इसके अलावाभी कितनेक रोगोंका विचार बांध सकते हैं, तनदुरस्त हालतमें जीभ भीजी अछी और अणी उपरसे जरा लाल होती है, गीलास, रंग, और जीभके ऊपरसें मैलपर, रोगकी परीक्षा हो सकती है. (१) गीली भीगी जीभ) अच्छी हालतमें जीभ थूकसेंभी भीजी रहती है, बुखारमें जीभ सूकणे लगती है, इसवास्ते जीभ भीजी होय तो समझणा बुखार नहीं है, कोईभी रोगमें जीभ सूककर फेर पीछी भीजणी सरू होय तो समझणा रोग अछा होनेपर है, जल पीनेसें एक वेर गीली होती है, लेकिन जो बुखार होता है तो तुरत फेर सूक जाती है (२) सूकी जीम)कितनेक रोगोंमें वदनमें रस चहिये इतना पैदा नहीं होता उसही तरह जब थूक थोडा पैदा होता है, इससेंही जीभ सूक जाती है, और रोगीकूं भी जीभ सूकी मालम देती है, तब सब मूं सूक गया एसा रोगी कहता है, एसी जीभपर अंगली लगाणेसें और करडी मालम देती है, बुखार शीतला ओरी और दुसरे चेपी बुखारोंमें होजरी तथा आंतरोके रोगमें और बहोत जोरके बुखारमें जीभ सूक जाती है, ज्यों बुखार जादा त्यों जीभ जादा सूकती है, करडी भई जीभभी मौतकी निशाणी है, (३) लाल जीभ) जीभकी अणी तथा कोरपर हमेसांजरा लाल होती है, लेकिन जो सब जीभ लाल अथवा जादा भाग लाल होय तो शीतला मूंका पकणा मूं आणा पेटका सोजा और सोमलका जहर इतने रोगका अनुमान होता है, बुखारमे जीभ अणीपर तैसें दोनों तरफ कोरपर जादा लाल होती है, (४) फीकी जीभ) वदनमेंसें बहोत खून निकले पीछे अथवा बुखार तिल्ली और एसीही दुसरी बेमारीमे वदनमेंसे खूनके रक्तकण कम होणेसे जैसे चहरा तथा चमडी फीकी पडती है, तैसें जीभभी सुपेद और फीकी नजर पड जाती है, (५) मैली जीभ)रोगोंमें जीभपर सुपेद थर आती है, उसकूं मैली जीभ कहते है, बहोत सखत बुखारमें सखत संधिवातमें कलेजेके रोगमें और मगजके रोगमें दस्तकी कबजीमें जीभ मैली होती है, जीमकी अणी और दोनों तरफकी कोरसें जीभका मैल कम होणा सरू होय तो समझणा के रोग कम होणा सरू भया है, लेगिन जो जीभके पिछले भाग तरफसें मैलका थर कम होणा सरू होय तो जांणनाकी रोग धीरे २ घटेगा घटणा सरू भया है, जीभके ऊपरका थर जल्दी साफ हो जाय और जीभका वो भाग लाल चिलकना और चीरा २ पडा

दीखे तो समझणाके आंतरेमें किसी जगे सडा है, या जखम भया है, ये जीभ
रफार खराब निसाणी जाहिर करतीहै, बहोत दिनोंके बुखारमें जीभका थरभूरा
तमाखूके रंगका होताहै, और जीभके ऊपर बीचमें चीरा पडताहै. बोमीबंड डरके
री का निशाणहै पित्तके रोगमें जीभपर पीला मेलजमताहै (६) कालीजीभ)
रोगोंमें जीभकारंग जामूनीरंग या काले रंगकी होती है दम श्वास और फेफसेके
संबंध रखणेवाले खासी वगैरे रोगोंमें जब दमलेणेमें अडचन पडतीहै, तब ख
राबर साफ होता नहीं इस करके जीभ काली झांखी अथवा आसमानी रंगकी
फेर कितनेक दुसरे रोगोंमें जब जीभ काले रंगकी होतीहै तब दरदीके बचणेकी
थोंडी रहती हे (७) धूजती जीभ) सन्निपातमें मगजके भयंकर रोगमें और
कितनेक सखत रोगोंमें जीभ धूजा करतीहै, रोगीके अखत्यारमें नहीं रहती वो
निकलताहै, तब भी धूजतीहै, एसी धूजती जीभ अत्यंत निबलाई और डरके
शाणीहै (८) सामान्य परीक्षा) बहोतसें रोगोंकी परीक्षा करणेमें जीभ दर्पण
जीभपर सुपेद मजबूत थर याने मैल जमा होय तो पाचन शक्तिमें गडबड समझणी
और सूजीभई और दांतोके नीचे आणेसें दांतोकी निसाणी मंडीरहै, एसी जी
जरी तथा मगज तंतुओंमें दाह होय तब होतीहै, जीभपर जाडा पीले रंगका थ
य तो पित्तविकार जांणना, काला झांखा भूरे रंगका पुडत खराब बुखार होताहै
होता है, सुपेदथर साधारण बुखारकी निशाणी है, सूकी थरवाली काली और
जीभ इकवीस दिनोंका भयंकर ज्वर सन्निपातकी निशाणी है, एक तरफ लोचा
ती जीभ आधी जीभमें वादी आणेकी निशाणी है, जब जीभ बहोत मुस
नीठ २ बाहर निकले और रोगीके इच्छामुजब अंदर नहीं जावे तो स
रोगी बहोत नाताकत और लिवाईजगया है, बहोत भारी रोग होय उसमें फेर
धूजणे लगेतो बडा डर समझणा, हेजा तथा होजरी ओर फेफसेकी बैमारीमें ज
भ सीसेके रंगजेसी झांखी दिखाइ देवे तो खराब चिन्ह समझणा, जरा असमानी
की जीभ दिखाइ देवे तो समझणा के खूनकी चालमें कुछ अटकाव भयाहै, मूं प
य और जीभ सीसाके रंग जेसी होजाय तो नजीक मृत्युकी निशाणीहै वायूके
वाली जीभ खरदरी फटी भई तथा पीली होतीहै पित्तके दोषवाली जीभ कुछ
लाल और कालास पडती होतीहै, कफ के दोष वाली जीभ सुपेद भीजी और न
..., त्रिदोषवाली जीभ कांटेवाली और सूकी होतीहै, मृत्युकालकी जीभ खर
वीभई फेणवाली लक्कडजेसी करडी और गतिरहित होजातीहै देशी वै
... जादा जिव्हापरीक्षा लिखीहै.

(आ) नेत्रपरीक्षा.

रोगी की आंखोसें भी रोगकी परीक्षा होतीहै, वायूके दोषवाले नेत्र लूखे निस्तेज धूम्रवर्ण (धूंयेके जेमें धूसरारंग) चंचलतथा दाह वाली होतीहै, पित्तके दोषवाले नेत्र पीले दाहवाले और चराकके तेजकूं नहि सके ऐसे होतेहैं, कफके दोषवाले नेत्र भीगे सुपेद नरम मंद और तेज विनाकी होतीहै. तंद्रा याने मींटवाली आंखकाली और जड (टमकारीजती नहीं) एसी होतीहै त्रिदोष सन्निपातकी आंख भयंकर लाल जरा-काली और मिंचीमई होतीहै.

(इ) रूपपरीक्षा

चहरा देखणेसें कितनेक रोगोंकी परिक्षा होसकतीहै, फजरमें रोगीका चहरा तेज रहित विचित्र और झांखा के काला दिखता होय तो वादीका रोग समझणा, जो चहरा पीला मंद और सूजामया दीखे तो पित्त रोग समझणा, जो चहरा मंद तेलिया तेलके जेसा चिकणास वाला दीखेतो कफका रोग समझणा, कुदरती निरोगका चहरा शांत स्थिर और चैनवाला होताहै, रोगमें चेहरा फिर जाताहे तरे २ का स्वरूप दिखताहे रातदिनके अभ्यासी चहरेपरसें रोगपरखसकते हैं हर कोई नहीं परख सकता (१) फिकरवंदचहरा सखतबुखार बडे भयंकर रोगोंकी सरुआतमें हिचकी तथा खेंचतापके रोगोंमें दम तथा श्वासके रोगमें कलेजे और फेफसेके रोगमें इत्यादि रोगोंमें चेहरा चींतातुर रहता है, (२) फीका चहरा) वहोत खून जाणेसें जीर्ण ज्वरसें तिल्लीकी बेमारीसें बहोत निवलाईसें बहोत फिकरसें डरसें धास्तीसें इत्यादि कारणोंसें खूनके अंदरके लालरजकण कम होणेसें एसाचहराहो जाताहे औरतोंके ऋतुधर्ममें जादा खून जाणेसें अथवा जन्मसें नाताकत बंधेकी औरतकूं बालक चूंग २ कर खून कम करदेताहै, पोषण पूरा मिलता नहीं एसी औरतोंका भी चहरा फीका होजाता है, (३) (लाल चहरा)सखत बुखारमें मगज के सोजमें लूलगे तब आंखेंतो खून जेसीलाल गालपर गुलाबी रंग और उपसे भये मालम देतेहैं वदनका चहरा लाल तब समझणाके खूनका शिरके तरफ तथा मगजमें जादा जोस चढा है, (४) फूलाभया चहरा) वहोत निबलाई जीर्णज्वर जलंदर वगेरे रोगोंमें चहरा फूलाभया याने थोथरवाला होता है, आंखकी ऊपरकी चमडी चढ जाती है, गालमें आंगलीसें दबा[illegible] खड्डा गिरता है, चहरा सूजा भया दिखता है, (५) अंदर खुड्डा बेठाभया [illegible]के डालीकेपत्ते तथा छिटका छीलेबाद डाली सूडी भ[illegible] [illegible]क भयंकर रोगोंकी आखरी अवस्था[illegible] [illegible] वखत जो सिकल बनती है, [illegible] [illegible]ल आंखके होठे भं[illegible] [illegible] आगे खडे पडे

भये गाल बैठेभये हाडोंपर सल पडे भये चहेरेका रंग आसमानी एसा लक्षण दिख
देवे तो रोगीका जीणा मुस्किल समझणा.

(इ) त्वचापरीक्षा.

जैसें चमडीके स्पर्श करनेसें गरमी ठंढीकी परिक्षा हो सकती है, तैसें चमडी
ऊपरके रंगसें तैसे उसपर कितनेक चठे गांठों वगेरे निकलती है, उसपरसें वदन
कितनाक दोषोंका अनुमान होसकता है, शीतला औरी अचपडा वगेरे रोगोंमें प
बुखार आता है, इसवास्ते उसके अणसमझपणेसे उस बुखारकूं पहले सादासा बुखार लो
समझते हैं, लेकिन चमडींका रंगलाल फेर उस चमडीपर महींन २ दाणे उन रोगों
परिक्षा बता सकती है, अछीतरे देखणा चहिये वदनपर किसीभी जगे ललाई होय
पित्तके बिगाडसें समझणा, जिसके चमडीका रंग काला पडता जाय उसके शरीर
वायूका दोष समझणा जिसके वदनका रंग पीला पडता जावै सो पित्तका दोष समझ
गोरा सुपेद पडता जावै उसके वदनमें कफका दोष समझणा जिसके शरीरके चमडीक
रंग बिलकुल लूखा होकर अंदरमें चीरा सा दिखाई देवे तो समझना खून विगड ग
या तपाभया है, लोक उसकूं गरमी कहते हें 'चमडीतक खून जब नहीं पोहचता है
तब गरम तथा लूखी पड जाती है, चमडीका रंग तावेके रंग जैसा तामडा होय त
समझणा रगतपित्त तथा वातरक्तका रोग है, चमडीपर काले चठे और धब्बा पडे त
समझणा केइसकूं ताजा और अछा खुराक नहिं मिला है, जिससें खून विगडा है
इसतरे एकतरेका चठा और विस्फोटक होय तो समझणाके इसकूं गरमीका रोग है
हैजेकी दुष्ट बेमारीमें चमडीका तथा नखका रंग आसमानी काला पड जाता है, औ
वो मरणेकी निशाणी है, इसतरे चमडीसें कितनेक रोगोंकी परिक्षा होती है.

(उ) मूत्रपरीक्षा.

तन दुरस्त अदमीके पेशावकारंग बराबर सूके घासके रंग जेसा होताहे जेसें घाससूक
नहीं हरा, नहीं पीला, नहीं लाल; नहीं काला, नहीं सुपेद, लेकिन् इन सब रंगोकी छाय
वाला होताहे, वेसाही निरोग आदमी कापेसाव समझणा पेसावसे बहोत रोगोंकी परि
क्षा होसकती है, पैसाव ये खूनमेंसें छुटा निकलाभया निरुपयोगी प्रवाहीहे खूनकूं श
द्धकरणेवास्ते मूत्राशय (किडनी) पेशावकूं खूनमेंसें खींच लेतीहे, और उसकरके
जो कोइ बेमारी भई होयतो खूनका कितनाक उपयोगी भागपेसाबमें जाताहै
इसवास्ते पेशावसें बहोत रोगोंकी परिक्षा होसकती है, चिंतामणी शास्त्रसें हमने अष्टवि
धपरिक्षा इहां लिखीहे, डाकतरी ग्रंथोसें डाकदरोंकी, विशेप वातें हमारे अनुभवीहे,
(१) वादीके दोपवाला रोगीके मूत बहोत और वादलीके रंगजेसा होताहे, (२)
प दोपवाला रोगीका मूत लाल कसूभेका रंग जेसा अथवा केसूलेके फूलके रंग जेसा

पीला गरम तेल जेसा तथा थोडा होताहै, (३) कफके रोगीका मूत ठंढा तलाव-के पाणी जेसा सपेद फेणवाला तथा चिकणा होताहै (४) मिलेभये दोषोंवाला पेसाब मिलेभये रंगका होताहै (५) सन्निपात रोगमें पेसाब झांखा काला होताहै, (६) खूनके कोपवाला मुत्र चिकणा गरम और लाल होताहै, (७) वातपित्तके दोष वाला गहरा लाल अथवा किरमची रंगका तथा गरम होताहै (८) वात कफदोष वालेका मूत सुपेद तथा बुदबुदाकारहोताहै (९) कफपित्तवाले रोगीका मूत्र लाल लेकिन् गुमला होताहै, (१०) अजीर्ण रोगीका मूत्र चावलोंके धोवणके जे-सा होताहै (११) नये बुखारवालेका मूत्र किरमची रंगका तथा जादा होताहै, (१२) पेसाब करते लाल धार होय तो वडा रोग समझणा काली धार होय तो रोगी मरजावै पेसाबमें बकरीके पेसाबजेंसी गंध आवेतो अजीर्णका रोग समझणा (१३) (साध्यासाध्य परिक्षा) रोग साध्य याने सहजसें मिटे जेसाहे अथवा कष्टसाध्य याने मु-स्किलसें मिटे जेसाहै, अथवा असाध्य याने नहीं मिटे जेसाहे, सो परिक्षा लिखते है, फजर चार घडीके तडके रोगीकूं ऊठाकर उसका पेसाब एक काचके सुपेद प्यालेमें लेणा जिसमें पहली और पिछली धार नहीं लेणी बिचली धार लेणी पीछे उसकूं स्थिर रहणे देणा बाद सूर्यके धूपमें घंटाभर रखके पीछे एक घासके तिणखेसें धीरेसें-तेलकी बूंद डालनी जो वो बूंद डालतेही पेसाबपर फेल जाय तो रोग साध्य समझणा जो बूंद वो फेले नहीं ऊपर यूंकी यूं बने रहे तो रोग कष्ट साध्य समझणा जो वो बूंद अंदर पेसाबके तले बैठ जाय अथवा अंदरसें फेर पीछी ऊपर आकर कुंडालेकी तरे फिरणे लगे अथवा बूंदमें छेद २ पड जावै, अथवा तेलकी बूंद पेसाबके संग मिल जाय तो रोग असाध्य जाणना फेर तलाब हंस छत्र चमर तोरण कमल हाथी इत्यादि चिन्ह दीखे तो रोगी बचे, तलवार दंड कमाण तीर इत्यादि शस्त्रोके चिन्ह बूंदके होजाय तो रोगी मरे, बुदबुदे उठे बूंदमें तो देवताका दोष जाणना, इत्यादि मूत्र परिक्षा योग चिंतामणी ग्रंथमें लिखी है, इसमें कितनीक बातें तो अनुभवसें सिद्ध है, क्योंके फकत ग्रंथ वांचनेसेंही परिक्षा नहीं हो सकती है, करता उस्ताद और अणकरता सा-गिर्द होता है, ग्रंथके वांचणेसे फकत वायका पित्तका कफका खूनका तथा मिले भये दोषोंका इत्यादि परिक्षा पेसाबकी देखनेसें हो सकती है विशेष पहचान अभ्याससे होसकती है, ॥ २ ॥ अंग्रेजी मतसे मूत्र परिक्षा लिखते है ॥ रसायणशास्त्रकी रीतमें मूत्र की परिक्षा डाक्तरोनें करी है, इसवास्ते प्रमाण करणे लायक है, पेसाबमें [illegible] चीज है, युरीआ और एसिड इसके सिवाय उसमें लूण, गंधकका [illegible] क एसिड, मेगनिशिया, पोटास, और सोडा, [illegible] पहोतमा

भाग पा[illegible]

पेशाबमेंके पदार्थ.	पेसाबके १००० भागमे.
पाणी,	९५६॥। भाग.
शरीरके घसारेसें पैदा होती चीजें.	
युरीआ.	१४॥ ,,
युरिक एसिड.	०॥ ,,
चरबी चिकणाई वगेरे.	१५ ,,
खार.	
लूण.	७। ,,
फासफरीक एसिड.	२ ,,
गंधकका तेजाब.	१॥। ,,
चूना.	०॥ ,,
मागनिशिया.	०। ,,
पोटास.	१॥। ,,
सोडा.	बहोत थोडा.

पेशाबमें ऊपर लिखे सो पदार्थ है, लेकिन् तनदुरस्त हालतमें पेसाबमें ऊपर लिखी ची
हमेशां एक वजनमें होती नहीं खुराक और कसरत वगेरेपर उसका आधार
पेशाबमेंकी चीजोंकों पक्के रसायणी शास्त्री विगर दुसरे नहीं परख सखते और ए
परिक्षा होती है तभी पेशाबपरसें रोगोंकी पक्की परिक्षा हो सकती है, हमारे देशी पूर्वाचा
इस रसायण विद्यामें वडे प्रवीण थे तभी तो वीस जातके प्रमेहमें सर्करा प्रमेह क्ष
प्रमेहादिकी पहिचान करीहै इस मुजब तत्वके वेत्ता थे तभी तो उनोनें लिखा है, डाक्ट
रोंकी करी परिक्षाकुं लोक नई समझ हैरतमें रहते है, लेकिन् नई नहीं है, पेसाब
फकत आंखोंसें देखणेसें उसमेंके अनेक चीजोंका चोकस वधणा या घटणा माल
नहीं देता तोभी पेसाबके जथेपरसें पतलापणा या जाडेपणेपरसें कितनेक रोगोंक
परिक्षा अटीनेर तपासणेसें हो सकती है, निरोग अदमीकूं सब दिनमें याने २
घंटेमें सरासरी २॥ रतल पेसाब होता है, जो कभी पतला पदार्थ कमती या वेसी खाने
आवे तो वध घट होती है, ऋतुमुजबभी पेसाबके जथेमें फेर पडता है, ठंडकालेसें उष्ण
कालमें पेसाब थोडा होता है, मूत्राशयका एक रोग जिसकूं अंग्रेजीमें (ब्राइटस डिसीज)
याने मूत्राशयका उदंदर कहते है, वो मूत्राशयमें बिगाड होनेसें खूनमेंसें एक जरूरीक
तत्व (आल्बुमेन) के रसे निकल जानेसें होता है, पेसाबमें आल्बुमेन है या नहीं
उसकी निरीक्षा करनेसें इस रोगकी परिक्षा हो सकती है, इसीतरे पेसाबका सदा
भयंकर रोग मधुप्रमेह (डायाबीटिस) मीठा पेसाब होता है इसमें पेसाबमें मीठेका

जादा हिस्सा जाता है, पेसावकूं आंखसे देखणेसें उसमें मीठा है, या नहीं उसकी मालम नहीं पडती लेकिन् अछीतरे परिक्षा करणेसें मीठा जाता है, जिसकी खबर हो जाती है, मीठे पेसावपर हजारो चिमटियां लग जाती है, पेशावमे जुदा २ खार है, वो प्रमाणसें जादा या कम जाता है, तैसेंही (खटास) याने एसिडका भाग पेसावमें जादा जाता है, तो उससेंभी अनेक रोग पैदा होता है, इन जाते भये पदार्थोंकी अछी तरे परिक्षा हो जाय तो रोगोंकीभी परिक्षा हो सकती है.

पेसावमें जाते भये पदार्थोंकी परिक्षा.

पेसावकी परिक्षा बहोत तरेसें करी जाती है, कितनीक बात तो पेसावकूं आंखसें देखणेसेंही मालम होती है, कितनीक चीजें रसायणिक प्रयोग करके देखणेसें मालम देती है, और कितनेक पदार्थ सूक्ष्म दर्शक यंत्रसें देखणेंसें मालम पडती है, इसमेंकी थोडी परिक्षा इहां लिखते है, (१) आंखोंसें देखणेसें पेसावके जुदे २ रंगकी पहचानसें जुदे २ रोगोंका अनुमान बांध सकते हैं, निरोगी पेसाव पाणी जैसा साफ और जरा पीलासपर होता है, पैसाबके संग खूनका भाग जाता होय तो पेसाब लाल अथवा काला दिखता है, कितनीक दवाओंके खानेसें पेसावका रंग बदल जाता है, वो बातभी ध्यानमें रखणी चाहिये पेसाब थोडी देर रखनेसें जो नीचे किसी किसमका जमाव होय तो समझणा खार खून पीप चरबी वगेरे कोईभी पदार्थ जाता है, आल्व्युमीन और सक्कर पेसावमें गया होय तो उसकी परिक्षा आंखोंके देखनेसें नही होती, खार पेसावके संग मिला भया होता है, तोभी वो जादा जब जाता है, तो पेसावकूं थोडी देर रहणे देनेसें वो खार पेसावके नीचे जमता है, पेसाव ऊपर रोगकी परिक्षा करते इतनी बातोंका ख्याल रखणा (१) पेसाव धूएके रंग जैसा होय तो उसमे खूनका संभव होता है, (२) पेसावका रंग लाल होय तो जानना उसमें खटास (एसिड) जाता है, (३) पेसावके ऊपरके फेण जलदी बैठे नहीं तो जानना उसमें आल्व्युमीन अथवा पित्त है, (४) पेसाव गहरे पीला रंगका जाता होय तो उसमें पित्त जाता है, एसा समझना (५) पेसाब गहरे भूरा या काला रंगका होय तो समझना रोग प्राणघातक है, (६) पेसाव पाणी जैसा बहोत होता होय तो मीठा पेसाव (डाया बीटिस) की शंका होती है, हिस्टीरियाके रोगमेंभी बहोत पेसाब होता है, बहोत आता है, तब पाणी जैसा होता है, पेसाब ऊपर हजारों चिमटिया लगे तो समझ लेना मीठा पेसाब है, (७) जो पेसाब मेला और गुमला होय तो जाणना उसमें पीप जाता है, (८) पेसाब लाल रंगका और बहोत थोडा होय तो कलेजेका मगजका और बुखारके रोगकी शंका होती है, (९) पेसावमें खटास जादा जाती होय तो समझना पाचन क्रियामें हरकत पहुंची है, (१०) कामलेमें और पित्त प्रकोपमें पेसावमें बहोत पीलापणा और हरापणा होना

है, किसी वखत वो रंग एसा गहरा होजाता है, सो काले रंगकी शंका होती है, ऐसे पेसाबकूं हलाकर देखणेसें अथवा थोडा पाणी मिलाकर देखणेसें पेसाबकी पीलास मालुम देगी (२) रसायण प्रयोगसें पेशाबमेंकी जुदी २ वस्तुओंकी परिक्षा करणेसें कितनीक बातोकी खबर होगी सो नीचे मुजब. (१) पित्त, पेसाबके रंग ऊपरसें पित्तका अनुमांन बांध सकते हैं, और रसायण रीतसें परिक्षा करणेसें विशेष खातरी होती है, पेसाबकी थोडी बूंद काचके प्यालेमें या रकेबीमें डालणा उसमें थोडा नाइट्रिक एसीड डालणा दोनो मिलणेसें हरा जामूनी और पीछे लाल रंग होय तो पेसाबमें पित्त है एसा समझणा (२) युरिक एसिड वगेरे पेसाबका स्वाभाविक तत्व है, लेकिन वो जादा जाता होय तो उसकी परिक्षा इस मुजब है, पेसाबकूं एक रकेबीमें डालकर गरम करणा बाद नाइट्रिक् एसिडकी थोडी बूंद उसमें डालणी उसमें अगर पासे बंध जाय तो पेसाबमें युरिया जादा है एसा समझणा और पेसाब रकेबीमे डालकर उसमें नाइट्रिक एसिड डालकर तपाणेसें उसमेसें पीले रंगका पदार्थ हो जाय तो जाणना पेसाबमें युरिक एसिड जाता है. (३) आलब्युमीन) आलब्यूमीन ये एक पौष्टिक तत्व है, जो वो पेसाबमें जानेलगे तो शरीर कम जोर होता है, पेसाबके परीक्षा करनेकी नली (ट्युब) आती है, उसमें दोतीन रुपेभर पेसाब लेणा उस नलीके नीचे डाकदर लोक तो स्पीरिट (दारू) की चराक करते हैं, आर्य लोकोंने मोमवत्तीकी करणी उसमें पेसाबकूं गरम करणा पेसाब ऊकले तब उसके अंदर वो सोरेके तेजाबकी थोडी बूंद डालणी इसकी बूंदोसें पेसाब बद्दलोंकीतरे गुमला हो जायगा और गुमला भया पेसाब ठहरे पीछे अलब्युमीन नीचे बैठेगा और आंखोंसें दीखेगा लेकिन् पेसाब गरम करणेसें या गरम करकर उसमें सोरेकी तेजाबकी बूंदे नाखनेसें जो वो पेसाब गुमला नहीं होय अथवा गुमला होकर गुमलापणा मिट जाय तो समझनाके पेसाबमें आलब्युमीन नहीं जाता इस परिक्षासें गरम किया भया और नाइट्रिक एसिड मिला भया पेसाबमें जमा पदार्थ फोसफेट (क्षार) होयगा तो पीछा पेसाबमें मिल जायगा और आलब्युमीन होगा वो वैसाका वैसाही रहेगा. (४) स्युगर याने सक्कर—पेसाबमें जादा या कम पेसाबमें सक्कर जब जाती है, तब उस रोगकूं मीठे प्रमेहका भयंकर रोग कहणेमें आता है, पेसाब बहोत मीठा सुपेद पाणी जैसा होता है, उसमें सहत जैसी गंध आती है, तोभी रसायणिक रीतसें परिक्षा करणेसें सक्कर है, जिसकी बराबर खातरी होगी सक्करकी शंका होय तो पीछे पेसाबकूं [illegible] छाण लेणेसें जो उसमें आलब्युमीन होगा तो अलग हो जायगा पेसाबकूं [illegible] नलीमें लेकर उस पेसाबसें आधा लीकर पोटाश अथवा सोडा डालणा पीछे मोर[illegible] पाणीकी थोडी बूंदे डालणी वो नीलेथोथेकी बूंद बहोत हुसियारीसें एक बूंद पीछे [illegible] बुंद डालणी ओर नलीकूं हिलाते जाणा इसतरे करणेसें वो पेसाब आसमानी रंगका

आरपार दीखे जेसा होताहै पीछे उसकूं खूब उकालणा जो सक्कर होगी तो नलीके पींदे नीचे नारंगीके रंगजेसा लाल पीले पदार्थका जमाव होकर ठहरेगा और स्थिर भये बाद जरा लाल भूरे रंगका होगा जो एसा नहीं हो यतो समझणा पेसाबमें सक्कर नहीं जाती (५) खार और खटासकी परिक्षा (अेसिड और आल्कली) क्षार पेसाबमें) खारका भाग जितना जाणा चहिये उसमें जादा जाय तो रोग होताहै, इस जादा खार जाणनेकी परिक्षा हलदीका पाणी करके उसमें सुपेद बलाटींग पेपर (स्याही चूसणेका कागज) भिजाणा डाकदर लोक हलदीका टींकचर लेते हैं फेर उस कागजकूं सुकाकर उसमेंका एक टुकडा लेकर पेसाबमें भिजाणा जो पेसाबमें खारका भागजादा होगा तो इस पीले कागजका रंग बदलकर नारंगी अथवा बिदामी रंग हो जायगा फेर इस कागजकूं पीछे कोईभी खटाईमें भिगाणेसें पीछा पीला रंग था जेसाका जेसा होजायगा इस पेसाबकी परिक्षा करणेकूं टरमेरिक पेपर इंगलससें आताहै. वो नहीं होय तो हलदीमे भिगाया भया पूर्वोक्त कागज लेणा अब खटाइ जादा जाती होय उसकी परिक्षा लिखते हैं ॥ इससेंभी रोग जादा होजाताहै, लीटमस पेपर तईयार आताहै अगर वों नहीं मिले तो बलोटिंग पेपर लेकर कोबिजके रसमे भिगाणा फेर सुकाणा तब उसका ब्ल्यू (आसमानी) रंग होगा उस कागजका टुकडा लेकर पेसाबमें भिगाणा जो खटास जादा भया तो उस कागदका रंग लाल होगा खटाईके जादा या कमपर कागदभी कमी वेसी लाल होगा.

(ऊ) मलपरिक्षा

मल याने दस्तपरसें भी कितनीक परिक्षा होसकती है और साध्य असाध्यकी भी परिक्षा होसकतीहै (१) वायुके दोपवालेका मल फेणवाला लूखा धुयेंके रंग जेसा और चोथा भाग पाणी जेसा होताहै. (२) पित्तके दोपवालेका मल हरा पीला गंधवाला ढीला तथा गरम होताहै, (३) कफदोपवालेका मल सुपेद कुछ सूका कुछभीजा तथा चिकणा होताहै (४) वातपित्तके दोपवालेका मल पीला और काला भीजा तथा अंदर गांटोवाला होता है (५) वातकफके दोप वाला मल भीजा काला तथा पपोटेवाला होताहै (६) पित्त कफके दोपवालेका मल पीला तथा सुपेद होताहै (७) त्रिदोपका मल सुपेद काला पीला ढीला तथा गांटोवाला होताहै (८) अजीर्णका दस्त दुरगंधवाला और ढीला होताहै (९) जलंदरवालेका दस्त बहोत दुरगंधवाला और सुपेद होताहै, (१०) मरणकी बखतका दस्त बहोत बदबो मारता लाल जरा सुपेद मांस जेसा तथा काला होताहै जिस रोगीका दस्त पाणीमें डूब जावे वोरोगी बचता नहीं पतला दस्त अच्छेसें अथवा संग्रहणीके रोगमें पतले दस्त होतेहैं दस्तमें खुराकका कचा भाग दीखे तो समझणा बराबर पाचन भय

नहीं आंतरेमें पित्त बढणेसें भी दस्त पतला और नरम आताहै अतिसार और हेजेमें दस्त पाणी जैसा पतला आताहै क्षयके रोगमे जो विगर कारण दस्त पतला आवे तो समझणाके रोगी बचणेका नहीं (करडा दस्त–हमेस करते करडा दस्त आवे तो कबजियतकी निशाणी समझणी हरसके रोगीकूं हमेस सखतदस्त आता है उसमें बहोतसी वखत सफरेका भाग छिल जाणेसें उसमेंसे खून आताहै, पेटमें या सफरेमें वादी रहे तो उससें हमेस दस्तकी कबजी रहतीहै कलेजेमें पित्तकी क्रिया बराबर नहीं चले और चहिये जितना पित्त पैदा नही होय अथवा मलकूं आगे धकेलणें वास्ते आंतरेमें तंग और ढीला होनेकी चहिये जितनी ताकत नहिं होनेसें दस्त करडा आता है, खून वाला दस्त–दस्तकेसंग मिला भया खून अथवा आम (पीप) पडे तो समझनाके मरोडा भया है, हरसमें तथा रगतपित्तके रोगमें खून दस्तसे अलग गिरता है, याने दस्तके पहले या पीछै गिरता है, धार होकर, कलेजाका वरम (यकृतका पकणा) जिसमें खून दस्तके रस्ते बहोत गिरे और पीप एकदम आणे लगे तो समझणाके कलेजा पककर आंतरेमें फूटा है, जो दस्त धोयेभये मांसके पाणी जैसा आवे उसमें जरा खून होय या नहीं होय लेकिन काले छोतूं जैसा होय और बहोत बदवो गंध मारे तो समझणा आंतरा सडने लगा है, दस्तका रंग सुपेद होय तो समझना कलेजेमेंसें पित्त चहिये जितना आंतरेमें आता नहीं है, कामला पित्ताशय तथा कलेजेके रोगमें एसा दस्त आता है, हैजेमे तथा बडे अजीर्णमें दस्त सुपेद कांजी जैसा अथवा चावलोंके धोवण जैसा आता है. काला अथवा हरा दस्त आवे तो समझणा कलेजेमें रोग तथा पित्तका विकार है, आंवला गूगल तथा लोहकी बनावटकी दवाओं खानेसे दस्त काला आता है, ऐसे कारणोंको देखकर काले दस्तसें डरणा नहीं.

प्रश्नपरिक्षा ४.

रोगीकूं कितनीक हकीगत पूछनेसें रोगोंकी वाकबकारी होती है, एसी वाकबकारी पिछली लिखी परिक्षामेंभी नहिं हो सकती है, बहोतसी वखत एसा हाल बणता है, सो रोगीकूं पूछनेसेंभी रोगका यथार्थ हाल मालम नहीं देता अथवा एसी हालतपर बहोतसा पर्कानभी नहीं रखना, तोभी दरदीकी अगली पिछली हकीगत जांननी जरूर चहिये कारण पूछनेमें कोइ २ नई हकीगतभी निकल आती है, उसमेसें रोगकी पैदासका कारण पता मिल सकता है वैद्योंकों बहोतही फायदेमंद है, पूछ २ कर खूब निश्चय कर लेना चहिये इस उपरांत बहोतसी वाने रोगीके पास रहणेवाले अथवा सहवासियोंको पूछके [illegible] चाहिये जैसें रोगीकूं उलटी होती है, तो उलटी किस कारणसे मर्द [illegible] कारनकूं बंद करना चहिये उलटीकूं बंध करणेकी जरूरी नहीं जो होती होय तो तिनकूं दवाना अजीर्णमें होती होय तो अजीर्णका इलाज

करणा जो होजरीकी हरकतसें होती होय तो उसहीका इलाज करणा इसवास्ते उलटीका कारण निश्चे करणेकूं बहोत पूछताछ करणेकी जरूरी है, इसतरे सब रोगोंकी निश्चे करणी बुखार अजीर्णसें आया होय और इलाज दुसरा करणेमें आवे तो जलदी आराम नहीं होता बुखार अजीर्णसें भया है, या और कोई कारणसें उसका निर्णय जैसें दुसरे लक्षणों वगेरेसें मालम देता है, तेसें रोगी दो तीन दिन पहले क्या किया क्या खाया वो पूछणेसें तुरत निर्णय हो जाती है, बहोतसें रोग चिंता भय क्रोध काम विकार वगेरे मनसंबंधी कारणोंमेंसें पैदा होता है, और वो शरीरके लक्षणोपरसें बराबर मालम नहीं देता इसमें पूछणेकी बहोत जरूरी है, शिर दुखणेके बहोत कारण है, जैसें के शिरमें गरमी दस्तकी कबजी धातूका जाणा प्रदर वगेरे बहोतसें रोग शिर दुखणेका कारण होता है, शिर दुखणेके इन कारणोकों तलास करणेमें नाडी परिक्षा कितनेक दरजे काम करती है, लेकिन् पक्का अनुभव होय तो बाकी परिक्षा कोईभी काम नहीं देती फकत रोगीकूं पूछणा काम देता है, तेरा शिर किसतरे कबसे दुखता है, इत्यादिक ऊपर लिखे कारणोंसें शिर दुखता होय तो अमोनिया सुंघाणेसें बिलकुल फायदा नहीं होता फेर दांतके या कानके रोगसेंभी शिर बेतरे दुखता है, ये बातभी विरले लोक समझते है, कान बहता होय उससें शिर दुखता है, ये बात रोगी स्वप्नेमेंभी नही जाणता कान दुखणेका हालभी रोगीकूं विगर पूछे क्या खबर पडे इत्यादि अभ्यंतर सरब हकीगत वैद्य पूछे या रोगी अपणे आपही वैद्यकूं अवलसें आखरीतक हकीगत कह देवै, ये सब हकीगत विगर कहे कभी खबर पडणीही नहीं है, केइ इक मूर्ख लोक वैद्यकी परीक्षा लेनेकूं हाथ लंबा करते हैं, आप देखो नाडीमें क्या रोग है, एसा नहीं करणा आप अपणी सर्व हकीगत कह देणी चाहिये और वैद्योकूं चहिये सो नाडी देखणेका खाली आडंबर रचके रोगीकूं भरमाणा और डराणा नहिं चहिये उसकूं धीरजसें पूछ २ कर रोगकी असली पहिचान कर लेणी चहिये रोगकी परिक्षा पूरी कराणेकूं कोई नया या अजाण रोगी आवै तो उसकूं थोडी देर बैठ देणा वो स्वस्थ हो जाय बाद उसका चहरा आंख जीभ वगेरे देखना पीछे दोनों हाथोंकी नाडी देखणी पीछे उसके मूंसें हकीगत सुणनी पीछे उसके शरीरका जो जो भाग तपासणा होय सो देखणा फेर हकीगत पूछ अछीतरे निश्चयकर फेर रोगीकी जाती रुजगार रहणेका ठिकाणा ऊमर कोइ व्यसन होय सो अथवा पहली कोइ रोग भया होय, क्या क्या दवा कैसें २ ली क्या खाया पीया कैसें फायदा या नुकशान भया इस उपरांत रोगीके मावापका हाल शरीर संबंधी व्यवस्थासें वाकब होणा क्योंके बहोतसें रोग उनोके होय सो पुत्रोंके होता है, स्वरपरिक्षाभी रोगीके मरणे जीणे कष्ट रहणा गरम शरद वगेरे रोगोंकी परिक्षा है, सो इहां नहीं लिखा है, स्वरोदय देखणा, साध्यासाध्यकी परिक्षा बल

परसेंभी होती है, मृत्युके चिन्ह संक्षेपसे काल ज्ञानमें हैं, कानोंमें दोनों अंगली देणेसे गरडाट नहीं होय तो प्राणी मर जाता है आंख मसलके अंधेरेमें खोले जब बीजलीका साझपका होता है, सो नहीं होवे आंख मसलके मींचनेसें रंग २ का आकासमें वरसता दिखता है, सो नहीं दीखे तो मृत्यु जांणनी इत्यादिक या छाया पुरुषसें अथवा काचमें देखणेसें मस्तक वगेरे नहिं दिखाइ देवे तो मृत्यु जाननी चेतसुद ४ कूं चंद्रश्वर नहीं चले प्रभात समे तो नो महीनेमें मृत्यु जाणणी इत्यादि विवरण ग्रंथ वढ जाय इसवास्ते इहां नही लिखा है, बाकी छट्टे प्रकाशके निदानमें साध्यासाध्य खूब परिक्षा लिखेंगें. इति श्रीमज्जैनधर्माचार्यसंग्रहीते उपाध्यायश्रीरामऋद्धिसारगणि-विरचिते वैद्यदीपकग्रंथे अष्टविधरोगपरिक्षाविवरणे चतुर्थः प्रकाशः ॥

पांचमा प्रकाश ५

दवायोंका गुण तथा औगुण.

किरण १ पहली.

औषधीका प्रयोग देशी दवा.

यतः जन्मतोयस्यसञ्जाता सुगेशान्तिः प्रभावतः सश्रीशांतिजिनाधीशः करोतुसुखमक्षतं १ ग्रंथस्यनिर्विघ्नार्थमध्यमंगलंकृतं ॥

जंगलमें पैदाभई अनेक वनस्पति बजारमें विकती अनेक दवायें तथा फूंकी भई धातुओंकी भस्मी और इनोंसे बनती हजारों दवाइयां इनसबोंका नाम औषधी याने दवा है, इस ग्रंथमें जो जो वनस्पती या दवायोंका संग्रह है सो सब साधारण है जिस दवाकूं बनाते बहोत ज्ञान ओर चतुराई चहिये बहोत समय चहिये और बहोत धन चहिये एसी बडी दवा शास्त्रोक्तरसविद्याशाला (लेबोरेटरी) सिवाय दुसरी जगे यथास्थित बणसके ये असंभवित बात है इस वास्ते साधारण इलाजीतेसें घरगृहस्थी आप बनासके अथवा बजारमेसें मंगाकर उपयोगमें लेसके एसी दवायोंका संग्रह इसमें किया गया है इसी तरे साधारण अंग्रेजी तथा होमियोपेथिक दवा जोकी सब जगे लोक वरतते हैं, उनोंकाभी संक्षेप उपयोग इस ग्रंथमें लिखा है.

(अरिष्ट-आसव) पाणी काढा अथवा पतले प्रवाही पदार्थमें औषध डालकर मटीकेवर तणमें भरके कपड मटीसें मूं बंधकर एक दो पखवाडेतक धरे रहणे दे जब खंमीर पैदा होजाय तब अरिष्ट-आसव बनता है दवायोंकों विगर उकालेभी धरणेसें आसव तइयार होता है और जादातर तो लौकउकालकर दुसरी दवायें पीछे डालकर धरते हैं तब अरिष्ट तइयार होता है जहां वजन नहीं लिखा होय उहां इस प्रमाण लेते हैं अरिष्ट वास्ते उकालीकी दवा ५ सेर सहत ६। सेर गुड १२॥ सेर पाणी ३२ सेर आसववास्ते चूर्ण १। सेर, बाकी ऊपर मुजब, पीणेकी मात्रा दोनोंकी ४ तोला, यंत्र चढाकर अर्क टपकाते हैं, सो सराप (इसप्रीट) कहलाता है, दवायोंकूं एक दिन भीगाकर जंत्र चढाके भमका खेंचते है, वो अर्क होता है, दयाधर्मवालेके अर्क पीणे योग्य भक्ष है, अरिष्ट आसव सराप अभक्ष है, रोगादि कारणे छछंडी चार आगार है ॥ बावीस अभक्ष खानेसे बचे उसकूं पूरा जैन समझणा.

(अवलेह) जिस वस्तुकी अवलेही बणाणी होय चाटीजाय सो अवलेही कहलाती है, उस वस्तुका निजरस लेणा अथवा काढावणाकर उसकूं छानलेना पीछे उसपाणीकूं धीमी आंचसें जाढा पडणे देणा फेर उसमें सहत गुड अथवा मदर मिश्री अथवा दुसरी दवाभी मिलाते हैं चाटणेकी मात्रा० ॥ में २ तोला.

(कल्क) गीली वनस्पतीकूं शिलापर पीसकर अथवा सूकीकूं पाणी देके पीसणा लुगदीकरणी जिसकूं मुसलमीन लऊक कहते है, इसकूं संस्कृतमें कल्क इसकी मात्रा खाणेकी १ तोलेकी है.

(क्वाथ) उकालीभी कहते हैं, १ तोला औषधीमें १६ तोला पाणी उसकूं मट्टी या कलीके पात्रमें उकालणा आठमें भागका पाणी रखणा और छाणलेणा बहोत करके उकालणेकी औषधीका वजन एक वखतकी ४ तोलेकी है क्वाथ थोडानरमकरणा होय तो चोथा हिस्सा पाणी रखणा और एकवेर उकालेवाद कूचा पिछाडी छाणे वादरहे, उसका दुसरी वेर फेर सांझकूं उकाला इसी तरे किया जावे वो परक्वाथ कहलाता है, लेकिन सांझकूं उकाले भये क्वाथका कूचा दुसरे दिनवासी उपयोगमें लेणा नही फजरका सांझकूं लेणा नाताकतकूं क्वाथका जादा पाणी देणा नहीं, नये ज्वरमें पाचन क्वाथ अर्द्धावसेप रखकर देणा, कुटकी आदिखारा पदार्थकाक्वाथ ज्वरपके वाददेणा, इसकूं काढा जोसिंदाभी कहते है ॥

(कुरला) दवाकूं उकालकर पाणीका अथवा रातकूं भिगाये भये ठंढे हिमका फिटकडी नीलाथोथा वगेरे यूंही सादे पाणीमें मिलाकर मुखपाक रोगमें कुरला करणेमे आवे उसकूं संस्कृतमें गंडूप कहते है, त्रिफला रांग तिलकंटा चंपेलीके पत्ते दूध घी सहतसें.

(गोली) कोईभी दवाकूं अथवा सत्वकूं (घन अथवा एकस्टाकट) सहत नींबूका रस आदेकारस पानकारस गुड अथवा गुगलकी चासणीमें डालकर गोलियां वनाई जाती है, छोटी, वडीकूं तो मोदक कहते हैं, गूगल त्रिफलाके [illegible]थमे सुधता है शिलाजीतभीइसीमें.

(घी-तथा तैल) जिस जिसका घी अथवा तैल वणाणा होय उसका स्वरस अथवा दवायोंका पूर्वोक्त काढा याकल्क उससें चो गुणा घी अथवा तैल लेकर घी तेलसें चोगुणा पाणी अथवा दूध गोमूत्र लेणा, सूकी औषधीकूं १६ गुणा पाणीमें उकालकर चतुर्थांस रखणा, क्वाथसे चो गुणा घी तथा तेल लेणा, गीलीकी चटणी डालणी, सबकूं उकालते पाणी जलजाय औपधका भाग पक्कालाल होजाय घी अलग होजाय तब ऊतार ठंढा कर छाणलेणा, तैलमें तो झाग आते बंध होजाय तब तैल तइयार भया समझ झटनीचे उतार लेणा, घीमें झाग आतेही उतार लेणा ये परिक्षा है, वाकी पाणीमें १ पाताल यंत्रादिक २ सेभी वस्तुओंका तैल निकलता है, गुरुगम शास्त्र प्रमाण है, पीणेकी मात्रा ४ तोला.

(चूर्ण) सूकी दवाइयोंकों वामलकर कूट कपडछाण करे उस चूर्णकी मात्रा ०॥ में १ तोला.

(धूम्रां-धूप) अंगारमें दवा मिलाकर जैसें घरकूं धूप देकर हवा साफ करी जाती है, तैसें [illegible] कितनेक रोगोंमें चमडीकूं दवाका धूमांदेणेमें आता है अंगारेपर दवा डाल उसपर [illegible] दिखाकर उसपर बैठकर मूंतो उपाडा रखना और सब बदन

कपडेसें एसा खाट समेत चो तरफसे ढकणा सो धूआं बाहर नहीं निकलणे पावे अंगपर लेणा.

(धूम्रपान) जेसें दवाका धूंआं बदनपर लिया जाता है तेसें दवाकूं हुक्केमें भरकर मूसे यानाकसें पीते हैं, फिरंग रोगकी गठियापर.

(नस्य) नाकमें घी तेल के संग भूकी सूंघणी उसकूं नस्य कहते हैं.

(पान) कोईभी दवाकूं ३२ गुणा अथवा उससें भी जादा पाणीमें उकालकर आधा पाणीबाकी रखणेमें आवे उसकूं पिये सो पान कहलाता है, (पुटपाक) कोईभी हरी वनस्पतीकूं पीसकर गोलाबणाकर उसकूं वडयाएरंडीके याजामूनके पांनमें लपेट ऊपर कपडमट्टीका थर देकर थेपडी छाणोके भूकेमें सिलगाकर धरदेणा गोलेकी मट्टी लाल होणेसे निकालकर मट्टी दूर कर रस निचोडलेणा वनस्पती सूकी होय तो जलमें पीस गोला करणा इस रसकूं पुटपाक कहते हैं, उसके पीणेकी मात्रा २ सें ४ तोलेतक

(पंचांग) मूलयाने जड पान फल फूल छाल इसकूं पंचांग कहते हैं

(फलवर्त्ती) योनि अथवा गुदाके अंदर जाडी बत्ती दवाकी देणीसो इसमें घी अथवा दवाका तेल यासाबुन वगेरे दिया जाता है.

(फांट) एक भाग दवाके चूर्णकूं आठ भाग गरम पाणीमें कितनेक घंटोंतक भिगाकर पीछे उस पाणीकूं दवा मुजब पीणा, ठंढे पाणीमें १२ घंटेतक भीजणेसें फांट तइयार होता है, इसकी मात्रा ५ सें १० तोलातक.

(बस्ति) पिचकारीमें प्रवाही दवा भरकर मलया मूत्रके ठिकाणे दवा चढाणी वो खाणेके दवामाफक फायदा करती है, इसवास्ते असर होणेवास्ते पिचकारी मारफत दूणी दवा चढाणी.

(भावना) दवाके चूर्णकूं दुसरा रस पिलाणा उसकूं भावना कहते हैं, एकवेर रसमें घोटकर सुकाणा तब एक भावना कहलाती है.

(बाफ) बाफ बहोत तरेलीजाती है, बहोतसे सेक और बांधणेकी दवाभी बफारेका काम देती है, एकेलापाणी अथवा कोइभी चीज डालके उकाला भयापाणी सांकडे मूंके धरतणसे लेणा विधि गरम पाणीमें पीछे लिखी है.

(बंधेरण) पान वगेरे कोईभी वनस्पतीकूं गरम करके शरीरकी दुखती जगेपर बांधणा उसकूं बंधेरण कहते हैं.

(मुरब्बा) हरडे आमला वगेरे जिस चीजका मुरब्बा बणाणा होय उसकूं उबालकर करडी वस्तु होय तो फिटकडी वगेरे के त जाबसें नरमकर धोकर दुगणी या तिगुणी खांडया मिश्रीके चासणीमें डुबाकर रखणा मधुपक्क हरडे वगेरे उसकुं मुरब्बा कहते हैं.

(मोदक) बडी गोलीकूं मोदक लड्डू कहते हैं, वो मेथी सूंठपाक वगैरेका गुड खांड मिश्री वगैरेकी चासणीकर बांधणेमें आवे सो.

(मंथ) दवाके चूर्णकूं दवासें चोगुणे पाणीमें डालणा हिलाकर या मथकर छाण-कर पीणा सो.

(यवागू–कांजी) अनाजके आटेकूं छगुणे पाणीमें उकालणा जाडा सो

(लेप) सूकी दवाके चूर्णकूं अथवा गीली वनस्पतीकूं पाणीमें पीस लेप करणेमें आवेसो, लेप दोपहरकूं करणा ठंढीवखत नहीं करणा रगतपित्तके सूजन तथा दाह खून-विकारकूं हर कोईभी वखत करणा.

(लूपरी पोटिस) गहूंकाआटा अलशी नींबकेपत्ते कांदा वगैरेकूं जलमें वाफकर अथवा गरम पाणीमें मिलाकर लुगदीकर सोजा तथा गडगूमडपर बांधे सो

(शेक) शेक बहोत तरेसें किये जाता है, कोरे कपडेके गोटेका रेतीका इंटका गरमपाणीका भरीकाचकीसीसी वगैरेका और गरम पाणीमें डुबाकर निचोये भये फला-लीण उनूं कपडेका अथवा वाफ दिये कपडेका पाणीके वाफका सेक पहली लिखामी है, तोभी लिखते हैं, तपेलीमें पाणी तथा अफीमकाडोडा वगैरे डाल पाणीकूं उकालणा तपेलीपरचालणी ढकणी चालणीपर फलालीणके कपडेका टुकडा धरणा उसपर दुसरा वरतण थाली वगैरे ढकदेणा चालणीके छेदोंमेसें फलालीणकूं वाफ लगेगा उसकुं दुखते जगे सहे जाय ऐसा धरणा.

(स्वरस) कोईभी गीली वनस्पतीकूं पीसकर जरूर पडेतो थोडा जल मिलाकर रस निकालणा सो जो गीली वनस्पती नहीं मिले तो सूकी दवा अठगुणे पाणीमें उकालकर चोथा भाग रखणा अथवा २४ घंट पाणीमें भिगाकर रखणेसें पीछे मसलकर छांण लेणा, गीली वनस्पतीके स्वरसके पीणेकी मात्रा २ तोला सूकीदवाके स्वरसकी ४ तोला बालककूं ॥ तोला.

(हिम) औषधके चूर्णकूं छ गुणे जलमें रखकर रातभर भिजाणा फजरमें छाणलेणा उसकूं हिम कहते हैं.

(क्षार) जव वगैरे वनस्पतीमेंसें जवखार मूलीका क्षारपाठेका आंधी झाडेका इत्यादि बहोत चीजोंका खार करणेकी रीत इस मुजब है, वनस्पतीकूं मूलमेंसें निकाल-कर पंचांग जलाकर राखकर पीछे चोगुणे जलमें हिलाकर एक मट्टीके वरतणमें एकदिन रखकर ऊपरका नीतरा जल कपडेसें छाण लेणा उस जलकूं फेर हिलाणा आखरक्षार नीचे सूककर जम जायगा.

.) गिलोय वगैरेका गीलीकूं कूट जलमें मथकर एक पात्रमें जमणे देणा बाद ... धीरेसें निकाल डालणा पीछे नीचेजोसुपेदरहजाय सो, सूके बाद सत

(सिरका) अंगूर जामून इक्षु वगैरेका रस निकाल थोडा नोसादर डाल धूपमें धरणा सडवडणेपर तीन दिनसे या सात दिनसें बोतल भर धरदेणा.

(गुलकंद) गुलाबके फूलकी पंखडिया या सेवतीके जिसमे मिश्री बुरकाकर थरपर थर देणा ढककर धरदेणा जब फूल गलके एक मेक हो जावे महीने दो महीनेसें वो गुलकंद होता है.

(जुलाब) पहिली तीन दिन तैलादिकका मर्दन कराणा वायुके कोठेवालेकूं दस्त नहीं लगता इसवास्ते ४ तोला घी या औषधीका बणाया घी तेल दिन ७ पिलाणा पित्त वालेकूंभी पिलाणा कफवालेकुं जादा मालस कराणा स्नेहभी पिलाणा बाद कोठा नरम करणेकूं सूंफ गुलकंद या मुनका जीरा सूंफ सोनामुखी निशोतकी छाल गुलाबकली दोदो रुपे भर लेकर ६ पुडीकर १६ तोला पाणीमें उकालकर आधारहै तब उतार ठंढाकर २ तोला बूराडालकर दोनुं वखत दिन तीन पिलाणा, ये मुंजस है, खीचडी या दालभात चंदलियेका सागविनामिरचका खाणा, चोथेदिन काली निशोतका चूर्ण तोलेभर चैत्रमहीनेमें सींधा निमक ५ मासे कफ तथा वायु रोगमेंभी निमक मिलाकर फकी देणा, दिनकी बारे-बजे खीचडी पतली घीके संग खिलाणा, एक वखत, दिनकी नींद लेणी नहीं, बोझा उठाणे आदि कोइभी तरेकी खेचल करणी नहीं, आसोजकाती तथा पित्त और खून विकारमें बूरेके संगदेणा, दिनकूं च्यार पांच बजेकफरोगी टाल सूफ गुलकंद घोटकर या सूंफ १ भर उकाल पाणी छाण २ रुपे भर गुलकंद डाल ऊपरसें पी लेणा, मिरचाईके बीज १ भर लेणेसे ऊपर मुजब दस्त होता है, हेजा चलता होय तो दस्तकी दवा नहीं देणा कफके रोगीकूं जुलाफका विपमा १ तोलेभर सूंठ ३ मासा सींधा निमक ३ मासा नींबूके रसमें घोट फेर देणा, छब दिन जुलाबपर खीचडी दाल भात या दलिया ६ दिनतक खाणा इच्छाभेदीरस पूज्यपादगुटी नाराचरस छुरीकार रम सोनामुखी कपीला सांढकादूध अर्कदूध थोहरका दूध इंद्रायण इत्यादि जुलाबकी अनेक दवाइयां है, रसोंके जुलाबपर दस्त होता जाय ज्यों ज्यों बूरेका सरबत पीणा आंमके संग दवा दस्तमें निकले बाद फेर दस्त नहीं होता, उलटीकी दवा पहली देकर फेर बाद दो या तीन दिनके पीछे जुलाब देणा, आंम पचाणेकिरमालापंचक अच्छा होता है, मुसलमीन हकीमोंके उमदा जुलाब अमन्नास याखीरकिस्त दूध, या कची गुलाबकली भात संग रांधकर मिश्री मिलाकर खिलाते हैं, तीन दिनमे ३० दस्तका उत्तम जुलाब २० का मध्यम १० का हलका, गरमी जुलाब बाद जादा मालम देतो सूंफ गुलकंद ६ दिन पिलाना विशेष विधि मायर हकीमोंकी टहल बंदगी और उनकी महरबानी है, मुसलमीनोंकी तवारीकर्मे कंपराइमें लिखा है. अयपेकंबर मेरे कुदरतीका दावा दुनियापर नामी हकीम करसकते हैं, दुसरा कोइभी नही, आखर उस पेकंबरने ये बात हुकम खुदा मुजब हकीमने सन्दश देखी है,

(मोदक) बडी गोलीकूं मोदक लड्डू कहते हैं, यो मेथी सुंठपाक वगैरेका गुड व
मिश्री वगैरेकी चासणीकर बांधणेमें आवे सो.

(मंथ) दवाके चूर्णकूं दवासें चोगुणे पाणीमें डालणा हिलाकर या मथकर छा
कर पीणा सो.

(यवागू-कांजी) अनाजके आटेकूं छगुणे पाणीमें उकालणा जाडा सो

(लेप) सूकी दवाके चूर्णकूं अथवा गीली वनस्पतीकूं पाणीमें पीस लेप करणे
आवेसो, लेप दोपहरकूं करणा ठंडीवखत नहीं करणा रगतपित्तके सूजन तथा दाह खू
विकारकूं हर कोईभी वखत करणा.

(लूपरी पोटिस) गहूंकाआटा अलशी नींबकेपत्ते कांदा वगैरेकूं जलमें वाफ
अथवा गरम पाणीमें मिलाकर लुगदीकर सोजा तथा गडगूमडपर बांधे सो

(शेक) शेक बहोत तरेसें किये जाता है, कोरे कपडेके गोटेका रेतीका ईंट
गरमपाणीका भरीकाचकीसीसी वगैरेका और गरम पाणीमें डुबाकर निचोये भये फल
लीण उनूं कपडेका अथवा वाफ दिये कपडेका पाणीके वाफका सेक पहली लिखामी
तोभी लिखते हैं, तपेलीमें पाणी तथा अफीमकाडोडा वगैरे डाल पाणीकूं ऊकाल
तपेलीपरचालणी ढकणी चालणीपर फलालीणके कपडेका टुकडा धरणा उसपर दुस
वरतण थाली वगैरे ढकदेणा चालणीके छेदोंमेसें फलालीणकूं वाफ लगेगा उसकुं दुख
जगे सहे जाय ऐसा धरणा.

(स्वरस) कोईभी गीली वनस्पतीकूं पीसकर जरूर पडेतो थोडा जल मिलाकर र
निकालणा सो जो गीली वनस्पती नहीं मिले तो सूकी दवा अठगुणे पाणीमें उकालक
चोथा भाग रखणा अथवा २४ घंट पाणीमें भिगाकर रखणेसें पीछे मसलकर छा
लेणा, गीली वनस्पतीके स्वरसके पीणेकी मात्रा २ तोला सूकीदवाके स्वरसकी १
तोला बालककूं ॥ तोला.

(हिम) औषधके चूर्णकूं छ गुणे जलमें रखकर रातभर भिजाणा फजरमें छाणलेण
उसकूं हिम कहते हैं.

(क्षार) जव वगैरे वनस्पतीमेंसें जवखार मूलीका कारपाठेका आंधी झाडेका
इत्यादि बहोत चीजोंका खार करणेकी रीत इस मुजब है, वनस्पतीकूं मूलमेंसें निकाल
कर पंचांग जलाकर राखकर पीछे चोगुणे जलमें हिलाकर एक मट्टीके वरतणमें एकदिन
रखकर ऊपरका नीतरा जल कपडेसें छाण लेणा उस जलकूं फेर हिलाणा आखरक्षार नींचे
सूककर जम जायगा.

(सत) गिलोय वगैरेका गीलीकूं कूट जलमें मथकर एक पात्रमें जमणे देणा बाद
ऊपरका जल धीरेसें निकाल डालणा पीछे नीचैजोसुपेदरहजाय सो, सूके बाद सत
जमता है.

(सिरका) अंगूर जामून इक्षु वगैरेका रस निकाल थोडा नोसादर डाल धूपमें धरणा सडवडणेपर तीन दिनसे या सात दिनसें वोतल भर धरदेणा.

(गुलकंद) गुलावके फूलकी पंखडिया या सेवतीके जिसमे मिश्री बुरकाकर थरपर थर देणा ढककर धरदेणा जब फूल गलके एक मेक हो जावे महीने दो महीनेसें वो गुलकंद होता है.

(जुलाब) पहिली तीन दिन तैलादिकका मर्दन कराणा वायुके कोठेवालेकूं दस्त नहीं लगता इसवास्ते ४ तोला घी या औषधीका घणाया घी तेल दिन ७ पिलाणा पित्त वालेकूंभी पिलाणा कफवालेकुं जादा मालस कराणा स्नेहभी पिलाणा वाद कोठा नरम करणेकूं सूंफ गुलकंद या मुनक्का जीरा सूंफ सोनामुखी निशोतकी छाल गुलाबकली दोदो रुपे भर लेकर ६ पुडीकर १६ तोला पाणीमें उकालकर आधारहे तब उतार ठंढाकर २ तोला बूराडालकर दोनुं वखत दिन तीन पिलाणा, ये मुंजस है, खीचडी या दालभात चंदलियेका सागविनामिरचका खाणा, चोथेदिन काली निशोतका चूर्ण तोलेभर चैत्रमहीनेमें सींधा निमक ५ मासे कफ तथा वायु रोगमेंभी निमक मिलाकर फक्की देणा, दिनकी घारे-घजे खीचडी पतली घीके संग खिलाणा, एक वखत, दिनकी नींद लेणी नही, बोझा उठाणे आदि कोइभी तरेकी खेचल करणी नहीं, आसोजकाती तथा पित्त और खून विकारमें बूरेके संगदेणा, दिनकूं च्यार पांच वजेकफरोगी टाल सूंफ गुलकंद घोटकर या सूंफ १ भर उकाल पाणी छाण २ रुपे भर गुलकंद डाल ऊपरसें पी लेणा, मिरचाईके बीज १ भर लेणेसे ऊपर मुजब दस्त होता है, हेजा चलता होय तो दस्तकी दवा नहीं देणा कफके रोगीकूं जुलाफा विपमा १ तोलेभर सूंठ ३ मासा सींधा निमक ३ मासा नींबूके रसमे घोट फेर देणा, छव दिन जुलाबपर खीचडी दाल भात या दलिया ६ दिनतक खाणा इच्छाभेदीरस पूज्यपादगुटी नाराचरस छुरीकार रस सोनामुखी कपीला सांढकादूध अर्कदूध थोहरका दूध इंद्रायण इत्यादि जुलाबकी अनेक दवाइयां है, रसोंके जुलापपर दस्त होता जाय ज्यों ज्यों बूरेका सरबत पीणा आंमके संग दवा दस्तमें निकले बाद फेर दस्त नहीं होता, उलटीकी दवा पहली देकर फेर बाद दो या तीन दिनके पीछे जु-लाब देणा, आंम पचाणेकिरमालापंचक अच्छा होता है, मुसलमीन हकीमोंके उमदा जुलाब अमल्तास याखीरखिस्त दूध, या कच्ची गुलाबकली भात संग रांधकर मिश्री मि-लाकर खिलाते हैं, तीन दिनमे ३० दस्तका उत्तम जुलाब २० का मध्यम १० [illegible] का, गरमी जुलाब बाद जादा मालम देतो सूंफ गुलकंद ६ [illegible] पिलाना [illegible] र हकीमोंकी टहल बंदगी और [illegible] में लिखा है. अथपेकंबर [illegible] सग कोइभी नहीं, [illegible] है,

इसीवजे भागवतमें शैव लोकोंके वैद्य धन्वंतरीकूं परमेश्वर लिखा है, अंग्रेजोके सर्वोपरी हुकम डाक दरोका है, लेकिन् ये बात पूर्ण विद्वानोकेवास्ते है, अदमीका जुलाब और· तका जापा बिगडा भया महा कष्टकारी, होता है काष्टादिक जुलाब लेकर निराहार ठंढा पाणी अदमी पीलेतो जलंदर हो जाता है, वहोत खयाल करके जुलाबपरवरतणा जुलाबसे जादा दस्त होजाय तो शूल कफका दरद कै खूनभी दस्तमें आने लगता है, बाईं हाथपैर ठंडे होते हैं, तब ठंडे जलसे हाथपैर धुलाणा आंखोपर छांटणा चेर २ चाव लोकी भूनी भई खील और मिश्री जलमें मिलाकर पिलाणा, गुलाबका अतर या मिटिया ठंढ अतर सुंघाणा जुलाबकी दवाखाये पीछे जीमिचलावे तो पान बीडी चचाणा पित्त रो गीकूं आमसें पैदा भये रोगोंमें पेटके रोगमें आफरेके रोगमें कोठा शुद्ध करणेकूं को हरस कृमि विसर्प वातरक्त कफ खास पांडू जहर दोष निकालणे इतनोंमे जरूर दस्त देणा, रोगीकी ताकत अवस्था विचारके, बालककूं बुड्ढेकूं वहोत घी तेल पिये भयेकूं ज खमवालेंकोक्षय उरक्षतरोगीकूं, डरे भयेकूं, थकेकूं, प्यासके रोगीकूं, वहोत जाडावद मेद वृद्धिवालेकूं, गर्भणीकूं, चारेदिन पहले बुखारवालेकूं, जापेवालीकूं, मंदाग्नीवालेकूं, मदा त्यई रोगीकूं, लूखे वदनवालेकूं, इतनोंकों जुलाब नहीं देणा, इति जुलाब विधि ॥

॥ अथ वमन वीधिः ॥

पहले यवका पतला दलिया घाट गलेतक भरकर पिलाणा, या दही या दूध पिलाणा लेकिन् वमन कराणे वालेकूं घी तेल सात दिन पिलाय, मालस कराय, पसीना निकलवावे फेर दुसरेदिन ये चीजें फजरमें पिलाकर फेर वमन करणा कफके रोगीकूं वमन करणेकूं पी· पल आरीठा वच सींधा निमक, सहत मिलाकर, गरम जलसें पिलाणा, पित्तके रोगीकूं पटो· लमे गारापरपल या खारी तुराई या वृंदाल फल अरडूसा या नींबकी छाल उकालकर ठंढे जलमें पीला कराना वायुके रोगमें पहली दूध पिलाय मैणफल पिलाणा अजीर्णके रोगमें वच और गरम जल पिलाना उलटू बिटलाकर गलेमें एरंडपत्रकी पिछलीनाल डाल वमन कराना फेर कफ रोगीकूं पीपल इंद्रजव वच अथवा मैणफलके चुर्णकूं गरम जलमें सहतडाल· कर पिलाना और वमन कराना जहर खाया भया निकालणेकूं खटी छाछमें निमक डाल पिलाना अथवा मक्खन या [illegible] मीनी या अफीम खाये भयेकूं भा· [illegible] लिखी हैं. इतने रोगोंमें वमन करानामो लिखते हैं काम श्वास कफके रोगमें [illegible] रोगमें कोढ रोगमें वमन कराणा [illegible] [illegible] वमन कराना, वहोत [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] निर्बलके [illegible] पिलाना या [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], या [illegible] मिलाकर पिलाना [illegible] [illegible] [illegible] देना इति वमनविधि ॥

दवाईकी चीजोंकी इंग्रेजी तथा हींदीमें नाम

१ इनफ्फुजन=चा	२ ऐकवा=पाणी
३ ऐकस्ट्राकट=सत्व–घन	४ ऐनिमा=पिचकारी–वस्ति
५ ओल्यम=तेल खाणेका	६ अंग्वेन्टम=मलम
७ कन्फेकशन=मुरब्बा–आचार	८ टिंकचर=अर्क
९ डिकोकशन=काढा–उकाली	१० पल्वीस=चूर्ण
११ पलास्टर=लेप	१२ पोल्टीस=लूपरी
१३ फोमेनटेशन=शेक	१४ वाथ=वाफ स्नान
१५ विल्स्टर=फफोला उठाणा	१६ मिक्श्चर=मिलावणी
१७ लाइकर=प्रवाही	१८ लिनिमेन्ट=तेल लगाणेका
१९ लोशन=पोता–धोणेकीदवा	२० वाईन=आसव

देशी वजन=तोल

१ रत्ती=चिरमीभर	४ वाल=अंदाजन	१ दोआनीभर
३ रत्ती= १ वाल	८ वाल=	१ पावलीभर
३ वाल= १ मासा	१६ वाल=	१ आठआनाभर
६ मासा= १ टंक	३२ वाल=	१ रुपियाभर
२ टंक= १ तोला	४० रु० भर=	१ शेर पाउंड रतल
कहांइटंक ४ मासेका है.	८० रु० भर=	१ शेर साहजानी

अंग्रेजी तोल माप.

सुकीदवायोंका तोल	पतली दवायोंका माप	
१ ग्रेन= १ गहूंभर	६० बूंद= मीनीम=	१ ड्राम
२० ग्रेन= १ स्कुपल	८ ड्राम=	१ औंस
३ स्कुपल= १ ड्राम	२० औंस=	१ पीन्ट
८ ड्राम= १ औंस	८ पीन्ट=	१ ग्यालन
१२ औंस= १ पाउन्ड		

२ ग्रेन= १ रत्ती   ६ ग्रेन= १ वाल   १ औंस= २॥ रुपियाभर

जो प्रवाही पतली दवायें जहरी अथवा घहोतते जनहीं होनी ऐसी दवा साधारण रीतमें चमचा वगेरे भरकेभी पिलाते हैं, वो इस मुजब

१ टी० स्पूनफुल= १ ड्राम	१ टेबल स्पूनफुल= ४ ड्राम ३ औंस
१ डिसर्ट० स्पूनफुल= २ ड्राम	१ वाईनग्लासफुल= २ औंस

इंग्रेजीमें ऊमर मुजब दवादेणेकी देसी मात्रा.

पुखत ऊमरके अदमीकूं पूरी मात्राका प्रमाण १ भाग गिणे तो.

१–३ महीनेके बालककूं पूरी मात्राका	१/३६	३–४ वर्षके बचेकूं पूरी	१/४ भा
३–६	१/२४	४–७	१/३
६–१२	१/१२	७–१४	१/२
१–२ वर्षके	१/८	१४–२१ जवानकूं	२/३
२–३	१/६	२१–६० पुखत ऊमरकूं	पूर्णमा

एक महीनेके बचेकूं १ वाय विडंगके दाणेके वजन जितनी दवा देणी दो महीने बचेकूं दो दाणे जितनी, इसतरे दर महीनें एक २ वाय विडंग जितनी वढाणी इस १२ महीनेके बचेकूं बारे वायविडंग जितनी दवा देणी जैसें बचेकी मात्रा ऊमरकी ब तीमें चढाकर देते हैं, तैसें साठवर्षकी ऊमर पीछै बुढ्ढेकी मात्रा धीमें २ घटाणी चहि अर्थात् ६० तक पूरी मात्रा और पीछे सात २ वर्षसें ऊपर लिखे क्रमसें कमती क जाणी धातुकी भस्म तथा रसायण दवाकी मात्रा १ राईसें जादामें जादा १ व तकभी दी जाती है.

अंग्रेजी–मात्रा

ऊमर	जादामें जादावजन एक औंस	जादामें जादावजन एक ड्राम	जादामें जादावज एक स्कुपल
१–६ महीने	२४ ग्रेन	३ ग्रेन	१ ग्रेन
१–१२	२ स्कुपल	५ ग्रेन	१॥ ग्रेन
१–२ वर्ष तक	१ ड्राम	८ ग्रेन	२॥ ग्रेन
२–३	१। ड्राम	९ ग्रेन	३ ग्रेन
३–५	१॥ ड्राम	१२ ग्रेन	३ ग्रेन
५–७	२ ड्राम	१५ ग्रेन	५ ग्रेन
७–१०	३ ड्राम	२० ग्रेन	७ ग्रेन
१०–१२	०॥ औंस	०॥ ड्राम	०॥ स्कुपल
१२–१५	५ ड्राम	४० ग्रेन	१४ ग्रेन
१५–२०	६ ड्राम	४५ ग्रेन	१६ ग्रेन
२०–२१	१ औंस	१ ड्राम	१ स्कुपल

विशेष सूचना.

(१) मात्रा शब्द जिस २ जगे लिखा होय वहां उसका अर्थ दवा देणेका एक समझणा (२) ऊपर अवस्था मुजब दवाओंकी मात्राकावजन लिखा है,

किन् उसमेंभी ताकतवर और नाताकतकी मात्रामें वध घट करणा चाहिये फेर औरत रदकी जाती ऋतु रोगका प्रकार वगैरे वातोंका विचार करके दवाकी मात्रा देणी (३) बचेकूं जहरी दवा देणी नहीं अफीम मिली भई दवाभी चार महीनेके अंदरके बचेकूं देणी नहीं उसके सिवाय जो देणा होय तो कोई विद्वान वैद्य या डाक्दरकी सला लेकर पीछे देणा (४) चूर्ण याने फाकी रूप दवा जादामें जादा २ वाल के अंदरकी देणा और पतली दवा चार आनेभर अथवा एक छोटे चमचेभर देणा लेकिन् उसमें दवाईका गुण दोष तथा स्वभावका विचारकरणा जो दवा पुखत ऊमरके अदमीकूं जिस वजनसें दी जाय वो ऊपरके लिखे मुजब अवस्था मुजब भाग करके देणा (५) बचेकूं सुंठ मिरच पींपर लालमिरच जेसी तीक्ष्ण दवायें तेसें नसेवाली मादक दवायें कभी देणी नहीं (६) गर्भिणी स्त्री की जुदे २ रोगोंकी जो खास दवाई शास्त्रकारने लिखी है, वोही देणी चाहिये क्योंके बहोत गरम दवा तथा दस्तावर तीखे इलाज गर्भकूं नुकशान पहुंचाता है, (७) सब रोगोंमें सब दवाइंया ताजी और नई देणी लेकिन् वायविडंग छोटीपींपर गुड धाणा सहत घी ये पदार्थ दवाके काम वास्ते एक वरसके पुराणे भये लेणा (८) गिलोय कूडाछाल अरडूसेके पत्ते भोंकोला (विदारीकंद) सतावर आसगंध विरयाली (सुंफ) वगेरे वनस्पतीकूं दवामें गीली लेणीलेकिन् दूणी लेणी नहीं (९) इनोके सिवाय दुसरी वनस्पतीयोंकूं सूकीलेणी सुकी नहीं मिले और गीली मिले तो लिखे वजनसे दूणी लेणी (१०) जो दरखत जाडा और बडा होय उसके जडकी छाल दवामें मिलाणी छोटे दरखतोंकी पतली जड होय सो लेणी (११) तमाम भस्म तमाम रसायण दवायें सब तरेके आसव ज्यों ज्यों पुराणे होते जाय त्यों त्यों गुणोंमें वढकर होता है, काष्टादिक दवाकी गोली वर्षभर बाद हीनसत्व होजाती है, चूर्ण दो महीनेबाद हीनसत्व होजाता है, घी तैल दवाइयोंका चार महीने बाद हीनसत्व होजाता है, पारा गंधक हींगलू बछनाग वगेरे शुद्धडाले भये काष्टादिकरस दवायोंका पुराणी होणे परभी गुण नहीं जाता है, (१२) क्वाथ तथा चूर्ण वगेरके बहोत दवायोंमेंसे एक दोय दवा नहीं मिले तो दरकत नहीं अथवा उसके जेसी गुणवाली दुसरी मिले तो मिला देणी नुकसेमें एक अथवा दो तीन दवायें रोगके विरुद्ध होय तो वो निकालकर उस रोगकूं मिटाणीवाली नहीं लिखी होय नुकसेमें तो भी मिला देणी (१३) गोली बांधणेकी चीज नहीं लिखी होय तो पाणीमें बांधणी (१४) जिस जगे नुकसेमें वजन नहीं लिखा होय उस जगे सब दवा बराबर लेणी (१५) चूर्णकी मात्रा नहीं लिखी होय उस जगे चूर्णकी मात्रा का प्रमाण पाव तोलासें लेकर १ तोले तक समझणा जहरी चीज टालके.

देशी दवाइयोंके सोधनकी विधि.

१ जमाल गोटेकूं छीलकर गोवर गाईमें उकालना जटहाल जब नरम होय तब

निकाल दो दो फाडकर विचकी जिली निकालकर फेर पाव चीजोंकूं सेर दूधमे मंद आंचसें सिजाकर जब दूध वहोत गाढा हो जाय तब निकाल गरम जलसें धो डालणा फेर पीस कोरेमट्टीके वरतणमें लगा २ कर इसका तेल सुका लेणा जब बुरादाविना तेलका होजाय तब फेर नींबूके रसमें खूब घोटणा वाद सूकाय किसीभी प्रयोगमें लेणा१ (२) जहर कूचीला पहली सात दिन वेलूरेतमें पाणीसें तरवतर करके रखणा वाद इसका पाव वजन २ सेर दूधमें मंद आंचसें पकाणा वाद चक्कूसें इसके दो पुडतोके वीचकी जहर जिलीं निकालकर छोटे २ नुकरे कतरकतर प्रयोगमें लेणा (३) वछनाग (कालासींगी मोहरा) पाव,हंडीमें दो सेर दूध डाल इसकी पोटली वांध दो आंगुल अधर ऊपर दूधके लटकाकर ढकणी देकर कपड मिट्टीसें मूं बंधकर मंद आंच जरा २ पोहरभर देणी वाद ठंढीकर पोटलीमेंके मोहरेमें नाजोरी सूई निकले तो सुद्ध समझणा दूसरी वृद्धसंप्रदाय सेठ । श्रीमगनमलजीकीं वताई ॥ तोलेभर मोहरेकूं दो तोले काली मिरच-संग घोटकर प्रयोगमें लेते हैं ॥ (४) खुरासाणी अजवाण इसीतरे दूधमें सुधता है, इस-तरे वहोतसी जहरी चीजोंका सोधन दूध है, (५) अतीसकूं गोवर पाणीमें डालकर मंद आंचसें सिजाकर नरमभये वाद वरतणा (६) जायफलके ४ टुकडेकर गेहूंके आटेमें सेककर मोभरमें परिपककर फेर प्रयोगमें लेणा (७) लोंग पींपर भंग तवेपर ऊनारणा याने थोडे गरम करणा जलाणा नहीं जीरा दोनुंभी इसीतरे (८) गूगल शिला-जीत त्रिफलाके काढेमें सुधता है, (९) तेलिया सुहागीकूं पहली गोवरसें मसल धोकर फेर पात्रमें धर फुला लेणा फिटकडीयोंही फुला लेणी हींग घीमे तलकर फेर प्रयोगमे लेणी (१०) नख लिया जो धूपादिक सुगंधीमें प्रसिद्ध उसकूं भेंसके गोवरसें या इम-लीके पत्ते इनोके संग जल डालके औटावे ये नमिले तो फकत मिट्टीमें जल डालके ओटावे मट्टी चिकणी मुलतानी वगैरे लेणी फिर निकालके जलसें धोकर घीमें भूनकर फिर पीछै गुड और हरडके जलमें भिगाके रखदेवे तो नख द्रव्य शुद्ध होय फेर खाणेकी दवामें उपयोग करे (११) हलदी और वचकी शुद्धि गोमूत्रमें या लजालूके काढेमें या पंच-पल्लवके काढेमें ओटाय फिर किसी खसवोइदार जलकी वाफ दोला यंत्रसें देतो वंच, ओर हलदी, शुद्ध होय (१२) नागरमोथेकी शुद्धि, कूट कर अधकिचरा कांजीमें भिगा देवे फिर पंच पल्लवके काढेमें या जलमें ओटाय धूपमें सुकावे फिर गुडके जलसें छिडकके आगसे भून चूर्ण कर लेवे फिर वकरीका मूत्र यासहजणेके छालके जलकी भाव-ना दे तो मोथा शुद्ध होय (१३) छड छबीलेकी शुद्धी, कांजीमें छडछबीलेकों ओटाय फिर भून लेवे फेर गुडके जलमें डवोयके फेर फूलोंसें अधिवासित करे अर्थात् सुगंधित संगरखे तो छडछबीला शुद्ध होय [१४] केशर घीमें पीसणेसें शुद्ध होय [illegible] कस्तोरी मर्दनमें तेजपने पानोंके जलकी भावना देणेसें शुद्ध होय, फूल

हिरणके सींग जेसी होती है लेकिन् उसमें कीडे नहीं होणा (१५) पारेकी सामान्य शुद्धि, पारेको तीनदिन इंटसें मर्दन करे फेर कुवारपठेसें फेर अमलतासके काढेसें फेर चित्रकके काढेसें तीन २ दिन तव पारा शुद्ध रसोंमे डालणेलायक होय (१६) गंधककी शुद्धी (आमलसार गंधक पाव पाव घीकूं गरमकर उसमें डाल फेर दूध दुसरे ठांम पात्रमें रखकर सेरभर उस पात्रके ऊपर वस्त्र बांधणा उसमें गला भया घीसमेत गंधक डाल देणा मैल वस्त्रमें रह जायगा फेर दूधमेंसें गंधक निकाल लेणा) इति गंधक शुद्धि (१७) मोती शंख कोडी मूंगे नीबूंके रसमें भिगाये शुद्ध होता है आठ पहर, धातु उपधातु रत्न उपरत्न विप उपविपोंका सोधन दूसरे भागमें लिखेगें.

देसीदवा. सामान्य अनुपान.

कोईभी चूर्ण गोली भस्मकी पुडी जिस चीजके संग खाणेका शास्त्र हुकम देता है, उसकूं अनुपान कहते हैं, इस शब्दका असली अर्थ तो एसा होता है, दवा खाकर उसपर पीछेसें कुछ पीणा सो अनुपान, जहां कुछभी अनुपान नहीं लिखा होय उहां अनुपान पाणी समझणा देशी इलाजोंमें अनुपानकी माथा पच बहोत है, लेकिन् कितनेक अनुपान ऐसे हैं. सो वो दवा जितना काम गुजारते हैं, सहत तीक्ष्ण और भेदक होणेसें अनुपान तरीके वो बहुत उपयोगी है, सहत घी गुड मिश्री आदेका रस छाछ मखण हींग पीपर संठ सहजनेकी छाल ये सब सामान्य अनुपान है शास्त्रोंमें कितनेक मुख्य २ रोगोंमें खास अनुपान लिखे हैं, वो दवा उन२रोगोंमें इसही अनुपानसें देणा एसा तो कोई पक्का नियम बंधा नहीं है, तो भी ये अनुपान उन २ रोगोंकों दूर करणेवाले हैं इसवास्ते इलाज करती वखत ध्यानमें रखणा चाहिये बहोतसी वखत ये अनुपानोंकी दवाई उन २ रोगोंकों मिटाती है सो अब नीचे लिखते हैं.

(अजीर्णमें) नींद, हरडे, उपवास, नींबू,

(अतिसारमें) छाछ, कूडाछालरस, बकरीका दूध, दही, मोचरस,

(मिरगी) वच, अकलकरा, ब्राह्मी, सहत, पेठा, मालकांगणी,

(सन्निपात) आदेकारस, पानकारस कस्तूरी, अंबर,

(खासी) अरडूसेकारस, या रींगणीका,

(विपमज्वर) सहत, तथा पीपर, हरडे, अजमोद, या कुटकी चिरायता,

(संग्रहणीमें) छाछ, या पतले मीठे रसका आंम,

(जीर्ण ज्वरमे) सहत पीपर, या दूध संग, वर्द्धमान पीपर, या खपरिया शुद्ध, कालीमिरच मिला भया.

(कृमि) बायविडंग, हींग, कपीला, कौंचकेरूं,

(अर्शमस्सा) भिलावा, चित्रकमूल, सूरण,

(पांडु) मंडूर, तीनवरसका गुड, पडूष्ण, वायविडंग, नागरमोथेके संग छाछमें,
(क्षय) शिलाजीत, शितोपलादि चूर्ण, सोना,
(श्वास) भाडंगी, सूंठ,
(प्रमेह) हलदी त्रिफला.
(सुजाक) आंवला, तुलछीके पत्ते, गुलरके पत्ते, शिलाजीत,
(शूल) हींग, कुचीला, घी,
(आमवात) एरंडीया, गोमूत्र, लसण, गूगल, मेथीपाक, भिलावा,
(वातरोग) गूगल, लसण, घी, नयेके कुचीला, पुराणेकूं सींगीमोहरा,
(वातरक्त) गिलोय, भिलावापाक तथा एरंडीका तेल,
(मंदरोग) सहतमिलापाणी, त्रिफला,
(अरुचि) बीजोरा, अनार, नींबू,
(व्रण) त्रिफला, गूगल, सोनामुखी,
(आम्लपित्त) मुनक्का, आंवला, पींपर, अद्रक, नारेलजल,
(उपदंस) आककी जड, तूंबेकी जड, विरेच, उलटीकी दवा देनी,
(नेत्ररोग) त्रिफला,
(उन्माद) पुराणा घी, मनशिल शुद्ध,
(मूत्रकृच्छ्र) शिलाजीत,

किरण २ दूसरी.

निघंट दवा गुण.

(१ अकलकरा-) गरम वायुहर थूक लाणेवाला दांतोंके रोगमें जीभके जडपणेमें मूंमें रखणेसें फायदा जादा करके और दवायोंके संग दिया जाता है (आकार करभादि चूर्ण) अकलकरा सूंठ शीतलमिरच केशर पीपर जायफल लोंग सुपेदचंनण ये आठों एकेक तोला अफीम चार तोला (गुण) स्तंभन धातूकों जाती होय तो बंधकरे (मात्रा-)१ रत्ती से २ रत्तीभर रातकूं सहतसें चाटणा (२ आंधीझाडा) कफघ्न उष्ण पेसाब लाणेवाला है इसका खार निकालणेकी विधि देखो खारकी (अपामार्ग खार) खांसी कफ दम और श्वासमें फायदा करता है छातीका कफ जुदा करता है, तेसें पेटकी चूंक आफरा बांइटेभी मिटता है कानमें इस क्षारमें तेल बनाया भया बूंदे डालणेसें कानकी शूल तथा फडफडाट मिटता है, तेल बणाणेकी विधि पीछे लिखी है, आंधी झाडेका खार सम वजन हरताल संग पीस लगानेसें छोटे २ मस्से गिरजाते हैं, अपामार्गके फूल त्रि-
मलसलनेमें जहर उतरता है, इसके पंचांगकी राखकूं चोगुणे सहतमें पचा-
स्म तथा बाम्हरिन निर्बल हो नरोयालेकूं गार्भणी स्त्रीकूं छाती तथा गलेमें

बटाम चढकर जलना है, सो मिटना है, (३ अजवाण) उष्ण वानहर दीपन वायु आंटा आफरा पेटकी चूंक वगेरे पेटके रोगमें अछी असर करती है,(अजमोदादि चूर्ण) अजमोद सैंचल सींधानिमक जवखार हींग तथा हरडे सब समभाग ये चूर्ण पेटका आफरा तथा अजीर्णपर अछा है, (अजमोदादि गुटिका-) अजमोद हरडे खारक केशर एक २ भाग जायफल मोचरस अफीम ये तीनों आधा २ भाग जावंत्री लोंग तथा सहत ये तीनों दो दो भाग वाजरीके दाणे जितनी गोली करणी बालकोंकी उलटी दस्त नींद नहीं आवे अथवा नींदमेंसें झबक उठे इन सबोंमें बहोत अछा फायदा, करता है (मात्रा) गोली १ सें २ (४ अतीसकी कली) ज्वरहरे कृमिहरे दीपन ग्राही बहोतसे बुखारोंके कायमें डाली जाती है, बचोंकी तो खास दवा है, (अतिविष चूर्ण) फकत कलीका चूर्ण कर बचोंकों सहतमें चटाणेसें बुखार खासी उलटी मिटती है, (मात्रा) वाल०॥ सें १ वाल (चातुर्भद्रचूर्ण-) अतिविष मोथा काकडासींगी पीपर चूर्ण सहतमें चाटणेसें उलटी दस्त बुखार खासी वगेरे बचोंके रोगोंपर बहोत फायदेबंद है (शृंग्यादि चूर्ण-) काकडासींगी अतीस पींपर इनोंका चूर्ण सहतमें देणेसें बचोंकी खासी बुखार उलटीकूं मिटाती है, मात्रा हरेक चूर्णकी १ वाल (५ अफीम-) ग्राही पीडाशामक नींदलाणेवाला स्वेदल स्तंभन दवा तरीके अफीम बहोत रोगोंपर फायदा करता है, मरोडा संग्रहणी अतिसार रक्तातिसार हैजा विना बुखारकी खासी दम अनिद्रा अंगपीडा उन्माद हिचकी मधुप्रमेह आंखके रोग तथा स्त्रियोंको अधूराजाणा और ऋतुधर्मके दोषमें अफीमकूं युक्तिसें तेसें दुसरी दवायोंके योगसें देणेसें जलदी असर करता है जहर है इसवास्ते बहोत साव चेतीसें उपयोग करणा (मात्रा० । सें ॥ रत्ती) (कुंकुमवटी) अफीम तथा केशर सम भाग सहतमें चावलके वजन जितनी गोली करणी सखत दस्तभी रुक जाता है, अजीर्ण अतिसार संग्रहणीकूं (मात्रा गो० १) (आमराक्षसी) अफीम जायफल लोंग शुद्ध हिंगलू और कपूर समभाग इनोंकी दो दो रत्ती भरकी गोली करणी उससे हैजेकाभी सखत झाडा बंध होता है बाइंटेभी बंध होते है, शरीर सतेज होता हैं, मात्रा २ रत्ती(अर्क अहिफेनादि गुटिका-) आकके सूके भये फूलोंका भूका दो तोला सींधा निमक २ तोला सेकाभया अफीम० ॥ तोला तीनोंकों मिलाकर एकेक वालकी गोलीकरणी रगतपित्त अर्थात् शरीरके किसीभी रस्तेसें खूनगिरे सो तथा उरक्षत याने जिस क्षयनमें खूनमिले खंखार गिरे सो एसे रोगोंमें ये गोलियां बहोत फायदा करती है,(मात्रा २ रत्ती) (६ अरडूसा) कफघ्न रक्तस्तंभक ग्राही) अरडूसेका पान बहोत काढोंमें गिरता है, खासी क्षय श्वास दम वगेरे छातीके रोगोंमें बहोत फायदा करता है, रक्तस्तंभक और कफघ्न होणेसें कफकूं निकाल खूनकूं बंध करती है, और फेफसा सडताभया मिटता है, कफके बुखारमें तथा बचे सरदीसें जकडजाते हैं. गलेमें तांत बोलती

है, बुखार चढ जाता है, और श्वास चलता है, उसमें पानका रस जरा गरमकर पिलाणेसें तथा पानके कूचेकूं छातीपर रखकर ऊपरसें सेक करणेसें तुरत आराम होता है, (वासा स्वरस) अरडूसेके गीले पानोंका रस १ तोले रसमें १ तोला सहत पींपरका चूर्ण १ सें २ वाल भुरकाकर पिलाणेसे कफ निकल जाता है, छाती हलकी पडती है, (वासा पुटपाक) देखो पुटपाक बणाणेकी विधि, रसनिकाल सहतमिलाय पीणा (मात्रा १ सें दो तोला, इस पुटपाकसें क्षय अतिसार रक्तातिसार मिटता है (वासादि क्वाथ) अरडूसेकापान गिलोय भोरींगणी जो हरडे दाख और पींपर समभाग क्वाथ करणां (क्वाथवणाणेकी क्रिया देखो) इससें खासी क्षय कफज्वरतथा दमकूं फायदा करता है (वासावलेह) अरडूसेके पत्तोंका रस३२तोला मिश्री८ तोला पींपर २ तोला ताजा घी २ तोला ये सबोंकों उकाल जाडा करणा ठरेवाद इसमें १।' रुपेभर सहत मिलाणा क्षय उरक्षत खासी दम श्वास वगेरे छातीके रोगोंमें वहोत फायदा करता है (वासाखंड पाक) अरडूसेके पत्ते सेर १। लेकर पाणीमें उकालणा चोथा भागका पाणी बाकीरहे तब पाणी छाण उस पाणीकूं फेर चूलेपर चढाकर उसमें हरडेका बारीक चूर्ण तोला १२० तथा बूरा तोला ५० डालकर पाक करणा उतार ठंढा भयेवाद सहत तोला ४ वासकपूर तो. २ पींपर तो. १ और तज तमालपत्र इलायची नागकेशर ये चारों दोदो वाल एकेक वस्तु डालकर मिलाणा ये रक्तपित्तके भयंकर रोगकों मिटाताहै (७अरणी) उष्ण वातहर सोथघ्न कफघ्न दसमूल तथा दुसरेभी कितनेक काढोंमें अरणी की जड काम देती है, इसके पत्ते सूजनपर बंधाते हैं (अग्निमंथादिलेप) अरणीकी जड काली जीरी कीडामारी शरपंखा सूंठ समवजन पाणीमें पीस जरा गरमकर सोजेपर लेप करणेसें भयंकर सोजन चलाजाता है सूवारोग संग्रहणी संधिवात दुसरीभी वादीमें सांधोंमे तथा दुसरी जगे सोजन आतीहै उण सबोंकों ये लेप फायदा करता है (८ आरीठा) उष्ण वांतिकारक सांपके तथा अफीम वगेरेके जहरमें आरीठेका पाणी पिलाकर उसकूं उलटी कराणेमें आता है नाकमें पाणीकी बूंद नाखणेसें बेशुद्धि तथा आधासीसी मिटती है इसके पाणीसें दाह मिटती है (९ असालिया) उष्ण वातहर वाजीकर पौष्टिक असालियेकी खीर खाणेसें गुसचोट यकृत् (लिवर) तथा तिलीके खूनके जमावकूं तोडता है शूल तथा चोटलगे पर असालिया इकेला अथवा साजी खार हलदी मेदालकडीके साथ मिलाकर गरम कर लेप फायदा करता है (९ अलशी) शीतल मूत्रल फेफसा पेटके पडदेका रिदय वगेरे शरीरके कोइभी मर्मस्थानमें वरम होजावे उसमें खून चढताहै शूल चलताहै और पकजाताहै तब अलसीकी पोटिस मेर २ बांधणेसें वहोत फायदा होताहै किसीभी दुखती जगे दरद होता होय तो गादेजलमें अथवा पोस्तके डोडेकूं उकालकर ...में अलसीकी पोटिस बणाकर बांधणेसें दरद मिटताहै (पुल्टिस बणाणेकी विधि)

देखो) (११ आकडा) उष्ण शोधक स्वेदल वमनकारक कफघ्न क्षोभक वातहर (आकडेकीजड, फूल, पान, तथा उसका दूध, दवामें काम आता है, जडकी छाल सोधक है, उलटी कराताहै,इसके सर्वगुण,एपीकाक्युऐन्हा नामकी अंग्रेजी दवाके गुणसें मिलता है, जडकी मात्रा एक वाल, (पान) बुखारमें पानकूं सेककर शिरकपालपर बांधणेसें पसीना आता है बुखार नरम पडताहै और बुखारमें शिरपर बांधणेसें भगज ठंढा रहता है पेटपर पत्ते बांधणेसें पेट नरम पडताहै पानके बाफे भये रसकी बूंदडालणेसें कानकी शूल मिटजाती है (अर्कतैल) तिलकातेल तोला १० आकका दूध तोला ४० हलदी तो २० मनसिलतोला २० तेल बणानेकी विधिसें तेलवणाणा इसके लगाणेसें खाज खुजली तथा दरसका मस्सा सूक जाता है (अर्कादिक्काथ- गजपीपर मिरच सूंठ और सींधा निमक सम भाग और चारोंके वजनसें चीसमा भाग आकके जडकी छाल तिली और कलेजा और जलंदरमें अछाफायदा करताहै (आकके दूधका घी) आकका दूध तथा मखण समवजन मिलाकर तपाकर घीवणाना खुजलीखाज इसकी मालिससें चलीजाती है (१२ अद्रक) उष्ण दीपन पाचन वातहर रुचिकर अनुपानमें इसका रस बहोत फायदे बंदहे वदनकूं जागृति करणेका इसके रसमें गुण है (आर्द्रकस्वरस) आदेका रस सहतमें पीणेसें खासी कफ तथा पेटपर बोझा होय सो नरम पडता है आंडोंमें वादी आगई होय तो आदेका रस और सहत पीणा भ्रम चक्कर पित्तके रोगमें आदेका रस २ तोला गायका दूध ७ तोला दोनोंकों उकाल कर आधा दूध जले तब उतार उसमें मिश्री डालकर पिलाणा (१३ आमली) सारक पित्तशामक तथा रुचिकर है दवामुजब अंमलीकी राख अथवा उसका खार शंखवटी नामकी गोलीबणाणेमें काम आताहै पत्ते इसके आंखवगेरेके सोजेपर बाफकर बांधे जाता है भिलावा चढा होय तो उसपर अंवलीका पान पीसकर मसलणेसें जलण मिटती है वदनपर भिलावा थोहरका दूध अथवा जमालगोटा लगणेसें चमडी उपडे और जलण होजाय तो अमलीकी गिर पाणीमें मिलाकर चुपडणा थोहरका रस अथवा एसीही कोई दुसरी गरम चीज आंखमें पडगई होयतो उसमें अंबलीके गिरमें घी मिलाकर अंजन करणा जमालगोटेका या थोहरके दूधवगैरेका जुलाब लिया होय और बंध नहीं होता होयतो अंबलीके गिरका सरबत मिश्री घी मिलाकर पीणेसें जो कदास पेटमें नहीं ठहरे तो दो तीनवखत पीलाणेसे जरूर जुलाबका दस्त बंध होजाता है गरमीकी मोसममें अंबलीका सरबत सोडावाटरका काम करता है और गरमीकी लू गरमी तथा पेमायकी जलण मिटतीहै पित्तके बुखारमें इसका पाणी पिलाणेसें फायदा करताहै इन बातोंके सिवाय दुसरी तरे अंबली बहोत नुकसान करतीहै कचीअमली कमी खाणी नहीं पकी अमलीभी तामीरस मानें तो गरमीकी मोसममें खाणी आंबलीसें दांत अकड जाते हैं. जबाडी झड जाती है, शिर पकडीज जाता है, किसी वखत इसमें खासी मिमकणा तथा दम उठ

जाता है, बुखारवाला तथा ऋतुधर्ममें आई भई औरत अंमली खाती है, तो हिचकी उठणेका डर रहता है, (१४ आंवला) खट्टा शीतल पित्त शामक शोधक सारक आंख तथा वालोंकूं अछा है, आंवले बहोत उत्तम रसायण चीज है, गीले तेसें सूके आंवलोंमें बहोतसी उत्तम दवायें बणती है, सहजसें बणसके एसी थोडी दवायें इहां लिखी है, (त्रिफला चूर्ण-) आंवले बीज विगर४ रुपेभर बहेडेकी छाल २ भर हरडे अमरसरीकी छाल १ भर अथवा जव हरड, कितनेक तीनोंकों सम वजन लेते हैं, ये चूर्ण शीतवीर्य है और आंखका रोग मगजकी गरमी कामला तथा पित्त विकारमें अनेक तरेसें दिये जाते हैं. ऋषभ पुत्र आत्रेय राजाने इसके गुण अपणी बनाई संहितामें बहोत लिखे हैं. (धात्री स्वरस-) पित्त ज्वरकी उलटी बुखारकी उलटी तीक्ष्ण पित्तप्रकोप तृषा शोषदाह इन सबोंकों गीले आंवलोंका स्वरस मिश्री सहत काली दाख मिलाकर पिलाणेसें दब जाता है,(रसायण चूर्ण)आंवला गोखरू गिलोय तीनोंसम भाग लेकर बारीक चूर्ण कपड छाणकर करणा अनुपान घी सक्कर पित्तके विगाडसें भये तमाम धातु दोषकूं सुधारताहै, वीर्य पतला पड गया होयतो जाता होयतो अथवा मरदमीका नाश होगया होयतो बहोत दिनोंतक सेवन करणेसें जरूर पीछा होजाता है, मूर्च्छाका भयंकर रोग तेसेंही मिरगी और उन्मादमें भी अच्छा असर करता है, धात्री चूर्णकूं- दूधके संग सांझकूं खाणेसें कंठ बैठ गया होय सो सुधरता है, (१५ आसगंध-) धातु पौष्टिक है पाकमें चूर्णमें क्वाथ वगैरेमें डाला जाता है, नाताकत और हीन सत्व छोकरोंकूं इसका चूर्ण दूधमें देणेसें बदनकूं ताकत देता है, आसगंध कालातिल घीमें तलकर चूर्णकर मिश्री मिलाय खाणेसें दुबलापणा मिटकर पुष्टता होती है, आसगंध तथा विरियालीका चूर्णकर टंक मे० ॥ भरचूर्ण दो दो तोला घी मिश्रीमें मिलाकर चाटणेसें सबतरेकी वायु सरण चमका कमर तथा सांधोंकी वायु मंदाग्नि निर्बलता मिटती है, स्तनोंमें दूध बढता है, सूतिका वायु मिटती है, मगज भर जाता है, धातु तथा ताकत बढती है, (१६ आसोंदरा-) मूत्रल तथा शोधक है, आसोंदरेका काढा दूध मिलाकर पीणेसें हृदयरोग छातीका दुखणा शूल वगेरे मिट जाता है, (१७ इंद्रजव-) ग्राही दीपन पाचन ज्वरघ्न और कृमिघ्न है, दस्त हरस खूनका दस्त बच्चोंका मरोडा चूंक वगैरेकूं मिटाता है, लघु गंगाधर चूर्ण-) इंद्रजव मोथ कच्चीबीलगिरि लोद मोचरस ओर धावडीका फूल ये सब बराबर लेकर चूर्ण करणा इंद्रजवकी फक्की- इंद्रजव तथा वायविडंग शेककर चूर्ण करणा ये चूर्णसें बच्चोंका दस्त मरोडा उलटी कृमि सब मिट जाती है, (१८ इंद्रायण-) रेचक कृमिघ्न तथा पित्तनाशक है, इसके फल तथा जड ली जाती है, इंद्रायण (तं[illegible] [illegible] दुसरी वायु हरता दवायोंकों मिलाकर वापरणेसें फायदा करता है, इकेला जलंदर वगेरे पेटके रोगोंमें अच्छा है, (१९ अहिखरेका बीज-) मूत्रल

और धातु पौष्टिक है, अहिखरे (तालमखानेका) चूर्णकर दूधमें पीणेसें धातु पुष्टी होती है, पाकोंमें भी पडता है, (२० एरंड) रेचक शोधक तथा वायु हरता है, एरंडकी जड पान तथा फलका तेल दवामें वापरते हैं, (जड–) वहोतसे वायु हर क्वाथमें पडती है, पान जरा गरम करके आंडोंके तथा आंखोंके सूजनपर तथा औरतोंके स्तनके पकणेके ऊपर बांधणेसें सोजा नरम पडता है, अथवा पत्तोंकों पाणीमें उकालकर उस पाणीका सोजेपर सेककरणा (एरंडीका तेल–) जुलावमें बहुत अच्छा है, बच्चोंकोंभी एरंडतेलका जुलाव निशंकपणे दिये जाता है, मरोडा तथा आंतरोंके शूलमें ये जुलाब वहोतही अच्छा है, मरोडेकी आंकसी दस्त होणेका कारण (आंतरोमें भराभया पदार्थ) दूर करके पीछे मरोडेको दस्तकूं बंध करता है, विछोणेमें पडे रहणेसें पडी भई चांदी इस तेलका फोआधरणेसें तुरत आराम होता है, नारूके रोगमें सोजेपर नारू निकलेबाद उसकूं अच्छा करणेकूं एरंडीके तेलका फोआ धरणेसें अच्छा होता है, (मात्रा) सबसें जादा मात्रा २ रुपे भरसें ३ रुपेभर ऊमर मुजब १ भर० ॥ भर आखर दो वर्षके अंदरके बचेकूं दो आनीभर दूधके संग रोगों मुजब अनुपांनसें दिया जाता है, एरंडीका तेल उरुस्तंभ आमवात आंडोंमें दरद सोजन वगेरे रोगोंमें बहोत अच्छा है, (एलायची) ठंढी तेसें वायु हरता है, भोजन किये बाद पेटमें गडबडाट जीमिचलाणा चूंक आफरा वगेरेमें खाणेसें मिटता है, मुखवासमें अच्छी है, इलायची कबाबचीणी और मिश्री मूंमे रखणेसें मूंकी गरमी कम होती है, स्वर कंठ बैठा भया खुल जाता है, बाहर लगाणेके इलाजोंमें बहोत काम देती है, ठंढी होणेसें (एलच्यादि चूर्ण) इलायची गऊंला मोथ बोरकामगज पींपर चंदन कमोदचावल लौंग नागकेशर चूर्णकर सहतमें चाटणा (२२ एलिया–) रेचक तथा ऋतुलाणेवाला है, क्वारपठेके सुकाये भये रसकूं एलिया कहते हैं, (एलीयेकी गोठी–) एलिया तो १ शुद्धकरा भया कुचीला दो आनीभर तजतो २ कलंभा तो १ कुटकी तो २ इन सबोंका चूर्णकर उसकूं बीजोरेके या नींबूके रसमे घोट दो दो वाल अंदाजन गोलीयांकरणी बंध कुष्टवालेके वास्ते ये अछी है एलिया और हींग येहिस्टीरीया (उन्मादके) तोफानकूं दबाता है एलिया तथाडीकामालीका लेप पेटपर करणेसें बचोंके पेटका गोटा और चूंक मिटतीहै औरतोंके ऋतु धर्मके रोगमें एलिया अच्छा है गर्भवतीकूं एलियेकी दवा नहीं देणी और दुसरी वेमारीमें भी एलिया देते सावचेत रहणा बहोत देणेमें मरोडा होजाता है (२३ ओथमीजीरा) ईसबगुल कहतेहैं ठंढा ग्राही याने दस्तकूं रोकणेवाला इसकों पाणीमें भिगाकर लुआब निकाल मिश्री मिलाकर पीणेसें अतिसार रक्तातिसार पित्तातिसार तैसें आमातिसार याने पुराणी संग्रहणीकूंभी फायदा करता है उलटी और प्यासकूं मिटाताहै सेककर दहीमे डालकर पीणेमे दस्तबंध होताहै प्रदर चिपचिपा पेसाबमें फायदा

करताहै दही ईसबगुल तेलिया सोहगी फुलाईभई १ बाल मिलाकर पीणेसें सखत मरोडा बंध होजाता है (२४ अंकोल) शोधक स्वेदल तथा उलटी लाता है, चूंके जहरमें अंकोल बहोत फायदा करता है ऊंदरवायुमें इसकी लकडी घसकर पिलाणी चूहेके जहरसें तेसें और भी किसी जहरसें वदनमें चीरे २ पडजाते हैं उसमें ये लकडा घसकर लगाणेसें मिटजाताहै (२५ अंबर) उष्ण पौष्टिक सुगंधी मछलीकी सुकाई भई हंगारहे सचा अंबर भाग्यसेंही मिलताहै बजारमें जो अंबर मिलता है सोनकली है, असल अंबर बहोत गरम इसवास्ते किसीभी रोगमें अशक्त वेमार ठंढा वदन पडगया होय दांतखीली बैठगई होय रोगी मरण दशातक पहुचा होय उसकूं अंबर तथा कस्तूरी जेसे वस्तु देणेसें जरा हुसियारी तो आती है धातूकों तथा मगजकों सतेज करता है, इसी वास्ते भाग्यवांन लोक धातु पुष्टि दवामें इसकुं मिलातेहैं (२६ कडवी तुराई) रेचक तथा उलटी लाणेवालीहै पीलियेकी बेमारीमें इसका रस याकडवी तूंबीकी रसकी बूंदे नाकमे सुंघाते हैं जादापाणी नाकसें गिरणेपर नाकमें घी सुंघाते हैं. पीलिया चला जाता है (२७ कडवीनई) शोधक तथा सोथघ्न है दवामें उसकी गांठ काम आतीहै दोय आनेसे चार आनेभर घसकर पीणेसें महींनज्वर ऊतरताहै हाथ पैरोंका दाह तथा निर्वलताके सोजेपर उसका लेप करणेमें आता है (२८ कूडाछाल) ग्राही ज्वरघ्न पित्तशामक तथा ठंडीहै दस्तोके रोगमें उसका काढा अवलेह चूर्ण तथा पुटपाक करके देतेहैं रक्तातिसार याने खूनके दस्तोंमे वहोत फायदा करती है और अेपीकाक्युआना अंग्रेजी दवाकी बरोबरी करती है (कूडेकी छालका पुटपाक) छालकूं पीस चावलोके धोवणमें गोलावणाय पहली लिखी पुटपाककी रीत मुजबरसनिचोड लेणा मरोडेमें रक्तातिसारमें ये पुटपाक वहोत फायदा करता है (कूडाछालका घन) कूडाछालतो २ बीलकी गिर २ तोला अनारकी छाल तो १ इनोंका घन मुजब घनकरणा दोदो आनीभर गोलियां करणी मात्रा १ अथवा २ गोली मरोडेके दस्तमें देणी (कुटजावलेह) कूडाछालका चूर्ण १० सेर जल २५सेर उकालकर चोथे भागका जल रहे तव ३ सेर गुडडालकर फेर उकाल फेर चाटणे जैसा होय तब उसमें रसोत मोचरस त्रिफला त्रिकटु रेसाखतमी चित्रककी जड कालीपाट कचा पील इंद्रजव अतिविष वायविडंग और नेतरवाला एकेक दवा चार चार तोलेका बारीक चूर्णकर डालणा ठरेबाद अधसेरघी अधसेर सहत मिलाणा चाटणेसें हरस तथा रक्तपित्तमें खून गिरतेकूं बंधकर रोगोंकूं मिटाताहै (२९ कुटकी) सारकहै पाचक ज्वरघ्न कुटकीमें [illegible] मिटाणेका पाचन करणेका और दस्त साफ लाणेका गुण होणेसें बुखारके [illegible] चूर्णमें डाले जाती है (कुटकी पाचन) कुटकी मोलेटी मुनका [illegible] बराबर वजन कूटकर दोदो रुपेभर क्वाथ तीनपावपाणीमें उकाल चतु[illegible] पीना इसकरके बुखारपकताहै दस्तसाफ आना है बुखार उतरताहै (कड-

भार्जेत) कुटकीकूं तवेपर सेककर चूर्णकरणा बचोंके सादेबुखारमें सहत अथवा गुडके संगमिलाके १ घालचूर्ण लेणेसें एकाधदस्त होकर पेट हलका पडता है बुखार उतरजाताहै (३० कपीला) कृमिघ्न तथा दस्तावर है चिपटे चूरणियाकूं मिटाताहै कपीला जादा लेणें में आवेतो दस्तके संगपेटमें चूंक पैदा करता हैं इसवास्ते दोयसें चार आनीभर गुडमें अथवा छाछमें पीणा अथवा वायविडंग सेंचल जवखार जवाहरड वगेरे दवायो कों समवजन मिलाके उसमेंसें आधे रुपेभर छाछमें पिलाणा (३१ कपूर) उष्ण पसी नालणेवाला और स्नायुको ढीला करता है कपूर खाणेमें तैसें बाहर लगाणेकी बहोत दवायोंमें डाले जाताहै पुरुषकी गुह्येंद्रि वेर २ जाग्रत होकर धातू निकलपडे तव १ वाल-कपूर १ रत्ती: अफीममिलाकर उसकी २ अथवा तीन गोलीकर दिनमें २ तीन वखत लेणी इस तरे कितने एक दिन लेणेसें नसोंका उत्पातनरम पडता है और धातु सावबंध होताहै, तैसें प्रमेहमें उस अवयवके दरदमें १ रत्ती अफीम २ रती कपू-रकी दो तीन गोलियांसे दरद मिटता है, कुचीलेका जहर कपूरसें उतरजाताहै फकत कपूर रती १ या १ वालतक देणा चाहिये वीच्छूके जहरमें पानमें और वच्छनाग (मोहरेके जहरमें) पाणीमें लेणेसें फायदा करता है, जिस घावमें जीव पडगयें होय उसमें कपूर भरणेसें कीडे नहीं रहते वडके दूधमें घसकर अंजन आंखमें करणेसें दो महीनेका फूला कट जाता है, (३२ किरायता) चिरायता ज्वरघ्न है, कडुआ पौष्टिक सारक तथा कृमिघ्न है, बुखारकी दवामें प्रसिद्ध है, बुखारके बहोतसें चूर्णोंमें काढेमें चिरायता पडता है, (लघुसुदर्शनचूर्ण) गिलोय पींपर पीपलामूल कुटकी हरडे सूंठ लौंग नींबकी अंतरछाल तज सुपेद चंनण इन सबोके बजनसें आधाचिरायता मिलाके चूर्ण-करणा साधारण सब बुखारमें अच्छा है, (लघुसुदर्शन नं० २) कुटकी चिरायता पित्त-पापडा इन तीनोंका चूर्ण सामान्य बुखारकूं पाचन करके मिटाता है, चिरायता बुखा-रकी कम जोरीकूं दूर करणेमें जितना फायदा करता है, एसा बुखारकूं मिटाणेमें गुण-कारी नहीं है, इसवास्ते उसके संग दुसरी ज्वर हर दवायें मिलाणी चहिये (३३ क-लंभा) कडवा पौष्टिक पाचक भेदक साधारण बुखार तथा बुखारकी नाताकतीकूं मिटाता है, गर्भवंती औरतकी उलटी मिटाता है, अशक्त अदमीकूं तथा बचोंकों फायदा करताहै, पाचन करता है, तथा कृमियोंकों मिटाता है. बुखारकी दवामें डाले जाता है, (३४ कौं-चके बीज) धातुपौष्टिकहै है, मरदमी देणेवाले पाकोंमे गिरता है, (आत्म गुप्तादि चूर्ण) कौंचबीज गोखरू सम वजन दोनोंके बराबर मिश्री दूधमें पीणेसें ताकत वढती है, (वृद्धदंड चूर्ण) कौंचबीज गोखरू सुपेद मूसली सुपेदसेमलकीजड आंवला गिलोयसत सबसम वजन सबके बराबर मिश्री दूधसें पीणा बुड्ढेकूं जेसें लकडी आधार देतीहै तेसेंना ताकत अदमीयोकूं ये चूर्ण ताकत देताहै, इसवास्ते वृद्ध दंड नाम दिया है, (३४ कु-

लथी) मधुर मूत्रल भेदक उष्ण पथरीकूं मिटाणेवाली पसीना हरणेवाली दालोंकी जात धान्य है, दक्षणमें वहोत पैदा होती है, काठियावाडवाले खाया करते हैं, दवामें कुलथी पैसाबके रोगपर चलती है, पैसाब अटकके आता होय जलणसें बूंद २ उतरता होय या पथरीका रोग होय तो कुलथीकूं उकालकर उसमें नवटांक कुलथी चहिये काढा छाणकर शिलाजीत चंद्र प्रभागुगल अथवा सोराखार वगेरे पेसाब लाणेवाली दवायोंके संग एकवाल सींधा निमक मिलाकर पीणेसें पेसाबकी पथरी कंकर निकल जाता है, ऐसे रोगीकों खाणेमेंभी कुलथीका उपयोग करणा सींधा निमक डाल इसकी दालखाणी कुलथीकूंशेक पीछे आटा करके वदनके मसलावेतो वहोतपसीना आता होय सो बंध होजाय (३६ कस्तूरी) वाजीकर उष्ण वीर्यस्तंभक आक्षेप वायूकों मिटाणेवाली कस्तूरीभी नकली वहोत आती है, अंबरकी तरे उपयोग होता है, कास कफ दम वगेरे रोगोंमे दुसरी दवायोंके संग दिये जाता है, (३७ कांकच) कृमिघ्न कडुई पौष्टिक ज्वरघ्न तथा पाचन है, बचोंके पेटकी कृमि दरद अजीर्ण आफरेमें कांकच के बीजोंकों सेकके उसका चूर्ण देणेसें फायदा करता है, विषमज्वर याने ठंढदेके बुखार अंतर देके बुखार आता है, जिसमें कितनेक दरजे क्वीनाईनके जितना काम करता है, इसवास्ते कांगसीके बीजोंकों काली मिरच मिलाके गरीब गांमोंके लोकोंने लेणा चहिये कांकचका बीज तीन भाग काली मिरच १ भाग चूर्णकी मात्रा ४ सें ६ वाल छ छ कलाकके अंतरसें लेणा विषमज्वर ठंढके सब बुखारों मिटाता है, (३८ काकडा सींगी) कफघ्न है, बहोतसें क्काथोंमें गिरता है, शृंगादि चूर्णमें लिखा है, (३९ काकडीके बीज) ठंढा तथा मूलत्र है, तरबूजका ककडीका खीरेका कदूका खरबूजेका पेठेका इत्यादिक सब पाणीमें घोट खीरेके बीजोंकों मिश्री मिलाय पीणेसें बंध भया पैसाब खुल जाता है, प्रमेह मूत्र कृच्छ गरम वायुपर अच्छा फायदेबंद है, इस बीजोके घोट पीणेसें सराप जादा पीणेसें जो मदात्यय रोग होता है, उसमें फायदा करता है, (४० कांचनार) शोधक पौष्टिक स्तंभन और रोपण है. गलेमें शरीरमें जुदी २ जगे गांठे उठ जाती है, उसकूं गंडमाल कहते हैं, कच नारकी छाल अथवा कचनार गूगल इस रोगके वास्ते सर्वोत्तमउपाय है गंडमालसें हाड सडता है एसे दुष्टरोगकूं मिटाता है (कचनारका चूर्ण) कचनारकी जडकी छालकाचूर्ण चावलके धोवणमें पीसकर अंदरथोडी सूंठडाल उसका पहोत दिनसेवन करणा गंडमालामें तथा कृम (पीटका हाडोमें सडणा घुसता है, कृमनिकलतीहै एसे रोगोंमें इस चूर्णमें फायदा होताहै बचपणेमें निकलती कृम [illegible] भी मिटती है, बडीउमरकी कृमका रोग असाध्यहै (कचनार गुगल) कच[illegible] छाल ४०० तोला बहेडा ८ तोला आंवला ८ तोला संठ मिरच पीपर तथा वायु [illegible] एकेक चीज चार २ तोला तज एलायची तमालपत्र हरेकएकेक तोला सबोंका

वचेकूं ॥ आधे रुपेभर घडेकूं २ रुपेभरसें जादा देणी जहरी असर होकर दस्त उलटी होती है, (४५ कूकडवेल) सखत रेचक छींकलाणेवाली जहरका नाश करणेवाली हिडकवाय तथा सांपके काटणेमें कूकडवेल देणेसें सखत उलटी होकर कितना एक जहर कम होजाता है, साधारण जुलाबमें इसकूं वरतना नहीं वहोत नुकशान होता है, (४६ कुवाडिया) पमाडके बीज चमडीका दोपहर ज्वरघ्न दाद चमडीके सब दोप ऊपर लगाणेसें अच्छा फायदा होता है, बीज और जड दोनूं काम आती है, बीजकूं थोहरके रसमें भिगाकर गोमूत्रमें महीनपीस लेप करणेसें आगड दोगड गांठभी मिटजाती है, बीजोकों नींबूके रसमें या छाछकी आछमें पीस लेपकरणेसें दाद मिट जाती है; (४७ कवार पाठा) रेचक शोधक पित्तशामक गोलेकों मिटाणेवाला वहोतसी दवाइयां बणाणेमें कुंवार पठेका रसकामदेता है, (कुमारिकासव) वहोत उपयोगी वस्तु बणती है, सो योगचिंतामणी वगेरे ग्रंथोमें लिखा है, सहजमें नहीं बणता है, इसवास्ते इहां नहीं लिखा है, पेटपर बांधणेमें तथा फोडा फुनसियोंके पकाणेवास्ते कुवारपठेकी फाडपर ऊपरका छिलका दूरकर साजीखार हलदी वगेरे भरके अंगारमें सेक गरमकर गरम २ बांधे जाता है, पेटका रोग जेसें तिल्ली लीवर गोला मलका रुकणा वगेरोंपर कुमारिकासब वहोत गुण करता है, दस्त साफ लाता है, सोधक गुण है, इसवास्ते चमडीके रोगमेंभी फायदा करताहै, औरतोंके आर्त्तव दोप सुधारणेवाली दवाइयोंमें कुमारिकासव मुख्य दवा है, जिस २ रोगोंमें दस्तकी कबजी होय और पित्तका दोप वढ गया होय उन सब रोगोंमें कुंवार पठा फायदा करता है, (४८ केल) ठंढी भारी तथा अस्मरी योनिदोप तथा रक्तपित्तकूं मिटाणेवाला है, केलेके गाभेकारस पीणेसें संखिया सोमल वगेरेका जहर मिटता है, केलेके पत्तोंपर सोणेसें दाहकी शांति होती है, (४९ केला) शीतल भारी धातुवर्धक मांसवर्द्धक तथा कफ करता है, भस्मक रोगमें पके भये केला घीके संग खाणा प्रदर वदनका धुपणा मूत्रातिसार ओरतोंके वहुत पेसाब उतरे उसमें पक्का केला आमलेका रस अथवा सूके आंवलाका उकालारस और मिश्री मिलाकर चाटणा केलेका अजीर्ण होयतो इलायची खाणी पेसाबमें धातु जाती होयतो और पाचन शक्ति अच्छी होय तो फजर और सांझ एक अथवा आधा केला घीके संग खावे ठंढा मालमदे तो अंदर सहत मिलाणा (५० केशर) शीतल स्तंभन वाजीकर और पौष्टिक है, इसवास्ते वहोतसी पौष्टिक दवायोंमें गिरती है, पाकोंमें बकरीका दूध उकालकर उसमें रत्तीसें १ ॥ रत्तीतक केशर डाल पीणेसें नाकमेंसें मूंमेसें खासीमेंसें गिरता खून अटकाता है, नाकमें पीनसमें तथा आधाशीशीमें ताजे घीमे केशर घोट उसकी नाकमें नासलेणी ॥ ओरतकूं रक्तगिरणे लगे तब मखणके संग केशर देणा (मात्रा) १ रत्तीसें ३ तक कोला) शोधक पौष्टिक तथा पित्तशामक है, सुपेद भूरा पेठा पाक मुरबा बणता

है, दवायोंमें काम देता है, पित्तशामकपणेसें रक्तपित्त मगजकी गरमी औरतोके गर्भाशयके कितनेक विकारोंमें अच्छा फायदा करता है, वदनमें ताकत देता है (५२ कंकोल) उष्ण दीपन पाचन कफघ्न तेसें कृमिनाशक है, मिरचकंकोलके नांमसें बजारोंमें विकती है, काली मिरचसें कदमें दूणी होती है, मिरगी यानेवाई तथा हिस्टीरीयांमें उसका बहोत फायदा देखा है, इसके दो दो चार २ दाणे हमेस खाणेसें कितनेक दिनोंसें मिरगी बाई हिस्टीरीया उन्माद कम होणे लगता है, उसके आणेमें तफावत अंतर पडते जाता है, इस रोगमें कंकोलकी निश्चे अजमायस करणी वाकीभी काम आती है, लेकिन् अजमायी भई नही है, (५३ खडसलिया) जिसकूं पित्तपापडा कहते हैं, बुखारमे बहोत फायदेबंद है, (पर्पटादि हिम अथवा इकेलेकाहिम– पित्तपापडा मुनका दाख वाला धाणा गिलोय चिरायता समवजन कूट अढाईसेर जलमें भिगाके रखणा येहिम सादे बुखारमें गरम् बुखारमें पुराणे बुखारमें पित्तके बुखारमें इत्यादिमें बहोत फायदा करता है, इस इकेलेके हिममें मिश्री मिलाणेसें एक तरेका ठंढा पित्तशामक शरबत होजाता है, वो उलटी गरमवायु चिणखिया पेसाब तथा पित्तके बुखारकूं मिटाता है, (५४ खापरिया) खापरियेके काले और भूरे रंगके ठीकरे बजारमें मिलते हैं, सात दिन गोमूत्रमें रखणेसें कडवे नीमके रसमें घोटणेसें अथवा गोमूत्रमें तीन कलाक उकालणेसें शुद्ध होता है (खापरियेका अंजन) शुद्ध खापरियेकूं पाणीमें खूब घोटणा बहोत पाणी डालके हिलाय डालणा तब निकम्मा हिस्सा नीचेजमेगा नीतरे जलकूं दुसरे पात्रमें लेकर ऊकालणा उकालतेजो बाकी रहे उसकूं त्रिफलाके काढेके पाणीकी तीनभावना देणी सूकेबाद दशमें भागका कपूर डाल मिलाके शीशीमें भर रखणा आंखोकी जलण निर्बलता धूंधका जाला धुयें जेसा दिखाई देणा ताजाफूला सब इस अंजनसें अच्छा होता है, (वंसंत मालनी) एक भाग सुपेद मिरच दोय भाग खापरिया पीसकपड छाणकर गऊके मखणमें खरलकरणा चिकणास सूके जहांतक नींबूके रसमें खरल करके टिकियां बांधणी एकेक बाल बसंत छोटीं पींपल सहतके संग खाणा दूध भातका भोजन करणा पुराणा धातुगतज्वर प्रदर निर्बलता तथा क्षयमें बहोत फायदा करता है, खापरिया इकेला महीनपीसाभया जलेपर गिरणेसें चोटलगेपर घावपर खुजलीके पर छिडकणेसें सुकाय डालता ह (५५ गरमाला) किरमाला सारक है, थोडी मात्रासें दस्त साफ लाता है, बहोत देणेसें जुलाब लगाता है, कितनेक सन्निपात ज्वरके काढेमें किरमाला डाले जाता है, इसका दस्त सादा हलका और निडर है, इसवास्ते बचोंकोंभी दिये जाता है, ॥ रु० भर लेणेसें दस्त साफ आता है, एक भर लेणेसें जुलाब लगता है, बचोंकों ऊमर मुजब दो आनीसे चार आनीभर (५६ गाजयां) गलजीभी शोधक शीतल मूत्रल तथा

घचेकूं ॥ आधे रुपेभर घडेकूं २ रुपेभरसें जादा देणी जहरी असर होकर दस्त उलटी होती है, (४५ कूकडवेल) सखत रेचक छींकलाणेवाली जहरका नाश करणेवाली हिड-कवाय तथा सांपके काटणेमें कूकडवेल देणेसें सखत उलटी होकर कितना एक जहर कम होजाता है, साधारण जुलाबमें इसकूं वरतना नहीं वहोत नुकशान होता है, (४६ कुवाडिया) पमाडके बीज चमडीका दोपहर ज्वरघ्न दाद चमडीके सब दोप ऊपर लगा-णेसें अच्छा फायदा होता है, बीज और जड दोनूं काम आती है, बीजकूं थोहरके रसमें भिगाकर गोमूत्रमें महीनपीस लेप करणेसें आगड दोगड गांठभी मिटजाती है, बीजोकों नींबूके रसमें या छाछकी आछमें पीस लेपकरणेसें दाद मिट जाती है; (४७ कवार पाठा) रेचक शोधक पित्तशामक गोलेकों मिटाणेवाला बहोतसी दवाइयां बणाणेमें कुंवार पठेका रसकामदेता है, (कुमारिकासव) बहोत उपयोगी वस्तु बणती है, सो योगचिंतामणी वगैरे ग्रंथोमें लिखा है, सहजमें नहीं बणता है, इसवास्ते इहां नहीं लिखा हैं, पेटपर बांधणेमें तथा फोडा फुनसियोंके पकाणेवास्ते कुवारपठेकी फाड-पर ऊपरका छिलका दूरकर साजीखार हलदी वगेरे भरके अंगारमें सेक गरमकर गरम २ बांधे जाता है, पेटका रोग जेसें तिली लीवर गोला मलका रुकणा वगेरोंपर कुमा-रिकासब वहोत गुण करता है, दस्त साफ लाता है, सोधक गुण है, इसवास्ते चमडीके रोगमेंभी फायदा करताहै, औरतोंके आर्त्तव दोप सुधारणेवाली दवाइयोंमें कुमारिकासव मुख्य दवा है, जिस २ रोगोंमें दस्तकी कबजी होय और पित्तका दोप वढ गया होय उन सब रोगोंमें कुंवार पठा फायदा करता है, (४८ केल) ठंढी भारी तथा असमरी योनिदोप तथा रक्तपित्तकूं मिटाणेवाला है, केलेके गाभेकारस पीणेसें संखिया सोमल वगेरेका जहर मिटता है, केलेके पत्तोंपर सोणेसें दाहकी शांति होती है, (४९ केला) शीतल भारी धातुवर्धक मांसवर्द्धक तथा कफ करता है, भस्मक रोगमें पके भये केला घीके संग खाणा प्रदर वदनका धुपणा मूत्रातिसार ओरतोंके बहुत पेसाब उतरे उसमें पका केला आमलेका रस अथवा सूके आंवलाका उकालारस और मिश्री मिलाकर चाटणा केलेका अजीर्ण होयतो इलायची खाणी पेसाबमें धातु जाती होयतो और पाचन शक्ति अच्छी होय तो फजर और सांझ एक अथवा आधा केला घीके संग खावै ठंढा मालमदे तो अंदर सहत मिलाणा (५० केशर) शीतल स्तंभन वाजीकर और पौष्टिक है, इसवास्ते बहोतसी पौष्टिक दवायोंमें गिरती है, पाकोंमें बकरीका दूध उकालकर उसमें केशर डाल पीणेसें नाकमेंसें मूंमेंसें खासीमेंसें गिरता खून अटकाता आधाशीशीमें ताजे घीमे केशर घोट उसकी नाकमें नासलेणी लगे तब मखणके संग केशर देणा (मात्रा) १ रत्तीसें ३ तक ...क है, सुपेद भूरा पेठा पाक मुरबा बणता

है, दवायोंमें काम देता है, पित्तशामकपणेसें रक्तपित्त मगजकी गरमी औरतोंके गर्भाशयके कितनेक विकारोंमें अच्छा फायदा करता है, वदनमें ताकत देता है (५२ कंकोल) उष्ण दीपन पाचन कफघ्न तेसें कृमिनाशक है, मिरचकंकोलके नांमसें बजारोंमें बिकती है, काली मिरचसें कदमें दूणी होती है, मिरगी यानेवाई तथा हिस्टीरीयांमें उसका बहोत फायदा देखा है, इसके दो दो चार २ दाणे हमेस खाणेसें कितनेक दिनोंसें मिरगी बाई हिस्टीरीया उन्माद कम होणे लगता है, उसके आणेमें तफावत अंतर पडते जाता है, इस रोगमें कंकोलकी निश्चै अजमायस करणी बाकीभी काम आती है, लेकिन् अजमायी भई नहीं है, (५३ खडसलिया) जिसकूं पित्तपापडा कहते हैं, बुखारमे बहोत फायदेबंद है, (पर्पटादि हिम अथवा इकेलेकाहिम– पित्तपापडा मुनका दाख बाला धाणा गिलोय चिरायता समवजन कूट अढाईसेर जलमें भिगाके रखणा येहिम सादे बुखारमें गरम् बुखारमें पुराणे बुखारमें पित्तके बुखारमें इत्यादिमें बहोत फायदा करता है, इस इकेलेके हिममें मिश्री मिलाणेसें एक तरेका ठंढा पित्तशामक शरबत होजाता है, वो उलटी गरमवायु चिणखिया पेसाब तथा पित्तके बुखारकूं मिटाता है, (५४ खापरिया) खापरियेके काले और भूरे रंगके ठीकरे बजारमें मिलते हैं, सात दिन गोमूत्रमें रखणेसें कडवे नीमके रसमें घोटणेसें अथवा गोमूत्रमें तीन कलाक उकालणेसें शुद्ध होता है (खापरियेका अंजन) शुद्ध खापरियेकूं पाणीमें खूब घोटणा बहोत पाणी डालके हिलाय डालणा तब निकम्मा हिस्सा नीचेजमेगा नीतरे जलकूं दुसरे पात्रमें लेकर ऊकालणा उकालतेजो बाकी रहे उसकूं त्रिफलाके काढेके पाणीकी तीनभावना देणी सूकेबाद दशमें भागका कपूर डाल मिलाके शीशीमें भर रखणा आंखोकी जलण निर्बलता धूंधका जाला धुयें जेसा दिखाई देणा ताजाफूला सब इस अंजनसें अच्छा होता है, (वंसंत मालती) एक भाग सुपेद मिरच दोय भाग खापरिया पीसकपड छाणकर गऊके मखणमें खरलकरणा चिकणास सूके जहांतक नींबूके रसमें खरल करके टिकियां बांधणी एकेक बाल बसंत छोटीं पींपल सहतके संग खाणा दूध भातका भोजन करणा पुराणा धातुगतज्वर प्रदर निर्बलता तथा क्षयमें बहोत फायदा करता है, खापरिया इकेला महीनपीसाभया जलेपर गिरणेसें चोटलगेपर घावपर खुजलीके पर छिडकणेमें सुकाय डालता ह (५५ गरमाला) किरमाला सारक है, थोडी मात्रासें दस्त साफ लाता है, बहोत देणेसें जुलाब लगाता है, कितनेक सन्निपात ज्वरके काढेमें किरमाला डाले जाता है, इसका दस्त सादा हलका और निडर है, इसवास्ते बचोंकोंभी दिये जाता है, ॥ रु० भर लेणेसें दस्त साफ आता है, एक भर [illegible] जुलाब लगता है, बचोंको ऊमर मुजब दो [illegible] मनरु तथा

पित्तशामक है, गलजीभीकूं भीपायगीभी करते हैं. खूनकूं साफ करणेवाली खुजाल दाद तथा चमडीके दूसरे रोगोंपर पीणेसे बहोत फायदा करती है, (गाजपांखरस) आध-रुपेभर पत्तोंको पाव जलमें पीसके रसकरणा मिश्री मिलाकर पीना चमडी तथे आंखोंकी जलण गरमी पित्तकाविगाड गरमवायु तणवा मूत्रकातपणा पित्तकाबुखार वातरक्त गरमीसें फूटकर निकलगये गड गूंमड रूंतोड खुजाल दुराज सबमें फायदा करता है, (५७ गिलोय) शमन ज्वरघ्न पित्तशामक शीतल शोधक मूत्रल पौष्टिक बहोत उमद दवा है, बहोतसे काढे और चूर्णोंमें गिरता है, पित्तका बुखार तथे विषमज्वरमें तो बहो तही फायदेमंद जीर्णज्वर तथा धातुगत सब बुखारमें गिलोय बहोतही असर कर है, और जो हाडगत पुराणा बुखार किसीभी दवाईसें जब शरीरकूं नहीं छोडता गिलोय छुडाय देती है, संस्कृतमें उसका नाम अमृता है, सो स्वादमें तो कड है, लेकिन् गुणमें तो साक्षात अमृता ही है, (अमृतास्वरस) गिलोयकूं फूटरस निका सहत डाल पीणेसें पीलिया मिट जाता है, मिरचडाल थोडे दिनपीणेसें जीर्णबुखार उतर है, गरमवायु दाद जीर्णज्वर पित्त प्रकोप मगजकी गरमी आंखकी गरमी चमडीमेंसें तुर फूटके निकले भये दोष वातरक्त पित्तकी उलटी रक्तपित्तकी उलटी रक्तपित्त नकसं आधाशीशी वगेरे बहोतसे रोगोंका शमन करती है, (अमृताक्काथ) बुखारमें गिलोयक काढा अच्छा फायदा देती है. चमडीकी गरमाईके पुराणे दोषोंमें गिलोयका क्काथ दुस शोधक और सारक दवाओंके संग देणेसे बहोत अच्छा फायदा देती है, ये काढा विस्फ टक शीतला अछवडा जले वगेरेकूं मिटाता है, चमडीपर गरमीके चक्कर जेसे चठे हों हैं, उसकूं वातरक्त कहते हैं, उसकूं ये काढा एरंडीया तेल डालकर पिलाणेसें मिटत है, गिलोयसत्व जीर्णज्वर शिरकी गरमी निबलाई फीकास प्रदर वगेरेमें गिलोय सत्व अच्छ है, चांदी घावके आसपास जो फुनसियें उठा करती है, (शूकरोग) उसकूंभी गिलोयक काढा मिटा देती है, (अमृतामोदक) गिलोयका चूर्ण १६ तोला घी सहत और पुराण गुड दरेक एकेक तोला इन सबोंकों घोटकर सवा पांच २ तोलेकामोदक करण मोदक नहीं बंधे तो सहत जादा डालणा इस मोदकका बहोतदिन सेवन करणेसें पथ्य खुराक खाणेसें बहोत वर्षोंका पुराणा ज्वरचले जाता है, (५८ गूगल) वातहर शोधक शोधक सारक रोपण तथा पौष्टिक है, महाजोरकी बादी जो देशी याअंग्रेजी दवायोंसे अच्छी नहीं होय वोगूगलकी अनेक तरेकी बनावटीसें अच्छी होसकती है, गूगल एक दरखत कारस है, जेसलमेरकी धरतीमें इसकी पैदास है, इसमें धूल मट्टी बजारमें विक-णेसे लग जाती है, इस वास्ते शुद्ध करलेणा चाहिये पीली २ तेजगूंदजेसीडलीकण गूगली लेणी चाहिये केइ एक काले रंगका धूल मट्टी मिले गूगलको पाणीमे भिगाकर वस्त्रसें छानकर फेर उस जलकूं अंगारपर चढाकर जाडा करके काममें लेते हैं. त्रिफलाका

काढा होय उसमें छाण लेणा सबसें अच्छा है, बाकी तो गूगल अनेकतरें सुधता है, मुद्दे इसमेका कंकर फूस निकालणा चहिये खाणेमें तथा ऊपर लगाणेमें गूगल दोनोंतरे काम देता है, वादीके रोगपर मुख्य है, लेकिन् वो वायु मुख्यपणे दोय है, एकवादी तो शरीरमें स्नायुओंकी गतिमें जोर करके शरीरके अवयवोंमें खेंचाताणका तोफान करती है, (हिचकी वगेरे) और दुसरी तरेकी वादीमें स्नायुओंकी चाल बंध होजाती है, (गंठियावायु) संधिवायु वगेरोंमें ये गूगल नसोंकी चाल कम पडणेवाली वादीमें गुण करताहै, वादीकी वेमारी टाल दुसरेभी बहोतसे रोगोंपर दुसरी दवाइयोंके संग गूगलका उपयोग होता है, मूत्राशयके तथा खून विगाडके बहोतसे रोगोंमें गूगल फायदेवंद है, (गूगलकी न्यारी २ बनावटीकूं गूगलही नाम दिया गया है, सो थोडा लिखते हैं, (योगराजगूगल) सूंठ पींपर चव्य पीपलामूल चित्रककी जड सेकी हींग अजवाण सरसूं जीरा स्याह जीरा संभालूके बीज इंद्रजव कालीपाठ वायविडंग गजपीपर कुटकी अतीस भाडंगी वच मरोडफली ये वीस दवा चार २ आनीभर हरड बहेडा आवला ये तीनों मिलके १० तोलाभर इन सबोंके बराबर याने १५ रुपेभर शुद्ध गूगल इन सबोंकों मिलाकर घी देतेजाणा और कूटते जाणा ये योगराजगूगल औरभी केइ दवाइयोंमें २।४ तरेकाभी बणता है, धातू भस्मेंभी डाले जाती है, वंगेश्वर रूपेश्वर चंद्रोदय नागेश्वर मंडूर लोहभस्म अभ्रक भस्म इन पूर्वोक्त योगराजमे डालणेसें महायोगराज कहलाता है, सर्व वादीके रोग सब तरेका कोढ चामडीका रोग वातरक्त श्वास शूल नेत्ररोग औरतोंके ऋतूधर्मका दोष पांडहीका दोष हाडोका सडणा दुष्टव्रण भगंदर मेद उदर वगेरे रोगोंमें देणा वादीके रोगमें रास्नादि क्वाथमें कोढ रोगमें कडवे नीमके छालके काढेमें वातरक्तमें गिलोयके काढेमें पेटके रोगोंमें पुनर्नवादि क्वाथमें आंखके रोगमें त्रिफलाके क्वाथमें पांडूमें गोमूत्रमें बाकी सब रोगोमें घी सहतके संग देणा सब वेमारी जातीहै, हमने केइदके अनुभव करलियाहै, (किशोरगुग्गल) गिलोय हरड बहेडा आंवला सब ६४ तोला उनोंकों छ गुणे जलमें ऊकालकर आधा रहणेपर छाण लेणा उस जलमें ६४ तोला शुद्ध गूगल डालके मंद आंचसें उकालते जब जाडा होजाय तब इतनी चीजोंका महीन चूर्ण उसमें डालना हरड बहेडा आंवला दो दो तोला गिलोय ४ तोला सूंठ मिरच पींपर छ छ तोला वायविडंग दो तोला दंतीमूल तथा निसोतकी छाल एकेक तोला मिलाकर चार आनीभर २ की गोलियां करणी सबतरेका चमडीका रोग कोढ वातरक्त व्रण गुल्म प्रमेह पिटिका (प्रमेहके रोगमें फनसियां होजावे सो) वगेरे बहोतसे रोग अच्छे होते हैं, सर्व रोगोंमें मंजीष्ठादि क्वाथमें देणा अच्छा है, अथवा रोगों मुजब अनुपानमें अथवा फकत पाणीमें दे सकते हैं, (त्रिफला गुग्गल) हरड बहेडा आवला तथा पीपर चार २ तोलेका बारीक चूर्ण तथा गूगल २० तोला सबोंकों जलमें पीस चार आनी भरकी गोलियां करणी

भगंदर तथा नासूरवालेकों कितनेक दिन देणेसें फायदा करता है, (गोक्षरादि गूगल) गोखरू ११२ तोला छगुणे जलमें उकालणा आधाजले तब पाणीकूं छाणकर उसमें २८ तोला शुद्ध गूगल डालणा मंद आंचसें कुछ गाढा होणे लगे तब इतनी दवाइयें अंदर मिलाणी सूंठ मिरच पीपर हरडे बहेडा आंवला मोथ एकेक ४ चार तोला पीछे चार २ आनी भरकी गोलियां करणी प्रमेह मूत्रकृच्छ्र प्रदर मूत्राघात वीर्यदोष तथा पथरीके रोगमें अच्छा गुण देता है, इसके सिवाय कचनार गूगल सिंहनाद गूगल अमृता गूगल षडंगगूगल चंद्रप्रभा वगैरे दवायोंमें गूगल मिलाता है, वादीसें कमरमें पीठमें तथा सांधोंमें चसके और शूलचले उसपर गूगलका अथवा गूगलके संग वादी हरता दवायें मिलाकर लेप करणेसें फायदा होताहै, (५९ गूंदी) पत्तोंका स्वरस ४ रुपेभर उसमें सहत २ रुपेभर मिलाकर पिलाणेसें जलते पेसाबवाला प्रमेह प्रदर उष्णवात उधरस कफ ये सब मिटता है, तजा गरमी मिटती है, खून सुधरता है, (६० गुलबास) धातुपौष्टिक है, उसके सांझकूं हमेसां फूल खिलता है, सुपेद लाल पीला और मिश्र रंगके फूलोंवाली होती है, गडगूमडपर उसके पानोंकों गुडके संग पीसके लेप करणेमें आता है, उसकी जड धातुपुष्टी तथा धातू जाणेपर बहोत फायदा करता है, इसकी जडका चूर्ण दो दो तोला दूध तथा मिश्रीके संग लेणेसें बहोत दिनोंसें धातू जाती होय सो बंध होजाती है, ये गरम है, ९ इसपर दूध अच्छीतरे खाणा सुपेद फूलवालेकी जड बहोत फायदेबंद है, चोपचीनीभी इसही की जातीहै इसवास्ते इसके जेसाही फायदा करतीहै (६१ गुलाबके फूल) ठंढा रेचक तथा पित्तहर हे इसके फूलोंका जुलाब लिये जाताहै दो रुपियाभर गुलाबके फूलोंकी चाकरके अंदर सूंठ और बूरा डालकर पीतेहैं गुलकंदभी बणताहै गुलकंद पित्तकूं शमन करताहै औरी शीतला ओखा इत्यादि और भी पित्तके प्रकोपमें गुलकंद फायदा करताहै, बणाणेकी विधि पीछे लिखी है (६२ गुवारके पत्ते) गुवारके पत्तोंका साग घीमें रांधकर एक अठवाडे खाणेसें रातींधापणा मिटताहै, (६३ गेरू) ठंढा तथा रोपणहै चमडीके कोईभी रोगमें अथवा मधुमखी टांटियां भ्रमरे आदिकी डंककी जलणकूं गेरूका लेप शांत करता हे (गेरूका उपेरा) गेरू ५ भाग फुलाया भया नीलाथोथा ३ भाग बराबर घोटकर लेपकरणेसें सादीटांकी तुरत मिटजाती है (६४ गोखरू) मूत्रल शीतल तथा धातुपौष्टिकहै, गोखरू धातुपुष्टिमें अछा है, छोटेगोखरूसें बडे दखणी गोखरू गुणमें बहोत अछे होतेहैं धातूका गिरणा क्षयरससें भईनाताकती गरमबाय मूत्रकृच्छ्र पेसाबकी रेती वगेरे रोगोंमें गोखरू बहोत फायदा देती हे, (गोक्षरचूरण)गोखरू तथा तिल दोनों का चूरण करके बकरीके दूधमें तथा सहतमें मिलाकर खाणेसें हस्त क्रियासें भई नाताकती ईमें फायदा करती है गोखरूका (लुआब-गोखरू जडसमेत लाकर पीसकर जलमें लुआब बणाणा पेसाबकी दाह गरमवायु तथा पेसाबके रुकनेसें मिटाता है (६५गोमूत्र) उष्ण

पाचन कफघ्न वातहर तथा कुष्ठहर है धातूओंकों शोधणेमें तथा कितनेक विकारी पदार्थोंके शोधनकरणेमें कामदेताहै खुजाल कोढ शूल गोला सोजा खासी कृमि कामला तापतिली वगैरे रोगोंमें फायदा करता है गोमूत्रसें स्नान करणेसें वदनकी खुजली मिटतीहै, इसवास्ते चमडीपर लगाणेके लेप अथवा सूकी दवाकूंभी गोमूत्रमें तइयार करणा चाहिये गोमूत्रकूं एकवेरवस्त्रसें छाणकर अंदर हलदी डालकर पीणेसें हमेस थोडे दिनोंमें पांडूका रोग उपद्रव युक्त मिटजाता है (६६ गंधक) शोधक सारक तथा कृमिघ्नहै गंधककी बहोत जात है लेकिन् पेटमें खाणेमें आमलसार जिसकी गोलडली होतीहै सो सोधकर खाणेमें काम आता है और लंबानलीवाला गंधक आता है सो बाहर लगाणेमें कामदेताहै गंधक शुद्ध करणेकी अच्छी विधि लिखते है एक कडाहीमें पावघी गरमकर गंधक डालदेणा आमलसारा १ सेर एक पात्रमें अधसेर तीन पाव दूध डाल उसपर ढीलासा कपडा बांध देकर झट गंधक गलतेही घीसमेत दूधवाले वस्त्रपर उंधादेणा ठरेबाद दूधमेंसें निकाललेणा येगंधक सब कार्यके लायकहे रसोंमें येहीकामिलहै केइयक दूधमें दाणेटपकातेहैं. सोविधि बहोतोंकों मालूमहे जादा आंच लगणेसें लाल पडजाता है तो गुण कम होजाताहै दूधपात्रपर ढीला लटकता वस्त्र बांध उसमें गंधकपीस डालदेणा उसपर मट्टीकी पाल दो दोअंगल उंची लगाकर लोहके तवेपर झग २ ते अंगारेधर उसपात्रकी पालपर धरके पंखेसे झपटणा गंधकके मोती जैसे दाणे दूधमें गिरेगा इसमें गंधकके जलणेका डर नहीं है लेकिन् सोधणेमें देरी बहोत लगती है गंधकका मुख्य उपयोग हरसके रोगपर है दस्तकी कबजीपर अजीर्ण हेजे वगेरेमें और जादा करके चमडीके रोगमें खाणेसें तेसें चोपडणेसें फायदा करता है हरसमें गंधक दूधके संग लेणेसें फायदा होताहै और दस्तसाफ लाता है हरसके मस्सेमें सें खून गिरता होयतो गंधके संग एक दो बाल फिटकडी मिलाकर दूधमें लेणा खुजलीमें गंधक दूधमें पीणा वदनके गंधकका मालिस करणा अंदरके जंतुकाविकारमिटजाताहै इके ले गंधककी मात्रा २ सें ८ वालतक (गंधकवटी) शोधागंधक तीनभाग सीधानिमक लसण सुंठ मिरच पीपर सेकी हींग तथा जीरा ये सब एकेक भाग मिलाकर नींबूके रसमें बाजलमें झाडबेर जितनी २ गोलियां करणी मात्रा २ सें चारबाल अजीर्ण अरुचि हेजा उलटी मौल शूल वगैरेमें फायदा देतीहै (गंधकका तेल) शुद्धगंधककूं दूधमें उकालणा पीछे उस दूधकूं जमाकर दहीकर विलोयेबादघी निकले वोही गंधकका तेल समझणा ये तेल चमडीपर मसलणेसें बहोत फायदा करता है (६७ घी) वातहर पित्तशामक विषहर रोपण स्निग्ध पौष्टिक तथा रसायण है उन्माद शूल गोटा विषमज्वर क्षयक्षीणता तथा क्षत वगेरेमें फायदा करता है महनत करणेवालोंके वास्ते अच्छा है, वायुके कोठेवाला हमेस नवटंक घी पीवेतो वदनमें गरमी बढकर कुव्वत आतीहै, सोमल वगेरे जहर खाया होय उसकूं घी पिलाणेसें जहरकी गरमी कम होतीहै दूसरा घी पिलाणेका और भी मन-

लप है जहरवालेकूं घी खूब पिलाकर उलटी कराणी या आपसेंही होयतो घींके विकाराम के संग जहरी पदार्थके परमाणू पकडी जकर पादर निकलाहै, घी ठंढा है, इसवास्ते चमडीपर लगाणेसें दाह तथा जहरकी जलण कम होतीहै, अंगार तथा तेजाबमें बदन जलगया होयतो घी लगाणेसें बदनमें शांति होतीहै पुराणा घी जादा गुन करता है, जादा पुराणा घी नहीं मिले तो सोवेर जलसें घीकूंमथ डालणा ज्यों जादा मथे त्यों अछा होताहै, (घीका उपयोग नीचे मुजब) (१) आधासीसी– गऊका अछा ताजा घी सांझ सवेरे नाकमें सुंघणा (२) शिरकापित्त– शिरपर ताजा घी मसलणा (३) हाथ पैरकी जलण (तलियोंपर रगडणा) (४) अत्यंतदाह– जादा बुखार वगेरोसें बदनमें जलण लगगई होय तब सोवेरका धोया घी गऊका मसलणा (५) धतूरा तथा रसकपूर का जहर– गऊका जादा घी पीजाणा (६) दारूकानसा– गउका घी मिश्री खेलाणा (७) चोथिया बुखार उन्माद याईयानें मृगी– गऊका दही दूध तथा गोबरका रसमें गऊका घी सिद्धकरके पिलाणा (८) प्यासका रोग गऊका घी तथा दूध पीणा (९) विसर्प याने रक्तवायु– सो अथवा हजार वेर धोया भया गऊका घी वेर २ लगाणा (१०) बचेकी छातीका कफ– कफका जमाव जमगया होयतो गऊका घी छातीपर धीरे २ मसलणा (६८ घोडेकीलीद) पांचरुपेभर आसेर लीदमें पाचरुपा भर जल डालके मसलके जल छांण लेणा उसमें तलीभई हींगका भूका दो अढाई मासा डालकर पीणेसें भयंकर भी शूल मिटती है (६९) चीणीकबाब–मूत्रल ठंढी दीपन तथा पाचन है प्रमेह गरमवादी तथा जलते पेसाबमें दीजातीहै, कबाबचीणीका चूर्ण २ सें ४ वालचूर्णमें चंदनके तेलकी पांचचार बूंद डालके पीणेसें पेसाबकी जलण मिटती है (७० चिणेकाखार) दीपन तथा पित्तशामक है खेतमें ऊगेभये चणोके दरखतोंपर फजर शांझरके महीन वस्त्र कूं ओसके जलपर फेरणेसें पाणी जो लगता है वो चणखार कहलाताहै अजीर्ण चूंक शूल वगेरे पेटके दुखणेमें इसखारमें जरासेकी हींग डालके पीणी उसमें अंग्रेजी दवा सल्फे ओफ झिंकके जैसा गुणहै (७१ चणोठी) चिरमी शीतल वातहर रोपण तथा पौष्टिकहै इसके पत्ते मूमें रखणेसें अबाज खुलती है। जडकूं पाणीमें घसके उसका पाणी आधाशीशी तरफके नसकोरे फुरणियोंमें सुंघाणेसें तीनचार दिनोमें आधाशीशी मिटती है (गुंजादि तैल– भांगरेका रस १ सेर लाल चिरमीका भूका २॥ रुपियाभर तथा तिलका तेल तोला १० इन सबोकों उकाल तेल करणा ये तेल टाटपर लगाणेसें वाल ऊगजाताहै गिरते भयेवालोंकों मजबूत करता है, सुपेद चिरमीका पाक बणता है वो पुष्ट होता है लाल चिरमी उलटी करातीहै, और चमडी द्वारा शरीरमें दाखल होयतो जहरका असर करतीहै (७२ चित्रक) दीपन पाचन दंमक तथा दाहक है इसकी जडकी छालकूं पीस लगाणेसें (वलस्टर) फफोला उठता है (चित्रकलेप) चित्रक टंकणखार हलदी

तथा गुड समभाग पीस लगाणेसें हरसके मस्से गिरपडते हैं. कितनीक दवायोंमें चित्रककी जडका उपयोग होताहै (७३ चीमेड) आंखके रोगमें अछी है(भरण) चीमेडके बीज भिगाकर बाद दांतोंसें फोंतरे उतारकर अंदरके मींजींकूं महीन चाबकर आंखमें आंजणा इस भरणेकूं अंबलीके अंदरके गिरेके संग मिलाकर आंजणेसें आंखकी गरमी दुखती कड-कती आंख जलदी आराम होतीहै (७४ चूना) दवामुजब चूनेका नितरा भया जल काम देता है पेट छाती तथा वादीकी सूजन और शूलपर चूना और सहत मिलाकर लेप कर-णेसें फायदा होताहै चूनेका नीतराजल उलटी मिटातीहै चूना और हरतालका लेप वालोंकों उडा देताहै, पत्थर शंख कोडी मूंगिया सीप इनसबोकी भस्मी चूना है मोतीत कात (७५ चोपचीणी) शोधक तथा पौष्टिक है, उपदंशयाने गरमी रोग जब शरीरमें पुराणा होकर फूटता है शीतलाजैसें चट्टे पडते हैं चमडी स्याह होजाती है सांधोमें दरद और पकडीज जाते हैं उसमें चोपचीणी अछीहै (चोपचीणीका पाक) चोपचीणीका चूर्ण तो ४८ बराबरसें जादा घी डालकर सेकणा पीछे ५६ रुपेभर बूरेकी चासणी करके वो चोपचीणी तथा पीपर पीपरामूल सूंठ मिरच तज अकलकरा लोंग इन सबोंकूं एकेक रुपिया भरलेके इसमें पीसकर मिलाकर लड्डबांधणा ये पाक हमेस नवटांक खाणा (७६ छाछ) छाछकी जाति गुणदोष आगे लिखा है दवामें छाछके गुण इसमुजब है, (१) संग्रहणी—फकतछाछ पीके रहणेसें असाध्यसंग्रहणी भी साध्य होजाती है (२) बंध-कुष्टमें सोवा तथा संचल डालकर छाछपीणी (३) हरसमें चित्रकके जडकी छाल पीसकर गऊकी छाछ या दही लेणा (७७ छाण) गऊका गोबर गरमकर कांचपर सेककर बांध-णेसें निकली भई कांच अंदर घुसती है भैंसके गोबरकूं पाणीमें हिलाकर उसपाणीकूं छाण उसमें बूरा डालकर पीणेसें परमेकी सखत जलण मिटजातीहै, (छाणेकी राख) शीतला निकलणेसें जो फफोले बदनपर चकचकते फूटजाते हैं उसपर राखकूं कपडेसें छाणके दबाणेसें सूकजातेहैं (७८ जवखार) जवकी गीली डांखलियोंकों जलाकर राखकर खार निकालणेकी विधिसें खार निकालणा इससें उधरस कफ तथा बचोंकी छाती भराणीमें दुसरी दवायोंके संग अनुपानतरीके वापरते हैं, खासीमें १–२ रत्तीभर जवखार लेते हैं जवखारमें बहोत भाग कारबोनेट ओफ पोटाशकाहै, (७५ जाई) रोपण है ओरतों का योनिदाह व्रण खुजाल तथा फोडे फुनसियें जाईके पत्तोंकी लुगदी बांधणेसें अछे होतेहैं (जात्यादि घृत) जाई पटोल तथा कडवा नीब इन तीनोंके पत्ते कुटकी हलदी दारुहलदी उपलेट मजीठ नीलाथोथा मेण जेटीमध करंजके बीज तथा वाला ये सब एके कतोला चूर्ण किया भया घी ५१ रुपेभर पाणी २०४ भर विधिमुजब घी सिद्ध करणा (८० जामुन) गुणमें ग्राहीहै बीछुके डंकपर पत्तोंकी पोटिस गुन करतीहै, पयगके रोगमें जामुन अछी है, मीठे पेसाब उतरे उसमें जामुनके बीज दियेजाते हैं रक्तातिसारमें जामु-

लब है जहरवालेकूं घी खूब पिलाकर उलटी कराणी या आपसेंही होयतो घीके चिकणास के संग जहरी पदार्थके परमाणू पकडी जकर बाहर निकलाहै, घी ठंढा है, इसवास्ते चमडीपर लगाणेसें दाह तथा जहरकी जलण कम होतीहै, अंगार तथा तेजाबसें वदन जलगया होयतो घी लगाणेसें वदनमें शांति होतीहै पुराणा घी जादा गुण करता है, जादा पुराणा घी नहीं मिले तो सोवेर जलसें घीकूंमथ डालणा ज्यों जादा मथे त्यों अछा होताहै, (घीका उपयोग नीचे मुजब) (१) आधासीसी– गउका अछा ताजा घी सांझ सबेरे नाकमें सूंघणा (२) शिरकापित्त-- शिरपर ताजा घी मसलणा (३) हाथ पैरकी जलण (तलियोंपर रगडणा) (४) अत्यंतदाह– जादा बुखार वगेरोसें वदनमें जलण लगगई होय तब सोवेरका धोया घी गऊका मसलणा (५) धतूरा तथा रसकपूर का जहर– गऊका जादा घी पीजाणा (६) दारूकानसा– गउका घी मिश्री खेलाणा (७) चोथिया बुखार उन्माद वाईयानें मृगी-- गऊका दही दूध तथा गोवरका रसमें गऊका घी सिद्धकरके पिलाणा (८) प्यासका रोग गऊका घी तथा दूध पीणा (९) विसर्प याने रक्तवायु– सो अथवा हजार वेर धोया भया गऊका घी वेर २ लगाणा (१०) बचेकी छातीका कफ– कफका जमाव जमगया होयतो गऊका घी छातीपर धीरे २ मसलणा (६८ घोडेकीलीद) पांचरुपेभर आसरे लीदमें पाचरुपा भर जल डालके मसलके जल छांण लेणा उसमें तलीभई हींगका भूका दो अढाई मासा डालकर पीणेसें भयंकर भी शूल मिटती है (६९) चीणीकबाब–मूत्रल ठंढी दीपन तथा पाचन है प्रमेह गरमवादी तथा जलते पेसाबमें दीजातीहै, कबाबचीणीका चूर्ण २ सें ४ बालचूर्णमें चंदनके तेलकी पांचचार बूंद डालके पीणेसें पेसाबकी जलण मिटती है (७० चिणेकाखार) दीपन तथा पित्तशामक है खेतमें ऊगेभये चणोके दरखतोंपर फजर झांझरके महीन वस्त्रोंकूं ओसके जलपर फेरणेसें पाणी जो लगता है वो चणखार कहलाताहै अजीर्ण चूंक शूल वगेरे पेटके दुखणेमें इसखारमें जरासेकी हींग डालके पीणी उसमें अंग्रेजी दवा सल्फेट ओफ झिंकके जेसा गुणहै (७१ चणोठी) चिरमी शीतल वातहर रोपण तथा पौष्टिकहै, इसके पत्ते मूंमें रखणेसें अवाज खुलती है। जडकूं पाणीमें घसके उसका पाणी आधाशीशी तरफके नसकोरे फुरणियोंमें सुंघाणेसें तीनचार दिनोमें आधाशीशी मिटती है (गुंजादि तैल– भांगरेका रस १ सेर लाल चिरमीका भूका २॥ रुपियाभर तथा तिलका तेल तोला १० इन सबोकों उकाल तेल करणा ये तेल टाटपर लगाणेसें बाल ऊगजाताहै, गिरते भयेवालोंकों मजबूत करता है, सुपेद चिरमीका पाक बणता है वो पुष्ट होता है, लाल चिरमी उलटी करातीहै, और चमडी द्वारा शरीरमें दाखल होयतो जहरका असर करतीहै (७२ चित्रक) दीपन पाचन दंमक तथा दाहक है इसकी जडकी छालकूं छाछमें पीस लगाणेसें (बलस्टर) फफोला उठता है (चित्रकलेप) चित्रक टंकणखार हलदी

तथा गुड समभाग पीस लगाणेसें हरसके मस्से गिरपडते हैं. कितनीक दवायोंमें चित्रककी जडका उपयोग होताहै (७३ चीमेड) आंखके रोगमें अछी है(भरण) चीमेडके बीज भिगाकर बाद दांतोंसें फोंतरे उतारकर अंदरके मींजींकूं महीन चावकर आंखमें आंजणा इस भरणेकूं अंबलीके अंदरके गिरके संग मिलाकर आंजणेसें आंखकी गरमी दुखती कडकती आंख जलदी आराम होतीहै (७४ चूना) दवामुजब चूनेका नितरा भया जल काम देता है पेट छाती तथा वादीकी सूजन और शूलपर चूना और सहत मिलाकर लेप करणेसें फायदा होताहै चूनेका नीतराजल उलटी मिटातीहै चूना और हरतालका लेप वालोंकों उडा देताहै, पत्थर शंख कोडी मूंगिया सीप इनसबोकी भस्मी चूना है मोतीत कात (७५ चोपचीणी) शोधक तथा पौष्टिक है, उपदंशयाने गरमी रोग जब शरीरमें पुराणा होकर फूटता है शीतलाजैसें चट्टे पडते हैं चमडी स्याह होजाती है सांधोमें दरद और पकडीज जाते हैं उसमें चोपचीणी अछीहै (चोपचीणीका पाक) चोपचीणीका चूर्ण तो ४८ बराबरसें जादा घी डालकर सेकणा पीछे ५६ रुपेभर बूरेकी चासणी करके वो चोपचीणी तथा पीपर पीपरामूल सूंठ मिरच तज अकलकरा लोंग इन सबोंकूं एकेक रुपिया भरलेके इसमें पीसकर मिलाकर लड्डुबांधणा ये पाक हमेस नवटांक खाणा (७६ छाछ) छाछकी जाति गुणदोष आगे लिखा है दवामें छाछके गुण इसमुजब है, (१) संग्रहणी–फकतछाछ पीके रहणेसें असाध्यसंग्रहणी भी साध्य होजाती है (२) बंधकुष्टमें सोवा तथा संचल डालकर छाछपीणी (३) हरसमें चित्रकके जडकी छाल पीसकर गऊकी छाछ या दही लेणा (७७ छाण) गऊका गोबर गरमकर कांचपर सेककर बांधणेसें निकली भई कांच अंदर घुसती है भेंसके गोबरकूं पाणीमें हिलाकर उसपाणीकूं छाण उसमें बूरा डालकर पीणेसें परमेकी सखत जलण मिटजातीहै, (छाणेकी राख) शीतला निकलणेसें जो फफोले वदनपर चकचकते फूटजाते हैं उसपर राखकूं कपडेसें छाणके दबाणेसें सूकजातेंहैं (७८ जवखार) जवकी गीली डांखलियोंकों जलाकर राखकर खार निकालणेकी विधिसें खार निकालणा इससें उधरस कफ तथा बच्चोंकी छाती भराणीमें दुसरी दवायोंके संग अनुपानतरीके वापरते हैं, खासीमें १–२ रत्तीभर जवखार लेते हैं जवखारमें बहोत भाग कारबोनेट ओफ पोटाशकाहै, (७५ जाई) रोपण है औरतों का योनिदाह व्रण खुजाल तथा फोडे फुनसियें जाईके पत्तोंकी लुगदी बांधणेसें अछे होतेहैं (जात्यादि घृत) जाई पटोल तथा कडवा नींब इन तीनोंके पत्ते कुटकी हलदी दारुहलदी उपलेट मजीठ नीलाथोथा मेण जेटीमध करंजके बीज तथा वाला ये सब एके कतोला चूर्ण किया भया घी ५१ रुपेभर पाणी २०४ भर विधिमुजब घी सिद्ध करणा (८० जामुन) गुणमें ग्राहीहै बीलूके डंकपर पत्तोंकी पोटिस गुण करतीहै, पथरीके रोगमें जामुन अछी है, मीठे पेसाब उतरे उसमें जामुनके बीज दियेजाते हैं रक्तातिसारमें जामु-

नके छालकारस दूधमें पीसकर सहत डालकर पीणा मधुप्रमेहपर जामुन अछा फायदा देताहै (८१ जावंत्री) उष्ण तथा दीपन है गरम मसाले खुसवोईमें लीजाती है तथा उलटी अजीर्ण अरुचिपर जावंत्री देते हैं (८२ जीरा) दीपन पाचन ग्राही जरा उष्ण रुचिकारक गर्भाशयकूं सुधारणेवाला युक्तिसें उपयोग करणेसे बहोत फायदेबंद है शरीरके अंदरकी बुखारकी गरमी निकालणेमें जीरा फायदे बंद है जीराकी भूकी फजरमें पेसेभर बूराया मिश्रीया पुराणे गुडमें खाणी केइ यकदिन खाणेसें बुखार या बुखारकी गरमी वदनमेंसें निकल जाती है गायके दूधमें सिजाकर सुकाकर खाणेसेंभी एसाही फायदा करता है जीरा मिश्री चावलोंके धोवणमें पीणेसें औरतोंका प्रदर धोलेका लालका रोग मिटता है डाभकीजड उसमें जीरेकी भूकी मिश्री डाल पीसकर पीणेसें स्त्रियोंका धातु गिरता बंध होताहै (८३ जेठीमधु) मोलेठी शीतल कफघ्न तथा पौष्टिकहै मूंपकजावै कंठ बेठजावै खालीखासी आवै तब जेठीमधकी जड अथवा रवेसूस मूंमें रखणेसें फायदा होताहै चिरमी केजडमें मोलेठीजैसा गुण है उसके एवजीमें चिरमीकी जड वपरातीहै देशी ओपधोंमें कितनेक जीवनीय गणके उत्तम दवायें हैं, उसमें मोलेठीकूं भी गिणी है मोलेठी पुष्टमीहै इसका चूर्ण घी तथा सहतमें चाट ऊपरसें दूध पीणेसें वीर्यकी वृद्धि होती है, औरतोंके प्रदर रोगमें लालपाणी गिरता होय उसमें जेठी मध १ तोला चावलोंके धोवणमें पीस ४ तोला मिश्रीडाल पीणेसें फायदा होताहै छातीमेंसें खून गिरताहोय एसे (उरक्षत रोगमें) जेठी मधुके काढेमें पीपर और भीमसेनी कपूरका चूर्णपीणा खूनकी उलटीमें मोलेठी तथा सुपेद चंनण दूधमें घसकर पिलाणा और स्वरभंग याने साद बैठ गया होय तो मोलेठीका चूर्ण मिश्रीडाल दूधमें पीणा (८४ जहर कुचीला) पौष्टिक वायुहरता तथा पाचक है, इसकूं बहोत सावधानीसें वरतणा कारण जहर है जादामें जादा १ वालसें जादा मात्रा लेणेसें इसका जहरी चिन्ह मालम देता है, इतनाहीनहीं बहोत दिनोंतक इसका सेवन करणेसें भी नुकशान होताहै, लेकिन् युक्तिसें इसका उपयोग होयतो बहोत फायदेबंदहै (कुचीलेकी काफी) कूचीलेकूं गोमूत्रमें उकालकर ऊपरका छिलका दूरकर घीमेंतल काफी करणी ये काफी अजीर्ण पेटचूंक तथा अग्निमांदमें लेणी अछीहैं, जुदी २ वादीका रोग (संधिवात) कमरझलणी अर्द्धांग पक्षाघात अर्दित वगेरेवायु जीर्ण भये पीछे उसमें जहर कुचीला बहोत फायदा करता है इन रोगोंकी शरुआतमें उनोकी तीक्ष्णतामें जहर कुची लादिया जायतो फायदेके बदले नुकशान करता है पीठके वरडा जो हाडहे उसमें रोग [illegible] हाथपांवोंमें धूजणी होजातीहै, और कितनीक वखतलिखते २ हाथ धूजतांहैं, [illegible] कलम नहीं पकडे जाती एसे रोगोंमें कुचीलेका दोयच्यार महीना सेवन [illegible] फायदा होताहै धातूका गिरना तथा मरदमीकी नाताकतीमें बहोत फायदा करता [illegible] गजकेसरीरस) कुचीला अफीम तथा कालीमिरच सम वजन मिलाके रती २

की गोलियों घणाणी गंठिया कमरका भारीदरद अर्द्धांगवायु अर्दितवायु पक्षाघात वगेरे वादीके जीर्णरूपमें मात्रा १ रत्तीकी कुचीलेकूं जलमें घसकर लेप करणेसें सोजेकूं उतारताहै, (८५ टंकणखार) मूत्रल शीतल कफघ्न ऋतुलाणेवाला काष्टीकूं पचा जणाणेवाला खारहर तथा रोपण, टंकण सुहागेकी दो जात हैं पाटिया (तेलिया) दुसरा सुनारोंकें कामवाला दवामें दोनुं काम आतेहैं शुद्धकरणा अथवा अंग्रेजी दवा वेचणेवालोंके पास शुद्ध टंकण (बोराक्ष) मिलता है सोवरतणा पेसाबकी रेती तथा जलणमें ठंडे जलके संग पीणेसें अथवा गरमपाणीमें डाल पिचकारी मारणेसें पेसाब खुलास होकर आराम होताहै, मूंमें चांदी घाव गिरगया होय तो पावजलमें ४ वाल टंकण डाल कुरला करणा बच्चेके मूंके रोगमें टंकणकूं सहतमें मिलाकर अंगलीसें लगादेणा टंकण दांतोंकोंभी सफा करणेवाला है, इसवास्ते दंतमंजनमेंभी डालेजाताहै टंकणके जलसें मसलकर धोणेसें दाद खाज लूखास तथा शिरके वाल उडणा (उंदरी) दाद अछा होताहै (८६ डूंगली) कांदा उष्ण वातहर तथा वीर्यवर्द्धकहै, कांदेका रस सूंघणेसें जागृति तथा शुद्धी आतीहै, और हैजेमें शीतांग होताहै, उसमें कांदेकूं मसलणेसें वदनमें गरमी लाताहै, वेर २ उसकूं पिलाणेसें दस्त उलटी रुकजातीहै घरमें कादोंको टांगदे तो हवाकी शुद्धि होतीहै, हेजामरीके जीवजंतु उस घरमें नहीं आते हैजेमें पिलाणेसें हैजा मिटताहै, शाक अथवा मुरब्बा पणाकर ताकतके वास्ते लोक खातेहैं. उनोंके कामेच्छा वढतीहै, कांदेकारस आदेकारस मिश्री सहत तथा घी हमेस फजरमें पीणेसें गईमरद मी पीछी आतीहै, वीर्यकी वृद्धि होतीहै कांदेका रस नाकसें पीणेसें वादीके असाध्य रोगमेंमी फायदा होता है रसमें एक रत्ती अफीम मिलाकर पीणेसें अतिसारका दस्त बंध होताहै अम्लपित्त जिसमें गले और छातीमें जलण होतीहै उसमें सुपेद कांदेका रस मीठा दही मिश्रीमिलाकर पीणा वद तथा दुसरीगांठ कंठवेलपर कांदे सिजाकर उसमें घी हलदी डालकर फेर गरमकर गरमागरम पोटिस बांधणी येवडी ऊमदा पोटिसहै, (८७ डीकामाली) कृमिघ्न तथा वातहरहै बच्चोके पेटकी चूंक गोटा कृमि उलटी वगेरे रोगमें दियेजातीहै, पेटपर सूकीमी मसले जातीहै, इंद्रजव काटीजीरीकी माफक समझवार औरतें निडरपणे ऊपर लिखे मुजब घरमें रखकर उपयोग किया करती है, (८८ तुकमरियां) शीतल है, तुकमवा लिंगाका लुआम तुकमरीआं १ रुपेभर मिश्रीका जल २ रुपेभर मिलाणेसें चिकणा लुआब होताहै वो पीणेसें पेसाबकी जलण गरम वायु लू तथा पेटकीदादमें फायदा पंदहै (८९ तज) उष्ण दीपन वातहर तज खाणेसें अथवा उसकी उकाली पीणेसें उलटी तथा मूंकी मोलग्लानी मिटतीहै शरदीसें शिरचढा होयतो तजकूं घस गरमकर लेप करणा शूलके संग मरोडेमें ४ वाल धीटका गिरतज १२ वाल ओर ४ वालगुड दहीमें मिलाकर पीणेमें फायदा होताहै (९० तमाखू) कफकूं शमाणेवाली रगोंकों ढीली करणेवाली तमाखु मादकहै, आदालेनेमें

नसा चढता है सूंघणा चावणा और पीणा एसें तीनकाममें लोक लेते हैं लेकिन् थोडे दिन लियाके झलजातीहै दांतकारोग दम श्लेषम वगेरेमें दवातरीके तीनोंतरे उपयोग करणेसें कुछ एक फायदा देतीहै लेकिन् शोखसें जो वापरते हैं उसमें पडानुकशान है खून बराबर फिरता नहीं फेफसेकूं इजा पोहचतीहै, खालीउधरस पैदा होतीहै शरीर फीका और पीला पडताहै मगज तथा आंखकूं इजा पहुंचतीहै जादा वरतावेसें अदमी अंधा होजाताहै मधुमखी भमरी वगेरेके डंकपर तमाखू लेपकरणी सापके जहरमें उलटी कराणेकूं नव २ टांक पाणीमें मिलाकर दोचार वखत पिलाणी जूओंका इलाजभी ये पाणीहै फेर आरीठेके पाणीसे सिर धोडालणा (९१ तांदलजा) चंदलिया चोलाई सारक शोधक शीतल पित्तशामक खुराकमें उत्तम गुणकारी शागदवाका काम चंदलिया करताहै, ये तीनों दोषमें अछा है, जादातर पित्त शमनकरणेवालाहै इसवास्ते इसकूं जलमें बाफ-कर उसका जल पीणेसें कलेजेकी गांठ सोजा यकृत् तापतिली नरम पडतीहै.इसके रसमें पोटासका विशेष भाग होणेसें ये जहरका नाश करता है सापवींछु सोमल तथा गरमीके रोगकी जहरी असरकूं निकाल डालता है बाफकरके पेटपर तथा गांठपर बांधणेसें पेट नरम पडता है, पारा वगेरेका जहर वदनमें फूट गया होय रहा होय तो एकाध अठ-वाडियेतक पाव २ चंदलियेका रस घीमें पीणा चंदलियेकी जडपीस उसमें रसोत सहत चोगुणा चावलोका धोवणडाल थोडे दिन पीणेसें औरतोंका प्रदररोग मिटताहै, (९२ त्रि-फला) हरड वहेडा आंवला ये तीन फलसामिल मिलताहै तब त्रिफला कहलाताहै गुणमें ठंढा शोधक पित्तशामक तथा दाह शामक हैं तजागरमी खूनकी गरमीकूं वो फायदावंधहै (त्रिफलाचूर्ण) हरडे १ भाग वहेडा २ भाग आंवला ३ भाग इसका महीन चूर्ण शिरकी गरमी वदनका तपणा पेसाबकी जलण गरम वाय प्रदर चिणख कामला आंखकी गरमी झांखा झमर शीलस वगेरे रोगोंमें त्रिफलेका चूर्ण सकरमें अगर जलमें लेणेसें अछा फायदा देताहै मात्रा अढाइ मासेसें पांचमासा (त्रिफलाहिम) हिमके कुरले करणेसे मूंकी चांदी जखम गरमी मिटतीहै, आंखोपर छांटणेसें जलण शिरकी गरमी तेसें आंखोंके सामनें धूंभेका गोटा दीखेसो झमर वगेरे सुधरता है आंखका तेज वढजाता है (त्रिफलाकी भस्मी) जलाकर राखकर थोडा कथा मिलाकर मेगरमीकी टांकीपर भरणेसें जलदी आरा महोतीहै, (९३ तुलसी) कफघ्न तथा उष्ण है तुलसीके पत्ते वायूकूं दूरकर वदनमें गरमी लाती है, इसके पत्ते हिचकी शूल वगेरेमें अनुपान तरीके काम आता है पान तथा आदेके टुकडेके संग दांतके नीचे चावणेसें दांतोकी शूल मिटतीहै (तुलशीका स्वरस) तुलसीके जलमें पीसकर रसनिकाल २ रुपियाभर उसमें कालीमिरच अढाई मासेडा ठंडके एखारमें आणेके २ घंटे पहले तीनचार वाली देणेसें विषमज्वर शीतज्वर है तुलसीके रसमें इलायची चूर्ण डालकर पीणेसें तीनों दोषोंकी उलटी बंध

होती है, चचेकी उलटीमें रसमें सहत मिलाकर देणा. (९४ तैल) तिल) चिकणा स्पर्शमें शीतल पचनेकी वखत तीखा और पित्तल व्रणशोधक मूत्रल कांतिकारक तिलोंकी सूकी लकडीकूं जलाकर खार निकालते हैं, वो खार मूत्रल तथा पेसाबकी कंकरी तथा पथरीकूं निकाल डालता है, ये खार सहतमें मिलाकर चाटकर ऊपरसें गऊका दूध पिये तो अटकाभया पेसाब खुल जाता है, जलण मिटती है, अंगारसे जले भयेपर तेल और कली चूनेका नितरा भया जलकूं मथफुलम्‍ बणाकर लगाणेसें पट्टी मारणेसें और ऊपरसें तेल सींचते जाणा जलणेका जखम मिटता है, तेलमें सींधानिमक मिलाकर कुरला करणेसें दांतका दरद मिटकर दांत मजबूत होता है, तिलोंकों दूधमें पीस अथवा तिल और वायविडंगको जलमें पीस शिरपर लेप करणेसें आधासीसी मिटती है, कुत्तेके जहरऊपर तेल खल और जरा आकका दूध अथवा जडकी छालका चूर्ण अथवा जडका चूर्ण गुड सबके समवजन मिलाके पीणेसें जहर उतरता है, धतूरेके जहरपर तिलका तेल गरम पाणी मिलाकर पिलाणा, हरसके मस्सेमेंसे पडता खून तिलोंकों मखणमें पीस चाटणेसें मिटता है, गर्भिणी तथा सूतिकाके खूनके गिरणेमें तिल जव तथा सक्कर सुपेद तीनोंका चूर्ण सहतमें चाटणा, शुक्राश्मरी अर्थात् गिरते भये वीर्यकूं रोकणेसें वीर्यकी पथरी बंध जाती है, उसमें तिलोंके लकडोंकी राख सहतमें चटाणी औरतोंका ऋतुबंध होताहै, और पेडूमें (रक्तगुल्म) खूनका गोला चढता है, उसमें तिलका काढाकर उसके अंदर सूंठ मिरच पीपर हींग और भारंगमूल इन सबोंका चूर्ण अढाई मासा या पांच मासा डालकर पीणेमें ऋतु आता है, और गोला मिट जाता है, रक्तातिसार, खूनके दस्त लगणेसें कालेतिल १ भाग बूरा या मिश्री दो भाग बकरीका दूध ४ भाग सामिल करके पीणा, नारूपर तिलकी खल छाछमें पीसकर बांधणा (९५ थोर) उष्ण शोधक तथा स्नायुनसोंकों ढीला करता है, थोरकी पहोत जाति है, डंडेवाली कंटेवाली पंजेवाली त्रिधारी चोधारी वगेरे दवाके काममें जादातर डंडेवाली थोर कांमदेती है, और वो खुरसाणीके नाममें प्रसिद्ध है, डंडोंको बालके रस निकाले जाता है, इसकी जलाई भई राख कांम देती है, इस रसकी दूसरी दवाओंकों भावना दीजाती है, सारकूं अरडूसेके रसमें देणेसें कफ नरमपड बाहर निकल जाता है, जलंदर वगेरे पेटके रोग-वास्ते जो जो बादी हरता दवाइयें है, उसकूं थोरके रसकी भावना देकर देणेमें बहोत फायदा करतीहै, इसका दूध है, सोजहरहै दूधकूं दरदकी जगे लगानेमें फफोला उठता है, सांधोंकी बादी तथा गरमी सुजाक दरदवालेकों केइ दिनोंबाद गंठियावायु होजाती है, उसपर तीन २ चार २ दिनके फासलेमें तीनचार वखत इसका दूध लगाणेसें फफोला उठता है, और दरद मिट जाता है. सूकी खुजलीपर दूध लगानेमें एक वेरतो पक जाता है, लेकिन् पीछे मिट जाता है, कुछ[illegible]में बांस मस्ताईपर

नसा चढता है सूंघणा चावणा और पीणा एसें तीनकाममें लोक लेते हैं लेकिन् थोडे दिन लियाके इलजातीहै दांतकारोग दम श्लेषम वगेरेमें दवातरीके तीनोंतरे उपयोग करणेसें कुछ एक फायदा देतीहै लेकिन् शोखसें जो वापरते हैं उसमें धडानुकशान है खून बराबर फिरता नहीं फेफसेकूं इजा पोहचतीहै, खालीउधरस पैदा होतीहै शरीर फीका और पीला पडताहै मगज तथा आंखकूं इजा पहुंचतीहै जादा वरतावेसें अदमी अंधा होजाताहै मधुमखी भमरी वगैरेके डंकपर तमाखू लेपकरणी सापके जहरमें उलटी कराणेकूं नव २ टांक पाणीमें मिलाकर दोचार वखत पिलाणी जूओंका इलाजभी ये पाणीहै फेर आरीठेके पाणीसे सिर धोडालणा (९१ तांदलजा) चंदलिया चोलाई सारक शोधक शीतल पित्तशामक खुराकमें उत्तम गुणकारी शागदवाका काम चंदलिया करताहै, ये तीनों दोषमें अछा है, जादातर पित्त शमनकरणेवालाहै इसवास्ते इसकूं जलमें वाफ- कर उसका जल पीणेसें कलेजेकी गांठ सोजा यकृत् तापतिल्ली नरम पडतीहै.इसके रसमें पोटासका विशेप भाग होणेसें ये जहरका नाश करता है सापवींछु सोमल तथा गरमीके रोगकी जहरी असरकूं निकाल डालता है वाफकरके पेटपर तथा गांठपर बांधणेसें पेट नरम पडता है, पारा वगैरेका जहर वदनमें फूट गया होय रहा होय तो एकाध अठ- वाडियेतक पाव २ चंदलियेका रस घीमें पीणा चंदलियेकी जडपीस उसमें रसोत सहत चोगुणा चावलोका धोवणडाल थोडे दिन पीणेसें औरतोंका प्रदररोग मिटताहै, (९२ त्रि- फला) हरड बहेडा आंवला ये तीन फलसामिल मिलताहै तब त्रिफला कहलाताहै गुणमें ठंढा शोधक पित्तशामक तथा दाह शामक हैं तजागरमी खूनकी गरमीकूं वो फायदावंधहै (त्रिफलाचूर्ण) हरडे १ भाग बहेडा २ भाग आंवला ३ भाग इसका महीन चूर्ण शिरकी गरमी वदनका तपणा पेसावकी जलण गरम वाय प्रदर चिणख कामला आंखकी गरमी झांखा झमर शीलस वगेरे रोगोंमें त्रिफलेका चूर्ण सक्करमें अगर जलमें लेणेसें अछा फायदा देताहै मात्रा अढाइ मासेसें पांचमासा (त्रिफलाहिम) हिमके कुरले करणेसे मूंकी चांदी जखम गरमी मिटतीहै, आंखोपर छांटणेसें जलण शिरकी गरमी तेसें आंखोंके सामनें धूंभेका गोटा दीखेसो झमर वगेरे सुधरता है आंखका तेज बढजाता है (त्रिफलाकी भस्मी) जलाकर राखकर थोडा कथा मिलाकर येगरमीकी टांकीपर भरणेसें जलदी आरा महोतीहै, (९३ तुलसी) कफघ्न तथा उष्ण है तुलसीके पत्ते वायूकूं दूरकर वदनमें गरमी लाती है, इसके पत्ते हिचकी शूल वगेरेमें अनुपान तरीके काम आता है पान तथा आदेके टुकडेके संग दांतके नीचे चावणेसें दांतोकी शूल मिटतीहै (तुलशीका स्वरस) तुलसीके पानोकों जलमें पीसकर रसनिकाल २ रुपियाभर उसमें कालीमिरच अढाई मासेडा लकर ठंढके बुखारमें आणेके २ घंटे पहले तीनचार पाली देणेसें विषमज्वर शीतज्वर मिटता है तुलछीके रसमें इलायची चूर्ण डालकर पीणेसें तीनों दोषोंकी उलटी बंध

होती है, बचेकी उलटीमें रसमें सहत मिलाकर देणा. (९४ तैल) तिल) चिकणा स्पर्शमें शीतल पचनेकी वखत तीखा और पित्तल व्रणशोधक मूत्रल कांतिकारक तिलोंकी सूकी लकडीकूं जलाकर खार निकालते हैं, वो खार मूत्रल तथा पेसावकी कंकरी तथा पथरीकूं निकाल डालता है, ये खार सहतमें मिलाकर चाटकर ऊपरसें गऊका दूध पिये तो अटकाभया पेसाब खुल जाता है, जलण मिटती है, अंगारसे जले भयेपर तेल और कली चूनेका नितरा भया जलकूं मथफुलर्मा बणाकर लगाणेसें पट्टी मारणेसें और ऊपरसें तेल सींचते जाणा जलणेका जखम मिटता है, तेलमें सींधानिमक मिलाकर कुरला करणेसें दांतका दरद मिटकर दांत मजबूत होता है, तिलोंकों दूधमें पीस अथवा तिल और वायविडंगको जलमें पीस शिरपर लेप करणेसें आधासीसी मिटती है, कुत्तेके जहरऊपर तेल खल और जरा आकका दूध अथवा जडकी छालका चूर्ण अथवा जडका चूर्ण गुड सबके समवजन मिलाके पीणेसें जहर उतरता है, धतूरेके जहरपर तिलका तेल गरम पाणी मिलाकर पिलाणा, हरसके मस्सेमेंसे पडता खून तिलोंकों मखणमें पीस चाटणेसें मिटता है, गर्भिणी तथा सूतिकाके खूनके गिरणेमें तिल जव तथा सक्कर सुपेद तीनोंका चूर्ण सहतमें चाटणा, शुक्राश्मरी अर्थात् गिरते भये वीर्यकूं रोकणेसें वीर्यकी पथरी बंध जाती है, उसमें तिलोंके लकडोंकी राख सहतमें चटाणी औरतोंका ऋतुबंध होताहै, और पेडूमें (रक्तगुल्म) खूनका गोला चढता है, उसमें तिलका काढाकर उसके अंदर सूंठ मिरच पीपर हींग और भारंगमूल इन सबोंका चूर्ण अढाई मासा या पांच मासा डालकर पीणेसें ऋतु आता है, और गोला मिट जाता है, रक्तातिसार, खूनके दस्त लगणेसें कालेतिल १ भाग बूरा या मिश्री दो भाग बकरीका दूध ४ भाग सामिल करके पीणा, नारूपर तिलकी खल छाछमें पीसकर बांधणा (९५ थोर) उष्ण शोधक तथा स्नायुनसोंकों ढीला करता है, थोरकी बहोत जाति है, डंडेवाली कंटेवाली पंजेवाली त्रिधारी चोधारी वगेरे दवाके काममें जादातर डंडेवाली थोर कांमदेती है, और वो खुरसाणीके नामसें प्रसिद्ध है, डंडोंको बाफके रस निकाले जाता है, इसकी जलाई भई राख कांम देती है, इस रसकी दूसरी दवाओंकों भावना दीजाती है, बालकूं अरडूसेके रसमें देणेसें कफ नरमपड बाहर निकल जाता है, जलदर वगेरे पेटके रोग-वास्ते जो जो बादी हरता दवाइयें है. उसकूं थोरके रसकी भावना देकर देणेमें बहोत फायदा करतीहै, इसका दूध है, सोजहरहै दूधकूं दरदकी जगे लगानेमें फफोला उठता है, सांधोंकी बादी तथा गरमी सुजाक दरदवालेकों केइ दिनोंबाद गंठियाबायु होजाती है. उसपर तीन २ चार २ दिनके फासलेसें तीनचार वखत इसका दूध लगा-णेसें फफोला उठता है, और दरद मिट जाता है, सूकी खुज[illegible] लगानेमें एक बेरतो पक जाता है, लेकिन [illegible] है मस्सेंडार

दूध थोहरका लगाणा नहीं, जो दूध लगाणेसें तकलीप होयतो घी लगाणा दूधकूं सुकाकर गूंद जेसा करकेरखे तो उन मान मुजब मात्रा देणी (९६ दही) दहीके गुण दोप तीसरे प्रकाशमें लिखा है, दवामें दही इस मुजब काम देता है, (१) सूर्यावर्त्त- दिन चढणेके संग शिर दुखणेलगे सो (सूर्यावर्त्त) शिरके रोगमें सूर्य ऊगणेके पहली दही मीठा और भात खाणा (२) तृष्णा- (प्यास) श्रीखंड वणाकर खिलाणा अथवा मीठादही १२८ तोला चूरा ६४ तोला घी ५ तोला सहत ३ तोला काली मिरचका चूर्ण २ तोला सूंठका चूर्ण २ तोला इलायची २ तोला सब मिलाकर काचके या कलीके वासणमें रखकर थोडा २ खाणा (३) अजीर्ण) दही अथवा बराबर जल मिली भई छाछ पीणी (४) हरस) चित्रकके जडके महीन चूर्णकूं पाणीमें पीस दही जमाणेके पात्रमें अंदर लेप करणा उसमें दही जमाकर अथवा छाछ करके पीणी अथवा भोजनमें लेणी (९७ दशमूल-) उष्ण वातहर त्रिदोपहर दशवनस्पतीकी जडसो दसमूल इनोमें बहुत मतभेदहै तोभी सुलभता लिखतेहै. जंगलीगांजा वहुफलीकी जड पसरकंटाली खडीकंटाली तथा गोखरूकी जड यहतो लघुपंचमूल और बीलकी जड अरणीकी जड अरडूसेकी जड कांकचकी मूल खाखरा पलासकी जड (ये वृहत्पंचमूल) जंगली गांजेके बदले कोइ समेरवा और कोई कासंदरीकी जड लेते हैं, और वहुफलीकी जगे पीलूकी जडभी लेते है वायु तथा कफका सन्निपातज्वर सूतिकावाली स्त्रीका सर्वरोग ऊरुस्तंभ शूल दम खासी मींट पसीना शीतांग वगेरेमें अछा फायदा देताहै (९८ दूध) दूधके गुण तीसरे प्रकाशमें लिखाहै इहां दवा मुजब उपयोग लिखतेहैं गऊके दूधका गुण सर्वोपरी है इहां उसकाही ग्रहण हैं (१) आधाशीशी-) दूधकी मलाई अथवा विदाम और बूरा डालकर दूधकी खीर खाणी (२) (धतूरेकाजहर-) सहज साधारण धतूरेका जहर दूध मिश्रीसें दूर होता है (३) सोमल-) नीलाथोथा-) वछनाग-) इन जहरोंपर उलटी होय जहांतक दूध पिलाणा कै बंद होय बादनहीं पिलाणा मिश्री डालकर पिलाणा लेकिन् जहर जादा खालिया होय तो इस साधारण सादे इलाजपर विश्वास रखकर निश्चित नहीं बैठे रहणा दुसरा बडा इलाज करणा (४) गंधकका जहर, दूधमें घी डालकर पीणा (५) जीर्णज्वर-) दूधमें घी सूंठ खारक कालीदाख डालकर पीणेसें पुराणाज्वर मिटताहै (६) मूत्रकृछ्र-) दूधमें गुडडालके पीणा (७) रिदयरोग-) याने छातीके रोगमें-दूधमें भिलावेके तेलकी १० बूंद डालकर पीणा (८) रक्तपित्त-) दूधमें पांचगुणा जल डालके पाणी जलेवाद ठंढाकरकेपीणा (९) हाडोंका टूटना-) दूधमें बूरा डालकर गरमकर पीछे उसमें घी तथा लाखका महीन चूर्णडालकर ठंढाकरके पीणा (१०) श्लेपम-) शरदी, आपादूप आधाजल अढाई मासे या पांच मासे बूराडाल आधे रुपेभर सूंठकी भूकी चार पांच विदाम दोयचार केशरकी पांखडिया डाल पाणीजले तहांतक पीछे सूंठके टुकडे

निकाल दूधपीजाणा विदाम चावजाणा इसतरेका दूध तयार कर रातके सोंणेके वखत पीणा फेर जलपीणा नहीं दूधमें मिश्री और काली मिरचका भूका डालकर पीणेसे भी जुखाम मिटता है (११) महनत काथकेला- महनत करके थकाभया अदमी गरम किया भया दूध पिये तो थकेला उतर जाताहै और हुसियारी आतीहै, (१२) पुष्टि-(वीर्यवृद्धि-) गरम करेभये दूधमें घी तथा बूरामिलाकर पीणा इसके जेसा धातुपुष्टीका कोइ दुसरा इलाज नहीं (१३) इंद्रीजुलाब-) दूध तथा जल संगमे मिलाकर पीणेसें पेसाब बहोत आता है, (१४) बचेके (दूधकी उलटी-) चूंगणेसें या दूधपिलाणेसें जो बचाके करके दूध निकाल डालता है उसकूं दूधके संग चूनेका नितरा भयाजल डालकर पिलाणेसें दूधपेटमें रहजाता है (९९ देवदारू-) खेदल कफघ्न तथा पेसाब लाणेवाला है (देवदार्वादिक्काथ-) देवदारू वच पींपर सुंठ कायफल मोथ चिरायता कुटकी धाणा जोहरडे गजपींपर गोखरू कोंचबीज धमासा भोंरीगणी अतीस गिलोय काकडासींगी और स्याहजीरा सब चीजोंकों समवजन लेकर उसमेंसें २। रुपिया भरसे ३ रुपयेभर तककी पुडी बणाकर सोलेगुणे जलमें काढा करणा ये काढा प्यास औरतोंके सूआरोग-में बहोत फायदा करताहै, सूआरोगमें बुखार सोजा दस्त शूल हिचकी वगेरे डरावणे रोगोंमें फायदा करता है थोडादिन देणेसे जापेका रोग मिटजाताहै (१०० धतूरा-) नशोंकों ढीला करणेवाला तथा पीडाशामक धतूरा जहर है, इसवास्ते विद्वान वैद्यकी या डाकदरकी सला विगर दवातरीके भी कभी नहीं वरतणा इसवास्ते इहां संक्षेप वर्णन कराहै शीतज्वरवालेकूं १० बूंद चढणेके डेढ कलाक पहले पत्तोंके रसकी आनेभर गऊके दहीमें देणेसें शीतज्वर मिटता है धतूरेके पत्तोंकी तथा डांखलियोंकी बीडी दमके जोरकों शांतकर देतीहै जो कभी इससें दमका रोग नहीं मिटे तोभी रोगीका दरद तथा घबराट कमहोकर वायु और कफ दबजाताहै तबदमभी बैठजाताहै लेकिन् वो बीडीपीती वखत बहोत संभाल रखणा चाहिये क्योंके शक्ति उपरांत पीणेसें तोफान करजाताहै, धतूरेके पत्तोंका लेप स्तनपकणा तथा स्तनोंमें दूध चढजाता है उसके सोजेकूं मिटाता है (१०१ धाणा-) दीपन तथा पित्तशामक है (धान्यादिहिम-धाणा तथा दाखका हिम येहिम आधाशीशी तथा गरमीसें शिर चढताहै, उसकूं मिटाता है धाणाकूं रातकूं मिश्रीके जलमें भिगाके रखणेसें फजर घोट पीणेसें हाथ पैरोंकी जलण मिटतीहै, (१०२ द्राख-) मुनक्का दीपन शीतल पित्तशामक तथा सारक याने दस्तावर है दाखोंकी बहोत जातिहै लेकिन् दवामें और बेमारकूं खिलाणेमें काली मुनक्का अछीहै (द्राक्षासव) इसकी दवा बणतीहै सो क्षयजेसें बेमारकूं सतेज रखकर शक्ति देती है दवा मुजब दाग इकट्ठी कम चलती है (द्राक्षादिहिम-) मुनक्का पित्तपापडा तथाधाणा इस हिममें पित्तका बुखार जलदी पकताहै सादा गरमीका तप इसहिममें बुखारकूं कमकर देताहै शिरकी और आंख-

की गरमी शांत होतीहै उनालेकी सखत गरमी तथालूमें दाख वरियाळीका हिम सरबत प्यास तथा बुखारकूं कमकर देती है दाख हरड बहेडा आंवला पींपर मिरच तथा खजूर ये सब सम वजन लेकर सहत घी मिलाकर गोली बणाणी सूकी खासी तथा अवाज बैठे जिसमें फायदा करती है (१०३ नगड–) संभालू–) वादीहर तथा सोजनहर है सूजन तथा गांठपर संभालूके पत्तोंकों वाफकर बांधतेहै अछा फायदा करता है, (१०४ नवसादर–) पित्तकूं श्रवाणेवाला ऋतूलाणेवाला शोधक तथा तीक्ष्णहै दुसरी दवाइयोंके संग खाणेमें दियेजाताहे शरीरके कोइभी भागमें खूनका जमाव होकर सोजन होगया होय तो नवसादरके पाणीका वस्त्र भिगाकर रखणेसें सूजन पकता बंधहोकर खूनविखर जाता है सुआवडपीछे तुरत औरतोंके स्तनमें दूध पैदा होते कितनीक वखत उनोंमें सोजा तथा दरद होताहै जो उस स्तनका जलदी इलाज नहीं किया जायतो स्तन पककर फूट जाताहै, और कठण गांठे बंध जातीहै नव सादरका भीगा कपडा फायदा करताहै अंडवृद्धिरोगमें आंतरे उतरते है उसमें जो आंडोपर नवसादरका भीगा कपडा धरणेसें आंडोंके सुकडतेही आंतरे उंचे चढजातेहैं और सोजा नरम पडताहै और उलटी वगैरे दुसरेभी चिन्ह होते होय सो बंध होजाताहे (१०५ नसोत–) दस्तावर जुलावमें अम्लपित्तरोगमें काम देतीहै निसोत ॥ भर आंवले ॥ रुपेभर पावजलमें उकाल आना जल रखके ठंढाकर छाण मिश्री सहत उनमान मुजब डालकर पीणेसें वहोत दिनोंका आम्लपित्त महीनाभर पीणेसें मिटजाता है (पथ्य) दूध भातमिश्री (त्रिवृतादि चूर्ण दस्तावर–) निशोत ४ भाग सूंठ १ भाग सींधा ॥ भाग मात्रा अढाईमासेसें ५ मासां (१०६ नागकेशर–) शीतल ग्राही दीपन नागकेशरका चूर्ण वूरा तथा मखणमिलाकर खाणेसें मस्सेमेंसें गिरता खून बंध होजाताहै, मात्रा २ आनीसें चार आनीभर औरतोके पाणी जेसा प्रदर वहताहै उसमें नागकेशर छाछमें पीस तीन दिनपीणा छाछभात भोजन करणा रक्तप्रदरपर चूर्ण घीमें देणा (१०७ नालियर–) शीतल तथा पेसाब लाणेवाला नालियेरका पाणी ठंढा तथा मूत्रल है, इसवास्ते पेसावकी जलण मूत्रकृच्छ्र तथा प्यासपर देणेमें आता है टोपसीकूं जलाकर लगाणेसें अंगारसें जलेवाद जो जखम होजाता हें सो रुक जाताहै टोपसीकूं याखोपरा जलाकर लगाणेसें अंगारसें जले बाद जो जखम होजाताहै, सोरुकजाता है, टोपसीके भूकेका धूआंपीणेसें हिचकी बैठजातीहै इसकी जोटी जलाईराख रेसमकी राख मोरके चंदेकी राख जीराकोरेतवेपर भूनाभया पींपर लोंग तवेपर उनारा भया सहतमें या अनारके सरवतमेंके उलटी होते ही दोतीनवखत चटादेवेतो उलटी हिचकी बंध होजाती है (शूलहर चूर्ण–) नालेरमें छेदकरके अंदर सेंचलनिमक भरणा पीछे छेदकूं बंधकरके [illegible] फेर छाणोके जगरेमें सिलगा देणा पीछे इसका चूर्ण पीपरके चूर्णके [illegible] शूल मिटती है (१०८ पारा) शोधक तथा पौष्टिक शास्त्रोंमें पारेका अनंत

गुण लिखा है सो सच है जो पूरे संस्कारसें पारेका शोधन मूर्छित कर देणेमें आवेतो अद-भुत गुण दिखाताहै लेकिन् पारेके शोधनवास्ते तथा उससें बडे दरजेका रस बणाणे-वास्ते जादा अनुभवकी जरूरी है पारेगंधकसें हजारो रस बणते हैं जिसमें चंद्रोदय मकर-ध्वज रससिंदूर सुवर्णपर्पटी पंचामृतपर्पटी चिंतामणिरस लोकनाथरस वन्हिरस त्रिविक्रम आदि मुख्य है पाराके बनावटकी चीजों अनुभवी वैद्योंसिवाय दुसरे पासलेणेमें जोखम है, भिलावा शुद्ध १ तोला पाराशुद्ध १ तोला अजमोद १ तोला अजवाण १ तोला १ खुरासाणी अजवाण दूधमें सुद्धकरी १ तोला जोड अजवाण १ तोला तिल १ तोला सबकूं ४ पहर खूब खरलकर झाडबेर २ जितनी गोली करणी गोली १ दहीकी मलाईमें लपेटप्रभात अधर निगलजाणी १सांझकूं(पथ्य)अलूणी रोटी गहूंकी और घी दहीकी मलाई या मीठा दही दिन ७ दवालेणी १४ दिनपथ्य इससें सुजाक गरमी गरमीकी गंठिया वदन फूटा दिन ३० लेणेसें भगंदर नासूर कीडीनगरा प्रमुख सब मिटजाताहै, मरदमी आतीहै, भूखकांतिकामेछा बढतीहै केइयक लोककेरीके अचार तेलके वेंगण बडों-में भीये पारे हींगलू रसकपूरकी गोली इस रोगपर देतेहैं अशुद्ध पारा वगैरेकी दवा मूर्ख अनाडीयोंसें बचके रहणा पारामलममें गिरताहै शुद्ध होयतो अछा नहीं तो जादा नुक-शान सोवेर वस्त्र छाणेवाला नहीं करता(पारेकी कजली) गंधकपारा सम वजन लेकर४पहर घोटणेसें खरलमें स्याह कजली होतीहै गरमीकी चांदी इसके लगाणेसें मिटजातीहै (पारेका मलम--) पारा १ भाग सादा मलम तीनभाग मिलाणा ये बदवगेरे उठती गांठोंपर लगाणेसें बैठजातीहै (१०९ पटोल) ज्वरघ्न शोधक तथा रेचकहै पटोलकूं परबलभी कहते हैं (पटोलादिक्वाथ--) संतत शतत आंतरेवाला विषम ज्वरमें फायदा करता है, पटोल इंद्रजव देवदारू हरडे बहेडा आंवला मुनका नागरमोथा मोलेठी गिलोय अरडूसे-के पत्ते इन इग्यारे चीजोंका काढा करणा पीलियेमें पटोलका जुलाब फायदा करता है पटोलकी एवजीमें कितनेक कडवी तोरी लेते हैं. पटोल अथवा तोरीके रसकी बूंद नाकमें डालणेसें पाणी झरकर पीलियेका जहर निकल जाताहै, गरमी उपदंश जो बदनमें फूटकर बाहिर निकलतीहै उसमें पटोलाष्टक क्वाथ अछा फायदा करता है, पटोल हरड बहेडा आंवला नीबकी छाल चिरायता खैरकी छाल और बीव्ला जिसकूं कितनेक लोक मि-टामा कहतेहैं, पेटमें पीणा इन आठोंका काढा करणा (११० पीपर--) उष्ण दीपन पाचन तथा बातहर है एकतो लींडीके सिकलवाली लींडी पीपर कहलाती है बडीसो मोटा पीपर कहलाती गजपीपलकी बोरही सिकटकी लकडी आतीहै, जहां पीपर लेणा लिखा होवे उहां लींडी पीपर लेणी पीपर बहोत दवाओंमें गिरती है इकेली पीपरभी युक्तिसे ताकतकूं पहचानके देणेमें आवे तो बहोत रोगोंकों मिटाती है पीपरका चूर्ण पुराणे गोलेके रोगमें अरुचि हृदयका रोग श्वास कास कामला मंदाग्नि जीर्णज्वर वगेरेमे फायदा देती

है सहतमें खाणेसें मेद कफ श्वास ज्वरमें फायदा करतीहै, छाछमें पींपर तथा सहत डालकर पीणेसें पेसावकी रेती और पथरीमें फायदा करती है पेटके रोगमें गोमूत्रमें कितनेक दिन भिगाकर रखी भई पींपर फायदा देती है वर्द्धमानपीपलीका प्रयोग बहोत अछा है, गायका दूध तो ४ पाणी १६ तोला और २ या तीन पींपर पाणी जलेजहांतक उकालकर पीछे पींपर चावकर दूध पीजाणा दुसरी तरे इकेले दूधमें पींपर एकेक हमेस बढती और पीछे ऊतरती एसें २० दिनतक आधा दूध रहे तहांतक ऊकालणा वो दूधपींपर चावके पीजाणा इस वर्द्धमान पीपलके प्रयोगसें पेटके रोग मंदाग्नि जीर्णज्वर उदरस पांडू गुल्म हरस और वायुके दुसरेभी रोग चले जाते हैं एकसेर गऊका दूध मंद आंचसें उकालकर आधा जले तब उतार ठंढा भयां पीछे उसमें आधा तोला बूरा आधा तोला घी तथा इतनाही सहत और ॥ रुप भर १ भरतकपीपर डालकरके पीणा रिदयका रोग खास तथा जीर्णज्वरमें अछा फायदा देता है, सहत घी दूध पींपर और मिश्री पांचोकों मिलाकर पीणेसे दम खासी क्षय विषमज्वर तथा रिदयका रोग मिटता है इसकूं पंचसार कहते हैं (पींपर पाक–) ३२ तोला दूधमें ·३।४ रुपेभर पींपरका चूर्ण उकालकर मावा (खोवा) करणा उसमें २ रुपेभर घी डालकर मधुरी आंचसे घोटकर कीटी बणाकर दाणा पाडणा पीछे आठ रुपेभर बूरेकी चासणी करके कीटीडाल देणी तज तमालपत्र नागकेशर तथा इलायची हरेक डेढ २ रुपेभरका चूर्ण डालकर एकेक तोलेकी गोली बांधणी ताकतमुजब एक दो गोली खाणी उससें धातुगत जीर्णज्वर खासी दम पांडू धातुक्षय और मंदाग्नि ऊपर अछा फायदा करतीहै, एसे रोगवालेकूं ठंढकालेमें पींपरका पाक बणाकर खाणा (१११ पीपला मूल–) उष्ण दीपन पाचन तथा वातहर है पींपलामूल और पींपर ये दोनूं एकही दरखतके हैं जडतो पींपरामूलहै फलपींपर है, लकडियां चव्य है गुण मिलते भये है लेकिन् पींपर जादागरम और सखत है, मंदाग्नि अजीर्ण जीर्णज्वर पेटकीवायु शरदी दम शूल निर्बलता इन सबोमें पींपलामूलकी गांठों काम देतीहै सहतमें गुडमें इसकी रावडी बणाकर लीजाती है पींपलामूल बहोतसे पाकोंमें तथा दवाइयोंमें गिरता है (११२ पीपल वृक्ष–)व्रणकूं भरणेवाला इसवास्ते पंचवल्कलके काढेमें गिरताहै, उसके छालकी सुपेद भस्मी होतीहै वो भस्मी दोदो वाल सहतके संग देणी पित्ताजीर्णमें अर्थात् अजीर्णहोकर छाती तथा गलेमें झलझल जलण रहा करतीहै, जिसकूं गुजरातवाले गलधरी कहते हैं, वो मिटती है पींपर आंवली तथा आंबेकी छालकी राखमें भी यहीगुण है पीपलकी राखमें सोमल हरताल शुद्धकर हंडीके आधी राख नीचे आधी ऊपरदेके बीचमें रखकर मूं बंधकर बारेपहर मंद आंच दीपसिखासीदे तो [illegible] शुद्ध भस्मी होतीहै, अंगारपर धरणेसें धूआं देतो अशुद्ध जाणनी पीपलकी लाख जखम पडीभई खासीमें सहत घी मिलाकर चटावे तो बहोत फायदा करती है

(११३ पीलूडी– जाल मारवाडमें कहते हैं, सोजाकूं दूर करे पीलूडीका रस सोजेपर लेप किये जाता है, पत्तोंकी लुगदी वदपर बांधणेसें फायदा होताहै (११४ पपइया–) गरम है एरंडककडीका दूध कृमिदूर करणेवाली है पके पपइयेकूं चीर उसमें जीरा तथा चूरा सांझकूं भरके रख फजरमें खाणेसें पित्तका तथा खूनके हरसरोगमें बहोत फायदा करती है, (११५ फिटकडी–) रक्तस्तंभक तथा ग्राही है फिटकडीकूं फुलाकर धरणके दस्तमें तेसें गिरणेमें गुडसंग देणा मूंमेसें अथवा हरकोइ द्वारसें खून गिरता होय तो फिटकडी देणेसें बंध होताहै फिटकडी रातकूं भिगाकर कुरला करणेसें मूंके सब रोग अछे होते हैं फिटकडीके पाणीकी बूंद डालणेसें दुखती आंख मिटती है चढाभया खून उतरता है तथा जिस आंखमें पककर पीपपंड गया होय एसी आंखकूं फिटकडीके जलसें धोकर अंदर बूंदे वेर २ डालणेसें पकी भई आंखभी अछी होती है, औरतोंके प्रदर वगैरे कितनेक गुह्य रोगमें फिटकडीकी पिचकारी तथा गर्भस्थानमेंसें खून गिरता होय तो भी फायदा करतीहै पिचकारीसें अगर बंध नहीं होय तो अंदर फिटकडीका टुकडा दवाणेसें नसों संकुडाकर खूनका गिरणा बंध होता है दुखते मस्सेपर फिटकडीका चूर्ण मसले तो खून और चिमचिमाट दरद बंध होजाता है बच्चोंकी कांच तथा औरतोंके योनिपर फिटकडीका पाणी छांटणेसें संकुडाकर मजबूत सकत होकर अंदर चलीजाती है धरणके मूंपर फिटकडीका टुकडा धरा होयतो हरगज पुरुषका वीर्य अंदर नहीं जासकता वीर्यकूं फाडके निकाल देती है खाणेकी मात्रा १ सें दो वाल (पिचकारी) १ रतलपाणीमें अढाई मासा या पांचमासा देसीपत्रे लिखणेसें स्याही फूटकर आरपार होती होय तो फिटकडीके जलमें भिगाकर सुकाकर घोटलेवे हरगिजनहीं फूटेगा (११६ फालसा) पित्तशामकहै, गरमीकी मोसममें इसका सरबत करके पीणा दाहकूं मिटाताहै (११७ फुदीना) पोदीना उष्ण तथा दीपन पाचन है हैजा थूंक उलटी अरुचि मंदाग्नि ऊपर पोदीनेका रस अथवा उसकीचा फायदा करतीहै, उसके सबगुण पेपरमींटके मिलता है, (११८ बदाम) टंढी तथा पौष्टिक है.मगज तथा आंखके रोगमें बहुत फायदेमंद है, बिदामका पाक सीरा कतली बणतीहै गायके घीमें बिदामकूं सुंघणेसें नाकमें जमते भये छोटे नरग पडतेहैं मगजकी नाताकती दूर होकर आंखका तेज बढताहै बिदाम तथा केसर गऊके घीमें घोटकर उसकी नास लेणेसें बदाम कपूर दूधमें घसकर शिरपर लेप करणेसें तैसें बिदामकी दूधमें खीर रांधकर फजरमें खाणेसें शिरकी शूल दरद तथा आधाशीशी मिटती है मगज तरकरणेकूं शिरपर बिदामका तेल रगडणा बिदामकी मींजीसक बूरेके संग खाणा एकघंटे बाद मखण मिश्री मिलाकर चाटणा (११९ बनफशा) शीतल स्वेदल तथा कफघ्न है बुखार तणख सलेपम तथा कफमें दीजातीहै, बनफशा मोटेठी अर्सामके डोडे उकालकर उसके जलमें थोडा बूरा डालकर रावडी जेसी चासणी करके चाटणेमें

उधरस तथा कफकूं अछा फायदा करतीहै (१२० बहुफली) गूमठ तथा पौष्टिक है पेशा-बके रोगोंमें फायदेबंदहै गरमवायु तणख तथा प्रमेहकी जलणमें बहुफलीका लुआब बूरा डाल पीणेसें फायदा करतीहै दूधके संग बहुफली पीणेसें धातुपुष्टि तथा नाताकती मिटतीहै,(१२०बांवल)बंबूल ग्राही शीतल तथापौष्टिकहै बंबूलकी फलियों जब पकणेपर आवे उसकूं जलमें पीस २॥ रुपियाभर रस बूरा मिलाकर दिनमें तीन वखत पीणेसें प्रमेह जलण गरमवायु तजागरमी मिटतीहै बंबूलके छालका रस पीणेसें अतिसार बंध हो जाताहै बंबूलके कचेपानोंका रस आंखमें आंजणेसें आंखकी गरमी तथा जल गिरणा बंध होताहै छालकूं उकाल जलसें कुरला करणेसें मूंकी गरमी मिटतीहै (१२२ बील) ग्राही दीपन तथा पित्तशामक है दवातरीके विशेष करके बीलकी जड तथा कचे बील अथवा बीलगिर काम देतीहै संग्रहणी तथा अतिसारमें बहोत बरतते हैं बीलके पक्के फल जरा रेचकहै इसवास्ते बंधकोष्टमें कचेफल अथवा उसका गुरब्बा दस्तकूं रोकणेवाला है अति-सार तथा खूनके मरोडेमें बीलकी गिर अढाइमासे दहीमें पीस दिनमें दो तीन वखत पीणा (बिल्वादिचूर्ण) सूकी बीलगिर मोथ धावडीके फूल कालीपाट मोचरस ये सम वजन लेकर महीन चूर्ण करणा ये चूर्ण गुड तथा छाछमें पीणेसें सखत अतिसार मिटताहै (१२३ बकरीका दूध) गर्भिणीस्त्रीके विषमज्वरमें बकरीका दूध बहोत फायदेबंद है, अधसेर बकरीका दूध अधसेर जल मिलाकर उसमें थोडा दूध तथा सूंठकी किटकियां डाल जल जले उहांतक उकाल पीछे दूधकूं छाणके पीणेसें गर्भिणीका बुखार उतरेगा और ताकत आवेगी मिजाजकूं सूंठ गरम पडे तो मोलेठीके टुकडे डालणा छोटे बचोंका मूंपकताहै तब बकरीके दूधकी धार दिराणेसें फायदा होता है (१२४ बहेडा—) शीतल शोधक तथा पित्तशामक है बहेडेकी छाल त्रिफलामें आतीहै, मूंमें छालरखणेसें खाली खासी बंद होती है (बहेडा पुटपाक) खासीमें बहोत फायदा करताहै (१२४ ब्राह्मी) शोधक तथा पौष्टिक है चित्तभ्रम मिरगी तथा जीर्ण उन्माद रोगमें ब्राह्मीके पानोका रस या चूर्ण घीके संग बहोत दिन सेवन करणेसें फायदा करता है, उन्मादके जोरमें ब्राह्मी देंणेसें उलटा नुकशांन करतीहै, उन्मादका जोर कम पडे पीछै ब्राह्मी देणी अछीहै, (ब्राह्मीघृत) ब्राह्मीका रस १ सेर घीसेर १ वच कूठ संखाहोलीकी जड इनोंका चूर्ण २० तोला ये डालकर उकालते रस जलजाय घी बाकी रहै तब ठंढा भये छाणलेणा खाणेकी मात्रा २सें ४ तोला (१२५ बोदार) रेचक तथा रोपणहै धूलमट्टी खाणेवाले बच्चोंकूं उसका जुलाब दिये जाताहै, एकदो बालबोदारमाके दूध या सादे दूध संगदेणेसें जुलाब लगकर पेटका भार निकल जाता है घीके संग मिलाकर लगाणेसें घाव भर जाता है, (१२६ भांग) पीडा-[illegible] तथा नसोंकों ढीला करणेवाली भांगमें नसा है इसवास्ते दवाइमें [illegible]मेता संग उपयोग करणा दूधमें उकालणेसें भांग शुद्ध होतीहै, शुद्ध भांगकूं

सेककर अथवा धीमें तलकर उसका चूर्ण रती १ से १ वालतक सहतमें चाटणेसें नींद लाता है भांग पीडाकारी रोगोंमें तेसें अनिद्रावाला मगजके रोगोंमें भांग देणेमें आती है, भांग वाजीकर होणेसें कितनेक पाक तथा आकूती माजमोंमें गिरतीहै,(१२७ भोंपाथरी) गलजीभी पिछाडी लिखी है वोही भोंपाथरीहै, मूत्रलहै, (१२८ भोरींगणी–कफघ्न तथा ज्वरघ्न है, भोरींगणीकी बहोत जातिहै, लेकिन् दवामें जादातर छोटी बेठी भोरींगणीका पंचाग वापरते हैं खासी दम श्वास तथा कफके बुखारमें बहोतही उपयोगीं चीजहै, भोरीं गणीका काढा अथवा पुटपाक कर उसके रसमें पीपल मिलाके देणेसें दम तथा कफमें फायदा करती है, (कंटकारी अवलेह्–) लेणेसें दम तथा हिचकीकूं बेठाता है, छातीके कफकूं तोडताहै, (१२९ मजीठ–) शोधक शीतल तथा पित्तशामक है, (मंजीष्टादिक्काथ-) मजीठ हरडे बहेडा आंवला कुटकी वच दारूहलदी गिलोय तथा कडवे नीमकी छाल सम वजन सब खूनकूं साफ करता है, वातरक्त विस्फोटक वगैरे चमडीके रोगोकों मिटाताहै, (बृहत्मंजीष्टादि क्काथ–) जिसमें ४५ चीजों आती है वो जादा गुणकारी है, मजीठ मोलेठी तथा लोद इन तीनोंकों जलमें पीस छाण मिश्री डालकर पीणेसें गर्भणीका दस्त मिटता है (१३० मधु)(सहत–) कफशामक सारक पौष्टिक तथा रोपणहै, रोपण और भेदक गुणसें अनुपान तरीके उपयोग होताहै प्यासके रोगमे सहत और पाणी पीकरके उलटी करणेसें प्यास मिटती है, सहत पाणी पीणेसें चरबी बढा भया मोटा अदमी पतला होताहै, दवामें बहोत काम देती है (१) दाहमें– चावलोंके धोये जलमें चंदन घसकर सहत मिश्री डालकर पीणी (२) कलेजेका सोजा–) कलीचूना तथा सहत सोजेकी जगापर लेपकर ऊपर रूदबादेणी (३) कानमें बुग्ग–) चलाजाय तो इकेली सहत अथवा तेल सहत सामल कर डालणा (४) मेदरोगमें–) फजरमें जलदी ऊठके ४ तोला गरम जलमें २ तोला सहत डालकर पीणा (५) मुखरोगमें–) मूंमें सहतका कुरला भरके कितनीक देर रखकर डालदेणेसें इसतरे कितने एक कुरलोंसें मूंके अंदरके व्रण पावचांदी गरमी जलण तथा प्यास दूर होकर मूं साफ होगा(६) रक्तपित्त–) सहत तथा मिश्री बकरीके दूधमें पीणेसें खूनका गिरणा बंध होताहै(७) तृष्णा–) ठंडा पाणी तथा सहत मिलाकर खूब पिलाकर उलटी कराणी (८) कुचीलेका जहर–) सहत घी मिश्री चटाणी (१३१ मिरी मिरच–) दीपन पाचन तथा सारक है मौठ पेटचूंक साधारण अजीर्ण वगेरेमें काली मिरच चबातेहैं तंद्रा बेहोसीकूं दूर करतीहै, मिरचकी चाय मिश्री डाल पीणेसें सादा बुखार मिटातीहै, दस्न खुटास आताहै, ये चाय बच्चोंकों सुंगाणेसें माकूं अथवा बचेकूं पारगला रोग होजाता है सोभी मिटाती है घृत तथा घीके संग मिरचका चूर्ण खाणेसें शिरकी ममल आंखकी गरमी हाथपांवोंकी जलन मिटती है आंखोंकी तेजी बढातीहै मिरचका चूर्ण गुड दहीमें डाल पीणेसें नाकका सलेखम तथा

पीनसरोग मिटता है (१३२ माया–) मांजूफल) ग्राहीहै, मूंका पकणा उसलणा चीरा वगेरेमें मांजूफल तथा फिटकडीके कुरलोंसें बहोत फायदा होताहै, इसका पाणी छांटणेसें कांचसंकुडाकर अंदर चलीजातीहै, हरसके मस्सेपर अफीम तथा मांजू फल लगाणे सें फायदा होताहै, (हरसका मलम)–अफीम तोला २ मांजूफलका चूर्ण तोला ५ सादा मलम तोला ३० (सादा मलम, मेण घीका आगेलि०) तीनोंको मिलाकर हरसपर लगाणेसें जलण खूनका गिरणा बंध होता है, मस्से सूकजातेहैं औरतोके० योनिसंकुडाणेकूं मांजूफल फिटकडीका चूर्णकी पोटली धरे जाती है, अथवा कपूर और मांजूफलकूं पीस अंदर लेपकरणेमें आता है, (१३३ मालकांकणी) उष्ण स्वेदल वातहर तथा बुद्धिवर्द्धक है, मगजके रोगोंमें मालकांकणीके बीज तथा तेल बहोत फायदा करताहै बीजोंमेंसें पीले रंगका तेल निकलताहै, यादशक्ति जादा इस तेलसें रह सकती है हमेसपांच या दस बूंद मिश्रीमे या दूधमें लेणा मूं साफ करणेकूं ऊपरसे इलायची खाणी तेल हाजर नहीं होयतो बीज वरतणा इसके संग मिरच जेसीं दुसरी वादी हरता दवाकी फाकी लेणेसें बेहोसी भ्रमवायु आंचकी वगेरे वादीके रोग मिटजातेहै तेल मसलणेसें हिचकणेके जाडा खुलतीहै और हैजेके वांईटे मिटते है मालकांगणीकी जड सांपके डंकपर लगाणेसें जहर ऊतरता है (१३४ मींढल) मेणफल) वांतिकराणेवाला जहर खाये भयेकूं उलटी कराणे मेणफल दिया जाता है दो एककूं पीसणा बीजनिकाल डालणा शक्ति और तासीर मुजब दो आनीसे चार आनी भरतक सींधा निमक मिलाकर जलके संग लेणा जादा उलटी करणी होयतो ऊपर गरम पाणी पीणा (१३५ मीण) मैण) व्रण रोपण तथा हाडोंकों सांधणेवाला मेणकामलम होताहै, (सादामलम) मेण १ भाग तेल १॥ भाग दोनोंकों एक वासणमें धरके मंद आंचदेणी एक रस होकर जमजावै तब उतारकर धर देणा (१३६ मूसली) धातुपौष्टिक तथा वाजीकरहै, मूसली काली तेसें धोली दोजातकी होतीहै सुपेद जादा गुण करतीहै इसका पाक धातुपुष्टी करताहै अथवा दूधमें उकाल कर पीणेमें आतीहै लेकिन् बहोत दिन पीणेसें फायदा दिखाती है (१३७ मेथी) वादीहर तथा पौष्टिकहै (मेथीमोदक) मेथीदाणोंकों दलके किया भया आटा घी तथा बूरा मिलाकर नव २ टंककी गोलियां करणी इसको दोनों टंक १४ दिनखाणेसें वायु सरण कमरका दुखणा संधिवात वगेरें रोगमें फायदा करता है (१३८ मेंहदी) ठंढीहै, उसके पत्ते पीस लेप करणेसें हाथपांवोकी जलण पांउकी व्यायु फटणी तथा हर किसी जगेकी दाद मिटतीहै चिकते घावकी खुजाल तथा जलणपर लुगदी धरणेसें मिटजातीहै, (१३९ मोचरस) शीतल ग्राही तथा स्तंभक है (वृद्धगंगाधर चूर्ण) नागरमोथा इंद्रजव धरदूसेकी जड सुंठ धावडीके फूल लोद वाला बीलगिर मोचरस कालीपाठ कूडेकी छाल आंबकी गुटली अतीम लजालू ये १४ चीजोंका चूर्ण सब तरेका अतिसार तथा मरोडामें

बहोत फायदाकारक है, मात्रा अढाइमासे सें ५ मासेतक (अनुपान) चावलोंका धोवण तथा सहत (१४० मोथ) देखो पिछाडी नागरमोथा (१४१ मोरथोथा) स्तंभन उलटी लाणेवाला और रोपण है, तांबेके खारकूं नीलाथोथा मोरथोथा कहते हैं शुद्धकरे विगर खाणेके कामका नहीं उलटीके कामसिवाय दुसरी तरे पेटमें नीलाथोथा अछा नही जहर खाया होय तो उलटी कराके निकाल देताहै गरम होताहै रोगी इसकी कराई उलटीसें नाताकत नहीं होता गरम जलमें १ वाल देणेसें कैलाताहै इसके अलावा संग्रह णी रक्तपित्त औरतोंका सुवारोग तथाहिस्टीरीया मिरगी उपदंश उपदंशकी गंठियापर दोतोले नीलेथोथेकूं सोंनीवूकेरसमें खरलकर झाडवेर जितनी गोलियां करणी दहीके संग गोली १ देणी दही भात खाणा अलूणा ये दवासें कितनोंकी गरमी चलीजाती है, केइयककेरीके आचारमे देकर दही वगेरे सब खिलाते हैं नीलाथोथा आककी जड अथवा कडवी तूंबीके जडकों गरमीपर चिलममें डालकर पिलातेहैं इसका जलाभया गुलपीस गरमीके घावपर घीमें मिलाकर लगाणेसें गरमी मिटती है ये दवाइयें मूं आणेकी नहींहै आंखके दरदमे मोरथोथा फायदेवंद है, आंख दुखणा शांतपडे पीछे आंखकी ललाई खीलों वगेरेमें इसके जलकी बूंदे फायदा करतीहै, आंखकी खील गुरांजणीपर नीलेथोथे काटुकडा दोतीनदिन एकवेर फिराणेसें खीलमिटतीहै (अंजनशलाका) मोरथोथा फिटकडी तथा सोरा तीनोंकों सामलकर नीचे आंच देणा तब रस होगा उसके अंदर तीनोंके वजनसें ५० मे भागका कपूर डालणा बाद इसकी सलियां वणाणी मांफणेकूं उलटाकर येसली एकदोदफे हमेस फेरणेसें खीलघस जातीहै और पाणीका झरणा बंध होताहै, (मोरथोथेकीबूंद) २ तोला जलमें एक रत्ती नीला थोथा आंखकी मांसवृद्धि चेपलगणेसें अथवा शीतला वगेरेसें गरमीसे दुखणी आई आंखकी सखत पीडा मिटेबाद मोरथोथेकी बूंदे डालणी चमडीके रोगोंमें बाहिर लगाणेमें न्यारी रीतसें लगाये जाताहै जोजगे घावसें चिक २ ती होय उसकूं इसके जलसें धोणेसें जलदी सूकजातीहै दुष्टव्रण घावपर नीले थोथेका टुकडा लगाणेसें अथवा इसके जलसें धोणेसें उसका सडा भया भाग जलजाताहै नीलाथोथा जुआरके दाणेजितना गुडमें गोलीकर तीन दिन निगलाणेसें नारू अंदर मरजाताहै ये दवा किसी अनुभवी पुरुषकी कही भईहै, हमनें अजमाया नहींहै, कहाके जहातक नारूमरेगानही उहांतक उलटी होयगी नहीं नारूमरे बाद उलटी होय गी ये निशानी हैं, इसवास्ते नारूसे दुखपाते भये रोगीने इस प्रयोगकी अजमायस करणी इसमें कोइ जोखम नहींहै इसीतरे हींगका प्रयोगभी सुणाहै माही सातमकूं मापमें मिश्री विनाजलपिये रातकूं चबाकर सुलादेणा तारे नहीं देखे, पावभर, इयप्रयोग अजमायाभयाहै, नारूनहीं निकलता(१४३मोरका चंदवा)मोरके चंदवेकी राख और लींडी पीपर मिलाकर सहतमें चाटणेमें हिचकी तथा उलटीभी मिटजातीहै मोरकाचंदवा तमाखू संग

चिलममें पीणेसें सांपके जहरकूं उतार देताहै, (१४४ रतवेल) शीतल दाहशामक रतवे-
लकी नदीके किनारोंपर वेलों पसरतीहै गुजरातकी तरफ जादा है, रगतवायुके चठोंपर
चोपडे जाताहै, (१४५ रतांजली) रगतचंदण शीतल तथा पित्तशामक है पहोतसे
काढोंमें गिरताहै कितनेक टंढे लेपमें गिरताहै रगतचंदण तथा नींबकूं जलमें घसकर
मसलणेसें टपोरिया गरमीके गडगूमड और दाहकू शांत करताहै, (१४६ राई) तीक्ष्ण
क्षोभक वांतिकारकहै, राईतेमें आचारमें लेप करणेमें और उलटी कराणेमें काम देत
है, राईकूं भरडके फोतरे निकालकर ठोक इसकूं पीस आटा करतेहैं राईका लेप याने
पलास्टर मारणेकूं जलमें मिलाकर अथवा सावित राईकों जलमें पीसकर कागजपर लगा-
कर दुखती जगापर चेपदेणा फेर कितनीकदेरसें वोजगे जलणी सरू होतीहै उससें डरणा
नही आधी घंटे या घंटेभर रखणा दरदका जोर होयतो एसा पलास्टर दिनमें दोतीन वखत
इसी जगे लगाणा पलास्टरकी जगे चमडी लाल होतीहै, लेकिन् फफोला उठेगा नहीं
कोई वखत चमडी जरा उपस जातीहै पट्टी उखेडे पीछे चमडीपर जलण जादा होती
होयतो घी लगाणा इससें दरद कम होजाताहै, होजरीपर राईका पलास्टर लगाणेसें
उलटी और दस्तबंध होजाताहै, पेटपर मारणेसें पेटका दरद मिटता है, पेडूके दुखणेपर
लगाणेसे मरोडा मिटताहै, पांवोंकी पीडियोंपर तेसें होजरी तथा हाथ पांवोंपर मारणेसें
हैजेका जोर कमपडताहै, हाथपांवपर राईमसलणेसें गरमी आतीहै गरम पाणीमें राईका आटा
डालकर पांव डुबाकर रखणेसें पसीना आकर बुखार उतरताहै वदनके कोईभी जगे शरण
शूल चसका आंकसी वगेरेकूं राईका लेप मिटा देताहै राईतेमें अथवा मसालेमें राईखा-
णेसें रुचि तथा पाचन होताहै जादा गरम पाणीके संगपीणेसें कै होतीहै सहजनेकी
छालका चूर्ण राई जेसा कांम करतीहै, (१४७ रास्ना) उष्ण तथा वातहरहै रासनाकी
जड मारवाडमें राठ नांमसें प्रसिद्धहै पत्ते इसके सोनामुखी जैसे होतेहै. जादातर
दवामें जडलीजातीहै, वजारमें कितनीक वखत रास्नाकी जडकी एवजीमें हरकोई
जड पसारी पकडा देते हैं, इस वास्ते दवामें असली गुण जो रास्नाका है सो होता
नहीं सब तरेकी वात व्याधिपर रास्ना वहोतं अछीहै, महारास्नादि रास्ना सप्त
रास्ना पंचक वगैरे जुदे २ काढेमें रास्ना मुक्षहै इनकाढोंमें रास्ना दुसरी दवा
इयोसें जादा फायदा करतीहै, (रास्नापंचक) रास्ना गिलोय देवदारू सूंठ
एरंडकी जड सब समवजन लेकर काढा करणा इयइकेला अथवा गूगल अथवा योग-
गूगल मिलाकर पीणेसें अथवा लिखे भये और काढोंसें पीणेसें सब वादीमें फायदा
है (१४८ रेवचीणीका सीरा) रेचक तथा कृमिघ्न है रेवचीणीका जुलाब कर-
...ा है इसवास्ते जलंधर जेसे रोगमें तथा सखत बंध कुष्टमें दिये जाता है जुला-
बावत इसका जादा वरताव नहीं करणा इससें पेटमें चूंक होती है मात्रा १ रत्तीसें

१ वाल (१४९ लवंग) उष्ण वातहर तथा दीपन है लौंग मुख खसवोईमें तथा गरम मसालोमें काम देता है अजीर्ण वगेरेमें चवाते हैं (लवंगादिवटी) लौंग मिरच-काली वहेडा और खेरसारका चूर्ण इनोंकों पांवूलके छालके काढेमें कितनेक दिनखरलकर मूंग प्रमाण गोलियें वांधणी येगोलियां खाली सुकी खासीमें वहोत फायदा करती है मूंमें रखकर चूसणा (१५० लसण) वादीहर तथा उष्ण है सांधोंकी वादी कमरका दुखणा हिचकी चमकणा चूंक वायुका गोला तथा हैजेमें दिया जाता है लसण आमके पाचन करणेमें सूंठ जेसा गुण धराता है इससें आमातिसार अजीर्ण हैजे वगेरेमें तथा दस्तके रोगमें लसणका रस अथवा उससेंवणी कोईभी दवादस्त वंध करता है (लशनादि चूर्ण) लसण जीरा सेंचल सूंठ मीरच पीपर और हींग सब समवजन चूर्ण करणा अजीर्ण तथा हैजेके दस्तकूं मिटाता है खाज खुजलीपर लसणकी लुगदी धरणेसें जलण तो होती है लेकिन् खाजकी चमडी जलके लाल चमडी हो जाती है पीछे उसकूं कोइभी सादा मलम अछा कर सकता है चार तोले लसणके छिलके अलग कर हिंग जीरा सींधानिमक सेंचल सूंठ मिरच पींपर इन सर्वोका तीन वाल चूर्ण मिलाकर गोली करणी इन गोलियोंकों ताकत पहचान करके एरंडीके जडके उकालेमें सब तरेकी वायुमें दीजाती है कुत्तेके काटे जहरपरभी लसणका लेप करणा लसण उकालके पीणा खुराकमेंभी लसण खाणा अर्दित वायु (मूंटेढा होय सो) लसण पीस इस रोगमें तिलके तेलमें खाणा अथवा उडदके आटेमें लसण मिलाकर तिलके तेलमें वडे तलकर तेलमें फेर खाणा अथवा मक्खणके संग खाणा लसण घीमें खाणेसें शूल मिटती है (१५१ लींब) (नींब) ज्वरघ्न शोधक पित्तशामक पौष्टिक तथा कुष्ट हर है नींमके अंतर छालकाहिम सादा हमेसका एकांतरा तेसें चोथिया बुखारमें बुखारके पहिले देणेमें आवे तो बुखार वंध हो जाता है इस हिममें कुछ एक कोनाइन जेसा गुण है इतना इसमें जादा गुण है सो कोनाइनतो वदनमें बुखार होय तो दिये नहीं जाता और नींबकाहिम तो बुखार रहतेभी देणेसें गुण करता है पित्तके बुखारमें तैसें सादा अणउतार बुखारमें शीतला ओरी अछवडामें और पित्तके हरेक रोगमें ये हिम अछा है नींव पंचाग चूर्ण-नीमका पंचाग एक भाग जो हरडे पवाडके बीज चित्रककी जड भिलावा वाय विडंग आंवला हलदी सूंठ मिरच पींपर वावची किरमाला गोखरू तथा वूरा ये सब मिलकर पंचागकी वरावर इस चूर्णकूं वण सके तो खैरसारके काढेकी तथा भांगरेकी एक अथवा जादा भावना देणी इस चूर्णका वहोत दिन सेवन करणेसें वातरक्त अथवा रगतपित्त कोढ चमडीके सब रोग अछे हो जाते हैं नींबके पत्तोंको उकाल उससें स्नान करणेसें खसरा खुजास दाद वगेरेकी चलहलकी होती है जो घाव वहोत चिकला है जिसमें कीडे पडते हैं वो सब नींबके उकाले जलके धोणेसें

मिट जाते हैं पत्तोंकी लुगदी सहत मिलाकर घावपर बांधणी नींबका रस और आंवलेका रस पाव पाव तोला पीणेसें शीलस लुखस तथा खोटी गरमी दबती है नींबके पत्ते बकरीकी मींगणी दोनोंकों बाफके सांधोंके दुखणेपर तथा सोजेपर बांधणेसें हलका पडता है नींबके बाफे भये पत्तोंकी पोटिस गड गूंमडकूं पकाती है नींबोलीमेंसे तेल निकलता है वो तेल कान वहतेकूं बंध कर घावकूं भरता है मगज पकणेसें नाकके रस्ते खून गिरता होय अगर मगजमें कीडे पडणेका सक होय तो ये तेल नाकमें सुंघणेसें जंतु मिटते हैं खून बंध होता है सापके जहरमें नींबके पत्तोंका रस अथवा छिलकोंका रस-उसकूं खारा मालम दे जहांतक पिलाणा क्योंके जहरका जहांतक जोर होगा जहांतक नींब कडवा मालम देगा नहीं छालकूं ऊकाले जलमें धाणा तथा सुंठका चूर्ण डालकर पीणेसें सब विषम ठंडका आंतरेका बुखार सब मिटता है हैजा प्लेग वगेरे मरकीके वख, तमें कडवे नींबके पत्ते १ रुपिये भरमें रत्तीभर कपूर रत्तीभर हींग मिलाकर गोलीकर ये गोली आधे रुपेभर गुडके संग हमेस रातके खाणेसें इस रोगके जुलमसें बचता है, (१५२ लींबु) नींबु शीतल दीपन तथा पित्तशामक है जठराग्नि प्रदीप्त करता है इसवास्ते खुराककी चीजों संग इसका उपयोग करणा चाहिये तोभी देश काल प्रकृतीका विचार करके उपयोग करणा बहोतसी दवा गोलियों नींबूके रसमें बणती है नींबूका सरबत गरमीकूं पित्तकूं जलदी शांत करता है पित्तकी उलटीकूं जलदी मिटाता है दांतकी छेकडोंमेंसें मसूडोमेंसें खून गिरता होय वो नींबु चूसणेसें बंध होता है चूसणेमें खट्टे नींबुसें मीठे नींबू अछे होते हैं (१५३ लोबान) कफ शामक तथा रोपण है लोबान एक दरख्तका रस है वो कफ शामक होणेसें २ से ४ वाल देणेसें सादी खासी बंध होती है लोबानके फूलमोल मिलते हैं वो उलटीकूं बंध करता है लोबान रोपण है इसवास्ते कितनेक मलमोंमें गिरता है (१५४ वखमा) वातहर ज्वरघ्न है कृमिघ्न है तथा कटु पौष्टिक है वखमा वछनागकी जाति है लेकिन् जहरी नहीं है अतीसमी इसी दरखतकी पैदाश है वखमा गुणमें तथा कीमतमें चढता है अजीर्ण गोटा पेटका दरद तथा अजीर्णका दस्त उलटीकूं वखमा तुरत मिटाता है पेटकी कृमिकूं भी मिटाता है जीर्णज्वरमें बहोत फायदा करता है (मात्रा) १ सें २ वाल) (१५५ वछनाग) ज्वरघ्न तथा वातहर है वछनाग बहोत रसादिक दवायोंमें गिरता है इसकूं मारवाडीमें संगी मोहरा कहते हैं सींग जेसा होता है इसवास्ते ॥ जहरी चीज है सावचेतीसें वरतना तीन दिन गोमूत्रमें भिजाये रक्खे तो शुद्ध होता है मोटेठी मासा भर बछनागरतीभर कपड छान कर सुंघणेमें चाहे जेसा सिर दुखता मिटता है हमारा अजमाया है (आनंदभैरवरम) हिंगलू शुद्ध (शुद्ध करणेकी विधि) पहली गाडरके दूधमें खरलकर सुका ... धानपर बाद नींबूके रसमें सातवेर भावना देके सुकाणा एसा हींगलु शुद्ध

वछनाग मिरचकाली टंकन शुद्ध पीपर ये सब सम वजन लेकर चूर्ण करना या गोली बांधणी अतिसार ज्वर खासी मंदाग्नि वगेरे रोगोंमें फायदा करता है मात्रा १ सें दोय रती (१५६ वज) वातघ्न कफघ्न तथा उलटी लाणेवाली है वचकी मुख्य दोय जाति है एक तो दूधिया अथवा सुपेद वज दुसरा गंधीला घोडा वच वचमिरगी रोगमें हिस्टीरीया जेसा मगजके रोगमें फायदा करता है मात्रा दो आनी भर सहतमें मिलाय चटाना (१५७ वड) ग्राही तथा कफ शामकहे वडका दूध पौष्टिक है (पंचवल्कल) वड पीपल पीपलो पारसपीपल तथा गूलर ये पांच दरखतोंके छालकू पंचवल्कल कहते हैं इसकी उकालीके पाणीसें फोडे घाव चांदी विस्फोटक वगेरे चमडीके सडे भये जगेकूं धोणेसें बहोत फायदा होता है चिकते भागपर इनोंका कपड छाण किया चूर्ण दबानेसें घाव जलदी भर आता है वड गूलर पीपर पीपला आंब तथा जांमूनकी जडकी छाल तथा भिलावा इन सबोंका काढा कर एक तोलेसें सरू कर चार तोलेतक चढते २ पीणेसें कफ प्रमेह अर्थात् नींदमें पेसाब हो जाता है सो मिटता है (१५८ बिरियाली) (सूंफ) दीपन तथा वातहर है बुखारकी उलटीकूं सूंफका हिम मिटाता है (१५९ वायविडंग) कृमिघ्न तथा वायु हरता है कृमि कैंचूये कृमिके सब विकारोंकों मिटाती है वायविडंगका चूर्ण सहतमें लेनेसें अथवा उकालीसहतडाल पीणेसें तमाम जंतु मिट जाते हैं मात्रा बचोंकूं १ सें २ वाल बडेकूं अढाई मासेसें पांच मासे तक (१६० वाला) ठंडा शोधक तथा पित्तशामक है ठंडे लेपमें सरबतमें तथा पित्तके बुखारके काढेमें गिरता है।एक तो काला नेतरवाला कमलके तंतु दुसरा सुपेद खसवाला (१६१ वांस कपूर) ग्राही कफशामक पौष्टिक और मरदमी देनेवाला है वंसलोचन लोक प्रसिद्ध नाम है (सीतोपलादि चूर्ण) मिश्री १६ भाग वंश लोचन८ भाग इलायची ४ भाग पीपर२ भाग तज १ भाग सबोंका चूर्ण करना पुराणी खासी दम तथा क्षयमें सीतोपलादि चूर्ण बहोत फायदा करता है सरू होते क्षयकूं मिटाता है बचोंके दम खास जीर्ण ज्वर तथा नाताकतीपर बहोत दिनोंतक ये चूर्ण खिलाना मात्रा दो आनी भरसें चार आनी भरतक अनुपान घी अथवा सहत अथवा तासीर मुजब फेरफार करना(१६२ विदारी कंद) पौष्टिक तथा वाजीकर है तथा मूत्रल है ये कंद भूकोला भू आंवलेके नामसें प्रसिद्ध है इस कंदके ऊपर बेल होतीहै, कंदजमीनमें बहोत गहरा होताहै जों पुराना होताहै, त्यों कंद बडा होताहै, ताजेविदारी कंदका रस काम देता है सूकेकूं उकालकर रस करणा कंदकारस ४ रुपेभर घी तथा सहतमें पुरुषातन तथा धातु बढाताहै मगज भरताहै, औरतोंके दूध बढता है मात्रा ५ मासा या रुपेभर घी मिश्रीमें (१६३ शतावरी) शीतल मूत्रल धातुपौष्टिक और ग्राहीहै, शतावरी धातुवर्द्धक और मगजकूं पुष्टी देनेवाली है, वो दूधमें डाल अथवा पाक बणाकर खाये जाताहै, औरतोके गर्भाशय

दोष धातु प्रदर वगैरेमें बहोत फायदेबंदहै औरतोके दूध बढाता है, चूर्ण स्वरस इसका काम देताहै, चूर्ण घीसक्कर सहत मिलाकर चाटणा (फलघृत) घी सेर १ सतावरका रस तथा गोमूत्र चार २ सेर जीवनीय गणमें मिले सो सब दवा एकेक तोला उनोंकों जलमें पीस कल्ककर उसके अंदर डालणा घी पकाणेकी विधिसें पकाणा उसमेंसे २ तोला घी पीणा ये घी वंध्यादोष दूरकरता है, औरतोका गुह्य दोष मिटाता है, ताकत देता है, (१६४ सरपंखा) पौष्टिक मूत्रल कफघ्न है जडके कांटेमें मिरच डाल पीणेसें प्रमेह मिटताहै, बीजोंके तेलसे खुजली मिटती है, चाहे उकालके तेल बणालेवे जड छाछके संग पीणेसें तिली मिटती है, इसके जड़का चूर्ण एक महीना लेणेसे अंडवृद्धिमें फायदा देताहै, जडकी छालका कल्क बणाकर सींधानिमक कुलथीके काढेसें पीणेसें पथरी रेती निकल जाती है, (१६५शिलाजीत--)पौष्टिक मूत्रल शोधकपेसावके सब रोगोंकूं मिटाताहै पेसावकूं बधारणा खुलासा लाणा ये उसका खासगुण है, प्रमेह मूत्रकृच्छ्र रेती पथरी गरमवायु चणख वगैरेमें फायदा करता है, चंद्रप्रभा नामकी गुटिका ये शिलाजीतकी खास बनावट है, सो ऊपर लिखे सबरोग गरमी खून बिगाड और चमडीके सब विकारोंमें बहोत अच्छी [illegible] धातू गिरणा नाताकती और नपुंसकपणा इसमेंभी शिलाजीत अछा फाये [illegible] पीये जाती है, औरतोंका ऋतुदोष और वीर्यकूं सुधारतीहै,(१६६ शेवा [illegible] आता है, उसकूं गरमकर सहसके एसा पेडूपर बांधणेसें बंध भया पेस[illegible] (१६७ शेलारस) पौष्टिक कफशामक ग्राही तथा बदनमें गांठोंके दोष [illegible] वाला इसका मुख्य उपयोग आंडोंके बढणेपर होताहै, सूजे भये [illegible] लगाकर ऊपर तमाखूका पत्ता बांधणा सोजा और गांठ दरद कम [illegible] शेसगूंद) एकेक दोदो बाल सहतमें दो तीन वखत चटाणेसें [illegible] चाटणेसें अंडवृद्धिमें फायदा करताहै, औरतोका ऋतुधर्म बंध होयतो लाताहै [illegible] गुण गूगल तथा बीजा बोल जैसाहै, (१६९ शंख) पाचक रोपण दंमक [illegible] दूरहै, दवामे शंखकी भस्मी कामदेतीहै, शंखके टुकडोकूं नींबूके रसमें ४ घंटे [illegible] पीछे एक संपुटमे रखकर जलाणेसे सुपेद भस्मी होतीहै शंख भस्म प्राये इकेली न [illegible] जाती कितनीक दवायोंमें गिरतीहै, (शंखवटी) आंवलीकी छालकी राख ४ तोला पांचनिमक सींधा सैंचल बिडलूंण खावेसो सैंभरलूंण कचलूण कोइ नहीं मिलेतो एकलीमें सींधा निमक जादा डालणा ४ तोला इन दोनोंकों खरलमें नींबूका रस निकाल भिजोणा पीछे शंखके टुकडे ४ तोला अंगारमें गूपटाल पंचकर २ के खरलमें रहा नींबुका रस उसमें बुझाते जाना जब निजोरा पीसा जाय एसा भूका होजाय तबतक फेरसेकी हींग सूंठ मिरच पीपर ये हरेक एकेक तोला और शुद्धगंधक शुद्धबच्छनाग शुद्धपारा हिंगलूमेंका निकाला भया ये तीनों भवारांच २ पारे गंधककी कजली करणी पीछे

किरण ३ री.

अंग्रेजी दवायें.

(३४६ एरगाट-) गर्भकूं बाहिर लाणेवाला रक्त थांबनेवाला स्नायुओंकों संकुडानेवाला गर्भाशयके नसोकुं संकुडाता है, इसवास्ते बालक अंदरसे जलदी निकल जाता है, औरतोंके रक्तगिरणेकूं बंध करता है, आमलकूं बाहर निकालता है ऋतु ओरतोके दोपपर बहोत फायदा करता है, दवामें इसका अर्क तथा एक स्ट्राक्ट वापरते हैं, मात्रा अर्ककी १० सें ६० बूंद लिकिड एक स्ट्रक्टकी १० से ६० बूंद मात्रा वढती है, तब जहरका असर करती है.

(३४७ आयर्न हीराकसी) इसका मुख्य उपयोग शरीरमें फीकासकेसंग जब नाताकती होती है, मुख्यपणे ओरतोकुं और जवान छोकरियोंकूं ये बेमारी होती है, तब बदनमेंसें लाल रजकण खूनमेंसें कम होता है, तब आयर्न देणा चाहिये ओरतोंके ऋतुधर्मके रोगमें महीनेके महीने गिरनेमें ज्यादा या कम होय तब लोहका उपयो होता है, किनाइनके संग आयर्न ज्यादे फायदा करता है, आयर्न याने लोह १ पहली रोगीका पेट दस्त देके साफ करणेकी हमेसां जरूरी है, आयर्नकी व .कर पीछे वटी दवा बणती है, उसमेंकी थोडी एक इहां लिखते हैं.

(१) सल्फेट ओफ आयर्न-रक्तशोधक पौष्टीग्राहिक पां .गी मालम दी है, तथा प्रदर ऊपर उसका उपयोग होता है, पिचकारी तथा सका सोजा टाइफोइड फीवर होता है, खानेकी मात्रा १ सें ५ ग्रेन. . करणेमें ये दवा दुसरी दवायोंसें

(२) शिरप फेरी फोसफेटिस एट क्विनि ... और झट उसी वखत ५ ग्रेन देते है,

(३) फोसफेट ओफ आयर्न-मात्र .त ये मात्रा देनी एक वेर बुखारको उतार नाताकती मगजका रोग आंखोंकी .तरा रहता है, ५ इस दवाका मुख्य गुण है, लेकिन्

(४) केमिकलफुड-अ .ा डर है, इसवास्ते बहोत हुसियारीसें देणा एसी दवा नाताकतीमें दीजे ....र लेनी नहीं अच्छे नामी डाकटर विशेपकर ये दवा एका एक देते

(५) जो दवा एक तरेका फायदा दिखाकर दुसरीतरे शरीरकूं नुकशान पहुंचावे मुत्राशयके .लकुल देनेलायक नहीं देशी इलाजोंमें रससिंदूर नामकी दवा बुखार उतारणे उ बहोतही अकसीर है, और उस दवासें नाताकती नहीं आकर उलटी ताकत लाती ., अच्छीतरे पसीना लाकर बुखारकूं रगोरगमेंसें निकाल देती है.

(३५६ एन्टिफेब्रिन-ज्वरहर है, ये दवाभी एन्टिपाइरीनकी तरे बुखारकूं निकालणेकूं नई निकली है, मात्रा ४ सें १० ग्रेण अज्ञान लोकोंकूं चमत्कार बतानेकूं ये दवा

(१७४ सरसुं) वादीहर उष्ण शोथघ्न दोपघ्न लेपमें सरसूं गिरती है, (१७५ सरसूंका तेल) सरसूंका तेल आचारमें तथा सागके वघार वगेरेमें बंगाळी तथा गुजराती लेते हैं वो रुचिकर अग्निप्रदीपक और उष्ण है श्वास रोगपर सरसूंका तेल गुडमें दिया जाता है कानमें शूल चलती होय तो इसकी बूंदे डालणी बंग देशवाले वदनके भी यही मसलाते हैं (१७६ साजीखार) पाचन दीपन तथा वातहर है (अंग्रेजी कारबोनेट ओफ सोडा) उसके वहोतसे गुण जवखारके मिलता है अजीर्णमें वो वहोत फायदा करता है (सर्जिकादि लेप) साजी मेदा लकडी तथा आंबीहलदी इन तीनोंकों जलमें पीस गरम कर लेप करनेसें गुप्तचोट पछाट किचरागया जमा भया खून विखर जाता है और सोजा हलका पडता है (१७७ साटा) शोथघ्न शोधक सारक तथा मूत्रल है साटेकी जड दवामें काम देती है दोपघ्न लेपमें तथा कितनेक काढोंमें उपयोग होता है अंदरके तेसें वाहर सोजेमें फायदा करती है सूंठ तथा सुदर्शनका काढा पीणेसें जलंदर तेसें पेटके सोजेपर सब विकारोंकूं मिटाती है सोजेके संग बुखार होता है सो भी नरम पडता है जडकूं घीमे घसकर अंजन करनेसें आंखकी झांख फूला दाह पाणी खुजाल सब मिटती है (पुनर्नवादि क्वाथ) पेटके अंदरके सोजेपर साटा गिलोय देवदारू हरडे सूंठ इनोंका काढा करके उसके अंदर गोमूत्र तथा गूगलमिलाकर पीणेसें अथवा विना डाले पीणेसें (शोफोदर) अर्थात् पेटके अंदर सोजा होता है सो सब मिटता है (पुनर्नवादि क्वाथ) शरीरके ऊपरके सोजेपर) साटा दारूहलदी हलदी सूंठ गिलोय जवाहरड चित्रककी जड भाडंगमूल तथा देवदारू काढा करना इससें हाथ पांव पेट मूं वगेरेका सोजा उतरता है (१७८ सिंकोना) उत्तम ज्वरहर कटु पौष्टिक ये दरखत पहली अमेरिकामे होता था लेकिन् थोडेसे वर्षोंसें वो दरखत इस आर्यावर्त्तमें वोया गया अब उसकूं देशी वनस्पतीमें गिणनेमें कोई हर जाना नहीं है सिंकोनेकी छाल दवामें काम देती है उसकी तीन जात है लाल पीली और भूरी उसमें पीली सर्वोत्तम है उसमें कीनाईन सत्व जादा है ठंढका बुखार इस दवासें वहोत जलदी अछा होता है कीनाईनकीतरे ये दवा बुखार आनेके पहली लेणी चाहिये सींकोनेकी छाल २॥ रुपिये भरकूं वारीक कूट उसकूं ॥ सेर जलमें डालणा उसमें नींबूका रस १ रु० भर अथवा गंधकका तेजाबकी १० या १५ बूंद डालकर उसका आठ हिस्सा कर बुखार उतर गये पीछे बुखार आनेके पहली दो दो घंटेसें आठ वखत देके पूरी करणी इसतरे देनेसें दो तीन पालीमें बुखार ऊतर जाता है जो बुखार अंतरदेके आता होय तो ये दवा वारीके दिन अथवा बुखार चढनेके वखत पहले चार घंटेमे पहले देणी सरू करणी बुखारके वखततक दो दो घंटेमे चार ४ वखत पिलाणी चिरायतेकीतरे ये दवा अग्नि जाग्रत कर ताकत देती/

किरण ३ री.

अंग्रेजी दवायें.

(३४६ एरगाट–) गर्भकूं बाहिर लाणेवाला रक्त थांबनेवाला स्नायुओंकों संकुडानेवाला गर्भाशयके नसोकुं संकुडाता है, इसवास्ते बालक अंदरसे जलदी निकल जाता है, औरतोंके रक्तगिरणेकूं बंध करता है, आमलकूं बाहर निकालता है ऋतु ओरतोके दोषपर बहोत फायदा करता है, दवामें इसका अर्क तथा एक स्ट्राक्ट वापरते हैं, मात्रा अर्ककी १० सें ६० बूंद लिकिड एक स्ट्रक्टकी १० से ६० बूंद मात्रा वढती है, तब जहरका असर करती है.

(३४७ आयर्न हीराकसी) इसका मुख्य उपयोग शरीरमें फीकासकेसंग जब नाताकती होती है, मुख्यपणे ओरतोकुं और जवान छोकरियोंकूं ये बेमारी होती है, तब वदनमेंसें लाल रजकण खूनमेंसें कम होता है, तब आयर्न देणा चाहिये ओरतोंके ऋतुधर्मके रोगमें महीनेके महीने गिरनेमें ज्यादा या कम होय तब लोहका उपयो होता है, किनाइनके संग आयर्न ज्यादे फायदा करता है, आयर्न याने लोह १ पहली रोगीका पेट दस्त देके साफ करणेकी हमेसां जरूरी है, आयर्नकी व कर पीछे वटी दवा बणती है, उसमेंकी थोडी एक इहां लिखते हैं.

(१) सल्फेट ओफ आयर्न–रक्तशोधक पौष्टीग्राहिक पांड ागी मालम दी है, तथा प्रदर ऊपर उसका उपयोग होता है, पिचकारी तथा सेका सोजा टाइफोइड फीवर होता है, खानेकी मात्रा १ सें ५ ग्रेन. करणेमें ये दवा दुसरी दवायोंसें

(२) शिरप फेरी फोसफेटिस एट किनि और झट उसी वखत ५ ग्रेन देते है,

(३) फोसफेट ओफ आयर्न–मात्र ये मात्रा देनी एक वेर बुखारको उतार नाताकती मगजका रोग आंखोंकी तरा रहता है, ५ इस दवाका मुख्य गुण है, लेकिन्

(४) केमिकलफुड– डर है, इसवास्ते बहोत हुसियारीसें देणा एसी दवा नाताकतीमें टीम लेनी नहीं अच्छे नामी डाकटर विशेपकर ये दवा एका एक देते जो दवा एक तरेका फायदा दिखाकर दुसरीतरे शरीरकूं नुकशान पहुंचावे

(५) बिलकुल देनेलायक नहीं देशी इलाजोंमें रसगिरि नामकी दवा बुखार उतारणे मुत्राशयके नहोतही अकशीर है, और उस दवासें नाताकती नहीं आकर उलटी ताकत लाती उ अच्छीतरे पसीना लाकर बुखारकूं रगोरगमेंसें निकाल देती है.

(३५६ एन्टिफेब्रिन–ज्वरहर है, ये दवाभी एन्टिपाइरीनकी तरे बुखारकूं निकालणेकूं नई निकली है, मात्रा ४ सें १० ग्रेन अज्ञान लोकोंकूं चमत्कार बताणेकूं ये दवा

अकसीर है, अनाडी वैद्योका अजड उपायों जेसा ये इलाज है, और लेमागु डाक्टर भी इस चीजकूं देते हैं, सरकारी होस्पिटलोंमें एसी दवा भाग्ययोगही देते हैं.

(३५७ एन्टीमनी-(१) टार्टरेट ओफ एन्टीमनी अथवा टार्टरएमेटिक-पसीना लानेवाली कफघ्न पित्तवर्द्धक उलटी तथा दस्त लानेवाली है, ये दवा जादा वजनमें सोमल जैसी जहरी असर करती है, प्रमाणमुजब दीजाय तो बुखारमें पसीना लाती है, उधरस तथा दमकूं मिटाती है, (मात्रा) पसीना लानेकूं $\frac{1}{16}$ सें $\frac{1}{6}$ ग्रेन उलटी करानेकूं १ से ३ ग्रेन (२) एन्टिमोनियल पाउडर अथवा जेम्स पाउडर (बणावट) ओकसाइड ओफ एन्टीमनी १ औंस फोसफेट-ओफलाइम २ औंस दोनोंकों एक जगे करणा कफघ्न स्वेदल मात्रा ३ सें ६ ग्रेन (३) एन्टीमोनियल वाइन--बनावट--टार्टर एमेटिक ४० ग्रेन शेरी-वाइन २० औंस दोनों मिलाणा बुखार कलेजा फेफसेका दरद सन्निपातज्वर दम हांफणी वगेरे रोगोंमें, रोगी ताकतवर होय तो ये दवा दी जाती है २ ग्रेन टार्टर एमेटिक और थोडी बूंदें गरम पाणी दोनों संग मिलाकर उसमें १ औंस शेरी मिलाणा बचोंकी कुकडिया घडी खासी तथा छातीके रोगोंमें सावचेती रखकर उपयोग करणेसें ये मिलावट अछी कामदेती है, मात्रा २ सें ५ बूंद.

(३५८ ओनीसी-ओइल ओफ यानिसी) वातहर पेटकीवायु चूंक मिटाती है, मात्रा १ सें ५ बूंद.

(३५९ एप्सम सोल्ट-(विलायती निमक) सल्फेट ओफमेग्निशिया एसा नांमसेंभी प्रसिद्ध है, मूत्रल तथा रेचक है, बुखारकी सरुआतमें इलाज करते क्विनाइनके थोडे एक डोझमें इस निमकका मिलाणा फायदेमन्द है, पित्तप्रकृतीवाले अदमीका मूं फजरमें कडवा रहता होय और पेटमें दरद रहता होय वो थोडेदिनतक फजर २ में एक २ ड्राम निमक ले तो बुखारके हुमलेसे बचता है, स्वाद उसका अच्छा करणा होय तो पीपरमेन्ट अथवा डाइल्युट सल्फ्युरीक-एसिडकी थोडी बूंदे मिलाते हैं, निमक पिये पीछे चा पीते हैं, बुखार अजीर्ण पित्तकी रुकावटसें भई दस्तकी कबजी जलोदर वगेरे रोगोंमें इसका साधारण उपाय दिया जाता है, कलेजेके रोगमें अच्छा फायदा करता है, मात्रा १ ड्रामसे १ औंस.

(३६० एप्सम सोल्ट-साइट्रेट ओफ मेगनीशिया, बनावट-कारबोनेट ओफ मेग्निशिया-बाइ कारबोनेट ओफ पोटास, नीबूका शरबत और सीट्रीकएसिड इन सबोंकी मिलावट. (मात्रा-(१) २ सें ४ ड्राम) अथवा जादा मेग्नीशिया एक प्याले [illegible] मिलाकर पानीमें एक अच्छा हलका उपाय लगता है.

(२) २ औंस पानीमें १ ड्राम मेग्नीशिया पानीमें मराबरकूं डूबकर ठंडक करता है.

(३) ०॥ ड्राम मेग्नीशिया तथा २० बूंद स्पिरिट ओफ नाइट्रीक इथरका १॥ औंस पाणीमें डाल पीनेमें बुखारकी गरमीमें ठंढक तथा पसीना लाता है.

(३६१ एमोनिया-(लायकर) अम्लविरोधी (खटासकूं दूर करता) उल्टी करानेवाला स्वेदल उष्ण वादीहर उत्तेजक कफघ्न (कफकूं निकालनेवाला) और चमडीपर फफोला उठानेवाला आमोनिया बदनमें गरमी और प्रकाश देता है, हिस्टीरीया शिरका दर्द मज्जातंतुओंकी नाताकती मूर्च्छा अतिक्षीणता अजीर्ण आम्लपित्त छातीका धडका ओर ओरतोंके गर्भाशयके रोगोंमें दिये जाता है, (मात्रा-ड्राम ॥ सें १ इससें जादा लेनेमें शिरमे दर्द तथा गुस्नी आती है, उल्टी होती है अधिकमात्रासें जहरी असर करती है, मुख्य बनावट-(१) एरोमेटिक स्पिरिट ओफ आमोनिया-अथवा साल वोले-टाईल, गुण) उष्ण वातहर हिस्टीरीया मूर्च्छा निपलाई अजीर्ण पेट चूंक वगैरे रोगोंमें दिये जाता है, मात्रा २ से १० बूंद (२) क्लोराईड ओफ एमोनिया अथवा साल एमोन्याक (देशी नाम नोसादर) गुण) यकृतशोधक वातहर ग्रंथीशामक तथा कफघ्न है, कलेजा तथा तिल्लीका शिरका चमका संधिवात पुराणी खासी तथा कामलेके रोगमें वापरते हैं, औरतोके स्तन पकते हैं वो तथा दुसरे सोजेपर और बद वगैरे गांठोपर उसके पाणी लोसनमें कपडा भिगाके धरा जाता है, पीणेकी मात्रा ५ सें ३० ग्रेन (३) कारबोनेट ओफ आमोनिया-उष्ण स्वेदल कफघ्न वामक उग्र नवसादर और चूना मिलाकर फूल उडानेसें ये दवा बणती है, शिरका दर्द हिस्टीरीया मूर्च्छा वगेरे रोगोंमें सुंघाणेसें जागृती आती है, आम्लपित्त श्वास खासी क्षय वगेरेमें दिया जाता है, मात्रा २ सें १० ग्रेन (४) लायकर आमोनिया एसेटेटिस-स्वेदल मूत्रल तथा शीतल है, कारबोनेट ओफ आमोनिया ३॥ औंस और एसेटिक एसिड १० औंस पाणी ५० औंस पहली दवाके भूकेपर दुसरी दवा धीमे २ डालनेसे ऊफण आती है, पीछे उसपर पाणी डालणा फुलप्रवाही ६० औंस होय इतना पाणी डालणा बुखारमें पसीना लाने-वास्ते डाया फोरेटिक मिक्चरमें इस दवाका उपयोग करनेमें आता है, (मात्रा १ से २ ड्राम) डायाफोरेटिक मिक्चर-लाईकर अमोनिया एसेटेटीस २ ड्राम स्पिरिट ओफ नाइट्रीक इथर २० बुंद और एकवा क्यांफर (कपूरका पाणी) १ औंस तीनोकों मिलाकर मिक्चर करणा (५) लिनिमेन्ट ओफ आमोनिया-लायकर आमोनिया (स्टोंग सोल्युशन ओफ आमोनिया २० औंस अच्छा पाणी ४० औंस) १ औंस अलशीका तेल २ औंस येदवा दोनों एकजगे मिलाणा अलशीके तेल बदले तिलका तेलभी काम देता है, उष्ण है, संधिवात तथा जकड गया अवयवोंपर मसलनेसें फायदा करता है.

(३६२ एलम-फिटकडी) स्तंभक सारक वामक तथा जंतुनाशक है, रसवाहिनी नसोकूं संकोच रसका शोषण करणा ये यालमका खास गुण है, पडी मात्रामें वो दस्त

तथा उलटी लाती है, खाणेकी मात्रा ५ सें १० ग्रेन है, फोडा तथा सोजेपर उसके जलका भीगा वस्त्र धरा जाता है, दुखती आंखोंमें उसकी बुंदे डालणीमें आती है, घाव तथा स्तन पाक धोनेवास्ते यालमकी जलकी पिचकारी मारते हैं, और मूंमे छाले होजाते हैं, तब इसके पानीसें कुरला कराते हैं, पोता तथा पिचकारीका लोसन-पाणी १ रतल और यालम तीनमासेसे ॥ तोला कुरला-पाणी १ औंस यालम ८ ग्रेन आंखकी बूंदे पाणी १ औंस यालम ५ ग्रेन एक ग्यालन गुडले जलमें थोडे ग्रेन एलम डालणेसें जल साफ होजाता है.

(३६३ एलोझ-देशी नाम एलिया) रेचक ऋतुदोपहर गर्भवंती औरतकूं तथा मस्सेवालेकूं देना नहीं एकस्ट्राकट टिंकचर और जुदी २ जातकी पिल्स वापरते हैं, जैसेंके पिल ओफ यालोझ एट यासाफीटीडा पिल ओफ यालोझ एन्ड आयर्न पिल ओफ यालोझ एटमहर वगेरे एकस्ट्राक्टकी मात्रा २ सें ६ ग्रेन टिंकचरकी मात्रा १ सें २ ड्राम और गोलीकी मात्रा ५ सें १० ग्रेन.

(३६४ एसिड-(अम्ल) एसिड बहोत तरेका होता है, थोडोंका नाम इहां लिखताहुं (१) एसेटिक एसिड (२) कारबोलिक एसिड (३) टार्टरिक एसिड (४) टेनिक एसिड (५) गेलिक एसिड (६) बेरेसिक एसिड (७) नाइट्रिक एसिड (८) फोसफोरीक एसिड (९) ल्याकटीक एसिड (१०) सल्फ्युरिक एसिड (११) साइट्रीक एसिड (१०) हाइड्रोक्लोरिक एसिड (१३) हाइडोस्यानिक एसिड (१४) क्राइसोफेनिक एसिड (१५) बेनझोइकि एसिड इस हरेकका वर्णन उस २ तरेके एसिडमें करनेमें आया है.

(३६५ एसेटिक एसिड-शीतल अम्ल टाटगंज दाद मस्सा वगेरे ऊपर लगाणेमें काम देता है, उससें लाल दाद जलदी अच्छा होता है, दाद वगेरे पर लगाणा होय तो उससें चोगुणा जल मिलाणा.

(३६६ आइन्टमेंट-(मलम) अंग्रेजी इलाजोंका मुख्य २ मलम लिखते हैं.

(१) सादा मलम-३ औंस सपेद मोम ३ औंस चरबी या घी तीन औंस विदामका तेल गरम पाणी ऊपर डाल छाणके मिलाना.

(२) टरपेन्टाइनका मलम-टरपेन्टाईन १ औंस रालका मूका ५४ ग्रेन लाई ॥ औंस मोम ॥ औंस गरमकर मिलाना.

(३) क्यान्थारिडीमका मलम-क्यानथारीडीस १ औंस अलशीका तेल ६ औंस पीला मोम १ औंस पट्टी दो चीज १२ कलाकतक सांमल रखकर पावकलाक गरम पानीपर गरमकर मर्दीन कपडेमें निचोपकर गरम करेमये मोमकेसंग मिला देना.

(४) क्रियासोटका मल्लम–क्रियासोट १ ड्राम सादा मलम १ औंस अफीम ३२ ग्रेन मिलाना.

(५) मांजूफल अफीमका मल्लम–मांजूका मलम १ औंस अफीम बत्तीसग्रेन मिलाना.

(६) मांजूका मल्लम–माजूफलका चूर्ण ८० ग्रेन बन्झो येटलार्ड १ औंस मिलाना.

(७) स्युगर लेडका मलम–स्युगरलेड १२ ग्रेन सादा मलम १ औंस मिलाना.

(८) रालका मलम–रालका चूर्ण ८ औंस पीलामोम ४ औंस बिदामका तेल २ औंस सादा मलम १६ औंस.

(९) गंधकका मलम–गंधक १ औंस बेन्झो एटेड लार्ड ४ औंस दोनोंकों मिलाना.

(१०) पारेका मलम–पारा रतल १ लार्ड १ रतल स्वेट १ औंस मिलाकर पारा दिखता बंध होजाय उहांतक घोटणा.

(११) (कम्पाउन्ड) पारेका मलम ६ औंस पीलामोम ३ औंस ओलीवतेल ३ औंस कपूरकाचूर्ण १॥ औंस मोमकूं गरमकर उसमें डालणा वोठरे तब उसमें भूका तथा पारेका मलम मिला देणा.

(१२) रेडआयोडाइड ओफ मर्क्युरीका मलम–१६ ग्रेन उसकूं १ औंस सादा मलममें मिला देणा.

(३६७ ओपीयम–अफीम) उष्ण पीडाशामक शूलहर वातहर ग्राही मूत्रल स्वेदल खूनके वेगकूं दबानेवाला नींद तथा नसा लानेवाला और मरदमी देनेवाला है, दवा मुजब अफीमका उपयोग बहोत होता है, बहोततरे बरते जाता है, मगजके बहोतसे रोगोंमें सराप पीनेसें भये उन्मादमें सूवा रोगके उन्मादमें धनुरवादी हिचका चसका खास श्वास कफ दम मरोडा अतिसार हैजा चूंक उलटी होजरीका घाव मर्मस्थानसें खूनका गिरणा सूवा रोग संधिवात दरद अनिद्रा वगेरे असंख्य रोगोंमें अफीम चमत्कारी काम करता है, मधुप्रमेहपर अफीम बहोतही फायदे बंद देखणेमें आया है, इपीका क्युआना, केलोमेल वगेरे कितने एक अंग्रेजी दवायोकेसंग अफीम बहोतही अकसीर है, अंग्रेजी दवायोंमें अफीमकी बहुतही दवाइयां बणती हैं, टिंकचर ओपीयम (लाडेनम) एकस्ट्राकट ओफ ओपियम हाइड्रोक्लोरेट ओफ मोर्फिन (और अफीमका लेप) अफीमका तेल वगेरे) केम्फोरेटेड टिंकचर ओफ ओपीयम अथवा जिसकूं प्यारे गारीकभी कहते हैं, वो कफ हांफणी खुलखुलिया बचेकी खामी और छातीके दरदोमें बहुत उपयोगी है, इस अर्कमें एक ओंसमें २ ग्रेन अफीम आता है, (मात्रा ३० में ६० बूंद) एकस्ट्राकट(सत्व)की ॥ सें० २ ग्रेन मोरफिनकी ½ सें ⅙ ग्रेन अफीम जहरी होनेसें बहोत संभालकर देणा चहिये फेफसेके रोगमें श्वास रुकके आता होय तो उसमें अफीम कभी देना नहीं.

(३६८ ओरेन्ज) (नारंगी) दीपन रुचिकर इन्फयुझन टिंकचर तथा सीरपके रूपमें दवातरीके वापरते हैं, (मात्रा–चाकी १ से २ औंस टिंकचरकी १ सें २ ड्राम और शरबतकी १ ड्राम.

(३६९ ओलाइव–ओलीव्हओइल वोस्पालड ओईल एसे नामसें पहचाणे जाती है, चमडीके खुजालवाला दरद अंगारसें जलेप्र लगाये जाता है, उसमें अलसीके तेल जैसा गुण है.

(३७० ओलियम–(तेल) अंग्रेजी चलते इलाजोंमें तेलरूपसें वपराती मुख्य २ दवायोंके नाम.

(१) ओलियम एनिसी–(अलशीका तेल) गुण–वातहर पेटकी वायु तथा चूंकपर दीजाती है, मात्रा १ सें ४ बुंद.

(२) ओलियम ओलीव–(स्पालड ओईल) ये तेल बहोतसे मलम तथा चुपडणेका तेल (लीनीमेन्ट) बनानेमें वापरते हैं, जलगयेपर जलण खुजालपर लगाये जाता है, इस तेलकी एवजीमें अलसीका तेलभी काम आता है.

(३) ओलियम क्याजुपुटी–इसके तेलका गुण वादी हरता उष्ण मात्रा १ सें ४बुंद

(४) क्रोटन ओइल–जमाल गोटेका तेल नेपालेके बीजोंमेंसें निकलता है, घाणीद्वारा, देशी वैद्य शुद्धकर दवा बणाते हें, डाकटरलोक तेल वापरते हैं, ये तेल बहोत तेज होता है, जलोदर वगेरे सखत कबजियतमें दिये जाता है, मात्रा १ सें २ बुंद.

(५) ओलियमजूनीयर–इसकाभी तेल गुण वातहर तथा मूत्रल है, मात्रा १ सें ४ बुंद पेटकी वायु चूंक सोजा जलोदर वगेरेमें दिये जाता है.

(६) टरपेनटाइन तेल–गुण) मूत्रल ग्राही रक्तस्थंभक कृमिघ्न रेचक वातहर तथा रोपण है, मात्रा १० बुंदोंसें ४ ड्रामतक दीजाती है मूत्रल तथा ग्राहीगुण है इसवास्ते ५ सें ३०टीपा कृमिघ्न और रेचक गुण है इसवास्ते १ सें ४ ड्राम टाइफस और टाईफोइड नामके बुखारमें उसकूं आफरा चढता है, ऐसे रोगोंमें दिया जाता है, रक्तपितका जाता भया खून इससे बंध होता है, कृमि चूंक जलोदर और दस्तकी कबजियतमेंभी फायदा करता है, छाती तथा पेटके सोजेपर उसका सेक करनेसें फायदा करता है, अंगारके जलणेसें भये घाव चांदीपर तिलके तेलमें इतनाही टरपेन्टाइन लगानेसें अच्छा होता है.

(७) ओलियमथियोब्रोमी–कोकमका तेल कोकमके बीजोंकूं पीलके ये तेल निकाले जाता है, इस तेलकूं जमाकर गुजरात वगेरेमें बजारमें, गोला, तईयार विकता है, ये तेलके लगानेसें हाथ पांवोकी ब्याऊफटी मिटती हैं.

(८) ओलियम फोसफोरेटम–[फासफोरसवाला तेल] बिदामके तेलकूं तीनसें डिग्री जितनी आंच देकर पीछे उसकूं छाण लेना ठंढाभयेबाद ४ औंस विदामके तेलमें

१२ ग्रेन फासफोरस मिलाना पीछे एक सो अस्सी डिग्री गरम पाणीमें उसकी शीशी धर देनी और हिलाणी जब फासफोरस गलके मिल जाय गुण पौष्टिक मात्रा ५ सें १० बुंद.

(९) पीपरमींटका तेल-(ओल्यम मेन्थी पीपरीटी) उष्ण वातहर मात्रा १ से ४ बूंद पेटकी वायुमें तथा योगवाही दवामुजब दुसरी दवायोंके संग वापरते हैं.

(१०) कोडलिवर ओइल-क्षय कंठवेल नाताकती तैसें चमडीके रोगमें फायदा करता है, जादा वर्णन कोडलिवर ओईलमें करनेमें आया है, गुण-पौष्टिक मात्रा १ सें ८ द्राम आर्य लोकोंके नहीं खानेयोग्य है.

(११) केस्टरओइल-एरंडीका तेल रेचक मात्रा १ द्रामसें १ औंस.

(३७१ कलंवा-कलंमाका टिंकचर २½ औंस कलंमा २० औंस प्रुफस्पिरिट पहली १५ औंस स्पिरिटमें कलंमेके चूर्णकूं चोवीस घंटे रखकर हिलाना पीछे छाणकर बाकीका ५ औंस स्पिरिट डालणा मात्रा ½ से २ द्राम दीपन पाचन मंदाग्नि नाताकती उलटी अजीर्ण वगेरे रोगोंमें वापरते हैं मंद जठराग्निसें जिसका वदन फीका पडगया होय वेर २ दस्त होता होय और अजीर्णके दुसरे चिन्ह मालुम पडतें होय तब कलंमा तथा टींकचर फेरीका उपयोग वहोत फायदेवंद है, कलंमेके टिकचर सिवाय इन्फयुझन (चा) एक-स्ट्राकट (घन) और चूर्णभी इसका वापरते हैं.

(३७२ क्राइसोफेनिक एसिड-ये एसिड दादकेवास्ते उत्तम इलाज है, उसका ओइंटमेंट (मलम) होता है, क्राइसोफेनिक एसिड५ ग्रेन एसेटिक एसिड १ वूंद टींकचर आयोडीन १ वूंद ओइंटमेंट ओफ आयोडिड ओफ मर्क्युरी एक ग्रेन और वैसे लाइन १ औंस तमाम दादोंकूं ये मलम मिटाता है.

(३७३ क्याटेकू-करथा) टिंकचर तथा चूर्णभी काम देता है. टींकचरकी घनावट २½ औंस करथेका भूका २० औंस प्रुफस्पिरिट १ औंस तजका चूर्ण सातदिन भीगे रखणा छाण लेना मात्रा ३ सें २ द्राम गुण ग्राही स्तंभक शीतल अतिसार रक्तातिसार वगेरेमें वापरते हैं.

(३७४ क्यालोमेल-(हाइड्रारजीरी सव कलोरीडम्) रेचक तथा शोधक है, थोडी मात्रामें वो पित्त वगेरे रसका शोधनकर शरीरकी विगडी दशाकूं धीमें २ सुधारता है, मात्रा) शोधक गुण है, इसवास्ते २ सें १ ग्रेन रेचकगुण है, इसवास्ते २ से ६ ग्रेन रेचकतरीके इकेला क्यालोमेलका उपयोग करणा अच्छा नहीं है, शोधक गुणवास्तेभी वहोत दिनोंतक जारी रखणा नहीं क्योंके इससें मूं आजाता है, वचोंका बुखार कृमि मगज तथा छातीके रोगोंमें वापरते हैं, बुड्ढे अदमीके बुखारमें किनाइन वगेरे दवा सरू करते केलोमेल और एन्टीमोनियल पाउडरएकेक तीनग्रेन २ देनेसें फायदा होता है, (ब्लयाकवांस) चूनेका पाणी १० औंस क्यालोमेल ३० ग्रेण दोनोंके मिलाणेसे कालापाणी होता है उसका पोता गरमीका जखम मिटता है और सोजा होता है, सोभी ऊतरता है (वफारा) अंगारपर चार पांच ग्रेन क्यालोमेल डालकर उसका

धूंआ लेना धूआं लेते वखत गलेसें ऊपरका भाग खुला रखकर बाकी सब बदन कपडेसें ढक लेना बहोत दिन इसका बफारा लिये जाय तो मूं आजाता है, इसमें विस्फोटक वगेरे फूटकर बदनकूं सडानेवाली गरमी अच्छी होती है, लेकिन् पारे की कोईभी दवा खाकर अथवा धूंआ लेकर जादा गुंआणा इससें फायदेके बदले नुकशान बहोत है, जरासा मूं आवे थोडा मसूडे फुले तब तुरत दवा बंधकर देनी.

(३७५ क्युवेब–कबाबचीणी–मूत्रल तथा शीतल है, प्रमेह तथा इसमें उसका बहोत फायदा देखा है, खास गुण पुराणा प्रमेहपर बहोत अच्छा है, चूर्ण तेल अथवा इसका अर्क फायदेमंद है, चूर्णकी मात्रा २० ग्रेनसें २ ड्राम दूध अथवा जलसें देणा तेलकी मात्रा ५ सें २ बुंद टींकचरकी मात्रा ½ सें २ ड्राम ७ कबाबचीणीका चूर्ण ॥ भर फिटकडी २ वाल और कत्था २ रतीभर दिनमें तीन वखत दोतीन दिन हमेस लेनेसे प्रमेह तथा प्रदर गिरता बंद होता है, कबाबचीणी मस्सेके खूनकूं बंध करता है, इस रोगमें माखण मिश्रीकेसंग इसका चूर्ण लेना.

(३७६ कलोरल–(क्लोरलहाईड्रेट) उसके सुपेद चिलकते पासें अथवा छोटे २ टुकडे होते हैं, पाणीमें डालणेसें पिगल जाता है, नींद लाणेकूं खासतरीके दिये जाता है. क्लोरल अफीमकीतरे नींद लाता है, लेकिन् दस्त कबज नहीं करता लुस्सा नहीं लाता बसका संधिवाय आंकसी धनुर्वात सन्निपात हिचका चित्तभ्रम और बेचेनी तथा अनिद्रा वाले रोगोंमें ये दवा बहोत फायदा करती है, धनकिया वादी कुचीलेका जहर चढनेसें अदमीका बदन खेंचीज जाता है, उसकूं एकदम आराम करता है, अफीमकीतरे बहोत दिनोतक लेनेसें उसकी टेव (आवरा) पड जाता है, जादा मात्रा लेनेसें जहरी चीज है, मात्रा–खेचा तान हिचका वगेरे मिटाणेकूं ५ से १० ग्रेन नींद लानेकूं १५ से ४० ग्रेन लेकिन वीस ग्रेणसें जादा देते बहोत हुसियारी रखणी चहिये मिश्रीके जल में गालकर क्लोरल देना जादे अच्छा है; केमीष्टके उहां इसका शरबत (सीरप ओफ क्लोरल) तयार मिलता है, उसमें १ ड्राम शरबतमें १० ग्रेन क्लोरल होता है, वो वापरणा सुगम पडता है.

(३७७ क्लोराडाइन–ग्राही पीडाशामक दीपन पाचन और आंकसी तथा शूलकूं मिटानेवाला है, क्लोरोडाइन कालेरंगका जाडा प्रवाही होता है, वो मोरफीया कलोरोफोर्म इन्डियन हेम्पहाइड्रो स्यानिक एसीड पेपरमिन्ट और स्पिरिटका बणता है, स्वादमें अच्छा होता है, पेटकी आंकसी अतिसार खासी दम वगेरे रोगोंमें वापरनेमें बहोत लोक धरमें हैं, इसकूं देती वखत ऊमर तथा रोगका बराबर विचार करणा चाहिये मात्रा तथा पीडा शामकतरीके ५ से १० बूंद कफ शरदी ईन्फल्युएन्झा तथा एमु बुखारमें दिये जाता है, आंकसी मिटाणेकूं १० सें २५ बूंद दम खासी वगेरेमें

इतनी मात्रा दी जाती है, ग्राहीपणेकूं १५ सें ३० बूंद हैजा अतिसार मरोडमें ये मात्रा देणा चहिये बचोंकूं एकाएक देना नहीं जो कभी देना पडे तो बहुत सावचेतीसें ऊमरका विचार करके देणा चहियें एक वर्षके बचेकूं १ बूंद १–३ बरसके बचेकूं २ सें ४ बूंद इस क्रमसें ८–१६ वर्षवालेकूं ८ सें २० बूंद देणा, अनुपान–पाणी शरबत अलशीकी चा अथवा खांडमें बूंदे मिलाकर देणा क्लोरोडाइनकी बाटलीकूं मजबूत बंध रखणी और हिलायकर लेनी.

(३७८ क्लोरोफोर्म–वातहर मादक शामक खेंचाताणकूं बंध करता बेहोस करनेवाला है, जरूरपणे इसका उपयोग शरीरकूं काटणे वाढणेकी वखत बेशुद्ध करनेका है, लेकिन् वो उपयोग अनुभवी डाकतरोका है, इसके अलावा हैजा अतीसार चूंक वगेरे रोगोंमें वो दिये जाता है, मात्रा–१ सें ५ बूंद बचोंकों ये दवा पीनेकूं देना नहीं, १ सें ५ बूंद खांडमे मिलाकर देनेसें उलटी एकदम बंद होजाती है, दम तथा हैजेमें गुंदके पाणीमे ३ से ५ बूंद मिलाकर देना, बनावट (१) कमपाउन्ड टिंकचर ओफ क्लोरोफोर्म–क्लोरोफोर्म २ औंस रेकटीफाइड स्पिरिट ८ औंस इलायचीका अर्क १० औंस तीनोंकों मिलाणा मात्रा–२० से ६० बूंद (२) स्पिरिट ओफ क्लोरोफोर्म–क्लोरोफोर्म १ औंस रक्टिफाइड स्पिरिट १९ औंस दोनोंकों मिलाणा मात्रा २० से ६० बूंद (३) लिनिमेन्ट ओफ क्लोरोफोर्म–क्लोरोफोर्म २ औंस लिनिमेन्ट केम्फर २ औंस दोनोंकों मिलानेसें लिनिमेंट याने तेल बणता है, वो बदनके किसीभी जगेका दरद जलण तथा खुजालपर लगाणेसें मिट जाता है.

(३७९ काश्या–दीपन पाचन ज्वरघ्न बुखार मंदाग्नि तथा कृमिपर चा घन तैसें अर्क दिये जाता है, तांतू जैसें कृमियोंकों बिलकुल मिटाता है, पीछे जुलाब देकर निकाल देते है.

३८० क्विनाईन–(सलफेट ओफ किनाइन) ज्वरहर पौष्टिक पाणीमें बराबर मिलता नहीं सल्फ्युरिक एसिड १० बूंद और क्विनाइन १० ग्रेन इय मिल जाता है, (अच्छे क्विनाइनकी परिक्षा)–एक चकूके पाणपर क्विनाइन धरकर उस चकूकूं स्पिरिट लेम्पर धरणा चकूका पाना लाल जब होगा तो किनाइन तो उड जायगा उस चकूपर फकत काला दाग रह जायगा अगर पिछाडी चकूपर कुछ पडा रह जाय तो समझणा के क्विनाइनमें किसी चीजका मेल है, क्विनाइन शरीरमें क्या क्रिया करता है, वो डाकटरोके अभीतक पूरा समझमें नहीं आया है, लेकिन निरोगी खूनमें क्विनाइके मिलता कोइ पदार्थ देखनेमें आया है, एसा रसायणी विद्वानोका कहणा है, उसकूं इसवास्ते क्विनाइन खूनमेंके उसपदार्थकूं पुष्टि देता है बुखारमें खूनमेका इसतरेका पदार्थ कम होजाता है क्विनाइन पीछा पणा देता है, इसवास्तेही क्विनाइन सब बुखारमें अकसीर उपाय ठहरा है, जादातर मेटेरियल

फीवरमें और विषम ज्वरमें जादाही अकसीर है, वदनकी गरमीकूं कम करता है, उसके संग ज्ञानतंतुओंकोंभी मंद करता है, मेलेरिया बुखारमें खून में सपेद रजकण वढते हैं, किनाइन उसकों रोकता है, किनाइन जहरी कीडोंकों मिटाता है, उससें वदनके सडते भागकूं रोकता है, चसका तैसें संधिवाय जैसे रोग सो बहोतसी वखत दिखाइ देता है, और पीछै मिट जाता है, उसमेंभी किनाइन अच्छा फायदा करता है, इसका उपयोग करते एक दो बात ध्यानमें रखनेकी है, बुखारमे किनाइन सरू करती वखत एक दोय दस्त आवै पेट साफ होय एसा परगेटिवले लेना चहिये दुसरी वात इय हैके वदनमें ठंढ अथवा बुखार (गरमीका) जोर होय तब किनाइन नहीं लेणा दस्तका खुलासा होय पसीना आनेलगे तब किनाइन लेना डाकटरकी सलाह नहीं होय तब किनाइन लेना होय तब बुखार नरम पडे और पसीना आये पीछै अथवा चमडी भीजीसी होजावे तब लेना बडे बुखारमें जब शिर दुखता होय नाडी जोरमें होय और चमडी सूकी होय तब किनाइन बिना डाकतरके हुकम बिगर कभी लेना नहीं कितनी वेर एसाभी बणता है, शरीरमें क्षारकी व्याप्ति भये पीछेही किनाइनका पूरा असर होता है, इसवास्ते किनाइनकेसंग क्षार गुणकी दवाइयें जरूर मिलाकर देणा चहिये किनाइन जुदे २ शरीरमें जुदी २ असर करती है, कोईकूंवडी मात्रामेंभी चहिये एसा असर नहीं करता और कोईकूं थोडी मात्रामें शिरमें तथा कानमें अवाज तथा बहिरापणा लाता है, चमडीपर दाग उठ जाता है, मात्र एक ग्रेन किनाइनसें एसा अहवाल बणनेका किसी २ जगे दाखला बण आता है, जब एसा अहवाल वने तब मात्रा कम करणी अथवा बंधकर देणा किनाइनका वडा डोझ शिरमें अवाज कानोंमें वहरापणा आंखोमें अंधेरा लाता है, चहरा और आंखे लाल चोल होजाती है, ये असर थोडी २ कम होकर बंध होती है, लेकिन किसी २ वखत कानकी अवाज वगेरे निशानि या हमेसांकेवास्ते रह जाती है (मात्रा ३ से १० ग्रेन) अथवा वेर २ नहीं देना होय तो इससेभी जादा मात्रा दी जाती है, अनुपान-सामान्यतरे पाणीकेसंग लिये जाता है, लेकिन अच्छा अनुपान नींबुका रस है, अथवा सल्फ्युरिक एसिड है, कडवा बहोत होता है, अगर लिया नहीं जाय तो गूंदके पाणीमें अथवा ग्लिसेराइनसें गोलियां बांध लेनी बुखार सिवाय पाचन क्रियापरमी अच्छी असर करती है, और उससें डिस्पेपस्या नामके अजीर्णमें फायदा करती है, नाताकती दूर करनेवास्ते किनाइन ऊपर लिखी मात्रासें आधे वजनमे लेना मेलेरियावाली हवामें हमेस एकाध ग्रेन किनाइन लेणेसें मेलेरियाकी जहरी असरसे बचता है.

(३८१ काजुपुटी ओईल-पेटकी चूंकपर दीजाती है, मात्रा १ सें २ बूंद अथवा ऊपर चुपडे जाती है.

(३८२ कापनो-हीरादक्खन-आदी रक्तस्तंभक शीतल-अर्क तथा चूर्ण वापरते हैं,

टिंकचर–हीरादखनका चूर्ण २ औंस रेक्टिफाइड सिपरिट२० औंस ७ दिन भिगाकर छान लेना और सिपरिट २० औंसमेंसे कम होय इतना फेर डालकर २० औंस पूरा करना मात्रा १ सें २ ड्राम कम्पाउन्डपल्वीस–३॥ औंस हीरादक्खण ।. औंस अफीम १ औंस तजका चूर्ण इन तीनोंका मर्दीन चूर्ण मात्रा ५ से १० ग्रेन दस्त खून गिरणा तथा उलटीमें देते है.

(३८३ कार्डेमम–इलायची दीपन पाचन रुचिकर टिंकचर कोर्डेमम दुसरी दवायोंके संग दिये जाती है मात्रा ½ सें २ ड्राम.

(३८४ कारबोलिक एसिड–दाहक रोपण जंतु तथा दुर्गंध नाशक बुखारकूंभी मिटाता है, उलटी ज्वर रक्तदोषमें खाणेमें देते हैं, ग्लिसेराइन ४ औंस कारबोलिक एसिड १ औंस मिलाणा मात्रा ५ सें १० बूंद मुख्य उपयोग जखम घाव भरणेमें काम देता है, कारबोलिकका प्रवाही-१ भाग कारबोलिक एसिड और ४० भाग पाणी सांमल करणा जखम उपदंशकी चांदी दुर्गंधी घाव हाड गंभीर नासूर भगंदर वगेरे रोगोमें धोनेवास्ते तथा पिचकारीवास्ते बहोत उपयोगी है, कारबोलिक तेल-१ भाग एसिड २० भाग मीठातेल मिलाना ऊपर लिखे तमाम चमडीके रोगोंमें इस तेलकी पट्टी मारणेसें बहोत जलदी भराव लाता है, जो घाव चिक २ तें होय ऐसे घावपर पहली आयोडोफोर्म भुरकाकर पीछे कारबोलिक तेलका कपडा भिगाके धरणा साबूमें तथा बहुतसे मलमोंमें कारबोलिक एसिड मिलानेसें चमडीके रोगोंमें बहुत फायदाबंध होता है, खानेमें उसकी मात्रा ½ से २ ग्रेन है, जादा लेनेमें आवे तो जहरके चिन्ह बताता है, मरभी जाता है.

(३८५ क्रियासोट–उलटी तथा दस्तकूं रोकता है, दुर्गंधका नाश करता है, दांतके दुखणेकूं बंध करता है, उसका मलम दाद खुजली खाजपर काम आता है, मात्रा १ सें ३ बूंद क्रियासोट मिक्श्चर १ सें २ औंस.

(३८६ क्रीम ओफ टार्टर–दुसरा नाम एसिड टार्टरेट ओफ पोटास-बाईटार्टरेट ओफ पोटाश सारक शीतल मूत्राशयपर उसकी असर अच्छी होती है, बुखार हरस जलोदर तथा दस्तकी कबजीमें दिये जाता है, मात्रा २० से ६० ग्रेन (रेचक) मात्रा १ से ४. ड्राम गंधकके संग मिलाकर हरसमें दिये जाता हे, गंधक ३ ड्राम और क्रीम ओफ टार्टर १ ड्राम दोनों मिलेभये मात्रा १ ड्राम अनुपान सहत अथवा शरबत.

(३८७ केम्फर–कपूर जंतुनाशक निद्रानाशक ज्वरन्न स्वेदल कफन्न मूत्रल चमडीकी क्रिया और पसीनेकूं बधाता है, जादा मात्रा देनेसें वो खूनके वेगकूं नरमकर आंकडी तथा शूलकूं मिटाता है, हिस्टीरिया दम संधिवाय खुलखुलिया खासी छातीका धडका वगेरे रोगोंमें देते हैं, जलणकूं मिटाता है, नींदकूं उत्तेजन देता है, शिरके दरदकूं कम

करता है, और शरदीमें फायदा करता है, मात्रा–२ सें ४ ग्रेन (बनावट) १ केम्फरवाटर डिस्टील्ड वोटरसें भरी शीशीमें थोडा कपूर डाल थोडे घंटाओं तक केम्फरका जल खुसबोदार होता है, येजल इकेला दवातरीके दिये नहीं जाता लेकिन डाया फोरेटिक मिकश्चर जैसी बनावटोंमें उसका सादे जलके ठिकाने उपयोग होता है, (२) स्पिरिट क्याम्फर–१ औंस और १ ड्राम रेक्टीफाइड स्पिरिटमें १ ड्राम कपूर डालनेसें स्पिरिट क्याम्फर बणता है, शरीरके अंदर गरमी लानेवास्ते हिस्टीरीया वगेरे ऊपर लिखे रोगोंपर पीनेमें तैसें बाहर जलके संग (३) कम्पाउन्ड टिंकचर ओफ क्याम्फर अथवा पेरी गोरिक एलीक्सीर अफीम ४० ग्रेन लोबानका फूल ४० ग्रेन कपूर ३० ग्रेन एनिसी ओइल । ड्राम प्रुफस्पिरिट २० औंस ये पांच चीजोंकों एक बाटलीमें ७ दिन रख छोडनी और बाटलीकूं बखतो बखत हिलाना पीछे छाण लेना इस दवासें हेजा अतिसार वगेरे रोगोमें दिये जाता है, मात्रा १५ सें ६० बूंद अर्थात १ ड्राम बच्चेकूं ३।५ बूंद थोडी मिश्री ऊपर भुरकाकर देणेसें कफकूं बहोत फायदा करता है, खुलखुलिये खासीमें बुखार होय तो उसकूं इपीकाक्यु आन्हावाइन अथवा ओन्टीमोनियल वाइनकेसंग दिये जाता है.

(३८८ केशकारासे ग्रेडा–रेचक तैसें पौष्टिक है, बंधकुष्ट तथा उससें भये हरस रोगमें ये दवा देनेसें दस्तका खुलासाकर सफरेकूं साफ करता है, लिक्विड एकस्ट्राकट ओफकास्कारासे ग्रेडा दवामें दिये जाता है, उसकी मात्रा १ ड्रामकी है.

(३८९ केस्टर ओइल–एरंडीका तेल ताजा पेटमें चूंक जलण पैदा करता नहीं और दस्त अच्छीतरे लाता है, इसवास्ते नाजुक मिजाजवालेकूं ये जुलाब अच्छा है, साधारण कबजियतमेंभी दस्त साफ लानेकूं ये दिया जाता है, वेर २ देनेमें आवे तो मात्रा कम करणी चाहिये दुसरी वखत जुलाब देनेसें कम असर करता है, इसवास्ते मात्रा वधाणा पडता है, लेकिन ये बात एरंडीके तेलमे नहीं है, इसकूं तो वलके कमही देना चहिये एरंडीके तेलमें फकत धकबो आया करती है, ये एक एब है, इसवास्ते मूंमें पहली नींबूके रसकी बूंदे डाल पीछे इसकूं पीवै अथवा पेपरमींटके पाणीमें डालकर पीणा अथवा तेल जितनाहीं ग्लीसराइन मिलाकर तजके अर्कसें बूंदोंसे सुवासित करणेसें उसकी खराब गंध मिट जाती है, जो क्यास्टर ओइल ताजा और अच्छा नहीं होय तो पेटमें गरमी आंकडी और मरोडा पैदा करता है.

(३९० क्रोटन ओइल–जमाल गोटेका तेल अतिरेचक तथा दाहक है, इससे पेटमें जटण होती है, जादामंद कुष्टमे तथा जलोदरमें मिश्रीमें गोली बांधकर देते हैं.

(३९१ कोडलीवर ओइल–कोड नामकी मछलीके कलेजेका ये तेल बणता है, ...इसकुं पौष्टिक कहते हैं, क्षय नाताकनी छातीके दरदमें बहोत देते हैं,

मात्रा १ से ८ ड्राम ये तेल पचनेमें भारी है, और कितनोंको अजीर्ण होकर दस्त होने लगता है, दूधकेसंग अथवा चिरायतेके चासंग अथवा पेपरमेंटके जल संग देते हैं, जीमे बाद तुरत पीनेसे खुराककेसंग वो पच जाता है, बुखारमें तथा दस्तकी बेमारीमें देनेसें नुकशांन करता है, कोडलीवर ओइल विथ माल्टाइन नामकी दुसरी बनावट इसकी होती है, वो स्वाद और गुणमें जादा वो लोक कहते हैं, इस वखत माल टाइन जादा वापरते हैं.

(३९२ कोपर) (सल्फेट ओफ कोपर) नीलाथोथा वामक ग्राही दाहक विष आसमानी रंगका टुकडा पासदार मिलता है, मात्रा ग्राही गुणवास्ते ¼ से २ ग्रेन वमनवास्ते ५ सें १० ग्रेण पेटमें कोइ २ जगे संग्रहणी तथा अतीसार में दिये जाता है, लेकिन उसका मुख्य उपयोग बाहर लगाणेमें आता है, आंखका लोसन–१ औंस पाणी १-२ ग्रेन नीलाथोथा जलमें डालनेसें आसमानी रंगका पाणी होजाता है, आंखकी खीलपर दुसरे २ दिन नीलेथोथेका कटका फेरणा ऊपरसे लोसनकी बूंदे डालणी प्रमेह सुजाकमें इसकी पिचकारी दिये जाती है, छींक जब हाजर नहीं होय तब जहर खायेको नीलेथोथेकी उलटी देणेमें आती है.

(३९३ कोपेवा–इस नामका दरखत होता है, उसमेसे तेल जैसा निकलता है, उसकूं बालसम कहते है, ये रस मूत्रल तथा बस्तिशोधक है, प्रमेह सुजाकपर मुख्य चलता है, प्रमेहकी जलण कम होय तब सरू करणा प्रमेह प्रदरके पुराने मरजपर बडा फायदेवंद है, मात्रा ५ से २० बूंद.

(३९४ कोलशीकम–वातहर तथा रेचक है, मात्रा २ सें ८ ग्रेन गाउट तथा संधिवायपर उसका उपयोग साधारण है, यकृत् तथा मलकी कबजी और अजीर्णपरभी वापरते हैं, उसका एक स्ट्राकटभी वापरते है, मात्रा ½ सें २ ग्रेन.

(३९५ कोलोसिथ–देशी नाम कडवा तूंबा गुण रेचक है, जलोदर मलावरोध तथा अजीर्णमें जुलाब दिये जाता है, उसके एकस्ट्राकटकी मात्रा ३ से १० ग्रेन.

(३९६ गम–देशी नाम गूंद मूत्राशयका वरम अथवा दाहमें तैसें पचोंके धातु गिरणेमें दिये जाता है, कफकेवास्ते मूंमे रखकर चूसकर रस ऊतारणा अच्छा है २० औंस जवका पाणी और १ औंस गम मात्रा ६ औंस.

(३९७ ग्लिसराइन–चमडीका रोग ऊपर लगानेमें विशेषकरके वापरते हैं, ग्लिसराइन पेटकी खुजालपरभी कुछ इक असर करता है, चमडीका दाह स्तनपाक जीभ तथा मूकाजखम गलेका पकणा वगेरे रोगोंपर ग्लिसराइन थकेला अथवा टेनिक एसिड टंकण फिटकडी कारबोलिक एसिड वगेरे दवायोमें वोइभी एकाधकेसंग मिलाकर लगाये जाता है, जिससें चमडीकी जलण मिटती है, इस मिलावटमें ग्लिसराइन ४ भाग और

मिलानेकी दवा १ भाग लेणी साबू पणानेमें उसका उपयोग होता है, चमडीका दाद तथा स्तनपाक कपडे भिगाकर धरनेसें १ औंस ग्लिसराइन १ ड्राम टंकण और २० औंस पाणी तीनोंकों मिलाना.

(३९८ गोआपाउडर-(क्रिसारोबीन) दाद विर्चाचिका वगेरे मसलणेसें मिटता है, आंखमे जानेसें नुकशान करता है.

(३९९ गोल्स-देशी नाम मांजूफल गेलिक एसिड टिंकचर ओफ गोल्स तथा मलम काम देता है, ग्राही है, लोशन तथा कुरलेवास्ते २० औंस पाणी २ ड्राम मांजुका भूका अतिसार तथा खून गिरते धंद करनेकू मात्रा ५ सें १५ ग्रेन गरमपाणीकेसंग मस्सेमें तथा सुपेद प्रदरमेंभी दिये जाता है, मात्रा १ ड्राम अनुपान सहत १ औंस मांजुलोसन तरीके टंकण जैसा काम करता है.

(४०० चिरेटा-देशी नाम चिरायता पौष्टिक तथा पाचन मंदाग्नि तथा नाताकती वास्ते तैसे लीवर यकृत् मंद पड गया होय उसमे ये चिरायता बहुतही फायदा करता है, मात्रा-चिरायतेका भूका ½ औंस और २० औंस पाणी उनोकों वीस मिनटतक उकालना उसमेंसें १ वाइनग्लास फुल याने दोदो औंस उकाली सवेर सांझ भोजनके आधी घंटा पहले पचेकूं १ ड्राम.

(४०१ चोक-(क्रीटाप्रिपेरेटा) देशी नाम चूक ग्राही तथा आम्लविरोधी उसका चूर्ण तथा मिकश्चर दिये जाता है, एरोमेटिक पाउडर ओफचोक-४ औंस तज ३ औंस जायफल ३ औंस केशर १॥ औंस लोंग १ औंस इलायची २५ औंस मिश्री ११ औंस चोकका चूर्ण करणा मात्रा १० से ६० ग्रेन एरोमेटिक पाउडर ओफ चोक एन्ड ओपियम १० औंस चोक ⅛ औंस अफीम मात्रा १० सें ४० ग्रेन.

(४०२ जनझ्यन-ज्वरघ्न पाचक रुचिकर पौष्टिक कम्पाउन्ड इन्फयुझन (चा) मात्रा ½ सें ड्राम.

(४०३ जालप-रेचक है, मात्रा १० से ३० ग्रेन.

(४०४ जींजर-सूंठ उष्ण दीपन पाचन तथा वातहर दवामें उसका टिंकचर (स्ट्रोनाटिंकचर ओफ जींजर) वापरते हैं, होजरीमें गरमी लाणेवास्ते तथा अतिसार और पेटके चूंकमे दीजाती है, खट्टी दवायोकेसंगभी दीजाती है. मात्रा ५ से २० बूंद.

(४०५ झींक-(जसत) ग्राही रोपण तथा पौष्टिक है, विशेषकरके जखम खुजाल लुखास विस्फोटक वगेरे चमडीके रोगोंपर उसकी भुकनी दबाते हैं, अथवा मलम लगाये जाता है, (१) सल्फेट ओफझिंक (जसतका फूल) सुपेद पासादार मही २ होता है, वो प्रमेह प्रदर ऊपर पिचकारी मारणेवास्ते तथा आंखोंमें बूंदे डालने बहुत उपयोगी है, झिंकलोशन आंखमे आंजणेवास्ते अथवा भीगा वस्त्र धरनेवास्ते

१ औंस पाणी अथवा गुलाब जल और १ से ४ ग्रेन सल्फेट ओफझिंक जहर खायेपर तुरत उलटी कराणी होय तो काम देता है, उलटी कराने मात्रा १५ ग्रेणमें ॥ ड्राम अनुपान गरम पाणी.

(४०६ टरपेन्टाइन–मूत्रल ग्राही रक्तस्तंभक कृमिघ्न रेचक तथा वातहर है, टरपेन्टाइनका तेल कोइ २ वखत पीनेकी दवामें वापरते हैं, पेटका तथा छातीका तथा नसोंके दुखनेमें टरपेन्टाइन लगानेमें काम देता है, छातीकी शूल पेटकी आंकसी तथा आफरा और हैजाके पेटके आफरनेपर वांइटोपर ममलते हैं, अथवा गरम पाणीमें फुलालीनका टुकडा भिगाकर निचोडकर उसपर ये तेल छिडककर दुखती जगोंपर धरनेसें तुरत दरद मिट जाता है, मात्रा–मूत्रल तथा ग्राही गुण है, इसवास्ते ५ से ३० बूंद कृमिघ्न तथा रेचक तरीके १ से ४ ड्राम टरपेनटाइनका मलम तथा लिनिमेन्टमी घणता है.

(४०७ टार–देशीनाम तार-कील-टारका मलम कील ५ औंस पीलामोम २ औंस दोनोकूं गरमकर मिलाणा खुजली जखम विस्फोटकमें वापरते हैं.

(४०८ टारटरिक एसिड–शीतल सोडावाटर धणानेमें काम आता है, ½ ड्राम सोडा और एसिड २५ ग्रेन टारटकि एसिड २ ड्राम शुरा १½ आंस और नींबूका रस आधा चमचा अथवा ३० बूंद पाणीकेसंग मिलाकर वो पाणी बुखारकूं मिटाता है.

(४०९ टेनिक एसिड–ग्यालिक एसिडकी तरे ये एसिडमी मांजुसें घणता है, बाहार लगानेमें काम देता है, प्रदर रोगमें इसकी पिचकारीसें फायदा होता है, गलेमें अथवा गालके अंदर, सोजा होता है, उसपर सहतसे टेनिक एसिड अंगलीसें अथवा पीछीसे चुपडणेसें तुरत आराम होता है, दुखती आंख तथा खीलमेंभी टेनिक एसिडकूं भरनेसें अथवा एकेक औंस जल तथा ग्लिसेरीनमें १० ग्रेन टेनिक एसिड डाल बूंदोसें फायदा होता है, टेनिक एसिड टिंकचर ओपियम और ग्लिसेरी इनकी मिलावट कानमें बूंदे डाले जाती है, उससें कानका पीप तथा शूल मिटती है, दांतके लगाणेसें दांत साफ होता है.

(४१० डीजीटेलिस–गुण मूत्रल तथा रिदयकूं उत्तेजक है, पत्तोके चूर्णकी मात्रा ॥ से १) क्वांकी मात्रा–२ से ४ ड्राम अर्ककी मात्रा ३० बूंद ज्वररक्ताशयका दरद जलोदर तथा पेशाबकूं छूटसें लानेवास्ते वापरते हैं.

(४११ डोवर्स पाउडर–ओपियम (अफीम) और इपीकाक्युन्हाकी मिलावटकूं डोवर्स पाउडर कहते हैं, दुसरा नाम कम्पाउन्ड इपीकाक्युन्हापाउडर है, बनावट ॥ औंस इपीकाक्युआन्हा ॥ औंस अफीम ४ औंस सल्फेट ओफ पोटास तीनोका चूर्ण करणा मात्रा ५ से १५ ग्रेन बुखार दस्त खांसी संधिवात वगेरे रोगोंमें फायदा करता है, मेलेरियाकी दवामें जब आंतरोंकूं इजा पहुंचती है, और बुखार आता

है, तब डोवर्स पाउडरकेसंग क्वीनाइन देते हैं, फायदा करता है, मात्रा–डोवर्स पाउडर २८ ग्रेन क्वीनाइन २ ग्रेन डोवर्स पाउडर लीयां पीछे थोडी देरतक पतला पदार्थ पीणा नहीं, नहीं तो उलटी होती है, क्यूंके इपीकाक्युआन्हामें उलटीका गुण है.

(४१२ थाइमोल–अजमेका फूल उष्ण वातहर रोपण तथा दुर्गंधनाशक है, मात्रा ॥ से ३ ग्रेन १ भाग फूलकूं एक हजार गुणे जलमें मिलाकर वापरणा.

(४१३ नक्सवोमिका–देशी नाम कुचीला वातहर पौष्टिक कृमिघ्न मात्रा १ से ५ ग्रेन एकस्ट्राकटकी मात्रा ॥ से २ ग्रेन अर्ककी मात्रा १० से २० बूंद.

(४१४ नाइटर आफ पोटाश देशी नाम सोराखार उसकी नाइट्रीक एसिड नाइट्रो-म्युरियाटिक दवाओं बणती है, बजारमेंका सोरेखारकूं साफ करनेकूं गरम पाणीमें पिगलाकर छाणकर ठरणेदेना तब उसके पासे नीचे बंध जाते हैं, ऊपरका पाणी फेंक देना ये बडा ठंढा खार है, मूत्राशय तथा चमडीपर उसका खास असर है, इसगुणसें बुखारमें कामलेमें संधिवायुमें जलोदरमें तथा वरममें वापरते हैं, बुखारकी गरमी मिटाणे सोरा २ ड्राम दो नींबूका रस पाणी ४० औंस तथा थोडी खांड इन सबोंकों मिलाकर उसमेंका थोडा २ पाणी पीणा मात्रा ५ से २० ग्रेन सोरा बडी मात्रामें जहरी असर करता है, दम बेठानेकूं इसतरे उपयोग करणा १ भाग सोरा ८ भाग जलमें उकालना इस जलमें देसी कागजकूं दोतीन मिनटतक भिगाकर सुका डालना इस कागदकी बीडी सिलगाकर पीणी इससें दम चढा भया बैठ जाता है, नाइटर सिवाय स्ट्रोंग तथा डाइल्युटनाइट्रीक एसिड वापरते हैं.

(४१५ नाइट्रीक एसिड–(स्ट्रोंग) सोरेका तेजाब गुणमे अतिदाहक है, गंधाते भये घावोंकों जलाणेमें काम आता है. सापकाटे उसके डंकपर लगाणेसें उसका जहर नहीं चढता.

(४१६ नाइट्रीक एसिड–(डाइल्युट) १ औंस स्ट्रोंग नाइट्रीक एसिड और ४ औंस जल मिलानेसें डाइल्युट नाइट्रीक एसिड होता है, पाचन पौष्टिक तथा खून सुधारणेवाला है, मात्रा १० से ३० बूंद (अनुपान) १ औंस पाणी, आठ गुणा जल डालकर पिचकारी देनेसें मूत्राशयकी पथरी पिगलकर बाहिर आती है.

(४१७ नाइट्रेट ओफ सिल्वर–(अर्जेन्टीनाइट्रस) अच्छे रूपेकूं सोरा खारके ... घमें पिघलाणेसें ये दवा तइयार होती है, उसके पासादार टुकडे अथवा गोलसलियां आती है, अजीर्ण उलटी गोला होजरीका घाव संग्रहणी अतिसार वगेरेमें उसका उपयोग होता है, ये दवा जलानेवाली है, इसवास्ते पेटमें लेनेकरके जितना फायदा है, तिस ...रके बाहर लगानेमें जादा फायदेवंद है, उपदंशकी चांदी तथा मस्सेकूं जलानेमें वापरते ... सोजेके तथा वात रक्तके सोजेके आसपास कास्टीककीलकीर लगाणेसें फेलता

बंध होता है, आंखका लोशन १ औंस वरसादका पाणी अथवा हंसोदक और १ से ४ ग्रेन कास्टीक मिलाकर बूंदे डालनेसें दुखती आंख मिटती है, सिराज (पिचकारी) प्रदर तथा प्रमेहवास्ते १ औंस पाणी और १ सें २ ग्रेन कास्टिक.

(४१८ नाइट्रो हाइड्रो क्लोरिक एसिड)–अथवा नाइट्रोम्युरियाटिक अेसिड (डि-ल्युट) वनावट ३ औंस नाइट्रिक एसिड ४ औंस हाइड्रो क्लोरिक एसिड २५ औंस जल मिलाकर देते हैं, मात्रा ५ से १० बूंद एक औंस जलमें अथवा चिरायतेकी चामें तावसे मई मंदाग्नि कलेजा तथा कमलेके रोगकूं मिटाकर खूनकूं शुद्ध करता है.

(४१९ पलास्टर–(लेप) अंग्रेजी उपचारोमें मुख्य लेप नीचे प्रमाणे (१) अफीमका लेप–अफीम १ औंस रालका लेप ९ औंस गरम पाणीसे मिलाणा (२) बोदारका लेप–मुरदासंग ४ रतल ओलिव तेल १ ग्यालन पाणी ६५ औंस वाफसे गरम कर लेप करना.

(३) घेलाडोणेका लेप–तयार विकता है.

(४) राईका पलास्टर–राई २॥ औंस अलशी २॥ औंस ऊकलता जल ८ औंस पाणी २ औंस अलशीकूं गरम पाणीमें और राईकूं ठंढे जलमें मिलाकर दोनोंकों मिलाना.

(४२० पेपरमिंट–(एसेन्स ओफ पेपरमिन्ट) उष्ण वातहर शूलहर पेटकी वायु आंकसी और चूंककूं बैठाती है, पेपरमिन्टके १ औंस तेलमें रेकटी फाइड इस्परिट ४ औंस मिलानेसें एसेन्स होता है, मात्रा १० से २० बूंद पेपरमिंटका जल बनानेवास्ते १½ द्राम पेपरमिंटका एसेन्स और २० औंस पाणी एक बडी बोतलमें डालकर हिलाना मात्रा १ से ३ द्राम.

(४२१ पेपसिन पाचक–मंदाग्नि तथा अजीर्णमें वापरते है, मात्रा २ से ५ ग्रेन जीमे बाद पेपसीन वाइन आती है, वोभी एसा गुण करती है, उसकी मात्रा १ से ४ द्राम.

(४२२ पोटाश–पोटाशकी बहोत जात है.

(१) कास्टिक पोटाश–दाहक है, अर्बुद चांदी तथा मस्सेके जलानेमें काम देता है

(२) लाइकर पोटास–सोल्युशन ओफ पोटाश अम्ल (खट्टेका) विरोधी मूत्रल तथा शोषक है, पथरीका रोग उष्ण वाय प्रमेह अम्लपित्त संधिवाय मेद और अजीर्ण वगेरेमें देते हैं, मात्रा १० से ४० बूंद.

(३) आयोडाइड ओफ पोटासीयम–शोधक रक्तशोधक उपदंश स्क्रोफ्युला तथा दमके दरदकेवास्ते अछा इलाज है, तैसें संधिवात गाउट हड्डी तथा चमडीके सडनेका रोग यकृत् प्लीह सिरका दरद शूल तथापक्षाघातपर दिये जाता है, मात्रा २ से २० ग्रेन.

(४) एसेटेट ओफ पोटाश—मूत्रल तथा रेचक है, जलोदर तथा सोजा मूत्रपिंडके रोगोंपर दिये जाता है, मात्रा मूत्रल १० सें ६० ग्रेन रेचक २ से ३ ड्राम.

(५) क्लोरेट ओफ पोटाश—शीतल तथा मूत्रल है, शोधक मात्रा ५ से ३० ग्रेन.

(६) टार्टरेट ओफ पोटाश—मूत्रल रेचक जलंदर मलावरोध तथा उष्ण वायु वगेरे रोगोंमें दिये जाता है, मात्रा १ से ४ ड्राम.

(७) एसीड टार्टरेट ओफ पोटाश—देखो क्रीम ओफ टार्टर.

(८) नाइट्रेट ओफ पोटाश—देखो, नाइटर.

(९) परम्यांगनेट ओफ पोटाश—विषघ्न दुर्गंध नाशक सांप काटेपर इसकी पिचकारी मारे जाती है, नष्टार्तव तथा अजीर्णपर दी जाती है, मात्रा १ सें ५ ग्रेन.

(१०) कार्बोनेट ओफ पोटास—अम्लविरोधी है, लायकर पोटास जैसा गुण है, तीक्ष्ण संधिवायकूं मिटाता है, पथरी चमडीके रोग गाऊट तथा आम्लपित्त उपर दिये जाता है, मात्रा १० से ३० ग्रेन.

(११) बईकार्बोनेट ओफ पोटाश—गुण तथा फायदा कार्बोनेट ओफ पोटाश मुजब

(१२) ब्रोमाइड ओफ पोटास्यम—नींद लाणेवाला मगजके रोगकूं मिटानेवाला मिरगीके रोगमें बहुतही फायदेमंद हिस्ट्रीया खेचाताण अनिद्रा उन्माद बच्चेकी हिचकी बडी खासी शिरकी शूल वगेरे रोगोंपर उसकी बहुत अच्छी असर होती है, मात्रा ५ से ३० ग्रेन.

(१३) सल्फेट ओफ पोटाश—रेचक मात्रा १५ से ६० ग्रेन.

(१४) साइट्रेट ओफ पोटाश—शीतल तथा मूत्रल है, पथरी तथा बुखारमें फायदेमंद है, मात्रा २० से साठ ग्रेन.

(४२२ पोडो फीलीन)—ये अमेरिकामें पैदा होता दरखतका चूर्ण है, उसका रंग झांखा नीला भूरा है, गुण रेचक है, और खास तौर लिवरपर असर करता है, उससें कबजियत तथा कलेजेका पुराणे रोगमें फायदा है, मात्रा अच्छे जुलाबवास्ते १ से २ ग्रेन मध्यम जुलाबवास्ते $\frac{1}{2}$ से $\frac{1}{4}$ ग्रेन इसका जुलाब बच्चेकूं देणा नहीं इकेला लेनेसें पेटमें आंटा चलता है, और दस्तभी बेसुमार आते हैं, इसवास्ते बेलाडोनाकेसंग लेनेसें आंटा नहीं आता और रुबार्ब कोलोसीन्थ एलोइझ (एलिया) अथवा ब्लुपिलकेसंग लेनेसें प्रमाणसर दस्त आता है.

(४२३ पोमिग्रेनेट) (देशी नाम अनार) अनारके जडकी छाल तथा फलकी सूकी छाल दवामें काम देती है, टेपवर्म नामके जीवकृमिकूं मिटाने तैसें अतिसार और मरोडा मिटानेकूं जडकी छाल काम देती है, उकालीकर कुरला करनेसें मूंके घाव मिटते हैं २ औंस मूलकी छाल ४० औंस पाणीकूं उकालना आधार है, तब छाण कुरला

करणा टेपवर्म कृमिवास्ते २ औंस जळ निराहार पेट पीणा आधी २ घंटासे छ वखत पीणा पीछे दस्त लगे एसी दवा लेनी इस दवासे उकारी होय तोभी ये दवा ऊपरा ऊपरी पांच छ वखत पीणी अतिसारमें एकेक औंस काढा दिनमें तीन वखत पीणा.

(४२४ पापी हेडस-पापीक्यापसुलस) देशी नाम अफीमका डोडा शेक करनेके काममें बहुत उपयोगी है, उसके शेकसें शरीरके कोइ चोकस भागकूं रोगकूं पीडाकूं मिटाता है, २ सेर पाणीमें ५ रुपेभर डोडोंकूं कूटकर उकालना.

(४२५ फोसफरस)–ये एक चीजएसी है, सो हवामें रखनेसें तुरत सिलग उठती है इसवास्ते उसकूं पाणीमें रखते हैं, देखणेमें मीम जैसा होता है, दीयासली बनानेमें काम देता है, पेटमें लेनेसें पौष्टिक है, मगजकी नाताकतीमें खास करके दी जाती है, गोली तैसें तेलरूप वापरते हैं, फासफोरिसकी गोलियां तइयार विकती हैं, गोलियोंकी मात्रा २ से ४ ग्रेन तेल–बिदामका तेल ४ औंस गरमकर छाण ठंढाभये पीछे काचके बुच-वाली बाटलीमे डाल उसमें १६ ग्रेन फासफरिस डालकर गरम पाणीमें शीशी धरकर बाद हिलाणी फासफोरिस उस तेलमें मिल जायगा.

(४२६ ब्रांडी)–जंतुनाशक उष्ण मादक तथा पौष्टिक है, मात्रा ॥ से १ औंस उत्तेजक मादक जादा मात्रासें जहरी है, पीणेमें दवा तरीके डाकटर उसका विरले जगे प्रयोग करते हैं, बदन बिलकुल ठंढा पड गया होय तो गरमी लानेकूं देते हैं, बहोंत सहत नहीं पडे इसवास्ते इसमें थोडा पाणी डाल देते हैं, निद्रा लानेवास्तेभी कोइ वखत उपयोग करते हैं, किचर गया गुप्त चोट पछाट वगेरेमें बाहर लगानेमें काम देती है, सुआवडमें बचा भये पीछे औरत जादा क्षीण तथा ठंढी पड जाती है, उसकू कांटा तथा गरम करणेकूं थोडी २ देनेकी डाकदरोंकी सम्मती दवा मुजब ब्रांडी थोडी कारण योगमें फायदा दिखलाती है, लेकिन आर्यदयावंतोके आचरने योग्य नहीं जो लोक शोख और व्यसनसें ब्रांडीके चक्करमें आते हैं, उनोंका ब्रांडी नाश करती है, जैनतत्वादर्श ग्रंथमे ५२ औगुण प्रगट दिखलाया है, ब्रह्माजी इसकूं पीकरके बेहाल बण बेटीसें कुकर्म कर लिया भागवतके दुसरे स्कंदमें लिखा है, इसवास्ते बुद्धिवंतोकी बुद्धि बिगाड देती है, ताकतका नाश करती है, और बडे २ रोग लग जाते हैं, कीडोंका रस इसमें सामिल होजाता है.

(४२७ बीसमथ)–ग्राही अजीर्ण के मरोडा अतिसार तथा अम्लपित्तके रोगमें उसकी जुदी २ बनावट बणती है, जैसेके साइट्रेट ओफबिसमथ एन्ड एमोनिया मात्रा २ से ५ ग्रेन कारबोनेट ऑफ बिसमथ मात्रा ५ से २० ग्रेन सब नाइट्रेट ओफ बिसमथ मात्रा ५ से २० ग्रेण साइट्रेट ओफ बिसमथ मात्रा २ से ५ ग्रेन.

(४२८ बेनझोइन–देशी नाम लोबान कफघ्न उष्ण स्तंभक मात्रा १० से ३० ग्रेन बेनझोइन एसिड–लोबानकेफूल १० से १५ ग्रेन उलटी खांसी दम वगेरेमें दिये जाता है.

(४२९ बेलाडोना)-बेलाडोणाके पत्ते जड उसमेंसे बहोतसी दवायें बणती है, तैसें बाहर लगानेमेंभी काम देती है.

(१) टींकचर ओफ बेलाडोना मात्रा ५ से २० बूंद.
(२) एकस्ट्रकट ओफ बेलाडोना मात्रा ¼ से १ ग्रेन.
(३) बेलाडोनापलास्टर-बेलाडोनेका लेप.
(४) लीनीमेन्ट ओफ बेलाडोना.
(५) आट्रोपीन-बेलाडोनेका खास सत्व है, मलम वट्टी वगेरेभी होती है.
(६) सल्फेट ओफ आट्रोपिया.

(गुण) पीडा शामक उष्ण स्वेदल स्नायुशैथिल्यकृत् दूध तथा थूक शुद्धकरता आंखकी कीकीकूं चोडी करनेवाला खासी धनुर्वात चस्का शिरकी आंखकी तथा कानकी शूल वगेरे रोगोंमें पीनेमें तथा ऊपर लगाणेमें काम देता है, आंखकी कीकी चोडी करनेकूं आट्रोपीन अथवा उसकी कोइभी बणी दवा आंखमें आंजते हैं, आंखकी कनीनीका सोजा फूला मोतियाविंद वगेरेभी उससे अच्छा होता है, आट्रोपीन १ ग्रेन पाणी १ औंस पेसाबकी गांठ मलकी कबजी पेसाबके अतीसारके रोगमें अंदर लेनेवास्ते तैसें औरतोंके ऋतुधर्म संबंधी तथा गर्भस्थानके रोगमें उसकी सोगठी बणाकर गुह्य अवयवमें धरते हैं, बदनमें रसकी वढोतरी होती भईकूं रोककर पसीनेकूं तथा स्तनके जादा दूधकूं तथा जादा थूक आता होय तो बंध करता है.

(४३० बोर्योकस-(देशी नाम टंकण) मूत्रल तथा शीतल पेसाबकी वृद्धि करता है, उसमें खटासकूं दूर करनेका थोडा खार गुण है, ऋतु लानेवाला है, जादा मात्रासें गर्भ गिरा देता है, मों तथा जुबानका जखम मूं आणा वगेरेमें कुरला कराते हैं, और बचोंकों सहतमें मिलाकर मूंमे लगाये जाता है, खानेकी मात्रा ५ से ४० ग्रेन कुरला १ औंस बोर्योकस ८ औंस पाणी दुसरी बनावटे (१) मेलबोर्यासीस टंकण ६० ग्रेन ग्लीसेरिन ॥ ड्राम और सहत १ औंस (२) ग्लीसेरीन ओफ बोर्योकस-टंकण १ औंस ग्लीसेरीन ४ औंस पाणी २ औंस तीनोंकों घोटकर मिलाना ये दोनों मिलावटी दवा मुखपाक शिरका खोरा और मेलऊपर लगानेसे बहोत फायदा करता है, गरम पाणीमें टंकण डालके न्हानेमें चमडी की खाजपर मसलणेसें फायदा करती है.

(४३१ मरक्युरी पारा) पारेका बहोतसा खानेकूं तथा लगानेकूं दवामें उपयोग होता है, पारेका अच्छीतरे सोधन तथा परेज कियेबिगर पारेकूं खाणा अच्छा नहीं अंग्रेजी इलाजोंमें पारेकी कितनी बनाइ भई चीज खानेवास्ते धुंयेवास्ते लेपवास्ते बापरते है, उसकी मुख्य असर शोधक है, इसीवास्ते उपदंसपर इसका मुख्य उपयोग होता है. लेकिन ये दवा देनेके पहली रोगीकी शक्ति प्रकृतीका बहोत बारीक विचार

करणा चाहिये क्युंके पारा तामीरकूं नमाने अथवा वजनसें जादा खानेमें आवे तो बदनकूं बिगाड देता है, उसके बिगाडके ऐसे लक्षण होते है, मूं आजाता है, जीभ गीली होकर घाव पडे दांत ढीले पडे चमडीपर फूट निकले और गति तंतुओंमें पारेकी खराब असर पोहचतेही हाथ पांवोंकी गतिमें बिगाड होकर धूजणे लगता है, इसवास्ते पारेसंबंधी कोइभी दवा खाते बहुत सावधान रहना चतुर वैद्य डाक्टरोंकी सल्लासेंही लेना अच्छा है.

(४३२ मसटर्ड–देसी नाम राई) मुख्यपणे उलटी कराणा तथा पलास्टरके काममें आता है, उलटीकी मात्रा १ से ४ द्राम राईका पलास्टर (पोल्टीस) २½ औंस राई २½ औंस अलशी ८ औंस ऊकलता पाणी २ औंस ठंडा पाणी २ औंसमें राईकूं मिला देना और अलशीके चूर्णको ऊकलते जलमें मिलाना पीछे दोनोंकों एकठा करणा मसटर्डकूं ठंडे पाणीमें पीसकरके पलाष्टर मारणेमें आता है.

(४३३ मेनथोल–पेपरमिनटके तेलमेंसे निकलता है, (गुण) पीडा शामक मात्रा ½ से २ ग्रेन मेनथोल घसणेसें तथा पीलानेसें शिरकी शूल तथा चसक मिटती है.

(४३४ मेलफर्न)–लिकिड एकट्राकट ओफ मेलफर्न-कृमिघ्न है, पेटके अंदरकी लंबा चिपटा कृमियोंपर ये दवा फायदा करती है, रोगीकूं एक दस्त देकर कितनीक देरतक भूखा रखणा पीछे दवा देनी और फेर १ जुलाब देणा इसतरे करणेसें कृमि बाहर निकल जाती है, मात्रा ३० से ६० बूंद.

(४३५ रुवार्ब)–दीपन रेचक ग्राही अजीर्ण कबजियत चूंक दस्त वगेरे रोगोंमें दिये जाता है, अच्छा हलका जुलाब होजाता है, इसवास्ते बचोंकूं अच्छा समझ दिये जाता है, उसके जडका चूर्ण हलदी जैसा पीला भूका होता है, मात्रा ५ से २० ग्रेन चायकी मात्रा १ सें २ औंस एकस्ट्राकट याने घनकी मात्रा ५ से २० ग्रेन अर्ककी मात्रा १ से २ द्राम जुलाब वास्ते ४ सें ८ द्राम ग्रेगरी पाउडर रुवार्बका चूर्ण २ औंस हलका मेगनिस्या ६ औंस सुंठ १ औंस इन तीनोंका बारीक चूर्ण मात्रा १० से ६० ग्रेन उसके गोलीकी मात्रा ५ से १० ग्रेन.

(४३६ रेज़ीन)–देशी नाम राल. ग्राही रोपण तथा उत्तेजक है, इसका मुख्य उपयोग मलमतरीके होता है, रालका मलम ८ औंस राल ४ औंस पीलामोंम १६ औंस सादा मलम दो औंस बिदामका तेल गरमकर मिलाके मलम करना घाव फोडेपर पट्टी मारे जाती है.

(४३७ लाइम)–देशी नांम कलीचूना अम्लविरोधी ग्राही तथा दाहक है, दवाके वास्ते १ रत्तल चूनेके पत्थरपर आसरे १० औंस पाणी धीमें २ डालना जब वराल बाफ निकल चूके ठंडाभये बाद छाणकर हवा न लागे इसतरे सीसीमें रखणा दवामें

उसका पाणी काम देता है, जिसकूं लाइम वाटर कहते हैं–कलीचूना १ औंस अच्छा पाणी ५ रत्तल मिलाकर नीतरणे देणा ऊपरका नितरा भया साफ जल लीले रंगकी मजबूत बुचवाली शीशीयोंमें भरके राखणा पित्तसे अजीर्ण होकर उलटी होती है, उसकूं ये पाणी मिटाता है, बचोंके पेटमें पिया भया दूध टिकता नहीं तब उसकेसंग लाइमवाटर मिलाकर देणा तो पचता है, मात्रा बडेकूं १ ड्राम लाइमवाटर दूध अथवा कांजीमें बच्चेकूं १०-१५ बूंद दरवखत दूधकेसंग.

(४३८ लाक्टिक एसीड) मूत्रपिंडके रोगमें ए एसिड दिये जाता है, हाफणी कंठका रोग और गला बैठ जाता है, तब अठ गुणे पाणीमे डाल उसकी पींछी फिराणी.

(४३९ लाडेनम) अफीमका अर्क देखो ओपियम.

(४४० लीनसीड) देशी नाम अलशी·स्निग्ध तथा शोथहर है, पेशाबके रोगोंपर दिये जाता है, दाह तथा चणखकूं शांत करता है, शरीरके जुदे २ भागका सोजा तथा गाठे गडगूमडपर उसकी पोटिस बांधे जाती है, इसके तेलकूं सालीनसीड ओइल कहते हैं.

(४४१ लीनीमेन्ट) इस बहार लगानेका तेल) प्रवाही लिनिमेन्ट बहोतसी दवाइयोंका बणता है, मुख्य २ लिनिमेन्ट इसमुजब होता है.

(१) लिनिमेन्ट ओफ एमोनिया) लायकर अमोनिया १ औंस अलशीका तेल ३ औंस.

(२) आयोडीन) आयोडीन १। औंस ग्लीसेराईन । औंस पोटास आयोडीड ॥ औंस रेक्टीफाइड स्पिरिट १० औंस.

(३) एकोनाईट) बच्छनाग चूर्ण १० औंस कपूर १ औंस रेक्टीफाइड स्पिरिट ३० औंस चूर्णकूं स्पिरिटमें ७ दिन भिगाकर पीछे छाण लेना पीछे कपूर मिलाना.

(४) ओपियम) अफीमका अर्क २ औंस लिनिमेन्ट ओफ सोप.

(५) टरपेन्टाइन) साबू २ औंस पाणी २ औंस कपूर १ औंस टरपेन्टाइन १६ औंस

(६) केम्फर) कपूर १ औंस अलशीका तेल ४ औंस.

(७) केम्फर (कम्पाउन्ड) कपूर २॥ औंस लवंडर १ ड्राम स्ट्रोंग सोल्युशन ओफ एमोनिया ५ औंस रेक्टी फाइड स्पिरिट १५ औंस.

(८) लीनीमेन्ट ओफ लाइम) चूनेका जल सालीड ओइल समवजन.

(९) क्लोरोफोर्म) २ औंस कपूरका लिनिमेन्ट २ औंस मिलाणा.

(१०) सोप) साबूका लीनीमेन्ट.

(११) मरक्युरी-१ औंस पारेका मलम १ औंस आमोनियाका सोल्युशन १ औंस ...ि० गरमकर उसमें पारेका मलम मिलाणा पीछे आमोनिया मिलाणा

(४४२ लेमन)-देशी नाम नींबू) शीतल तथा खट्टा है नींबू योगवाही है. दवामें

इकेला नींबूका रस नहीं दिये चाहता उसका शरबत अर्क तेल वगैरे वापरते हैं, स्कर्वी (रक्तपित्तमें नींबु खानेसें फायदा होता है. (शरबत) नींबूकी छाल २ औंस नींबूका रस २० औंस बूरा २। सेर पहली नींबूका रस उकालना पीछे एक पात्रमें नींबूकी छाल धर उसपर नींबूका उकाला भया रस डालना ठरे जहांतक रहणे देणा पीछे छाणकर बूरा मिलाकर धीमी आंचसें चासणी करणी.

(४४३ वेलेरियन) उष्ण वातहर तथा शूलहर है, हिस्टीरीया औरभी वायुके दुसरे चिन्होंमें दिये जाता है, मगजके रोगोंपर तथा चित्त भ्रम ऊपर इसकी अछी असर होती है, मात्रा टिंकचरकी १ से २ ड्राम.

(४४४ श्युगरलेड) (एसेरेट ओफलेड) इसके सुपेद टुकडे भया करते है, गुणमें ग्राही तथा शोथघ्न है मात्रा १ से ५ ग्रेन अतिसार मरोडा हैजा फेफसा होजरी मूत्रपिंड अथवा गर्भाशयमेंसे खून गिरता होय उसमें अछा फायदा करता है, दूखती आंख तथा खील गुरेजणीमें उसकी बूंदे डाली जाती है, उसका मलम खुजली जखमपर काम देता है.

(४४५ सल्फर) गंधक शुद्ध कियाभया अथवा गंधकके फूल दवामें काम देता है, चमडीके रोगोंमें उसका उपयोग होता है, दस्त साफ लाता है, मात्रा २० से ६० ग्रेन बचेकी मात्रा २ से ५ ग्रेन खुजलीके मलममें गंधक गिरता है, (सल्प्युरिक एसिड) (ओइल ओफ व्रिटिओल) शीतल पौष्टिक और ग्राही बुखार नाताकतीमें होता भया पसीना अतिसार वगैरे रोगोंमे चलता है, मात्रा २ से ३० बूंद ११ औंस अच्छा पाणी १ औंस सल्प्युरिक एसिड मिलानेसें डाइल्युट सलप्युरिक एसिड होता है बुखारमें इस एसिडका ५ से १० बूंद और किनाइन ३ से ६ ग्रेन मिलाकर देना अतिसारमें इसकी २० बूंद और लाडेन मना ५ से १० बूंद ४-५ रुपेभर जलमें मिलाकर पिलाना.

(४४६ स्ट्रीकनिया) कुचीलेका निखालस सत्व निकालते हैं, जिसमें बहोत जहरका असर होता है, गुण कुचीले मुजब मात्रा $\frac{1}{१६}$ से $\frac{1}{१२}$ ग्रेण.

(४४७ स्पिरिट दारू) आल्कोहोल याने ब्रांडी ये दारूका सत्व है, आल्कोहोलमें ८४ भागमें १६ भाग जलके मिलाणेसें रेक्टिफाइड स्पीरिट होता है, और ५ भाग रेक्टिफाईड स्पिरिटमें ३ भाग जलके मिलानेसे प्रूफ स्पिरिट बणता है, गिरणेसें लगी जो चोट छिलगया किंवा सूजगया होय तब जलकेसंग मिलाकर लगाना चाहिये बदनपर पत्थर गिरता है, तथा औरतोंके स्तनके वीट लियोंपर चीरे पडते हैं, उसपर जलके संग भीगा भया वस्त्र धराजाता है टींकचर वगैरे बणानेमें रेक्टिफाइड तथा प्रूफस्पिरिट इन दोनोंका उपयोग होता है, ये स्पिरिट मिश्री वगैरे पदार्थोंमेंसें यंत्रोंसें खेंचकर निकाले जाता है.

(४४८ साइट्रीक एसिड) ये एसिड नींबूके रससें बणता है, गुण शीतल अम्ल बुखार उलटी तृषा पित्त और उष्ण वायुपर दिये जाता है, क्षारके योगमें वापरते हैं, साइट्रीक एसिडके एवजीमें नींबू काम दे सकता है.

(४४९ सालसापरिला) एकतरेके दरख्तकी जडकी छाल है, वो अमेरिकामेंसें आती है. अपणे देशमें अनंत मूल अथवा सारिवा उसबे नामकी दवामें जो गुण है, वो गुण इसमे हैं गुणमें शोधक स्वेदल पाचक पौष्टिक है उपदंश खून बिगाड संधिवायु तथा नाताकतीमें वापरते हैं. उसका एकस्ट्राकट तथा डिकोकशन (क्काथ) दवा तरीके उपयोगमें लेते हैं, मात्रा २ से १० औंस.

(४५० साल एमोन्याक) (क्लोराइड ओफ एमोनिया) देशी नाम नो सादर देखो अेमोनिया.

(४५१ साले [illegible]लेटाईल) (एरोमेटिक स्पिरिट ओफ एमोनियां) देखो एमोनिया.

(४५२ सिंकोना) सिंकोना पहली अमेरिकासे आताथा अब इहां पैदा होणेलगा इसवास्ते देशी दवामें लिखा है, पीछाडी देखो चाक्काथ पतला घन टिंकचर वगेरे रूपसें वापरते हैं, मात्रा-टिंकचर की०॥ से २ ड्राम प्रवाही घनकी १ से २ औंस.

(४५३ सिडलिज पाउडर) सोडा तथा दुसरी कितनीक मिलावटसे ये चूर्ण बणता है, टार्ट रेटेड सोडा २ ड्राम और सोडा बाइ कार्बोनस ४० ग्रेन दोनोंकों मिलाना और टार्टरिक एसिड ३० ग्रेणकी पुडी जुदी रखणी दोनोंकों जुदे २ जलमें गालकर पीछे दोनोंको एक जगे मिलाणेसे उफाण आवे सो झट पी जाणा.

(४५४ सीला) (स्कवील) एक तरेका कंद है कफघ्न मूत्रल चूर्ण टिंकचर तथा शरबत रूपसें वापरते हैं, मात्रा चूर्णकी १ से ३ ग्रेन टिंकचरकी १० से ३० बूंद शरबत की० ॥ से २ ड्राम.

(४५५ सेन्टोनीन) एक तरेके दरख्तके फूलमेसें रुसियामें बणती है, मुख्य गुन कृमिघ्न है, मात्रा २ से ६ ग्रेन बूरेके संग मिलाकर देतेहैं अथवा उसकी जुदी २ टिक-डिया बनकर आती है सो खिलातेहैं सेन्टो नाइनसें पेटमें कृमी नहीं रहती लेकिन् उ-नोंको पेटमें बाहर निकालनेकु दुसरे दिन दस्तकी दवा देणी गोल चूरणियोंका पग इलाज है, सेन्टोनाइन लोजेन्जीस नामकी टिकडियां बजारमें बिकती है उमर मुजब १ से ६ दिई जाती है, इसमें केटोनेकशी मिश्री भईथी टिकडिया आती है उसमें दुसरे [illegible] जरुरी नही रहती इस दवासें कृमिया मिट तो जाती है लेकिन् आइंदेसे पेट [illegible] कृमिका [illegible] वगेरे किरमीकी देशी कृमिहर दवायों ये काम करती है उनका फायदा बहुत है. लेकिन ये [illegible] मुश्किलहै और ये टिकडियां [illegible] [illegible] होनेसे [illegible] है.

(४५७ सेना) देशीनाम सोनामुखी) सोनामुखी रेचक है, इसका जुलाब सादा और निडर होनेसें बचे बुढे गर्भणी स्त्री और नाजुक प्रकृतिवालेकूं अछा है सोनामुखी-की चा–१ औंस सोनामुखीके पत्ते और ३० ग्रेन सूंठ दोनोंकों १० औंस ऊकलते जलमें डाल एक घंटाभर भिगाकर छाणकर लेणा मात्रा–१ से २ औंस इस चामे दूध मिलाकर पीणेसें सोनामुखीकी मकचो नहीं आती यचेकूं देणेवास्ते एक छोटा चमचा अथवा १ ड्राम सोनायके पत्ते ऊकलता पाणी ४ औंस दस मिनट ऊकालकर एक प्यालेमें निकाल जरा बूरा मिलाकर बचेकूं भूखे पेट फजरमे देणा ये जुलाब तीन वर्षकी ऊमर बाद देणा.

(४५७ सोडा) सोडेकी बहुत बनावट है सो थोडी नीचे लिखते हैं.

(१) कारबोनेट ओफ सोडा) (साजीखार) अम्लविरोधी शोधक अस्मरीघ्न आम्लपित्त अजीर्ण गोला पैसाबकी पथरी चूंक उलटी संधिवाय तथा चमडीके रोगोंमें फायदा करता है, मात्रा १० से ३० ग्रेण.

(२) बाई कारबोनेट ओफ सोडा) गुण ऊपर मुजब मात्रा १० से ६० ग्रेण.

(३) सोल्युशन ओफ सोडा) गुण उपर मु० मात्रा० ॥ से १ ड्राम.

(४) सोडावाटर) शीतल मूत्रल पाचक सारक सोडा तथा ओसिड टार्टरिककी मिलावटसे बणती है प्रमाण ½ ड्राम और २५ ग्रेण अनुक्रमे देते हैं.

(५) सल्फेट ओफ सोडा) रेचक आम्ल विरोधी और थोडा मूत्रल मात्रा १ से ८ ड्राम ७ एपसम सोल्टके जैसा उसका फायदा है जादातर जुलाबवास्ते देते हैं, लेकिन् एपसम सोल्टसे ये दवा मंद रेचक होनेसें नाताकत मिजाजवालोंकों जादा माफगत आता है.

(६) फासफेट ओफ सोडा) रेचक मात्रा । से १ औंस.

(७) हाइपो फोसफेट ओफ सोडा) पौष्टिक तथा शोधक क्षय अशक्ति वादी मिरगी हांफणी दम श्वास वगेरेमें मात्रा ५ से १० ग्रेन

(८) क्लोराइड ओफ सोडा) (निमक) रेचक तथा कृमिघ्न है दुसरी दवायें बणाणेमें काम देती हैं.

(४५८) हाइड्रोक्लोरिक एसिड) म्युरीयाटिक एसिड) निमकका तेजाब निमकसें बणता है दाहक तथा बहोत जहरी है उसमें तिगुणा पानी मिलानेसें म्युरियाटिक एसिड डिल्युट होता है ये प्रवाही पौष्टिक तथा खून शोधक है अजीर्ण नाताकतीपर देते हैं, मात्रा १० से ३० बूंद.

(४५९ हाइड्रोसानिक ओसिड (डिल्युट) हालाहल जहर है एक मिन्टमें मारता है अजीर्ण उलटी आम्लपित्त खांसी वगेरेपर देते हैं मात्रा १० से ३० बूंद.

(४६० हाइपो फोसफेट ओफ लाईम) शोधक तथा पौष्टक है, खासी क्षय कफ और नाताकती वगैरे दरदोंपर ये दवा वहोत अछी निकली है और शरवतके जेसा स्वाद होणेसें पीणास० मात्रा ५ से १० ग्रेण.

रेचक तथा सारक.

४६१ पोडोफाइलम ½ ग्रेण कम्पाउन्डरुवार्वेपिल २॥ ग्रेण हायोस्यामसका अेकस्ट्राकट १॥ ग्रेण अछीतरे मिलाकर १ गोली करणी रातकू लेणी जो साफ दस्त नहीं लगे तो फजरमें लेणी अथवा दस्तके खुलासा वास्ते नं० ४६३ की दवा अथवा साइट्रेट ओफ मेगनीशीया या सिडलीक पाउडर लेते हैं.

जुलाबकी एसी एकभी दवा अभीतक नहीं निकली है सो सब अदम्योकें उपयोगकं होय ऊपर लिखी गोली अछा जुलाब है सबकूं अछी है एसा नहीं है लेकिन् दस्तके खुलासा वास्ते ये गोली अछीहै एसा कह सकते हैं.

(४६२) सल्फेट ओफ सोडा ६ ड्राम टिंकचर ओफ जींजर २० वूंद डिस्टील्ड वोटर २ औंस मिलाकर एक वखत पीणा इससें दस्त साफ आता है, रातकूं लेकर फजरमें फेर लेणेसें मदत करती है जलदी दस्त लाणा होय तो ४ घंटेसे फेर लेणा सल्फेट ओफ सोडेकूं कमवेशी कर सकते हैं.

(४६३) सल्फेट ओफ सोडा ६ ड्राम किनाइन २० ग्रेण सल्फेट ओफ आयर्न १५ ग्रेण पाणी ८ औंस मिलाकर तइयार करणा मात्रा १ औंस दर ४ चार घंटे वदनमें ताकत रखकर दस्त लाती है तिली तथा ऋतु बंधके रोगवाली स्त्रीकूं अछी है.

(४६३) सल्फेट ओफ सोडा ६ ड्राम डिल्युट सल्फ्युरिक अेसिड १ ड्राम गुलाबके फूलकी चा ८ औंस मिलाकर मात्रा १ औंस दर ४ घंटे ग्राही शीतल शारक गर्भ गिरणा ऋतूका जादा खून गिरणा वहोत खून गिरणेके रोगोमें फायदेवंद है.

(४६५) सल्फेट ओफ मेग्निस्या ६ ड्राम टिंकचर ओफ डिजी टेलिस ८ वूंद केम्फोर मिकश्चर २ औंस मिलाकर एक वखतमें पीणा दस्त साफ लाताहै खून गिरणेकूं बंध करता है दस्तकी कबजीका दम मगजपर खून चढणेके रोगमें अछा है.

(४६६) वाइ कारबोनेट ओफ मेग्निस्या १० ग्रेण वाइ कारबोनेट ओफ सोडा ८ ग्रेण केम्पाउन्ड सेनामिकश्चर १ औंस एक वखत पीणा अम्लविरोधी सारक है अजीर्ण लिवरके रोगमें फायदेवंद है.

(४६७) पोडो फाइलम पाउडर ४ ग्रेण डिल्युटना इट्रिक अेसिड २ ड्राम पाणी ३॥ औंस मिलाकर मिकश्चर वणाणा मात्रा १ वाइन ग्लास पाणीमें १ ड्राम मिकश्चर दिनमें तीन वेर लेणा लीवरमें फायदेवंद है.

(४६८) ल्युपील ५ ग्रेन केलोमेल ५ ग्रेन मिलाकर २ गोलियां करणी सख्त दस्त लाता है.

(४६९) ल्युपील ५ ग्रेन कम्पाउन्ड अेकस्ट्राक ट ओफ कोलोसिन्थ ५ ग्रेण मिलाकर दो गोलियां करणी मध्यम जुलाव लगाता है.

(४७०) कम्पाउन्ड अेकस्ट्राकट ओफ कोलोसिन्थ ५ ग्रेण कम्पाउन्डरुवार्बपिल ५ ग्रेण मिलाकर दो गोलियां करणी हलका जुलाब होता है.

(४७१) केलोमेल ५ ग्रेण कम्पाउन्ड जालप पाउडर १ ड्राम मिलाकर फाकी करणी सख्त जुलाब पाणी जेसा दस्त लाता है.

(४७२) पोडो फाइलम चूर्ण ३ ग्रेण कम्पाउन्ड एकस्ट्राकट कोलोसिन्थ ३० ग्रेण आइ पीकाक्यू आन्हा पाउडर ४ ग्रेण गूंदके जलमें घोट १२ गोलियां करणी एकेक गोली दिनमें दो वेर कलेजेके रोगमें कबजियतमें दस्त खुलास लाता है.

(४७३) पिलएलोश अेन्ड मर्ह ३ ग्रेण ब्ल्युपील १ ग्रेण अेकस्ट्राकट टाराक साकम २ ग्रेण अेकस्ट्राकट ट्रेमोनियम (धतूरा) ½ ग्रेण अछीतरे मिलाकर दो गोली करणी ये गोलियां दमके रोगमें फायदेवंद है.

(४७४) सल्फेट ओफ आयर्न १ स्कुपल अेलियेका सत्व १५ ग्रेण रुवार्बका चूर्ण १ स्कुपल अछीतरे मिलाकर १२ गोलियें करणी मात्रा २ दो गोली नाताकत और कबजियतमें दस्त साफ लाणेवाली है.

(४७५) रुवार्ब चूर्ण १ औंस सुंठका चूर्ण ½ औंस कारबोनेट ओफमेग्निस्या ३ औंस अछीतरे मिलाकर फकी करणी इसकूं ग्रेगरी पाउडर कहते हैं, मात्रा ½ ड्रामसें २ ड्राम पेपरमिंटके पाणीसें देणा.

अजीर्ण और होजरीके खटासमें होजरीके खुलासावास्ते ये चूर्ण अछा है, दो तीन बरसके बचोंकोंभी १० से १२ ग्रेन देनेसें हलका जुलाब.

बदनमें ताकत देनेवाली.

जो दवा बदनमें कौवत तथा जोर लावै उसकूं टोनिक कहते हैं इसतरेकी मिलावटी दवायें बदनमें क्षीणता लाणेवाले रोगोमें और कमजोरीमें दिये जाती है स्टिम्पुलंट दवायें जिसमें इथर और आल्कोहोलका मुख्यतत्व होता है उससे टोनिक दवायें जुदीही समझणी.

(४७६) क्किनाइन २४ ग्रेन शेरीवाइन २ औंस डिस्टीलड वोटर ८ औंस मिकश्चर करणा मात्रा–दिनमें तीन वखत लेना एकेक औंस.

(४७७) क्किनाइन २४ ग्रेन नींबूकारस २ ड्राम डिस्टीलड वोटर ८ औंस मिलाकर मिकश्चर तैयार करणा मात्रा दर वखत एकेक औंस दिनमें तीन वखत.

(४७८) आइसींग्लास २ द्राम मिश्री ब्रांडी १ औंस शेरी २ औंस जायफल १ चिपटी ऊकलता जल ४ औंस मिलाकर एक वखत पीजाणा अतिसारके दस्तमें फायदा देता है.

(४७९) क्विनाइन २० ग्रेन डाइल्युट सल्फ्युरिक एसिड १ द्राम टिंकचर ओफ जींजर ½ द्राम डिस्टील्ड वोटर ८ औंस मिकश्चर बणाणा मात्रा दर तीन २ चार २ कलाकसें एकेक औंस.

(४८०) साइट्रेट ओफ आर्यर्न एन्ड क्विनाइन रस्क्रुपल डिस्टीलड वोटर ८ औंस दर तीन २ चार २ घंटेसें एकेक औंस दवा पीणी फेर मूं धोकर साफ करना.

(४८१) टिंकचर ओफ आयर्न [स्टीलवाइन] २ द्राम डिस्टील्डवोटर ८ औंस पांडु तथा नाताकतीवास्ते मात्रा दर तीन घंटेसें एकेक औंस दवा पीकर मूं धोणा.

टिंकचर ओफ आयर्नका स्वाद नहिं अछा लगे तो उसकी एवजीमें कारबोनेट ओफ आयर्न लेना मात्रा ५ से १० ग्रेन पाणीमें पीये अथवा बूरेकेसंग फकीभी लीजाती है.

(४८२) डाइल्युट नाइट्रिक एसिड २ द्राम आदेका अर्क १ द्राम पाणी अथवा नारंगीकी छालकी चा ८ औंस मिकश्चर करणा दिनमें तीनवेर एकेक औंस लेणा मरोडा बुखारके पीछेकी नाताकतीमें टोनिक तरीके वापरणा.

(४८३) सल्फेट ओफ आयर्न ९ ग्रेन सल्फेट ओफ क्विनाइन १२ ग्रेन डाइल्युट-सल्फ्युरिक एसिड १ द्राम सल्फेट ओफ सोडा १ औंस मिश्री २ द्राम डिस्टील्ड वोटर १२ औंस मिकश्चर करणा दिनमें दो तीनवेर एकेक औंस पीणा कलेजा तथा स्पलीन (तिली) के रोगमें दस्त साफ लाकर ताकत वढाता है.

(४८४) सीरप आयोडाइड ओफ आयर्न १ औंस २ औंस जलमें त्रीस बूंद डालकर हमेस तीन वखत पीणा.

कफकूं तोडणेवाली श्वासनलीकूं फायदेबंद.

जो दवायों फेफसेमें जानेवाली श्वासनलीके अंदरके अस्तरपर तैसें कितनेक दरजे वदनके सामान्य वंधेजपर असर करके कफ श्लेषम खासी हांफणी और दमके रोगोंमें फेफसेमें जाणेवाली नलियों और फेफसेमें जानेवाला रसका रस्ता खुला करता है, उसकूं एक्सपेक्टोरन्ट कहते है, वो दो जातकी है, स्टिम्युलेटींग और डिप्रेसींग अर्थात् जुस्सेकूं वधाने वाली, जुस्सेकू कम करनेवाली पहिले प्रकारकी दवामें एमोनिया ईथर स्क्विल्स ओपीयम वगेरे है, और दुसरी दवामें टारटर एमेटिक और आइपिकाक्युआन्हा है, पहिले ...ी दवायें मुख्यपणे करके घडी ऊमरके रोगीयोंके श्वासनलीके रोगोंपर और दुसरे ...की दवायें छोटी ऊमरके रोगियोंकूं दी जाती है.

(४८५) एरोमेटिक स्पिरिट ओफ एमोनिया २ ड्राम स्पिरिट ओफ नाइट्रिक

इथर ४ ड्राम टिंक्चर ओफ जीजर १ ड्राम पाणी ५॥ औंस मिकश्चर करणा उसमेंसें दर दो तीन घंटेसें एकेक औंस पीणा दमके जोरमें पुराणी हांफणीमें.

(४८६) पेरेगोरिक ३ ड्राम आइपीकाक्यु आन्हा वाईन २ ड्राम स्पिरिट नाइट्रिक इथर ३ ड्राम पाणी ७ औंस मात्रा १ औंस दर तीन या चार घंटेके फासलेसें कफ श्वास-नली और फेफसेमें फायदा करता है बचोंका कफ खास हांपणी फेफसेका वरम वायु नलीके सोजेके सरुआतमें वो थोडी मात्रा देते हैं, एक वर्षके बचेकूं १ ड्राम दो वर्षकूं १॥ ड्राम देते हैं.

(४८७) केम्फोर (कपूर) १ ग्रेण आइपीकाक्यु आन्हा चूर्ण ३ ग्रेन जरा गूंदके पाणीसें छोटी १ गोली करणी दमके रोगमें दर दो दो घंटेसे लेणा.

(४८८) टार्टर एमेटिक १ ग्रेण पेरेगोरिक २ ड्राम डिस्टीलकरा ऊकलता पाणी १२ औंस मिलाकर ठरणे देणा दर दो या तीन घंटेसे एकेक औंस पीणा हांफणी फेफ-सेका सोजा फेफसेके पुडका सोजा कंठ नलीके सोजेमें फायदा करता है.

(४८९) पेरेगोरिक ३ ड्राम आइपीकाक्युआन्हावाइन २ ड्राम टिंकचर शीला घाइकारबोनेट ओफ सोडा २ स्कुपल पाणी ८ औंस इन सबोंकूं मिलाकर दर दो या तीन घंटेसें एकेक औंस पीणा श्लेपम हांफणी और खासकरके उसकेसंग जब अजीर्ण और होजरीमें खट्टापणा बढे तब ये बहोत फायदा करती है, बचोंकों भी ये फायदा करती है.

(४९०) कारबोनेट ओफ मेगनिस्या २५ ग्रेन पेपरमिटका तेल २ बूंद डिस्टील्ड वोटर १ औंस मात्रा १ ड्राम दिनमें तीन या चार वखत खुलखुलिया खासीमे १ सें २ वर्षके बचेकूं दवा निकालती वखत सीसी हलानी.

(४९१) सल्फेट ओफ झींक २ ग्रेन पेरेगोरिक ६० बूंद पाणी १॥ औंस मात्रा एकसें दो वरसके बचेकूं खुलखुलिये खासीमें १ ड्राम दर चार २ घंटेसें.

(४९२) एकस्ट्राकट ओफ कोनायम ३ ग्रेन डिस्टील्ड वोटर १॥ औंस ऊपर मुजब देना.

धीरे २ फायदा करनेवाली.

जो दवायें खूनकी स्थितिमें फेरफार करनेवास्ते अथवा कलेजा और आंतरडोंके रसोंकी स्थिती बदलनेवास्ते जादा या कम मात्रामें बहोत मुदततक देनेमें आती है, वो ओल्टरेटिव्स कहाती है, नीचै लिखते हैं.

(४९३) डोवर्स पाउडर १० ग्रेन क्विनाइन ३ ग्रेन आइपीकाक्यु आन्हापाउडर १ ग्रेन पडी बनानी सोते वखत लेनी दस्त मरोडा कलेजेके रोगोंमें दिये जाता है, जो उलटी अथवा बेचेनी होय तो तीसरी दवा निकाल फकत दोयही देनी.

(४९४) डोवर्स पाउडर ४ ग्रेन किनाइन २ ग्रेन ये चूर्ण तीन वखत दिनमें देना गुण ऊपर मुजब.

(४९५) आइपीकाक्युआन्हा १ ग्रेन डोवर्स पाउडर २ ग्रेन कीनाइन १ ग्रेन दो वर्षके बचेकों फजर सांझ लिखे मुजब मात्रा देनी एक वर्षके बचेकूं आधी मात्रा ६ महीने वालेकूं चोथा हिस्सा बुखार दस्तमें.

(४९६) लाइमवोटर २ क्वोटर्स पाणीमें एक औंस कली चूना धरना थोडे घंटे रखकर ऊपर नीतरा साफ जल होय उसकूं लाइम वाटर कहते हैं, मात्रा १ से ३ औंस बचेके दांत आते अतीसार मरोडा अपचा हेजेमें देते हैं. बचेकूं हमेस खुराकके संग बहोत वेर देते हैं.

(४९७) बाइकारबोनेट ओफमेगनिस्या १५ ग्रेन एनीसिड ओइल २ बूंद डिस्टील्डवोटर १॥ औंस चरबी अथवा वादीवाले बचेकुं ६ से १२ महीनेकी ऊमरतक १ ड्राम ६ महीनेसें छोटे बचोंकूं ॥ ड्राम गर्मनीके बेमारीमें एक वखत सब देनी.

(४९८) केलोमेल २ ग्रेन अफीमका सत्व ¼ ग्रेन दोनों मिलाकर एक गोली करणी मात्रा तीन चार घंटेके फासलेसें एकेक गोली सखत सोजेका रोग होय जब वदनमें पारेकी जरूरत पडे तब ये गोली देते हैं, इससें मूं आता है.

(४९९) ब्ल्यु पिल्स २ ग्रेन एक स्ट्राकट ओपियम आइपीकाक्यु आन्हा पाउडर ½ ग्रेन मिलाकर इसकी गोली बणाणी एसी १ गोली दर तीन ३ घंटेसे देणी मरोडेमें तथा सखत अतिसारमें फायदे बंद है.

(५००) आयोडाइट ओफ पोटाशीयम १ ड्राम डिस्टील्ड वोटर ८ औंस उपदंशके रोगमें दिनकों तीन वखत हर वखत १ औंस.

(५०१) ब्रोमाइड ओफ पोटाश्यम १ ड्राम डिस्टील्ड वोटर ८ औंस हिचकी तथा वाइमें दी जाती है मात्रा १ औंस दिनमें तीनवेर ऊपरकी दो यादीमें दो पोटाश आयोडाईड और ब्रोमाइड लिखाहै, दोनोंकूं कैइयकदिन कितनेक अठवाडियेतक बहोतसा पेटमें लेणेंसें शिरमें शरदी पैदा होती है गला आजाता है. और वदनपर छोटी २ फुनसिये फूटकर निकलती है एसी हालत वणे तब दवा बंधकर देणी.

(५०२) रुवार्वका चूर्ण १ स्कुपल सल्फेट ओफ सोडा १ स्कुपल एरोमेटिक स्पिरिट ओफ एमोनिया ½ ड्राम पेपरमेंट ओइल १ बूंद पाणी २ औंस इन सबोंकों मिलाकर एकही वखत ले लेणा होजरीमें खटास भया होय अथवा गर्भावस्थामें उलटी होयतो देतेहैं.

(५०३) सोल्युशन ओफ पोटाश १ ड्राम टिंक्चर हायोसायमस २ ड्राम टिंकचर बूकोना २ ड्राम इन्फयुझन बुकु ६ औंस मूत्राशयके पुराणे मरजमें देते हैं. मात्रा एकेक औंस दिनमें तीन वखत.

(५०४) टार्टरिक (साइट्रिक) एसिड २ ड्राम एरोमेटिक स्पिरिट ओफ एमोनिया २ ड्राम डिस्टील्ड वोटर ८ औंस मिलाकर उफाण आवे उसकूं बैठणे देणा मात्रा एकेक औंस दिनमें तीनवेर रक्तपित्तके रोगमें देणा.

(५०५) बाइकारबोनेट ओफ सोडा २ ड्राम कोलचीकमवाईन २ ड्राम स्पिरिट ओफ नाइट्रिक इथर २ ड्राम डिस्टील्डवोटर ६ औंस मिक्श्चर तइयार करणा एकेक औंस दिनमे तीन वखत पीणा नजला तथा संधिवायुमें देतें हैं.

(५०६) बाईकारबोनेट ओफ सोडा २ ड्राम टींकचर रुबार्ब ०॥ औंस टिंकचर जींजर १ ड्राम स्पिरिट क्लोरो फोर्म १ ड्राम डिस्टील्डबोटर ६ औंस मिक्श्चर तइयार करणा मात्रा दिनमें तीन वखत एकेक औंस कामला रोगमें देणा.

(५०७) एकस्ट्राकट ओफ टारकसाकम २ ड्राम डाइल्युट म्युरी आटि एसिड १ ड्राम ईन्फ्युझन ओफ जनश्यन ८ औंस तीनोंकों मिलाणा मात्रा एकेक औंस दिनमें तीन वखत सीसी हिलाकर दवा निकालणी पांडू तथा लीवरके दुसरे विकारमें उपयोगी है.

(५०८) डाईल्युट नाइट्रिक एसिड १ ड्राम डाईल्युटम्युरी एटिक एसिड १ ड्राम टिंकचर ओफ जींजर १ ड्राम डिस्टील्डबोटर ८ औंस मिलाकर तइयार करणा मात्रा एकेक औंस दिनमें तीन वखत कलेजेके रोगमें उपयोगी है ये दवा पीकर मूं धोडालणा.

(५०९) बाईकारबोनेट ओफ पोटाश १ ड्राम नाइट्रेट ओफ पोटास ०॥ ड्राम टिंकर ओफ जींजर १ ड्राम डिस्टील्डबोटर ८ औंस एकेक औंस दिनमें तीन वखत ये मिलावट चमडीके रोगमें बाहर लोशन तरीके लगाणेमें वापरते हैं.

(५१०) बाइकारबोनेट ओफ पोटास १ ड्राम नाइट्रेट ओफ पोटाश ०॥ ड्राम टिंकचर ओफ जींजर १ ड्राम डिस्टील्डबोटर ८ औंस मात्रा एकेक औंस दिनमें तीन वखत अपचा तथा संधिवायुमें जब पैसाब बहोत थोडा उतरे तथा बहोत लाल उतरे तब ये उपयोगी है.

(५११) बाइकारबोनेट ओफ पोटाश २० ग्रेण साइट्रीक एसिड १४ ग्रेण पाणी २ औंस पाणीमें पहली दवाकूं मिलाकर पीछे पीते वखत दुसरी दवा मिलाकर पीजाणा होजरीका खटास मिटाती है.

(५१२) बाईकारबोनेट ओफ सोडा १७ ग्रेण साइट्रिक एसिड १४ ग्रेण पाणी २ औंस सोडावाटर उपयोग ऊपर मुजब.

(५१३) बाईकारबोनेट ओफ सोडा २ ड्राम टार्टरिक एसिड १ ड्राम पाणी ८ औंस जलमे २ [illegible] में भरके रखणा ४ औंस जलमें १ ड्राम एसिड [illegible] एक औंस सोडा मिक्श्चर और ०॥ औंस एसिड [illegible] गर्भणीके उल्टी वगेरे रोगोंमे फायदेमंद है.

(५१४) सोडामिकश्चर १ औंस क्लोरो फोर्म २० बूंद ऊपर लिखे मुजब तइयार किया भया सोडा मिकश्चरमें क्लोरा फोर्म मिलाणा इसकूं पीते वखत हिलाणा गर्भणीके रोगमें बदहजमीमें और दरियावकी मुसाफरीमें उलटी होती है उसमें बहुत उपयोगी है.

स्तंभनद्वायें.

जो दवाये शरीरके जुदे २ भागोपर असर करके रसोत्पादक क्रियाकूं कम करती है तथा खून वहणेवाली नसोके मूंकूं संकोच खूनके प्रवाहकूं बंध करती है वोजातकी एस्ट्रीनुजन्टस कहते हैं आयर्न एलम लेड गेलिक एसिड चोक ओपीयम ये सब इस वर्गकी दवायों है.

(५१५) एलम (फिटकडी) का भूका १ ड्राम डिस्टीलडवोटर ८ औंस पाणीमे फिटकडीकूं मिलाकर उसमेंसें दर ४ घंटेसें एकेक औंस पीणा गर्भगिरता और फेफसेके रक्त गिरणेमें उपयोगी है रक्त प्रदर पुराणे मरोडेमें फायदेबंद है.

(५१६) डाइल्युटसल्फ्युरिक एसिड १॥ ड्राम टिंकचर ओफ जींजर १ ड्राम पाणी ८ औंस मिलाकर दर चार २ घंटेसे एकेक औंस पीणा गर्भश्राव फेफसेका खून गिरणा में फायदेबंद है पीकर मूं साफ धोडालणा.

(५१७) एसटेड ओफ लेड ३ ग्रेण टिंकचर ओपियम ५ बूंद डिस्टीलडवोटर १॥ औंस मिलाकर एक वखत पीणा इतने प्रमाण तीन २ घंटेसें लेणा फेफसेमेंसे खून गिरे उसमें देते हैं.

(५१८) डाइल्युट सल्प्युरिक एसिड २५ बूंद टिंकचर ओपियम ८ बूंद पाणी १ औंस दरवखत इस वजनसें दिनमें तीन वेर पीणा फेफसेमेंसें तथा होजरीमेंसें खून गिरता होय मरोडेके खून गिरणेमें देते हैं १ वर्षके बच्चेकूं इस मिलावटमेंसे १ ड्राम देणा.

(५१९) गेलिक ऑसिड ५ ग्रेण पाणी २ औंस दरवखत इस वजन मुजब दिनमें तीनवखत लेणा फेफसेका खून गिरणा होजरीका खून गिरणा रक्तपित्त अतिसार और मरोडेमें फायदेबंद है.

(५२०) एसेटेट ओफ लेड ३ ग्रेण एकस्ट्राकट ओपियम ¼ ग्रेण मिलाकर एक गोली करणी एसी एकेक गोली दिनमें तीन वखत लेणी कोईभी तरेसें खून गिरणेमें अतिसार तथा मरोडेमें फायदेबंद है.

(५२१) पल्वीसक्रीटा एरोमेटिककम ओपियम ५ ग्रेण बाइकारबोनेट ओफ सोडा १ ग्रेन एलम (फिटकडी) का भूका ½ ग्रेण तीनोकी १ पुडी करणी बचोंके अतिसार तथा मरोडेमें फायदेबंद है मात्रा १॥ से २ बरसके बचेकूं ७ ग्रेण १ व रसवालेकूं ३॥ ग्रेन ६ महीनेकूं १॥ ग्रेन.

(५२२) अफीमका सत्व ॥ ग्रेण चोक २४ ग्रेण मिश्री २४ ग्रेण और ६ महीने-तक $\frac{1}{2}$ पुडी दर एक पुडी अछीतरे मिलाकर १२ पुडी करणी मात्रा १ वरसके बचेकूं एक २ पुडी चार २ घंटेसे एक वरसके अंदर $\frac{1}{2}$ पुडीमें $\frac{1}{24}$ ग्रेण अफीम आता है बचोंका मरोडा तथा अतीसारमें फायदेवंद है.

उत्तेजक तथा शांत दवायोंका योग.

जिस दवायोंके योगसें शरीरमें जाग्रती होकर रोग शांतपडे एसी दवायोंका ऊपर लिखासो नाम है, जिस रोगके शरीरकी पीडाके संग मूर्छाके अथवा नाताकती मालमपडे उस रोगमें ये दवायें दी जाती है, एसे रोगोंमे अतिसार हैजा आंकसी दरदके संग ऋतु धर्म आणा और अजीर्ण (डिस्पेपस्या) के कितनेकोंका समावेश होता है.

(५२३) क्लोरोफोर्म १ ड्राम एरोमेटिक स्पिरिट ओफ एमोनिया १ ड्राम स्पिरिट ओफ नाइट्रीक इथर १ ड्राम ब्रांडी १ औंस चारोंकों मिलाणा मात्रा १ प्याले जलमें १ ड्राम मिली दवा लेकर पीणी छ महीनेके बचोंकूं ३ से ४ बूंद १ बरस वालेकूं ६ से ७ बूंद २ वर्षके बचेकूं १० से १२ बूंद थोडे जलके संग अतिसार तथा मरोडा इस दवाकूं मजबूत बुचकी शीशीमें भरके रखणी और लेती वखत शीशीकूं हिलाणी.

(५२४ क्लोरोफोर्म १ ड्राम एरोमेटिक स्पिरिट ओफ एमोनिया १ ड्राम क्लोरोडाइन २ ड्राम ब्रांडी १ औंस मात्रा एकेक चिमचाभर दवा चहिये जितने पाणीमें पीते पहोत सखतपणा नहीं मालम पडे इतना पाणी डालणा उपयोग ऊपरकी मिलावटमुजब.

(५२५) चोक १ ड्राम एरोमेटिक्र स्पिरिट ओफ एमोनिया २ ड्राम टिंकचर ओपियम ४० बूंद केम्फर मिकश्चर ८ औंस मिलाकर मिकश्चर तइयार करणा मात्रा एकेक औंस दिनमें तीन वखत अजीर्ण तथा अतिसारमें उपयोगी है.

(५२६) बेन्झोइक एसिड १ ड्राम कारबोनेट ओफ एमोनिया १ ड्राम पाणी ८ औंस मात्रा एकेक औंस दिनमें तीन वखत कितनीक तरेके संधिवात मूत्राशयके कितनेक विकारोंमें उपयोगी है.

(५२७) एकस्ट्राकट कोनायम ३ ग्रेण एकस्ट्राकट हेम्प (गांजा) $\frac{1}{2}$ ग्रेण केम्फर (कपूर) १ ग्रेण इन तीनोंकी गोली करणी एकेक गोली दिनमें तीन वखत लेणी दम तथा आंकसीके संग हांफणीमे देते हैं.

पिशाब लाणेवाली मिलावटी दवा.

जो मिलावटी दवायें मूत्राशय और मूत्रके रस्तेपर असर करके पेशाबके जथेकूं बढाती हैं, वो डायुरेटिक्स कहाती हैं, जुदे २ जलोदरमें ये दवायें बहुत उपयोगी है, बुखार संधिवाय नजला और अजीर्ण जिसमें पेशाब थोडा और लाल उतरता है, एसे

रोगोंमेंभी फायदेवंद है, इस किसमकी दवायोंमें नाइट्रेट ओफ पोटाश स्पिरिट ओफ नाइट्रिक इथर कोलशीकम वगेरे मुख्य है.

(५२८) नाइट्रेट ओफ पोटाश १ ड्राम स्पिरिट ओफ नाइट्रिक इथर २ ड्राम वाईन ओफ कोलशीका २ ड्राम पाणी ८ औंस चारोंकों मिलाणा मात्रा-एकेक औंस दिनमें तीन वखत है, संधिवायुमें उपयोगी है.

(५२९) नाइट्रेट ओफ पोटाश १० ग्रेण वाइकारवोनेट ओफ पोटाश १ स्कुपल मिश्री २ ड्राम इनोंकी १ पुडी करणी एसी एकेक पुडी दिनमें तीन वेर जवके पाणीके संग लेणा.

(५३०) नाइट्रेट ओफ पोटाश २ स्कुपल स्पिरिट ओफ नाइट्रेक इथर २ ड्रा टिंकचर ओफ केन्थारीडीस २ ड्राम पाणी ८ औंस चारोंकों मिलाणा मात्रा एकेक औं दवा दिनमें तीन वखत हैजेमें जव पेसाव वंध होय तव ये दवा देणी.

नींद लाणेवाली दवा.

जो दवायें रोगकी पीडाकू कम करके नींद लाती है, उसकू हीपनोटिकस कहते हैं एसी दवायोंमें मुख्य ओपियम मोफर्या क्लोरल वगेरे है जादा मात्रामें ये सव दवायें जह रहे इसवास्ते सावचेतीसें वरतणा.

(५३१) क्लोरल २० ग्रेण पाणी १॥ औंस इस वजनमुजव एक अथवा जाद वखत देणी.

कितनेक रोगोंमें अफीमके एवजीमें क्लोरल दिये जाता है, जो क्लोरलके २० ग्रेण नींद लाणेकू पूरी नहीं होय तो दरेक वखतमें पांच २ ग्रेणकुं वढा २ कर आखर ४० ग्रेणतक मात्रा वढ शकती है, ५।१० ग्रेन जितनी मात्रामें क्लोरल नशोंकों शांत करताहै वो मिश्री तथा पाणीके संग दिये जाता है.

(५३२) हाइड्रोक्लोरेट ओफ मोफर्या $\frac{1}{3}$ ग्रेण रेक्टीफाइड स्पिरिट ओफ वाइन १० वूंद पाणी १ औंस तीनोंकों मिलाकर एक वखत पीणा नींद लाणेकों सख्त दवाकी जरूरत पडे तव ये दवा देणी जव आंतरेमें कोइ हरकत होय अथवा धनुप वायके जोरमें.

उलटी कराणेवाली.

होजरीकू संकुचाकर उछाला तथा उलटीकू पेदाकर होजरीमेंकी चीजकू गलेसें वाहिर निकाले एसी दवाकू इमेटिक्स कहते हैं, साधारण वरतणेमें उलटीकी दवा आइ पीकाक्युआन्हा टार्टर इमेटिक और सल्फेट ओफ झिंकहै उलटीकी क्रियाका जोर वढाणेकू गरम पाणी दिये जाता है, उलटीकी दवा लियेवाद उलटी खुलास नहीं होयतो गलेमें पींछी फेरणी तव जोरसे कै होती हैं, राइ और और निमकसें भी उलटी हो जाती है, वेर २ देणेमें दुसरी दवा नहीं मिले तव इसमेंकी जो चीज हाजर होय

उसकूं उलटी लाणे वास्ते उपयोग करणा एक क्वोर्ट गरम जलमें अंदाजन १॥ औंस निमक मिलाकर पीजाणा उलटीकी दवा मुख्य करके जहर खायेकूं और गलेके रोगमें दी जातीहै किसी २ वखत बुखारमें पित्तकूं निकालणेवास्तेभी उलटी दी जाती है टार्टरइ्मेटिककी उलटी लेणेसें रोगी गभराज जाता है और मूर्छा आ जाती है इस वास्ते बहुत छोटी उमरमें बहुत वृद्धावस्थामें और बहुत ना ताकतमें इसका उपयोग बिलकुल नहीं करणा.

(५३३) राइका आटा टेबलस्पून फूलयाने ॥ औंस सादा निमक १ टीस्पूनफुलयाने १ ड्राम गरम पाणी १० सें १२ औंस एक वखतमें पीजाणेसें पांच मिनटमें उलटी होगी-

स्थानिक इलाज.

स्थानिक इलाजोमें गरम पाणीकी वाफ पोल्टास ठंढे जलका भीगा कपडा दरद दबाणेका उपचार उत्तेजक उपचारस्तंभक उपचार फफोला उठाणेवाला इलाज पिचकारीका समावेश हो सकता है.

गरम उपचार.

(५३४ थूलीकी पोल्टीस)–शण अथवा फुलालीनकी कोथली बणाणी और आधी थूलीसें भरणी पीछे थूली भीज जाय इतना उकलता पाणी कोथलीपर डालणा थेलीका भीगासवाला भाग चूस लेणेकूं उसकूं जाडे कपडेके रुमालपर धरणी पीछे दुखती जगेपर उसकी पोटली गरम २ धर देणी उसपर सूका रुमाल लपेटना.

(५३५) रोटकी पोल्टीस–एक बासणमें १० औंस गरमकल २ ता पाणी डालणा पाणीमें मिले इतना रोटीका टुकडा डालणा और पांच मिनट भिगाये रखणा पीछे पाणीकूं छाण लेणा भीगे टुकडोकों शणके टुकडोपर धरके दरदकी जगेपर धरणा बहोतसे लोक इसके बदले गेहूंके आटेकूं वाफ करके उसकी पोल्टीस करते है वोभी एसाही गुण करती है.

(५३६ अलशीकी पोल्टीस)–कूटीभई अलशी अथवा उसके आटेकूं उकलते जलमें वाफकर उसकूं गरमपाणीमें निकालकर कपडेके बीचमें देकर गरमागरम दुखते भागपर बांध देणा.

(५३७ भीगाशेक–फुलालीनको एक कपडेका दो चार घडी कर उसकूं गरम पाणीमें भिगाकर बाहिर निकाल न चोडकर वो कपडा रोगीसे सहाजाय एसा गरमागरम दुखती जगेपर धरणा और उसपर रुमाल लपेटणा दुसरा फुलालीनका टुकडा गरम पाणीका भिजाया तइयार रखणा अगला ठंडा पडाके तुरत निकालकर दुसरा कपडा उसपर गरम थगली तेर लगा देणा इसतेर शेक करते जाणा दरद जादा होयतो सादे पाणीकी जगे अफीमके डोडोंकूं उकाल उसके पाणीमें भिगाकर शेक करणा.

(५३८ सूका शेक)–भीगे सेकके बदले कितनीक जगे सूका शेक करणेकी जरूरत पडती है फलालेणमें रेती ईंट धूली इसमेकी कोइभी एक चीज बांधकर उसकी दो कोथली अंगारेपर उंची धरकर गरम करके दरदकी जगे वारे फिरती शेक किया जाता है गरम करी भई ईंट अथवा गरम पाणीसें भरी शीशी फलालेनके कपडेमें लपेट उसकाभी शेक किये जाता है इन्डिया रबर ब्याग याने रबरकी थेलीमें गरम पाणी भरके उसका शेक करणेमें आता है ये थेली तइयार मिलती है भीगाया सूका गरम शेक नुकशान करता नहीं. शेकसें शरीरका कोइभी भागमें खून कफ पित्तया वायुका जमाव भया होयतो वो विखर जाता है.

ठंडा इलाज.

ठिकाणेके दरदमें पीप होणा सरू होय उसके पहली ठंडा इलाज फायदा करता है क्योंके वो पीप होणे नहीं देता लेकिन चोकस रोगमें पीप होणा सरू भयाया नहीं इस बातकूं नक्की करणा चाहिये लेकिन इस बातका नक्की करणा मुस्कल है ठंडा भीगा वस्त्र धरणेसें जो रोगीकूं ठंढकी कंपाणके संग बेचेनी मालम पडे तो समझणा के ठंडा उपचार नुकसान करेगा तब ठंडा पोता नहीं धरणा ठंडा उपचार नीचेमुजब करणा.

(५३९) सोराखार (नाइट्रेट ओफ पोटाश ½ औंस नवसार हाइड्रोक्लोरेट ओफ आमोनिया ½ औंस सादा निमक ½ औंस पाणी १२ औंस ठंडे उपचारकी जरूर पडे तब इस मिलावटका उपयोग करणायाने शणका कपडा भिगाकर धरणा जो जादा ठंडककी जरूरत पडे तो पाणी वहोत थोडा लेणा लोशन कोरा पडे तब बोफेर जलमें भिगाकर धरणा अथवा ऊपरसें पाणी सींचणा.

एसेटेट ओफ लेड १ ड्राम रेक्टिफाइड स्पिरिट ओफ वाइन १ औंस पाणी १२ औंस प्रवाहीवणाणा और ऊपर लिखे प्रमाणे भीगा कपडा धरणा.

शांतिकारक इलाज.

(५४० पाणीका इलाज) शण अथवा लींटके कपडेकूं दोलडाकर पाणीमें डूबाकर उसकूं वोटरड्रेसिंग कहते हैं उसपर पाणी प्रवेश नहीं करे एसा तेलवाला रेशमी कपडा (गटापरचावाला) कपडा बांधना इस ड्रेसिंगकूं दिनमें दो वखत बदलाणा दाह करणेवाला भरता भया घावपर ए इलाज बहुत अछा है पाणीमें कितनीक दवा डालकेभी ड्रेसिंग करणेमें आता है ड्रेसिंग गरम तेसें ठंडा दोनुं तरेके पाणीका हो सकता है.

(५४१ सादा मलम) चरबी २ भाग आलिव्ह ओइल १ भाग पीला मोम ½ भाग एक तवेपर सब चीजोंको पिघलाकर एकत्र करणा मलम ठंडा पडे तहांतक हिलाणा ए मलम बहोत तरेसे वापरणेसें और पीछेसें उसमें दुसरीभी कीतनीक दवायें मिलाकर लगासे घावकूं भरता है.

(५४२) अलशीका तेल और लीइम वाटर (चूणेका पाणी) समभाग मिलाकर

खूब हलाणा (एक गेलन पाणीमें ॥ सेर कलीचूना डालनेसें लाइमवोटर वणता है ए तेल जले भागकूं अछा करणेमें वहुत फायदेबंद है.

(५४३ क्यालोमेल ३० ग्रेण ब्ल्याकाश—लाइमवोटर १० औंस शीशीमें भरकर हलाणेसें मिलकर लोशन वणता है. गुप्त इन्द्रियका क्षत घावपर बहुत उपयोगी हे उसका भीगा कपडा धरणा.

(५४४) टिंकचर ओपियम १ द्राम टिंकचरएकोनाइट १ द्राम क्लोरोफोर्म १ द्राम सोपलीनीमेन्ट १॥ औंस इनोकों मिलाकर तेल लिनिमेन्ट वणाणा और उसपर झहर एसा नाम लिखणा चसकेके दरदपर ए लिनिमेन्ट लींट अथवा वादलीके टुकडेसें रगडणेसें दरदशांत होता है चमडीपर कोइ घाव या इजा होय तो मूंमे अथवा बच्चोंके दरदमें इसका उपयोग करणा नहीं.

एक छोटी शीशीके दो भागमें कपूरका भूका भरणा और खाली रखा भया भागमें रेक्टिफाइड स्पिरिट ओफ वाइन अथवा सल्फ्युरिकइथरसेभर देणा एक लकडीके नाके लींट अथवा वादलीका टुकडा बांध उससें इस प्रवाहीकुं दुखते भागपर रगडणा एक मिटमे दरद बंध होता है ए जादा देर असर रहता नहीं.

भेदक असर करणेवाला इलाज

मल्हम

(५४५) गंधकका चूरा १ औंस नाइट्रेट ओफ पोटाश ॥ द्राम साबू अथवा ग्रिसराइन १ द्राम चरबी ४ औंस अंगारपर चरबीकूं पिघलाकर एक खरलमें बराबर मिलाणा ए मलम खुजलीका पक्का इलाज है.

(५४६) टिंकचर ओपियम २ द्राम कारबोलिक एसिड २० ग्रेन चरबी १ औंस आलिव्ह ओइल १ औंस अंगारपर पिघलाकर सब एकत्र करणा और ठंढा पडे जहांतक हिलाणा जखम (अल्सर्स) के वास्ते अछा इलाज है.

(५४७) रेडआयोडाइड ओफ मर्क्युरी १६ ग्रेन चरबी ॥ औंस आलीव्ह ओइल ॥ औंस चरबी तथा तेलकूं पिघलाकर एकत्र करणा पीछे आयोडाइड ओफ मर्क्युरी डाल खरलमें घोट मिलाणा वधी भइ तापतिल्ली रसकी गांठ (गल्पाड) पर रगडणेसें अछा फायदा करती है.

(५४८) मांजूफलका भूका ८० ग्रेन एकस्ट्राकट ओपियम ३० ग्रेन सादा मलम १ औंस एक खरलमें बराबर घोट मिला देणा हरसका मरसा तथा खून गिरणेका अछा इलाज है.

(५४९) एसेटेट ओफ लेड ३० ग्रेन सादा मलम १ औंस खरलमें बराबर मिलाणा रक्त पित्तके अलसरके वास्ते अछा मलम है.

(५५०) फिटकडीका भूका २० ग्रेण डिस्टील्ड वोटर ८ औंस अछीतरे मिलाकर लोशन वणाणा आंख तथा कानके पकणेमें तथा जड भये घाव (अलसर) में उपयोगी है.

(५५१) सल्फेड ओफ झिंक ८ ग्रेण डिस्टील्ड वोटर ८ औंस अछीतरे मिलाकर लोशन वणाना आंख तथा कानके दरदमें बहुत उपयोगी हैं.

(५५२) बाइकारबोनेट ओफ सोडा १ ड्राम डिस्टील्ड वोटर ८ औंस अछीतरे मिलाकर लोशन वणाना खुजली तथा चमडीके दुसरे रोगोंमें उपयोगी है.

स्तंभक और रोपण कुरले.

(५५३) फिटकडी १ ड्राम डिस्टील्ड वोटर ८ औंस कुरले करणेकूं चोरिये गलापकणा मूंका जखम रक्तपित्त वगेरेमें कुरला करणा तथा पिचकारीके काममें आती है.

(५५४) जींजरका अर्क (स्ट्रोंग) १ ड्राम डिस्टील्ड वोटर ८ औंस कुरले करणेकुं ढीले पडे घांटेमें उसके कुरले घांटेकूं उत्तेजन देता है.

(५५५) गेलिक एसिड १ स्कुपल ब्रांडी ४ ड्राम डिस्टील्ड वोटर ५ औंस कुरले करणेकूं थूक लाल मूंकी चांदी(स्कर्वि) रगतपित्तकेमें उपयोगी है.

(५५६) सल्फेट ओफ झिंक ३० ग्रेण डिस्टील्ड वोटर ८ औंस अछीतरे मिलाकर कुरले वास्ते उपयोगमें लेणा ए और ऊपरके तीन इलाज मूंकी चांदी शुक चोंरिया गलेका सोजा वगेरोमें एक नहीं तो दुसरा फायदा करता है.

पिचकारी (वस्ति).

(५५७) स्टार्च अथवा साबू २ ड्राम गरम पाणी १० औंस दोनोंकों मिलाकर पिचकारी तरीके जरूर पडे तब उपयोग करणा.

(५५८) एसे फोटीडा (हिंग) १ ड्राम साबू १ ड्राम केस्टर ओइल (एरंडी तेल) १ औंस गरम पाणी ८ औंस चारों चीजों अछीतरे मिलाकर देवे उत्तेजक वस्ती (पिचकारी)

(५५९) एरंडी तेल ½ औंस टरपेन्टाइन १ औंस जमालगोटेका तेल २ बूंद साबू ३० ग्रेण गरमपाणी ८ औंस अछीतरे मिलाणा रेचकवस्ति मगजमें खून चढे तब फायदेबंद है.

(५६०) सल्फेट ओफ झिंक २० ग्रेण टिंकचर ओपियम ३० बूंद गरम पाणी ८ औंस स्तंभनवस्ती श्वेत प्रदर तथा गर्भस्थानमें दुसरे विकारोंमें उपयोगी है.

चमडीपर दाह ललाई तथा फफोला उठाणेवाला इलाज.

(५६१) टरपेन्टाइनके पोते-- लींट अथवा फलालेनका टुकडा टरपेन्टाईन स्पिरिटमें भिगाणा और शरीरके दरदकी जगे उसका पोता धरकर उसपर तेलवाला चमडा अथवा मूका कपडा धरणा आसरे एक घंटा अथवा बहोत दरद करे तो उहांतक रखकर पीछे निकाल लेना इस पोतेसें चमडी लाल होगी लेकिन् फफोला उठेगा नहीं.

(५६२ राईका पल्स्टर) राईका आटा (अंग्रेजी दवा वेचणेवालोंके इहां तइयार मिलता है, या घरमें पीसाकर तइयार करणा) लेकर उसमें जरा गरमपाणी मिलाकर सणके टुकडेपर वो हाजर नहीं होय तो हर कोइ कपडेपर या कागजपर विछाकर वो पलास्टर दरदकी जगेपर धरणा उहां उसकूं २० से ३० मिन्ट रहणे देणा बचोंसें सख्त पलास्टर सहा नहीं जाय वास्ते राईका पलास्टर और चमडीके बीचमें मुल २ का महीन कपडा धरकर पलास्टर धरणा ये पलास्टर वहोत सख्त पडजाय तो फफोला उठता है, घाव पडता है.

(५६३ ब्लीस्टर) स्टिकिंग पलास्टर के टुकडे पर केन्थारीडिस पलास्टर थोडा २ विछाकर लगाणेमें आता है, उससे विलस्टर (फफोला) आसरे दो घंटेमें उठणा सरू होता है, छ अथवा आठ घंटे पीछे वो पलास्टर उठा लेणा चहिये फफोलेकी उठी चमडीकूं फोड डालणा महीन कतरणीसें और पाणी निकलणे देणा लेकिन् फफोलेकी सब चमडी कतरणी नहीं पीछे उसपर सादे मलमका ड्रेसिंग करणा छवया आठ घंटेसें ड्रेसिंगकभी अलग कर लेणा बहोतसी वखत दुसरी वेरभी फफोला भर जायतो अगली तरे पाणी निकाल डालणा पीछे दिनमें दो वेर सादे मलमका ड्रेसिंग करणा किसी २ वखत विल्स्टरके पासकी चमडीपर गुमडे हो जाते हैं, तो उहां सेक करणा और पोटिस बांधणी.

छोकरोके विल्स्टर लगाते बहोत सावचेती रखणी जो कभी विलस्टर मारणेकी जरूरी ही होय तो चमडीपर महीन कपडा देकर फेर लगाणा जिस्सें जादा असर नहीं हो सके तीन घंटेसें जादा रहणे नहीं देणा.

चोट लगणेपर बाहिरका इलाज.

(५६४) स्टार्च बेन्डेज-(सरेसकापाटा) सरेसकी अथवा गहूंके आटेकी घट लेद बणाकर उसमें पाटेका कपडा भिगाणा और इजाकी जगेंपर ऊपरा ऊपरी लपेटा देकर पट्टा बांधणा पीछे वो पाटा सूककर करडा होयगा तब चोटवाली जगेकूं मजबूत आधार भूत हो जायगा इस पट्टेकूं जरा मजबूतीसे बांधणा लेकिन बहोत खेंचके नहीं बांधणा टूटा भया अथवा खिस भये हाडपर बांधणेमें आये जो कमचिया वेंत बांमकी उसकूं निकाले बाद ये बेन्डेज बहुत फायदेबंद है.

(५६५ लेधर प्लाष्टर) चमडीपर राटका प्लस्टर लगाणेमें आता है, उसकूं लेधर पलास्टर कहते हैं, इस पलास्टरका उपयोगभी ऊपर लिखे वेन्डेज मुजब होता है.

गरम पाणीमें घंटणा.

(५६६) गरम भाफ बहोतसे रोगोंमें उपयोगी इलाज है, इस बातका बराबर उपयोग नहीं करणेमें आवे तो किसी वखत बहोत नुकसान कर जाता है, गरम भाफमें

शरीरके स्नायुओ ढीले पडते हैं, रिदय (हार्ट) की वधी भई क्रियाका जोर नरम पडता है, उससें वधी भई नाडीका वेग भी हलका पडता है, और उससें अशक्ति और मूर्छा आती है, इसवास्ते गरम पाणीमें वैठाये भये अदमीकी शरीरकी स्थितिपर निगे रखकर और उसका शिर छाती तरफ नहीं झुकणे देणा पीठके तरफ झुकाये भये रखणा गरम पाणीमें रोगीकूं कितनी एक देर रखणा उसका निर्णय उसपर गरम वाफकी असर होणे-पर आधार रखता है, जो असर जलदी होय और रोगीकूं मूर्छा आणे लगे तो उसकूं जलदी वाहिर निकालणा पाणीमेंसें निकालकर रोगीकूं पूंछकर कोरा करणा विछोणेमें सुलाणा जो मूर्छा आई होयतो एसीही हालतमें सुलाकर पोंछकर सूका वदन करणा वच्चोंकी चमडीपर वाहरकी गरमी या ठंढी जादा जलदी असर करती है, वास्ते उनोकों गरम पाणीमें विठलाते या गरम शेक करते वहोत संभाल रखणी वहोतसे वच्चे जादा गरम वाफसें जलकर मरणेके दाखले वणते हैं, वच्चोंके वास्ते गरम वाफकी गरमी ९६ से ९८ डिग्रीसें जादा नहीं होणी चहिये.

वडी ऊमरके अदम्योंके आंकसीके संग वहोत दरद पेसावमें रेतीका जाणा मूत्राघात साधारण गांठ आंतरोंका रुकणा और संधिवायुमें गरम पाणीमें वैठाणेमें आता है, और वच्चोंकों मुख्य पणे करके खेंचाताण हिचकी वायु नलीका वरम आंतरेमें दरद दांत आते वखतकी वेचैनी और वदनपर चरवी अथवा मेद वायुका चढणा वगेरे दरदोंमें गरम पाणीमें वैठाणा वहोत फायदाकारक होजाता है.

वदनके चमडीकूं गरमी देणेकी दुसरी निर्भय और सहजरीत एसी हे के एक ऊनकी धावली अथवा कंवलीकूं गरमपाणीमें डुवाकर निचोडकर वो गरम २ वदनके लपेट लेण और उसपर सूकी कामली लपेटणी इसतरे २० मिनटतक ढके रखणा पीछे कंवली दूर कर गरम टुवालसें वदन पूंछ विछोणेमें सुला देणा.

(५६७) गरम पाणीमें दवायें डाल उसका वाफ लेणेमें आता है, जिससें दवाका असर चम-डीके छेदोंके रस्ते अंदर पहुंचता है, इस किसमकी दवायोंमे सादा निमक एसीडस सोडा सल्फर वगेरे मुख्य है, नाइट्रो म्युरीयाटिक एसिड वाथ इसतरे लेते हैं, म्युरियाटिक एसिड ३ भाग नाइट्रिक एसिड २ भाग इय दोनों एसिडकुं संभालकर धीमे २ एकत्र करणा पीछे डिस्टील्ट वोटर ५ भाग धीमे २ मिलाणा इसतरे मिलाणेसें उसमेंसें पेदाभई गरमीका ऊफाण वैठजाय तव उस प्रवाहीकों शीशीमें भरके रखणा दरएक वाथके वास्ते इस प्रवाहीमेंसें ६ औंस एसिड लेकर गरम पाणीमें डालणा इस वाथकी गरमी ९६ डिग्री होणी चहिये रोगीकूं इस वाथमें १५ मिनटतक रखणा और पाणीकी गरमी कायम राखणेकूं जेसें २ पाणी टंढा पडता जावे तेसें २ दुसरा गरमपाणी डालते जाणा, पीछे वाथमेंसें वाहर निकालकर जाडे टुवालसें पूंछकर वदन सूका करणा इस वाथका

मुख्य उपयोग कलेजेके और तिल्लीके पुराणे रोगमें उपयोग करणेमें आता है, म्युरियाटिक अथवा हाइड्रोक्लोरिक एसिड और नाइट्रिक एसिड बहोत सख्त है, और कोइभी चीज इनके स्पर्श (कोन्टेकट) में आती है. उसकूं जला देती है, इसवास्ते इसका उपयोग करते हुसियारी रखणी.

कपिंग (प्याला धरणेकी क्रिया).

(५६८) कपिंग धरणेकी पेटी विलायती तइयार आती है, उसमें कितनेक चढते उतरते कदके काचके प्याले कपिंग ग्लास होती है, फेर उस पेटीमें कितनेक धारवाले छुरी जैसे शस्त्र होते हैं, कपिंग दो तरे धरे जाते हैं, प्रथम चमडीपर चपका धरकर पीछे कपिंग ग्लाससे खून खेंचके निकालणेमें आता है, इसतरे मोइस्ट कपिंग कहाताहै, कमर पीठ घोची वगेरे जगोमेंसें इसतरे खून निकालणेमें आता है, कपिंगलगाणेकी ये रीत प्रचारमें नहीं है, चपका लगाये विगर लोक ग्लास लगाते हैं, वोड्राई कपिंग कहाती है, वो इसतरेसे हैं कपिंग ग्लासके अंदर स्पिरिट वाइन चुपडके उसकूं सिलगाई भई दिया सलाई दिखाणी जिससे वो जलणे लगेगी तब झट वो ग्लास चमडीपर उलटी धर देणी तब वो जलता भया स्पिरिट बुझ जायगा और जेसें २ उसके अंदरका धाफ नरम पडता जायगा तेसें २ चमडी अंदरसे खिचके उपस आवेगी और ग्लास मजबूत चपक जायगी थोडी देर इसतरे रहणे देणी पीछे ग्लासकूं एक बाजूसें खेंचकर चमडीसे दूर करणा कपिंग ग्लासमें स्पिरिट जरासाही लगाणा जिससें उसकी फकत वाफ प्यालेमें पैदा होकर प्याला चमडीपर चिपट जावे स्पिरिट वाइन प्यालेमें छांटे विगर फक्त स्पिरिट लेम्प थोडे मिनटतक रहणे देकर पीछे तुरत चमडीपर धर देणेसें भी वो चिपट मजबूत बेठती है, इसतरे एकके पीछे एक कितनेक ग्लास लगाये जातीहै, और इसतरे करणेसें चमडीके नीचेका खून उपसके ऊपर आता है, कपिंग्लास नहीं मिले तो सादे प्यालेसें काम निकल सकता है, प्यालेकूं एसा गरम करणा नहीं चाहिये के जिसंसे चमडी जल उठे प्यालेकूं चमडीपरसें उतारणेका काम छुरीके बदले अंगलीका नख कर सकता है,

गंदकी दूरकरणेवाली चीजों.

(५६९) कितनीक चीजोंमें एसा गुण होता है, सो उसकूं बदबोकी जगेमें डालणेमें आवे तो घोखराबवोकूं मारती है, एसी चीजोंकूं डिस इन्फेक्टंटम कहते है, उडता रोग जेसेके हेजा शीतला ओरी न्युमोनिक प्लेग वगेरे रोगमें एसी चीजों बहुत उपयोगी होती है, एसी वखतमें एसी चीजों वापरणेमें हवा साफ होती है, और हवामें फेलते भये रोगोंके परमाणु बहोत फेल नहीं सकते ये चीज वेपी और उडते रोगोंका मरज चलता है, तभी ही वापरणा एसा नहीं है, हर किसीभी वखत जिस ठिकाणेमें

खराब बदवो आती होय उस जगेमें एसी चीजों छांटणी या डाटणी वो इस मुजब चीजोंहै,

(कोन्डीस फलुइड) अथवा केन्डिस सोल्युशन इस नामका लालपाणी आता है, वो हर किस्मकी गंदकी तथा बदबोकूं जलदी दूर करती है, ये चीज वापरती वखत उसके एक भागमें ३० से ५० भागतक सादा जल मिलाणा पीछे उपयोग करणा दस्त करणेके पात्रमें वाडेमें जाजरूके चूलोंमें मोरियोंमें और हरकोई खराब दुर्गंधवाले जगोंमें ये पाणी छांटणा उडता रोगवाला बेमारका कपडा बदले पीछे अथवा हैजेमें दस्त उलटीसें बिगाडा होयतो वेसे कपडेकूं धोणा पहिले कोनडिस फलुइड थोडा डालकर पीछे सादे पाणीसें धोणा इसीतरे गंदकीकी जगामें पहली ये पाणी डालकर पीछे (गंदकी दूर करणी) (कली चूना) कोन्डिस फलुइड हाजर नहीं होयतो कली चूणा छिडकणा जो आसपास हैजेका रोग चलता होय तो घरमें कली चूना पोताणा और जाजरु मोरी वगेरेमे दिनमें दो तीन वखत चूना तथा चूनेका पाणी डालते रहणा इससे आसपासके चेपी हवाके तत्व कभी घरमे आता है, तो उसकूं ये डिसइन फेक्टंटस निकालकर साफ कर देता है.

(कोयला) दुसरी चीज नहीं मिले तब गामठी कोयलेके भूकेका उपयोग करणा खराब बदबोकों कोयला मिटाता है.

(गंधकका तेजाब) ०॥ सेर सादापाणी काचके वासणमें लेकर उसमें ०॥ रतल गंधकका तेजाब डालणा पीछे चीणाइ चौडी रकेबीमें अथवा मट्टीके चोडे बरतणमें। सेर सादा निमक डालणा उसपर ऊपर लिखासो तइयार किया भया गंधकके तेजाब वाले पाणीमेंसें ॥ रतल डालणा पीछे इस रकेबीकूं ॥ से १ घंटेतक कोठेमें धरदेणा इसयोगसें म्युरि क्याटिक एसिडगेस नामकी हवा निमकमेंसें निकलती है, वोहवाकी सब गंधकीकूं दूर करती है, जिस कमरेमें उडते चेपी रोगवालेका बिछाणा होय उस कमरेकी हवा बिगडणेका संभव है, इसवास्ते एसे रोगीके कमरेमें एक अथवा जादा रकेबीयां ओटेमोटेम रखकर हवाकूं साफ करणा चाहिये रखती वखत कमरेके जाली झरोखे दरवज्जे खोल देणा चहिये और रकेबीके बिलकुल पासमें कोइ मूं नहीं रखणा चाहिये.

दुसरे उपयोगी मिक्श्चर.

सादा बुखार.

(५७०) लाइकर एमोनी एसेटेटिस १॥ औंस सोराखार ३० ग्रेण स्पिरिट ओफ नाइट्रिक इथर १॥ ड्राम कपूरका पाणी ३ औंस टिंकचर एको नाइट १५ बूंद मात्रा १॥ औंस दिनमे २ वेर बुखार भरा होय उहांतक पिलाणेसें इस मिक्श्चरसें पसीना आता है.

(५७१) टार्टरइमेटिक १ ग्रेण एन्टीमोनियल पाउडर १२ ग्रेण दोनों दवाकूं अछीतरे मिलाकर उसकी ६ पुडी करणी एकेक पुडी दर तीन २ घंटेसें पाणी अथवा

चाके संग पिलाणा अथवा मिश्रीकी चासणीमें मिलाकर चटाणा ये दवाभी बुखार चढेमें दी जाती है,

ठंढके बुखार

(५७२) बाइकारबोनेट ओफ सोडा ३० ग्रेण टार्टरिक एसिड २६ ग्रेण पाणी २ औंस मात्रा २ औंस दर तीन घंटेसें.

ठंढका बुखार

(५७३) सालघोलेटाइल ३० बूंद पाणी २ औंस १ वखत देणा.

(५७४) क्विनाइन २४ ग्रेण पाणी ८ औंस डाइल्युट सल्फ्युरिक एसिड ३० बूंद मिलाकर मात्रा १ औंस.

(५७५) क्विनाइन २४ ग्रेण कारबोलिक एसिड १८ बूंद एकस्ट्राकट जनसपन चहिये जितना पहिली ऊपर दुसरी दवा डाल उसकें संग जनसपन बराबर मिलाकर २४ गोली बणाणी मात्रा ३ सें ६ गोली हमेस.

विषमज्वर

(५७६) डाइल्युट नाइट्रो म्युरियाटिक एसिड १५ बूंद चिरायतेकी चा ४॥ औंस मिलाकर दिनमें तीन वखत पीणा.

(५७७) एकस्ट्राकट सारसापरिला २ ड्राम टींकचर नक्षवोमिका १५ बूंद टिकचरकालिंचा १॥ ड्राम चिरायतेकीचा ४॥ औंस मिलाकरके उसका तीन भाग करके दिनमें तीन वेर पीणा.

पित्त ज्वरमें उलटी

(५७८) क्रीम ओफ टार्टर १ औंस नींबूका रस १ औंस मीश्री २ औंस पाणी २० औंस मिलाकर उसमेंसें थोडी २ देणी उलटीकूं मिटाती है.

पित्तज्वर

(५७९) लाइकर एमोनीएसेटेट १२ ड्राम एन्टीमोनियल वाईन १ ड्राम टिंकचर एकोनाइट २० बूंद साइट्रेट ओफ पोटाश १२० ग्रेण केम्फर वोटर ६ औंस एन्टीपाइरीन १ ड्राम मिलाकरके उसमेंसें चार घंटेमें एकेक औंस दवा पिलाणी.

पित्तज्वर.

(५८०) एन्टिमोनियल पाउडर १२ ग्रेण कपूर सादा ३ ग्रेण इन दोनों दवाकी गुलकंदमें ६ गोलीयें करणी दोदो गोली तीन २ घंटेसे देणी.

(५८१) क्विनाइन १५ ग्रेण पाणी ४॥ औंस क्लोरेट ओफ पोटाश ३० ग्रेण डाइल्युटसल्फ्युरिक एसिड २० बूंद मिलाकर बुखार कम पडे पीछे उसका तीन हिस्साकर तीन २ घंटेसे देणा.

(५८२) क्विनाइन १२ ग्रेण पाणी ६ औंस डाइल्युटनाइट्रिक एसिड १५ बूंद मिलाकर तीन २ घंटेसें दोदो औंस दुसरा बुखार चढे जहांतक देणा.

तीक्ष्ण संधिवायु.

(५८३) बाईकारबोनेट ओफ पोटाश १ ड्राम आयोडाइड ओफ पोटासम ३० ग्रेण वाइन ओफ कोलचीकम ३० बूंद पाणी ३ औंस मिलाकर दिनमें तीन वखत पिलाणा.

(५८४) गंधकका फूल २ ड्राम डोवर्स पाउडर १५ ग्रेण सोरा १ ड्राम चार पुडी करणी तीन २ घंटेसें देणा.

(५८५) नाइट्रेट ओफ पोटाश १५ ग्रेण डोवर्स पाउडर १५ ग्रेण उसकी तीन पुडी करणी एकेक पुडी ठंढे पाणीके संग दर तीन घंटेसे देणा.

(५८६) केलोमेल १२ ग्रेण टार्टर एमेटिक २ ग्रेण ग्वायाकमरेजीन २४ ग्रेण डोवर्स पाउडर २४ ग्रेण गूंदके पाणीमें १२ गोलियां करणी मात्रा १ गोली दिनमें ३या४वेर.

संधि वायु तीक्ष्ण नरम पडे पीछे इलाज.

(५८७) कारबोनेट ओफ आमोनिया १५ ग्रेण कम्पाउन्ड टिंकचर ओफ बार्क १॥ ड्राम पीरुवीयन बार्कका उकाला ६ औंस मिलाकर दिनमें ३ वेर मात्रा २ औंस.

संधि वायु पुराणा इलाज.

(५८८) आयोडाइड ओफ पोटाश्यम १५ ग्रेण टिंकचर ओफ हायोसाइम १॥ ड्राम चिरायतेकीचा ३ औंस मिलाकर दिनमें ३ वेर देणी.

(५८९) कोडलीवर ओइल ६ ड्राम लाइकर पोटासी ४५ बूंद आयोडाइड ओफ पोटाश्यम ९ ग्रेण पाणी ६ औंस मिलाकर दिनमें तीन वखत मात्रा दो औंस.

नजला [गाउट] इलाज.

(५९०) टिंकचर ओफ हेनबेन १ ड्राम पाणी १ औंस दोनोंकों मिलाकर सोते वखत देणा वेदनाका रोग कम करणेकूं ये दवा देणी.

(५९१) एलोझ १ ग्रेण ब्ल्युपील १ ग्रेण एपीकाक्युआन्हा १ ग्रेण एकस्ट्राक्ट ओफ कोलचीकम १ ग्रेण मिलाकर १ गोली करणी एसी एकेक गोली दिनमें चार वेर देणी.

(५९२) वाइन ओफ कोलचीकम ४५ बूद बाइकारबोनेट ओफ पोटाश २० ग्रेण पाणी ३ औंस मिलाकर एकेक औंस दिनमें ३ वखत पिलाणी.

पांडू इलाज.

(५९३) लिकरफेरीपर क्लोरीड ४५ बूंद लिकरस्ट्रीकन्या १५ बूंद टिंकचर डिजीटेलिस २० बूंद कास्याकी चा ३ औंस मिलाकर दिनमें तीन वखत पिलाणा.

रक्तपित्त [स्कर्वी] इलाज.

५९४) क्लोरेट ओफ पोटाश १ ड्राम टिंकचर सिंकोना कम्पाउन्ड ४ ड्राम नींबूका रस

४ औंस मिश्री—२ औंस ब्रांडी २ औंस पाणी ४ औंस मिलाकर तीन चार वखत देणा मात्रा ॥ औंस.

जलोदर (कलेजेका इलाज.

(५९५) क्विनाइन ५ ग्रेण टिंकचर ओफ स्टील ४० वूंद नाइट्रोम्युरीयाटिक एसिड १५ वूंद कलंभाकीचा ३ औंस मिलाकर दिनमें तीन वखत देणी मात्रा १ औंस.

जलोदर (कलेजेका) इलाज.

(५९६) फोसफेट ओफ आयर्न ६ ग्रेन एकस्ट्राकट नक्सवोमिका १ ग्रेण एकस्ट्राकट जनश्यन चहिये जितना मिलाकर उसकी दो गोली करणी फजर सांझ एकेक गोली देणी.

जलोदर इलाज.

(५९७) एलिया ४ ग्रेण ब्ल्युपील ४ ग्रेण रेवचीनीका सीरा ४ ग्रेण ज्युनिपरका तेज ४ वूंद मिलाकर ४ गोलियें करणी उसमेंसें २ गोली फजरमें देणी.

जलोदर (गुरदेका) इलाज.

(५९८) लाइकरएमोनी एसेटेटीस १ औंस एन्टीमोनियल वाईन ४० वूंद एप्सम सोल्ट २ ड्राम केम्फर वोटर ३० औंस.

जलोदर (नाताकती)

(५९९) टिंकचरओफ स्टील ३० वूंद डाइल्युट एसेटिक एसिड २० वूंद एसेटेट ओफ पोटाश ४५ ग्रेण पाणी ६ औंस मिलाकर दिनमें तीन वखत देणा मात्रा २ औंस.

मुखपाक इलाज.

(६००) ओप्समसोल्ट ४ ड्राम क्लोरेट ओफ पोटाश ४० ग्रेण लिकरआमोनी एसेटेटीस १ औंस पाणी २ औंस मिलाकर तीन हिस्साकर दिनमें तीन वखत पिलाणा.

अजीर्ण डेस्पेपस्या इलाज.

(६०१) रिडयुरुड आयर्न २४ ग्रेण एकस्ट्राकटनक्स वोमिका ६ ग्रेण वेपसीन३६ ग्रेण एकस्ट्राकट जनश्यन चहिये जितनी मिलाकर २४ गोलियें करणी उसमेंसें एकेक गोली जीमते वखत लेणी.

अजीर्ण इलाज.

(६०२) सालवोले टाइल ९० वूंद सवनाइट्रेट ओफ विसमथ ४५ ग्रेण हाइड्रोस्यानिक एसिड १५ वूंद कारबोनेट ओफ मेगनीश्या ३० ग्रेण पेपरमींटका पाणी ३ औंस कम्पाउन्ड टिंकचर ओफ कारडेमम २ ड्राम मिलाकर एकेक औंस दिनमें तीन वखत देणी.

अजीर्ण.

(६०३) लाइकर पोटासी ३० बूंद चूनेका पाणी १ औंस मिलाकर उसके दो भाग फजर सांझ ताजे दूधमें मिलाकर देणा.

अजीर्ण तुरतका इलाज.

(६०४) कम्पाउन्ड टिंकचर ओफ कार्डामम ६० बूंद कारबोनेट ओफ सोडा २० ग्रेण पाणी २ औंस.

कबजीयत जीर्ण इलाज.

(६०५) रेसीन ओफ पोडो फाइल ½ से १ ग्रेण क्यालोमेल २ ग्रेण एकस्ट्राकट ओफ हायोसाइम ४ ग्रेण मिलाकर १ गोली बणाणी रातकूं सोते वखत लेणी जलोदर सोजा मगज तथा कलेजेके दरदमें उपयोगी है.

कबजीयत जीर्ण इलाज.

(६०६) कम्पाउन्डरुबार्बपील ४८ ग्रेण ब्ल्युपील २४ ग्रेण मिलाकर इसकी १२ गोली करणी एकेक गोली एक दिनके आंतरे रातकूं लेणी.

कबजीयत.

(६०७) पाउडर अेपीका क्युआन्हा २ ग्रेण हाइड्राजीराईकमक्रीटा ६ ग्रेण दो पुडी करके फजर सांझ पाणीके संग पीणी-

कबजीयत.

(६०८) एकस्ट्राकटनक्सवोमिका ४ ग्रेण एलोझ २० ग्रेण कीनाइन ९ ग्रेण कम्पाउन्डबार्बपील २४ ग्रेण चारोकों मिलाकर १२ गोलिये करणी और रातकूं सूती वखत एकेक लेणी.

अतीसार मरोडा इलाज.

(६०९) टिंकचर ओफ केटेक्यु (कथा) १ ड्राम पेपरमिंटका तेल १ बूंद एरोमेटिक सल्फ्युरिक असिड १५ बूंद इन्फ्युझन ओफ केटेक्यु १ औंस मिलाकर दिनमें दो तीन वखत पीणा.

(६१०) टिंकचर ओफ केटेक्यु ॥ ड्राम बीलका प्रवाही सत्व २ ड्राम स्पिरिट क्लोरोफोर्म १ ड्राम तजका पाणी १ ड्राम.

(६११) क्लोरो डाइन २० बूंद पाणी १ औंस दर तीन घंटेसें दस्तबंध होय जहांतक देणा.

अतिसार इलाज.

(६१२) ग्यालिक एसिड १५ ग्रेण डोवर्स पाउडर ५ ग्रेन दोनोंकों मिलाकर एक करणी एसी एक पुडी दर चार घंटेसें देणा.

(६१३) रुयार्ब पाउडर १२ ग्रेण इपीकाक्यु आन्हा पाउडर ३ ग्रेण सुंठका भूका ६ ग्रेण तीन भाग कर तीन वखत देणा.

मरोडा इलाज.

(६१४) स्युगरलेड ८ ग्रेण अफीम १ ग्रेण सहतमें मिलाकर तीन गोली करणी दिनमें तीन वखत देणी स्युगरलेडके बदले नीला थोथा १ ग्रेण लेणा.

पुराणा मरोडा इलाज.

(६१५) नीलाथोथा १ ग्रेण किनाइन ४ ग्रेण अफीम १ ग्रेण एकस्ट्राकट जनश्यन ४ ग्रेण मिलाकर इसकी ४ गोलियें करणी दिनमें तीन चार वखत एकेक लेणी.

चूंक इलाज.

(६१६) एरंडीका तेल १ औंस लाडेनम १० बूंद पीपरमिंनटका अर्क १० बूंद पाणी २ औंस मिलाकर एक वेर पीजाणा.

चूंक इलाज.

(६१७) स्पिरिट ओफ इथर ४० बूंद टिंकचर ओफ जींजर ३० बूंद एप्समसोल्ट ३ ड्राम पीपरमेन्टका पाणी १ औंस मिलाकर एक वखतमें पिला देणा.

उलटी इलाज.

(६१८) सोडा बाइकार्ब १५ ग्रेण साइट्रिक एसिड १० ग्रेण अथवा सोडा वोटर

हिचकी इलाज.

(६१९) क्लोरोफोर्म २ बूंद इथर सल्फ्युरिक १० बूंद तजका तेल २ बूंद क्रियासोट २ बूंद हाइड्रोस्यानिक एसिड डिल्युट ५ बूंद साल्वोले टाइल ३० बूंद ब्रांडी २ ड्राम टिंकचर ओफ वेलेरीयन ॥ ड्राम पाणी १ औंस सर्वोकों मिलाकर दर दोदो घंटेसें पिलाणी.

हेजामरी

(६२०) साल्वोले टाइल २० बूंद पीपरमिन्टका अर्क १५ बूंद लाडेनम (अफीमका अर्क) २० बूंद ब्रांडी अथवा कांदेका रस ॥ औंस मिलाकर उसमें बराबरका पाणी डाल दर दोदो तीन २ घंटेसे इस प्रमाणसे देणा.

हेजा कैदस्त इलाज.

(६२१) सल्फ्युरिक एसिड डिल्युट १० बूंद कार्बोलिक एसिड १ बूंद टिंकचर ओफ आयोडीन २ बूंद क्विनाइन ५ ग्रेन कपूरका पाणी १ औंस मिलाकर तीन वखत पीना.

तीक्ष्ण कलेजेका दरद इलाज.

(६२२) नवसादर ४० ग्रेण कलमीशोरा १ तोला सोहागखार २० ग्रेन चिरायतेका काढा २ औंस मिलाकर उसका दो भागकर फजर सांझ देना.

कलेजेका दरद अभूंझणी मुंधोरा इलाज.

(६२३) नवसादर ३० ग्रेण स्पिरिट नाइट्रिक इथर १॥ ड्राम ६ औंस पाणीमें मिलाकर दोदो औंस दर तीन घंटेमें पिलाणा.

पुराणा कलेजेका दरद इलाज.

(६२४) कारबोनेट ओफ एमोनिया १५ ग्रेन टिंकचर ओफ शीला ३० चूंद टिंकचर केम्फरकम्पाउन्ड १॥ ड्राम कपूरका पाणी ३ औंस मिलाकर दिनमें तीन वेर पिलाणा.

कलेजेका पकणा इलाज.

(६२५) क्विनाइन ६ ग्रेण पाणी ३ औंस डाइल्युट सल्फ्युरिक एसिड १५ बूंद एकेक औंस तीन वेर लेणी.

कामठा इलाज.

(६२६) पोडोफाइलम ६ ग्रेण रुवार्ब १८ ग्रेन एकस्ट्राकट हायोस्यामस ४० ग्रेन मिलाकर १२ गोली करणी फजर सांझ एकेक गोली लेणी.

कामला पांडू इलाज.

(६२७) एप्सम सोल्ट ४ ड्राम एसेटेट ओफ पोटाश ३० ग्रेन सोराखार १५ ग्रेण नवसादर ३० ग्रेन ज्युस ओफ टाराक्षकम २ ड्राम चिरायतेका काढा ३ औंस मिलाकर तीन वेर पीणा.

कामला

(६२८) एप्समसोल्ट १ ड्राम कारबोनेट ओफ मेगनिस्या १२ ग्रेण सालवोले टाइल ३० बूंद पाणी ४ औंस मिलाकर दोदो औंस दिनमें दो वखत देणा.

तिलीइलाज

(६२९) पोटाश ब्रोमाइड ३० ग्रेन हीराकशी ६ ग्रेन एप्सम सोल्ट ३ ड्राम कास्याकीचा ३ औंस मिलाकर दिनमें तीन वखत देणा.

रिदयरोग [हार्टडीसीझ] इलाज.

(६३०) सालवोले टाइल ३ ड्राम कार्बोनेट ओफ एमोनिया ३० ग्रेन सिंकोनाका क्वाथ ८ औंस मिलाकर दोदो रुपे भर दर तीन घंटेसें.

रिदय रोग.

(६३१) टिंकचर डिजीटेलिस १५ बूंद टिंकचर ओफ स्टील ३० बूंद एसेटेट ओफ पोटाश ६० ग्रेन पाणी ३ औंस.

श्लेपम इलाज.

(६३२) हाइड्रो क्लोरेट ओफ मोर्फया २ ग्रेन सबनाइट्रेट ओफ विसमथ ६ ड्राम बारीक सुकणी २ ड्राम मिलाकर तमाखूकी तरे सूंघणी.

श्वासकास हांफणी [ब्रोनकाइटीस]

(६३३) वाइन ओफ एन्टीमनी ४० बूंद स्पिरिटनाइट्रिकइथर २ ड्राम टिंकचर ओफ डीजीटेलीस २० बूंद टिंकचर एकोनाइट २० बूंद पाणी ४ औंस ४ भाग कर दिनमें ४ वेर पीणा.

श्वासकास हांफणी.

(६३४) लाइकर एमोनी एसेटेटीस १ औंस ईपीकाक्यु आन्हावाईन १ ड्राम टिंकचर एकोनाईट २० बूंद टिंकचर केम्फर कम्पाउन्ड २ ड्राम टिंकचर शीला १ ड्राम पाणी ३ औंस मिलाकर उसके ४ भाग कर हरेक भाग दर तीन घंटेसे देणा छोटे बच्चोंकों मात्रा १ सें ३ ड्राम ऊपरमुजब.

पुराणा श्वास[illegible] [illegible]लाज.

(६३५) सीरपसीला ४ ड्राम डिल्[illegible] [illegible]० बूंद टिंकचर हायोस्साम २ ड्राम टिंकचर डिजीटेलिस २० बूंया फेफसेका इलाज. [illegible]में २ ड्राम सिंकोनाकी चा ६ औंस मिलाकर हमेस चोथे भागकों ड्राम [illegible] सांझ पिलाणी.

श्वासकास. वेग

(६३६) लिक्विड एकस्ट्राकट ओफ सारसापरिला ४ ड्राम एपीकाक्यु आन्हा ६० बूंद टिंकचर सीला ४० बूंद मोलेठीकी चा ६ औंस मिलाकर इसके ४ भाग कर एकेक भाग फजर सांझ देना.

श्वासकास कफके संग.

(६३७) एपीकाक्यु आन्हा पाउडर २० ग्रेण सालवोलेटाइल १ ड्राम एक औंस पाणीमें मिलाकर पिलानेसें कफ अलग होकर निकलता है.

फेफसेका सोजा.

(६३८) एन्टीमोनियलवाईन ५ बूंद टिंकचर एकोनाइट २ बूंद पाणी ४ ड्राम मिलाकर दिनमें ४ वेर पिलाणी.

फेफसेका सोजा न्युमोन्या.

(६३९) सालवोले टाइल ३ ड्राम स्पिरिट नाइट्रिक इथर ३ ड्राम एपीकाक्यु आन्हा वाईन १ ड्राम टिंकचर सीला १ ड्राम टिंकचर सेनीगा २ ड्राम केम्फर वोटर ४ औंस सभोंकों मिलाकर दिनमें ४ वेर पीना.

दमका इलाज.

(६४०) एपीकाक्यु आन्हा पाउडर ३ ग्रेण एन्टीमोनियल पाउडर ६ ग्रेन केम्फर (कपूर) ४ ग्रेण एक्स्ट्राकट हायोस्सामस ९ ग्रेण मिलाकर इसकी ६ गोलियें बनाणी दो दो घंटेसे दो दो गोली देणी.

(६४१) सल्फेट ओफ किनाइन ९ ग्रेण सल्फेट ओफ आयर्न १२ ग्रेण एपीकाक्यु आन्हा पाउडर ६ ग्रेण अफीम १ ग्रेण मिलाकर गूंदके पाणीमें ६ गोळियें करणी, एकेक गोली दिनमें २ वखत.

(६४२) आयोडाइड ओफ पोटाश्यम ५ ग्रेण टिंकचर बेलाडोना ५ बूंद पाणी १ औंस मिलाकरके दिनमें तीन वखत या दो वखत पीणा.

बडी खासी बचोंकी खुलखुलिया इलाज.

(६४३) सालवोलेटाइल ४० बूंद स्पिरिट ओफ क्लोरोफोर्म २० बूंद डील्युट हाइड्रोस्यानिक एसिड १० बूंद लीकरमोर्फ्या १२ बूंद कपूरका पाणी १६ ड्राम मिल उसमेंसें ८ मा भाग तीन २ घंटेसें देणा.

ी इलाज.

(६४४) एन्टीमो ६ ग्रेण रुवार्ब १८ फजर सांझ एकेक गो स्पिरिट नाइट्रिक इथर १ ड्राम म्युसीलेज ओफ गम एकेश्या ५ ड्रा. कामला २॥ औंस मिलाकर उसमेंसें तीन भाग दिनमें तीन वखत देणा.

(६४५) एपीकाक्यु आन्हा पाउडर ६ ग्रेण एन्टीमोनियल पाउडर ९ ग्रेण मोठीका चूर्ण १२ ग्रेण मिलाकर तीन पुडी करणी चाटे जाय जितने सहतमें त वखत देणा.

खासी कफका इलाज.

(६४६) एपीकाक्यु आन्हा वाइन ४५ बूंद एलिकशर पेरीगोरिक ३० बूंद ए नाएक मिकश्चर ३ औंस तीन हिस्सा कर दिनमें तीन वेर देणा.

(६४७) कारबोनेट ओफ एमोनिया १० ग्रेण एपीकाक्यु आन्हा पाउडर १५ ग्रे कम्पाउन्डस्पिरिट ओफ लबंडर २० बूंद पाणी २ औंस मिलाकर सब दवा एक वे पीणी थोडी देर पीछे ऊपरसे चा पीणी.

क्षय इलाज.

(६४८) लिकर पोटाश ३० बूंद टिंकचर सिंकोनाक पाउन्ड ९० बूंद कम्पाउन्ड केम्फर टिंकचर ९० बूंद टिंकचर सीला ३० बूंद पाणी ३ औंस तीन भाग क दिनमें तीन वेर देणा.

(६४९) सिरप ओफ आयोडाईड ओफ आयर्न ३० बूंद डाइल्युटसल्फ्युरिक १ बूंद किनाइन ६ ग्रेण पाणी ३ औंस मिलाकर उसमेंसें तीन वेर दिनमें देणा.

शिरके रोगका इलाज.

(६५०) पोटाश आयोडाइड १० ग्रेण चिरायतेके चा संग दिनमें तीन वेर देणा

शिरका रोग.

(६५१) पोटाश ब्रोमाइड १ ड्राम चिरायतेकी चा ३ औंस मिलाकर इसमेंसें एकेक औंस दिनमें तीन वेर देणी.

शिरका रोग इलाज.

(६५२) नवसादर १ ड्राम चिरायतेकी चा ३ औंस मिलाकर एकेक औंस दवा दिनमें तीन वखत देणी.

पित्तसे शिर दुखनेका इलाज.

(६५३) एप्समसोल्ट ४ ड्राम सोडाबाइ कारबोनास ४० ग्रेण पाणी २ औंस मिश्री २ ड्राम टार्टरिक एसिड ½ ड्राम नींबूका शरबत ४ ड्राम पाणी ४ औंस नं० १ की दवा तथा नं० २ की दवा जुदी २ मिलाकर पीछे दोनुं प्रवाही मिलानेसें सोडावाटरकी तरे उफाण आनेसे उसकूं पी जाणा.

रक्तपित्त होजरी तथा फेफसेका इलाज.

(६५४) एरोमेटिक सल्फ्युरिक एसिड १॥ ड्राम एलिकझर पेरिगोरिक ४ ड्राम सीनेमनवोटर ५॥ औंस तीन भाग कर दिनमें तीन वेर देणा.

रक्तपित्तका इलाज २.

(६५५) श्युगरलेड ८ ग्रेण अफीम १ ग्रेण गुलकंद ५ ग्रेण ४ गोलियें करणी तीन २ घंटेसे एकेक देणी.

(६५६) गेलिडएसिड ४० ग्रेण एरोमेटिक सल्फ्युरिक एसिड १ ड्राम टिंकचर ओफ सीनेमन ४ ड्राम डिस्टील्डवोटर ८ औंस मिलाकर दो दो औंस दवा चार २ घंटेसें देणी.

मूंमेंसे रक्तपित्त खून गिरे इलाज.

(६५७) सल्फेट ओफ झींक ३० ग्रेण सहत १॥ औंस गुलाब जल १२ औंस कुरले करना.

(६५८) फुलाइ भई फिटकडी २० ग्रेण टिंकचर ओफ मर्ह २ ड्राम आठ औंस पाणीमें मिलाकर उसका कुरला करना.

इलाज मिरगीका.

(६५९) पोटाश ब्रोमाइड ४५ ग्रेण टिंकचर हायासाइम १ ड्राम सालवोलेटाइल १ ड्राम टिंकचर बेलाडोना २० बूंद पाणी ३ औंस मिलाकर तीन वखत देना पथेकी मात्रा १ चमचा.

(६६०) पोटास्यम ब्रोमाइड ओफ १ ड्राम आयोडाइड ओफ पोटास्यम १२ ग्रेण कारबोनेट ओफ पोटास ४० ग्रेण टिंकचर ओफ ओरेन्ज ६ ड्राम पानी ५॥ औंस दो दो औंस फजर सांझ.

खेंचाताणका इलाज.

(६६१) पोटाश ब्रोमाइड १२ ग्रेण क्लोरलहाइड्रेट ५ ग्रेण पाणी १ औंस शरबत २ ड्राम मिलाकर तीन २ वखत देनी तीन घंटेसें.

(६६२) क्यालोमेल ४ ग्रेण सांटोनीन २ ग्रेण मिश्री १० ग्रेण सहत तथा पाणी के संग ५ वर्षके बच्चेकुं देनेसें जुलाब होगा हिचकना मिटता है.

हिस्टीरीयेका इलाज.

(६६३) लाइकर मोफर्या १ ड्राम क्यालोरलहाइड्रेट ‒॥ ड्राम पोटाश ब्रोमाइड १ ड्राम शरबत ८ ड्राम दो औंस पाणीमें मिलाकर तीन भाग दिनमें तीन वेर देना.

(६६४) ब्रोमाइड ओफ पोटास्यम ३० ग्रेण चिरायतेकी चा ६ औंस आमोनीएटेड टिंकचर ओफ वेलेरीयन १ ड्राम मिलाकर दिनमें तीन वेर दो औंस दवा पिलानी.

(६६५) फलावर्स ओफ सलफर २ औंस क्रीम ओफ टार्टर ४ ड्राम नारंगीका शरबत अथवा सहत २ मात्रा १ ड्राम दिनमें २।३ वेर.

बवासीरका इलाज.

(६६६) क्लोरलहाइड्रेट १० ग्रेण ब्रोमाइड पोटास्यम १५ ग्रेण मिश्रीका पाणी १ औंस मिलाकर दर तीन या चार घंटेसे देनी.

धनुर्वातका इलाज.

(६६७) सिरप ओफ आयोडाइड ओफ आयर्न ६० बूंद आयोडाइड ओफ पोटास्यम ६ ग्रेण पाणी ३ औंस मिलाकर एकेक औंस दिनमें तीन वेर पीना.

(६६८) आयोडाइड ओफ पोटास्यम २ ग्रेण रस कपूरका प्रवाही ९ बूंद चिरायतेकी चा ३॥ औंस मिलाकर दिनमें ३ वेर देणी.

सिफिलीस उपदंसका इलाज.

(६६९) पोटाश आयोडाइड १ ड्राम लिकर हाइड्रापर क्लोरीड ६ ड्राम एकस्ट्रा-क्ट सारसापरीला १२ ड्राम टिंकचर चीरेटा ६ ड्राम पाणी १० औंस मिलाकर $\frac{1}{8}$ भाग दिनमें तीन वेर देना.

(६७०) टीकर आर्सेनिक १ ड्राम पोटाश आयोडाइड १ ड्राम सीरप ओरेस्पाईम टिंकचर आयोडाइड १ ड्राम पाणी ८ औंस मात्रा $\frac{1}{2}$ दिनमें दो वखत जीमके लेना.

(६७१) केलोमेल २४ ग्रेण अफीम ३ ग्रेण धारे गोली बणाकर दिनमें तीन वेर बेमारकुं देनी.

(६७२) ब्लुपील १८ ग्रेण सल्फेट ओफ आयर्न ६ ग्रेण अफीम २ ग्रेण ६ गोली कर फजर सांझ देनी एकेक.

(६७३) हाइड्रार्जीराइ कमक्रीटा १८ ग्रेण सल्फेट ओफ क्विनाइन १२ ग्रेण अफीम २ ग्रेन ६ गोली बनाकर फजर सांझ एकेक.

(६७४) लाईकर एमोनी एसेटेटीस २ औंस एसेटेट ओफ पोटाश ९० ग्रेन गूंदका पाणी १ औंस कपूरका पाणी ३ औंस.

प्रमेह सुजाकका इलाज.

(६७५) लाइकर पोटाश ६० बूंद टिंकचर हायोस्यामस २ ड्राम सोराखार १ ड्राम चूनेका पाणी ४ औंस मिलाकर इसका ४ भाग कर दिनमें ४ वखत पिलाणी.

(६७६) वालसमकोपेवा ओफ ४५ बूंद टिंकचर हायो साईम ९० बूंद पाणी ३ औंस लाइकर पोटास ४५ बूंद गूंदका पाणी १ औंस तीन भाग कर दिनमें तीन वेर देणा.

(६७७) चंदनकातेल ४० बूंद कवाबचीनीका चूर्ण । तोला सोनागेरु । तोला गोखरूका चूर्ण । तोला मिलाकर इसके दोभाग करणा फजर सांझ सहतमें चाटणा.

(६७८) लाइकर पोटासी ४५ बूंद लाडेनम १५ बूंद केम्फर वोटर ३ औंस मात्रा १ लीकर ग्लास तीन वेर.

(६७९) सल्फेट ओफ झिंक १२ ग्रेन केम्फर ६ ग्रेन कम्पाउन्डकायनो पाउडर २० ग्रेन १२ गोलीकरके दोदो गोली दिनमें ३ वेर.

पुराणे प्रमेहका इलाज.

(६८०) आयोडाइड ओफ पोटाश्यम ६ ग्रेन साइट्रेट ओफ आयर्न एन्डकवाइन्या १५ ग्रेन चिरायतेकी चा ३ औंस मात्रा १ लीकर ग्लास दिनमें तीन वेर पिलाणा.

(६८१) टिंकचर ओफ स्टील २० बूंद टिंकचर ओफ केन्थारीडीस ५ बूंद टर-पेन्टाईन १० बूंद पाणी १ औंस मिलाकर दिनमें तीन वेर पिलाना.

(६८२) वाइकारवोनेट ओफ पोटाश ४० ग्रेन पाणी ४ औंस मिलाकर इसके ४ भागकर दिनमें चार वखत देणा.

पेसावमें पथरीका इलाज.

(६८३) वाइकारवोनेट ओफ पोटाश ३० ग्रेन सोराखार १० ग्रेन साइट्रिक एसि-ड १५ ग्रेन पाणी ४० तोला मिलाकर एक दिनमें सव दवा पीजाणी.

(६८४) साइट्रेट ओफ पोटाश ४५ ग्रेन पाणी ३ औंस मिलाकर तीन हिस्साकर दिनमें तीन वेर पीणा.

(६८५) एकस्ट्राक्ट जनश्यन १ ग्रेन मद्दे २ ग्रेन एलिया १ ग्रेन केशर १ ग्रेन मिलाकर एक गोली करणी एसी एकेक गोली दिनमें तीन वेर लेणी.

नष्टार्तव [दस्तानका] इलाज.

(६८६) गेलिक एसिड ४५ ग्रेन लिक्वीड एकस्ट्राक्ट ओफ अर्गट १॥ ड्राम डिल्यु-टसल्फ्युरिक एसिड ४५ बूंद तजका पाणी ३ औंस मिलाकर तीन भाग कर दिनमें ३ वेर लेणा.

लाल प्रदरका इलाज

(६८७) डिल्युटसल्फ्युरिक एसिड ३० बूंद फिटकडी ३० ग्रेन हीराकसी ६ ग्रेन तजका पाणी ४॥ औंस.

ऋतुधर्म वहोत खून गिरणा.

(६८८) गेलिक एसिड ४० ग्रेन एरोमेटिक सल्फ्युरिक एसिड १ ड्राम टिंकचर ओफ सीनेमम ४ ड्राम डिस्टील्ड वोटर ८ औंस.

(६८९) ओकसाइड ओफ झिंक २४ ग्रेन कम्पाउन्ड सीनेमन पाउडर १ ग्रेन वार्क पाउडर १ ड्राम १२ पुडीकर दिनमें तीन वेर देणा.

दरद करके ऋतू धर्म होणा इलाज.

(६९०) लिकर हाइड्रार्जीरीपर क्लोराइड १॥ ड्राम कम्पाउन्ड टिंकचर ओफ सिकोन १॥ ड्राम कम्पाउन्ड डिकोकसन ओफ सारिसापरिला ३ औंस.

गर्भाशय प्रदर इलाज.

(६९१) आयोडाइड ओफ पोटाश्यम ६ ग्रेन कोडलिवर ओइल ६ ड्राम चिरायतेकी चा ३ औंस तीन भागकर दिनमें तीन वेर देणा.

हकीमी यूनानी नुसके.

हमेसका बुखार इलाज.

(६९२) सुंफ कासनी मोलेठी बनफसा ए दरेक तीन २ तोला पाणी २ रतल दवाकों कूट पाणीमें ऊकाल आधा पाणी रहेतव छाण उसका तीन भागकर दिनमें तीन वेर देणा दवाके पिलाते दरवक्त एकेक तोला गुलकंद अथवा मिश्री मिलाणी.

आंतरेका बुखार इलाज.

(६९३) कासनी तोला १॥ कुलफेके बीज तोला ॥ पाणी रतल ॥। इस दवायोंको जो कूटकर पाणीमें तीन घंटे भिगाणा पीछे छाण तोला २ मिश्री मिलाकर इसका तीन भाग करणा और एक भाग दर तीन २ घंटेसे पिलाणा दस्त साफ नहीं होय तो मिश्रीके मावजेमें सीरकिस्त अथवा मांजू तोला १ पहली वेरमें डालकर पीनेमें पेट साफ होजायगा.

तीक्ष्णसंधि वायुका इलाज.

(६९४) सिपस्तान ६ दाना उनाप १० दाणा कासणी तोला १ बनफसा॥।तोला पाणीमें दो घंटे भिगाकर पीछे उसका नीतरा पाणी छाण कर तीनहिस्साकर तीन वेर पिलाना जो पेट कबज होय तो उसमें मांजू फल तोला १ तथा [illegible] तोला १ डालना.

(६९५) हर्रेदरी छाल तोला ॥। निशोत तोला । बिसफायज तोला ॥। [illegible] तोला ।। तुर्बिद तोला । कासनी तोला १ गुलाबका फूल तोला १ इन सबोंके १॥

सेर पाणीमें उकाल आधा पाणी रहे तब छाण दिनमें तीन वखत पीणा दस्त बहोत होय तो पहली तीन दवा निकाल डालणी.

(६९६) केशर गहूंभर अफीम १० गहूंभर उसकूं एक औंस पाणीमें मिलाकर सांधेके दरदपर लेप करणा पाणी गरम चाहिये.

(६९७) एकली लुलमुल्क धावूना गुलखेरु जब खुबाजी दरेक एकेक तोला पीस पाणीमें सांधोंपर लेप करणा.

तिलीका इलाज.

(६९८) छोटी जो हरडे सातरा करफसके बीज बेखेकेवर ए हरेक ॥ तोला सूंफ १ तोला अनीसुन १ तोला अजखर । तोला इन सब दवाकूं जरा जो कूटकर १ सेर पाणीमें उकाल आधा रहे तब छाणकर उसमें १ तोला मिश्री मिलाकर पीणा कूचा रहे सो पाणीमें भिगा रखणा और सांझकूं छाणकर उस पाणीमें मिश्री मिलाकर फेर पीणा दुसरे दिन ब्थे नुसका दुसरा तइयार करणा.

तिली इलाज.

(६९९) उसक तोला १ गूगल तोला १ जायफल तोला १ ए तीन चीजोंकों पीस उसमें वाइन (दारू)का थोडा सिरका सहत जेसा जाडा लेप होजाय इतना डालणा ए दवा ताप तिलीपर दिनमें दो वखत लगाणी.

सन्निपातज्वर इलाज.

(७००) कासणी तोला २ कुलफेके बीज खोखरे करे भये तोला २ आलुबुखारे २० इन दवायोंकों ।॥ सेर जलमें दो कलाक भिगाणा पीछे पाणी छाण लेणा उसमें मिश्री २।३ तोला डालकर तीन वखत तीन २ घंटेसे पीणी.

हेजाके दस्त इलाज.

(७०१) अनीसुन तोला १ अगर तोला १ मंस्तगी तोला ॥ सादजीरा तोला ॥ इन दवायोंकों जो कूटकर १ सेर पाणीमें उकाल आधारस छाण लेणा ठंडा भये बाद घडा चमचाभर एक घंटेसे मिलाणा.

मरोडा आम खूनका इलाज.

(७०२) ईसबगुल तुखमरेहान (तुलसीके बीज) तुखमें मरो तुखमें बारतंग ए एकेक बीज एकेक तोला उसकी फकीकर उसमेंसे ॥ तोलाकी फकी दर ४ घंटेमें पाणीसें लेणा इसकूं चार तुखम कहते हैं.

पुराणा मरोडा इलाज.

(७०३) अनारकी सुकी छाल १ तोला मांजूफल ॥ तोला हब्बुल आस ५ तोला तथा सीपाकका सोडा १ तोला महीन चूर्ण कर उसमेंसें आधा तोलेकी ३ पुडी करनी दिनमें तीन बेर गूंदके पाणीमें पीना.

चूंक शूल इलाज.

(७०४) सूंठ पीपर सेलारस केशर ए चार दोदो ग्रेन और अफीम तथा जुंदवेखर एकेक ग्रेन सवोंका बारीक चूर्णकर उसकूं गूंदके जलमें मिलाकर ४ गोली बनाणी एक २ गोली तीन २ घंटेसें देणी.

चूंक शूल पेट कबज इलाज.

(७०५) सकमोनिया (इस्केमोनी) १ तोला कालीमिरच १ तोला सूंठ १ तोला सताब सूका ॥ तोला टंकणखार ॥ तोला कुलफा ॥ तोला पानकी जड ॥ तोला इन सबोंकों कूट कपडछांनकर इसमेंसें १० से १५ ग्रेन दवा सहतमें मिलाकर देणा जरूर पडेतो दिनमें दो बेर देणी इससै दस्त साफ आता है.

कलेजेका सख्त सोजा इलाज.

(७०६) कासनी तोला ॥ पीचोरी बीज ॥ तोला दोतुं दवाकूं जो कूटकर ॥ सेर पाणीमें आधी घंटा भिगाकर नीतराजल लेकर उसमे मीठी अनारका रस तथा सिकंजबीन १॥ तोला डालकर सब पाणी फजरमें पीणा सांझमें फेर इसी मुजब ताजा बनाकर पीणा.

पीलिया बुखार प्यास इलाज.

(७०७) पीचोरीका बीज कासणी तथा सूंफ हरेक आधा २ तोला लेकर ॥ सेर पाणीमें १ घंटे भीगाकर उसका नितरा पाणी लेकर ॥ तोला मिश्री डालकर पिलाणा एकेक वखतमें ताजी दवा बणाणी सो पीणी दस्त साफ नहीं आवेतो उसमें किरमालेकी गिर १ तोला डालणा.

पीलिया कामला इलाज.

(७०८) गुलेगाफेज अफसनतीन परेशी आवशान हरेक आधा २ तोला और रुबार्ब २० ग्रेन इन सबोंकों ॥ सेर पाणीमें १ घंटे भिगाकर उसका नीतरा भया जल लेकर उसमें १ तोला मिश्री मिलाकर पीणा दस्त जादा होयतो रुबार्ब थोडा डालणा अथवा बिलकुल नहीं डालणा इसतरे दर टेमोटेम दवा बणाणी थोडे दिन पीनेसें बुखारका पीलियाकामला मिटता है.

मूत्राशयका तीक्ष्ण सोजा इलाज.

(७०९) बेदाणा तोला । तुखमे खतमी तोला ॥ ईसबगोल तोला । इन तीनोंकों थोटे पाणीमें ॥ घंटे भिगाकर नितरा पाणी चीकणा हुआय जेसा उसमें थोडा सादा पाणी दाट पीना दो चार दिन दोदो टंक पीनेसें मूत्राशयका तीक्ष्ण सोजा दाह आघात मिटता है.

(७१०) उनापदाणा १० सीपस्तान दाणा ६ आलुबुखारा दाणा ६ बनफशा तोला कासनी तोला । पीचोरीके बीज तोला ॥ हरडे तोला ॥ इन सब दवायोंकूं १ सेर ...में उकाठ आधा पानी बाकी रहे तब छाण फजर सांझ पीणा अथवा इनका बनाके ...का दरपन फजर सांझ दोदो तोला पीना.

जलोदर कलेजेका इलाज.

(७११) हरडकी छाल सातेरा अफसनतीन गुलेगाफेज ए दरेक आधा तोला कासनी ॥। तोला और कालीछड ॥ तोला इन सर्वोकूं १ सेर पाणीमें उकालकर पाणी छान लेणा उसके दोहिस्सेकर फजर सांझ पीणा.

(७१२)रुवार्ब ग्रेन ३० गूगल ग्रेन १५ गारेकुन ग्रेन ३० निसोत ग्रेण ३० गोलजरावंद ग्रेन १० अनीसुन ग्रेन १० उटींगण ड्राम १ इन सर्वोकों १ सेर पाणीमें ॥ घंटे उकालकर पाणी छाण फजर सांझ आधा २ पीजाणा.

जलोदर कलेजेका इलाज.

(७१३) अनीसुन तथा सूंफ दरेक आधा२ तोला जो कूटकर अधसेर पाणी उकलता उस दवायोंपर डालणा इनोकीचा करणी इसमें सोराखार २ ड्राम डालकर पीछे शीशीमें भरणा फेर दोदो औंस दिनमें तीन वेर पीणा.

श्लेष्म जुकाम नाकमेंसें पाणी गिरना गलादुखणा जरा बुखार इलाज.

(७१४) उनाव दाणा ७ सीपस्तान दाणा ७ वनफसा तोला ॥। खस २ तोला इनोंकों कूट एक पात्रमें रख ऊकलता जल ॥ सेर इसपर डाल थोडी देर भीगाये रखणा पीछे छाण दोहिस्सेकर फजर सांझ जरा मिश्री मिलाकर पीणा दोचारदिन इस मुजब ताजी २ दवा पीणेसें सलेपम मिटता है दस्तबंध होय तो खीर किस्त अथवा मांजू तो० १ डालकर पीणा.

श्लेष्म जुखाममें पक्का कफ पडे तब इलाज.

(७१५) जूफा तोला ॥ मोलेटी छीली भई तोला ॥। सूके अंजीर तोला ४ इन तीन चीजोंकू फजर सांझ दोनूं वखत० ॥। सेर पाणीमें उकाल छाणकर पीतेवखत दरवखत तुरंज वीन तोला २ मिलाकर छाणकर पिलादेणा.

सूकी खासी इलाज.

(७१६) वेदाणा तोला । उसका थोडा पाणीमें लुआब निकाल उसमें जरा मिश्री मिलाय पीणा.

सूकाखास इलाज.

(७१७) वनफसा तोला ॥ मोलेटी तोला ॥ तुख्मे खतमी तोला । उनाबदाना पांच कदूके बीजका मगज तोला। इन दवाओंकूं ॥। सेर पाणीमें उकाल आधापाणी बाकीर है, तब छाण जरामिश्री मिलाकर पीलामांस्कूं इसके कूचे उकालकर पीना.

(७१८) जूफा तोला ॥ परेसीयावसान तोला ॥ बेखे सोसन तोला । मोलेटी तोला ॥। अलसीका बीज तोला । कफनर्की जड तोला । सूका अंजीर दाना ४ इन

सबोंकूं फजर सांझ पोणसेर पाणीमें उकाल आधापाणी रखकर छाण थोडी मिश्री मिलाकर दिनमे दोवखत पीणा.

(७१९) शरबते जूफा तोला १ फजर सांझ अथवा मीठे बिदामका तेल अथवा कद्दूके बीजोंका तेल छोटा चमचाभर दिनमें दोतीन वेर पीणेसें सूकी खासी मिटती है गलेमें खरखराट होय और गलासूका मालमदेतो तेल देते वखत रव्वेसूस तीनमासा पाणीमें घसकर तेलमें मिलादेणा और मूमें भी रव्वेसूस चूसणेकूं रखणा.

कफकी खासीका इलाज.

(७२०) कर फसकी जड तोला ३ सूंफकी जड तोला ३ वेखेकेचर तोला ३ जूफा तोला ४ इनदवायोंकों तीनसेर जलमें धीमी आंचसें उकाल आधा रहे तब छाणलेणा उसमें २० तोला मिश्री मिलाकर फेर उकालणा जब शरबत बणजावे उसकूं रख छोडणा उसमेंसे २।३ तोला फजर सांझ पीणा.

श्वास हांफणी दम इलाज.

(७२१) अंजीर सूकादाणा ५ उनावदाणा ७ सीपस्तानदाणा ७ वनफसा तोला॥ गायजुबान तोला ॥ इण सबोंकों १ सेर पाणीमे उकाल० ॥ सेर पाणी बाकी रहे तब छाण उसमें जरा मिश्री मिलाकर दोहिस्से कर फजर सांझ पीणा.

(७२२) अंजीर सूका तोला २ मेथी सूंफ ओसा [बजारमें तगर कहतें हैं] जूफा ये दरेक एकेक तोला इनसबोंकों रातकूं १॥ सेर पाणीमें भिगाकर फजरमें धीमी आंचसें उकाल आधा रहणेसें छाण उसमें १५ तोला सहत डाल फेर पीछै धीमी आंचसें उकालणा और पतला सरबत करणा पीछै उसमें इस्कीलकी भूकी अथवा जंगली कांदेकी भूकी ३० ग्रेण तथा केशर ५ ग्रेण डालकर अछीतरे मिलाकर एक काच तथा चीणीके पात्रमें रख छोडणा फजर सांझ एकेक तोला देणा.

(७२३) अफ तीमून तोला ॥ उसकूं ॥ सेर पाणीमें उकालणा आधा पाणी बाकी रहे उसमें जरामिश्री मिलाकर दिनमें दोवखत पीणा.

(७२४) मोलेठी छीली भई तोला १० परेशीयावसान तोला ३॥ खस २ तोला ३॥तोला जूफा तुखमे खतमी सूंफ अनीसुन येचार चीजों दरेक एकेक तोला उनाबदाणा ५० सीपस्तानदाणा ५० तीनसेर पाणीमें रातकूं भिगाकर पीछै धीमे आंचसें फजरमें उकाल आधा जल रहे तब छाण मिश्री १॥ सेर डाल फेर धीरे आंचसें उकाल पतले सहत जेसा शरबत बणाणा मात्रा १ तोलेसें ३ तोले दिनमें तीनवेर.

क्षयका इलाज.

(७२५) गुलाबके फूलकी सूकी कली डंखली विगरकी १॥ तोला चांवलका तोला १॥ गेहूंका सत्व तोला ।॥ रव्वेसूस तोला ।॥ कडाया गूंद तोला ।॥ काली

तथा सपेद खसखस एकेक तोला तबासीर सुफेद तोला १॥ केशर तीनमासा अलग २ कूट एकठी करणी और पाणीमें घोट ॥ तोलेकी टिकडियां या गोलीयों षांधकर सूकाणी मात्रा एकेक टिकडी फजर सांझ अथवा तीन वेर टिकडीका भूकाकर १ चमचा खसखसके शरबतके संग पीणा.

फेफसेमेसें रक्तपित्तका खून गिरे सो इलाज.

(७२६) फिटकडीकी भूकी ग्रेन ३० षांवलके गूंदकी भूकी ग्रेन ४० मिश्रीकी भूकी ग्रेन ४० सबोंकों मिलाकर ४ पुडी करणी एकेक पुडी ठंढे पाणीके संग चार २ घंटेसे देणा.

(७२७) हीरादखन ॥ ड्राम (कमरकस) अफीम १ ग्रेण इसकी ४ पुडी करणी तीन २ घंटेसे एकेक पुडी देणी.

रिदयरोग (पाल्पीटेशन ऑफ धीहार्ट इलाज)

(७२८) गुलेगाय जबान तथा गिले अरमनी दरेक तोला ॥ तवाशीर धाणेका मगज गुलाबक् क्का मिश्री ये चार चीज एकेक तोला जुदी २ कूट छांणलेणा पीछै सब . १ नायदि र उसमेंसें फजर सांझ । से ॥ तोला फाकणा.

कफकी खासी इलाज.

(७२९) मोलेठीका चूरा २४ ग्रेण लींडी पीपरका चूर्ण २४ ग्रेन बीजाबोल २४ ग्रेन कडवे विदाम छीले भये ग्रेन ३६ इन सबोंकों पीस गूंदके पाणीमें २४ गोली बांधणी उसमेंसें तीनचार गोली फजर इसी मुजब सांझकूं देणी.

(७३०) सेला रस ग्रेन १५ सहरी लोबान ग्रेन १५ बीजाबोल ग्रेन १२ अफीम ग्रेन २ इन दवाओंकुं पीस गुंदके पाणीमें १२ गोलियां बांधणी मात्रा गोली २ फजर २ सांझ.

(७३१) उसके ग्रेन २४ इस्कील अथवा जंगली कांदेका भूका ग्रेन १२ विरोजा अथवा खैर जव ग्रेन २४ उसकी १२ गोलियें करणी मात्रा गोली २.

रिदय रोग (हार्टडिझ) इलाज.

(७३२) दरुञ्जे अकरबी नरकचूर घमने सुपेद तथा घमने सुरख दरेक एकेक तोला लोंग कालीछड मस्तंगी और तमाल पत्र ए दरेक । तोला इन एकेक चीजोंकों अलग २ कूट पीछै एकत्र करणी उसमेंसे दोदो आनी भर महतमें चाटणी.

मिरगी (वाइ फेफरा) इलाज.

(७३३) एलिया ४ ग्रेण कालीछड १ ड्राम गारेकुन १ ड्राम मस्तंगी २० ग्रेण तूंमेकी गिर ३० ग्रेण सकमोनिया ६ ग्रेण इनोंकों कूट २४ गोली बणाणी फजर सांझ दोदो तीन २ गोली लेनी दस्त जादा होय तो अंतकी दो चीजें निकाल डालणी.

(७३४) अनीसुन ॥ तोला सूंफ तोला ॥ बादरंजबोया १ तोला अंजीर सूका-

दाणा ४ इनदवायोंकूं १ सेर पाणीमें ऊकाल आधापाणी बाकी रहे तब छाण दो हिस्साकर फजर सांझ १ तोला गुलकंद दरवखत या मिश्री मिला पीणा.

(७३५) उस्ते खुदुस अफतीमुन सूंफ अनीसुन वनफसा बीसफायेज गुलाबके फूल छरडेदल बडीहरडाका दल ये दरेक आधा २ तोला निशोत। तोला एक बरतनमें रखकर ऊपरसे ऊकलता पाणी पून सेरडाल आधी घंटे भिगा रखणा फेर छाण दो हिस्साकर फजर सांझ थोडी मिश्री डालकर पीणा कितनेकदिन पीणेसें फायदा करता है जो दस्त वहोत होता होय तो आखरीकी चार दवा कम करणी अथवा निकाल डालणी.

लकवा (अर्धांग) का इलाज.

(७३६) कासणी तोला ॥ उनाबदाणा ७ ये दोय चीजोंकों खल २ ते अधसेर पाणीमें आधी घंटे भिगा रखणा इसकी चा तइयार करणी तीन हिस्सेकर दिनमें तीनवेर पीणा.

(७३७) कासनी तोला ॥ काली मुनका तोला ।॥ वनफसा उनाब तथा गुलाबके फूल ये तीन एकेक आधा आधा तोला इनोपर ऊकलता ॥ सेर पाणीडा ७ वर्ने ½ घंटा भिगाकर जरा मिश्री डाल दिनमें दोवेर पीणा दस्त साफ लाणेकूं किसी २ वख पाणी बाकी ॥ तोला किरमालेका गिर तथा खीरकिस्त १ तोला डालणा चाहिये.

(७३८) अनीसुन तोला ।॥ सोआ अजवाण कीर्दमान तुखमेकरफस सूंफकी जड अजखर मोलेठी बेखेकेवर ये दरेक । तोला इनोंको १ सेर पाणीमें उकाल आधा रहे तब छान उसमें १ तोला गुलकंद डाल सब पाणी फजरमें पीजाना इसतरे हमेस फजरमें ताजी दवा बणाकर पीणा.

(७३९) एलिया १२ ग्रेन तूंबे कडवेकी गिर २४ ग्रेण फरफ्यून ६ ग्रेन गूगल २४ ग्रेन इनोंकों मिलाकर १२ गोलिये करणी और दिनमें दोवखत १ अथवा दो गोली खानी.

(७४०) सर कचूरो दरुज्जे अकरबी बहमनसुरख बहमनसुपेद कालीछड इलायची लोंग तमालपत्र दरेक ॥ तोला जुंदबेदस्तर पीपर सूंठ कस्तूरी ये दरेक । तोला १५ तोला सहत सेर पाणीमें धीमी आंचसें गरमकर इसका क्राथ याने शरबत तइयार करणा इसमें ऊपरकी चीजोंका महीन चूर्ण मिलाकर धीमे २ हिलाकर अवलेही तइयार करणा मात्रा १ सें १॥ ड्राम दिनमें २ वेर.

पुराने लकवेका इलाज.

(७४१) कुचीला तो २ गुलेगाजुवान सरकचूर उस्ते खुदुस करियागूंदसकाकुल ये दरेक एकेक तोला चंदनका बुरादा । तोला लोंग । तोला सूके आंवले १॥ तोले ...ीला भया तथा चलगुजेका मगज एकेक तोला ४० तोला सहत लेकर सेर

पाणीमें मिला धीमी आंचसे शरबतकर उसमें ऊपरकी तमाम चीजों युक्तिसे मिलादेणा चाटण तइयार करणा मात्रा ॥ ड्रामसें १ ड्रामतक.

दरदके संग ऋतुधर्म.

(७४२) अजखर तुखमकरफस खस २ केडोडे ये तीनों आधा २ तोला अनीसुन १ तोला इनसबोंकों १॥ सेर पानीमें धीमे आंचसे उकाल आधापानी बाकी रहे चोछानकर दिनमें तीनवेर थोडी मिश्री मिलाकर दरदके वखत पिलाना.

हिस्टीरीया.

(७४३) हींग ९ ग्रेन हीराबोल १२ ग्रेन गंदाबेरोजा १२ ग्रेन इनोंकी गूंदके या गुडके पानीमें १२ गोलियां करनी मात्रा एकेक गोली तीनवेर.

हिस्टीरीया.

(७४४) कालीछड (जटामासी) तोला १ तथा जूंदबे दस्तर तोला । इनोंकी बारीक भुकनीकर गूंदके पानीमें २४ गोलिये बनानी मात्रा २ गोली दोवखत.

बच्चेका कृमि रोग.

(७४५) वायविडंगका मगज २१ ग्रेन छीली भइ निशोतकी भूकी ४ ग्रेन कपीला ५ ग्रेन इन सबोंकों २॥ रुपयेभर उकलते जलमें पाव घंटे भिगाकर उसका नितरामया पाणी उपयोगमें लेना बच्चेकी मात्रा छोटे चमचेभर दिनमें ४ वेर.

धुन्नारके मंगकृमि रोग.

(७४६) कासणी १५ ग्रेन कुल्फेकापीज १० ग्रेन अनारके जडकी छाल अथवा अनारकीछाल ५ ग्रेन धानाका मगज १५ ग्रेन २॥ तोलेभर टंडे पानीमें घोटकर इसके ऊपरका नितरामया पाणी छानलेना मात्रादोच मचा दर तीन घंटेमें.

पित्तसे शिर दुखना.

(७४७) हरेंदल तोला ॥ वडी हरडकादल तोला ॥ आलुबुखारा दाना १० उनाबदाना १० सिपस्तानदाना ७ सवासेरपाणीमें मंद आंचमें उकाल आधापाणी रहे तब छान फजर सांझ दोवखत मिश्री थोडीसी मिलाकर देना.

प्रमेह सुजाक.

(७४८) कबाबचीनी २ तोला फटकडी पाव तोला कथा ।।। तोला मर्दन चूर्णकर तोला ॥ दिनमें तीनवेर पानीसे लेनी.

[illegible]

(७४९) उनाबदाना ७ सिपस्तानदाना ७ [illegible] तोला ॥ [illegible] तोला ॥ एकसेर पाणीमें उकाल उसका निरता पाणी लेकर मिश्री मिलाकर फजर सांझ देना.

होनेसें अब धीरे २ असरकर रोग निश्चै मिटाता है, इस सर्व रोगापहारी जलका महात्म विवेरेवार श्रीपाल राजाके वडे चरित्रमें है, इसके आधारसें बुद्धिवानोनें प्रयोगके अंतरसें क्रोमोपथी नाम धरके चलाया है, जैनियोंके इस जलका रिवाज चैत्रका महीना जोके कफ पैदा करनेवाला है, और पित्तादिक अनेक रोगोकूं पैदा करनेवाला आसोज का महीना है, उसमें नव २ दिन दर वर्षमें होता रहता है, लेकिन् करने और करानेवाले दोनों अजाण होनेके सबब असर पूरा प्रयोगका नहीं कर जाणते केवल केइयक आस्तिक लोक श्रद्धा मुजब इस जलकुं वदनमें लगाते हैं, मकानोंमें छांटते है, अब आशा है की इस अन्य विलायतवालोंका क्रोमोपथी प्रयोगकूं देख विधि संयुक्त श्रीसिद्ध चक्र यंत्राधिराजकूं यथातथ्य समझ करके इस स्नपनका गुण समझेगें चरित्रकारने अनेक रोगोंका मिटानेवाला रोगोका नामादिक तक लिखे हैं, रोगादिकोंपर स्नात्रके जलका प्रयोग कर हम प्रत्यक्षपणे रोग मिटा सकते हैं, किसीकूं संका होय तो हाथ कंगणकों आरसी क्या यह विद्या जैनियोंके दशमें विद्याप्रवाद नामा पूर्वमें अर्हत सर्वज्ञोने कथन करीथी उसका उद्धारही श्रीपाल चरित्रमें मुनिचंद्र गुरुनें प्रत्यक्ष कर दिखलाया है, लेकिन् इतना हम और लिखते हैं, यह प्रयोगमें कर्त्ताकी भक्ती द्रव्यसें और भावसें जरूर करना आप कर सके तो यथारुचि कारण सर्व संसारी जीवोंके पेट लगा है, इसबातकूं समझदार तो समझतेही हैं, केइयक लोक स्वार्थ तत्परही होते हैं, कहते है, हम पिया हमारे बैल पिया अबकू आचा है, गिरपडे इस प्रयोगमें वैद्यादिक प्रयोगके कर्त्ताके हाथमें कुछभी डोरी नहीं है, औषधी आदि प्रयोगोंमें तो दवाईके वाहने द्रव्यादिक लेते हैं, इसमें वो बात है, नहीं, उपगारीका उपगारका बदला हर वाहणे ऊतारणा श्रेष्ठ पुरुषोंका धर्म है,वोकर्त्ता नहीं ले तो उसका उपगार कायम समझणा किंबहुना.

होमियोपथी.

रोगियोंका रोग मिटानेकूं संसारमें अनेक तरेकी युक्ति और उपचारचलता है होमियोपथी पे कुछ जुदा वैद्यकशास्त्र नही है लेकिन् रोग मिटानेकूं एक नइतरेका चिकित्सा क्रम है उसका सिद्धान्त इस चिकित्सा क्रमका सिद्धान्त है होमियोपथीका शब्दार्थ स्थि... ग फेर हाणेसें रोग व... और पीडा है धार्क होता है जिसकरके रोग पैदा होता है उसही वस्तुमें रोगकूं मिटाना ... आकी प्रनाली है हरेक रोगमें उसरोगकूं मदत करनेवाली दवादेणी एसा होमियोपथीका केवल उलटाही क्रम है बुखारवालेकुं बुखार पैदा करनेवाली दवा दस्त लगते होय जिसकूं दस्त लगानेवाली दवादेनेमें आती है गरमीके रोग गरमदवासें टंढीका रोग टंढीदवासे मिटानेमें आना है होमियोपथी इलाजमें एकेक अलग २ दवाका उपयोग होता है याने अंग्रेजी यूनानी तथा देशी इलाजोंमें एकेक अलग २ अथवा बहोतसीदवा मिलाकर देनेमें आती है और होमियोपथी इलाजमें हरेक

रोगमें हरकोई एकही दवा दिये जाती है, फेर होमियोपथी इलाजमें जुलाव उलटी खून निकलवाणा वगेरे बलाष्टर मारफफोला उठाणा वगेरे तकलीप देनेके इलाज और रोगीकूं अशक्त करनेवाले इलाज बिलकुल भाग्य योगही स्यात् करते होयगें और तुरतही रोगपर असरकरे एसी दवा करनेकी चाल है, इत्यादि कारणोसें कितनेक रोगियोंकूं होमियोपथीक इलाज जादा अच्छा लगता है, रोग मिटाणेकी चिकित्सा पद्धतीमें एक तरफ एलोपथी ओर दुसरी तरफ होमियोपथी इसमेंसें कोणसा इलाज अच्छा है, इसवास्ते अभिप्राय देना यह काम अभी तो मुस्किल है, रोगरूपी शत्रूओंका नाश करनेकूं ये सब युक्तियों विद्वानोने शास्त्र तथा बुद्धि बलसें सोधके निकाली है, और जहांपर जो युक्ति सहजसें जलदी हुक्म उठावै रोग मिटावै उसका आसरा लेना ये इस वखत चतुर बुद्धिवानोंका काम है, होमियोपथीक चिकित्सामें होमियोपथीक डाकटर तथा होमियोपथीक चिकित्सा पद्धतीकूं जाननेवाले रोगी जो दवा इस वखतमें वापरते हैं, उसमेके मुख्य २ दवायोंका उपयोग इस ग्रंथके छठे प्रकाशमें दाखिल किया है.

होमियोपथिक दवाये मुख्य करके दो तरेकी होती है, एक तो अर्क दुसरी गोलियांकी मात्रा सामान्य तोर २ बूंदकी है, और बडी छोटी गोलीकी सामान्य मात्रा २ और ४ है, गोलियां अर्क करते जलदी विगडती है, अर्थात् गुण रहित हो जाती है, इसवास्ते जिसकूं ये दवा वापरणी होय तो अर्कही दुरस्त बहोत दिनोंतक विगडता नहीं.

मूल दवाके प्रवाही अर्क (टिंकचर) के संग पाणी या स्पिरिट ओफ वाइन मिलाणेसें दवा जादा और कम जोरवाली होती है, मूल दवा Q निशाणीसें पहचाणे जाती है और दवाईके नामके संग वो निशाणी रखते हैं, मूल अर्कमें नव गुणा पाणी डालके जो प्रवाही वणानेमें आता है, उसके संग IXनिशाणी रखनेमें आती है,इसतरे IX सें उतरते आखरी 1000 X तक चढती घटतीकी शक्ति वाली दवा वण शकती है, और इस मुजब उसपर strength ऐसे चढते IX) 2x 3x एसे चढते २ I००० X तक निशाणी रखनेमें आती है, बहोत करके रोग नया और तीक्ष्ण रूप ले सकता है, कोमोप क्तिवाली दवा जादे फायदे बंध होती है, और रोगके पुराणी हालतद्रा वैद्यकूं खरचभी ,वाली दवा फायदेबंध होती है, कितना स्ट्रेन्ग थवाली दवा देणी येमें थोडा शे प्रगे अनुभव और अभ्याससें समझ सकते हैं, लेकिन् इतना ध्यानमें रखणा क तीक्ष्ण रोगोमें 3x 6x वाली दवा जादा फायदा करती है, इपीकाक्यु आन्हा, चाइना, जेल्सीमीयम, और एसिड फोसफोरिकम ये दवाये IX रूपमें अच्छा फायदा करती है, हिपार सल्फ सीलीशीया एन्टीमनी क्रुड वगेरे 5x अथवा 6x के प्रमाणमें वापरते हैं, पुराणे रोगोंमें ये दवायें 30x के प्रमाणमें दिये जाती है.

होमियोपथीक दवा दिनमें थोडी वखत अथवा जादा वखत देना इस बातका खुलाशा तो रोगकी जाति और उसके लक्षणोंपरसें हो सकता है, बुखारमें ये दवा एकेक दो दो घंटेसे दिये जाती है, और कैदस्तकी बेमारीमें दश या पनरे मिन्टके फासलेसें देते हैं, नाडी तूट जाय तो पांच २ मिन्टसेभी दिये जाती है, पुराणे रोगोंमें दवा दिनमें मात्र एका ध वखतही देणी चाहिये और कितनेक रोग ऐसे भी है, सो एक दिनके फासलेसें अथवा दो तीन दिनके फासलेसें एक वेर ही दवा दिये जाती है, रोग ज्यूं जादा भयंकर होय उसके चिन्हमें जूं जोखम दिखाइ देवे तब दवा जलदी २ बहोत वखत देना चहिये बाहरके इलाजवास्ते होमियपैथिक दवाये अपने मूल रूपमें वापरते हैं, और ० निशाणीसें पहचाने जाती है.

देशी इलाजोंमें पथ्य पालनेकी वेर २ आज्ञा देनेमें आती है, तैसें होमियोपथिक दवाइमें भी पथ्य पालणेकी विशेष जरूरत है, होमियोपैथिक दवा लेनेवालेनें और रोगके चिन्ह सख्त होय ऐसे रोगीकूं तो जरूरही पथ्य करना दुसरी कोईभी दवा दवाके गुणवाला पदार्थ नसेवाला मादक पदार्थ उत्तेजक पदार्थ जेसेके चा काफी दारू सख्त खसबो स्वादवाली कोइभी चीज जेसेके आदा आंबली राई कपूर हींग लोंग जायफल अथवा जो चीजों गरम मसालेमें आती है, ऐसी सब चीजोंका त्याग करना.

बहोतसे कुटंबवाले लोक होमियोपथिक दवाकी संदूक रखते हैं, और पेटीके संग तथा दवाओंकी शीशीयोंपर छापी भई सूचनामुजब उस दवाइयोंका उपयोग करनेमें आता है, मतलब होमियोपेथिक दवायें वैद्यदीपक मुजब साधारण दवा मुजब बहोतसे कूटंबोमें इस वखत चलणे लगा है इसवास्ते ऊपर लिखी थोडी सूचनाके संग इस पुस्तकमें होमियोपैथिक दवाओंका किसी २ जगे उपयोग दीया है.

क्रोमो पथी.

रंगसे रोग मिटाणा इस चिकित्साक्रमकूं क्रोमोपथी एशा दुसरे विलायतवालोने नाम धरा है, उसका सिद्धांत एसा है के शरीरमेंसे चोकस रंग कम होणेसें रोग होता है और वोरंग फेर डालणेसें रोग कष्टसाध्य तक दूर हो जाता है, मुख्य रंग लाल, आसमानी [ब्ल्यु] और पीला है बाकी हरा और सुपेद है रोग मिटाणेके पहले इस बातका निश्चय कर लेणा चाहियेकी बदनमेंसे कोणसा रंग कम होगया है, और पीछे एसा बिचार पूरा होणा चाहिये के किसतरे वोरंग पूरा करणा बदनमें कोनसा रंग कम पड गया इस बातकी परिक्षा करणेकूं जोजो बात जाणणेकी जरूरी है उसमेंकी मुख्य २ नीचे मुजब इस परिक्षामें मूल चार जगे देखणेकी जरूरी है, आंखके डोलोंका रंग नखोंका रंग पेशाबका रंग और दस्तका रंग ४ डालरंग जिसके बदनमे कम पड गया होगा। उसके

आंख के डोले तथा नाखून स्वभाव करके आसमानी रंगका होता है, और उसका दस्त पैसाब सुपेद अथवा आसमानी रंगका होगा.

आसमानी रंग जिसके वदनमें कम पडा होगा उसकी आंख लाल रंगकी होगी उसके नख थोडे या जादा लाल होगा पेसाब ललाइ लिये पीलासपर होगा अथवा फक्त लाल होगा और दस्त पीलाया लाल होगा.

वदनमें असली रंगकी वधघट थोडे या जादा प्रमाणमें सब वदनमें फैली भई होती है तोभी कितनेक वखत वोवदनके चोकस भागपर एकठा भया मालम देता है, और उस रोगवाले भागकूं अपणे जुदे २ रोगके नामसें कहते हैं, जेसेके फोडा आंख दुखणी शिरका दरद लकवा वगैरे चोकस अवयवपर दिखते भये सब रोग खास उस अवयवके संगही संबंध रखता है एसा नहीं मानना चाहिये इस रोगोंपरसें अपणे चेतना चाहिये इस तरेके रोगकी अथवा रंगकी सब वदनमें वधघट भई है और जेसें उन रोगोंपर उपरका इलाज फायदेबंध है, तेसें अंदर पीणेके उपायभी जरूरीसें कामके हैं.

रोगकी परिक्षा करणी वडी मुस्किल है, अदमी भूले विगर हरगज नहीं रह सकता तोभी रोगकी परिक्षा करणेकूं मुख्य साधन आंखका डोला है लेकिन किसी २ वखत एसा हालवणता है, के आंखपर ललाइ होती है तोभी वदनमें लाल रंग कम होता है कारण नाताकत अदमी जब मगजसंबंधी वहोत काम करता है, तब एसे अदमीका मगज दुसरे भागोंसें गरमी जादा दिखाती है, और वो शक्तिके ऊपर कर काम करणेका निशान है, तब तो एसी आंखकी ललाइ देख परिक्षा परसें भूल होना कोन वडी बात है, अब दुसरी तीन जगे [नाखून दस्त पैसाब] से एसी भूल नहीं हो सकती क्योंकि इनोंके रंगपरसें जिस रंगकी वदनमें कमी होती है वोही रंगकी खबर हो जाती है क्योंका तेसें ठंड मुल्कोंमें रहणेवालोंके आंखके डोलेका रंग जादा तर स्वभाव करके पीलाही होता है इसवास्ते एसे रोगियोंकी परिक्षा मुख्य करके नाखून दस्त तथा पैसाब परसें करणा चाहिये.

(सिद्धांती इलाज) रंगपरसें सनातन धर्मवाले प्रजा हितकारीयोंका मताभिमान त्याग मध्यस्थ बुद्धिसें विचार रखका कारण जाण सर्वोको करणेयोग्य है जिसमें इस लोक और पर लोक दोनुमें फायदा बंद होय इन्में और भावेंसो लिखता हुं.

जगतारक पितामह श्रीनाभिराजाके कुलचंद्रने श्रीसिद्धचक्र यंत्राधिराजके गढेमें पांच रंगका चित्र पंचपरमेष्ठीका लिखा संक्षेप मंत्र इन पांचोंका अभिआउसायनमः जाके १ सर्व प्रकार निपाया सर्व सिद्धांतमें मंगलकार्यके प्रारंभमें प्रथम नमोर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्य एसा उच्चारणकर अन्यशास्त्राध्ययन करना सिखाया वर्तमाके व्यापार व्यवहारी आदिमें मंगलाचरण ॐनमः सिद्धं, परकर प्रथम लिखाका

ब्राह्मी पुत्रीकूं सिखलाई फेर पूर्वोक्त पंचपरमेष्टीका आदि अक्षर एकेक लेकर जैनेंद्रव्याकरण घणाकर उसके सूत्रोंसें ॐ एसा प्रणव बीज सिद्धकूं साधकर बतलाया वो सिद्धांत चंद्रिकाके सूत्रोंसें हम साधकर दिखलाते हैं अरिहंतका अकार सिद्ध अशरीरीका अकार आचार्यका आकार उपाध्यायका उकार मुनिःका मकार अ अ आ उ म् सवर्णे दीर्घः सह यह सूत्रसे दोनों अकार मिटकर आउम् रहा उओ इस सूत्रसे आ और उ मिलके ओम् भया मोनुस्वार सूत्रसें ॐ भया फेर विद्वज्जन. विचारके देखेंगें जिसके वदनमें लाल रंग कम पडा होवे उसकूं गट्टेमेंसें सिद्ध परमात्माकी मूर्त्ति जो लाल रंगकी है, इसपर एकांतमें बैठकानोसे दुसरेका शब्द सुणाइ नहीं देवे एसी जगे मुखकी श्वासकूंरोकनाकसें श्वास लेता ॐ ह्रीँ णमो सिद्धाणं मनमें जपता भया दोनुं नेत्र सिद्धमूर्त्तिपर रक्के लाल रंग बराबर होजायगा रोग निश्चे मिटेगा आसमानी रंग कम पडा होयतो साधूपदकी मूर्त्ति जो गट्टेमे स्याम रंगकी है, उसपर पूर्वोक्त विधिकरे मनके अंदर ॐ ह्रीँ नमो लोएसव्वसाहूणं जपे पीला रंग कम पडा होयतो आचार्य पदकी मूर्त्ति पीले रंग सुनेरी है, उसपर पूर्वोक्त विधिकरे मनमें ॐ ह्रीँ णमो आयरिआणं एसा जाप जपे वीर्य रस कफ स्वेत रंग कम पडा होयतो अर्हतकी मूर्त्तिपर पूर्वोक्त विधिकरे ॐ ह्रीँ णमो अरिहंताणं जाप जपे हरा रंग कम होणेपर या वायुके विकारोंमें उपाध्यायकी मूर्त्ति हरे रंगपर एकाग्रता करे ओं ह्रीँ णमो उवज्झायाणं एसा जाप करे इस विधिसें सर्व रोग मिटते हैं. इसकी विस्तार विधि वृहत्नमस्कार कल्पमे हैं, ये विधि सर्वज्ञ परमेश्वरकी बताई है, अब मनुष्यकृत इसका भेदांतर जो चला है सो लिखते हैं क्रोमोपथीका इलाज लेन्सीस याने काच करके वदनमे रंग देकर करणेका है उसके वास्ते खास जुदे २ रंगोंके काच चस्मे तथा दुरबीनके जेसा बाहरसें तेसें अंदरसें उपसे भये तइयार आते हैं लेकिन् एसा काच हरकोई अदमीकूं मिल सके एसा मुस्किल है, इसवास्ते क्रोमोपथीका इलाज हर कोइभी सहजसें करसके उसकेवास्ते एक सुलभ रीती सोधकर निकाले गई है, इस सुगम रीतके दो प्रकार है, १ जुदे २ रंगकी सीसीयों २ जुदे २ रंगके काच प्रथम शीशीयोंका इलाज जुदे रंगकी शीशीयों खाली एकठीकर उसकूं अछीतरे साफ करणा उसमें कूवेका पाणी अथवा वाफ रूप निकाला भया डिस्टिल्ड पाणी अथवा वरसादका झेला भया पाणी भरणा और मजबूत बुचसे बंध करणा पीछै उस सीसीयोंकूं सूरजका सख्त धूपमें कमसे कम दो घंटेतक रखणा दोघंटेसे जादा धूपमे रखणेसें बाटलीका पाणी जादा गुणकारी होता है इसमुजब धूपमें रखा भया शीशीका पाणी दवा मुजब गुण करता है, और जुदे २ रंगकी बाटलीमें तइयार किया भया पाणी जुदे २ रोगोंपर असर करता है, शीशीयोंको दर तीसरे दिन बहोत अछीतरे धोकर साफ पारदर्शक करणी चाहिये नहीं तो उसमें धूपका तइयार किया भया पाणी अछीतरे असर करेगा नहीं. इन शीशीयोंका

जल रोगोंपर बाहिर लगाणेमें तथा अंदर पीणेमें दोनोंतरे फायदा करता है, इस पाणीकी मात्रा बडी ऊमरवालेकूं२॥ रुपिये भरकी है ऊमरके वधघटमुजब इस पाणीकी मात्रा कम बेसी करी जाती है, पुराणे रोगोंपर ये पाणी दिनमें कम देणा चाहिये और ऊपर लगाणेमें ये पाणी चाहे जितना लगाया जाता है कोइ किसमका डर नहीं है, खांड अथवा खांडकी गोलियां चोमासेमें काम देती है कारण चोमासेमें सख्त धूप गिरता नहीं. तब एसा पाणी तइयार होसकता नहीं और एक वखत शीशीमें तइयार किया भया पाणी एकाध दिनसे जादा गुणवाला रह सकता नहीं इसवास्ते एसी ऋतूकेवास्ते सिद्ध चक्रके गट्टेके रंगका अथवा यंत्रके स्नानका जल अथवा क्रोमोपथीके रंगका इलाज करणेवास्ते शीशीयोंमें मिश्री अथवा होमियोपैथियोंकी बनाई भई खांडकी गोलियां जुदे २ रंगकी शीशीयोंमें भरके एक पखवाडेतक हमेस सूर्यके धूपमें धरणा चाहिये पीछे इस मिश्रीका या गोलियों का रोगोंपर अनेक प्रमाणमें वरतावा करणा.

(काचका इलाज) जुदे २ रंगके काचका याने काचमेसें पसरी भई रोसणीका दवामुजब रातका तेसें दिनका उपयोग हो सकता है, दिनकूं ओरेमें उजाला आणेका सब रस्ता बंधकर रंगीन काचवाली बंध करी भई काचकी रोसनी रोगीके शरीरपर लेणेसें वो रोसनी दवाका काम करती है, और जिस तरेके रंगकी जरूरी होय वोही रंगकी काचकी रोसनीका उपयोग करणा. वदनके जिस जगे रोग होय उसही जगे उस रंगके काचकी छाया पडे एसा होणा चाहिये जो धूपकी सख्त रोसनी नहीं सही जाय एसा होय तो उजाला होय एसी धूप विगरकी याने छायावाली जगामें ये इलाज अजमाणा रातकूं काचके रंगका उपयोग करणेकूं लालटेन रंगीलका उपयोगकरणा चारोंतरफ चार रंगका काच लगवाणा लाल आसमानी हरा पीला पीछे जिसरंगकी रोसणी रोगीके वदनपर अथवा रोगकी जगे देणा होय उस भागपर वेसे काचकी रोसणी अंदर धरी चराकसें गिरती है.

रंगोंकी वदनपर असर–१ ब्ल्यु (असमानी) गहरा काला लाल पीला वगेरे रंग जुदे २ वदनपर कैसा असर करता है उसकी सामान्य समझ नीचेमुजब.

ब्ल्यु–आसमानीरंग–आसमानी लाल पीला इन मुख्य स्वाभाविक रंगोंमें आसमानी रंग जादा जरूरीका है. सृष्टिका हरेक प्राणी आसमानीरंगके भानमे जीते हैं. याने आकाश तथा सर्व साधुपदकी थापनाका आसमानी रंग है. इसवास्ते दुनियां अवाद रहती है ये ब्ल्यु रंग ठंढा शांति देणेवाला स्तंभक (दस्त तथा खूनके प्रवाहकूं अटकाणेवाला) वदनकी गरमी तथा उष्णताकूं मिटाणेवाला है. एसाही शांतदांतके दातार [illegible] कर्मोंकेवश अधोगतीमें जाणेवाले,जीवोंके स्तंभक क्रोधादि कषायकी उष्णताकूं [illegible] षट्कायाके पालक आकाश जैसें सुपेत वदलोंकों धारणकर सर्व तरेका रस

पैदा करनेवाला मेघ वरसता है, तैसे जती साधु श्वेत वस्त्र धारणकर अनेक स्याद्वादनय. वादकी धाररूप झडीसें वाणी अमृतरूप मेघ वरसाते नव रसोंका स्वरूप प्रकट करते हैं, इस रंगका पाणी अथवा प्रकाश इतने रोगोंमें जादा फायदे चंद है.

(१) गरमीके रोग.	(२) चमडीके रोग.
(३) हैजामरी.	(४) न्युमोनिक प्लेग.
(५) हडकवायु.	(६) मरोडा.

गहराब्ल्युरंग–इस रंगमें नीलका रंग अथवा जामूनी रंगका समावेश होता है, इस रंगमें लाल रंगका अंश होता है, कितनेक रोगोंमें ब्ल्यु रंगके संग लाल रंगकी भी जरूरी पडती है, उस जगे ये रंग फायदा करता है, जिनरोगोंमें खुला आसमानी रंग वापरणा कहा है, और जो रोग बुड्ढे तथा नाताकत अदमीकूं भया होय उहां खुला आसमानी रंगकी एवजीमें गहरा आसमानी रंग वापरणा–फेफसेका वरम (न्यूमोनिया) श्वासनलीका सोजा खाळीठसका और बचेकी कुकडिया खासी वगेरे रोगोंमें गहरे ब्ल्यु रंगका पाणी पीणेकूं देणेमें आता है, बहोत दिनोंकी बदहजमी पेटका रसविकार जिसमें अंगार सीजले तथा उलटी होय और दस्तमें गहरा ब्ल्यु रंग फायदा करता है.

पीलारंग–शुद्ध पीले रंगकी शीशियों मिलणी मुस्किल है, जो बजारमें पीले रंगकी शीशियों मिलती है, उसमें लाल रंगका जरा अंस होता है, इसकूं फीका नारंगीके रंगके नामसें लोक कहते हैं, जिस रोगमें लाल रंग फायदा करता है, उसरोगोंमें वीश वरसके अंदरके दरदियोंपर पीला रंग वापरणेसें जादा फायदा करता है पीले रंगकी बाटलियोंके पाणीका उपयोग इनरोगोंमें करणा (१) पेटकी कबजी (२) बदहजमी (३) रक्तपित्त जिस रुजगारवालोंकूं बहोत देरतक बैठे रहणा पडता होय जैसेंके दुकानदार बेपारी और कोर्टोंमें बैठके काम करणेवालोंकूं ये रंग बहोत फायदा करता है.

लाल रंग–गरमी देता है, नसोंकूं ढीलीकर श्वासकूं बढाता है, और बदनकी सुस्तीकूं मिटाय बदनमें तेज लाता है, जादा आसमानी रंगसें बदनके जो भाग मुकड गये होय उसकूं लाल रंग खुलाकर देता है, इस रंगसे लकवा वगेरे वायुके रोग अच्छा होणा संभव है.

इतिश्रीमज्जैनधर्माचार्यसंप्रदीते उपाध्याय श्रीरामऋद्धि सारगनिः विरचिते वैद्यदीपक ग्रंथे औषध्यादि निघंटवर्णनो नाम पंचमः प्रकाशः ॥

जल रोगोंपर बाहिर लगाणेमें तथा अंदर पीणेमें दोनोंतरे फायदा करता है, इस पाणीकी मात्रा बडी ऊमरवालेकूं२॥ रुपिये भरकी है ऊमरके वधघटमुजब इस पाणीकी मात्रा कम वेसी करी जाती है, पुराणे रोगोंपर ये पाणी दिनमें कम देणा चाहिये और ऊपर लगाणेमें ये पाणी चाहे जितना लगाया जाता है कोइ किसमका डर नहीं है, खांड अथवा खांडकी गोलियां चोमासेमें काम देती है कारण चोमासेमें सख्त धूप गिरता नहीं. तब एसा पाणी तइयार होसकता नहीं और एक वखत शीशीमें तइयार किया भया पाणी एकाध दिनसे जादा गुणवाला रह सकता नहीं इसवास्ते एसी ऋतूकेवास्ते सिद्ध चक्रके गट्टेके रंगका अथवा यंत्रके स्नानका जल अथवा क्रोमोपथीके रंगका इलाज करणेवास्ते शीशीयोंमें मिश्री अथवा होमियोपैथियोंकी बनाई भई खांडकी गोलियां जुदे २ रंगकी शीशीयोंमें भरके एक पखवाडेतक हमेस सूर्यके धूपमें धरणा चाहिये पीछे इस मिश्रीका या गोलियों का रोगोंपर अनेक प्रमाणमें वरतावा करणा.

(काचका इलाज) जुदे २ रंगके काचका याने काचमेसें पसरी भई रोसणीका दवामुजब रातका तेसें दिनका उपयोग हो सकता है, दिनकूं ओरेमें उजाला आणेका सब रस्ता बंधकर रंगीन काचवाली बंध करी भई काचकी रोसनी रोगीके शरीरपर लेणेसें वो रोसनी दवाका काम करती है, और जिस तरेके रंगकी जरूरी होय वोही रंगकी काचकी रोसनीका उपयोग करणा. वदनके जिस जगे रोग होय उसही जगे उस रंगके काचकी छाया पडे एसा होणा चाहिये जो धूपकी सख्त रोसनी नहीं सही जाय एसा होय तो उजाला होय एसी धूप विगरकी याने छायावाली जगामें ये इलाज अजमाणा रातकूं काचके रंगका उपयोग करणेकूं लालटेन रंगीलका उपयोगकरणा चारोंतरफ चार रंगका काच लगवाणा लाल आसमानी हरा पीला पीछे जिसरंगकी रोसणी रोगीके वदनपर अथवा रोगकी जगे देणा होय उस भागपर वेसे काचकी रोसणी अंदर धरी चराकसें गिरती है.

रंगोंकी वदनपर असर–१ ब्ल्यु (असमानी) गहरा काला लाल पीला वगेरे रंग जुदे २ वदनपर कैसा असर करता है उसकी सामान्य समझ नीचेमुजब.

ब्ल्यु–आसमानीरंग–आसमानी लाल पीला इन मुख्य स्वाभाविक रंगोंमें आसमानी रंग जादा जरूरीका है. सृष्टिका दरेक प्राणी आसमानीरंगके भानमे जीते हैं. याने आकाश तथा सर्व साधुपदकी थापनाका आसमानी रंग है. इसवास्ते दुनियां अवाद रहती है ये ब्ल्यु रंग ठंढा शांति देणेवाला स्तंभक (दस्त तथा खूनके प्रवाहकूं अटकाणेवाला) वदनकी गरमी तथा उष्णताकूं मिटाणेवाला है. एसाही शांतदांतके दातार अशुभ कर्मोंकेवश अधोगतीमें जाणेवाले जीवोंके स्तंभक क्रोधादि कषायकी उष्णताकूं मिटाणेवाले षट्कायाके पालक आकाश जैसें सुपेत वदलोंकों धारणकर सर्व तरेका रस

सिद्ध भयाके जैसें वदनमें वायुका वढणा और रोगोंकों पैदा करता है, तैसें वातज्वरकूंभी पैदा करता है: इसीतरे पित्तकी अधिकता पित्तज्वरकूं कफकी अधिकता कफज्वरकूं पैदा करता है, इसमेंके दोदो दोषोंकी अधिकता दोदो दोषोंके लक्षणवाले ज्वरकूं पैदा करता है, और तीनों दोष विगडता है, तब तीनों दोषोंके लक्षणवाला त्रिदोष सन्निपात ज्वरकूं पैदा करता है.

(बुखारका भेद) बुखारके भेद किसतरे करणा ये तो बडी कठिन बात है, क्योंके बुखार बहोत कारणोंसे पैदा होता है, ये कारण दो प्रकारका है, आंतर याने शरीरके अंदरसे पैदा होनेवाला बाहिर याने बाहिरसे पैदा होनेवाला आंतर कारनोंका तीन भेद है, आहार विहारसें रस विगडकर बुखार आता है, उसमें सर्व साधारण बुखार जैसेंके तीन तो अलग २ दोषवाला दोदो दोषवाला तीनों दोषवाला विषमज्वर वगेरे ज्वरोंका समावेश होता है, और वदनके अंदर सोजा तथा गांठके होनेसें बुखार आता है, और जिसकूं अंग्रेजी वैद्यकमें बुखारके प्रकरणमें गिणनेमें नहीं आया लेकिन देशी वैद्यकमें जिसकूं बुखारके भेदोंमें गिणा है, वो अंतर कारणसें आनेवाला बुखारका दुसरा भेद गिणा है, बाहिर कारणोंके ज्वरमें सर्व आगंतुकज्वर (जिनोंकी बाबत पीछे लिखणेमें आवेगा) तथा हवामें उडते चेपी बुखारोंका समावेश होता है.

देशी वैद्यकशास्त्रमुजब बुखारका भेद– नीचेमुजब

(१) वातज्वर,	(६) कफपित्तज्वर,
(२) पित्तज्वर,	(७) सन्निपातज्वर,
(३) कफज्वर,	(८) आगंतुकज्वर,
(४) वातपित्तज्वर,	(९) विषमज्वर,
(५) कफवातज्वर,	(१०) जीर्णज्वर.

अंग्रेजी वैद्यकशास्त्रमुजब बुखारका भेद–नीचेमुजब.

(१) जारी बुखार उसके भेद नीचे मुजब.

(१) सादा तप (२) टाइफस (३) टाईफोईड (४) [illegible] आनेवाला

आंतरका भेद (१) हमेशका टंड देके आनेवाला.

(२) एकांतर. देशी वैदकमुजब विषमज्वरके भेद.

(३) तेजरा (४) चौथिया.

(३) रिमिटंट फीवर–देशी वैदकमुजब विषमज्वरका [illegible] भेद [illegible].

(४) फुटकर निकलनेवाला बुखारका भेद नीचेमुजब

देशी वैद्यकमें मसुरिका [illegible] तथा [illegible] लिखा है.

(१) शीतला, (७) [illegible].

प्रकाश ६ छठा.

परिक्षा इलाज पथ्य.

इस छठेप्रकाशमें नीचे लिखे विषयोंकों किरणोंद्वारा प्रकट किया है.

किरण पहली १

ज्वर–बुखार.

(बुखारका संक्षेपवर्णन)–बुखारका मरज जेसा सामान्य है, तैसे बडासख्त भी है सब रोगोंमें वो मुख्य होणेसें वो रोगोंका राजा कहलाता है बुखारोके कितनेही भेद है लेकिन् ये सब तरेका बुखार किस मूल कारणसें पैदा होता है, तथा किसतरे चढता है और उतरता है, इन सब बातोंका संतोष करनेवाला समाधान करनेकूं विद्वान लोक अभीतक कोईभी शक्तिवान् नहीं भया है, किसीभी ग्रंथमें ज्वरकी बाबत समाधान पूरा खुलासेके संग किया भया नहीं है, बुखारका विषय बहोत गहन है, इसवास्ते ऐसे ग्रंथोंसें बुखारका फकत सामान्य स्वरूप और उसकी सामान्य चिकित्सा जाणनेमें आवे इतनाही बस है, एसा विचार कर इसजगे मुख्य २ बुखारका कारण लक्षण और उपाय बताणेमें आया है.

वदन गरम होकर तपना अथवा वदनमें जो स्वाभाविक उष्णता होणी चहिये उससें जादा गरम होना ये बुखारका चिन्ह है, लेकिन् इसतरे शरीर तपनेका क्या कारण है, और वो क्रिया किसतरे होती है, ये बाबत बहोत सूक्ष्म है, देशी वैद्यकशास्त्र बुखारका खुलासा इसतरे किया है, वात पित्त कफ ये तीनों दोष अयोग्य आहार विहारसें जठरमें जाकर रसकूं दूषितकर कोठेकी अग्निकी उष्णताकूं बाहर निकाल ज्वरकूं पैदा करता है, इस बाबतकूं विचारते एसा सिद्ध भया के वाय पित्त कफ इन तीनोंकी समानता यही आरोग्यताका चिन्ह है, और विषमता अथवा कम वेसीपणा येही रोगका चिन्ह है, ये समानता अथवा विषमता आहार विहारपर आधार रखता है, इस मर्मके देखणेसें यहमी

वातज्वरमें एकाधटक लांघनकर पीछे तासीर तथा दोपके अनुसार हलका खुराक लेणा ऊपर लिखासो बुखारका उत्तम पथ्य है, पथ्य यथार्थकरणेसें दवा नहीं लेणी पडती (२) लघुसुदर्शन चूर्ण (नं० ३२ में दिया भया है, उसकी फक्की अथवा फांटचा अथवा हिमकरके पीणा इसतरे लंघन तथा सादे इलाजसें बुखार नहीं जायतो सब बुखारवालोंकों तीनदिन बाद देवदारु तोला २ धाणा तोला २ सूंठ तोला २ रिंगणी तोला २ बडी कंटाली तोला० २ देवदारू तोला २ इन सबोंकों कूट १ तोलेभरका काढा पाव पाणीका डेढ आना पाणी रखके देणा ज्वर पाचन होकर उतर जायगा अथवा सातमें दिन दोपकूं पकाणेकूं नं० २०० वाला (गुडुच्यादि काथ) गिलोय सूंठ पीपरामूलका काढा शरू करणा उस करके बुखारका पाचन होकर ऊतर जायगा.

पित्तज्वर.

(कारण) पित्तकूं वधाणेवाले अहार विहारसें बिगडाभया पित्त होजरीमें जाकर होजरीके रसकूं दूपितकर जठरकी गरमीकूं बाहर निकालता है, एक दोप कोपणेसें दुसरे दोपोंकों विगाडता है, एसानियम है, इसवास्ते जठरमें गया दूपित पित्त जठरकी वायूकूं कोपाता है, और कोपी भई वायु अपणे स्वभाव मुजब जठरकी गरमीकूं बाहर निकालती है, उस करके पित्तज्वर पैदा होता है.

(लक्षण)–आंखोमे दाह जलण होणी ये पित्तज्वरका मुख्य लक्षण है, बुखार बहोत जोरका दस्त उलटी पसीना वकणा दाह प्यास कंठ होठ मूंकापकणा मल मूत्र नेत्र पीला होणा और भ्रम ये पित्तज्वरके दुसरे लक्षण है, जादातर पित्त प्रकृतीवालेकूं तेसें पित्तके कोपकी शरद तथा ग्रीष्मऋतूमें इस बुखारका विशेप उपद्रव होता है.

(इलाज) (१) लंघन, दोपके जोर मुजब एकटंक अथवा एकदिन अथवा भूख लगणेकी खबरपडे जहांतक लंघण कराणा अथवा मूंगके दालका पाणी भात अथवा साबूदाणे पीणा डाकदर दूध पिलाते हैं, पाचन देकर (२) पित्त पापडा अथवा घासिया पित्त पापडेका उकाला फांट अथवा हिम पीणा (३) पर्पटादि काथ (नं० २०१) उसका फांट याहिम करके पीणा (४) दाख हरडे मोथ कुटकी किरमालेकी गिर और पित्तपापडा इनका काढा पीणेसें पित्तज्वर शोप दाह भ्रम मूर्छा वगेरे उपद्रव मिटकर दस्तसाफ आता है, (५) पित्तपापडा रगतचंनण सुपेद तथा काला दोनोंवाला इनोका उकाला फांट हिम पित्तज्वरकूं मिटाता है, (६) रातकूं ठंडे पाणीमें भिजाया भया धाणेका हिम अथवा गिलोयका हिम पीणेसें पित्तज्वरका दाह शांत होता है (७) पित्तज्वरके संग बहोत दाह होता होय तो कच्चे चावलोंके धोवणमें थोडा चंदन तथा सूंठकूं घसकर चावलोंके धोवणमें मिलाकर थोडा सहत तथा मिश्रीडालकर पिलाना.

(२) ओरी,	(८) इन्फल्युएनझा,
(३) अचपडा,	(९) मोतीज्वरा,
(४) लालबुखार,	(१०) पाणीज्वरा,
(५) रंगीला बुखार,	(११) योथीज्वरा,
(६) रगतवायुविसर्प,	(१२) काला मूंधोरा.

(बुखारके सामान्य कारण) अयोग्य आहार और अयोग्य विहार ये बुखारका सामान्य कारण है, इस कारणोंसे वदनका धातुविकार पाकर बुखारकूं पैदा करता है, अयोग्य आहार विहारमें बहोतसी बातोंका समावेश होता है, बहोत गरम तथा बहोत ठंढा खुराक बहोत भारी खुराक विगडा भया और बासी खुराक तासीरके विरुद्ध खुराक ऋतु विरुद्ध खुराक बहोत महनत बहोत गरमी लेना अति ठंढ बहोत भूख बहोत विलाश खराब पाणी खराब हवा ये सब बुखारके तरे २ के कारण है.

(बुखारके सामान्य लक्षण)— बुखार बहार दिखाणेके पहले थकेला चित्तकी वेचेनी मूंमें विरसपणा आंखोंमें पाणी आणा जंभाई ठंढ हवा तथा धूपकी वेर २ इच्छा और भूखका अभाव अंगोंका टूटणा वदनमें भारीपणा रूंखडे होणा खुराककी अरुचि इत्यादिकलक्षण सरू होते हैं, ज्वरभरे पीछे चमडी गरम मालम देणा ये बुखारका प्रगट चिन्ह है, बुखारमें पित्त अथवा गरमीका मुख्य उपद्रव होता है, बुखार प्रगट भया पीछे वदनमें उष्णता भरणेके संगऊपर लिखे सब चिन्ह जारी रहते हैं.

वातज्वर.

(कारण) विरुद्ध आहार विहारसें कोपपाया भया वायु होजरीमें जाकर होजरीका रस (आम)कूं दूपितकर ज्वरकी गरमीकूं बाहर निकालती है, उसकरके वातज्वर पैदा होता है.

(लक्षण) जंभाई आणा ये वातज्वरका मुख्य चिन्ह है, सिवाय बुखारका वेग कमती वेसी होणा गला होठ तथा मूंका सूकणा निद्राका नाश छीकका बंध होणा वदनमें लूखापणा अवयवोंका दूखणा दस्तकी कबजी इत्यादिक दुसरे भी चिन्ह मालम पडते हैं, ये बुखार जादातर वायुप्रकृतीवालेकूं तथा वायु प्रकोपकी मोशमवर्षा ऋतुमें पैदा होता है.

इलाज (१) लंघन .सब बुखारोंमें लंघन हितकारक है, तोभी दोप तासीर बालक वृद्ध शरीरकी स्थितिका विचारकर लंघन कराणा वातज्वर प्रबलमें तीन लंघन कराणा लेकिन् शरीर ताकतवाला होय तो शक्ति मुजब १ से ६ तक लंघनकराणा लंघणकरणा याने मुद्दल नहीं खाणा एसा लंघनका अर्थ नहीं है, थोडाखाणा हलकाद- लिया या भात या मूंगकी अरहडकी दालपीणा ये भी लंघनही कहलाता है, साधारण

लगणी उजागरा और अतिश्रम विशेप करके एसा सादा। बुखार ऋतुके वदलनेसें हो जाता है, और उसकी मुख्य ऋतु मार्च अप्रेल अथवा वसंत तथा सप्टेंबर अक्टोंबर अथवा शरद है, शरदमें पित्तका बुखार होता है, वसंतमें कफका होता है, और जुलाइ महीनेमेंभी वरसादकी वातप्रकृतीवाली ऋतुमें वायुके उपद्रव समेत बुखार चढ आता है, ऊपर जो जुदे २ दोपका बुखार वर्णन किया है, उन सबोंकी सादे. जारी बुखारमें गिणती हो सकती है, ये बुखार अंतरिया बुखारकीतरे चढा उतार नहीं रहता, लेकिन एक दोदिन जारी बुखार आयकर तुरत उतर जाता है.

(इलाज) सादा जारी बुखारके ऊपर तीनों न्यारे २ दोप वाले इलाज लिखे हैं, इसके सिवाय सामान्य इलाज लिखते हैं, वो सब जारी बुखारपर चल सकते हैं, जहां-तक बुखारमें किसी एक दोपका निश्चय नहीं होवे उहां इस इलाजोंकों चलाणा सादे जारी बुखारमें विशेष दवाकी जरूरी नहीं रहती एकाध टंक लंघन करनेसें आराम लेनेसें हलका खुराक खानेसें और दस्तकी कबजी होय तो उसका खुलासा करनेसें बुखार उतरजाता है, शरुआतमें गरम पाणीमें पांव डुबाणा उससे पसीना आके आराम होता है, बुखारमें गरम किया तीन उकालेका ठंढा किया भया पाणी मांगे जब पीणेकूं देणा आंखमें सूठ काली मिरच पीपरकूं घस अंजण कराणा बहोत हवा खुलेछत सोने नहीं देना खानेकूं थलीदेशमें बाजरीका दलिया, पूरबवालेकूं, भातकी कांजी मांड, मध्यमारवाड़में मूंगका ओसामण भात, दक्षिणमें तूरकी दाल पतलीका पाणी अथवा भात मिलाकर, ये बुखार दोतीन दिन रहता है, लेकिन मिटकर वाजे बखत पीछा आजाता है, इसवांस्ते बुखार गयेबादभी पथ्य रखना जहांतक ताकत नहिं आवे उहांतक भारी अनाज खाणा नहीं और महनतका काम करणा नहीं, (१) गडूच्यादि क्वाथ (नं० १९८) (२) नागरादिपाचन) पिछाडी लिखा है, पांच चीजोंका सो (३) क्षुद्रादि क्वाथ, भूंगिणी चिरायताकुटकी सूंठ गिलोय एरंडीकी जड (४) दाख धमासा अरडूसेका पत्ता (५) चिरायता वाला कुटकी गिलोय और नागरमोथ इनोंमेंका कोइभी काढा क्वाथकी विधि-मुजब तइयारकर थोडे दिन दोनुं टंक पीणा इससे बुखार पाचन शमन होकर उतरजाता है (६) लघुसुदर्शन चूर्ण (नं०३२ उसकी फक्की हिम अथवा चा करके पीनेसें सादा जारी तप उतर जाता है, जोरवाले सादे बुखारमेंभी ये चूर्ण बहोत फायदा करता है, इस चूर्णमें पसीना आता है, बुखारभी अटक जाता है बुखार उतरेबादभी क्विनाइनकीतरे ये चूर्ण थोडे दिन देनेसें बुखार उथलके नहीं आता और ताकत आजाती है.

(अंग्रेजी इलाज) (७) प्रथम दस्त साफ लानेकूं सिडलिझ पाउडर (नं०४५३) का देणा उलटी होनीभी बंध होगी प्यास कम पडेगी अथवा पसीना लानेकूं पदटी खुराक एप्सम सोल्ट गोगीके कोठेकी ग्यिनिमुजब २ से ४ ड्राम डालकर देना.

निदान अनुभव और कालज्ञानवाला पहचान सकता है, वा जे मूर्ख अंत दशातक नहीं पिछान सकते.

(सामान्य लक्षण)–जिस बुखारमें वाय पित्त कफ तीनों दोषोंका कोप भया होता है, वो सन्निपातज्वर क्षणमें दाह क्षणमें ठंढ हड्डी और जोडोंमें दरद शिरमे दर्द आंखोंमें आंसू कानोंमे अवाज गलेमें कांटे नसा मोह मींट थक बाद खास श्वास अरुचि हांफणी जीभटेढी काली अंगढीला शिर हिलाना नींदका नाश दस्त पेशावका बहोत देरसे थोडा उतरना गलेमें अवाज गूंगापना पेटका आफरना बदनपर चठे दाफड अथवा गोल चकते इनोंमेंके थोडे लक्षण कष्ट साध्यमें, पूरे लक्षण असाध्य सन्निपातमें होते हैं.

(सन्निपातके भेद)–सन्निपातमें जुदे २ दोष मुजब लक्षणों करके विद्वानोंने अनुभवकर सबोंके लक्षणपर उपाय ग्रंथोंमें लिखे हैं, बडे भयंकर सन्निपातोंमें फूंकी भई रसमात्रा ओं बहोत कामदेती है, इस जगे तो सुलभ सामान्य इलाज लिखते हैं, इनोंसें भी फायदा होता है, सन्निपातज्वर १३ तथा १४ प्रकारका है, + संधिक १ अंतक २ रुग्दाह ३ चित्तविभ्रम ४ शीतांग ५ तंद्रक ६ कंठकुब्ज ७ कर्णक ८ भुग्ननेत्र ९ रक्तष्ठीवी १० प्रलापक ११ जिह्वक १२ अभिन्यास १३ हारिद्रक १४.

(१ संधिकके लक्षण)–सांध २ मेदरद शूल प्यास चित्तकूं संताप निद्राका नाश नाताकती कफ संबंधी पीडा और ज्वर पसलियोंमें दरद इसकी मुद्दत सातदिनोकी है, मारे चाहे जीये. ७ वर्षभी है.

(संधिकका इलाज)–रास्रा सूंठ गिलोय कांटाशेलिया नागरमोथ शतावर हरडे देवदारू कुटकी कंचूर अरडूसेके पत्ते एरंडकी जड तथा दशमूल इनमर्षोकी उकाली.

(२ अंतकका लक्षण) दाहकरे संतापकूं बढावे मोहरोगेलगे शिर हिलायाकरे हिचकी होय और खासी होय ये त्यागने योग्य असाध्य है, इसकी मुद्दत १० दिनोंकी है, पकवाद पेशुद्ध श्वास नसा येभी होता है.

(अंतकका इलाज)–हरडे अरडूसा करमाला देवदारू कुटकी रास्रा गिलोय कुलिंजन.

(३ रुग्दाहका लक्षण)–बकवादकरे संताप अतिमोह दाह पेढोमी बहोत प्यास श्वास काश हिचकी शिथलपणा चक्कर भ्रांति गलाहिडकी टोडी गरदनमें दरद इसकी मुद्दत २० दिनकी है येभी असाध्य है.

+ सन्निपातका ११ भेद भावकारोंने लिखे हैं [illegible] १४ [illegible] सन्निपात लिखा है, सो हमने [illegible] देखकी लिखा है, इसमें [illegible] बहुत [illegible] है, [illegible] इनके इलाज भी लिखे हैं, [illegible] है, [illegible] मरता है, इन दोनोंके [illegible] आयुर्वेदमें [illegible] है, संधिक १ तंद्रिक २ विभ्रम ३ कर्णक ४ जिह्वक ५ कंठकुब्ज ६ [illegible] है, बाकी ८ असाध्य है, [illegible] इलाज लिखा है, [illegible] है, [illegible]

(८) नं० ५७०) वाला मिक्श्चर पहली खुराकमें पसीना लाणे वास्ते दिनमें तीनवखत देणा पसीना आके बुखार बंध होणेसें मिक्श्चर बंध करणा.

(९) पसीना लाणेकूं इकेले गरम पाणीमें अथवा निमकया राईका आटा डाले भये पाणीमें थोडे मिनटतक रोगीके पांवडु बाणा पीछे पूंछकर ओढायकर विछोणेमें सुलाणेसें पसीना आता है.

(१० नं० ५७१) वाली मिलावटकी पुडी देणेसें भी पसीना आता है, और बुखार उतर जाता है, इसमें टार्टर एमेटिक उलटीकूं लाणेवाली है, उससे उलटी जो जादा होय तो वो नहीं डालकर एन्टीमोनियल पाउडर फक्त.

(११) बुखारके संग उलटी होती होय तो ऊपर (नं० १०) के नुसखेवाली दवा पेटमें नहीं टिके तो (नं० ५७८) वाला मिक्श्चर देणा अथवा वो दवा हाजर नहीं होय तो साजीखार २० ग्रेण खट्टे नींबूका रस ३ ड्राम और पाणी ६ औंस इ तीनोंकों मिलाकर पिलाणेसें उलटी बुखार प्यास नरम पडेगा.

(१२) बुखार उतरगये पीछे नाताकती मिटाणेकूं बुखार पीछा नहीं आवै इसवा इकेला किनाइन रोगीकी शक्ति तथा प्रकृतीके अनुसार दर टंकमें २ ग्रेनसें ५ तक देण अथवा (१३) नं० ५७४) वाला क्विनाइन मिक्श्चर देणा.

(१४ होमियोपथी इलाज)-(एकोनाईट) खूनमें जहरका असर नहीं होय तं ये दवा देणेसें नाडी धीरी पडकर पसीनेके संग बुखार उतर जाता है, मात्रा दर दो तीन २ घंटेसें दोदो बूंद एक तोला पाणीके संग पीना सख्त बुखार होय तो आधे कलाकसें पीना.

(१५ जेलिसमियम) ऊपरकी दवासें बुखार नहीं उतरे और रोगी सुस्त होगया होय तो ये दवा ऊपरकी दवा मुजबही देना.

(१६) इसके सिवाय पाचनशक्तिकी गडबड होय तो पेप्टिसिया जो रोगी बेहोस होकर पडा होय तो आर्सेनिक और मींट तथा शिर बहोत दुखता होय तो बेलाडोना देणा चहिये.

सन्निपातज्वर.

(समझ) तीनों दोषोंका कोपणा उसकूं सन्निपात त्रिदोष कहते हैं, और एसे हाल सबरोगोंके आखरीदशामें भया करता है, बुखारमें एसा होय तब बुखारका सन्निपात समझणा शास्त्रोंमें एक दोष प्रबल दो दोष कम कहां इदो दोष प्रबल एक दोष कम एसें एकोल्चणादि ५२ भेदभी दिखलाया है, तेरे दुसरे नाम धरकरके भी सन्निपात लिखे हैं, लेकिन् हम जो आगे चांदे सन्निपातका स्वरूप लिखते हैं, इनोंमें प्राये सब आजाते हैं, सन्निपात विगर भौंन नहीं चादे बोलना चलता खाला पीता क्यों नहो पूरा

(९) भुमनेत्रका लक्षण–आंख टेढी श्वास खासी नसा वकणा कंप बहरापणा मोह सोजा वगेरे मुदत ८ दिनकी है असाध्य है.

(भुम नेत्रका इलाज) दारू हलदी पटोल नागरमोथ भूींगणी कुटकी हलदी नींबकी छाल त्रिफला इनोंकी उकाली.

(१०) रक्तष्टीवीके लक्षण–मूंमेसें खून आणा बुखार उलटी प्यास मूर्छा शूल दस्त यामरोडा हिचकी पेटपर आफरा भमल जीभकाली अथवा लाल होणी आंख लाल जीभ पर चकत्ते मुदत १० दिनकी बेहोस असाध्य है.

(रक्तष्टीवीके इलाज) मोथ पद्मकाष्ट पित्तपापडा रगतचंनण मोलेठी वाला शतावर कृष्णागर कडवे नींबकी छाल इनोकी उकाली.

(११) प्रलापकका लक्षण–बकवाद कंप संताप शिरमे दर्द वडी २ बातें करणी स्वच्छतापर प्रीति दुसरेका फिकर बुद्धिकेनाशसे भई गभराट इसकी मुदत १४ दिनकी है असाध्य है.

(प्रलापकका इलाज) नागरमोथ वाला सूंठ पित्तपापडा रक्तचंनण अरडूसा इनोंकी उकाली.

(१२) जिव्हकका लक्षण–जुवानपर कांटे गूंगापणा बहरापणा ताकतका नाश खांसी संताप वगेरे मुदत १६ दिनकी हे कष्टसाध्य है.

(जिव्हकका इलाज) वच भूींगणी धमासा रास्ना गिलोय मोथ सूंठ कुटकी काकडासींगी पोकरमूल ब्राह्मी भाडंगी चिरायता अरडूसा कचूरकी उकाली.

(अभिन्यासका लक्षण) बोलचाल बंध होकर अचेत होजाणा बेचेनी बडे कष्टसे एकाध दफे बोलणा शक्ति जाते रहणी श्वास मूंपर चिकणास तेजी नींद मुदत १६ दिनोंकी है असाध्य है.

(अभिन्यासका इलाज–काकडासींगी लाल धमासा पोकरमूल भाडंगी कचूर भूींगणी इनोकी उकाली.

(१४) हारिद्रकके लक्षण—अंग नख नेत्र हाथ पाव वगेरेका रंग हलदी जैसा होजाय बुखार खांसी दस्त पेशाबभी हलदी जैसा ये सन्निपात क्वचित् २ देखणेमें आता है असाध्य है मुदत इक्कीस दिनोंकी है.

(हारिद्रकका इलाज) विशेष असाध्य है तोभी बृहत् मारंग्यादि क्वाथ देणा.

सर्व सन्निपातज्वरका सामान्य इलाज.

सन्निपात अथवा त्रिदोषके साधारण लक्षण विद्वान वैद्य और डाक्टर सहजमें जाण· सकते हैं मुसलभीनी इलाजोमें दोयही भेद सन्निपातोंके माने हैं, सरसाम १ बोहरान २ रातदिनके अभ्यासी, विगर पढे भी मृत्युके निशाण बहोतसी बखत बता देते हैं, मतलब

(रुग्दाहका इलाज) वाला रगतचंनण नेतरवाला दाख आंवला [॥ उकालीकर पिलाना.

(४) चित्तविभ्रम लक्षण) चित्तभ्रमित वने धतूराखाने जैसी अवस्था हो ... व्याकुलपणा आंखोंमें विकलपणा रोनेलगे हसनेलगे गावे नाचे और वकवाद करे इसकी मुदत २४ दिनकी है वाजेकूं वर्षोंतक रहता है.

(चित्तविभ्रमका इलाज) मोलेठी नखला शेमल पीपर अर्जुन वृक्ष (सादड) छाल जटामासी रगतचंनणका काढा.

(५) शीतांगका लक्षण वदन वरफ जैसा ठंढा पड जाणा कांपणा श्वास हिचकी सब अंग शिथिल शोष मनकूं संताप खासी दस्त उलटी अवाज खोखरी इसकी मुदत १५ दिनोकी है असाध्य है.

(शीतांगका इलाज) आककी जड जीरा सूंठ मिरच । पींपर भारंगी भूरींगणी काकडासींगी पोकर मूल नहीं तो एरंडीकी जड गोमूत्रमे उकाली करणी.

(६) तंद्रिकका लक्षण–मींटरहै. आंख कम खोले बुखार कफ प्यास जुवान काली जाडी और कांटोसें व्याप्त दस्त श्वास दाह कानोमें बहरास गलेमे सोजा सो जाड़ावोहे निद्रा वगेरे मुदत २५ दिनोंकी कष्ट साध्य है.

(तंद्रिकका इलाज) भारंगमूल गिलोय मोथ भूरींगणी हरडे पोकरमूल इसकी उकाली.

(७) कंठकुब्जका लक्षण–शिरमे दर्द गलेमें कांटे दाह बेशुद्धि कंप बुखार वकवाद वातरक्तकी पीडा मूर्छा मुदत १३ दिनकी कष्टसाध्य है.

(कंठकुब्जका इलाज) काकडाशींगी चित्रक हरडे अरडूसा कचूर चिरयता भाडंगी भूरींगणी पोकरमूल नागरमोथ कूडा छाल कुटकी हलदी आमले देवदारू वहेडा चव्य सूंठ पींपर कायफल इसकी उकाली.

(८) कर्णकके लक्षण–कानकी जडमें सोजा वहोत वेदना बहरापण हांफणी वकवाद संताप ज्वरवगेरे ज्वर आतेही उठे तो असाध्य, ज्वरके मध्यमें उठे तो कष्टसाध्य अंतमे उठे तो साध्य मुदत तीन महेनेकी है कष्टसाध्य.

(९) कर्णकका इलाज–वहोत सूं सूजगया होय पका नहीं होय तव घी पिलाणा ४ दिन वादशक्ति मुजब कानके नीचे जोक लगाकर खून निकलवाणा अथवा ये लेप करणा राखा सूंठ बीजोरेकी जड चित्रक दारू हलदी अरणी इससें सूजन उतर जाती है साधारण कानके नीचे वचोंके सोजन आजाती है, जिसपर मुलतानी मटी राख निमकका लेपकरणा रास्ना आसगंध नागरमोथ दोनोंजातकी भूरींगणी भाडंगी काकडासींगी हरडे वच पोकरमूल कुटकीकी उकाली देनी.

(९) भुग्ननेत्रका लक्षण–आंख टेढी श्वास खासी नसा चकणा कंप बहरापणा मोह होजा वगेरे मुदत ८ दिनकी है असाध्य है.

(भुग्न नेत्रका इलाज) दारू हलदी पटोल नागरमोथ भूरींगणी कुटकी हलदी नींबकी छाल त्रिफला इनोंकी उकाली.

(१०) रक्तष्टीवीके लक्षण–मूंमेसें खून आणा बुखार उलटी प्यास मूर्छा शूल दस्त यामरोडा हिचकी पेटपर आफरा भमल जीभकाली अथवा लाल होणी आंख लाल जीभ पर चकत्ते मुदत १० दिनकी बेहोस असाध्य है.

(रक्तष्टीवीके इलाज) मोथ पद्मकाष्ट पित्तपापडा रगतचंनण मोलेठी वाला शतावर कृष्णागर कडवे नींबकी छाल इनोंकी उकाली.

(११) प्रलापकका लक्षण–बकवाद कंप संताप शिरमे दर्द बडी २ बातें करणी स्वच्छतापर प्रीति दुसरेका फिकर बुद्धिकेनाशसे भई गभराट इसकी मुदत १४ दिनकी है असाध्य है.

(प्रलापकका इलाज) नागरमोथ वाला सूंठ पित्तपापडा रक्तचंनण अरडूसा इनोंकी उकाली.

(१२) जिव्हकका लक्षण–जुवानपर कांटे गूंगापणा बहरापणा ताकतका नाश खांसी संताप वगेरे मुदत १६ दिनकी है कष्टसाध्य है.

(जिव्हकका इलाज) वच भूरींगणी धमासा रास्ना गिलोय मोथ सूंठ कुटकी काकडासींगी पोकरमूल भार्ङी भाडंगी चिरायता अरडूसा कचूरकी उकाली.

(अभिन्यासका लक्षण) बोलचाल बंध होकर अचेत होजाणा बेचेनी बडे कष्टसे एकाध दफे बोलणा शक्ति जाते रहणी श्वास मूंपर चिकनास तेजी नींद मुदत १६ दिनोंकी है असाध्य है.

(अभिन्यासका इलाज–काकडासींगी लाल धमासा पोकरमूल भाडंगी कचूर भूरींगणी इनोंकी उकाली.

(१४) हारिद्रकके लक्षण—अंग नख नेत्र हाथ पाव वगेरेका रंग हल्दी जेसा होजाय बुखार खांसी दस्त पेशावभी हलदी जेसा ये सन्निपात क्वचित् २ देखणेमें आता है असाध्य है मुदत इकीस दिनोंकी है.

(हारिद्रकका इलाज) विशेष असाध्य है तोभी बृहत् भारंग्यादि काथ देणा.

सर्व सन्निपातज्वरका सामान्य इलाज.

सन्निपात अथवा त्रिदोषके साधारण लक्षण विद्वान वैद्य और डाक्टर सहजमें जान सकते हैं मुसलमीनी इलाजोंमें दोयही भेद सन्निपातोंके माने हैं, सरसाम १ बोहरान २ रातदिनके अभ्यासी, विगर पढे भी रसुके निदान दरोनमीं बखन बना देते हैं, मतलब

जोजामें निशदिन रहत, सोतामें परधीन, इसवास्ते लेकिन ये किस जातका सन्निपात है. एसानांग पूरा पतलाते तो, अछे २ चतुर वैद्योकों भी पूराविचार पडता है, इस्तान वो सन्निपातका करके अदमीकूं पचाता है, उस पुन्यवंत वैद्यकी तारीफ लिखनेमें कलमकी ताकत नहीं रोगी तनमन धन सर्वस्व उस वैद्यकूं देतो भी उस वैद्यका पदला नहीं ऊतरता इसवास्ते सन्निपातके सामान्य इलाजोंका आश्रय लेणा सबोंके लिये फायदा पंद है, सो लिखते हैं.

(१ अभयादि काथ (नं० १९५) पित्तकी अधिकतावाले सन्निपातमें पहोत फा है जिस सन्निपातमें जादा दस्त होता होय कफका जोर होय श्वास शूलका उपद्रव हो उसमें इस काथके पदले ये काथ देणा.

(२) बृहत् भांर्ग्यादि काथ (नं० १९७) वात कफकी अधिकतावाले ज्वर तथा सन्निपातमें दस्त जादा होता होयतो तया कफ शूल वगेरे उपद्रव होता हो उसमें ये काथ जादा फायदा करता है.

(३) दशमूल (नं० ९७) पीपरका चूर्ण डालके पीणा इसही काथमें पीपरव चूर्ण तथा एरंडीकी जड मिला उकालीकर पिलाणेसे द्वादशांग कहाता है, इस दशमूलं चिरायता मोथ गिलोय सूंठ मिलाणेंसे चतुर्दशांग काथ कहलाता है, और उसमें कच्च काकडासींगी एरंडीकी जड धमासा गाडंगी इंद्रजव पटोल तथा कुटकी ये आठ मिलाणें अष्टादशांग काथ होता है, ये सब काथ सन्निपातज्वरमें फायदा पंद है.

(४) दुसरा अष्टादशांग काथ)–दशमूल चिरायता देवदार सूंठ मोथ कुटकी इंद्रजव धाणा गजपीपर ये तीनो दोषोंके सन्निपातमें फायदे पंद है.

(५ ग्रंथ्यादि काथ)–पीपरामूल इंद्रजव देवदारु गूगल वायविडंग भारंगी जल भांगरा त्रिकटु चित्रक कायफल पोकरमूल रास्ना हरडे दोनो रींगनी अजवाण संभाल चिरायता वच चव्य.

(सूचना)–सन्निपातज्वरमें रोगीके दोषका पाचन होता है, तभी अराम मलपाकी होता है रोगी होसमें आता है, दोषका जोर कम होता है, तब आराम होणेकी मुदत ७।१०। या १२ दिनकी समझणी जो दोष अधिक होय तो मुदत १४।२०। या २४ दिनकी समझणा मतलब सन्निपातज्वरमें बहोत गडबडकर आप या मूरखसें इलाज नहीं कराणा बहोत धीर जसें या विचक्षण वैद्यसें परिक्षा कराकर षड्गुण गंधक हेमगर्भ, मकरध्वज, कालकूट, अमृतसंजीविनी, आदि बडे २ अछेरस पानके अद्रकके रसमें, या सूंठमें, या लोंगमे, तुलछीके पत्तोंके रसमें, जुबान बंध होय तो सहजणेकी छालके रसमें ... करके या असल अंबर कस्तूरीके संग पेटमें मात्रा देकर ऊपरसें ऊपर लिखी ... देणा, राईका, लसणका पलाष्टर, पींडीपर, तालवेपर. छातीपर मारणा तेजनस्य

देणी तेज अंजन आंखोंमें करणा, वगरेके पत्तोंका रस कानमें डालणा तालवेके बाल, उस्तरेसे दूरकर सूचीभरण रस मसलणा गरमपाणीमें कमरतक पहले लिखे मुजब विठलाणा, साधरण रसोंमें माही मोहरा त्रिपुरभैरव आनंदभैरव अमरसुंदरी आदिभी सामान्य दोषमें काम देसकती है, + सन्निपात पडा आयेबाद एक महीनेतक हुसियारीके साथ पथ्य दवासें वरतणा सोलेसेर जलका १ सेर जल दस्त उलटी प्यासमें सन्निपातमें उकालाभया सोमाग्राकी १ मात्रा है, लेकिन् और खाणेपीणेकूं जहांतक मल शुद्ध होय नहीं होस आवै नहीं सब इंद्रियें निर्मल होय नहीं उहांतक नहीं देणा इसपर उत्कृष्ट १२ लंघन जरूर करवा देणा फकत ऊपर लिखें जल और दवाके आसरेपर, बाद मूंगकी दालका, या तूरकी दालका पाणी, कडक भूख लगणेपर, भात मिलाय पचीसदिन बाद देशकी खुराक मुजब देणा रोटी और घी महीनेबाद देणा, कर्णक तीनमहीनेका होता है, उसका ख्याल उहांतक रखना, पहिली सन्निपातीकूं खाणेकूं देणा जहरतुल्य है, दूध दियातो निश्चै मरेगा सन्निपातका इलाज देशी पूर्णविद्वानटाल औरसें वचके रहणा, यूनानीमें जवाहरमोरा, भी अच्छा है, मगर जादा दाम माफक काम है, सन्निपात है, सो काल है, इसमें धीरज रखकर इलाज करवाणा शक्रस्मरणका पाठ, या चौदेस्मरणका, या दोषापहार स्तोत्रका पाठ पुन्यदान जिनेश्वरदेवकी शिवपूजा करणी.

आगंतुकज्वर.

(कारण)–शस्त्र लकडी आदिकी चोट काम भय क्रोध वगेरे बाहरके कारण वदनपर असरकर बुखारकूं पैदाकरता है, वो आगंतुकज्वर कहलाता है, अयोग्य आहार विहारसे बिगडी मई वायु होजरीमें जाकर अंदरकी अग्निकूं बिगाड रस तथा खूनमें मिलके बुखारकूं पैदा करता है, एसे अहवाल सब तरेके बुखारकूं लागू नहीं पडते क्योंके बुखार दोतरेका है, शारीरिक स्वतंत्र आगंतुक परतंत्र उसमें ऊपर लिखे हाल पहले प्रकारके बुखारमें होते हैं, पहिले प्रकारमें पहली दोषका कोप होकर फेर ज्वर पैदा होता है, दुसरे प्रकारमें पहिली बुखार चढे पीछे दोषका कोप होता हैं, जैसेंके काम शोक तथा डरसें चढेज्वरमें पित्तका कोप होता है, और भूतादिकके प्रतिबिंबके बुखारमें आवेशसें तीनों दोषोंका कोप होता है.

(प्रकार तथा लक्षण)(१) विषमज्वरके लक्षण–जहर खानेसें चढे बुखारमें रोगीका

+ माही २ रुपे तोला गोलियें कस्तूरी लोहमार अभ्रकवी बनाइ असल हमारे इहा हरवखत तइयार मुल्कोंमे मशहूर है, दुयमदरजे १ भी रुपेभर है, अमरसुंदरी २ रुपे तोला है, आनंदभैरव २ रुपेतोला मोहरेकी ह १ भर है, सर्व वादीपर समीर गजकेशरी २ रुपे १ भर है, स्वर्णवसन्त छुटकर २ रुपे मासाएकटी २० रुपे तोला लोहमार १२)८)४) तक १ भर है, रुपेभर १०।२०। दो मकरोदय १०० तोला बाकी पत्र देनेसे लिख सकते हैं ॥ बडे बडे रस तयार हैं

मूं काला पडजाय सुइचुभाणे कैसी पीडा होय अन्नपर अरुचि प्यास मूर्छा होती है, स्थावर विषमें दस्त होता है, क्योंके जहर नीचेकों गती करता है, उलटीभी होती है, सोमलादिकमें.

(२) औषधी गंधजन्यज्वर–किसी तेज खराब बदबोवाली वनस्पतीकी खशबोसें चढेज्वरमें मूर्छा शिरमे दर्द तथा कैहोती है.

(३) कामज्वर–इच्छित स्त्री अथवा पुरुषकी प्राप्ति नहीं होनेसें जो ज्वर पैदा होता है, उसकूं कामज्वर कहते हैं, इसमें चित्तविभ्रम गींट आलस छातीमें दरद अरुचि कर-डके मोडणे गलहत्था देकर फिकर करना किसीकी कही बात अछी नहीं लगणी और बदनका सूकणा मूंपर पसीना निसासे डालने आदि चिन्ह होते हैं.

(४) भयज्वर–डरसें बुखार चढे उसमें बकवाद बहोत करता है.

(५) क्रोधज्वर–गुस्सा आणेसे चढे ज्वरमें कांपणी मूं कडवा होता है.

(६) भूताभिषंगज्वर–में उद्वेग हसे गावे नाचे कांपे तथा अचिंत्यशक्ती इसके शिवाय (क्षतज्वर) बदनमें घाव पडनेसें चढे बुखार, दाहज्वर, थकेलेका ज्वर, बदनका कोइभाग कटणेसें चढे सो छेदज्वर, वगेरे आगंतुकज्वरमें, बहोत कारणोंका समावेश होता है, नीचे मुजब इलाज करणा.

(१) जहरका, तथा औषधीगंधकेज्वरमे, पित्तशमन होय एसा इलाज करणा, तज तमालपत्र इलायची नागकेशर कबाबचीणी अगर केशर लौंग इत्यादि सब थोडे सुगंधी पदार्थ लेकर काथ करके देणा.

(२) कामसें भये ज्वरमे, वाला कमल, चंदन नेत्रवाला तज धाणा जटामासी वगेरे ठंढे पदार्थोंकी उकाली ठंढा लेप तथा इच्छित वस्तुकी प्राप्ती.

(३) क्रोध, भय, शोक, वगेरे मानसिक विकारोके बुखारोंमें, उसके कारण दूर करणा, दिलासा देना इच्छितवस्तु मिलणा, पित्तकूं शमाणेवाले शांत उपचार, आहार, तेसें बाहर उपचार करनेसें मिटता है.

(४) चोट, श्रम, रस्ते चलनेका थकेला गिरजाणा वगेरेके बुखारमें पहली दूधभात खाने देना, रस्ते चलणेके ज्वरमें तेलका मालिस, और नींद लेने देना.

(५) आगंतुकज्वरवालेकूं लंघन करणा नहीं, चिकणा तरावटवाला पित्तशामक ठंढा भोजन कराणा मनकूं शांतकरवाणा इन बातोंसें बुखार नरम पडता है.

विषमज्वर.

(कारण) एकवखत आयेभये बुखारके दोषोंका शास्त्रकी रीतविगरसें निवारण किये दवा जैसें किनाइन वगेरेसें बुखारकूं दवा देणेसें उसकी लिंगस नहीं जाती तब १८ धातुओंमें छिपकर रहता है तब अहित आहार विहारसें दोष कोप पाकर बुखारकूं

पीछे प्रगट करता हैं, और वो विषमज्वर कहलाता है, खराब हवा वगेरे दुसरे कारणोंसें भी सरुआतमें विषमज्वरकी पैदास है.

(लक्षण) विषमज्वरका कोई मुकरर वखतन हीं है, उसमे ठंडी गरमीकाभी नियम नहीं है, उसके वेगकाभी तादाद नहीं है, किसी वखत थोडा किसी वखत जादा रहता है, उसमे ठंड किसी वखत गरमी लगके चढता है, किसी वखत जादा जोरसें किसी वखत कमजोरसें इस बुखारमें जादा तर पित्तका कोप होता है.

(भेद) विषमज्वरका पांच भेद है, १ संतत २ सतत ३ अन्येद्युष्क एकांतर, तेजरा ४ चोथिया ५.

(१) कितनेक दिनोंतक अणउतार एक सदृश रहणेवाला बुखारकूं संतत कहते हैं, वात ७ दिन पित्त १० दिन कफ १२ दिन दोषके ताकत मुजब रहकर पीछे उतरकर फेर बहोत दिनोंतक आते रहता है, ये बुखार बदनके रस धातूमें रहता है, एसी शास्त्रकी आज्ञा है.

(२) सतत-१२ घंटेके अंतरसे आणेवाला तैसें दिनमें और रातमें दोवखत बुखार आवे वो सतत कहलाता है, इस बुखारका दोष खून धातूमें रहता है.

(३) एकांतरा-(हमेसांका) २४ घंटेके अंतरसे आता है, दररोज एक वेर बुखार चढे और उतरे ये बुखार मांस धातूमें रहता है.

(४) तेजरा-४८ घंटेके अंतरसें आता है, विचमें एकदिन नहीं आता इसकूं तेजरा कहते हैं, केइ एकांतर कहते हैं, ये मेद धातूमें दोष रहता है.

(५) चोथिया-७२ घंटेसे ये बुखार आता है, विचमें दो दिन नहीं आता पीछे तीसरे दिन आता है, पहिले दिनकी अपेक्षा चोथिया कहलाता है, इसका दोष हाड धातूमें रहता है, तथा मज्जा धातूमें रहता है, दोषजुदे २ धातूका आश्रय लेकर रहणेसें रसगत रक्तगत इत्यादि नामोंसे वैद्य कहते हैं, इस अनुक्रमसें हाड तथा मज्जामें गया भया चोथियाज्वर जादा भयंकर है, अगर जो दोष वीर्यमें पोहचता है, तो जरूर प्राणी मर जाता है, अब विषमज्वरोंका सामान्य जुदे २ इलाज लिखते हैं.

देशी इलाज.

(१) संततज्वर-पटोल इंद्रजव देवदारु गिलोय नींबकी छाल.

(२) सततज्वर-त्रायमाण कुटकी धमासा उपलसिरी.

(३) एकांतर-दाख पटोल कडवानींब मोथ इंद्रजव त्रिफला.

(४) तेजरा-वाला रगतचंनण मोथगिलोय धाणा सूंठ सहतमिश्री.

(५) चोथिया-अरडूसा आंवला सालवण देवदारु जोहरड सूंठ सहत और मिश्री मिलाकर.

सामान्यइलाज (६) दोजातकी रींगणी सूंठ धाणा देवदारू ये क्राथ पाचन इसवास्ते विषम तथा सबतरेके ज्वरोमें पहिली देणा चहिये.

(७) पटोलादि क्वाथ (नं० २०७) सबतरेकें विषमज्वर तेसें दाहज्वर नवीनज्वर वगेरे तमाममें अच्छा फायदा करता है.

(८) भारंग्यादि क्वाथ (नं० १९६) सबतरेके विषमज्वरकूं फायदा चंद है.

(९) मुस्तादि क्वाथ—मोथ भुरींगणी गिलोय सूंठ आंवला इन पांचोंकी उका ठंढीकर सहत पींपरका चूर्ण डालकर पिलाणा.

(१०) ज्वरांकुश—बुखार आतेकूं रोकणे वास्ते तथा ठंढ लगतीकूं मिटाणे वा छोटा ज्वरांकुश (शुद्धपारा गंधक बछनाग सूंठ मिरच पीपर ये सब एकेक भाग शु किये धतूरेके बीज दोभाग इनोंमें प्रथम पारे गंधकी कजलीकर बाकी ४ कूं कपडछांण सबोंकों मिलाकर नींबूके रसमें खूब खरलकर (२) दोरत्तीकी गोलियें बणाणी ये गोली तथा (२) पाणीमें या आदेके रशमें या सूंठकें पाणीमें बुखार ठंढ लगणेके पहिले दे बुखार या ठंढतो बिलकुल बंध होजाता है, ठंढके बुखारमें ये गोली क्विनाइनसें जादे फायदेबंद है.

(११) अमृतामोदक (नं० ६७) बेर २ उलटकर आणेवाले धातुगत जीर्णज्व विषमज्वर जब कोई भी दवासें शरीरकूं छोडता नहीं तब इस मोदकका सेवन बखतस करणेसें निश्चे जाता है.

(१२) छुटकर इलाज—चोथिया तथा तेजरे बुखारमें अगस्तके पत्तोका रस अथ सूकेपत्ते पीस कपड छाणकर सुंघाणा अथवा पुराणे घीमें हींग पीसकर सुंघाणा स विषमज्वरोंमें नीचे लिखे उपाय सब अच्छे हैं, खपाटकी जड तथा सूंठका काढा ए रुपेभर काला जीरीकूं जरा सेककर एक रुपियेभर गुडमिलाकर खाणा काली मिरच तुल शीकेपत्ते घोटकर पीणा कालीजीरी तथा गुडमें थोडी कालीमिरच डालकर खाना स जीरा तथा गुड गरमपाणीमें अथवा पुराणे सहतमें अथवा जाडी छाछमें पीणेसे ठंढ बुखार उतरजाता है, अथवा कांकचियाके बीज शेके भये दोभाग और मिरच एकभा इसका चूर्णकर टंकमें तीनमासा चूर्ण पाणीसें फाकणा, इकेली नींबकी अंतरछाल अथवा चिरायतेका पत्ता, रातकूं भिगाकर फजरमें थोडी मिश्रीमिलाय, काली पीणेसें, ठंढके बुखारमें बहोत फायदा करता है, (नं० ६९२) ६९३) वा के ठंढके बुखारपर बहोत फायदे मंद है.

देशी इलाजोमें) वनस्पतीके क्वाथ देणेमें सबतरेका निडररस्ता है, तथा साधन और धर्मरक्षणता है. क्योंके सबतरेके काढे बुखार होय चाहे नहींभी होय तोभी हरवखत देसकते हैं, फेर उसमें मलका पाचन होय दस्तभी आता है, इसवास्ते दस्तके खुलासा

वास्ते अलग जुलाब देणेकी जरूरी नहीं रहती धर्मरक्षा तो प्रगटही है, लिखणेकी जरूरी क्या है.

(अंग्रेजी इलाज)—विमज्वर ऊपर लिखे मुजबका होय अंग्रेजीदवा खाणेवालोंनें अजमाणा चाहिये.

(१) बुखार चढा होय तब देणेका इलाज (नं० ५७०) ५७१ की मिलावटकी योग्यलगे उसका उपयोग करणा.

(२) पसीना आयगये पीछे देणेके मिक्चरो नं० ६७४–७५ मेंसें योग्य लगे सो.

(३) पित्तका जोर जादा होय उलटी होती होय तो नं० ६७८ का मिक्चर देणा.

(४) बुखारकी वारी आणेके पहिली अटकाणेकूं किनाइन सबसे उत्तम मांनते है, लेकिन् जहांतक बणे इसकीमात्रा बहोत कमही देणी क्योंके ये जादा मात्रासें बुखारकूं तो उतारता है, लेकिन् दुसरी बहोत खराबियां करता है, दाह धातुजाणा पांडू भ्रमआदि अनेक रोगोंका कारण बणजाता है, बहोतसें डाकटरलोक हठमें आकर किनाइन धकेलते इजाते हैं, लेकिन् उसका परिणाम एकंदर ठीक नही आता.

होमियोपथिक इलाज एकंतरादि ठंढके बुखार ऊपर इस मुजब.

(१) एकोनाइट–सख्त बुखारकी गरमी कम करणेकूं इसके जैसी एकभी दवा नहीं है, दर दोदो घंटेसे देणा.

(१) आर्सेनिक–जब ठंढविगर बुखार आवै अथवा पसीना आयेविगर ऊतर जावै तब ये दवा उपयोगी है, बुखार नहीं होय उसवखत तथा फेर बुखार नहीं आवै उसकूं रोकणेकूं किनाइन सर्वोत्तम इलाज है, लेकिन बुखार जब पुराणा होय और किनाइन जब असर नहीं करे तब ये देणा मात्रा ०॥ बाल दिनमें चार वखत.

(२) आईपीक्याक–बुखारकेसंग मोल उलटी श्वास पाणी जैसे दस्त वगेरे उपद्रव होय तब ये दवा देणी मात्रा दोदो बूंद पाणीमें डाल चारवेर देना.

(३) नकसवोमिका–दस्तकबज होय और किनाइन दिये पीछेभी फायदा नहीं होय तो ये दवा देनी मात्रा दो बूंद थोडे पाणीकेसंग दिनमें ४ वखत.

संततज्वर-रिमिटंट फीवर.

(कारण) विषमज्वरका कारण ये संततज्वरही है, पहली संक्षेपसें उसके लक्षण तथा उपाय लिखा है, वो मेलेरियाकी जहरी हवामेंसे पैदा होता है, और विषमज्वर दुसरे भेदोंसे ये बुखार बहोत सख्त होता है.

(लक्षण) ७।१० या १२ दिनोंतक एक सरीखा आया करता है, कोईभी वखत उतरता नहीं ये तीनों दोषोंके कोपणेसें आता है, इस बुखारकी शरुआतमें पाचनक्रियाकी

अव्यवस्था बेचेनी शिरता तथा शिरमे दर्द वगेरे लक्षण मालम देते हैं, टंढकी चमकारी इतनी तो थोडी आती है, सो टंढ चढणेकी खपरतक नहीं पडती और एकदम गर्मी भर जाती है, चमडीमें दाद उलटी शिरमे दर्द नींद नहीं आणा मींटभी होजाती है अंतरिया बुखारमें बुखारका चढणा उतरणा प्रगट मालम देता और इसमें मालम नहीं देता क्योंके पहिले प्रकारका तप तो बिलकुल उतर जाता है, और इसमें उतरता नहीं लेकिन् कुछएक कम होय अथवा बहोत थोडा कम होणेमें इतनी खबर नहीं पडनीके कब जादाभया और कम कमगया वो समझ जाहिरमें थरमोमिटर ठीक देती है, इस बुखारकी स्थिती है, पहली स्थितिमें थोडे २ अंतरसें ऊपरा ऊपरी बुखारकी चढ ऊतार होती है, और पीछें दुसरी स्थितीमें बुखारकी भरती आसरे आठ२घंटेतक रहती है, उसवखत चमडी बहोत गरम रहती है, नाडी बहोत जलदी चलती है, श्वासोश्वास बहोत जोरसें चलता है, और मनकूं चैन नहीं होता बुखारकी गरमी (१०४) उससेंभी आगे किसी वखत १०५, १०६ और १०७ तकभी चढ जाती है, आठदशघंटे पीछे कुछ नरम पडता है, थोडा पसीना आता है, बुखारकी गरमी बहोत होणेसें इसकेसंग खासी लीवरका वरम पाचन क्रियाकी गडबड अतीसार मरोडा होजाता है, और बहोत करके ७ में १० में दिन मींट अथवा सन्निपातका लक्षण दिखणेलगता है, अच्छीतरे इलाज नहीं होणेके सबब २१ दिनतक ये बुखार चलता है.

(इलाज) संतत अथवा रिमिटंटफीवर बहोत भयंकर बुखार होता है, इसवास्ते आप घरतरीके अच्छीतरे नहीं समझ सके तो कुशल वैद्य या डाकटरका इलाज करवाणा सख्त और भयंकर बुखारमें रोगी ७ सें १२ दिनके अंदर मरजाता है, और जादादिन ठहरता है, तो गंभीर स्वरूप पकडता है, इस बुखारका मुख्य इलाज ये है, बुखारकी टेम्परेचर (गरमी) जैसें बणें तैसें कमती रखणी नहीं तो एकदम खूनका जोस चढके मगजमें सोजा आता है, तंद्रा और त्रिदोष होजाता है, देशी इलाज तो पहिले लिखाहीहै.

(अंगरेजी इलाज) (१) उलटीका उछाला होय तो इपीकाक्यु आन्हाचूर्ण ग्रेन (२०) एक औंस पाणीमें देणा पाव घंटे पीछे गरम जल पिलाणा उससें उलटी होकर पित्त निकल जायगा बुखार कम पडेगा होजरीपर राईका पलाष्टर मारणेसेंभी कै होती है.

(२) बुखारमें प्यास इसमें बहोत लगती है, सोडाबोटर लेमोनेड वगेरे देणा बरफ चूसाणा अथवा बरफ डालाभया पाणी या दूध देते हैं.

(३) एन्टीपाईरीन एन्टीफीब्रीन और फीनासी टीन ये दवाये बुखारकूं एकदम उतार देती है, लेकिन् वो देते वखत बहोत सावधान रहणा क्योंके शक्ति उपरांत दिये जाय तो हिर्दयका काम अटककर प्राणी मरजाता है, इसवास्ते एसी दवा पूरे अनुभव विगर वरतणेकी परवानगी नहीं दिये जाती [illegible] एधजीमें रत्नगीरी नामकी देशी

उत्तम कीमती दवा है, उसमे कोइकिस्मका डर नहीं मिले तो इसका उपयोग करणा (रत्नगिरी एकदम बुखारकूं उतारती है, पसीना लाती है.

(४) शिरपर (नं० ३१२) वाले लेपमें कपडा भिगाकर कपालपर धरणा बरफ धरते हैं, अथवा एसा कोईभी ठंढा दुसरा इलाज करणा जिससें शिरमें गरमी चढे नहीं.

(५) बुखारकी गरमी जादा होय तो और पसीना नहीं आता होय तो गरम पाणीमें कपडा भिगाकर बदनपर लगाणा गरम जलमे पांव डुबाणा अथवा खूब गरम पाणीमें गरम ऊनकी धावली डुबाकर निचोड बदनपर लपेटना और रोगीकूं सुला देणा और उसपर दुसरी धावली ओढाणी.

(६) पसीना लानेकूं (नं० ५७०) वालामिक्श्चर सरू रखणा इकेला टिंकचर एकोनाईट दोदो बूंद पाणीकेसंग देणेसें बुखारकूं नरम करता है.

(७) बुखार नरम पडे पीछे (नं० ५७४ वाला) किनाइनमिक्श्चर देणा बुखार में किनाइन देणा अच्छा नहीं है, तोभी बुखार उतरे पीछे थोडी २ मात्रा किनाइन देनेसें नुकशान नहीं है.

(९) इसबुखारमें जो कलेजेमें खूनका जमाव भया होय एसा मालुम देतो क्या-लोमेल ग्रेन ५ तथा कम्पाउन्ड जालप ग्रेन ४० देणेसें अच्छादस्त लगता है, दरदी शक्तिवान् होय तो जोकलगाणा कलेजेका तेसें फेफसेके बरममें राईका पलाष्टर तथा शेक फायदा करता है.

(होमियोपथीक इलाज)–विषमज्वरमें दिया है वोही इसमें जाणना.

जीर्णज्वर.

(कारण)–जीर्णज्वर ये कोई खास कारणका नया बुखार नहीं है, नया बुखार नरम पडे पीछे जो कितनेक दिनोंबाद अर्थात् २१ दिनोंबाद जो मंदवेगसें बुखार बदनमें रहजाता है, उसकूं जीर्णज्वर कहते हैं, ये बुखार ज्योंज्यों पुराणा होता है, त्यों त्यों मंदवेगवाला होता है, हाडज्वर भी इसे कहते हैं.

(लक्षण) बुखारका वेग मंद बदनमें रूखापणा चमडीपर सूजन योयर अंगोमें जकडपणा तथा कफ ये क्रम २ से लक्षण बढते २ जीर्णज्वर कष्टसाध्य होजाता है.

(इलाज (१) गिलोयका काढाकर उसमें छोटीपींपरका चूर्ण अथवा सहत मिला कितनेकदिन पीनेसें जीर्णज्वर मिटता है.

(२) खासी श्वास पीनसरोग तथा अरुचिके संग जीर्णज्वरमें गिलोयके संग भूंगिणी तथा संठछाल इसका काढा पीपरका चूर्ण मिलाकर पीनेमें फायदा करता है.

(३) अमृतामोदक (नं० ५७) उसका बहोतदिन सेवनकरनेमें हाडतक पोहचा भया कष्टसाध्य और असाध्य जीर्णज्वरभी मिटजाता है.

(४) हरीगिलोयकूं पाणीमें पीस उसका रस निचोडकर पीपर छोटी तथा ... मिलाय पीनेसे जीर्णज्वर कफ खासी तिली और अरुचि मिटती है.

(५) दोभाग गुड और एक भाग लींडीपीपरका चूर्ण मिलाकर इसकी गोली... खाणेसें अजीर्ण अरुचि अग्निमंदता खासी श्वास पांडु तथा शमीके संगका जीर्णज्वर मिटता है, इसीतरे लींडीपीपरकूं सहतमें चाटणेसे तथा २।३।५।७। शक्ति और ताकद मुजब रातकूं जलमें या दूधमें भिगाकर दूधमें उकालकर अथवा पीसकर गोलीपर ... ठंढा दूध पीणेसे नित्त इस मुजब वढाकर पीणेसें वो जीर्णज्वरादि अनेक रोग मिटता...

(६) आमलक्यादि चूर्ण–आंवला चित्रक हरडे पीपर सींधानिमक इस चूर्ण बुखार कफ अरुचि जाती है, दस्तसाफ आता है, अग्निदीप्त होती है.

(७) लाक्षादि तेल (नं० २९६) में लिखा है, इससें जीर्णज्वर मसलाने मिटता है, इससिवाय नारायण तैल चंदनादि तैल भी मसलनेसे वहोत फायदा है.

(८) हमारी बनाई अमृतवटी दूधके और शितोपलादि चूर्णके संग लेणेसें ... खासी अरुचि मंदाग्नि नाताकती धातुक्षीणता छाती दरद वगेरे सब मिटता है, या स्व... वशंतमालनी चोसठपहरी पीपरसंग अथवा सादे पीपर सहतसंग अथवा पीपर दूध... अथवा शितोपला दूधसंग देणा.

बुखारमें दुसरे उपद्रवोंका इलाज.

(कासज्वर)–कायफल मोथ भाडंगी धाणा चिरायता पित्तपापडा वच हरडे का... डासींगी देवदारु सूंठ इन ११ चीजोंकी उकालीसें खासी कफसमेत बुखार जाता (२) पीपर पीपरामूल इंद्रजव पित्तपापडा सूंठ इनोंका चूर्ण सहतमें.

(ज्वरातिसार) –(१) लंघन (२) सूंठ कूडाछाल मोथ गिलोय अतीसकीकली इनों... उकाली (३) कालीपाठ गिलोय पित्तपापडा मोथ सूंठ चिरायता इंद्रजव इनोंकी उकाली...

(दुर्जलज्वर)–खराब गंदा शिखरगिरि बद्रीनाथ आसाम अडंग वगेरेका पाणी लगणेसें होय सो बुखार (१) हरडे नींबके पत्ते सूंठ सींधानिमक तथाचित्रक इनो... चूर्णकर वहोतदिनोंतक सेवनकरणेसें ये बुखार मिटता है,(२) पटोल अथवा कडवीतु... मोथ गिलोय अरडूसा सूंठ धाणा चिरायता इनोका क्वाथ सहतडालकर पीणा(३) चि... यता निशोत खसवाला पीपर वायविडंग सूंठ कुटकी इनसबोंका चूर्णसहतमें चाटणा (... सूंठ जीरा तथा हरडे इनोंकी चटणीकर भोजनके पहली चटणी खाणी (५) बछना... दोभाग जलाइ कोडी पांच भाग और मिरच ९ भाग कूट आदे केरसमें घोट मूंग जित... ... फजर सांझ दोदो गोली पाणीसें लेनी आमज्वर खराब पाणीकाज्वर अजी... ... मलबंध शूल श्वास खास वगेरे सब उपद्रव उपर ये गोली देणेसें फाय... होता है.

(बुखारमें प्यास) चांदीकी गोली मूंमें चूसाणी आलूबुखारा खजूरकी गुटली चुसाणी सहतपाणीके कुरले कराणा अथवा जहरी नारेलकी गिर रुद्राछ लोंगसेकाभया सोना, मोती अधींध खरड, मूंगिया, मिले तो फालसेकी जड, और संख, इनोंको घस सीं-पणीमें धररखणा जुबानके घंटा २ से लगाणा पहरभर वाद दुसरा घसणा इससें पाणी झरा मोती झरेकीप्यास त्रिदोपकी प्यास कांटे जीभकी स्याही उलटीतक कष्टसाध्यकी मिटजाती है खुराक जितना रोगीकूं साहरा और ताकत देती है हमारी पतवाणी भई है.

(बुखारमें हिचकीका इलाज) मोरका चंदवा चार जलाकर पींपर भूणी भई जी-रा सेका भया नारेलकी जोटी जलाई भई रेसमका कूचा या कपडा या अब रेसम, रेसमके कीडोंका पिछला भाग रहासो जलाया भया, पोदीना, कमलगट्टेके अंदरकी हरियाई इन सबोंको पीस सहतमें या अनारके शरबतमें नहीं तो मिश्रीकी चासणीमें उलटी होतेइ चटाणा चटाये वाद फेर घंटा २ से चटाणा इससें उलटी छर्दि त्रिदोपकीभी बंध हो जाती है (२) अथवा मखीका हूंगार सहतमें चटाणा ३ भुजाकी दोनो नस खेंचके धांधणी ४ (धूम्रपान) नारेलकी चोटी हलदी काली मिरच उडद मोरके चंदेका कराणा ५ नीलेथोथेकी भस्मी या ताम्रभस्म पींपरसंग चटाणा.

(बुखारमें श्वास) दोनों भूरींगणी धमासा कडवीतोरी, अथवा पटोल काकडासींगी भाडंगी कुटकी कचूर इंद्रजव इनोंकी उकाली (२) लींडी पीपर कायफल काकडासींगी इन तीनोंका चूर्ण सहतमें चाटणा.

(बुखारमें मूर्छा) (१) आदेका रस सुंघाणा (२) सहत सींधानिमक मन-शिल और काली मिरचकूं महीन पीस उसका आंखमें अंजन करणा (३ ठंढा पाणी आंखपर छांटणा (४) सुगंध धूप देणा पंखेकी हवा देणी.

(बुखारमें अरुचि) (१) आदेका रस जरा गरमकर उसमें सींधानिमक डाल थोडा चाटणा (२) बीजोरेके फलके अंदरकी कलियां सींधा निमक मिला मूंमें रखणा.

(बुखारमें उलटी) (१) गिलोयका क्वाथ ठंढा कर मिश्री तथा सहत डालकर पीणा (२) पित्तपापडेका हिम मिश्री डालकर पीणा (३) आंवला दाख तथा मि-श्रीका पाणी (४) दाख चंदन वाला मोथ मोलेठी तथा धाणा ये सब चीजों अथवा इनमेंकी जो मिले उसकूं भीगाकर पीसकर उसका पाणी पीणा (५) नींबकी अंतर छालका पाणी मिश्रीडाल पीणा.

(बुखारमें दाह) (१) उलटीके कितने एक इलाज दाहकूं फायदा करणेवाला है अंदर दाह होता होय तो (२) कच्चे चावलोंके धोवणमें चंदन घसा भया एकवाल संठ घसा भया १ रत्ती उसमें जरा सहत मिलाकर चाटणा अगर पाणीमें मिलाकर पीणा बाहर दाह होता होय तो (३) चंदन संठ वाला तथा निमक इसका लेप करणा

दशांग लेप (नं० ३१३) पाणीमे पीस लेप करणा अथवा इस लेपकूं मट्टीमें मिलाकर उस मट्टीका खरड करणा तेसें मगजपर मुलतानी मट्टीका थर भरणा.

(क्षयका बुखार) क्षय तथा फेफसा और यकृत् (लीवर) के वरममें.

(सोजेका बुखार) जो बुखार आता है, उसका इलाज उन २ रोगोंमें लिखणेमें आवेगा.

बुखारवालेकूं हितकारी सूचना.

(१) महनतका काम लंघण (याने उपवास) और वायुसे चढे बुखारमें दूध उसके संग भात हितकारक है कफके बुखारमें मूंगकी दालका पाणी तथा भात पथ्य है, ऐसाइ पित्तवालेकुं समझणा लेकिन् उसकूं ठंढाकर जरा मिश्री मिलाकर देणा दो दो तीन २ दोष सामल होय तो उसमें फक्त मूंगकी दालका पाणी पथ्य है.

(२) मूंगका पाणी भात अथवा साबूदाणा ये सब सामान्य बुखारका निढर खुराक है, और जहां दूध पथ्य लिखा है, उस जगे साबूदाणा दूध देणा या जलमें सिजाकर दूध मिलाकर देणा.

(३) लंघन ये वहोतसे बुखारोंमें प्रथम इलाज हितकारक है खास करके कफ तथा आमके बुखारमें पित्तके बुखारमें दो दो तीन २ दोष सामल होय उसमें लंघन अच्छा है, एक टंक हलका आहार करना अथवा फक्त मूंगका पाणी पीणा ये सब लंघन तुल्य है, फक्त वादीका बुखार जीर्ण ज्वर आगंतुक ज्वर क्षयका तथा यकृत्के वरमका ज्वर इतनोमें लंघन करनेसें उलटा नुकशाण है.

(४) दूध तथा घी तरुण ज्वर १२ बारे दिन तकमें जहर समान है, लेकिन् क्षय सोस राजरोग उरक्षतके बुखारमें यकृतके ज्वरमें जीर्ण ज्वरमें आगंतुक ज्वरमें दूध हितकारक है, जिसमेंभी जीर्ण ज्वरमें कफ क्षीण गये पीछे २१ दिनों बाद दूध अमृत समान है.

(५) जो बुखारवाला रोगी बदनमें दुर्बल होय जिसके बदनका कफ कम पडगया होय जीर्णज्वरकी तकलीप होय दस्तका बंध छुट्ट होय बदन लूखा होय पित्त या वायुका बुखार होय प्यास तथा दाहकी तकलीप होय उसकूंभी दूध बुखारमें पथ्य है.

(६) बुखार सरू होते लंघन, मध्यमें पाचन दवा, अंतमें कडवी कषायली दवा, [illegible] निकालनेकूं जुलाब, ये चिकित्साका उत्तम क्रम है.

[illegible]) बुखारका दोष कम होय तो लंघनसेंही जाते रहता है जो दोष मध्यम हो[illegible] पाचन दोनोंसें जाता है, बहोत बढे दोषका शोधन इलाज करणा.

[illegible]) दिनके लंघनसें वायुका दोष पकता है, १० दिनमें पित्तका १२ दिनमें [illegible] और दोषोंका नाश होर मया होयतो इनी मुदततक देर लगे.

(८) जिस बुखारमें दोषोंके अंशांशकी खबर न पडे तबतक सामान्य इलाज करणा.

(९) बुखारके रोगीकूं वायु विगरके मकानमें रखणा पंखेकी हवा डालणी भारी तथा गरम कपडे पहराणा तेसें ओढाणा और मोसमके अनुसार पक्का भया पाणी पिलाणा.

(१०) बुखारवालेकूं कच्चा पाणी पिलाना नहीं तेसे वेर २ बहोत पाणी पिलाणा नहीं लेकिन् बहोत गरमी तथा पित्तके बुखारमें प्यास तथा दाह होता होय उस वखत पाणी रोकणा नहीं बाकीके बुखारमें खयालकर थोडा २ पाणी देणा क्योंके बुखारकी प्यासमें जल प्राणरक्षक है.

(११) बुखारवालेकूं खाणेकी रुचि नहीं होय तोभी उसकूं हितकारक पथ्य दवातरीके थोडा जरूर खिलाणा.

(१२) बुखारवालेके तेसें बुखारमेंसें छूटे भयेकेवास्ते (नुकसान करनेवाला आहारविहार) स्नान लेप मालस चिकणा पदार्थ जुलाव दिनकी नींद रातका उजागरा मैथुन कसरत ठंडे पाणीका बहोत पीणा बहोत हवाकी जगे अतिभोजन भारी आहार तासीरकूं नहीं माने एसा भोजन क्रोध बहुत फिरणा तथा परिश्रम इन सब बातोंका त्याग करणा जो बुखारमें अथवा बुखार उतरे पीछे तुरत एसा कोइ विरुद्ध वर्त्तन करणेमें आवें तब बुखार बढता है अथवा गया भया पीछा आता है.

(पथ्य) साठी चावल लाल जाडे चावल मूंग तथा तूरके दालका पाणी चंदलियेका सोवेका तथा मेथीका शाग घीयातोरी परवल तोरी वगेरेका शाग घीमे बघारा भया दाख अनार सफरजंद.

(कुपथ्य) दाह करणेवाला कठोल जेसेके उडद चवले तेल दही और खट्टे पदार्थ बहोत पाणी, नागर वेलके पत्ते, घी दारू वगेरे.

टाइफस, टाइफोईड, तथा उलटता बुखार, कचित् २ देखणेमें आता है, इसवास्ते इसतरेके बुखारकी निसबत जादा इस ग्रंथमे लिखा नहीं पहिले दो तरेके बुखार गटर वगेरे दुरगंधी हवामेंसें पैदा होता है और उलटता बुखार कैदशाली (दुष्काल) तथा भूख मरणेवाले स्नान नहीं करणेवाले मेले वस्त्र रखणेवाले भिक्षुकोंके संगसें पैदा होता है, तथा दुकालकी बखतमें पैदा होता है, इसीवास्ते वीतरागसंजमी बाहिर जंगलमें साफ हवामें सहरके बाहिर उतरा करतेथे जिससे हवामें परमाणूकोसों दूर उडजाते व्याख्यानादि सुणनेकूं आणेवालोंकूं कोइ तकलीफ नहीं होतीथी बेठणेवाले नाति दूरे नाति सन्ने तिष्ठति, जबसें पंचमकालमें मुनियोंने नगरमें वास किया तबसें सूत्रकारनें बकुस तथा कुशील ये दोयनि ग्रंथही पंचमकालमें रहेंगे एसा लिखा है, और बकुशके पांच भेदोंमें वस्त्र तथा वदन सुंदर साफ रखणेकी व्यवस्था भेद दिखलाया अपणे पंथमें

धुकाणेकूं उपदेश देणा लावणी वगेरे रागगाणा चेटा वगेरोंका समुदाय बणाना इत्यादिक वर्त्तमान चलती व्यवस्यासें मुनियोंमें प्रायेसरागसंजमही देखणेमें आता है, जे श्रावग हमारा है, अथवा किसीतरे हो जावे उसकेवास्ते अनेक विवस्था करणी कल्पित मत चलाणा केवल मलमलीन गात्र और मेले वस्त्र रखणेसें रातकुं पानी नहीं रखणेसें रातकुं दिशा जंगल जाणा पडे तो पेसावसें गुदा धोणेसे, पात्रमेंही पेसाव करणेसे, वोही पात्रमें गृहस्थके घरसें आहार पाणीलाके खाणेसे, ऋतुवती स्त्रीकी छूत नहीं रखणेसे जन्ममरणका सूतकवाले घरका आहार पाणी खाणेसे, वासी रोटी खाणेसे, छाछ खीचडा संग खाणेसे, इत्यादिक धर्मविरुद्ध लोकविरुद्धता करणेसें वीतरागसंजमी जैनमुनि कभी नहीं हो सकते, इस मलीन अचरणासे आपकूं और परजीवोंकूं रोगाग्रस्त करके सर्वज्ञकी आज्ञा खंडन करणा रूप महा पाप है, और नही रंगणा, नहीं धोणा, वस्त्रोंके ये सूत्र आचारांगका हुकम वज्र ऋषभ नाराच शरीरवाले चोथे अरेके वनवासी वीतरागी संजमियोंके वास्ते है, पांचमोरेके सरागसंजमी वस्तीमें रहणेवाले, छे वर्त्त सरीरवालोंके भगवतीके २५ में शतकमें देह बकुश उपगरण व कुशकी जो मर्यादा वो मर्यादा समझणी, जूंवस्त्रोंमें पडे उनगुन्योंनें कत्थेसें लोदसे या पद्मचूर्णसे वस्त्रकूं पास देणा एसा निशीत सूत्रमे हुकम है, अपवाद मार्गमें, सूत्रोंकी शैली, यथाख्यात चारित्रवालोंकी पहली है, सो पंचमकालमें विच्छेद है, दुसरी कलम सामायक च्छेदोपस्थापनी चारित्रवालोंकी है, सो विद्यमान है वृथा कष्ट लोकोंकों दिखाणा अंतर आत्मा शून्य इसमें क्या सिद्धि है,जो तुम लोकोंकी करणी पूरे त्यागकी है,तो पंचमकालमें भरतक्षेत्रसें मुक्ति क्यों नही पधारते बस सब बकजाल है, उदरनिमित्तं बहुकृत भेषा इत्यलं ॥

फूटकर निकलणेवाले बुखार.

इस बुखारकुं देशी वैद्यकशास्त्रवालोनें बुखारके प्रकारणमें नहीं लिखा है, मसूरिका तथा जैनयोगचिंतामणीकारने मूं धोरा नाम करके पाणी झरेकूं लिखा है, मरुस्थल देशमें निकाला, सोलापुर दक्षण देशके मराठे लोक भाव कहते है, इत्यादि देश प्रसिद्ध अनेक नाम है, संस्कृतमे इसका नाम मंथरज्वर है, पित्तज्वरके लक्षण इसमें प्राये होते में मूर्खरंडाओंकों मूर्खलोकोने इसका अधिकार दे रखा है, वो लोक प्राये इसका इलाज अत्यंत गरम लोंग सूंठ ब्राम्ही दिलाते हैं, इस इलाजसें सोमें । प्राये गरमीके दिनोंमें मरते हैं हमने देखा है, दश बचते है, वोभी कष्ट , इन रोगोमें मसूरके दाणे जेसे तथा मोती अथवा सरसूंके दाणे जेसे बदनपर ां निकलती है, तथापि इसमें मुख्यपणे बुखारका उपद्रव होणेसें इहा बुखारके में दाखिल करा है.

(प्रकार) फूटके निकलणेवाले बुखारके बहोत प्रकार है, उसमें शीतला ओरी

थच पडा वगेरे मुख्य है, इसके सिवाय रंगीला विसर्प, है जा, प्लेग मोती झरा वगेरे सर्व भयंकर बुखारोंका समावेश होता है.

(कारण) नाना प्रकारके बुखारोंका कारण संबंध वदनके संग जितना रखता है, उससें विशेष पाहरकी हवासें रखता है एसे फूटकर नीकलते रोग कहांइ तो एकदम फूटकर निकलता है, एक तरेका जहर ये उसका (Poison) मुख्य कारण है, ये विपचेपी है, इसवास्ते फैलता हैं, यहोतसे अदम्योंके वदनमें घुसके पडा नुकशान करता है, कितनेक अदमियोंके वदनकूं ए रोग लगता है, कितनेकों नहीं लगता उसके कारणोंका निर्णय पूरे दरजे अभी कुछ नहीं भया है, लेकिन् अनुमान एसा है के फलाणे २ शरीरोंका पंधेज तथा आहारविहारसें प्राप्त भये स्थिति करके उनोके शरीरके दोप है सो एसाचेपी रोगोंके परमाणुओंकों तुरत ग्रहण करलेता है, और फलाणे शरीरके तत्त्वोंपर एसे चेपी तत्व असर नहीं करसकता क्योंके एकही जगे एकही घरमें किसीकों ये रोग लग जाता है, और किसीकों लगता नहीं उसका येही कारण हैं, अनुमान होता है.

(लक्षण) फूटकर निकालता बुखार ये विशेप करके शीतला आदि तो बच्चोंका रोग है, किसी २ वडेकूं भी निकलता है, एसा देखणेमें आया है, दुसरी ये खुबी है, थोडे अपवाद शिवाय जिसके शरीरकूं ये रोग एकवेर निकलजाता है, उसकूं फेर ये रोग प्राये नहीं होता तीसरी खासियत इय हेकी जिस बच्चेकूं शीतलाका चेप दाखल किया भया होय अर्थात् शीतला खोदाय डाली होय उसकूं प्रायें ये रोग होता नहीं और होता है तों थोडा और वहोत नरम होता है, शीतला नहिं खोदाये भये बच्चोंमेंसें इस रोगसें सोमें ४० मरते हैं, और खुदाये भयेमें सोमें ६ मरते हैं, इसतरेका जहर वदनमें प्रवेश किये पीछे चोकसदिन प्रथम बुखारके रूपमें दिखाई देता है, और पीछे वदनपर दाणा फूटकर निकलता है, ये विशेप उसका खातरीलायक चिन्ह है.

शील–शीतला–माता–स्मॉल पॉक्स.

(प्रकार) शीतला दो तरेकी है, एकतरेका दाणा थोडा और दूर २ और दुसरे प्रकारकी शीतला सब वदनपर फूटकर निकलती है दाणे आपसमें मिलजाते हैं तिलभर जगा खाली नही रेती ये दुसरी शीतला बहोत कष्टकारी भयंकर होती है.

(लक्षण) शीतलाके विपका वदनमें प्रवेश भया पीछे १२, या १४ दिनमें शीतलाका बुखार सादे बुखारकी तरे टंडका लगणा गरमी शिरमें दर्द पीठमें दरद तथा उलटीके संग आता है, फेर उसके संग गलेमें सोजा थूकका जादापणा आंखोंके पल्कोंपर सोजा और श्वासमें खराब बदवो आती है किसी २ वखत जुवान लोकरोंकूं शीतलाके बुखार सरु होते मीट और छोटे बच्चोंकूं खेंचाताण हिचकी होती है, (दाणे) बुखार चडे पीछे तीसरे दिन पहली मूं तथा गर्दनमें पीछे शिरमें कपाल छाती अखिर पांवपर दिखाई

देता है दाणे दिखणेके पहली बुखार शीतलाका है या सादा है इसकी पूरीखातरी नहीं हो सकती लेकिन् अनुभव तथा चमडीका खासरंग ये बुखारकी तुरत पहिचाण दे देती है शीतलाके दाणे बाहिर दिखाई दिये पीछे बुखार नरम पडता है लेकिन् दाणे जब पकके भराव खाते हैं तब फेर बुखार जोर देता है, दाणा आसरे दशमें दिन फूट कर खरूंट जमणा सरू होता है बहोत करके चौदमे दिन खरा पडता है दाणेके लाल चठे होजाते हैं उस वखत जाते अदश्य होता है सख्त हमलेमें जब शीतलाका दाणा अंदरकी पक्की चमडीमें घुसता है तब शीतलाके, दागका निशान मिटता नहीं खड्डे रहते हैं और सख्त उपद्रवमें अच्छा इलाज नहीं बणे तो आंखकानकी इंद्री जाते रहती है.

(इलाज) पहले तो खोदाय डालणा ये तो सर्वोपरी इलाज है, और दुनियाके बालक लोक इस सोधके वास्ते इंग्लंडके प्रसिद्ध डाकटर जे नरका तथा दयावंत अंग्रेज सरकारका हमेशोकेवास्ते पायबंद आभारी भये हैं, डाकतर जे नर जो शोधकरके ऐसा निकाल होकर बाद लाखोबच्चे इस रोगके भयंकर दरदमेंसे और मौतसे बचणे लगे हैं, कहांतक इस उपगारकी हम तारीफ करें धन्य २ महाराज तुमारे राज्य शाशनकी विद्वताका परोपकारपणा ये रोग प्रगट भये बाद उसकूं रोकणेका या कम करणेका इलाज कीसीभी शास्त्रमें तो नहीं देखा लेकिन् हमने उपाध्याय श्रीदेवचंद्रजी गणिकूं बीकानेरमें पहले साल उगणीससै २७ में देखा सो अबींध मोती २१ दिनोंतक इस मंत्रसे मंत्रके २१ खिलाया ओं ऋषभ अर्हंत मादित्य वर्णंतमसपुरस्तात् २१ वेर मंत्रकर पवित्रतापर्णेसें हमने प्रत्यक्ष उसकूं देखा है अभीतक ये रोग उसके नही भया है, महिमा मोतीकी है यामंत्रकी सो पतवाणके देखणा और खान पांन वगेरेके साधनसें तथा शीतलाके भयंकर बुखारकी वखत योग्य इलाज करणेसें रोग कम होता है, बहोतसी वखत मरणका डर होता है, इस देशमें बहोतसें आर्य लोकोमें और जादा करके अज्ञान स्त्री जातिमें एसा वेहम धस गया है, के ये रोग कोइ देवीके कोपसें प्रगट होता है, इसवास्ते इसकी दवा करणेसें वो देवी और जादे गुस्से होती है, इसवास्ते शीतला ओरीमें कोइ दवा करणी नहीं करणी तो लौंग सूंठ किसमिस वगेरे ॥ छमककर कुलि ये में देणा वोभी देवीके नामकी आस्ता रखकर एसे खोटे और झूठे वहमसें दवा नहीं करणेसें हजारों बच्चे दुखपाकरके सडके मरते हैं अज्ञान मावापोंकी [illegible]ता और वहेम दूर होय तो विगर इलाज इस वखत जितने बच्चे मरते हैं, उस[illegible] सोमेंसें ९० बालक निश्चै बच सकते हैं पाखंडी उपदेशकोनें अपणे पेटभरणेवास्ते [illegible]ले जमानेमें लोकोमें अविद्या देख नाना प्रकारके वृथा देवी देवतोंका ढोंग खडाकर [illegible] है जिसकूं अभीतक ठीक सच मानते चले जाते हैं, औषधी तो प्रत्यक्ष फल दि-

राती है जो देवी जन्यदोष ये रोग होता तो प्राचीन आयुर्वेद याने (आयुज्ञान) के उत्पादक श्रीऋषभ परमात्मा आदि अनेक पूर्वऋषि तथा आचार्य इस रोगकेवास्ते इलाज क्यों लिखते इस अविद्यांध प्रसारमें स्वार्थ तत्परोंने शीतलाष्टकभी थोडा अरसा भया घना डाला है, हां अधिष्टायक तो सर्वरोग तथा औषधी आदि पदार्थोंके होंयगे एसा सर्वज्ञ वाक्य तथा अनुमान किसी २ जगे भया है, इस रोगकूं लोकीकमें माता कहते हैं हमारा अनुमांन है के पुत्रगर्भमें पडणे वाद और तों का ऋतुधर्मबंध हो जाता है वो रक्त परिपक्क होय स्तनोंमें दूध बणता है, वो प्रथम जन्मसेही बच्चा पीता है वोही गरमी कारण पाकर फूटकर निकलती है, क्योंके ऋतुधर्म आणेसें औरतकी गरमी वहींतछंट जाती है, उस ऋतुधर्मके समय कोइ मैथुन करे तो गरमी सुजाक शिरमें दर्द नामर्द आदि रोग प्राणीके होता है इसवास्ते वो गरमी माताके दूधकी होणेसे स्यात्लोक इसें माता कहते होंगे तब तो लोकोंके वाक्य सचे हैं परमार्थ नहीं जाणते हैं, (इलाज).

(२) नींबकी अंतर छाल पित्तपापडा कालीपाठ पटोल चंदन रगत चंनण खसवाला कुटकी आंवला अरडूसा लालधमासा ये सब थोडे २ लेकर पीस उसमें मिश्री मिलाकर उसका पाणी करके रखणा उसमेंसें थोडा २ पिलाणा इससें दाह बुखार वगेरे शांत होता है, और मसूरिका मिटजाती है, (२) मजीठ वडकी छाल पीपरकी छाल सरेसकी छाल और गुलरकी छाल पीसकर दाणोंपर लेपकरणा (३) दाणा बाहर नीकलकर पीछा अंदर घुसते मालम देतो कचनारके दरखतकी छालका क्वाथकर उसमें सोनामुखीका थोडा चूर्ण मिलाकर पिलाणेसें दाणा पीछा बाहर आता है, (४) मूंमें तथा गलेमें व्रण जखम होयतो आंवला तथा मोलेठीका क्वाथकर सहतडालकर कुरला कराणा (५) बेगी नामके दाणे होते हैं, वो तथा मोलेठीकूं पीस उसका पाणीकर आंखोंपर सींचणेसें आंखोंका बचाव होता है, (६) मोलेठी त्रिफला पीलूडी दारुहलदी कमल वाला लोद तथा मजीठ इनोंको पीस आंखोपर लेप करणेमे आवे या उसके पाणीकी बूंदें आंखमें डालणेमें आवे तो आखोंके व्रण मिटजाते हैं, और इजा नहीं होती गूंदीकी छालकूं पीस ऊपर जाडा लेप करणेमें आंखकूं फायदा होता है, (७) दाणे फूट किचकिचाकर उसमेंसें पीप तथा दुर्गंध निकलती है, तब पंचवल्कलका कपडछाण चूर्णकर उसपर दबाणा देशमारवाडमें कायफलका चूर्ण दबाते हैं, रसीकूं धोडालणेवास्ते भी पंचवल्कलका उकाला भया पाणी अच्छा है, (८) कारेलीके पत्तोंका क्वाथकर उसमें हलदीका चूर्ण डाल पिलाणेसे चमडीमें घुसे भये अंदर व्रण बुखार दाहकी शांति होती है, (९) दस्त होते होय तो बंधकी दवा देणी दस्तबंध हुतो हलका जुलाब देणा नाताकती मालम देतो खुराक उपरांत द्राक्षा सब पोर्ट [illegible]न योग्य मात्रा प्रमाण डाक्टर देते हैं, (१०) फफोले फूटे पीछे सरूंट आये

पीछे उसमें खुजाल आती है तब नखसें कुचरणे देना नहीं उसपर मलाई चुपड़नी अथवा केरन ओईल अथवा कारबोलिक ओइल लगाणा बदामका तेल८ भाग और सो-ल्युसन ओफ सब एसेटेट ओफलेड १ भाग ये दोनों मिलाकर लगाणा फफोलाकू मुरझाणे लगे तब उसके ऊपर चावलोंका आटा अथवा सपेदा भुरकाणा जिसें चे दाग नहीं पडते.

(होमियोपथिक इलाज) बचोंके रोगमें होमियोपथिक इलाज जादा असर करता है और सहज है, (१) एकोनाइट) पहलेके बुखारकूं शांत करणेकूं ये दवा फाय-देमंद है, मात्रा २ बूंद (२) एन्टीमनीटार्ट, शीतलाका ये बुखार है एसा खबर पडतेही ये दवा देणी जो पहले वखतपर दवा देणेमें आवेतो रोगकूं बंध करदेता है मात्रा तीन २ घंटेसें पाणीके संग देणा (३) बेलाडोना) बुखारके जोरसें नसा बकवाद शिरमे दर्द आंखे लाल होय तो ये दवा देणी मात्रा दो बूंद थोडे पाणीमें मिलाकर ऊपरके चिन्ह शांतपडे उहांतक दोदो घंटेसे देणा.

(४) काफिया) बेचेनीमें तथा अनिद्रामें उपयोग करणा दो बूंद थोडे पाणीमें मिलाकर दोदो घंटेसें नींद नहीं आवे जहांतक देणा (५) कारबोव्हेज) सन्निपातमें तथा चमडी सडने लगे तब उपयोग करणा मात्रा १ गूंज दर तीन घंटेसें.

(विशेष सूचना) ये रोग चेपी है, इस रोगीसें घरके अदम्पोंने दूर रहणा अर्थात (अवश्य) जरूरी जिसके पडे उसके सिवाय विशेष अदम्पोंने इस रोगीके पास जाणा अच्छा नहीं है, जादा तर अदम्पोंकी मारफतसे ये चेपी रोग फैलणे लगता है, अर्थात नहीं निकले भयेकूं उहांके जाणेवालेके स्पर्शसे गंधसे दूसरे बचेकुं निकल पडती है, शील ओरी वगेरे रोगीकूं पडदेमें रखणेमें आता है, दुसरे अदमीकूं नहीं आणे देणेमें आता है ये तो अच्छी चाल है, लेकिन् इसका असली तत्वकूं छोड लोक वहमके रस्ते गिरगये है, रोगीके सोणेकी जगामें सफाई स्वच्छता रखणी साफ हवा आणे देणी अगरबत्ती वगेरे सुगंध धूप खेवणा और नं० ५६९ में बताये भये गंधकीकूं दूर करणेवाला डिस इन्फेक्ट नृसकाभी उपयोग करणा रोगी अच्छा भये पीछे उसके कपडे बिछोणे जला देणे नहीं तो डिसईन फेक्टकर उपयोगमें लेणा (बुखार) शीतलाके रोगी बचेकूं तेसें बडे अदमीकूं खानपांनमें दूध चावल दलिया रोटी बूरेकी डाली रावडी मूंगकी तथा तुरकी दाल दाख नारंगी अंजीर जादा करके मीठे और ठंढे पदार्थ लेकिन कफका जोर होगया होयतो मीठे पदार्थ तथा फल नहीं देणा, कोइभी गरम चीज खाणेकूं नहीं देणा रोगकी पहली हालतमें तथा दुसरी स्थितिमें दूध भात देणा अच्छा है. तीसरी स्थितिमे इसेर दूध अच्छा है, पीणेकूं ठंढा पाणी अथवा बरफका पाणी अच्छा है, रोग मिटे पीछे रो-

जानाकन होय उहांतक धूप तथा बरसाद ठंडमें जाने देना नहीं थोडा और पथ्य आहार करणा रोग मिटे पीछेभी कितनेक दिनोंतक ठंडे इलाज ठंडे खानपान देते रहना तेमें गुलकंद अमृत घटी वगेरे दवा पदार्थ गुणकमें दूधके संग देना बहोत फायदा करती है.

(ओरी)

(माझल्स)

(लक्षण) ये रोग बहोत करके बचोकूं होता है, एक वेरनि कले वाद फेर नीकलती नही बदनमें इसका जहर घुसेबाद १०।१५ दिनके अंदर प्रगट होती है, और बखतमें इसकी सरुआत होती है, आंख नाक झरणे लगते हैं. कफ छींक बुखार प्यास और बेचेनी होती है, अवाज गहरा होता है, गला आजाता है, श्वास जलदी चलता है, बुखार सख्त आता है, शिर बहोत दुखता है, दस्त बहोत होता है, बफारा बहोत होता है, इस बुखारमें चमडीका रोग दुसरी तेरेकाही बण जाता है, बुखार वगेरे चिन्ह देखाई दिये पीछे तीन चार दिन पीछे ओरी दिखाई देती है ओरीका फुनसी जेसा छोटा गोल दाणा होता है, पहली निलाड तथा मूंपर दाणा निकलता है, और पीछे सब बदनपर फेलता है, शीतलामें जेमें दाणे दिखाई दिये पीछे बुखार नरम पडता है, तेसा ओरीमें होता नहीं शीतलाकीतेरे दाणेके प्रमाण मुजब बुखारका जोरभी नहीं होता ओरी सातमें दिन मुरझाणे लगती है, बुखार कम होता है, चमडीकी ऊपरकी खोल उतरकर खुजाल बहोत आती है, शीतला जेसा ये रोग डरावणा नहीं तोभी बहोतसी बखत छोटे बचोंकों हांफणी तथा फेफसेका वरम होता है, तब भयंकर होजाती है, अर्थात् तंद्रकादिक सन्निपात हो जाता है, उस बखत जरूर इलाज करणा चहिये नही तो जोखम पहोंचती है, सख्त ओरीके दाणे जरा गहरा जामुनी रंगका होता है,

(देशी इलाज) बहोतसा तो शीतला मुजबही करणा ओरीका खास इलाज कुछभी नहीं है, रोगीकूं हवामें ठंडमें रखणा नहीं खुराक भात दाल दलिया अच्छा देणा दाख धाणाभिगाकर उसका पाणी पिलाणा सूंठ मासाभर जलमें रगडके सात दिन विना गरम किये पिलाणा दोनों टंक.

(होमियोपथी) (१) एकोनाईट) बुखारकी गरमी कम करणेकूं पहली दो दो बूंद पाणीके संग देणा (२) पल्सेटिला ओरीकी खास दवा है, बलगम खासी तथा छातीमें कफ होय तब ये दवा बुखार हलका पडे पीछे देणी दो दो बूंद थोडे पाणीके संग दो दो घंटेसे (३) बेलाडोना गलेमे दरद सूकी खासी तथा बेचेनीका बकणा इसमें ये दवा जरूरीकी है, मात्रा दोदो बूंद हर दोदो घंटेसें जलके संग (४) ब्रायोनिया ओरी बाहर देखाइ देकर मुरझाणे लगे तब छातीमें चसका श्वास लेते दरद

[illegible] होने ओर [illegible] में दवा देनी [illegible] दो [illegible] (५) [illegible] [illegible] (६) [illegible] [illegible] दिन में दवा देनी अच्छी है. ([illegible]) [illegible] दो [illegible] [illegible] ([illegible]) [illegible]

(आछ पडा)

(चीकन पॉक्स)

ये रोग छोटे बच्चोंको होता है, ये बहोत हलका [illegible] है, पहले दिन [illegible] आकर दुसरे दिन छाती पीठ तथा [illegible] छोटे २ लाल २ दाने होते हैं, [illegible] दाने बडे होकर उनमें पानी भरके मोतीके दाने जैसा होता है, [illegible] जितना होता है, लेकिन बहोत छोटे और दूर २ होते हैं, बुखार थोडा होता है, [illegible] पीप नहीं होता इस रोगमें कुछ डर नहीं है, कितनेक [illegible] बच्चोंके [illegible] बताना है, इस रोगमें इलाजकी कुछ जरूरी नहीं है,

(रतवायु विसर्प)

(इरीसी पेलास)

(प्रकार) देशी वैद्यक शास्त्र मुजब जुदा २ तेसें मिश्रदोपके संबंधसें विसर्प वो रतवायू सात प्रकारका है, मुख्य दो प्रकारका है १ दोप जन्य विसर्प और २ आगंतुक विसर्प विरुद्ध आहारसें शरीरका दोप तथा खून विगडकर जो रतवायु होती है, वो दोपजन्य ओर जखम शस्त्र जहर अथवा जहरी जांनवरके, नख दांतसें तथा जखम और जखमपर रतवायूके चेपका स्पर्श वगेरे कारणोंसे जो रतवायू होता है, वो आगंतुक विसर्प कहाता है.

(कारण) प्रकृति विरुद्ध आहार चेप खराब जहरी हवा जखम मधुप्रमेह वगैरे रोग जहरी जानवर या उनोंकाडंक इत्यादि रतवायुके वहोत कारण है, जैनियोंके श्रावकाचार ग्रंथोंमें, ब्राह्मणोंके बनाये चरक ग्रंथमें एसा लिखा है के ये रोग कितनेक हरेशा वहोत विनामोसम विनातपासे अथवा वहोत खाणेका मावरा रखणेसें ये रोग होता है, इन सब कारणोंमेंसें कोईभी कारणसें बदनका रस तथा खूनमें जहरी जांनवर पैदा होते हैं और रतवायू फेलता है.

(लक्षण) रतवायु ये चमडीका चरम है, वो एक जगेसें दुसरी जगे फिरता है और फेलता है, इसवास्ते वायू ऐसा नाम धरा है, इस रोगमें बुखार आता है और [illegible] लाल होकर सूज जाती है, हाथ लगाणेसें रतवायुकी जगे गरम मालम देती है, [illegible] चिणक मारती है, प्रथम ठंडसें कांपणी बुखारका जोर मंदाग्नि प्यास और [illegible] ये उसके पहले लक्षण है, पैसाब लाल उतरता है, नाडी जल्दचलती है, उसके

संग किसीजगे उलटी और भ्रम होता है, उससें रोगी बकता है, तोफानभी करता है, एसें चिन्ह भये पीछै दुसरे या तीसरे दिन शरीरके किसीभी भागमें रतवायू दिखाई देती है, दाह और लाल सूजन होती है, आगंतुक रतवायू कुलथीके दाणे जेसा होकर फफोलोंसें सरू होता है, उसके संग कालाखून सोजा बुखार और दाह वहोत होता है, ऊपरकी चमडीमें भया होय तो ऊपरके इलाजसें थोडा दिनोंमें शांत होता है, लेकिन् उसका विष जो गहरा चला गया होय तो विसर्प वहोत भयंकर होता है, चोपकता है, फफोला होकर फूटता है, सोजा वहोत होता है, दरद वेहद होता है. रोगीकी शक्ति कम होती है, एक जगे अथवा अनेक जगे मूं करके फूटता है, उसमेंसें मांसके टुकडे निकला करते हैं, अंदरका मांस सडते जाता है, आखर हाडोंतक पहुचता है, तब रोगी बचणा मुस्कल है, गलेमें भये विसर्पमें जादा डर है.

(इलाज) (१) वदनमें दाह नहीं करे एसा जुलाब उलटी लेप और सींचणेके इलाज और जरूर पडे तो जोकलगाणी.

(२) दशांगलेप (नं० ३१२) ठंडे पाणीमें या मखणमें या गुलाब जलमें पीस उसका गीलालेप वेर २ करणा (३) जात्यादि घृत (नं० ३०२) रतवायू फूटे पीछै घाव भरणेकूं ये मलम अच्छा है (४) रतवेलिया काला हंसराज हेमकंद कबाबचीणी सोनागेरू वाला चंदन वगेरे ठंडे पदार्थोंका लेप करणेसें रतवायूकी दाह तथा शोजा शांत पडता है, (५) पंचवल्कल (नं० १५७) अथवा चंदन अथवा पद्मकाष्ट वाला मोलेठी इनोंकों पीस वाउकालकर ठंढाकर धारदेणेसें फूटे वादभी इस जलसें धोणा (६) चिरायता अरडूसा कुटकी पटोल त्रिफला रगतचंदण नींबकी अंतर छाल काथ करके पीणा बुखार उलटी दाह सोजा खुजली विस्फोटक वगेरे सब मिटजाता है.

(अंग्रेजी इलाज) (१) रतवायु फैलणे नहीं पावे इसवास्ते रतवायू सोजेके आसपास नाइट्रेट ओफ सिल्वरकी लकीर खेंच देणी (२) बेलाडोना और ग्लिसराइन मिलाकर चुपडणा (३) ओकसाइड ओफ झिंक भुरकाणा (४) टिंकचर ओफ स्टील (२०) (३०) बूंद और पाणी १ औंस दोनोंकों मिलाकर दर तीन २ घंटेमें देते रहणा (५) अफीमके डोडेडाल उकालकर गरम पाणीका शेक करणा, सोजेपर चणख अथवा अंगार जेसी जलण होय तो जोकलगाणी सोजा पककर पीपभये वाद नस्तर दिलाकर पीपका निकाशकर देणा (६) रोगी अशक्त मालम पडे तो कारबोनेट ओफ आमोनिया ५ ग्रेन लाडेनम ६ मिनिम सिंकोनाकी छालका उकाला १॥ औंस सब मिलाकर दिनमें तीन वेर देणा.

होमियो पैथिक इलाज.

१ बुखारकूं शांत करणे एकोनाइट (२) इस रोगवास्ते वेलाडोना अच्छा इलाज है,

ये रतवायूमें ललाई सोजा और दरद होय तब देणा (३) खराब भयंकर रतवायूमें न्हसटॉक्स नामकी दवा प्रबल मालम दीहे (४) रतवायूका जखम चकचके और सडे तब आर्सेनिक देणा अच्छा है, (५) सन्निपात और तंद्रामें स्ट्रेमोनियम देणा.

(विशेष सूचना) खुराक अच्छा देणा दूध तथा दूध डालकर पकाई भई कांजे चावलोंकी उत्तम पथ्य है, रोगी अशक्त मालम देतो द्राक्षा सब या पोर्टवाइन देते रोगीके आसपास जाणे देणा नहीं रतवायूके इलाज करणेवाले वैद्य या डाकतकी मार्फत इस रोगका चेप दुसरे दरदियोंके खास करके जखमवाले रोगियोंके बदनमें प्रवेश करता है, इसवास्ते रतवायूवालेके स्पर्शमें आणेवाले डाकटरोंने बहोत सफाई रखणी चाहिये.

(गठिया बुखार) अग्निरोहिणी.
(ब्युबोनिक प्लेग).

ये विलक्षण तरेका मरज बहोत अरसा भया चल रहा है, अनादि है, तोभी ये रोग सुणते है, विक्रम संवत् सोलेसेमें अकब्बरके वखतमें भी, चलाथा जिसका फेर अब मुं बइसें चला है, वर्ष दस होगया अब तो प्राये दक्षण पूरब उत्तरादि देशोंमें फेलगया है, लोकोंकों ये रोग नया मालम देता है, रोगकी उत्पत्तीका कारण तथा इसका इलाज सोधनेकूं सरकार तथा प्रजा बहोत प्रयास कररही है, लेकिन् दिलकूं पुरीत सली होवे एसा निर्णय अभी भया नहीं है, इस बाबतमें न्यारे २ अभिप्राय है, हमारे समझसें ते विस्फोटक रोगकी आठ जातिमेंसे है, एक देशी वैद्य अग्निरोहणी जो क्षुद्र रोगोंका एक भेद है, सो बतलाते हैं, असाध्य विस्फोटक और अग्निरोहिणी एक सदृशही है, ये तो मारही डालती है, लेकिन कोइ २ बच जाता है, इस अपेक्षा विस्फोटक एकदोषी द्विदोषी सिद्ध होता है, अग्निरोहिणीवाला कभी बचता नहीं (विदारीका) के भी लक्षण क्षुद्र रोगमेंका मिलता है, दरतरे हेजेकीतरे चेपी और भयंकर है, तोभी वखतपर इलाज हो जाय तो हेजेकीतरे कष्टसाध्यतक रोगी बच सकता है, इस बुखारका मुख्य चिन्ह यह है की रोगीके गलेमें कानमे या जांघकी जडमें बदके जेसी गांठ निकलती है, और जाद —के सन्निपातके चिन्होंवाला बुखार आता है, एसे रोगोंका इलाज अनुभवी चतुर वैद्य ।, बुद्धिकी तरेसें इलाज और देखरेख और सफा करता रहे वो निर्भय रहे ., इस ग्रंथमें जो इलाज हम लिखते हैं, सो पढकेू देखणा यथार्थ है, (१) . पंचानका क्वाथ संठ मामामर बुखारकर (२) अमृतादि क्वाथ (नं० १९४) क मंग चंद्रकला (नं० ३४५) नामकी गोली मिलाकर दिनमें तीन वखत पिलाना ., दस्त और दिमाग ठंडा होय सो थोडा २ द्राक्षासव देते रहेना अगर दि हालकी अच्छा है, (२) दिनमें ... मेर इलाजभी इस पेपारार चलना है

(३) दशांगलेप (नं० ३१२) अथवा दोषघ्नलेप (नं० ३११) के संग नींमकेपत्ते छाछमें पीस उसका जाडाथर गांठ अथवा सोजेपर बांधणा (४) त्रिदोषज्वरका तथा त्रिदोष ग्रंथि विस्फोटकका इलाज करणा उसके संग उलटी दस्त वगेरे जोजो उपद्रव होय उसके दबाणेका प्रयत्न करणा (५) बहोत सफाई रखणी .डिसइन्फेक्टंट्स (नं० ५६९) का उपयोग करणा रोगीकूं अलग रखणा इसके बिछोणेके आसपास खसबोईदार सुगंध अगरबत्ती धूप उखेवणा उसके कपडोंकोंभी खसबोदार रखणा रोगीके श्वास तथा मलमूत्रसे जेसें बने तेसें दूर रहणा उसके सोणेके कमरेमें अलग जरूरीके अदमीटाल जादा अदमी जाणा नहीं उस कमरेमें हवा तथा उजाला रहे एसा खुलासा रखणा और विशेष खुलासावास्ते छपरेके कवेलु नलियेभी निकाल देणा लेकिन बरसात पडे तो नहीं निकालणा रोगी अच्छाभये पीछे अगर मरगये पीछे उसका बिछोना वगेरे सब चीजों जला देणी कमरेकूं कितनेकदिन खुला रखणा और जहांतक उसकी हवा साफ नहीं होय उहांतक कोइभी उस कमरेमें जाणा नहीं आखर कमरेकूं डिसइनफेक्ट करके तथा कलीचूनेसें पोताकर उपयोगमें लेणा.

(विसूचिका हैजा कैदस्त कोलेरा)

(कॉलेरा)

(विवेचन) ऊपर लिखा जो फूटकर निकलणेवाले बुखार तथा हैजा वगेरे फाडकर निकलणेवाले मरजोंके संबंधमें यूरोपी विद्वान अभीतककोई संतोषकारक निर्णय नहीं करसके हैं, तो फेर इलाज का तो कहणा ही क्या फाडकर निकलते मरजोंका मूलकारण जहरी हवा है, एसा अनुमान होता है, लेकिन् वो जहरी हवा कैसी हालतमें कैसे अदम्योंके बदनमें असर करती है, उसका कुछ निर्णय नहीं भया है, अनुभवसें विद्वानोंने समझाहे के जिस करके शरीरका जीवन अथवा जीवनशक्ति घटती है, वो कारण एसे रोगोंकों रस्ता देता है, (जीवन शक्तिकूं कम करणेवाला कारण इस मुजब है,) नसेवाले मादक पदार्थोंके विसनसें मगजके तंतु नाताकत हो जाणे लंबी और बहोत महनतवाली मुसाफरी उसके सबबसें बदन नाताकत हो जाणेसें बहोत अदम्योंके गरदीमे सोणेसें गीलासपणा गंदीवाडा अपूर्ण आहार दुकालमें भूख मरणेसें ये सब कारण फाडकर निकलणेवाले रोगोंकूं बूलाता है, हरतरेकी महामारीमें इतनी बातें सिद्ध हो चूकी है, के जो प्रदेश आरोग्यताकूं नुकसान करणेवाले हैं, उसमेंभी मुख्य करके जिसजगे खानपांनके पदार्थ बहोत खराब मिलते हैं, अथवा खुराककी तंगीसें जो अदमी नाताकत और निरमायल भये होते हैं, एसी जगे एसे अदम्योंकों एसा मरज संहार करता है.

देशी संस्कृत शास्त्रमें इस रोगका नाम विसूचिका है बदनमें सुई चुभाणे कीसी वेदना होती है, इसवास्ते विसूचिका नाम धरा है, जिस २ रोगोंसें बहोत बहोत अदमी मरते हैं,

उसकूं प्राचीन लोकोंनें महामारी एसा नाम धरा है, अंग्रेजीमें कोलेरा यहभी एक महामारी है, देशी शास्त्रकारोंने इसकूं जठराग्निके विकारोंमें एक तरेके अजीर्णके रोगोंमें लिखा है, निश्चयमें देखणेसें यही बात सची है, सर्वज्ञके वचनसें क्योंके इसके सब लक्षण और इलाज अजीर्णके संग मिलता भया चलता है, लेकिन् सामान्य कारणोंसें जो अजीर्ण होता है, उससें ये अजीर्ण विशेष और विलक्षण कारणोंसें होता है, ये अजीर्णका रोग साधारण अजीर्णसें नहीं होता लेकिन जहरी चेपी हवासें ये रोग एका एक फाडकर नीकलता है, और इसीवास्ते इस रोगकूं फाडकर निकलणेवाले रोगोंकी पंक्तिमें दाखल करा है.

(कारण) इस रोगका कारण बाहरकी कोइ जहरी वस्तु है, ये जहरी वस्तु हवाके संग तेसें पाणीकी मारफत वदनमें घुसकर अजीर्णकूं पैदा करती है, और दुसरे फाडकर निकलणेवाले रोगोंकीतरे जिस अदमीका वदन इस जहरी और चेपी रोगके तत्वोंकों ग्रहण करणे लायक भया होता है, उसकूं विशेषकर ये रोग लगता है, ये रोग जब चलता है, उस वखत जिसके जठरमें अजीर्णका विकार होता है, उसपर इस रोगका हमला होणा जादा संभव है.

(लक्षण) दस्त तथा कै ये इसरोगका खास लक्षण है, दस्त पतला पाणी जेसा तथा चावलोंके धोवण जेसा सुपेद होता है, दस्त उलटीके संग वदनमें वांइटे आतीं आंकसी प्यास पेटमे दाह पेसाब थोडा ये विशेष लक्षण है, रोगका जोर जादा होता है तब आखरकूं पेसाब बंध होता है, वदन ठंढा पडता है, वदनका रंग बदलकर झांखा पडता है, आंखोंमें खड़ा पडता है, नाडी क्षीण पडजाती है, अगर जो इलाज नहीं लगे तो रोगी मरजाता है, जब रोगी सुधारेपर आता है, तब पेसाब खुलाश आता है, प्यास और दाह कम होजाती है, उलटी दस्त बंध होजाता है, दस्तका रंग बदलता है, नाडी तेज आता है, और अवाज साफ होती है.

(इलाज) कोईभी अदमीकूं दस्त उलटी होणे लगे वो चाहे अजीर्ण होय चाहे हेजा लेकिन् उसकूं बंध करणेका इलाज सरू करणा उसके इलाज इसतरे करणा (इस मुजब) अफीम एक मासा लोंग १ मासा जायफल १ मासा पुडिया ५ करणा बचेकेवास्ते थोडी मात्रा देणी तज इलायची सूंठ इनोंकों पीस करके फाकणेकूं देणा सं मिरच पींपर जीरा शाहजीरा तली हींग सीधानिमक लाल मिरच लसण कांदेका र वगेरे चीजोंमेंसें जो मिले उसकूं कपड छाणकर पाणीमें देणा कांदेका रस पिलाणा दीनेकूं उकाल उसमें कांदेका रस तथा कोडियालोबान अथवा इलायची मिलाके पिलाणा दस्त उलटी सरू होणेके पहली तुरतमें कुछ खाया भया होय तो उसकूं गरम जल पिलाकर उलटी करा देणी कोइ दवा हाजर नहीं होय तो १ रत्ती अफीमकी

गोलियांकर तीन २ घंटेसे एकेक गोली देणी अथवा कत्था तनीवाल हिरादखण २ वाल और अफीमअध रत्ती इनोंकूं मिलाकर इसका ४ भाग कर दर भाग तीन कलाकसे पाणीमें देणा अफीम तथा अफीमवाली दवाओं देणेसें पेट नहीं आफर जाय, इसकी संभाल रखणी कपूरका अर्क अथवा कपूर पेपरमीन्ट टरपेन्टाईन तिलीका तेल लाल मिरच लसण कांदे अनायोंकूं डाकटर माडी देते हैं, पेइनकिलर ये सब चीजों अजीर्ण तथा हेजेमें फायदा करणेवाली है, इसमेंकी एकाद जो हाजर होय उसका युक्तिसें उपयोग करणा (२) हिंगाष्टक चूर्ण (नं० १९०) हरडेका चूर्ण तथा साजीखार ये तीन चीज समभाग मिलाकर देणा अजीर्ण तथा हैजेमें बहोत अकसीर दवा है, क्रम २ से दस्त उलटीकूं बंध करतीहै, अजीर्णकूं पचाता है, पाचनशक्ति बढाता है, इसवास्ते दस्त उलटी बंध होय जहांतक इसकी फकी एकेक दोदो घंटेसें देते जाणा जो उलटीमें निकलजाय तो तुरतही फेर दे देणी मात्रा चार आनेभर अनुपान पाणी (२) गंधकवटी (नं० ६६ (गंधकके पेटेमें लिखे मुजब तइयार करणा (४) कथ्यादरश नामकी देशी दवा अजीर्ण तथा हैजेपर बहोत फायदा करती है, दस्तके वेगको एकदम थांभ देती है, किसी प्रसिद्ध वैद्यके पास मिले तो लेणी मात्रा १ से ३ वाल अनुपान दही अथवा छाछमें शेकाभया जीरा तलीभई हींग तथा सींधा निमक मिलाकर पिलाणा (५) संजीवनी (नं०२४४) ये गोलियां हैजेकेवास्ते बहोत अच्छा इलाज है, हैजेकी भयंकर हालतमें नाडी तूटजाती उसकूं ये गोली देणेसें धीरे २ पीछे नाडी हाथ लगती है, रोगी बच जाता है.

(अंग्रेजी इलाज) दस्त बंध करणेकूं (१) एरोमेटिक पाउडर ओफ चोक (नं० ४०१) देणा मात्रा १० ग्रेणका एक डोझ दिये पीछे दस्तबंध नहीं होय तो दर दोदो घंटेसें दश २ ग्रेण दवा पाणीके संग देणा सरू रखणा (२) अथवा नीचे लिखी ७ वस्तुओंका चूर्णकर १० १५ ग्रेणतक दर तीनघंटेसे दस्तबंध होय जहांतक देणा.

चोक ४४ ग्रेण. तज १६ ग्रेण. जायफल १२ ग्रेण. केशर १२ ग्रेण. लौंग ६ ग्रेण इलायची ६ ग्रेण.

मिश्री २ ड्राम मर्दीन चूर्ण करके उसमेंसें दर २–३ घंटेसे १० से १५ ग्रेण मात्रातक पाणीके संग देणा इससें दस्तबंध नहीं होयतो उसके एक खुराकमें लाडेनमनो १० बूंद और अफीम० । ग्रेण मिलाकर देणा.

(३) क्लोरोडाईन बूंद २० एक ग्लास पाणीमें मिलाकर देणा और फेर दो घंटे पीछे दुसरी वेर इसीतरे देणा (४) शुगरलेड ८ ग्रेन तथा अफीम १ ग्रेन इसकी ४ गोली गूंदके पाणीमें बणाकर दस्तके जोर मुजब दर ३। ४। घंटेमें एकेक गोली देणी नाताकती बढजायया अंग ठंटा पडे चहरा विवरीत जायतो पीछे दस्तबंध करणेकूं अफीम या लाडेनम जेसी दवाओं देणी नहीं लेकिन नीचे मुजब शरीरमें गरमीलानेवाला उपाय

करणा (५) सालवोलेटाइल बूंद ४० एक प्याले पाणीमें मिलाकर देणा और [illegible] दो घंटेसें अथवा नाडी वहोत धीमे चलती होय तो दरघंटे देते रहणा (६) कर्पूर ३ ग्रेण तथा कपूर ९ ग्रेण इन दोनोंकों १॥ चमचा ब्रांडी डाकतर मिलाकर उसके तीन हिस्सेकर हरेक भागमें एक चमचा पाणी मिलाकर घंटे घंटेमे देते अथवा इन दोनों दवाकी ३ गोलियाकर घंटे २ सें तीन वेर देणी ब्रांडी तथा ... लागीकूं आदेका अथवा कांदेका रस या सूंठके जलमें देणा.

(७) कस्तूरीका अर्क ३० बूंद	मिरच लालका अर्क २० बूंद
सालवोलेटाइल २० बूंद	आदेका रस १ तोला
पाणी २ तोला	टरपेन्टाईन तेल १० बूंद.

(८) नं० ५२४) ५२५) ६२०) तथा ६२२ के मिक्श्चर फायदेवंद है (होमियोपथिक इलाज) (१) केम्फर (कपूर) वहोत अच्छा इलाज है, हैजेके सरु आतमें वहोत अच्छा असर करती है, मात्रा ५ बूंद अनुपान मिश्री रोगके जोर मुजब दससे तीस मिनटके फासलेसे देणा पांच छ वखत देणेसें दस्त उलटी बंध नहीं होय तो ये दवा बंधकर दुसरा इलाज करणा (२) आर्सेनिक पेटमें वहोत दाह प्यास बेचेनी चीकणा ठंढा पसीना नाडी वहोत धीमी जीभ सूकी काली और फटी इत्यादिक दस्त उलटी समेत लक्षण होय तब ये दवा देणी मात्रा २ बूंद पाणीके संग दरएक या आधी घंटेसें (३) कारबो व्हेज रोगी जब ठंढा गार होकर मरणेकी दशामें पडा होय तब ये दवा देणी इसके सिवायकोलोसिन्थ व्हिरेट्रम आल्ब कुप्रम वगैरे दवायें भी कोलेरामें दिये जाती है.

(हैजेकी उलटी) हैजेमें कै वहोत होती होयतो सोडावोटर घंटे २ सें देणा नाडी तेज होय तो उसमें लाडेनमना १० बूंद मिलाणा अगर जो नाडी बिलकुल मंद और क्षीण मालम देतो घंटे २ से एक वाइन ग्लास सेम्पेन नामका ब्रांडी दिलाते हैं, पेटपर राईका लेप करते हैं, अथवा लाडेनम और क्लोरोफोर्म पेटपर लगाणा लाडेनमना ६० बूंद पाव पेतली कांजीमें मिलाकर उस कांजीकी गुदामें पिचकारी मारणा हिचकी वहोत [illegible] बिदामके मगजकूं पीस चमचे पाणीमें मिलाकर वो पिला देणा [illegible] दवा संग वो पाणी मिलाकर पिलाणा (हैजेमें प्यास) सोडावोटर [illegible] प्यासका इलाज करणा दस्त उलटीसे बदनमेंसें पाणीका प्रमाण [illegible] जाता है, वो पूरा करणेवास्ते थोडा २ पाणी पिलाणा चाहिये पाणी [illegible] है, (हैजेमें पेसाब बंध होणा) पेसाब खोलणेकूं बदनमें गरमी [illegible] इलाज बंधकर देणा मूत्राशयपर राईका लेप करणा केसूलेके फूल बांध बांधना रोगीकूं गरम जलमें कमर तक बैठाणा पाणी तथा सोरा खार मिलाकर

इलायची शिलाजीत पाणीके संग पिलाणा सोडा तथा टार्टरिड एसिड पिलाणा (नं० ५३०) मिकश्चर पिलाणा (हैजेमें पेट आफरणा) दस्तबंध होकर पेट आफर जाय तो दस्त आणेका इलाज करणा हरडे साजीखार तथा हिंगाष्टकवाली फक्की देणी ब्लुपील ३ ग्रेण और कपूर १ ग्रेण इन दोनोंकों मिलाकर १ गोली बणाकर देणा ३ घंटेमें दस्त नहीं आवे तो फेर एसी ही गोली देणी.

(हैजेमें वदन ठंढा पडणा) हैजेमें वदन ठंढा पडे तो गरम किये कवेलू याने खपरेल अथवा ईंट अथवा निमककी तथा वेलूकी पोटली तथा गरम पाणी भरी बोतल इसके अंदर किसीकाभी सेक करणा धावली वगेरे गरम कपडेसें वदन ढाककर रखणा शेक करते वदनकूं उघाडा रखणा नही लेकिन् ओढे भये कपडेपर शेक करणा वदन पहोत ठंढा पडे तो पगोंकी पींडीपर राईका पलाष्टर मारणा वदनपर कांदेका रस मसलणा सूंठ तथा अजवाणका खरड करणा बाइंटे आते हैं, जिसपरभी येही इलाज मसलणेमें फायदेमंद है, (खुराक) इस रोगमें कुछभी खाणेकूं देणा अच्छा नहीं है, जहांतक उसके भयानक चिन्ह शांत नहीं होय, वाद मूंगकी दालका पाणी रोगके सर्व लक्षण मिटे वादभी चावलोंकी कांजी याने दलिया मूंगका ओसामणसिवाय भारी और करडा खुराक देणा नहीं जो खाणेकी संभाल नहीं रखणेमें आयगी तो रोग उथला मारकर मौतकी निशाणीपर डालता है, अच्छीतरे आराम भये बाद रोटी वगेरे करडी खुराक देणा.

(विशेष सूचना) हैजेके रोगमें इलाज करणेकी ढील करणी नहीं शरु होतेही जैसा इलाज लगता है, तैसा कुछ एक देर भये बाद लग नहीं सकता दुसरे आसपासकी हवाकूं शुद्ध करणेकाभी उपाय करणा रोगीका हवासें बचाव करणा दिलासा और हिम्मत देणी इलाज जो डाकतर या वैद्य करे वोभी रोगीकूं दिलासा देणा तूं जलदी आराम हो जायगा घभरा मत इसबातसें उसकी हिम्मत वणी रहती है, क्योंके इसरोगके होतेही धसका पडजाता है के मरजाउंगा इसवास्ते दिलासाभी दवा है.

(हैजेकूं रोकणा) हैजेकी बेमारी चलती होय उसवखत जेसें घर कपडे वगेरे बाहरकी चीजों साफ रखणी तैसें पेटभी साफ अजीर्ण नहीं होय एसी तजवीज रखणी जराभी अजीर्ण मालम देतो तुरत उसका इलाज करणा जब इस मरजकी हवा चलती होय उहांतक साजे निरोगी अदमीने नीचे लिखी दवामेंसें एक दवाका सेवन रखणा तो इस हमलेमेंसें बचणेका सरस इलाज है, (१) संजीवनी (नं० २४४) वाली गोलियां नित्य दो गोली फजर सांझ पाणीके संग लेणा (२) सल्फ्युरिक एसिड ३० बूंद कार्बोलिक एसिड २ बूंद पाणी २ औंस मिलाकर एकेक औंस फजर सांझ पीणा. (३) होमियोपैथिक केम्फर पिल्स अथवा रुबीनीका केम्फर १ बूंद फजर सांझ मि-

है, चिकणी और गरम तेसें पसीना लाणेवाली सारक जो जो चीजें है, वो वादीके बेमारीमें अच्छी है, जुदे २ वादीके रोगोंके जेसें खास जुदे २ इलाज होते है, तेसें कोइ यक एसे भी इलाज हे के जो समस्त वादीके रोगोंमें सामान्यतेर उपयोगी है, सो लिखते हैं.

(१) वादीकूं जीतणेवाली दवाये (पृष्ठ) ३१३ पसीना लाणेवाली दवायें (पृष्ठ) ३१५सारक दवायें (पृष्ट)३१५ मगजकूं पुष्टी देणेवाली दवायें (पृष्ठ)३१७(२) गूगल-पुराणे वादीके रोगमें अर्थात् खेंचाताण वाइंटे हिचकी विगरकी वादीमें गूगल बहोत उत्तम इलाज है, अनेक तरेसें गूगल बणता है, जिसमें योगराज सिंहनाद वगेरे गूगल वादीकी बेमारीमें बहोत फायदेवंद है, योगराजका अनुपान घी अथवा घी और सहत (३) वच्छनाग-पुराणी वादीके रोगमें फायदावंद है. तीक्ष्ण और नयी वादीके रोगमें बच्छनागका उपयोग नुकशान करता है, वच्छनागका तेल पुराणी वादीमें मसलणेसे फायदावंद है, (४) कुचीला-वाइंटे और खेंचाताणवाले वादीके रोगमें अच्छा है, पुराणे वादीके रोगमें उलटा नुकशांन करता है.

(५) हींग-खेंचाताणवाली वादीमें हींग फायदेवंद है, रगोंके खेचताणकूं मिटाती है, (६) मालकांगणी-वादीका श्रेष्ठ इलाज है, वादीकूं मिटाणेवाली दवाइयां जेसेके अकलकरा मिरच लोंग गूगल अथवा योगराज वगेरे गूगलके संग देणेसें बहोत फायदावंद है, मालकांकणीका तेल मसलणेसें पेंटमें देणेसे फायदावंद है, (७) लसण-...दीके हरणेमें मुख्य है, वो बहोत तरेसें खाये जाता है, १ लसणकी कलियोंकूं पीस ... तिलका तेल मिलाकर सींधानिमक मिलाकर देते हैं, २ लसणका कल्क (चटणी) ... तेलके संग घीके संग भातके संग अथवा चिकणे गरम औरभी पदार्थ संग ...) सेंचल अजवाण सेकी हींग सींधानिमक सूंठ मिरच पीपर इनोंके ...ंचगुणा लसण और लसणके चोथा भाग जितना तेल इन सबोंको ...रमें हमेश १ रुपेभर चाटणा उसपर एरंडकी जडका क्काथ पीणा. ... वादी हरता है, उडदकी दाल उडदके घडे वगेरे पदार्थ तेल ... सिवाय मापवलादि क्काथ, एरंडकी जड कौंचबीज अहिंसर (मापतैल) उडद सींधानिमक कांसकी दशमूल हिंग बज ... तिलका तेल घणाणा और मसलणा (९) रास्ना अच्छा ... रास्नाकी थंगली जेसी लकडियां मिलती है, वो रास्ना अच्छी ...जूडीयां मुंबई भावनगर वगेरे बंदरोंमें बजारमें विकती है, खात् ...लोक इसकूं उसधा कहते हैं, एसी रास्ना फायदेवंद है, रास्नादि क्काथ बहोत तरेका होता है, उसमें महारास्नादि क्काथ (नं० २१४) बहोतही फायदेवंद है, ये

वादी एकदम जोरसे हमलाकरे उसकेसंग बुखार वगेरे दुसरे उपद्रव हो जाय तो उसका तीक्ष्ण रूप जाणना और वो तीक्ष्ण वादी कुछ इक मुद्दत वीतनेसें जीर्ण होती है, अथवा पहलेहीसें धीरे २ सांधे झिलते हैं, तीक्ष्णसंधिवायु जो सुधरती है, तो जलदी आराम होता है, अगर जो नहीं सुधरी तो जीर्णरूप पकडती है, तब आराम होते देर लगता है, और मिटे बादभी फेर घेर २ दिखाई देती है, तीक्ष्ण संधिवायुमें पहलीएका ४ दिन थोडासा बुखार आकर पीछे बुखार फेर जादा जोर करता है, बदनपर पसीना नाडी जलद जीभपर सुपेद थर शिरमें दरद प्यास दस्तकी कबजी पेशाब थोडा तथा लाल इत्यादिक चिन्ह मालम देते हैं, वादीके रूपमें दोडणेवाला ये मरज एकाध सांधेमें आकर पीछे दुसरे सांधोंमें घुसता है, तीक्ष्णरूपमें हाथ पांवके सांधे सूज जाते हैं, और उसमें बेसुमार दरद होता है, किसी २ वखत बुखार चढकर १०५ से ११० डिग्रीतकभी पोंहच जाता है, ये दरद मात्र सांधोंमे रहकरबंध नहीं होता किसी २ वखत वो स्नायु रक्ताशय वगेरे भागोंमें भी घुसता है, रक्ताशयमें जाणेसें महाभयंकर हो जाता है इसवास्ते तीक्ष्ण संधिवायूमें रक्ताशयकी परीक्षा करणी क्योंके उस वखत रक्ताशय (हार्ट) धमणकीतरे बहोत जोरसें चलता है, नाडी बेहद जोरसें चलती है, छाती दुखती है, तथा उछलती है, चेहरा दुखसें दीन बडा उदास हो जाता है, साधारण संधिवायु दो चार अठवाडेमें मिटता है, और तीक्ष्णरूपमें जो प्राणी मरता है, वो रक्ताशयके दरदसें मरता है.

इलाज–खटाई खाणेसें अथवा एसाही दुसरा नजीकके कारणसें सांधा झिलता है, वो खट्टेका विरोधी गरम और क्षारवाले पदार्थ खाणेसें विगर महनत किये खुलकर मिट जाता है, साधारण वादी आती है, तब दस्त एक दोय साफ आवे एसी रेचक दवा लेणेसें तथा दुखते सांधेपर तेलका मालिस और शेक करणेसें मिटजाता है, संधिवायूके दरदका इलाज, वधे भये एसिडकूं निकालणा क्षारकूं वधाकर खूनकूं जादा पतला करणा. सांधोंके दरदकूं कम करणा बुखार मिटाणा खून सुधारणा ये जरूरका इलाज है, दरद मिटे तहांतक हमेस दस्त साफ आवे एसी दवा लेणी इसकेवास्ते एरंडीका तेल बहोतही अच्छा है, (१) आगे वातव्याधिमें जो जो इलाज दिया है, वो सब संधिवायुमें फायदा करणेवाला है, (२) तीक्ष्णसंधिवायुमें रास्ना आसगंध एरंडकी जड गूगल फायदा करता है और पुराणे संधिवायुमें मेथी तथा लसण फायदेमंद है, (३) एरंडीकी जड तथा सुंठका काढा एरंडका तेल डालकर थोडेदिन पीणा (४) लसणका रस १ तोला इसमे तली हींग जीरा सींधानिमक संचल त्रिकटु सब दवा एकेक वाल मिलाकर पीणा उसपर एरंडकी जडका काढा पीणा (५) सुंठ एरंडीकी जड देवदारू गिलोय कांयफला, इनोंका काढाकरके पीणा (६) रास्ना एरंडीकी जड देवदारू बज

सुंठ धमासा हरडे अतीस नागरमोथा शतावर अरडूसेके पत्तोंका काढा पीणा (७) अजमाण पीपर सूंफ नागरमोथा मिरच सींधा ये सब एकेक भाग हरडे ६ भाग सुंठ १० भाग वधारा १० भाग भाडंगी ३६ भाग इन सबोंका चूर्ण गुडकी चासणीकर मिलाकर गोली चणाणी गरम पाणीसें लेणी (८) सुंठ हरडे लींडीपीपर निशोत संचल इनोंका चूर्ण थोडा दिन खाणा (९) शुद्ध गंधक हमेश चार आणीभर दूधके संग पीणा (१०) हरडे सुंठ देवदारू ये तीनों समभाग गूगल तीनोंसें दूणा इन चारोंको कूट एरंडीके तेलमें घोटके बेर २ जितनी गोलियांकर एकेक लेणा (११) लसणपाक आगे लिखा है, वो तथा एरंडपाक, १६ तोला एरंडीके बीज अठगुणे दूधमें उकालणा आधा दूध जले पीछे उसमें ८ तोला घी ३२ तोला मिश्री और लसणपाकमें लिखीगई सब दवाइयां प्रत्येक चार २ आनाभर महीन पीस डालकर पाक तइयार करणा ये दोनों पाक पुराणे संधिवायूमें बहोत फायदेबंद है, (१२) गरमी तथा सुजाक (फिरंगसें) संधिवायू भई होय तो महारास्नादि काथ अथवा महामंजिष्ठादि काथ (नं० २१५ २२१) योगराज गूगल अथवा किशोर गूगल (नं० २५५ ५६) मिलाकर कितनेक दिन पीणा चोपचीणीका चूर्ण तथा चोपचीणीका पाक (नं० २८०) उपदंशके जीर्ण संधिवादीमें बहोत फायदा करता है–अंग्रेजी इलाज–तीक्ष्ण तथा पुराणी संधिवादीमें इस मुजब करणा–तीक्ष्णसंधिवादीमें (१३) साधारण संधिवादीमें रोगीकूं आराम देणा और दुखते सांधेपर ये लोसन धरणा–कारबोनेट ओफ सोडा अथवा कारबोनेट ओफ पोटाश ½ पाउन्ड उसकूं १ कार्ट गरम पाणीमें मिलाकर उसमें कपडा भिगाकर सांधोंऊपर लपेटणा और उसपर तेलमें डुबाया भया रेसमी कपडा लपेटणा जो चलते हिलते बहोत दरद नहीं होता होय तो उसपर गरम वाफ हमेस देणा. वाफ देते वखत गरम पाणीमें कारबोनेट ओफ सोडा एकाध सेर डालकर वाफ देणा. (१४) जो दस्त खुलास नहीं आता होय तो उस वखत दस्तावर दवा नं० ४६१ ४६२ की मिलावट दवा देणी और नींद नहीं आवे तो डोवर्स पाउडरका १० से १५ ग्रेनका एक खुराक देणा रातकूं (१५) तीक्ष्णसंधि वायूमें अव्वलसें आखरतकके इलाजोंमें रोगीकूं हलका खुराक देणा और उत्तेजक तथा मादक सराप वगेरे अत्यंतपणेकर त्याग देणा (१६) इसके सिवाय तीक्ष्ण संधिवायूमें नं० ५२८ ५८३ ५८५ ५८६ वाले अंग्रेजी मिक्श्चर तथा नं० ६९४ ६९५ ६९६ तथा ६९७ के हकीमी ऊसके उनोंका उपयोग करणा (१७) जो संधिवायूके चिन्ह रक्ताशय ऊपर मालम पडे तो दरदकी जगे विलिस्टर मारणा और नं० ४९८ वाला मिक्श्चर तीन२ कलाकसे देणा सरु रखाणा और कलेजेका भागकोरसूजी भइ मालम दे तो तब दवा बंधकर देणा (पुराणी संधिवायू–(१८) वदनमें उपदंश वगेरे गरमीका कारण होय तो उसकूं दूर करणेका इलाज

करवाणा भी जी भई गीली सरदीकी जगे गीलीदिवाल पूरा कपडा नहीं पहरणा वगेरे संधिवायूकूं मदत देणेवाली अडचलोंकों दूर करणा और पूरा पोपण कारक अच्छा खुराक खिलाणा गरम कपडे फुलालीन वगेरेके पहराणा गरम दवा गरम खुराक रातकूं डोवर्स पाउडर और दरदकी जगे ग्रासन तेलका मालिस ये सब काम संधिवायूके वास्ते अच्छा है, (१९) नं० ५०५ तथा ५२८ का मिक्श्चर अनुक्रमसे अजमाणा और नं० ५९४ वाला लिनिमेन्ट उपयोगमे लेणा (२०) इसके सिवाय नीचेका मिक्श्चर जरूर पडे तो ऐकके पीछै एक अजमाके देखणा नं० ५८७ ५८८ ५८९ वगेरे होमियोपैथिक इलाज–एकोनाइट तथा ब्रायोनिया ये दोनों चीजों तीक्ष्ण संधिवायूके वास्ते सर्वोत्तम इलाज है, संधिवायूके तीक्ष्णरूपमें रिदयमें विकार युमोनिया (फेफसेका वरम) तथा फेफसेके पुडका वरम वगेरे भयंकर रोग वढ जाणेका भय रहता है, तीक्ष्णसंधिवायूमें ये दो दवायें दो दो तीन २ घंटेके अंतरसे वारी फिरत देणा इससे बुखार तथा दरद नरम पडे इतनाही नहीं लेकिन इससे संधिवायूका दरदभी मिटता है, ब्रायोनिया लिनिमेन्ट करके तेल होता है, वो बाहर लगाणेके काममें लिये जाता है, ये दवा दोनोंसें फायदा नहीं होय तो हसटोक्स अर्निका वेलाडोना पल्सेटिला वगेरे दवायोंका उपयोग करणा (पुराणे संधिवायूमें) नीचेकी दवा दी जाती है, ब्रायोनिया सांधोंमें उष्णता और सोजन और चलते दरद होता है, तब ये दवा जादा उपयोगी हैं, होडे न्ड्रॉन सांधोंमे फटणे माफक दरद होय तथा गोडेमें सोजा तथा ललाई होय तो ये दवा अच्छी है, हसटोक्स सांधे अकड जाय चलणेकी सरुआतमें वहोत दरद करे और कुछ यक चले पीछै दरद कम होय एसे दरदमें ये दवा फायदे बंद है, पलसेटिला घुंटणें गिरिये वगेरे सांधोंमें वादी आई होय और रातकूं दरद वढता होय, औरतोंके, ऋतुधर्मकामरज होय तब ये दवा उपयोगी है. संधिवादीका उपचार वाहिरका (२१) संमालू (निर्गुडीके) पत्तोंकों वाफकर सांधोपर बांधणा (२२) दश मूलके उकालीमें तेल डालकर उसकूं फेर उकाल तइयार किया भया तेल मसलणा (२३) मालकांकणी कडवी जी भी अजवाण मेथी तथा तिल इनोंकों पीलके तेल निकालणा (२४) नारायणतेल ऊपर लिखा है, वो वहोत अच्छा इलाजहै (२५) पंवूलकी तथा सहजणेकी छाल पीस उसका लेप करणा (२६) सहत तथा कली चूनेकूं हथेलीमें मथकर दरदकी जगे लगाकर ऊपर रूई चपकाणी (२७) गूगल तथा गूजरका लेप (२८) सोवा देवदारू कूठ और सींधानिमककूं पीस आकके दूधमें मिलाकर लेप करणा (२९) टीनीमेन्ट और टिंकचर आयोडीन पांसे लगाणा (३०) नं० ४४१ के पेटेमें लिखे भये लिनिमेन्ट वापरणा (३१)

नं० ३११ ३१८ का लेप संधिवायूपर फायदा करता है, एकही सांधीमे दरद होय तो (केन्थारीडीस पलास्टर मारणेसें तुरत फायदा होता है.

(विशेप सूचना) ये सब वाहरके इलाज दरदकूं कम करता है, लेकिन् दरदकी जड खून सुधारणेवाली दवापीये विगर जाती नहीं और एक वेर मिटे पीछे फेर होजाता है, इसवास्ते संधिवायू मिटाणेकूं कितनेक दिनोंतक खून सुधारणेकी दवाओंका सेवन करणा चाहिये तीक्ष्णसंधिवायूवाले रोगीने बुखारके रोगी. जितनी संभाल रखणी पवनमें तथा शरद हवामें फिरणा नहीं. ठंढे पाणीसे नाहणा नहीं. बहोत गरम बहोत ठंढा तथा लूखा पदार्थ खाणा नहीं. ठंढा यानेवासी अन्न खाणा नहीं सूकी और गरम हवावाले प्रदेशमें रहणा. खुराक पोपण कारक लेणा लेकिन हलका लेणा पथ्य—दूध घी तेल मधुररस तिल गहूं उडद एकवर्षके पुराणे चावल कुलथी परवल सहजणा लसण अनार केरी और चिकणा तथा गरम पदार्थ फायदा करता है, अपथ्य—चिंता उजागरा दस्त पेशाबकूं रोकणा अथवा कबजी उलटी करणी महनत लंघन चणा मटर कांग चवला जामुन सुपारी वाल करेले पत्तोंका शाग ठंढा अनाज ठंढा पाणी बहोत क्षार तुरा (खट्टा) कडवा तथा तीखा पदार्थ गरम मशाला सराप वगेरे नसेके पदार्थ उत्तेजक पदार्थ और मैथुन तथा घोडे वगेरोकी असवारी इतनी वाते नुकशान करती है, पुराणे संधिवायुवालेने शक्तिमुजब खुली साफ हवामें चलणे फिरनेकी कसरत करणी. तीक्ष्ण संधिवायुमेंसे दुसरे रोग पैदा होते सो-रक्ताशयका घट्ट होणा तथा वंध होणा फेफसेका रोग (न्युमोनिया) प्ल्युरीसी वगेरे (कोरीआ बच्चोकामरज जिसमें बच्चोंके हाथ पांवके तथा वदनके कितनेक स्नायु इच्छा विगर हमेश चलते रहता है, आंखके भांफणीका वरम याने पुडतपर सूजन आंडोंका सोजा तथा गंठियावायु वगेरे बहोतसे उपद्रव होजाता है, उसमेंभी जब रक्ताशय वगेरे मर्मके ठिकाने संधिवायूका विकार प्रवेश करजाता है, तब ये रोग बहोत भयानक होजाता है, फेर तो थोडेही बचते हैं.

आमवात.

वर्णन—जिन २ रोगोंमें वायूका प्रकोप होता है, अथवा वायू दुसरी धातूकूं प्रेरणा करती है, उन सब रोगोंकूं आर्य वैद्यक शास्त्र कारोनेवादीके रोगोंमें गिणा है, अथवा उसकेसाथ वात एसा शब्द लगाया है ये दुसरे प्रकारमें आमवात वातरक्त वगेरोंका समावेश होता है, अंग्रेजीमें आगे लिखे मुजब ज्ञान तथा गति तंतुओंके और मगजके रोगोंमें जुदा गिणाया है, जिस रोगकूं आर्यवैद्यकशास्त्र आमवात लिखता है, उसका अंग्रेजीमें संधिवायू अथवा गंठिया वायूमें समावेश होगया मालम देता है, क्योंके आमवातमेंभी धोंमें सोजन आता है, और दुसरे कितनेक लक्षण तैसे इलाजभी संधिवायूके रोगमें लिखा उस मुजब है.

कारण–प्रकृति विरुद्ध आहार विहार करनेवाले मंद अग्निवाले कसरत याने चहिये जितना मेहनत नहीं करणेवाले ऐसे अदम्योंका आम (जठरका कच्चारस) वायूसे चलाय मान होकर कफके ठिकाणोमें जाता है, उहां कफके संबंधसें जादा विगडकर वदनमें आमकूं फेलाणेवाली धोरी रगमें घुसता है, तब ये अन्नरस वायूपित्त तथा कफसें विगडके सवनसोंमें भरजाता है, ये आम अनेक रंगका चीकणा और तेलिया होता है, इस आमयुक्त वायू तथा कफ एकही समय कुपित होकर कमरमें प्रवेश कर वदनकूं जड बनाता है, भारी और चिकणापदार्थ खाकर तुरत महनत करणेसें भी ये रोग होता है.

लक्षण–ये रोग बहोत दुखदायक तथा भयानक है, इस रोगमें संधिवायू तथा अजीर्णके मिले लक्षण होते हैं, हाथ पांव गिरिये कमर गोडे और जांघोंकी सांधोंमें दरद करता भया सोजन होता है, जठराग्नि मंद पडती है, मूंमेसें फेणवाला पाणी छूटता है, जिस २ जगे आंम पोहचता है, उस जगे बिच्छूके डंक जेसी वेदना होती है, अन्नपर अरुचि होती है, वदन भारी होता है, सोजनमें जलण होती है, पेशाब बहोत होता है, शूल चमका होता है, दिनकूं नींद आती है, रातकूं नहीं आती प्यास उलटी उकारी भ्रम मूर्च्छा छातीमे दरद शूल दस्तकी कबजी शरीर जड जकडा भया होता है, इत्यादिक आम वातके लक्षण है, तीनूं दोषवाला और जिसमें सब वदनमें सोजन आई भई होती है, वो आमवात असाध्य है.

इलाज–ऊपर संधिवायूके इलाज लिखे हैं, वो बहोतसे आमवातकूं मिटाते हैं, इसके सिवाय नीचेके इलाज अजमाणा.

(१) सूंठ तथा गिलोयका काढा पीणा कितनेक दिनोंतक (२) सूंठ तथा गोखरूका क्वाथ आमवात कमरकी शूल तथा पीठकी शूल मिटाता है, (३) रास्ना देवदारू मिलावा सूंठ मिरच पीपर एरंडीकी जड साटेकी जड गिलोय इसके उकालेमें सूंठ का कल्क अथवा सूंठका चूर्ण अथवा एरंडीका तेल डालकर पिलाणा (४) इकेली सूंठका उकालाकर उसमे एरंडी तेल डालकर देणा (५) दशमूलके उकालेमें एरंडी तेल (६) एरंडीके जडके रसमें सूंठ मिलाकर उसके गोलेका पुटपाककर उसमें सहत डालकर पीणा (७) सूंठ पीपर पीपलामूल चित्रक चव्यका क्वाथ देणा (८) साटेकी जडके क्वाथमें सूंठ तथा कचूर मिलाकर पीणा (९) रास्ना गिलोय एरंडीकी जड देवदारू और सूंठका क्वाथ (१०) लसण सूंठ और निर्गुंडी (संभालूके बीज) इनोंका क्वाथ (११) सूंठ हरडे तथा अजवाण इनोंका चूर्ण खट्टी छाछमें अथवा गरम पाणीमें पीणा (१२) साटेकी जड भूंगणी एरंडीकी जड मरवा जाठ और सहजणा इन सबोंका पंचाग लेकर उसका क्वाथ करके पिलाणा (१३) सरसूंके तेलमें फिर

मालेके पत्ते सेककर सांझकू खाणा और पीछे व्यालु करणा (१४) हरडे १२ भाग सूंठ ४ भाग अजमोद ४ भाग खुरासाणी अजमाण दो भाग सींधानिमक २ भाग बारीक चूर्ण खट्टी छाछके संग या गरम पाणीके संग पिलाणा (१५) सूंठ २४ भर धाणा ८ भर इनोंका कल्ककर उसमें ६४ तोला घी तथा २५६ तोला पाणीमें डाल घी बाकी रहे उहांतक पकाणा इयघी आमवात मंदाग्नि वायू तथा कफकूं दूर करता है, (१६) सूंठका कल्क ५ रुपेभर सूंठका क्काथ २५६ भर घी ६४ भर इन सर्वोकों उकाल घी तइयार करणा ये घी कफ वायू मंदाग्नि तथा आमवातकूं मिटाता है, (२७) सुंठका पुटपाक, अजमोदादि चूर्ण—अजमोद वायविडंग सींधा निमक देवदारू चित्रक पींपलामूल पींपर सोवा मिरच ये दरेक एकेक तोला हरडे ५ तोला वरधारा दश तोला सुंठ दश तोला इन सर्वोका चूर्ण गरम पाणीमें अथवा दूने गुडमें मिलाकर देणा (१८) रास्नादि क्काथ (नं० २१४ १५ १९) योगराज गूगल (नं० ५८) (२०) खंडशुंठी—सूंठ ३२ तोला घी ८० तोला दूध १२८ तोला खांड २०५ तोला इनोका पाक करके इसमें सूंठ मिरच पींपर तज तमालपत्र और इलायची एकेक चार तोला ले चूर्णकर मिलाकर पाक खाणा (२१) गोमूत्रके संग गूगल पीणा (२२) सूंठके संग हरडे चाटणी (२३) तिल तथा सूंठ पीसकर उसकी चटणी खाणी (२४) सुंठ हरडे तथा गिलोयके क्काथमें गूगल डालकर गरम गरम पीणा (२५) लसणका रस तथा गउका घी एकेक तोला पीणा.

पथ्य—विशेष सूचना—लंघण शेक रेच बाफे भये जवका जल बाफे भयें वेंगण कडवे फल लसण मोरवेल साटेके पत्तोंका शाग परवल करेला, जव पुराणे, लाल चावल, कुलथीका मटरका तथा चणोका ओसामण सब लूखा अन्न छाछ लसण कडवा तथा तीखा पदार्थ—कुपथ्य—दही गुड खारवाले पदार्थ उडद मलमूत्रका अटकाव ओजागरा जड और कफकारक पदार्थ चिकणा और भारी पदार्थ जेसें घी मख्खण मलाई मेदेका पदार्थ पिसा अन्न.

वातरक्त—

ले प्रसी.

लोक इस बेमारीकूं रक्तपित्त कहते हैं, सो नही वातरक्त और रक्तपित्त अलग रोग है, रक्तपित्तका स्वरूप आगे लिखेंगें.

कारण—आरोग्यताके नियमसें विरुद्ध प्रकृति विरुद्ध तथा स्वभावसें विरुद्ध एसे खानपान संग खाणे पीणेसें ये रोग पैदा होता है, इस रोगके पैदा होणेका खास या पक्का कारण अभीतक डाकदरोंकों मिला नहीं है, अभीके सोधकोने एसा सिद्ध किया है, के ये रोग एक सूक्ष्मकीडेसें पैदा होता है, वातरक्तका भयंकर रोगचेपी है, याने

उपदंशकी तरे स्पर्शसें ये फेलता है, फेर वो ओलादमेंभी ऊतरता है, इसवास्ते वातरक्त-वाला रोगीका संसर्ग करणा नही एसे रोगीके संग व्याह करणा नहीं गरीब भिक्षारी लोक जो खराब विगडा भया अन्न खाणेवाले हैं, उनोंमें ये रोग जादा देखणेमें आता है, खराब खानपानसें वायू तथा खून विगडता है, दूषित भये वायूकेसंग खून मिला भया होता है, इसवास्ते इसका नाम वातरक्त है.

लक्षण–वातरक्तके पूर्वरूपमें प्रथम चिन्हतरीके वदनपर अत्यंत पसीना आता है, अथवा विलकुल आता नहीं स्पर्शका ज्ञान कम होता है, सांधे ढीले होते हैं, अंग जड होता है, वदनमें सुई चुभाणे जेसी वेदना होती है, मेद भारीपणा तथा ग्लानी होती है, खुजली तथा जलण होती है, और वदनपर चकर २ होते हैं, रोग वढे वाद इसके चिन्ह प्रगट मालम देते हैं, उंदरिया वायूकी तरे वदनपर गांठे तथा चकते उठकर सव वदनपर विशेष करके कपाल वगेरे मूंके अवयवोंपर सोजा चमडीपर तग तगाट और ललाई हाथ पांवोंकी अंगलिया टेढी होणी नख खिर जाणा जलण चमडी फूटणी पाणी झरणा मांस गिरपडणा ये सव आखरीके चिन्ह हैं, इस रोगकी मुख्य दो खासियत है, गंठिया वातरक्त तथा शून्य वातरक्त कितनेक आदमियोके वदनपर गांठे २ हो जाती है, और कितनोंके वदनपर चमडी शुन बहरी याने स्पर्शका ज्ञान विगरकी हो जाती है, और बहुतोंके दोनों रूपसें दिखाई देता है, कितनेएकोके अलग २ भी होजाता है, (गंठिया वातरक्त–गंठिया गलत कोढ दो तरे सरू होता है, बुखारके संग लाल चमडीपर चट्टे होजाते हैं, अथवा बुखार विनाभी सरू होजाता है, पहली चट्टे लाल भूरे रंगके होते है, पीछे सुजकर उसमें गांठेबंध जाती है, मूं गाल नाक कान वगेरे अवयवोंकी चमडी जाडी सूजी भई तथा तगतगती दिखती है, और पीछे वदनके दुसरे भागोमें भी एसा फेरफार होता है, इस रोगके सरु भये पीछे प्रगट चिन्ह देखाते २ किसी २ वखत बहोत मुद्दतवीत जाती है, चाठोंसे गांठे होती है, वो गांठे वढकर वडी होणेसें उसमेंसें फूटकर पीप वहता है, नाककी हड्डी सडकर नाक चपटा होता है, वदनके ऊपरके छेडेपर एसा फेरफार होजाता है, तब दुसरी तरफसें नीचेके छेडेपर पांवोंकी अंगुलिया मुड़ जाती है, पाणी झरता है, तथा गलके गिर पडती है, हाथ पैर ठंडा होता है,या हाथ पेरमें अंगारसी जलती है, और पीछेसे शून्य होकर निकामी होती है, शून्य वातरक्त–हाथ पैर अथवा वदनका कोईभी भाग शूना पडता है, चमडीकी ये शून्यता अकस्मात रोगी नहीं समझसके इसतरे आती है, रोगीकूं अचंभा होकर शून्य बहरी पीछे मालम देती है, किसी २ वखत वदनपर फफोला उठता है. पीछे ये फफोला फूटकर पीछा मरीजकर इस जगे सुपेद दाग पडता है, फेर दुसरी जगे फफोला उठता है, प्रथम सरु आत हाथ पैरसें होता है, वदनपर चट्टे होते हैं, उसकी चमडी सूकी

और शून्य वहरी होती है, ये चठे फेलते जाते हैं, इय इहांतक शून्य होते हैं, सो इस भागकूं जलावे या काटे तोभी रोगीकूं मालम पडती नहीं इस गलत कोढ रोगमें अंगुलिया सडके नही पडती फक्त अंदर सकुडाकर ठूंठा होजाती है,

इलाज—वातरक्तका अकसीर इलाज युरोपि लोकोंके अभीतक कुछ हाथ नहीं लगा है, तोभी ये रोग सरु होतेही जो दवाई देते हें, सो लिखते हैं, (१) शोधक दवाये (पृष्ट ३१५) सारक शोधक दवायें (पृष्ट ३१५) तथा रोपण दवाये (पृष्ट३११) (२) गिलोय उत्तम इलाज है, इस वास्ते गिलोयके काथमें एरंडीका तेल अथवा गूगल डालकर वहोत दिनोंतक सेवन करणा अथवा गिलोयका रस कल्क चूर्ण कर उसका सेवन करणा (३) गिलोय तथा गूगलकी त्रिफलाके काथमें गोलियां करके उसका सेवन करणा (४) अरडूसेका पत्ता गिलोय तथा अमल तास इनोकी उकालीकर एरंडीका तेल डालकर पीणा (५) तीनसे पांच हरडेकी छालका चूर्णकर गुडमें मिलाकर हमेश खाणेमें आवै उसपर गिलोयका काढा पीणा इससे भयंकर वातरक्त मिटता है, (६) दूधके संग एरंडीका तेल हमेश पीणा दस्त लगकर एरंड तेल पच गये पीछे दूधभातका भोजन करणा इसतरे वहोत दिनोंतक सेवन करणेमें आवै तो वहोत दोषोंका गलत कुष्ठ मिटता है, (७) गिलोयके काथमें गिलोयका काथ तथा कल्क डालकर चोगणा दूधमें सिद्ध करा भया घी खाणेसें वहोत फायदा होता है, अथवा गिलोयका काथ या स्वरसमें गिलोयके कल्कसे पकाया भया घी, सरु होता अथवा पुराणा भी वातरक्त मिटता है, (८) आकडेकी जडका वहोत दिनोंतक सेवन करणा (९) सोनामुखीका पवित्र चूर्ण (नं० १८६) वहोत दिनोंतक सेवन करता जाय तो वातरक्तकूं फायदा करती है, (१०) मोगरेकी छालका तेल १० से ३० बूंद चूनेके नितरे भये जलमें हमेस दिनमें दो तीन वखत देणा (११) उंदर कर्णीका रस पीणा उसके पत्ते पीस लेप करणा (१२) असालियेकी जड तथा छालका काथ मिरचके दाणे डाल चार छ मासा पेर पीणा (१३) काली जीरी त्रिफलाके काथमें पीणा (१४) गल्जी भी याने गाय जवां वातरक्तकी जलण मिटाती है, इसके सिवाय बडे इलाज बण सके तो नीचे मुजब करणा आचारांग सूत्रके टीकाकार श्रीशीलांगचार्य लिखते हैं, की साधूके ये रोग होजाय और कोई भी दवासे शांत नहीं होय तो वैदके हुक्म मुजब मच्छीके मांसमें या और बिना हड्डीके गरम मांससे कइ दिनोंतक इसके मनसूंसेके तो आराम होय इसकूं [illegible] विष रोग करके लिखा है, ये हुक्म महा [illegible] पढनेमें याद के इसानेक वास्ते साधुओंको सूत्रकारनें हुक्म दिया है, उहां मोक्षा [illegible] किया याद [illegible] नतु [illegible] इस लेखको बुद्धिवानोंने सामान्य नहिं [illegible] [illegible] तथा सामान्य साधुने [illegible] नहीं आचार सूत्रका आशय गंभीर है, गीतार्थो को [illegible] है. तुच्छ बुद्धिवे [illegible] करोंगे इति.

(१५) अमृताद्य घृत–गिलोय मोलेठी दाख त्रिफला सूंठ खपाट अरडूसा अमलतास सपेद साटेकी जड देवदारू गोखरू कुटकी मजीठ पींपर राशा एरंडीकी जड वरधारा मोथ कमल इनोका कल्क करणा ६४ तोला आंवलेका रस ६४ तोला घी और १९२ भर पाणी सबकूं एकठा मिलाकर पकाकर तइयार करणा इस घीकूं दवा तरीके तेसें भोजनमें लेणेसें इस रोगमें बहुत फायदा करता है, (१६) गडूची तेल–गिलो तोला ४०० भर उसकूं १०२४ तोला पाणीमें उकाल चोथा भागका पाणी रखके छाण लेणा उसमें १०२४ तोला दूध तथा मोलेठी मजीठ जीवनीय गणके मिले इतनी दवा कूठ इलायची अगर दाख जटामांसी नखल्या संभाल्रूका बीज गोरख मुंडी सूंठ मिरच पीपर सोवा काकडासींगी उपलसिरी तज तमालपत्र अरणी समेरवा भू अंवली तगर नागकेशर वाला पद्मकाष्ट कमल रगतचंनण इनोंमेंसें जितनी मिले इतनी दवायें एकेक तोला लेकर चटणी करणी तथा २५६ तोला तेल इन सबोंकों धीमें तापसें पकाकर तेल सिद्ध करणा ये तेल वातरक्तके रोगीके पीणेकूं देणा बदनपर मसलणा पिचकारी मारणी इससें वातरक्तके सर्व विकार मिटते हैं, (१७) मधुक तेल–चार तोले मोलेठी का कल्क करणा ६४ तोलाभर तेल २५६ तोला दूध तीनोंकों मिलाकर मंद आंचसें तेल तइयार करणा इसतरे तइयार किये तेलकूं फेर इसीतरे १०० वेर अथवा १००० वेर पकाणा एसे तेलसें वातरक्त वगेरे बहोतसे रोग मिटकर धातू पुष्ट होता है, तथा ऊमर बढती है.

(१८) मंजीष्टादि क्वाथ–(नं० २२०) त्रिफला गूगलके संग अथवा किशोर गूगलके संग बहोत दिनोंतक सेवन करणा (१९) चंद्रप्रभा गुटिका– (नं० २४६) अनुपान–पाणी दूध छाछ दरटंक २॥ मासेसें १ तोलेतक गोलीका सेवन करणा (२०) किशोर गूगल त्रिफला गूगल तथा गोक्षुरादि गूगल नं० ५८ अमृता क्वाथ (नं०५७) वासादि क्वाथ नं० २१२ अमृता घृत (नं० २८८) जो गलत रोग अंदर बहोत नहीं घुसा होय तो उसपर लेप मालिस सींचणा तथा ऊपर दवा बांधणी अगर जो दोष अंदर घुस गया होय तो जुलाब पिचकारी तथा स्नेहपान घी तेल पिलाणा बाद योग्य दवायोंका सेवन करणा बाहारके इलाज इस मुजब (२१) पकरीके घीमें अथवा दूधमें गहूंका आटा मिलाकर लेप करणा (२२) तिलकूं सेककर पीसणा उसकी चटणी दूधमें उकाल उसका लेप करणा (२३) अलसीकूं दूधमें पीस लेप करणा (२४) एरंडीके बीजोंकों पाणीमें या दूधमें पीसकर लेप करणा (२५) भेंसका मक्खण गंधक गोमूत्र दूध और सीधानिमक इन सबोंकों एकठाकर धीमें तापमें अग्निपर गरमकर बदनपर मसलणेमें बदनका फटणा तथा चिणक मिटती है. (२६) सो वेर अथवा हजार वेर पाणीमें धोया भया घी और राल मिलाकर लेप करणा सो

खूनके विगाडका वातरक्त मिटता है, (२७.) दशांग लेप नं० ३१२ असालिया और तिलका लेप करणा (२८) सरसूं नींबके पत्ते आक जटामासी जवखार और तिलकूं पीस लेप करणा (२९) मसूरकी दालकूं मखणमें पीस अथवा सहजणेके फलोंके बीज पीस लेप करणा (३०) गरजनका तेल १ भाग और सालिड ओइल ४ भाग मिलाकर फजर सांझ वदनके मसलणा अथवा बावचीका तेल या चिरोंजीका तेल अथवा कारबोलिक तेल (१) भाग कारबोलिक एसिड और १०-१५ भाग तिलका तेल वदनके मसलणा अभयामोदक पतंवाणी दवाहे.

विशेष सूचना-वातरक्तका रोग बहोत भयंकर है, इस वास्ते इस रोगमें दवाका साधन बहोत महीनोंतक करणेसे फायदा होता है, इस रोगीकूं कुटंबसें अलग रखना अदमीसें स्पर्शतक नहीं होणा चहिये अच्छा पथ्य खुराक स्वच्छ हवा सफाई रखनी चाहिये पथ्य-पुराणे जव पुराणे चावल पुराणे गहुं साठी चावल तूर मूंगकी दाल अथवा ओसावण कुलथी चवलाई (चंदलिया) ये दवाका काम कर सकती हे, दूधी (कडूला) तोराई दूध घी सीधानिमक वगेरे-कुपथ्य-कसरत स्त्री सेवन क्रोध उष्ण पदार्थ खट्टा तथा खारा पदार्थ दिनकी नींद शरद तथा भारी पदार्थका त्याग करणा.

रक्तपित्त.

स्कर्वि.

इसके सिवाय पांवपर और दुसरी जगे भी जामुनके रंग जेसें चट्ठे होते है, चांदी(घाव) गिरता है, उसमेंसें खून गिरता है, पांवपर सूजन होता है, जखम रुककर फेर फूट जाता है, भूख लगती नहीं दस्तकी कबजी होती है अथवा जादा दस्त मरोडा रक्तातिसार होजाता है.

प्रकार—देशी वैद्यकशास्त्र मुजब रक्तपित्तका मुख्य दोप्रकार है, १ उर्द्धगत तथा २ अधोगत, उर्द्धगत ऊपरके छेद नाक कान आंख मूंके रस्ते वहणेवाला और अधोगत याने नीचेके छेदोमेंसें योनी गुदामेंसें वहणेवाला ऊर्ध्वगत रक्तपित्त साध्य होता है, अधोगत कष्टसाध्य होता है, तथा दोनों संग होय और रोगी वृद्ध होय और अशक्त होय तो असाध्य होता है.

इलाज—कमया जादा दोष मुजब छोटे बडे उपाय नीचे मुजब (१) अरडूसा अच्छा इलाज है, उसकी बनावट—वासास्वरस—वासा पुटपाक वासादिकाथ—वासावलेह वासाखंड पाक देखो (नं० ६) अरडूसेका चाटण (नं० २६८) (२) कोला-उसकी बनावट—खंड कुष्मांडपाक (नं० २८२) कुष्मांडावलेह (नं० २६६) (३) दाख द्राक्षावलेह (नं० २६५) (४) जीरा—जीरापाक (नं० २७३) (५) वाला—उसीरा सब (नं० २८३) (६) बकरीका दूध सहत मिश्रीमिलाकर पीणा (७) मोलेठी धाणा रगतचंनण अरडूसा तथा वाला इनोका काथ सहत मिलाकर पीणा (८) शंखजीरा घी मिश्री (९) दाख बेदाणा तथा धाणा इनोकी उकाली (१०) जब भूंसेक आटा करके पाणी घी मिलाकर पीना (११) आमकी छाल जामुनकी छाल अर्जुन वृक्षकी छाल इनोंकों महीन पीस रातकूं मट्टीके पात्रमें २४ तोला जलमे भिगाकर फजरमें छाणकर सहत डालकर पीणा (१२) धाणा आंवले अरडूसेके पत्ते दाख पित्त-पापडा इनोका हिम करके पीणा (१३) कमलके तंतु मजीठ कबाबचीणी · बलबीज कपूर वाला मोथ रगतचंनण और पद्माख ये दरेक एकेक तोला लेकर इनोंका कल्क करणा पीछे ६४ तोला चावलोका धोवण ६४ भर बकरीका दूध ६४ भर बकरीका घी उसमे घो कल्क मिलाकर पकाकर घी बनाना वैद्यकशास्त्रमें इस घीकूं दुर्वाद्य घृत कहते है, मूंमेंसें खूनकी उलटी होती होय उसकूं ये घी पिलाणा नाकमेंसें गिरता होयतो इसकी नासदेणी कानमेंसें वहता होयतो डालणा आंखमेंसे जाता होयतो आंखमें डालणा गुदा तथा पेशाबके रस्ते जाता होयतो इस घीकी पिचकारी मारणी रूंमेंसे निकलता होयतो मालिस करवाणा (१४) दाख चंदन लोदगडूंला ये चारोका चूर्णकर अरडूसेके पत्तोंके रसमें तथा सहतमें पीणेसें तमाम जगेका खून झरना बंध होता है (१५) आंवलेके चूर्णकूं घीमे सेककर पीछे पाणी मिलाकर सिरपर लेप करणेसें नकसीर बंध होती है, (१६) नकसीरवालेकूं मिश्रीका सरबत पीणा नाकसे दूध पीना दूधमें दाखका रस मिलाकर पीना अथवा मिश्रीके संग इक्षुका रस सुंघानेसें नकसीर बंध होती है (१८) बमनकी

चंद्रकला रस हमारे दवाखाणाकी दवाइ वहोत श्रेष्ठ इलाज है, (१९) नींबूका रस ४ औंस कलोरेट ओफ पोटास १ द्राम टिंकचर सीकोना कम्पाउन्डर ४ द्राम मिश्री २ औंस ब्रांडी २ औंस पाणी ४ औंस मात्रा ½ औंस दिनमें तीनवेर पिलातेहैं (२०) टिंकचर फेरीपर क्लोराइड १ द्राम क्वीनाइन ६ ग्रेन क्लोरेट आफ पोटाश ०॥ द्राम पाणी ३ औंस तीन भागकर दिनमें तीनवेर पीणा (२१) नं० ७२६–८२७ केहकीमीतुसखे (२२) नींबू अनार जामुन अंबली आंवले वगेरेका शरबत पीणा तथा फलखाना.

विशेष सूचना–ताकतवर और खूनवाले अदमीका कोई भी जगेसें एकदम खून पडे तो विशेपकारन विगर उसकूं रोकणेका इलाज नहीं करणा क्योंके बहोतसी वखत कुदरती आपहीसे वधे भये खूनकूं इसतरे रस्ताकरके अदमीकूं रोगमेंसें बचाय देता है, बुड्ढा दुबला और कम खूनवाले आदमीके बदनमेंसें खूनगिरे तो जलदी रोकणेका इलाज करना–पथ्य–चावल, साठी चावल, जव, कांग, कोद्रव सामा मूंग मोठ तूर मसूर चणा परवल मीठानींबू चंदलिया बड तथा पींपलकी कूंपल दूध घी केला भूराकोला (पेठा) तरबूज इक्षु मिश्री अनार आंवले वगीचे तह खाना ठंढी हवा इत्यादि पित्तशामक चीजे कुपथ्य–कसरत रस्ते चलना गरमी धूप मलमूत्रकूं रोकना घोडेकी सवारी अग्नि धूम्रपान (हुक्का चिलम) स्त्रीसेवन कुलथी गुड तिल उडद दहीं खारापदार्थ पानसुपारी लसण घासी अनाज कडवा खट्टापदार्थ ये सब खराब है.

कंठवेल–गंडमाल–ग्रंथी.

स्क्रोफ्युला–ट्युबरकल.

कारन–१ इसरोगमें वदनमें गलेमें गांठें होजाती है, तोभी वो एक शारीरक रोग है, खूनका बिगडना ये इसरोगका मुख्य कारण है, खराब खुराक खानेवाले और शरदीवाली नीची जगोमें वसणेवाले लोकोंके ये रोगविशेष देखणेमें आता है, अशुद्ध पारा खाया होय गरमी सूजाककी बेमारी भई होय तो भी खून विगडके ये रोग होता है, आहार विहार कसरत हवा पाणी वगेरेमें विपरीत याने प्रकृती विरुद्ध आचरणसें खून बिगडता है, उसमें वदनका सब भागोंकूं यथास्थित पोपण नहि देनेसें दोष गांठके रूपसें बाहर आता है, ये रोगभी ओलादमें ऊनरता है, इसीवास्ते ये रोग बच्चोंके जादा देखणेमें है, २ अभीके नये सोधकोंके प्रमाणसें इसकी पैदाशके दुसरे कारण कहनेमें आते है. मत एसा है, के ये रोग चेपी है, दुसरे एसा कहते हैं, (ट्युबरकल)–नामके जंतुसे ए रोग हयातीमें आता है, (३) बापके ये रोग होय अथवा रहती बखत माताके अंदर रोग होय तोभी किसी २ कूं ये रोग होता है.

लक्षन–इसरोगके लक्षन अथवा चिन्ह शारीरक तथा इस्थानिक इसतरे दो प्रकारसें मालूम देता है, शारीरक चिन्ह–शरीर नानाकन नाजुक बहोत मंदाग्नि नाडी जरा जल्द

षदन गरम और थोडा २ बुखार (स्थानिकचिन्ह—गलेमें काखोंमें खंधेमें काछोंमें और जांघोंमें गांठे होती है, इतनाहीं नही लेकिन् चमडी पेट मगज फेफसा रसपिंड सांधे हाड और आंखके अंदरके भागके साथ इस रोगका संबंध होता है, चमडीपर षडे दुरगंध-वाले जखम सडे भये जखम होते हैं, जादा करके पैरोंपर तेसें हाथ छाती पीठ गरदन वगेरे भागोंपर होते हैं, षहोत मुदत तक भरता नहीं फैलता है, औरको रखरखोदरी गांठे जेसी होती है, पेटमें ये दोप भरजाता है, तब षचेका पेट षडे जेसा होता है, दस्तकी कबजी रहती है. उससे जलंदर भी होजाता है, इसीतरे मगजके बीच रस पुडमें इस दोपका जमाव होकर सोजा होता है, और सखत बुखार आता है, मगजका ये दोप पांच वर्षके अंदरके षचेके होता है, बालक बेचैन बेहोस होजाता है, दांत पीसता है, चीस मारताहे आंख मुंची रखता है, उलटी होती है, दस्तकब्ज शिर गरम और आंखकी कीकी सकुडाय जाती है, फेफसेमें इस दोपका जमाव होणेसे उहां सोजा होकर पकता है, और क्षयकी बेमारी होजाती है, रसपिंडमें ये दोपका संचय होता है, और गरदन दगल और पेटके अंदरका रस पिंड बडा होता है, गलेमें इस दोपका संचय होकर गांठ होती है, गलेके दोनों तरफ एसी गांठे होती है, और पीछेसे बंधकर हारके मुजब गांठोकी श्रेणी होती है, इसवास्ते इसकूं कंठमाल कहते हैं, इय गांठ छोटी नारंगी जेसी होती है, किसी २ के वढकर नालियेर जितनी भी होती है, इस गांठोंमें बहोत दरद नहीं होता लेकिन् जो उसका इलाज नहीं होय तो दोप अंदर घुस वढकर श्वासनली और अन्ननलीके ऊपर दबाव होणेसें जिंदगीकूं जोखम पहुंचती है, षहोत वखत हांसकी हड्डी भी सड जाती है, और वदनके दुसरे भागमें भी ये दोप भरजाता है, जब हाडोंतक पहुंचता है, तब अस्थिव्रण होजाता है, आंखमें ये दोप आता है, तब आखोंमें फूला पडता है, पाणी झरता है, सूर्यका प्रकाश सहा नहीं जाता स्क्रोफयुलाका दोपवाले षचेके वद-नमें गांठे चांदी कान वहणा सांधा और खाजखुजली जेसे चांदी खासी आखर क्षय जेसी स्थिति होती है.

इलाज (१) देशी वैद्यक शास्त्रमें कंठवेल वगेरे ग्रंथी गांठोंके रोगमें कचनार नाम वृक्षका षहोत गुण लिखा है, उसकी छालका उकाला चूर्ण अथवा नं० ४० में लिखा भया कचनार गुगलका सेवन करणा इसके सिवाय खूनकूं शुद्ध करणेवाली सब दवाइयां जेसेंके चंद्रप्रभा किशोर गुगल त्रिफला गूगल मंजिष्ठादि क्वाथ वगेरे इस रोगमें फायदा करता है, (२) अंग्रेजी दवाओंमें कोडलीवर लोह पोटास आयोडाईड सिर पफेरी आयोडाईड हाईपोफोस्फेट ओफ लाइम सोडा वगेरे असरकरता है.

(३) होमियापेथिक दवायोंमें आयोडाईन सीलीशिया हियारसल्फ बेलाडोना फोसफारस वगेरे—षाहरका इलाज—(१) सरसूं सहजणे की फली सणके बीज अलसी

चंद्रकला रस हमारे दवाखाणाकी दवाई बहोत श्रेष्ठ इलाज है, (१९) नींबूका रस ४ औंस कलोरेट ओफ पोटास १ ड्राम टिंकचर सीकोना कम्पाउन्डर ४ ड्राम मिश्री २ औंस ब्रांडी २ औंस पाणी ४ औंस मात्रा ½ औंस दिनमें तीनवेर पिलातेहैं (२०) टिंकचर फेरीपर क्लोराइड १ ड्राम क्वीनाइन ६ ग्रेन क्लोरेट आफ पोटाश ०॥ ड्राम पाणी ३ औंस तीन भागकर दिनमें तीनवेर पीणा (२१) नं० ७२६-८२७ केहकीमीतुसखे (२२) नींबू अनार जामुन अंबली आंवले वगेरेका शरबत पीणा तथा फल खाना.

विशेष सूचना-ताकतवर और खूनवाले अदमीका कोई भी जगेसें एकदम खून पडे तो विशेपकारन विगर उसकूं रोकणेका इलाज नहीं करणा क्योंके बहोतसी वखत कुदरती आपहीसे बधे भये खूनकूं इसतरे रस्ताकरके अदमीकूं रोगमेंसें बचाय देता है, बुड्ढा दुबला और कम खूनवाले आदमीके बदनमेंसें खूनगिरे तो जलदी रोकणेका इलाज करना-पथ्य-चावल, साठी चावल, जब, कांग, कोद्रव सामा मूंग मोठ तूर मसूर चणा परवल मीठानींबू चंदलिया वड तथा पींपलकी कूंपल दूध घी केला भूराकोला (पेठा) तरबूज इक्षु मिश्री अनार आंवले वगीचे तह खाना ठंढी हवा इत्यादि पित्तशामक चीजे कुपथ्य-कसरत रस्ते चलना गरमी धूप मलमूत्रकूं रोकना घोडेकी सवारी अग्नि धूम्रपान (हुक्का चिलम) स्त्रीसेवन कुलथी गुड तिल उडद दहीं खारापदार्थ पानसुपारी लसण घासी अनाज कडवा खट्टापदार्थ ये सब खराब है.

कंठवेल-गंडमाल-ग्रंथी.

स्क्रोफ्युला-टयुबरकल.

कारन-१ इसरोगमें बदनमें गलेमें गांठें होजाती है, तोभी वो एक शारी खूनका बिगडना ये इसरोगका मुख्य कारण है, खराब खुराक खानेवाले नीची जगोमें बसणेवाले लोकोंके ये रोगविशेष देखणेमें आता है. होय गरमी सूजाककी बेमारी भई होय तो भी खून बिगडके विहार कसरत हवा पाणी वगेरे [illegible] है, उससें बदनका सब [illegible] आता है, ये रोगभी [illegible]

खार तथा छोटी पीपरका चूर्ण डालकर प्रभातसमें पीणा (८) कन्नारपठेके रसमें हलदी डालकर पीणेसें तापतिल्ली मिटती है (९) भिलावा ३ भाग जोहरडे तीन भाग वायविडंग ३ भाग स्याहजीरा १ भाग इनोकी गोलीकर सातदिन खाणी (१०) सहजणेकी छालके उकालेमें शंखभस्म देणी (११) नींबूके रसमें शंखभस्म देणी (सोथोदर)-पेट जब पढता है, तब अंगपर सबमें सूजन आती है, उसकूं सोफोदर कहते हैं (१) पुनर्नवादि काथ अछा है, साटेकीजड गिलोय देवदारू हरडे सूंठ इसकूं पुनर्नवादि काथ कहते हैं, इसमें गूगल तथा गोमूत्र डाल पीणेसें सोजेवाला पेट मिटता है, (२) पुनर्नवादि काथ दुसरा, साटेकीजड जोहरडे, कडवे नींबकी छाल, दारूहलदी कुटकी पटोल गिलोय सूंठ इसका काथ गोमूत्रडाल पीणा (३) पीपर तथा सूंठका चूर्ण गुडमें मिलाकर देणा (४) त्रिफला गोमूत्रमें पीकर दूधभात ३ घंटेबाद पथ्य लेणा-(जलोदर)-(१) भिलावादेणा पथ्य दूधभात (२) त्रिकटू तथा निमक छाछमें पीणा (३) सहजणेका काथ देणा (४) ऊंठनीका दूध पीणा (५) अर्कादि काथ-गजपीपर सूंठ मिरच पीपर तथा सींधानिमक सम वजन और आककी छाल सबके वजनसे वीसमा भाग इसका काथ पीणा (६) जमालगोटा अथवा दंतीमूल नेपालेकूं सोध उसमें दुगणा कथा मिलाकर रती २ की गोलियां करणी दस्तलगे बाद पथ्य दूधभात (७) दंतीमूल ५ सेर निशोत ५ सेर हरडे बडी नग २५ इन सबोकूं २॥ मण पाणीमें उकाल अष्टमांस बाकी रहे तब ऊतारकर पाणी छाणकर हरडोकूं साबूत निकालकर तेलमें तलणी पीछे ५ सेर गुडकी चासनीकर उसमें हरडे तथा नीचे लिखी चीजोंका चूर्णडाल पाक बणाना-निशोत छाल ३२ तोला छोटी पीपर सूंठ आठ २ तोला सहत ३२ तोला तज तमालपत्र इलायची नागकेशर ये एकेक आठ २ तोला (८) पेशाब लानेवाली पसीना लानेवाली और दस्तावर दवा देनी (सब उदररोगोका सामान्य इलाज)-(१) रेचन, पाचन, फस्तखोलण,(२)दूध अथवा गोमूत्रमे, एरंडी तेल बेर २ पीणा (३) पींपर वर्द्धमान खानी (४) चव्य चित्रक सूंठ देवदारू इसका काथ निशोतका चूर्ण गोमूत्र मिलाकर पीणा(५)इच्छाभेदीरस(नं० ३४१) (उदररोगका पथ्य)-रेच लंघण मूंग लालसाठी चावल, पुराणी कुलथी, कांजी मद्य सींधानिमक उडद छाछ लसण, एरंडी तेल, अद्रक परवल सहजणेकीफली इलायची नागरवेलके पान बकरी भेंस तथा गऊका दूध तथा मूत्र हलका तीखा और अग्निदीपक अनाज ये सब हितकारक है-(कुपथ्य)-घी वगेरे चिकणे पदार्थोंका स्नेहपान धूम्रपान उलटी बहोत रस्ते चलना दिनकी नींद आटेमेंसें बनाया पदार्थ जडकरडा अनाज जलके जीवोंका मांस भाजीपाला तिल दाहकरनेवाला अन्न निमक फलीका अनाज खराब जल दस्त कबजकरे एसा अन्नपान ये सब उदररोगकूं हानि करता है.

मिरच पींपर चित्रक चव्य पींपलामूल वायविडंग हरडेकी छाल बहेडाकी छाल आंवला तज तमालपत्र बडी इलायची छोटी इलायची नागकेशर दोनूं जीरा अजमोद सोरा नोसादर साजीखार जवखार पापडखार इत्यादिक जो जो खार मिले सो सब जेसें अमलीका आंधी झाडेका कुवारपठेका पलासका इत्यादि मिलादेना सोनामुखी निशोतकी छाल कपीला कुटकी चिरायता नीमके सूकेपत्ते दारूहलदी एरंडीकी जड नागरमोथा इंद्रजव ये सब चीज एकेक तोला ले कूटकर मिलाणा बाद कवारपठेके रसकी सातभावना सात अमलीके रसकी सात तूंबेके रसकी देकर रख छोडना बचेकुं २ मासातक देना बडेकुं पांच मासातक पथ्य दूधभात मिश्री इससे सर्व उदररोग जाय ये चीज हमने कई जगे पतवाई है, पाणी थोडा सोडा डालके पिलाना या तीन उकालेका ठारके पिलाना बाद खीचडी दालभात चंद लियेका साग देणा (४) मारवाडमें चूइ होती है, उसकी जड कूटकर २।३ मासा जलसें फक्की देना इससें दस्त लगकर साफ होता है, पथ्य दूधभात (५) लसन १०० तोला जल २५६ तोलाभर इसका काथ करना पीछै उसमें सूठ मिरच पींपर हरडे बहेडा आंवला जमालगोटा हींग सींधानिमक चित्रक देवदारू वच उपलेट सहजना साटेकी जड सेंचल वायविडंग अजवान तथा गजपींपर ये हरेक ४ चार २ तोला और निसोतकी छाल २४ तोला इन सबोंकों पीस चटनी करनी और उसमें काथ बराबर तेल डाल तेलपकाना ये तेल उदरके सबरोग तथा वायुके सबरोग मिटाता है, (६) पींपर तथा सींधानिमक डाली भई खट्टी छाछ पीणी (७) त्रिफलेका चूर्ण गोमूत्रमें पीणा–(पित्तोदर)–निशोतकाकल्क एरंडकी जडका काथ और दूध इससें जुलाब लेना (२) मिश्री तथा मिरचका चूर्ण मिलाकर ताजी मीठी छाछपीणी (३) निशोत तथा त्रिफलाके उकालीमें सिद्ध किया भया घी पीणा–(कफोदर)–(१) निशोतका चूर्ण सांड (ऊंठनीके) दूधमें पीणा (२) सोवासींधानिमक जीरा सूंठ मिरच पींपर इनोका चूर्ण मिलाके छाछ पीणा (३) गरम जलसें वेर २ पेटपर शेक करना (४) कुलथीके क्काथमें त्रिकटुका चूर्ण डाल पीना दूधमें एरंडीतेल पीणा–सन्निपातोदर–(१) जो हरडे निर्गुंडीका रस गोमुत्रमें पीणा (२) त्रिकटु जवखार सींधालून छाछमें पीणा (३) चंदलियेकी जड जलमें पीस इसमें चोगुणा घी और घीसे चोगुणा दूध डाल उकालकर घी तइयार करणा इस घीसे सब जहरोंका नास होता है, (प्लीहोदर)–यकृतोदर–(१) निगोडकारस २ तोला और गोमूत्र २ तोला (२) लालरोहीडा और हरडेका कल्ककर गोमूत्रमें अथवा भैंसके मूत्रमें पीणा (३) लसण पीपलामूल हरडे जोहरडे पीस गोमूत्रमें पीणा (४) सहजणेकी छालके रशमें सींधानिमक चित्रक पींपर तथा खाखरेका जवखार डालके पीणा (५) कवारपठेका रस हलदी डालकर पीणा (६) पींपर और सहत डालकर छाछ पीणी (७) जो हरडे तथा लालरोहीडेकी छालका काथकर उसमें जव

खार तथा छोटी पीपरका चूर्ण डालकर प्रभातसमें पीना (८) कवारपठेके रसमें हलदी डालकर पीणेसें तापतिली मिटती है (९) भिलावा ३ भाग जोहरडे तीन भाग वायविडंग ३ भाग स्याहजीरा १ भाग इनोकी गोलीकर सातदिन खाणी (१०) सहजणेकी छालके उकालेमें शंखभस्म देणी (११) नींबूके रसमें शंखभस्म देणी (सोथोदर)-पेट जब घढता है, तब अंगपर सबमें सूजन आती है, उसकूं सोफोदर कहते हैं (१) पुनर्नवादि क्वाथ अछा है, साटेकीजड गिलोय देवदारू हरडे सूंठ इसकूं पुनर्नवादि क्वाथ कहते हैं, इसमें गूगल तथा गोमूत्र डाल पीणेसें सोजेवाला पेट मिटता है, (२) पुनर्नवादि क्वाथ दुसरा, साटेकीजड जोहरडे, कडवे नींबकी छाल, दारूहलदी कुटकी पटोल गिलोय सूंठ इसका क्वाथ गोमूत्रडाल पीणा (३) पीपर तथा सूंठका चूर्ण गुडमें मिलाकर देणा (४) त्रिफला गोमूत्रमें पीकर दूधभात ३ घंटेबाद पथ्य लेणा-(जलोदर)-(१) भिलावादेणा पथ्य दूधभात (२) त्रिकटू तथा निमक छाछमें पीणा (३) सहजणेका क्वाथ देणा (४) ऊंठनीका दूध पीणा (५) अर्कादि क्वाथ-गजपींपर सूंठ मिरच पीपर तथा सींधानिमक सम वजन और आककी छाल सबके वजनसे वीसमा भाग इसका क्वाथ पीणा (६) जमालगोटा अथवा दंतीमूल नेपालेकूं सोध उसमें दुगणा कथा मिलाकर रती २ की गोलियां करणी दस्तलगे बाद पथ्य दूधभात (७) दंतीमूल ५ सेर निशोत ५ सेर हरडे बडी नग २५ इन सबोकूं २॥ मण पाणीमें उकाल अष्टमांस बाकी रहे तब ऊतारकर पाणी छाणकर हरडोकूं साबूत निकालकर तेलमें तलणी पीछे ५ सेर गुडकी चासनीकर उसमें हरडे तथा नीचे लिखी चीजोंका चूर्णडाल पाक बणाना-निशोत छाल ३२ तोला छोटी पीपर सूंठ आठ २ तोला सहत ३२ तोला तज तमालपत्र इलायची नागकेशर ये एकेक आठ २ तोला (८) पेशाब लानेवाली पसीना लानेवाली और दस्तावर दवा देनी (सब उदररोगोका सामान्य इलाज)-(१) रेचन, पाचन, फस्तखोलण,(२)दूध अथवा गोमूत्रमे, एरंडी तेल बेर २ पीणा (३) पींपर वर्द्धमान खानी (४) चव्य चित्रक सूंठ देवदारू इसका क्वाथ निशोतका चूर्ण गोमूत्र मिलाकर पीणा(५)इच्छाभेदीरस (नं० ३४१) (उदररोगका पथ्य)-रेच लंघण मूंग लालसाठी चावल, पुराणी कुलथी, कांजी मद्य सींधानिमक उडद छाछ लसण, एरंडी तेल, अद्रक परवल सहजणेकीफली इलायची नागरवेलके पान बकरी भेंस तथा गऊका दूध तथा मूत्र हलका तीखा और अग्निदीपक अनाज ये सब हितकारक है-(कुपथ्य)-घी वगेरे चिकणे पदार्थोंका स्नेहपान धूम्रपान उलटी घहोत रस्ते चलना दिनकी नींद आटेमेंसें बनाया पदार्थ जडकरडा अनाज जलके जीवोंका मांस भाजीपाला तिल दाहकरनेवाला अन्न निमक फलीका अनाज खराब जल दस्त कबजकरे एसा अन्नपान ये सब उदररोगकूं हानि करता है.

किरण दूसरी २.

श्वासोश्वासकी क्रियाके रोग.

छातीके अंदर श्वासनली फेफसा रक्ताशय वगेरे बहोतसे जरूरीके मर्मस्थान आये भये है, ये मर्मोके ठिकाणे आपसमें संबंध रखे है, तेसें रक्ताशयके भी संबंध है, तोभी श्वासो-च्छासकी क्रिया और खुन फिरनेकी क्रियाके स्थल अलग २ है, और उस २ मर्मस्थानोंके रोगभी जुदे २ है, इसवास्ते इस किरणमें श्वासनलीके रोगोंकी परिक्षा इलाज लिखते है, तीसरी किरणमें रक्ताशयके रोग लिखेगें श्वासोश्वासकी क्रियामें श्लेपम कंठनलीका सोजा हांफणी खासी फेफसेका वरम दम क्षय उरक्षत वगेरे रोगोंका समावेश होता है.

(श्लेष्म, सलेपम, शरदी, जुखाम)

(कोराईझा)

(कारण)--जादा करके हवाके फेरफारसें सलेपम होता है, एकही स्थलमें हवाके याने ऋतूकी फेरफारसें जेसें सलेपम होता है, तेसें अदमी एकजगेंसें मुसाफरीकर दुसरी जगें जब जाता है, उसकरके हवाका फेरफार होणेसें कफ बिगडजाता है, सलेपम शरदीसे होता है, और पालर पाणीसें नया अनाज खाणेसें बहोत शरदी हवामें रहणेसें भीजी जमीनपर चूनागचीके अंगणपर सोनेसें इत्यादिकारणोंसें सलेपम होजाता है, कितनेएकको ये रोग वेर २ होजाता है, और मिट जाता है, इसरोगमें ऊपर लिखे कारणोंसें नाकके अंदरके पुडपर सूजन होता है.

(लक्षण)--एसे थोडेही अदमी होयगें सोजिनोंकों सलेपमका अनुभव नहीं होयगा सरुहोते बलगमके बदनमें बेचेनी हाथपांवोंमे टूटणा शिरमें भारीपणा कमरमें दरद नाकमें सूकापणा छींक दमलेते अडचल और प्रगटलक्षणोंमें गलेमें जलन दाह नाकमें जलन नाक आंखमेंसें पाणी झरे गला बैठजाय जीभपर सुपेद थर थोडासा बुखार भूख मंद दस्तक ब्ज होय.

(इलाज)--जुखामके रोगमें वैद्य डाक्तरके पाश विरले जाते हैं, लेकिन् इतना याद रखणा चाहिये किसी २ वखत इस निकामे छोटे रोगसें बडे २ असाध्यरोग होणा संभव है, जेसेंके पीनस नाककारोग कफकारोग खासी और क्षय जेसा भयंकर रोग होजाता है, इसवास्ते छोटासा मरज जांणके छोडना नहीं चाहिये.

(१) रोगीकूं घरमें रहना कांजी दलिया दालभात चाह वगेरे हलका और गरमागरम खुराक लेना पांवोंकूं गरमपाणीसें झरना पीछे पोंछ मोजापहराना दूध और पाणी गरमकर चा करके गरमागरम पिलाना और हलका जुलाब लेणा (१) बलगमका जोर जादा ऊपर लिखाइलाजसें शांत नही पडे तो अरडूसेका स्वरस सहत डालके पिलाना ...लादि चूर्ण (नं० २२७) सहतमें चाटना अथवा कोरा फाकना सूंठ उकाल

चाह डाल पीणा दूध पाणीका अथवा चाका बफारा या नासमे लेणा पोस्तके डोडेका भीगा शेक करना तज लौंग सूंठ वगेरे गरम दवाओंका ललाटपर लेप करना (नं० ६३२) वाली धुकनी अथवा त्रिकटुकी धुकणी सूंघकर कफकूं छुटाना रातकूं एन्टिमोनियल-पाउडर ।३।४। ग्रेन फाककर ऊपर चाह पीनी अथवा डोवर्सपाउडर दस ग्रेन, सोते वखत लेकर फजरमें दस्त साफ लानेकुं एक हलका जुलाब लेना हरडेकी फकी सिडली-झपाउडर अथवा एप्समसोल्टका जुलाब लेना (नं० ८१५) तथा ८१६ काहकीमी उसका देना (३) जुखाम शरदी पुरानी होकर झरे वाद दूध और पाणी सम वजन मिलाकर उसमें सूंठके टुकडे आठ आनेभर मिश्री आठ आनेभर केशर १ रत्ती बिदामके गोटे ५ डालकर जलजले जहांतक उकाल दूध छानलेना और बिदाम चवाकर दूध पीजाना और जल पियेबिगर सूजाना ये प्रयोग सोतेवखत करना अकलकरा पींपलामूल पींपर सुपेद मिरच ये चारों सम वजन मिलाकर इनोंकी थोडी फकी पानमें धरकर चाबलेना (नं० ३६५, ३६८, ३६९, ३७०) में लिखे भये दवायोंका बहोतदिनोंतक सेवन करना

(कंठनलीका सोजा)

(लारीन्जाइटीस)

(कारण)–ठंढ और शरदीसें कंठकी नलीमें सोजन होजाता है, नुकशान करनेवाला धूआं अथवा धूडगलेमें जाणेसें अथवा गरमागरम पाणी पीजानेसें तैसें उपदंससे भी ये रोग होता है.

(लक्षण)–विशेषकरके ये रोग बच्चोंके होता है, श्वास तथा नाडी जलदी चलती है, श्वास लेते गलेमेंसें तीक्ष्ण अवाज निकलता है, छाती तथा वायुनली उछलती है, गला बैठ जाता है, बेचेनी बहोत रहती है, और १ दिनसें ५ दिनके अंदर गलेकी सूजनसें रोगी मरता है, अथवा अछा होजाता है.

(इलाज)–तीक्ष्ण सोजा बहोत भयंकर होता है रोगी तकदीरसेंही बचता है, देशी वैद्यकशास्त्र मुजब तो मुखरोगीकुं दूध कुपथ्य है, मूंगकी दाल वगेरे हलका सादा और पतला पदार्थ देणा चाहिये, डाक्तरलोक दूध चावलोका दलिया पतला पथ्य दिलाते इस रोगीकूं गरम और तेज खुराक कभी देणा नहीं वायुनलीपर गरमपाणीका सेक करणा विल्स्टर अथवा जोक लगणा और सोजन नरम करणेकूं रोगीका गूंगाट और घमराट मिटाणेकूं उलटीकी दवा देणी मेणफल अथवा इपीका क्युअनाकी भूकी पिलाकर उलटी कराणी अरडूसेका पुटपाक अथवा स्वरस मदत डालकर पीना और छाती तथा गलेपर अरइसेके पत्ते बाफकर बांधना नं० ६३३ का मिक्चर देणा अथवा इकेला इपीका क्यु अन्दावाइन उन मान मुजब जलमें मिलाकर पिलाणा.

(कासश्वास, दम)

(ब्रोनकाईटिझ)

(कारण)–काशश्वास अथवा हांफणीका रोग होणेका बहोतसे कारण है, शरदी उसका मुख्य कारण है, शरदी करणेवाले आहार विहारसे हांफणीका रोग होजाता है, वायूनलीके दरदोमें काशश्वासका दरद होजाता है, जेसेके अर्बुद वगेरे गांठोके लिये तेसें वायूनलीमें धूल धातू तेसें हवामें उडते भये रजकण अंदर जाणेसें वरम होकर दमका रोग होता है, फेफसेका दरद रक्ताशयका रोग बुखार नाताकती संधिवायू वगेरे रोगोंसे भी दमका रोग होजाता है, नलीमे सोजन होणेसे अंदरका सलेषम पुडत सूजकर लाल होजाता है, पहली वो पुडकोराहोता है, और पीछै उसमेंसें कफ गिरता है, पहले झाग जेसा कफ गिरता है, पीछेसें पका भया पीला अथवा पीप जेसा कफ निकलता है, नलियोंके दोनों तरफका वरम पुडत आपसमें मिलाजाता है, इस सोजेके सबब अंदर कफ भरजाणेसें हवाकूं आने जानेकूं चहिये इतना रस्ता नही मिलणेसें खासीके संग श्वास चढता है.

(लक्षण)–दमके रोगमें जादा करके हमेसां बुखार आता है, तब नाडी जलद चलती है, पेशाब लाल उतरता है, छातीमे दरद होता है, श्वास रुकजाता है, कफ गिरता है, कितनेक रोगमें पहली सलेपम होकर पीछे ये रोग होता है, उसमें गळा आजाता है, कंठमे घरघराट बोलता है, ठंढ देके बुखार चढ आता है, भूख मंद होती है, दस्त कब्ज होता है, जीभपर सुपेद थर जमती है, पीठ अथवा छातीकी हड्डीमें दरद होता है, खासी आती है, श्वास जलदी चलता है, छाती भीडाती है, हांफणी बोलती है, सोणेसे खासी जादा चलती है, जो वरम महीन नलियोंमें भया होता है, तो छातीमें दरद होता नहीं लेकिन् खासीसे पसलियां दुखती है, श्वास जोरसें चलता है, कफ बोलता है, दमके जोरसे सोणे नहीं पाता खासी बहोत जोरसें वेर २ आती है, चिकणा कफ बहोत मुस्किलसें निकलता है, बुखार जादा चढता है, और जो फायदा नहीं होय तो नाताकती बढकर कफ निकल नहीं सकता और बदन ठंढा पडणे लगता है, इस रोगवालेकी छाती उपसीभई तथा बडी मालम देती है पांसली तथा पेट उछलता है, और छाती ठोककर बजाणेसे पोकल आवाज आती है, और श्वासका अवाज मोटा और उंचा सुणाई देता है, कफका जोर जादा होता है, तो छाती ठोकणेका अवाज भरा मालम देता है.

(इलाज)–(१) दमेके रोगमें श्वासनलीमें सोजा होतेजाता है इसवास्ते उससोजेकूं मिटानेका इलाज करणा रोगीकूं मकानके अंदर बिछोणेमें रखणा गरमकपडे पहराना तथा ओढाना शरदीके संग हांफणी भई होयतो खूबपसीना आवे एसा इलाज करना

सो इसतरे, पाणीमें राई डालकर गरमकर पांवोंपर झारना छातीपर राई पीसकर धरणा पाणीमें लुगदीकर तथा फुलालेण वगेरे गरम कपडा बांधणा श्वासके संग गरम पाणीका चफारा लेना छातीपर गरम पाणीका शेककरणा अथवा अलसीकी पोटिस वेर २ गरमागरम धरणा आखर जरूरी पडे तों डाक्टरके पास विल्स्टरभी धरवाणा (२) सरुआतमें (नं० २२३) का शृंग्यादि चूर्ण सहतमें देणा अथवा डोवर्सपाउडर देणा (३) क्षुद्रादि क्वाथ (नं० २१३) अथवा इकेली मूरींगणीका चूर्ण अथवा उकाला सहत डालकर देणेसें भी श्वास नरम पडता है (४) सुदर्शन चूर्ण (नं० ३२) में अथवा महासुदर्शन चूर्ण नांमी वैद्योके पासही खरा मिलता है, उसकूं अरडूसेके स्वरसमें सहत मिलाकर पिलाणा (५) बचोंके वास्ते पहली लिखा जो शृंग्यादि चूर्ण सहतमें चटाणेसे बचोंकी हांफनी मिटाती है, सिताबके पत्तोंकूं पीस एक दोय, कालीमिरचके संग पिलाना तेसें छातीपर गरमकर पीसे भया बांधणा (६) कफका जोर होयतो उलटीकी दवा देकर कफकूं निकाल डालना उसकी विधि सलेपम प्रकरणमें लिखाही है, (७) श्वास कास अथवा हांफणीका रोग भये पीछे ये देशी इलाज देकरके पतवाना इन दवायोकूं युक्ति मुजब बहोत दिनोंतक सेवनकरणेसें ताकत आकर रोग मिटजाता है.

(१) शितोपलादि चूर्ण (नं० २२७) अनुपान घी सहत मात्रा ३ मासा.
(२) अग्निरस (नं० ३४४) अनुपान घी सहत बुखार नहीं होयतो देणा.
(३) आनंदभैरव रस (नं० ३३२) अनुपान नागरवेलके पान अथवा जल.

(४) सुवर्णमालनी वसंत (नं० ३३७) अनुपान सहत पींपर सहत अथवा शितोपलादि घी तथा सहत (५) लघुमृगांक रस (नं० ३२५) अनुपानसहत (६) कंटकारी अवलेह (नं० २६२) श्वास हिचकीके संग हांफणी मिटावे (७) हरीतकी अवलेह (नं० २६४) श्वासकासका बहोत आछा इलाज है, ऊपरलिखी दवाइयां पुराणा श्वासकासके ऊपर अछी फायदेमंद है, उसमें भी १, ४ और ७ के अंकवाली दवायोंसे बहोत वरसका पुराणा श्वासकासयाने हांफनीका रोग अछे भये हमारे अनुभवी इलाज है. इसवास्ते पूर्णविद्वान वैद्यके पाससे एसी दवा मंगाकरके वापरणा एसी हमारी शिक्षा है, (अंग्रेजी इलाज)-(नं० ४८४, ४८६, ४८७, ४८८, ४८९, ६३३, ६३४, ६३५, ६३६, ६३७) मिक्चर अवस्था तथा हांफनीकी बलाबल जाति विचारके उपयोगमें लेना (विशेष पथ्य सूचना)-रोगीकूं अछा गुणकर बकरीका दूध अथवा पाथलोंके दलिये पाटमें बकरीका दूध मुख्य गुणकरदेणा तेल मिरच खटाई वगेरे सर्व तेज और दाहक और मादक पदार्थोका त्याग करना बहोत बुखार होय तो ऊपर लिखे इलाजोके संग ज्वरहरदवाई तथा क्विनाइन देना नाताकती ज्यादा होयतो अंग्रेजीमांहे

मांडी देते है. देशी द्राक्षासव, आर्यलोंकोने कस्तूरी अंबर केशर दूधमे उकालकर गरीबने लोबानके फूलपानके रसमे या दूधमें गरमी कायम रखणी और ताकत.

खासी–उधरस–काश.

(शिक्षा)–श्वास तथा शरदीके संगकी खासी इनोका इलाज पहली लिखदिया है, ये सचमें फायदेमंद है, तोभी खासीका विशेष इलाज लिखते हैं, देशीशास्त्रमें खासी पांचप्रकारकी है, वायूकी १ पित्तकी २ कफकी ३ क्षत छातीमें जखम पडणेकी ४ और क्षयकी ५ इसमें पिछली दो असाध्य है, वृद्धअवस्था और मांसक्षीणकी भी खासी असाध्य है, आखरीका इलाज क्षत और क्षयका जाणलेना तीनों खासीका इलाज लिखते हैं. कारण तथा लक्षण पहली जो कासश्वासमें लिखा है, वोही है.

(वादीके कासका इलाज)–(१) सूंठ धमासा काकडाशींगी मुनका कचूर मिश्री इनोका चूर्ण तेलमें चाटणा (२) सूंठ भाडंगीजड पीपर कायफल कचूर इनोका चूर्ण तेलमें चाटणा मिश्रीभी मिलादेणी.

(पित्तकी खासी)–(३) अरडूसेके पत्ते गिलोय भूरींगणीका काथ सहतडालकर पीणा (४) दाख आंवला खजूर पीपर मिरच चूर्ण सहत तथा घीमें चाटणा (५) कचूर वाला रींगणी सूंठ तथा मिश्रीका काथकर पीणा (६) सूंठ दशमूल पींपर तथा दाखके काथमें उकाला भया दूध मिश्री डालकर पीणा (७) खजूर पींपर दाख मिश्री जव धाणीका चूर्ण घी तथा सहतमें चाटणा (८) भैंस बकरी तथा गऊके दूधमें इत-नाहीं कच्चे आवलेका रश अथवा सूके आंवलेका उकाला मिलाकर उसमें घी पकाकर खाणा (९) दाख आंवला खजूर पींपर मिरच चूर्ण सहत तथा घीमें चाटना.

(कफजन्यखास) (१०) नागरमोथा तथा पींपरका चूर्ण सहत तथा घीमें चाटणा (११) बहेडेका चूर्ण घीमें मिलाय पत्तोंसे लपेट पुटपाककर मूंमें रखणा(१२) अरडूसेके पत्तेके रशमें सहत डालकर पीणा (१३) सूंठ पीपर तथा कुलथीका क्वाथ (१४) कचूर अतीस मोथ काकडाशींगी हरडे सूंठ इनोंका चूर्ण हींग तथा सींधा निमक मिलाकर छाछ पीणी.

(खासीका सामान्य इलाज) (१५) आदेका रस सहत गरमकर (१६) मिरच कालीका चूर्ण सहत मिश्रीमें (१७) त्रिकट्टका चूर्ण सहत तथा घीमें (१८) पारा गंधक जवखार सेंचल ४ मिरच ५ इस भाग मुजब एकत्रकर आदेके रशमें खरलकर गोली करके देणी (१९) बहेडेकी छाल २ पींपलामूल १ भाग सहतमें चाटणा (२०) पींपर पींपरामूल सूंठ और बहेडेकी छाल चूर्ण सहतमें देणा (२१) लौंग बहेडा सम भाग सबोंके बराबर खेरसार अथवा कत्था मिलाकर बंबूलके छालके गोली करके चूसाणी (२२) बकरीका मूत्रमें बहेडाकी छालकूं बाफकर सहतमें

चटाणा (२३) पारा १ गधक २ पींपर ३ बहेडेकी छाल ५ हरडेकी छाल ४ काकडा-सींगी ६ पीसकर बंबूलके छालमें कितनेक दिन घोटकर गोली करके देणी (२४) काली मिरच १ पींपर १ अनार विलायती छाल ५ जवखार ॥ इसके बराबर गुड मिलाकर गोली करणी (२५) लोंग १ पींपर १ जायफल १ काली मिरच २ भाग सुंठ ३२ भाग और सबोंकी बराबर मिश्री जलसें फक्की (२६) भीमसेनी कपूर १ भाग कसतूरी १ लोंग १ मिरच २ पींपर २ बहेडेकी छाल २ उपलेट २ दाडमकी छाल १ सबके बराबर खैर सार अथवा कत्था जलमें घोट गोलियें करणी (२७) रींगणी गिलोय सुंठ एरंडीकी जड अरडूसा इनोका क्वाथ (२८) आकका फूल उसके सम वजन मिरच अथवा लोंग पीस गोली करके खाणी (२९) आदा सेर ५ गुडसेर ५ धाणेके पत्ते (कोथमरी) सूंफ लोहचूर तज तमालपत्र इलायची मोथ इनसबोंकी अवलेही बणाय चाटणी इससे अर्श खासी ज्वर पीनस शरदी गोली क्षय इन सबोंपर ये अवलेही फायदेबंद है, (२८) बकरीका मूत्र १०० तोला उसकूं मंद अग्निमें जाड़ाकर उसमें बहेडाकी चूर्ण ८ तोला डालणा तथा पींपर पींपलामूल लोहभस्म चार २ तोला भूरींगणीके फूलकी भूकी आठ तोला डालणी इसकूं दो मासेसें तोलाभरतक सहतमें चाटणा अथवा गरम जलसे पीणा इससे असाध्यबी खासी मिटती है. (३१) लोबान ४ कपूर १ भाग अफीम ॥ और नवसादर २ भाग सहतमें वाल २ की गोलिया करणी हमेस तीन टंक तीन गोली लेणी (३२) लोबानका फूल १ रत्ती अफीम पाव रत्ती कपूर पाव रती सहतमें एक गोली इस उनमानकी बणाणी हमेस दो तीन गोली खाणी.

इसके सिवाय इस ग्रंथमें आगे हांफणीके रोगमें लिखे भये सबदेशी और अंग्रेजी इलाज खास रोगके प्रसिद्ध है, बडे रोगमें वो खासीके इलाज बहोत फायदेबंद है.

(विशेप सूचना पथ्य) खासीका इलाज नहीं करणेसें क्षय होजाता है, इसवास्ते जलदी इलाज करणा ठंडी शरदी और भीजी जगासे दूर रहणा जमीनपर सोणा नहीं ठंडा तथा कफ करणेवाला पदार्थ खाणा नहीं दिनका सोणा नहीं तेल मिरच खटाईका त्याग करणा रातकूं दही कभी खाणा नहीं पुराणे चावल घी सींधानिकम दरिया-वका निमक कुलथी तूरकी दाल मूंगकी दाल सोवा चंदलिया वगेरे पदार्थ खासी-वालेकों पथ्य है.

दम श्वास हांफणी.

(कारण) श्वासोच्छासकी क्रिया चहिये जिससे जादा चले उसकूं दमका रोग कहते हैं, श्वास जलदी चलणेका बहोतसे कारण है, दुसरे रोगकी निशानी तरिके ये रोग बहोतसे दरदोमें दिखाई देता है, जेसके खासी फेफसेका सोजा क्षय रक्ताशयका रोग

वगैरे रोगोमें श्वासकी हयाती देखणेमें आती है, लेकिन् इसके अलावा दमके मरजका दूसरे स्वतंत्र कारणभी होता है, फेफसेमें हवा जाणेको छोटे छेदोंमें खेंच होणेसें होता है, खेंचताणके लिये ये छेद संकोचाते हैं, उसकरके जितनी चहिये हवा फेफसेमें दाखल नहीं होसकती तब उसकी एवजी पूरी करणेकूं दम जलदी २ चलता है, दमका रोग होणेका मुख्य कारण इसतरेसे है, (१ फेफसेमें हवा जाणेकी रुकावट) स्वर नली अथवा वायु नलीका संकोच अथवा कुछ दरद २ फेफसेमें दरद जेसेके फेफसेका सोजा फेफसेका खाईज जाणा उसके पुडका सोजा वगैरे ३ रक्ताशयका रोग जिसकर फेफसेमें चहिये जिससें जादा या कम खून जावै तेसें खून जादा निकलजाणेसें फेफसेका पोषण कम होय जेसेके पांडू रोग रक्तपित्त वगैरे मगजकी नाताकती मनका विकार हिस्टीरीया सांकडी और नाताकती छाती एसे रोगवालोंकों जरा ठंढीके हवाका फेरफार दमकूं पैदा करता है, ५ कितनीक खराब चीजोंकी दुरगंधी बदपरेजी अजीर्ण वगैरे कारणभी श्वासकूं पैदा करता है, ६ ये रोग ओलादमें भी उतरता है.

(लक्षण) श्वास जादा जोरसे चले ये श्वास रोगका प्रत्यक्ष चिन्ह है, पेटमें प्रथम वादी दस्तकी कबजी पेशाब जादा तेसें धीरे २ उतरता है, बहोत रोगोमें दम चढणेके दुसरे कोईभी चिन्ह अगाऊसे नहीं दिखता दमका जोर पिछली रातकूं चढता है, बहोत घभराट होता है दम जोरसे चलता है, तब दूर तक सुणाई देता है, रोगीका स्वरूप भयंकर दिखता है, जिसने आगे कभी श्वासके रोगीकूं नहीं देखा है, वो तो यही जाणता है की ये अभी थोडी देरमेंही मरजायगा वदनपरसे पसीनेकी बूंदे गिरती है, नाडी जलदी चलती है, मूं खुला रहता है, सो नहीं सकता चैन नहीं पडता एसा दमका जोर दो चार घंटेसें वो एक दो दिनतक जारी रहकर पीछे कम पडता है, खासीके संग थोडा कफ गिरता है, श्वासबेठे पीछे थका भया रोगी नींदमें गिरता है, वायुनलीके संकुडाणेसें दम चढता है, और हवा अंदर जाती बखत तांती बोलती है, वो कानसें अथवा कर्ण नलीसें सुणाई देती है, दमके रोगमें अंदर श्वास ओछा होता है, बाहर श्वास लंबा चलता है, विना मुदत फेर दम उठ आता है, किसीकूं दम चढ जाता है, किसीकूं महीनेमें एक बखत किसीकूं वर्षमें एक बखत और किसीकूं बहोत वर्षांसें.

(इलाज) (१) बेहेडेकी छालकूं बकरीके पेशाबमें पकाकर उसका चूर्ण सहतमें चाटणा (२) बडी दाख हरडेकी छाल नागरमोथा काकडासींगी तथा धमासा इनोका घी बनाकर सहतमें चाटणा (३) सरसूंका तेल गुडके संग २१ दिनोंतक चाटणा (४) सूंठ तथा भाइंगीका क्वाथ पीणा (५) भाडंगी तथा मोलेठीका चूर्ण घी तथा सहतमें चाटणा (६) सूंठ मिरच पीपर हरडेका चूर्ण फाकणा (७) हलदी मिरच

दाख पींपर रास्ता सूंठ गुड इनसबोकों नीबोलीके तेलमें चाटणा (८) आदेके रशमें भाडंगी तथा मांजूफल चाटणा (९) भूरींगणी हलदी अरडूसा गिलोय सूंठ पींपर भाडंगी मोथ इनोका काथ मिरच पीपरका चूर्ण डालकर पीणा (१०) मिश्री दाख पीपर इनोका चूर्ण नींबके तेलमें पकाकर खाणा (११) त्रिफला ३ भाग सोहागी १ भाग नागरवेलके रशमें घोट चिरमी जितनी २ गोलियां करके खाणी (१२) आककी जड लींडी पीपर सहतमे घोट झाड वेर २ जितनी गोलियां करणा (१३) गांजेकी राख सहतमें चाटणी (१४) आंधी झाडेका खार सहतमें (१५) अरडूसेका रश और पीपर (१६) कस्तूरी और मोलेठीका सीरा इसके सिवाय पीछे (नं० २६२) ४६६) २६७) ३३६) ३४४) ७२१) ७२२) ७२३) ७२४) का देशी तेसें हकीमी नुसके स्वासके रोगमें प्रसिद्ध है.

(अमृतवटी) हमारे विद्याशालाकी श्वासकासमें अकसीर दवा है.

(अंग्रेजी इलाज) (१) इपीकाक्यु आन्हा टार्टर इमेटीक बेलाडोना धतूरा अफीम गांजा इथर कलोरल हाईड्रेट पोटास आयोडाईट वगेरे मुख्य है. (२) नं० ४८४ ४८७ (६४०) ६४१ (६४२) वाली दवाइयां दमके रोगमें प्रसिद्ध है, पिचकारीकेवास्ते एरंडी तेल अच्छा है, रोगीके पांव गरम जलमें रखणा छातीमे दरद होय तो टरपेन्टाइन तथा गरम पाणीका शेक करणा छातीपर राई मारणी(४)रोगी दमसें बहोत व्याकुल होय तो उसकूं आराम देणेके वास्ते डाकटरके पास रखकर क्लोरोफोर्म इथर अथवा दोनोसंग सुंघाकर बेहोसकरके सुवाणा (५) रोगीके कमरेकूं बंधकर धतूरा बेलाडोना सोरा नवसादर गांजा वगेरे दवायें सलगाणा इनोंके धूंएसे रोगीके श्वासमें जाणेसें फायदा होता है. (६) बीडी अथवा चिलममें कितनीक दवाइयें पीणेसें दमेमें फायदा होता है, धतूरा बेलाडोना मोफर्या तमाखू गांजा सोराखार वगेरे लेकिन् इसमेंकी कितनीक दवाइयां तेज और जहरी है, इस वास्ते थोडी २ पीणी कारण इसमें एक औरभी है, ये दवाइयां किसी २ कूं फायदा और किसी २ कूं नुकशांन करती है, किसी २ कुं फक्त तमाखूकी बीडी पीणेसेंही फायदा होता है, और किसीकूं काफी पीणेसेंही फायदा होता है, और किसीकूं धतूरेके पत्ते सिलगाकर उसका धूंआ श्वासमें लेणेसें फायदा होता है.

होमियो पथिक इलाज (१) एकोनाइट) खंक अथवा सूकी शरद हवासें उठे दममें फायदा करता है, (२) आइपीकाक्यु आन्हा—दमका कारण मिल सके नहीं और कफ तथा हांफणका जोर होय तब जादा उपयोगी है, (३) कुप्रम) मानसिक नातावर्तीसें दम उठे तब अच्छा है, (४) आर्सेनिक) बहोत बेचेनी धमनके

जेसा अवाज कफ–तब छातीके बीचमें आर्सेनिक देणा (५) दमका जोर शांत पडे पीछे फेर दमकुं अटकाणेकुं नक्सवोमिका आर्सेनिकम आयोडाइन वगेरे.

(विशेष सूचना पथ्य) दमका रोग अजीर्ण और दस्तकी कबजीसें फेर २ उठजाता है, इसवास्ते खुराक खाणेकी बहोत सावचेती रखणी हजम नहीं होय एसा खुराक कभी खाणा नहीं हलका खुराक भी जादा पेटभर खाणा नहीं अच्छी हवा पाणीकी जगे फायदा करती है, इसवास्ते हवा बदल देणी चाहिये कुपथ्य–दालकी जात ठंढा पदार्थ दाहकरे एसा गरम पदार्थ लूखा पदार्थ वासी अन्न दही खांड खटाई वगेरे पदार्थोकों त्यागणा–कितनेक मूर्ख लोक दम बेठाणेकूं बहोत गरम दवाइयां तथा गरम मसाले खिलाते हैं, उसमें उलटा नुकशांन होता है, खास श्वासरोगका जो पथ्य बोही दमके रोगका पथ्य समझणा.

उरक्षत–छातीका जखम–

(कारण) बहोत महनत करणेसें बहोत भार उठाणेसें उंची जगासें पडणेसें बहोत उंचे श्वरसें पढणेसें बोलणेसें बहोत दोडणेसें औरतोंमें बहोत आसकी रखणेसें और बहोत थोडा और लूखा खाणेसें छातीमें जखम पडता है. (लक्षण) क्षयके बहोतसे लक्षण देखाई देते हैं, क्योंकी उरक्षत रोगभी क्षयरोगका एक भेद है, छातीमें दरद होता है, चीरीजती है, पसवाडे सूकते हैं, अदमी धूजता है, वीर्य ताकत रंग कांतिक धीरे २ क्रमसे नाश होते जाता है, बुखार पीडा मनकी दीनता चिंता दस्त अग्निक नाश खासीमें खराब काला दुर्गंधवाला पीला गुंथा भया और बहोत खून मिला भया कफ फेर २ थूकता है.

(इलाज) खासी तथा क्षयका कितनाएक इलाज उरक्षतके भी कामिल है. जखमकुं भरे और खूनकूं रोके एसें स्तंभक इलाज करणा (१) अरडूसा) रश पुटपाक वगेरे खून बंधकर जखम मिटाता है, (२) अमृतवटी) इस रोगका सर्वोत्कृष्ट इलाज है (३) इक्षुके रशमें घी उकालकर पीणा, (४) बेरकी अथवा पीपलकी लाख पुराणेके लेके रशमें पीस उसमेंसें २ तोला कल्कमें चोगुणा कोलेका रस डाल पीणा, (५) कुष्मांडावलेह (नं० २५६) तथा द्राक्षासव नं० २८६,

(६) रक्तस्तंभक दवाइयां पृष्ट ३१४ देखो) स्तंभन दवाइया (पृष्ट ३१२ देखो) रक्तपित्त रोगमें लिखीभई दवाइयां उरक्षतमें फायदा करती है, पथ्यापथ्य–खासी तथा रक्तपित्तके रोगमें लिखे मुजब.

न्यूमोनिया–फेफसेका वरम–

विचार–छातीके फेफसेमें सूजन होणेसें भयंकर बुखार कफका त्रिदोष अथवा सन्निपात ज्वर होता है, देशी वैद्यकशास्त्र मुजब ये एकतरेका त्रिदोष ज्वर है, लेकिन् मर्म-

स्थानके वरमके लियें इस ग्रंथमें जो रोगोंका हिस्सा छांटा है, उसतरीकेपर इस रोगकूं छातीके दरदोंकी गिणतीमें धरा है.

(कारण) कफज्वरका कारण और सलेपमका कारण वोही इस न्यूमोनियाका कारण है.

(लक्षण) फेफसेका थोडा अथवा बहोत भाग सूजकर अंदर दाह होता है, सरूमें सलेपम होता है, अथवा थोडा बुखार आकर बेचनी होतीहै एकाध दिन रहकर ठंढके संग जोरसे बुखार चढ आता है, इसकेसंग थोडी खासी और कफ होता है, छातीमे दरद होता है, श्वास जलदी नाडी तेज अरुचि शिरदर्द पेसाब थोडा तथा लाल दस्तकी कबजी बहोत नाताकती भ्रम बकवाद किसी २ बखत छातीमें श्वासकेसंग कफ बोलता है, पहली५।७दिन बुखार १०४ १०५ डिग्रीतक बढजाता है, पसीना नहीं आता दरदका जोर कम भये पीछै अथवा दरद लंबाण पडे पीछे पसीना आणे लगता है, तोभी बुखार उतरता नहीं जीभपर सुपेद थर और रोगके जोर मुजब सूकी पडके फटती है, तथा कांटा २ पडता है, भूख बिलकुल लगती नहीं इसवास्ते खुराक मुजब देणा पडता है, खासी किसीकूं कम किसीकूं जादा होती है, कफ पहली तो थोडा लेकिन् पीछेसें बढता है, वरमकी जगेपर दरद होता है, शूल होती है, सूनहीं सकता श्वासोच्छास ३० से ४० तक चलता है, नाडी १२० सें १४० तक बढ जाती है, पीछेसें कम जोर पडजाती है, बुखार पहली एक अठवाडे सख्त आकर नरम पडता है, लेकिन् रोगी नाताकत होजाताहै, जो बचणेका होता है, तो बेहोसीसें सावचेत होजाता है, बुखार उतार खाकर सब बदनमें पसीना आता है, दस्त पेशाब खुलाश आता है, जो रोग बढता है, तो त्रिदोषके सब लक्षण दिखाइ देता है, रोगी बेहोस गाफल होता है, नाडी क्षीण पडती है, गलेमें अवाज चलता है, मरजाता है.

(मुद्दत) इस रोगकी अवधी १२ सें ३० दिनकी है, जो रोग साधारण होय तो एक अठवाडेमें अच्छा होजाता है, मध्य होय तो २४ दिन जोर होय तो एक महीनेमें अच्छा होय या मरजाता है.

इलाज–कफज्वरका तथा सन्निपात ज्वरका उपाय करणा भाडंग्यादि (नं०१९६) बृहत्भारंग्यादि (१९७) अभयादि (१९५) वगेरे क्वाथकी योजना अच्छी है, नं० ६३८ तथा ६३९ का मिक्चर देणा छाती अथवा पीठपर जहां सोजन भया होय उस जगे अथवा पंसलीमे शूल निकलती होय उस जगे अलसीकी पोटिस बेर २ बांधणी अथवा टरपेनटाइन लगाकर गरम पाणीका सेक जारी रखणा दरदवाले भागपर राईका पलाष्टर आधी घंटे तक रखणा ताकत कायम रखणेकूं खुराक हलका लेकिन् अच्छा रखणा आमोनिया वाली कोईभी दवामे बदनमें कांटा आता है, नाताकती बहोत बढजाय तो अनार्य लोक तो ½ से ½ औंस ब्रांडी बरतते है, द्राक्षासव अथवा

पोर्टवाइन दिनमें तीन चार वखत देते हैं--(होमियोपथिक इलाजोमें) एकोनाइट ठंड तथा बुखारके रोगमें देणा अच्छा है) ब्रायोनिया और फोसफॉरस इस रोगकी अकसीर दवा है, दोनों दवायें दो दो घंटेके फासलेसें वारे फिरती देणी.

(विशेष सूचना) भयंकर बुखारकी जितनी सार संभाल रखणी इतनी ही न्यूमोनियाकी रखणी चाहिये.

फेफसेके पुडका वरम--प्ल्युरिसि) होता है, इसका इलाज फेफसेके वरमके लगभग जेसा ऊपर मुजब करणा.

क्षय--धातुक्षय--राजयक्ष्मा--खैण--
(कन्‌झपशन)

(कारण) मलमूत्रादि वेगोकोंरोकणेसें अतिस्त्री सेवनसें वहोत भूखा रहणेसे वहोत इर्षा तथा फिकर वहोत महनत वहोत अथवा प्रमाणसे कम वेटेम खानपान वहोत अभ्यास छोटी ऊमरमें धातूका क्षय गरमी सुजाककी बेमारी छाती नाताकत होय और वहोत बोलणा शरदीकी जगेमें रहणा हांफणी फेफसेका सोजा ये सब क्षय रोगकूं पैदा करणेके कारण है, ये रोग औलादमें भी उतरता है, और जादा करके १८ सें ३० वर्षकी अवस्थामें जो क्षय होता है, वो पका और भयंकर होता है, उसमें बचणा मुस्कल है.

(लक्षण) पसवाडे तथा खवोंमें पीडा हाथपैरोमें जलण सब बदनमें ज्वर ये तीन क्षय रोगके मुख्य लक्षण है, (यदाहुनाभिमनु पौत्रात्रेय) अन्नपर द्वेष ज्वर श्वास खासी खासीमे खून गिरणा और स्वर बिगडणा (आयु ज्ञानार्णवमें) क्षयरोगकी तीन स्थिति जिसमें पहली स्थिति इस मुजब--ये नाशकारक रोगकी शरुआत वहोतसी वखत एसी बे मालूम जडरुप जाती है, सो जहांतक साधारण हालतमें इन रोगवाला होता है, उस वखत सादे वैद्यभी देखे तो भी उसकूं इस रोगकी खबर नहीं पडती सरूमें खासी होती है, वो जादा करके फजरमें होती है, और बिचमें खासी मिटकर पीछे वढती है, उसकेसंग सुपेद झाग जेसा और चिकणा कफ गिरता है, किसी वखत गळेमें खरखराट अवाज खोखरा होता है, वहोत दिन खासी कायम रहकर रोगीका दम उठ जाता है, थोडी महनत करणेसें श्वास चढ जाता है, आगे खासी बढणेके साथ नाताकती बढती है, रोगी ठिवरीज जाता है. नाडी सब दिन तेज चले सांझकूं और जीमेबाद जादा जलद चले सांझकूं हाथपैरोमें दाह होकर बुखार चढ जाता है, फेफसेमें एक तरेका पदार्थ पैदा होता है, जिस करके फेफसेकी मूल पोलार स्थिती बदलकर नकर करडा होजाता है, ये पदार्थ पहली फेफसेके ऊपरके हिस्से भागमें घर करता है, गळेके हांडके तथा नीचेके भागपर बजाणेसें पोले भवाजके बदले थोडा अवाज होता है, स्टेथोस्कोपसें

तपासणेंसे श्वास छोडणेका स्वाभाविक काल लंबा भया २ मालम देता है, श्वासकी ध्वनि स्वभावसें नरम होणेके वदले करडा मालम देता है, अथवा नलीमेंसे हवा जारही है, एसा मालम देता है, वचनका अवाज उंचा सुणीजता है.

(दुसरी स्थिति) करड़ा भया २ फेफसेके आसपासका भाग सूज जाता है, करडा पडामया भाग नरम पडकर उसमें पीप खासी कफ होकर बाहर गिरता है, इस सोजेकी हालतमें रोगीका बुखार प्रगट होता है, छातीकूं तपासते अवाज बोदा होगा कान धरकर सुणणेसे अंदर पपोटे जेसा अवाज सुणाइ देगा किसी वखत तांती बोलेगा हांसके आसपासका भाग जरा बैठा भया मालम पडेगा.

(तीसरी स्थिति) कितनीक मुदतसें कफ बाहर निकलकर छाती पोली होती है, और वो भाग जाहिर बैठा भया मालम देता है, पांसलीके वीचकी जगेमें खड्डा मालम देता है, और दरदवाली छातीकी बाजू जादा बैठी तथा चिपटी मालम देती है' इस तरे फेफसा खवाते जाता है, उसके संग शरीरकाभी क्षय होते जाता है, फेफसा सडणेसें खुन साफ होता नहीं खुराक खाईजता नहीं कफ दस्त तथा बुखार रातकूं वेहद पसीना वदनके सब धातुओंकूं सुकाता है, आखर हड्डी और चमडी बाकी रहती है.

(क्षय होतेकूं अटकाणेका इलाज) जिसके मा बापकूं क्षय रोग भया होय उस वीर्यसे पैदा भये बच्चेकी वहोत खानपानकी संभाल रखणी निज खजनमें लम्र करणा नहीं जैन (आर्य शास्त्रभी मना करता है,) गर्भ धारण करती वखत माकूं एसा कोई रोग भया होय तो उसकूं वहोत संभालसें रहणा अच्छा खुराक ताकतकी दवा देणा बचा भये पीछे बचेकूं वहोत हिफाजतके साथ रखणा गरम कपडा पहिराणा और शरद हवासे विलकुल बचाये रखणा खुली, हवामें फिराणा रोगी स्त्री गऊ बकरीका दूध पीलाणा नहीं बडा भये बाद कसरत कराणी बालपणेमें सादी करणा नहीं अति मैथुन अति महनत फिकर और बहोत अभ्यास इसका त्याग करणा जादा करके गरमी. (उपदंश) और कंठमाल जेसे खराब रोगोसें पीडित औरत मर्दसें जो बचा होता है, एसी औलादकूं क्षय जेसा रोग लगणा जादा संभव है. (कंठमाल रोग देखो) पिछाडी लिखा है, एसे रोगी बचोंके शरीरमेंसे एसे दुष्ट रोगका निकाश करणेवास्ते वहोत सावधानी रखणेकी जरूरी है, एसे बचेका खून सुधारे एसी दवा कोडलीवर अमृतवटी वसंतमालनी वगेरेका बहोत मुदततक सेवन कराणा और इससेभी जादा जरूरीकी वात ये ध्यानमें रखणेकी है, के खुली हवामें फिराणा हमेश जेसे बणे तेमें सादा और अच्छा खुराक देणा क्योंके देशी खुराक रोगकी वृ[illegible] [illegible]ास्ते वहोतसी बेमारियां बहोतसी वखत [illegible] [illegible]धी अन्नपान बावत इस

(क्षयरोग भये पीछेका इलाज) (देशी इलाज)

(१) अरडूसा–खासी तया क्षयरोगकेवास्ते बहोतही उत्तम इलाज है, (पृष्ठ २४१) लिखा भया वासा स्वरस वासा पुटपाक वासादि क्काथ वसावलेह वगेरे सब बनावटे क्षय क्षत तथा खासीका अकसीर इलाज है. (२) सीतोपलादि चूर्ण (नं० २२७) घी तथा सहतमें अयवा इस चूर्णमें सोनेका वर्क घोट घी अथवा सहतमें चाटणा (३) सुवर्ण मालनी वसंत-(नं०२३७)सहत तथा पीपरमें अथवा सितोपलादि चूर्ण मिलाकर घी सहतमें(४)वसंत मालती(नं० ५४) सीतोपलादि तथा मोलेठीके चूर्णसंग घी तथा सहतमें चाट थोडा बकरीका दूध पीणा.(५)(अमृतवटी)दूधके पथ्यमें बहोत अच्छा फायदा करती है, बदनके सब धातुओंकों बढाती है, और फेफसेमें नया खून प्रासकर जखम भी भरदेती है, (६) इसग्रंथके (नं० २६५, २८२, ३३५) वाला इलाज फायदावंद है, (अंग्रेजी इलाज)–(१) कोडलिवर क्षयका मुख्य इलाज है, लेकिन् आर्यलोक इससे बचणा अनार्यलोक सरुआतमें आधे रुपेभरसे रुपेभरतक दोनों बखत जीमें बाद लेते हैं, और जब पचणे लगता है, तो ४ रुपेभर बढाते २ लेते हैं, साफ कोडलीवर ओइल स्वादसें बहोत नफरण लानेवाला है, इसवास्ते (२) माल्टाइन जीमे बाद दूधके संग लेते हैं, कोडलीवर और माल्टाइनके संग कीनाइन लोह फोसफरस वगेरे दवाओं मिलाकर भी देते हैं, बुखार तथा दस्त लगता होयतो कोडलीवर देणा नहीं (३) हाइपो फोस्फेट ओफलाइम–मात्रा ॥ से एक औंस हमेस दोतीन वखत दूधके संग और कोड लीवरके संग भी देते हैं, (४) पेपसीन लॅक्टो पेपसीन पांक्रीयाटिक ईमल्सन बिसमथ नक्षवोमिका तथा कीनाइन और चिरायता इसमेंकी कोइभी एकाधदवा सरू रखनी पाचन क्रियाकूं मदत देणी (५) लोहवाली दवायें जेसेंके सिरप ओफ आयोडाईड ओफ आयर्न आमोन्या साइट्रेट ओफ आयर्न टिंकचर ओफ स्टील फोस्फेट ओफ आयर्न वगेरे अच्छा फायदा करती है.

(विशेप सूचना)–क्षयका रोग असाध्य है, पकाक्षय कमी मिटता नहीं खासीमेंसे क्षयकी पकी पहिचान करणी ये पूरे अनुभवका काम है, इसकी निश्चय होगये पीछे इलाजभी बहोत निगे दास्तीसें करणा तभी चतुरपणा सिद्ध होता है, असाध्य जांण निरास होणा नहीं अछे योग्य इलाजोसें रोगीकूं आराम मिलता है, जींदगी बढती है क्षयवाले रोगी सेंवणसकेतो वस्ती छोडकर जंगलकी उंची और खुली हवामें जाके रहे, सूकी खुली और अछी हवा क्षय रोगका सर्वोत्तम इलाज है, सब तरेके गरम उत्तेजक तथा नसेवाले खानपानका त्याग करना सादा अछा और पोपणकारक खुराक खिलाना [illegible] दवायें और दूधसें जादा पोपण करना खुराक रुचिप्रमाने खाना. चावल गहूं चंदलाई ताजे और उत्तम पके फल दूध मलाई घी परवल उत्तम शाग तरकारी

ये सब पथ्य है. लेकिन् बहोत चीजों मिलाकर संग खाना ये नुकशांन करता है. बकरीका दूध बकरियोंमे रहना बकरेके बालका बिछोना बकरेकी लींडीका तप बहोत प्रशंसनीक है.

किरण ३ री.

रक्ताशयसंबंधी रोग.

रिदय रोग हार्टडिझीझ.

देशी वैद्यकशास्त्रमें रिदयरोग इसनामकी व्याधि नीचे रक्ताशयके रोगोंका वर्णन किया है. उसमें रक्ताशयका रोग छ प्रकारका लिखा है. १ उरोग्रह २ वायूका ३ पित्तका ४ कफका ५ तीनों दोषका ६ कृमिजन्य याने चूरनिये पडनेसें.

(कारण) बहोतगरम भारी खट्टा तुरा और कडवे पदार्थोंका सेवन करणेसें बहोत खेचलसें चोट लगनेसें भोजनपर भोजन करनेसें डरसें दस्त पेशाबके वेगकूं रोकनेसें इत्यादि कारणोंसें रिदयरोग होता है, इसके सिवाय शरदी ठंढ मूत्राशयका रोग और संधिवायू होय तोभी रिदयरोग होजाता है.

(लक्षण)-(१) उरोग्रह-खून मांस तिल्ली और यकृत् वढता है, और रिदय विस्तार पाता है, (२) वायूका-रक्ताशय पीडासें जाणे फैलता है, सूयोंसे चुभाते होय एसा दरद होता है, (३) पित्ताशय संबंधी-प्यास संताप वदनमें जाणे अंगार लगायदी है, कोइ चूसे एसी पीडा गभराट कंठमेंसे धूआं निकलणा मूर्छा दुरगंधवाला पसीना और मूंका सूकना (४) कफसंबंधी-रक्ताशयमें भारीपना कफका गिरना अरुचि मूंमे गीलासपना और जठराग्नि जाणे जलसे भीजाभया एसा मालम देता है, (५) तीनोंदोष संबंधी तीनोंदोषोंके लक्षण मिले भये होते हैं (६) रिदयमें कृमि उत्पन्न होती हे, तब उलटी मोल होती है, वेर २ थूकना पडता है, सुई चुभाने जेसा दरद शूल आंखमें अंधेरी अरुचि आखोंमें कालास पडता है, उससे क्षयरोग भी होजाता है.

रिदयरोगका इलाज-(१) गऊका दूध ९६ तोला मंद आंचसे आधाजले तब ठंढाकर उसमें मिश्री घी तथा सहत दोदो तोला और तीन मासा पीपरका चूर्ण मिलाकर रोगीकी शक्ति मुजब देना (२) पोकर मूल अथवा एरंडीके जडका चूर्ण सहतमें चाटना (३) कुटकी तथा मोलेठीका चूर्ण गरम पाणीमें पीणा (४) बकुलवृक्षके पुष्पोंका हार पहरना (५) पारा गंधक अभ्रक इनोकी भस्मी सम वजन लेकर इसकूं असालियेके छालके रसकी अथवा कांदेके रसकी २१ भावना देनी पीछे वो चूर्ण सहतमें चाटना मात्रा १ मासा (६) कृमिजन्य रिदयरोगमें प्रथम लंघन तथा दस्त कराकर पीछे कृमिरोगमें लिखे इलाजकरणा (७) वायविडंग उपलेट इसका चूर्ण गोमूत्रमें देना

(८) असालियेका स्वरस तथा कल्कसे पका या घी (९) असालियेकी छालका उकाला तथा दूध (१०) असालियेकी छालका चूर्ण घीके संग दूधके संग अथवा गुडके पाणीके संग (११) हिरणके सींगकी भस्म करके गायके घीमे चाटनी (१२) दश-मूलका क्वाथ (नं० ९७)-(१३)-(नं० ७३२) तथा (नं० ६३०)६३१) का इलाज (१४) अमृतवटी रिदयरोगपर सर्वोपरी इलाज है, दूध चावलका पथ्य रिदय-रोग मिटाकर वदनमें अमृत जेसा गुण दिखाती है, (१५) द्राक्षासव (नं० २८३)

रिदयरोगके दुसरे शारीरकचिन्ह–रोग.

(रक्ताशयका सोजा)–(कारण)–शरदीसें मूत्राशयके रोगसें अथवा जखमसें छातीमें सूजन आती है, (लक्षण) बुखार छातीका धडका, श्वास जलद, चहरा फिकरवंद गभराट बांइकर वटसो नहीं सकता–(इलाज)–गरमपाणीका छातीपर शेक करना अलसीकी पोटिस बांधनी अथवा दोपघ्न लेप बांधना दस्तके खुलशा वास्ते हरडेका चूर्ण अथवा एप्समसॉल्ट देना.

(रक्ताशयका फैलाव)–रक्ताशय जब बढता है, तब उसके पडदे जाडे पड़ते हैं, अथवा थेली विस्तार खाती है, (कारण)–खूनके फिरणेमें अडचल होणेसें खून बढ-जाणेसें जादा महनत करणेसें सखत धूपसें और फेफसा मूत्र पिंड वगेरे दुसरे रोगोंमें जब रक्ताशयकूं जादा जोर पडता है, तब उसका कद बढता है, (लक्षण) रक्ताशयमें जादा खून रहणेसें वो जादा धडकता है, महनतसें दम चढता है, नींद नहीं आती नाडी बे प्रमाण और छातीमें दरद होता है,) (मूर्च्छा) (कारण) किसीभी दुसरे कारणसे रिदयमें खून जाता अटके कम हो जाय अथवा खराब खून जावे तब मूर्च्छा आती है, मरणा त्रास तमाखू वछनाग जादा नाताकती और कितनेक रोगोंमें भी मूर्च्छा आती है–(लक्षण बेहोसी आंखमे अंधेरी चकर जी मचलाणा उलटी चहरा फीका कांपणी ठंढ शीतांग नाडी धीरी और बे प्रमाण श्वास जलद गभराट बै चैनी बिलकुल फेम नहीं आंखकी की की फैल जाती है, नाडी नाताकत धीरी थोडी नसोंकी खेंच ताणभी होजाती है,–(इलाज) अमोनिया नाकमें सुंघाणी मूंपर पाणी छांटणा हवा डालणी.

(धडका) (फडकणा) रक्ताशयके ऊपर हाथ धरणेसें छाती जादा जोरसें धड २ करती है, उसको (पाल्पिटेशन) कहते हैं. कारण–खुनहीके फीरणेकी चालमें अडचल होती है, तब उसके बदलेमें चाल बढती है, पेटमें हवा अथवा पाणीका जादा खुराक रक्ताशयपर कुछ दबाव मनका चंचलपणा वहोत स्त्री सेवन मग-। नाताकती तमाखू अथवा दारूका विशन तथा औरभी पांडू वगेरे केइयक रोग ...का धडका पैदा करता है.

(लक्षण) धडका ये रक्ताशयके एक वडे रोगका लक्षण है, वोजन पैदा होता है, तो वडी धैसत वताता है, ये रोग वैर २ उठता है, वेर २ वैठता है, छातीमें कुछ उछलता है, गलेमें गोला चढता होय एसा रोगीकूं मालम देता है गमराट मूर्छा श्वास कानमें अवाज शिरमे दर्द चक्कर आंखमे अंधेरी पसीना जादा वगेरे-(इलाज) रोगीकूं शांत पडे रहणे देणा कस्तूरी हींग अफीम डिजीटेलिस ब्रांडी पोटास ब्रोमाइड वगेरे दवा देकर देखणी हाथ पैर सेकणा तथा छातीपर राई धरणी अथवा सेक करणा.

(हृदयशूल) कारण-पुख्त ऊमरके अदमीके ये रोग होता है, श्रम शरदी ठंढी अजीर्ण भारी खुराक वहोत दारुके खाणेसे इत्यादि कारणसे हृदयशूल पैदा होती है, लक्षण-वांये तरफ अकस्मात् शूल होती है, वायुके हृदय रोगके लक्षण होते है, छाती जाणे वांधली होय और श्वास वंध भया होय एसा वाहरसे मालम देता है, लेकिन् पक्वायतमें अंदर श्वास चलते रहता है, दरदी दिखणेमें भयंकर चहरा फीका नाडी ना ताकत पसीना और मरणेका डर रोगीसें वोला नहीं जाता तोभी अंदरसे सावचेत रहता है, वहोत देरतक शूल चलता है, तो किसी वखत आंचकीयाने वांइटे चलणे लगते हैं, इलाज-जल्दीके इलाज तरीके छातीपर राईका पलाष्टर मारणा अथवा टरपेन्टाइन लगाकर शेक करणा कस्तूरी हींग क्लोरलहाइड्रेट सालवोलेटाइल डिजीटेलीस वेलाडोना ब्रांडी वगेरे दवाओंमेंसें जो हाजर होय वो पिलाकर और आमोन्या इथर वगेरे दवा सुंघाणी.

(विशेष सूचना)-हृदय रोगमें ये शारीरक चिन्होंका तात्कालिक इलाज उपरांत जादा इलाज पहली लिखा है, सो करणा रक्ताशयका रोग वहोत विचारवाला जादा करके असाध्य अथवा कष्ट साध्य होता है, इसवास्ते पूरे इल्मीसे परिक्षा कराके इलाज कराणा ये सीख है ।

किरण ४ थी.

पक्वाशयसंबंधी रोग.

इस रोगमे होजरी तथा आंतरोंके तमाम रोग तथा उस अवयवोकी विकृतीके संग संबंध रखणेवाले दुसरे भी कितनेक रोगोंका समावेश इसमें किया है, पाचन क्रियाके रोगसें जो जो रोग होता है, उन सर्वोंका इस किरणमें वयान है, दाखला जेसेके मसेका दरद (हरस) जाहरमें तो गुदाके संग संबंध रखता है, लेकिन् उसकी असली वुन्यादसोचेतो पाचन क्रियाके विकारमेसेही हरसका जन्म है, इसीतरे आम्लपित्त और मूंका दरद भी पाचन शक्तिका विकार है ।

मूंका रोग.

मूंके वहोतसे रोग जादा करके अजीर्ण और विगडी भई होजरीसे होता है, (जीमका

गरम)-जीभ सूजकर लाल हो जाती है, तथा जलण होती है, थूक गिरता है, और बोलणेमें तथा खाणे पीणेमें अडचल होती है, सूजन घहोत होती है, तो रोगीकी जुवान बाहिर निकल आती है, और रोगी मर जाता है, जीभ भलासक असाध्य रोगसे अंदरसे कटकर प्राणी मरता है, पारेकी दवा देकर जो मूं लाते हैं, तब घहोतसी वखत एसी खराबियां होती है, अजीर्णके सिवाय शरदी मोसमका फेरफार जखम और पारेसंबंधी दवा खाणेसे इत्यादि कारणोसें भी जीभ परदाह हो जाता है। (इलाज)-जुलाबकी दवा देकर होजरीकूं साफ करणा कथा इलायची कबाबचीणी हीराकसी वगेरे ठंढी दवा यें मूंमे रखणी अथवा जुवानपर घसणा त्रिफलाकी राख करके सहतमे मिलाकर जीभ-पर घसणा अथवा सहतका कुरला कितनी एक देर मूंमे रखकर थूक देणा वरफ मूंमे रखणा पंचवल्कल (नं० १५७) अथवा इनोंमेसे मिले इतनी छालोकूं उकाल ठंढा पाणी कर उसका कुरला जीभ पर छलाछेद शस्त्रसें कराकर खून निकलवा डालना-(मूंमे जखम) पेटके अंदरका अजीर्ण तथा विगाडसे अथवा लाल मिरच पानसुपारी वगेरे गरम चीजें खाणेसें मूंमें घाव पडता है, साधारण छाले दवा विगरही आराम हो जाता है, पाणी कम पीणेमें आवे तो या गरमी तासीरवाला दिनका सो जाणेसें छाले जखम पडते हैं। (इलाज) अजीर्ण अथवा दस्तकी कब्जी होय तो उसका इलाज दस्तावर करणा गरम खानपान गरिष्ठ पदार्थका त्याग करणा घावपर कथेकी भुकणी लगाणी जुई-का पान अथवा मेंहदीके पानकी लुगदीकर मूंमे रखणा जुईका पत्ता दारूहलदी तथा त्रिफलाके पाणीका कुरला करणा बंबूलके पत्ते चाबणा तथा बंबूलकी छालका या पंच वल्कलकूं उकाल कुरले करणा घाव बडे होय और आराम नहीं होता होय तो नीलाथोथा लगाणा टंकणखार तथा सहत चोपडणा टंकणखार और सिसेराईन मिलाकर मूंमें लेप करणा शरीरमें गरमी याने उपदंशके विकारसे जो मूंमें घाव पडता होय तो खून सुधा-रणेवाली दवा खाकर गरमी मिटाणी नहीं तो घाव किसीभी तरे मिटणेका नहीं।

(गलेका सोजा चोरिया)-अजीर्ण कब्जीयत और शरदीसे गलेमें सोजन आकर चोरिया होता है, गलेकी बारी लाल होती है, और चोरिया सूजकर बुखार आता है, जबाडीके पिछले खूणे नीचै गांठे होती है, जीभपर सुपेदथर आती है, गलेमें थूक चीक-णा होता है, और नीकलता नहीं जिस करके एसा मालम देता है जाणे गलेमें कुछ भरा पडा है, खुराक तथा पाणी गलेमें उतरते दरद करता है, चोरिया किसी २ वखत पककर फूटता है। इलाज-गरम पाणीका शेक करणा अलसीकी पोटिस बांधणी फिटक-डीका वैर २ कुरला करणा एक अछा जुलाब देणा बाहिर गांठो पर दोपमलेप अथवा [illegible] लगाणा नं ५५३ तथा ५५६ कामिकश्वरसे कुरला करणा बरफके पाणीका [illegible] करणा फायदा होता है।

गालपचोरिया-थूक पैदा करणेवाले पिंड सूज जाते है, उससे खाणेमें अडचल होती है, गाल पचोरेमें थोडा बुखार आता है, ये रोग चेपी है, कानके नीचेका और गलेका भाग सूज जाता है इस रोगका भर तीन चार दिन रहता है और एक अठवाडेमें मिट जाता है। इलाज-हलका जुलाब ले लेणा गरम पाणीका शेक करणा दूधमें निमक डाल पका कर बांधणा बुखारकेवास्ते पसीना आवे एसी दवा देणी.

(मूंकासाल)-ये रोग वहोत भयंकर है ओरी वगेरे मरज हो गया पीछै किसी २ ना ताकत वचोंके ये रोग होता है दांतोके पारोंके धारपर धारे (लकीरें पडती है) तेसें होठ और गालके अंदरके पुडपर जखम पडता है गालके अंदरका भाग सड जाता है मरामांस दिखता है मूंमे वहोत वदवो आती है और अंदरसें लाल तथा पीप वहता है बुखार आता है जखम गहरा पडता है तो गालके आरपार छेद पडता है कोइ २ वखत होठ तथा मसूंडे सडकर जवाडीकी हड्डी और दांत जाते रहते हैं इस रोगसे प्राये प्राणी मर जाता है (इलाज)-पौष्टिक और गरम खुराक देकर वचेमें ताकत लाणी चाहिये जखमका इलाज करणा खुराक पतला देणा मूंकी वदवो दूर करणेकुं परमागनेट ओफ पुटाश अथवा कलोरीनेटेड सोडा वगेरेका कुरला करणा तिलकुं पीस उसका पाणी करणा वो पाणी दूध घी ये एकेक अथवा तीनो संग मिलाकर कुरले करणा तिल काला कमल घी मिश्री दूध इन सबोंकों पीस उसमें सहत मिलाकर कुरले करणा इकेली सहतका अथवा त्रिफलाकी राखमें सहत मिलाकर कुरले करणा दारू हलदी गिलोय त्रिफला मुनका जाईके पत्ते धमासा इनोका काथ ठंडाकर उसमे छठे हिस्सेका सहत मिलाकर कुरला करणा त्रिफलाके काथमें सहत मिलाकर कुरले करना अथवा जलमें सहत डाल कुरले करना सहतका सेवन गलेका सब रोग मिटाता है।

(होजरीका रोग) (होजरीका सोजा) (दाह) (कारण)-सराप ताडी मिरच गरम मसाला वगेरे गरमी और दाह करणेवाली चीजें जादा खानेसें वासी और विगडा भया खुराक और सडी भई मछी खानेसें नहीं पीणा एसी वखतपर ठंडा पाणी या बरफ पीणेसे और शरद हवासे ये रोग होता है सोमल खानेसें तथा विगर कली लगे पीतल तांबेके वरतणमे पकाया भया अनाज खानेसें अथवा नीलाथोथा अथवा जलद तेजापवाली चीजों खानेमें आणेसें ये रोग होता है। (लक्षण)-पीपटी (कोठीके सामने) दरद तथा दाह होता है, उबाला उलटी बुखार सब जीभ अथवा जीभकी कोर लाल होय नाडी छोटी जलदी प्यास कबी चहरा फिकर वंद (इलाज)-(१) साजी खार खट्टे नींबूका रस और जल तीनोंकों मिलाकर दिनमें दो तीन वखत पिलानेसे उलटी बंध होगी और बुखार भी नरम पडेगा (२) सोडाटार्टरिक एसिड और जल इन तीनोंकों मिलाकर पीणेसें एसादी फायदा होता है अथवा बरफका टुकडा चूसणा (३)

वनपसाका अथवा नीलोफरका सरबत तोला १ उसमें आना भर पाणी डाल कर पीणा (४) कासणीकानित राजल पीणा (५) ईसब गुल अथवा बेदाणे कालुआब दो दो घंटेसें चमचा २ भर पिलाणा (६) प्यास वहोत लगेतो अनारका रस चमचा भरके पिलाणा आंवलेका शरबत भी फायदा करता है (७) दस्त कबज होय तो एरंडीयेके पिचकारी गुदामें मारणी अथवा सीडलीझ पाउडर कालुआब देणा (खुराक) चावलोंके कांजी अथवा फकत दूध सिवाय कुछ देणा नहीं उलटीमें वहोत कम खुराक देणेसे पेटमें ठहरता है इसवास्ते उलटीका वहोत जोर होय तो रोगीकूं सुलाकर कांजीया दूध चमचेसें पिलाणा.

(होजरीका पुराणा सोजा)–होजरीका तेजसोजा नरम पडे पीछे वहोतसी वखत थोडा दरद रह जाता है, और वहोतसी वखत तीक्ष्ण दरद भये विगरभी ये दरदधीमे २ पैदा होता है, इस रोगमें खाये पीछे बेचेनी किसी वखत उलटी क्षुधा मंद शिरमें दर्द हाथ पांवोंमें कलतर और पीछे छातीनीचे कोडी ऊपर दरद होता है, ये दरद हाथसे दाबकर देखणेसें याजीमें वाद वढता है, खट्टीडकार पेटका फूलणा छातीमें दाह वगेरे पुराणे अजीर्णका चिन्ह मालुम देता है, (इलाज)–कोडीकी जगे पलाष्टर मारणा और फफोला उठे उसकुं नं० ५६३, मे लिखे मुजब ड्रेसिंग करणा अथवा नं० ५६२ मे लिखा भया पलाष्टर मारणा (२) पेटकब्ज होय तो हरडे सूंठ और बूरेकी फकी देणी अथवा सीडलीझ पाउडर याकम्पाउन्डस वार्वेका जुलाब देणा एरंड तेलकी पिचकारी मारणी (३) नं० २२७,२२८,२३६, का चूर्ण (४) अमृतवटी दूध चावलोंका पथ्य (खुराक)–इसमें खुराक सादा लेणा गरम मसाले तेज नसेवाला खानपानका त्याग करणा दाल भात शाग तरकारी गरिष्ट पदार्थका परेज रखणा खाना फक्त दूध या चावलोंकी घाट दूध मिलाकर अथवा साबूदाणे दूध देणा.

(होजरीका घाव)–जेसें बाहर चमडीपर जखम पडता है, तेसें होजरीमें भी सूजन भयां पीछे जखम पडता है, ये जखम मटरके दाणेसें ले करके अठन्नी जितनाकद होता है, जिस कारणसें होजरीमें वरम होता है, उसी कारणसें जखम पडता है, (लक्षण)–होजरीके वरममें इस रोगके विशेष लक्षण ऐसेहैं कोडीकी जगे दुखते भागका सामनेके भागके पीठके हड्डीमें दरद होता है, खाये पीछे तुरत उलटी हो जाणा खाया भया सब निकल जाता है, किसी वखत उलटीमें खून आता है, रोगी दिन २ दुबला होते जाता है, इस सब निशाणीयां होजरीके जखमकी है, (इलाज)–(१) रोगीके शरीरकूं तेमें होजरीकूं आराम देणा बिछोणेमें पडे रहणे देणा करडा और जड खुराक खाना नहीं, हलका और पतला खुराक भी थोडा २ देणा उलटीमें खुराक टिके नहीं तो दोय भाग दूधमें एक भाग चूनेका निथरा भया जल डालकर पिलाणा (२) कोडीपर अलसीकी

पोटिस बांधते जाणा अथवा राई मारणी (३) दरद बहोत होता होय तो होजरीपर टरपेन्टाइन लगाकर फुलेनलका शेक करना दरद मिटे पीछेभी कितनीक मुदततक सराप गरम मसाला वगेरे कोइभी गरम चीज खाणी नहीं होजरीके पुराणे सोजेका सब इलाज करना (४) फक्त अमृतवटी और दूधका सेवन करनेसें होजरीकी सब फरियाद मिटती है (५) खूनकी उलटी होती होय तो रोगीकूं सुलाये रखणा पेटपर बरफ धरणा बरफ चूसाणा दर घंटेसे ग्यालिक एसिड १५ ग्रेण पाणीमे डालके देणा अथवा टिकचर ओफ स्टील देणा.

पाचनक्रियाके लगते दुसरे दर्द.

अजीर्ण-इन्डाइजेश्चन.

अजीर्णका रोग जेसें बहोत साधारण है, तेसे इस रोगसे शरीरमें दुसरे बहोतसे रोगोंकी जडभीरुप जाती है, इसवास्ते ये रोग बहोत लक्ष देणे लायक है, और शरीरमें जरा भी अजीर्ण मालम दे तो उसका तुरत इलाज कर मिटाणा बदनका बंधेज खुराकपर है, लेकिन् वो खुराक जब अछीतरे पचता नहीं तब वोही खुराक मजबूती करनेके बदले उलटा बदन ढीला करता है ।

(कारण)–अजीर्ण होनेका कारण किसीसें छिपा नहीं है, अपणी पाचन शक्तिसे जादा और अयोग्य खुराक खानेसें अजीर्ण होता है, एक वखतमें जादा खाय लेणा कच्चा खाणा वेप्रमाण खाणा अगला पचे पहले खाणा बराबर चाबे बिगर खाणा खान पानके पदार्थोंका मिथ्या योग करना ये सब अजीर्ण होनेका कारण है इसके सिवाय कितनेक व्यसन जेसेंके दारू भंग गांजा तमाखू आलस वीर्यका जादा खरच और क्षय जेसें तनकूं और मनकुं बहोत महनत चिंता वगेरे बहोत कारणोंसे अजीर्णकी जड रूप जाती है.

(लक्षण)–अजीर्ण छोटेमें छोटा और वडे २ में वडा रोग है, अजीर्ण पेटमें दो क्रिया करता है यातो दस्त लाता है या दस्त बंध करता है दस्त होकर नहीं पचा भया भाग निकल जाता है जो नहीं निकले तो जादा खराबी करता है दस्त कब्ज होकर पेट फूलता है खट्टी डकार आती है जीभि चलाणा उछाला कै जीभपर सुपेदथर गलेमें छातीमें होजरीमें दाह शिरमें दर्द किसी वखत पेटमें चूंक नींदमें स्वप्न वगेरे अजीर्णके अनेक चिन्ह मालम देते हैं।

(संज्ञा)–देशी वैद्यक शास्त्रमें अजीर्ण (याने जठराग्निके) विकारोंका बहोत सूक्ष्म विचार लिखा है इन सबोका विस्तार इस जगे ग्रंथ बढनेके डरसे नहीं करते हैं तोभी सबोंका सारांस संक्षेप करके लिखताहूं जठराग्निके कमबेसी समविषम प्रभाव मुजब उसका चार प्रकार है, १ मंदाग्नि २ तीक्ष्ण अग्नि ३ विषम अग्नि ४ समअग्नि ५ अति

तीक्ष्ण अग्नि जिसकूं भस्मक रोग कहते हैं मंद अग्निवाला थोडा पचा सकता है जरा जादा खाता है तो अपचा होता है तीक्ष्ण अग्निवाला जादा भी खाता है तो पचासकता है, विषम अग्निवाला कभी तो जादा पचाता है कोई वखत थोडा भी नहीं पचता है, और अग्निका बल अनिमित होनेसें बहोत रोगकूं पैदा करता है सम अग्निवालेकूं बराबर पचता है और बदन निरोग रहता है भस्मक अग्निवाला जो खाता है सो भस्म हो जाता है, जो उस भूखकूं रोके तो बदनके धातूओंकों खा जाती है अब अजीर्णकी जाति इस मुजब है (१) आमाजीर्ण कफसें होता है अंगमें भारीपणा औकारी आंखके पोपचोपरथेथर और खट्टी डकार आती है, २ (विदग्धाजीर्ण)-पित्तसें होता है भ्रम होणा, प्यास, मूर्छा, संताप, दाह, खट्टी डकार, पसीना वगेरे होता है, ३ (विष्टब्धाजीर्ण)-वादीसे होता है शूल, आफरा, चूंक, मल, तथा अधोवायूका रुकणा अंगोका जकडणा और दरद होता है (४) रशशेपाजीर्ण) खाये पीछे पेटमें पके भये अनाज का साररूप जो रश (पतला) भाग होता है वो पतला भाग भी पकते २ कचा रह जाता है, उसका नाम रशशेपाजीर्ण छाती साफ नहीं होनेसें तथा बदनमें रसकी वढोतरीसे अन्नपर अरुचि होती है, (अजीर्णके दुसरे उपद्रव) ·अजीर्णमेंसे विसुचि (हेजा) अलशक तथा विलंबिका नामका रोग होता है हेजेका बयान पहली लिख दिया है, (अलसक) आहार नीचे जाय नहीं उंचाभी जाय नहीं पकताभी नहीं लेकिन् पेटमें एक जगे पडा रहता है आफरा तथा बहोत दरदवाले अजीर्णके भेदकुं अलसक कहते हैं, (विलंबिका)-खराब भया पेटका अन्न कफ तथा वायूके लिये ऊपरके अथवा नीचेके द्वारसे निकले नहीं उसकू विलंबिका कहते हैं । (अजीर्णका सामान्य इलाज) (१) आमाजीर्ण होय तो गरम पाणी पीणा विदग्धा जीर्ण होय तो · ठंढा पाणी पीणा तथा जुलाब लेना विष्टब्धाजीर्णमें पेटपर सेक करना और रश शेपाजीर्णमें सोजाणा । (२) लंघन अजीर्णका अछा और सस्ता इलाज है लेकिन् मारवाडी भाइ मरणा कबूल करते हैं लेकिन् लंघनके नाममें कोसों दूर भागते हैं जिसमें भी भाग्यवानोकी तो कद पीदी क्या (३) सींधा निमक सुंठ तथा मिरचकी फकी छाटसें या जलसें (४) चित्रककी जडका चूर्ण गुडमें (५) जवा हरडे सूंठ तथा सींधा निमककी फाकी जलमें या गुडमें (६) सूंठ टींडी पीपर तथा हरडेका चूर्ण गुडके संग लेणेसें आमाजीर्ण मिटे और दस्त तथा कबजी मिटे (७) चित्रक थोडी अजमोद सेंधव सूंठ मिरच गाडी छाछमें पीना दस्त तथा पांडुमें फायदा करता है (८) धाणा तथा सुंठका क्वाथ पीनेसे आमाजीर्ण तथा शूल मिटती है (९) अजवाण तथा सूंठकी फकी अजीर्ण तथा [illegible] मिटती है (१०) कालीजीरी २ से ४ वाल निमकके संग चबानी अथवा [illegible] मासी (हीराकासी) चार चानी भर फाकणा (११) घीमें तले भये कुवारपाठेकी

फक्की १ रत्तीसे १ वाल (१२) पीपला मूल २ से ४ वालतक खाणा (१३) लसण जीरा सेंचल सेंधा हींग नींबु कुचीला कांकचके बीज वगेरे दवाओं अग्निकुं प्रदीप्त करती है, इनोंमेंसे जो मिले उसका उपयोग करणा (१४) नं० २४३,२४५,३४०,३४३, की दवाये तथा नं० १६९ की शंखवटी और १९०, का हिंगाष्टक अजीर्णका अछा इलाज है (१५) नं० ६०२,६०३,६०४, के अंग्रेजी मिक्श्चर.

(होमियोपाथीक इलाज)-एन्टीमनी क्रूड आर्सेनिक ब्रायोनिया कार्वोव्हेज चाइना ही पारसल्फ नक्सवोमिका वगेरे ।

(विशेष सूचना)-अजीर्णके रोगीने खाणेका संभाल रखणा एक वेरका भया अजीर्ण एक लंघणकर हलका खुराक दुसरे दिन खाणा और ऊपर लिखी साधारण दवायोंसे भी जलदी मिट जाता है लेकिन् जो गफलत होती है तो इसका असर वहोत दिनोंतक रहता है तब अजीर्ण पुराण पडके बदनमें घर करता है और मिटणाभी मुस्कल होता है बहोत अदम्योंकूं जथा बंध अजीर्ण रहता है लेकिन् ये बात उनोके समझमें नहीं आती तब तरे २ के रोगोंकी फरियादी करते फाफा मारते मूर्खोंके पास फिरते हैं लेकिन् कारण समझे विगर इलाज नहीं होता इसवास्ते मंदाग्निवालेनें और अजीर्णकी शंकावालेने सादा और बहोत हलका खुराक खाणा चहिये चावल दलिया दालका पाणी वगेरे ।

पुराणे-अजीर्ण बदहजमी.
(डिस्पेपस्या)

अजीर्णका रोग बडे सहरोके सुधरे भये समाजमें हरेक घरका खास मरज बण गया है तरे २ के मन माने भोजन करनेके शोखमें पडे भये और गद्दी तकियोंमें पडे रहणे वाले मोतब्बर लोकोके ऊपर ये रोग वेर २ हमला करता है जो लोक खाणे पीणेका स्वाद और मौज शोपसे बचकर और रातकूं नाच तमासा और नाटिक देखणे की लतसे बचकर साधारण जिंदगी भोगते हैं वो अदमी प्राय इस रोगसे बचे भये हैं मुंबइ हैदराबाद बीकानेर अहम्मदाबाद सूरत जेसे सोखीन सहरोमें इस रोगका जादा फैलाव है बहोतसे दोलतवानोके पास सुखके सर्व साधन होकरके भी कुटंबमें हमेसवादी और बदहजमी शरीर और मनकी नाताकतीकी फरियादी ये सब कारण बदहजमीका है.

(लक्षण)-भूख तथा रुचिका नाश छातीमें दाह खट्टीडकार उछाला उलटी होजरीमें दरद वायुकब्जी मरोडा धडक श्वासका रुकणा शिरमे दर्द मंदज्वर अनिद्रा स्वप्न उदासी और खोटे खयाल ये बदहजमीका लक्षण है, अन्न नजरोसे देखे नहीं सुहाता खाया पचता नहीं कभी तो जादा भूख लगी एसा मालमदे खाये बादभी भूख मालम दे अंग गलता जाय रोगीकूं एसा दुख मालमदे के आपघात करके मरजाय एसे बुरे खयाल किसी वख्त होणे लगे.

(कारण)–मशालादार घी तेलसें तरानतर पक्कान्न तथा तरकारी जादा मेवा अचार इसतरेकी तेज और खट्टी चीजें वहोत दिनोंतक उपवास करके पशुकी तरे खाणेका अभ्यास वहोत चा वहोत जल पीकरके पेटकूं फूलाणा जीमकर तुरत वहोत पाणी पीणेका अभ्यास गरमागरम चाय काफीके पीणेकी टेव ये सब वादी और वदहजमीकूं बुलाणेके हलकारेहें सराप ताडी तमाखूं, सुंघणेकी तमाखूं, भांग अफीम जहरी चीजोंके व्यसनसे अदमीकी होजरी खराब होती है, वीर्यका जादा क्षय व्यभिचार गरमी प्रमेह वगेरे कारणोंसे अदमीकी आंतरे नरम नाताकत पडजाती है, निरुधमी निर्धनपणा होकर फेर जातकी और दुनियाके रिवाजसे ओ सर, व्याह वगेरेमें फजूल खरचसें धनके नाश होणेसें फिकर मंदीसेंभी अग्नि मंद अजीर्ण होता है ये सब अग्नि मंद होणेके कारण यादमें रखणा चहिये ।

(इलाज)–इसका जादा लंवा चोडा इलाज लिखना फजूल है फक्त उनमान मुजब सादा खुराक योग्य कसरत शरीरकी सामान्य आरोग्यताकूं वढाणेवाली साधारण दवाइयां और कोई भी तरेकी चतुराई एसी नहीं है सो इस बेमारीपर चले (१) पचे नहीं एसी चीजों जेसें के तरकारी दाल जात मेवा वहोत घी मख्खण मिठाई खटाश वगेरेका त्याग करणा (२) दूध दलिया खमीरकी अथवा जादा मोंण देकर गरम पाणीसे ओसण पतली थोडी रोटी वहोत नरम और थोडी चीज काफी दाल मूंगका ओसामण वगेरे खुराक केइ दिनोंतक लेणा (३) जीमणेकी टेमरखणी वेर २ वखत वदलणा नहीं वहोत देरीसे जीमणे नहीं रातका खाना नहीं क्योंके रातकूं जठराग्निका कमल सूर्य अस्त होणेसे खुला नहीं रहता इसवास्ते मार्कंड ऋषीने अपणे पुराणमें रात्री भोजनमें मांस खाणे जितना दोष लिखा है रात्रीकूं भोजनके रशमें अनेक जानवर आकर गिरते हैं उनोके खाणेसें अनेक किस्मके रोग हो जाते हैं ये वात दयानंदजीने भी सत्यार्थ प्रकाशमें कबूल करी है, जैन तो मुख्य दयाधर्मके पाया वंद होनेसें इस रात्री भोजनमें रोगादिक प्रत्यक्ष दोष और जीवोंकी अनेक रासी खाणेसें परोक्ष फल नर्क और जो मदिरापानी असुर लोक रात्रीकुं खाते हैं उनोकी देखा देख रात्रि भोजन करनेमें लोक उनोंका दाखला देते हें के अंग्रेजोंके वेमारी नहीं होती अहो आर्य लोकों उनोंके वेमारी नहीं होती ये वात तुमने क्या समझके कही वेमारी तो रात्रि भोजनसें जरूर होती है लेकिन थोडी और थोडीही मुद्दत ठहरती है क्योंके अवल तो उनोके मकानहीं केसे है सो क्षुद्रजीव प्रथम तो प्रवेशही नहीं करते दुसरा टेमोटेम वहोत थोडा खाना ऊपरसे फेर विकार नहीं करे और हाजमा एसा पदार्थोका साधन इस उपरांत वेमारी होते ही विद्वान डाक्तरोंसें इलाज करणा दो पहरसें जादा लिखणा वगेरे वदनकूं तस्ती नहीं देते तनदुरस्तीके सब साधन मोजद दुसरे स्वबसपणा इत्यादिक वातोंसें तुम किसीभी तरे उनलोकोंके जेसें

तन दुरस्तीपर कभी चल नहीं सकोगे आर्यावर्त्तवालोंमें कोइ २ श्रीमंत अंगरेजोंकी तरे चाल चलणमें पांव धरते हैं, सो वे मोत आधी जिंदगानीमें मरते हैं, क्योंके प्रथम तो पूरी पणही नही आती दुसरे ये देशकी तासीर और आब हवा अलग है, इसवास्ते चाहिये के हमारे प्रजापति भगवाननामि कुलचंद्रने जो दिनचर्या रात्रिचर्या ऋतुचर्या बतलाई वो मैंने संक्षेपसें इस ग्रंथके तीसरे चोथे प्रकाशमें या संपूर्ण ग्रंथमें जगे २ लिखी है, उस मुजबही चलणा कल्याणकारी है, इस आर्यावर्त्त देशके अनुसारही पहर वेश खानपान और चालचलण रखणा (४) सराप पीणा नहीं (५) भोजन करते २ अथवा भोजन कियेबाद तुरत जादा जल पीणा नहीं बहोत सख्त चाय या काफी पीणी नहीं जो कोई पतला पदार्थ पीणेमें आवे तो वो बहोत गरम या बहोतही ठंडा नहीं होणा (५) तमाखू सुंघणी नहीं जो कभी नकसीरका रोग बंद करणेकूं या कफ निजलेके निकालणे वास्ते व्यसन लगा होय तो दुसरे दवाइसे बंधकर छोडदेणा चहिये नहीं तो थोडी सूंघणी जीमणेकी बखत पहली तो बिलकुलही नहीं सूंघणी क्योंके इससे भूख बंद होती है, और खाया भया पचता नहीं तमाखू सूंघणेसे भूख बंद होती है, ये विसन छोडणेसें भूख खुलती है, ये बात बहोतसी जगे पतवाणे गई है, (७) खाणेकी तमाखू भी एसाही अपगुण करती है, तमाकू खाणेवाले समझते हैं, तमाकू खाणेसे खुराक हजम होता है. लेकिन् ये बात तदन झूठ है, उलटा अजीर्ण रहता है, (८) बहोत महनत नहीं करणी खुली हवामें अछीतरे फिरना बहोत नींद लेनेकी आदत होय तो छोड देनी और फजरमें जलदी ऊठके खुली हवामें फिरणा (९) खाये पीछे तुरत बांचना लिखना और विचार करणे बेठना नहीं (१०) अन्न पचाणेवास्ते गरम दवाइयें गरम खुराक तथा दस्त साफ लाणेकी दवा जुलाब इत्यादि देना नहीं अजीर्णके फैलसे बचना होय तो ऊपर लिखे नियम मुजब चलना होजरीकूं सुधारणेकूं बहोत दिनोंतक बच्चेकी तरे दूधसेंही गुजरान करना अमृतवटी जैसी आरोग्य बढाणेवाली दवा लेणी घोडेपर या पांवप्पादल साफ हवामें फजर सांज फिरना.

मलावरोध-कब्जी-बंधकुष्ट.

कोन्स्टीपेशन.

(दस्तका नहीं होणा)-साधारण तोरपर हर अदमीकूं २४ घंटेमें एक दो दस्त आता है, किसीकूं दिनमें दोवेर और किसीकूं दो तीन दिनसे एक बखतकी टेम पडी भई होती है, किसी वख्त बदहजमीसे अथवा कोई तात्कालिक कारणसे दस्त बंध होता है, सो विगरदवासे अथवा जुलाबसे वो खुलासा होगये पीछे टेमो टेम दस्त आते रहता है, इसकूं तो लोक बंधकुष्ट नहीं कहते लेकिन् दस्त उतरे नहीं जादा देरी लगे भूख

बराबर लगे नहीं पेटमें भार मालम दे पेट चढारहे और अजीर्णके लक्षण मालमदे उसकूं कब्जी कहते हैं.

(कारण)-वेर २ जुलाब लेनेकी टेमसे कब्जीका रोग होता है, कारण ये कुदरती नियम है, जादा महनत किये पीछे जादा मुदततक विश्राम लेना पडता है, इसवास्ते जादा जुलाबसे आंतरोंकूं अपणी शक्तिके उपरांत काम करणा पडता है, तब वो जादा बखततक अपणा काम करणेमें पीछे सुस्त रहते हैं जुलाबसें एक वेर तो पेट साफ होकर बदन हलका पडता है, लेकिन् पीछे थोडेही मुद्दतमें कब्जी और भराव होजाता है, और दारूके व्यसन जेसा डोल बणता है, जेसें दारू पीणेवालेकों दारूबिना चलता नहीं तेसें जुलाबकी टेव पडणेसें उलटी खराबी होती है. (२) दस्त तथा पेशाब तथा अपान वायूकूं रोकनेसे भी कब्जीका रोग होता है, बहोतसे अदमीकूं एसी आदत पडजाती है, सो कामके लिये दस्तकूं रोकते हैं, लेकिन् वख्त बीते पीछे दस्त आता नहीं (३) आंतरोका कोईभी भाग संकुडाणेसें अथवा किसीभी गांठका उसपर दबाव होनेसें दस्त साफ नहीं आता जेसे तिल्लीके रोगसें औरतोके गर्भके भारसें इत्यादि. (४) वृद्ध अवस्थाके लिये अथवा दुसरे कारणसे नाताकती होणेसें पेटकी नसें नाताकती बणती है, इससे मलकूं नीचे उत्तरतेमें जो जोर मिलणा चहिये वो नहीं मिलता है, तब मल अंदर भरे रहता है, इससे मलकी गांठे आंतरोंमें भरे रहति है, और आफरा होजाता है. (५) सफरा मंद पडजाणेसे उसमें मल भरके रहता है, (६) कलेजा पंक्रियाझ तथा तिल्ली जो पाचन क्रियाकूं मदत करणेवाला है, उनोंमें कोई विकार होता है, तब वो अवयव चहिये जितने प्रमाणमें आंतरोकी क्रियाकूं मदत नहीं देसकते उससे भी दस्तकी कब्जी होती है. (७) जो सुखी लोक खापीकर एकजगे बेठे रहते हैं, उनोके भी कब्जी होता है. (८) बुखार हरस मगजके और दुसरे भी कितनेक रोग कब्जीका कारण होता है. (९) नही पचे एसा खुराक खानेकी खराब आदत. (१०) सराब तथा तमाखू बहोत पीनेकी आदत.

(लक्षण)-दस्तकी रुकावट पेटमें भार हवा आफरा बेचेनी आलस मंदाग्नि चूंक (आंकसी) अपचा, कांच निकलनी, बवासीर शिरमे दर्द भमल चकर हिस्टीरीया थोडा बुखार श्वास लेते अडचल अनिद्रा मनकी खिन्नता.

(इलाज)-जिसकारणसें दस्त कब्ज भया होय वो दूरकरनेका इलाज करणा वो कारण सब पहले लिखा है, दस्तकी कब्जी मिटाणेकूं सख्त जुलाब कमी लेणा नहीं (१) एक दो दिनकी कब्जीमें हरडे जोटहरडे सोनामुखी, विलायती नमक, एरंडी तेल करमालेकी गिर, नसोतकी छाल, जुलाफा, इसार्प वगेरेका जुलाब ले लेणा, खीचडी वगेरे पतली खुराक देणा (२) बहोतदिनकी कब्जीके वास्ते हरडे १ भाग काली द्राक्ष २

भाग मिलाकर छ मासेसें एक तोलेभर प्रमाण गोली वणाकर प्रभात खाकर ऊपर पाव जल पीणा (३) ईस पूगल एकेकरुपियेभर दिनमें तीनवेर फाकणा (४) नीचे लिखे रोगोमें दस्तकी कब्जी होय तो रेचदेणा—जीर्णज्वर जहरका दोष वातरक्त भगंदर ववासीर पांडू उदररोग ग्रंथी हृद्रोग अरुचि योनिरोग प्रमेह गोला तिल्ली व्रण विद्रधी उलटी विस्फोटक हेजा कोठ कर्णरोग यकृत्कारोग सोजा नेत्ररोग कृमिरोग क्षारका विकार वायूका रोग शूल मूत्राघात वगेरे (५) इण नीचे लिखे रोगोंमे जुलाव देणा नही वालक वृद्ध घी तेल वगेरे स्नेहपान करके वहोत स्निग्ध भया भया छातीके अंदर जखमसें क्षीण पडाभया डराभया महनतसें थकाभया प्यासका रोगी शरीरका जाडा गर्भणी स्त्री नयाबुखार तुरत पसीना निकाला भया मंदाग्निवाला सराप पीणेसे भया रोग बदनसे लूखानिस्तेज इतनोकों जुलाब देणा नहीं (६) दस्तकी कब्जी मिटाणे दस्त लाणेकी दवा देते कितना एक विचार रखणा चहिये पित्तके कोठेवालेकूं हलका जुलाब कफ कोठेवालेकूं मध्यम जुलाब वादीके कोठेवालेकुं सख्त जुलाब देणा.

(नरम कोठेवालेकूं जुलाब)—मुनक्का दूध एरंडीतेल सीडलीझपाउडर एप्सम सोल्ट (विलायती निमक) सोनामुखी गुलाबका फूल हरडे जोहरडे अमलतास (मध्यम कोठेवालेकुं रेच)—निशोत कुटकी किरमाला (सख्त कोठावालेकूं रेच)—जमालगोटासे शुद्ध वणा रस (७) पित्तके कोठेवालेकुं जुलाब कोप पित्तका होय तो—कालीदाख तथा सूंफकी उकालीकर उससे निसोतका चूर्णदेणा—कफके प्रकोपमे—त्रिफलाका क्वाथ गोमूत्र तथा त्रिकटु मिलाकर—वायुके कोपमें—निसोत सूंठ सींधानिमक इनोका चूर्ण नींबूका रस मिलाकर देणा (८) हमेसकी कब्जी वालोंने हमेस सख्त जुलाब लेणा नहीं लेकिन् जब जरूरी पडे तब एप्सम सोल्ट खीरखेस्त और सोनामुखीकी चा तीनोंकों मिलाकर अथवा एक तोला अमलतासमें १ तोला खीर किस्तमिलाकर पीणा एक दो दस्त आजाय तो दुसरेदिन फेर लेणा नहीं (९) घीमें सेकी भई जो हरडेकी भूकी आधे रुपेभर और सेंचल अढाई मासा इसकी फकी देणेसे हलका जुलाब लगता है. (१०) नाताकत आंतरोके लिये दस्तकी कब्जी रहती होयतो आंतरोंकों मजबूती मिले ओर दस्त साफ आवे एसा इलाज करणा—कुचीलेका सत्व ४ ग्रेण एलिया २० ग्रेण कीनाइन १० ग्रेण कम्पाउन्डरुबार्बपील २४ ग्रेण इनोकी १२ गोलियांकर फजर सांझ एकेक लेणा इसके सिवाय नं० २, ४, २५३, तथा नं० ४६१ से ४७५ तकका रेचक तथा सारक उपायोंमेंसे जो अनुकूल होय सो करणा (११) रातकूं पेटपर ठंडा पानीमें भिगाया कपडा रखकर उसपर गरम फुलालीनका कपडा लपेटकर सूणा रातकूं सोने सोवखत एकेक प्याला ठंडा जल पीणा पेटकूं यथाशक्ति दबाणा ममटाणा तथा हाथफिराना इन तीन नियमें भी दस्त साफ आता है (१२) पिचकारी पेटमें देणेसें कब्जी मिटती है, परेज भी नहीं

रखणा होता और पेटमें दरदभी नहीं होता दस्त करडा गांठोंदार आता होय तब तो पिचकारी बहोतही फायदे बंद है, जरा गरमकरे भये पाणीसे अथवा पाणीके संग एक दो औंस एरंडीका तेल मिलाकर पिचकारी भरके बैठकमें पिचकारीकी अगली टूंटी देकर पिचकारी मारणी और आसरे आधे घंटेतक रखणा जलदी दस्त साफ आयगा पिचकारीकुं देशीशास्त्रमें वस्तीकर्म कहते हैं, देसी चमडेकी तथा जस्तकी वण तीथी इसवखत विलायती पिचकारी यंत्रके साथ लेणेकी आती है, ये पिचकारी अपने हाथसे हरकोइ अदमी लेसक्ता है.

(विशेष बाकबी)–कब्जीके रोगीने खानपानका यत्न रखणा दालोंकी जात जेसी कब्जी करणेवाले पदार्थ खाणा नहीं बहोत चावल भी खाना नहीं मेदेकी तथा महीन आटेकी रोटी नहीं खाणी थूलीवाले आटेकी रोटी खाणी उससें भी हवाका जोर रहे तो वो भी नहीं खाणी दूध पचे जिस मुजब खाणा चा काफी बहोत सख्त बहोत गरम या बहोत जथाबंध पीणा नहीं हलका सादा खुराक लेणा टेमोटेम फरागत जाणा खुली हवामें फिरणे जाणा दस्त लाणेवास्ते बहोत चिंता करणा नहीं.

उदावर्त्त–अनाह–आफरा–नलबंधवायु–

(टिम्पेनाइटिझ.)

(कारण) पाद दस्त पेसाब जंभाई आंसु छींक डकार उलटी वीर्य भूख प्यास श्वास ये सब स्वभाव (कुदरती) वेग है, इनोके रोकणेसें वायू उंची चढती है, इससे पेट फूल जाता है, ऊपरके हरेक वेगकूं रोकणेसें जुदे २ उपद्रव होते हैं, वो सब उपद्रव दुसरेप्रकाशमें देखणा इहां उनोका मुख्य उपद्रव जो पेटके आफरणेका है, सोही लिखा है, पेट फूल जावे अंदरसे जाणे जकड गया होय एसा मालमदे गडगडाट करे श्वासरुके डकार आवे और जिसमें बहोतसी बखत खराब स्वाद और गंध आवे पेटमें दरद होय और वायुसरे तब थोडा चैन पडे ये सब आध्मान रोगके लक्षण है.

(इलाज)–अजीर्ण तथा चूंकमें लिखे इलाज करणा पेटपर राई मारणी गरमपाणीका शेक करणा पेटपर हींग अथवा टरपेन्टाइन चोपडणा हिंगकापाणी टरपेन्टाइन तथा गरमपाणीकी वस्तिलेणी गुदामें वाट रखणी मैणफल पींपर कूठ वज और सुपेद सरसूं इन सबोंको गुडमें पीस तथा दूधमें पीस इनोकी वत्तीकर गुदामें रखणी चार तोला बूराखांड एक तोला निशोत एक तोला पीपर इकठाकर इसमेसे १ तोला चूर्ण सहतके संग मिलाकर जीमणेके पहली चाटणा सूंठ मिरच पीपर पीपरामूल चित्रक जमालगोटा तथा निशोत इन सबोंका समभाग चूर्ण गुडमे मिलाकर शक्ति मुजब लेणेसें आफरामिटता है, २ भाग निशोत ४ भाग पींपर और ५ भाग हरडे सबकी बराबर गुड इनोकी गोलीकर खाणेसें

तेज आफरेका रोग भी मिटजाता है, पींपरमिंटके दसेक बूंद जलमें डालकर पीणा युरोपियन ब्रांडी देते हैं, कब्जी होय तो एरंडी तेलका जुलाब देणा अथवा इसकी पिचकारी.

चूंक-आंकसी-शूल-

कोलिक.

ऊपर लिखा सब बयान लगबग एकही अर्थ और एकही रोगकूं पहचाणणे वाला है, पेटमें चूंक आवे शूलमारे आंकसी अथवा वांइटे होकर पेटमें दरद होय उसरोगके पहली लिखे सोंनाम है.

(कारण)-(१) बहोत वायुकारी अथवा कच्चा खुराक नहीं पचणेसें पेटमे वायु जोर करती है (२) दस्त बहोतदिनोंतक कब्ज रहणेसें मलके भरावसें पेटमें दरद पैदा करता है (३) ठंढीहवा लगणेसें ठंढी चीज खाणेसें अथवा ठंढे पाणीमें बहोत देर भीजणेसें भी दरद होता है (४) नरम मिजाजवाले अदमी और जादा करके हिस्टीरीया वाली औरतोंके ये रोग होता है. (५) सीसेके रजकण सपेदा और भी कइतरेके दुसरी जहरी रंगके रजकण पेटमे जाणेसे दरद उठता है.

(लक्षण)-सूंटीके आगे अथवा सब पेटमें पीड चूंक शूल दस्तकी कब्जी बहोतसी बखत उलटी होय रोगी दरदसे पछाडा मारे गभरा उठे पेटपर दाबणेसें या मसलणेसें अछा लगे आंतमें सूजन होणेसें तथा पेटके दुसरे दरदोंके लिये भी पेटमें दरद होता है लेकिन् वो इस पेट पीडासे जुदा होता है, उसकी पहचाण एसी है, के उसपर दबाणेसें अथवा मसलणेसे जादा दरद बढता है, और बुखार होता है, नाडी जलद चलती, है.

(इलाज)-(१) शेक-साधारणचूंक अथवा शूल शेक करनेसे मिटजाती है, गरम पाणी डाल शीशीया टरपेनटाइनका शेक करणा (२) दस्त बंध होय तो वादीहर रेचक दवायें देणी एरंडीतेल तथा उसमें लाडेनमना १० बूंद देणेसें तुरत खुलासा होता है, सूंठका क्वाथ एरंडी तेल सेकीभई हींग तथा सेंचल डालकर पिलाणा इलायची हींग जवखार तथा सींधानिमक इनोंके क्वाथमें एरंडी तेल देणेसें पेट नाभि पीठ शिर कान आंख इन सब जगेकी शूलकूं मिटाता है. (३) हींग १ बहेडा २ सूंठ ३ कां कचिया ४ भाग इनोका चूर्ण पाणीमें पिलाणा (४) जोहरडे त्रिकटु कुचीला शुद्ध गंधक हींग शुद्ध सींधानिमक इनोकों नींबूके रशमें देणा (५) घीके संग तलीभई हींग निगलादेणी अथवा लसणकी कुली निगलादेणी जिससें वादी निकलकर पेट पीडा मिटेगा (६) पेट ठसाठस भरा होयतो उलटी करणेके इलाजोंसे उलटी करणी (७) हींग कांकचिया अजवाण तथा निमकका टुकडा लेणा (८) टरपेन्टाइन हींग तथा पाणीकी गुदाद्वारसे पिचकारी देणी उससे वायूका जोर मिटता है. (९) पांच निमक अद्रकके रशमें (१०) त्रिफला कुटकी तथा अमलतासका काढा. (११) अरोमेटिक पाउडर ग्रेन ५,

से १० सहतमें चटाणा. (१२) सूंठ सेंचल जोहरडे पीपर तथा निशोत सम वजन फक्की तोला ! इसके सिवाय नं० ६१६ ५१७ का अंग्रेजी मिक्ष्चर तथा नं० ७०४ ७०५ केहकी मीनुसके इस रोगके प्रसिद्ध इलाज है.

देशी वैद्यकशास्त्र चूंक शूल रोगके दोष मुजब बहोत प्रकार बतलाता है, लेकिन् इसमें समझणेकी बात इतनीही है, के शूल दो तरेकी है, एकतो खास पेटके साथ संबध रखती है, जिसका मुख्य आधार आहार विहार और पाचन क्रिया ऊपर रहा भया है, और दुसरी शूल यानेचसका ज्ञानतंतुओंके साथ संबंध रखता है, ये दुसरी तरेकी शूलका छट्ठी किरणमें खुलासा लिखेंगें वैद्यकशास्त्र मुजब शूलरोगका भेद इस मुजब है, वातशूल २ पित्तशूल ३ कफशूल ४ सन्निपातशूल ५ आमशूल ६ द्वंद्वजशूल ७ परिणामशूल ८ अन्नद्रवशूल.

(वायुशूल)–मुख्य दोषवायु नाभि पसवाडे पीठ पेडू इनोमे वेर २ शूल होय और मिटजावै दस्त पेशाब रुके सुईचुभाणे जेसी और फाटणे जेशी शूल शेकसे दबाणेसे तथा चिकणे और गरम अन्नपानसे शांति होय (इलाज)–एरंडके जडका क्वाथ हींग तथा सेंचल डालकर पीणा (२) जोहरडे अतीस हींग सेंचलवज तथा इंद्रजव इनोका चूर्ण पाणीमें (पित्तशूल)–मुख्यठिकाणा नाभि तृषा मोह दाह दरद पसीना मूर्छा भ्रम होता है, आधीरातकूं अन्नके विदाहकालमें और शरदऋतूमें वधे और शीतकालमे शमन होय इलाज–(१) पहली तो उलटी करणी पीछे जुलाब देणा (२) आंवलेका चूर्ण सहतमें चाटणा (३) जोहरडेका चूर्ण गुड तथा सहतमें घीमे खाणा (४) त्रिफला अमलतासके गूदेका क्वाथ मिश्री तथा सहत डालकर पीणा (कफशूल)–मुख्य दोष कफ ठिकाणा होजरी खासी अरुचि ग्लानी मूंमेसे लार गिरणी गलेमें भार कोठेमे भारीपणा इलाज–(१) लंघन जरूर करणा (२) जोहरडे चित्रक कुटकी वज इनोका चूर्ण गोमूत्रमें (३) सेंधानिमक विडनिमक चंगडखार हींग पींपर पींपरामूल चव्य चित्रक तथा सूंठका चूर्ण जरा गरम पाणीमें पीणा (सन्निपातशूल)–तीनों दोषका लक्षणवाला ये असाध्य है, इलाज नहीं है, (आमशूल)–पेटमें गुडगुड अवाज उलटी शरीरमें जडपणा मंदपणा पेटका फूलणा तथा कफके सर्व लक्षण होय–इलाज–(१) कफशूलका इलाज करना (२) अजवाण सींधानिमक जोहरडे तथा सूंठका चूर्ण (द्वंद्वजशूल) दोदो दोष सामल होय ठिकाणा कफवादीमें पेडु हृदय कंठ और पसवाडेमें शूल कफपित्त मिले दोषमें कुख रिदय नाभी तथा पसवाडेमे शूल वातपित्त मिलेमें दाह तथा सख्त बुखार आना है (इलाज)–(१) ल्हसनका कल्क फजरमें सहतमें खाणेसें वायकफकी शूलमिटे (२) दाख तथा अरडूसेका क्वाथ पीणेसें कफपित्तकी शूलमिटे–(परिणामशूल)–खाया भया अन्न पचे पीछे उठे जो शूल उसका ठिकाना आंतरा–इलाज (१)

प्रथमलंघन पीछे उलटी रेच (२) सूंठ तिल तथा गुलकूं पीस गऊके दूधमें पीणा (३) शंखभस्म पाणीमें पीणा (४) मेणफल तथा कुटकी कूं जलमें पीस सूंडीपर लेप करणा (५) सेके भये कांकचि ये सबतरेके शूलकूं मिटाता है–अन्न द्रव शूल–खाया भया अन्न पचणेसें भी शूल मिटै नहीं तो जहांतक तीखा पीला खट्टा और पतला उलटीमें निकले नहीं उहांतक रोगीकूं चैन पडे नहीं इसवास्ते पित्त पडे जहांतक वमन देना और कफ पडे जहांतक जुलाब देणा एसी मर्यादा है, इलाज (१) आंवलेमें अथवा मोलेठीमें लोहभस्म (सार) सहत मिलाकर देणा–बाहरका इलाज–अफीमका लेप गूगलका लेप राईका लेप लसनका तेल वछनागका तेल हींगका लेप चेलाडोणेका लेप इत्यादिक कितनेक लेप शूलको शांत करता है.

(विशेष सूचना)–पथ्य–उलटी पसीना शेक लंघन नींद जुलाब पाचन पुराणी डांगर गरम किया भया दूध परवल खार सहजणेकी फली करेला निमक हींग लसण एरंडी तेल गोमूत्र नींबु गंधक त्रिकटु वगेरे दीपन पाचन–कुपथ्य–विरुद्ध अन्नपान उजागरा लूखा तुरा ठंढा जड महनत मैथुन मद्य सबतरेकी दाल चवला मटर तीखापदार्थ वेगोकों रोकना शोक क्रोध वगेरे त्याग करना.

गुल्म–गोला.

अजीर्णके विकारोमें चूंक आंकसी शूल और गोलेका भी समावेश होसक्ता है, पहला तीन विकार तो ऊपर लिखा है, अब गोलेका विकार लिखते हैं, अंग्रेजी वैद्यक मुजब तो गुल्मका कोइ जुदा रोग नही हैं, लेकिन् अजीर्णका एक निशान है, देशी वैद्यकशास्त्रोंमें गुल्मका रोग खास जुदा निदानमें लिखा है, गोलेका रोग पांचप्रकारका है, वायुगुल्म पित्तगुल्म कफगुल्म त्रिदोषगुल्म रक्तगुल्म पांचोप्रकारोमें मुख्य देखे तो वायुप्रधान है.

(वातगोलेका कारण)–लूखा और विषम अन्नपान दस्त वगेरे वेगोकों रोकना शोकसें हृदयमें चोट लगना जुलावोंसे मलका क्षय करना और उपवासादिकोंका करणा ये वात गुल्मका कारण है.

(लक्षण)–जुदे २ ठिकाणे दरद दस्त पेसाबका तथा वायुका रुकणा गलेमें शोष बदनपर कालापणा तथा ललाई ठंढ देके बुखार अन्नपचे पीछे दरदका शमन (इलाज) एरंडीका तेल दूधके संग अथवा हरडे दूधके संग अथवा गूगल गोमूत्रके संग (पित्तगोलेका कारण)–तीखा खट्टा तीक्ष्ण उष्ण और दाह करणेवाले पदार्थ गुस्सा मदिरापीणा ताप विदग्धाजीर्ण तथा खून बिगाड (लक्षण)–बुखार प्यास ग्लानी बदनपर ललाई पाचनक्रियाकी वख्त भारी शूल पसीना तथा दाह होता है (इलाज)–जोहरडे गुड तथा मुनक्काके संग खाणा २ त्रिफला चूर्ण मिश्रीमें ३ आंवलेके उकालीमें घी डालकर सिद्ध कियाभया घी चाटणा ४ कपीलेका चूर्ण सहतमें (कफगोलेका कारण)–ठंढा

भारी चिकणा अन्नपान आलस दिनका नींद लेनी (लक्षण)-बदन भीजे जेसा ठंडके संग बुखार ग्लानी मोल उधरस अरुचि शरीरमें भार अग्निमंद दरद थोडा (इलाज) १ अजवाण बिडलूंण छाछमें २ तिल एरंडी तथा अलसीके बीज तथा सरसूं पीस पेटपर लेप करणा और उसपर आकके पत्तोंका शेक करणा ३ वात गुल्मके इलाज करणा (रक्तगुल्म)-और तोंका ये खास रोग होणेसें स्त्री चिकित्साप्रकरणमें लिखेंगें (गुल्मका सामान्य इलाज)-१ अढाई मासा चोवासाजी अढाइ मासा गुड २ पलास थोर आंधी-झाडा अंवली आक तिल सेरा जव ये आठ चीजोंका खार गोलेकूं मिटाता है, ३ अढाई मासा सोराखार और अढाइ मासा आदा मिलाकर खिलाना ४ कुंवारपठेकी गिरी छ मासा गऊका घी तथा सूंठ मिरच पीपर हरडे सींधानिमक मिलाकर खाणा ५ सींपजला-ईभईका चूर्ण अढाइ मासा गुड अढाइ मासा इनोकी गोलीकर खाणी ६ तली भई हींग घीमे खाणी ७ शंखभस्म नींबूके संग खाणी.

अतिसार-(दस्त)

डायरीया.

(कारण)-दस्त होणेके बहोत कारण है, अजीर्ण और अतिसारके बहोतसे कारण एकसे हैं, अतिशय और योग्यखुराक कच्चा फल तेसे कच्चा अन्न वासी तथा भारी अनाज इत्यादि खाणेसे भी दस्त होता है, खराब पाणी खराब हवा मोसमका बदलना शरदी डर विगर विचारी आफत् ये सब बातोंसे अतीसार पैदा होजाता है.

(*लक्षण*)-*बेर २ पतला दस्त होणा ये मुख्य चिन्ह है*, मोल अरुचि जीभपर सुपेद अथवा पीली छारी पेटमें वायु हवाका गडगडाट चूंक वायु कै अथवा खट्टी डकार वगेरे ये अतीसारके लक्षण है, अतिसारके दस्तोमें तथा मरोडेमें बहोत फरक होता है. ये बात ध्यानमें रखनी अतिसारमें पतला दस्त छूटा चला जाता है, और मरोडेमें आंतरे कचरेसे भरे भये होते हैं, उससे खुलासा दस्त नहीं होकर आंकसी चल २ कर थोडा २ दस्त आकर ऊपरसे आंतरोंमेंसें आंव जलमसपीप तथा खून गिरता है, अतीसारके दस्तमें खून गिरे सोया तो मसेके अंदरसे कोईभी खूनकी रक्तनली फूटणेसें अथवा आंत-रोमें या होजरीमें जखम (घाव) गिरणेसे गिरता है.

(अतिसारका भेद)-देशी वैद्यकशास्त्रमें अतिसारके बहोत भेद भेदांतर लिखे है जिस अतिसारमें जिस दोपकी अधिकता होती है, उस मुजब नांम देणेमें आया है, जेसेकि वातातिसार पित्तातिसार कफातिसार सन्निपातातिसार शोकातिसार आमातिसार रक्तातिसार वगेरे दस्तके रंगमें तेसे दुसरे लक्षणोमें तफावत होता है, वायुका दस्त झांखा धूंधरंग होता है, पित्तका पीला तथा ललाइ लिये होता है, कफका तथा आमका दस्त सुपेद तथा चिकणा होता है, रक्तातिसारमें खून गिरता है, दस्तोंका एसा सूक्ष्म

भेद समझकर जो इलाज करनेमें आवे तो दवाका बहोत जलदी असर होता है, पीछे कितनेक सामान्य इलाज भी एसा है, सो सबतरेके दस्तोंपर फायदा पोहचाता है, तो भी वायूके दस्तका इलाज अगर पित्तके दस्तपर करे जो की गरम दवाये देनेमें आव तो दस्त नहीं रुककर उलटा बढता है, और रक्तातिसार होजाता है, अजीर्णका दस्त झांखा और सुपेद होता है, और जोवो अजीर्ण सख्त होता है, तो हैजेके जेसे चिन्ह मालम पडते हैं, (इलाज)—दस्तका इलाज करनेके पहली दस्तकी परिक्षा करनी दस्तके दो विभाग करना आमातिसार अथवा कच्चा दस्त और पक्का अतिसार अथवा पक्का दस्त जलमें डालणेसे दस्त डूब जाय तो आमका अपक दस्त समझना और पाणी ऊपर तरे तो पक्का दस्त समझना दस्त कच्चा और आममिला होय तो उसकूं एकदम बंध करनेकी दवा देनी नही क्योंके कच्चे दस्तकूं एकदम बंधकर देतो उससे और केइतरेके विकारोंकी उत्पत्ती होती है, जेसेके आफरा सग्रहणी मसा भगंदर सोजा पांडू तिली गोला प्रमेह पेटका रोग तथा ज्वर लेकिन् उसके संग ये बात भी याद रखणी चाहिये जो रोगी बालक बुढा या नाताकत होकर जादा दस्तोंकों नही सहसकता होय तो आमके दस्तकों भी एकदम रोक देना चाहिये (१) दस्तका श्रेष्ठ इलाज लंघन है, पित्तातिसार रक्तातिसारमे लंघन नहीं कराणा चाहिये औरोमें अछा लंघनकरनेसें रोगीकूं प्यास बहोत लगती है, उसकूं मिटाने धाणा तथा वालेकुं उकाल वो पाणी ठंढाकर पिलाना अथवा धाणा और संठका मोथ और पित्तपापडेका और वालेका जल पिलाणा (२) अजीर्ण तथा आमका दस्त होय तो लंघन कराकर पीछे उसकूं प्रवाही हलका भोजन देना आर आमकूं पचावै एसा दीपन पाचन और स्तंभन इलाज करना (४)—(वायुकादस्त)—१ लाही चूर्ण (नं० २२७, २) वृद्ध गंगाधर चूर्ण (नं० २२४) अनुपान छाछ अथवा चावलोंका धोवण (३)—आनंदभैरवरस (नं० ३४३, ४) शेकी भई भांगका चूर्ण रात्रका सहतमें लेना (५) अफीम तथा केशर चावलभर सहतमें देना पथ्य दही चावल (पित्तका दस्त)—(१) बीलका गिर इंद्रजव मोथवाला और अतिविष इनोकी उकाली पित्त तथा आमके दस्तकूं मिटाता है, (२) अतीस कूडा छाल तथा इंद्रजवका चूर्ण चावलोंके धोवनमें सहत डालकर देणा (३)—बिल्वादि चूर्ण (नं० २३२) (कफका दस्त)—(१) लंघन तथा पाचनक्रिया (२)—हरडे दारुहलदी वज मोथ सुंठ तथा अतीस इनोका काढा (३) हिंगाष्टक चूर्ण (नं० २३७) मे हरडे तथा साजीखार मिलाकर फकी लेणी (७) अमातिसार—(१) लंघन मरोडेका इलाज करना (२) एरंडीका तेल पीलाकर कच्चे आमकुं निकाल डालना (३) गरम पाणीमें घी डालकर पीणा (४) सुंठ सूंफ खसखस तथा मिश्रीका चूर्ण (५) सुंठके चूर्णकुं पुटपाककी तरे पकाकर मिश्री डालकर खिलाना (८) रक्तातिसार—(१) पित्तके अतीसारका

इलाज करना (२) चावलोके धोवणमें सुपेद चंदनकुं घस उसमें सहत मिश्री डालकर पिलाना (३)–आंवकी गुठली छाछमें अथवा चावलोके धोवणमें पीसकर देना (४) कच्चा बीलगिर गुडमे देना (५) जामुन आंब तथा अंबलीके कच्चे पत्ते पीस रस निकाल उसमें सहत घी तथा दूध मिलाकर पीणा (अतिसारका सामान्य इलाज)–१ आंबके गुठलीका मगज बीलकी गिर इनोके चूर्ण अथवा काथमें सहत तथा मिश्री डालकर देना (२)–अफीम तथा केशरकी आधीचिरमी जितनी गोली सहतमे लेणी (३)–जायफल अफीम तथा खारककूं नागरवेलके पानके रसमें घोटकर वाल प्रमाणकी गोली छाछमें देनी (४) जीरा भांग बीलगिर तथा अफीम दहीमें घोट वाल एककी गोली देनी इसके अलावा इस ग्रंथमे दिये भये (नं० २०९, २२४, २२५, २२६, २३३, २३८, २४५, ३३२, ३३९, ३४३, का इलाज सब अछे है.)–(अंग्रेजी इलाज)–१ हलका दस्त भया होय तो मिरचकाली थोडी उकालकर पेपरमीन्ट तज इलायची कालीमिरच जावंत्री इसमेंसे किसीभी दवाका अर्क या चूर्ण जलके संग लेणेसे दस्त बंध होकर पाचनक्रिया साफ होजायगी (२) लेकिन् जोवादी होकर दस्त थोडा २ आता होय तो एरंडी तेल पीणा अगर जो पेटमें दरद होता होय तो एरंडी तेलमें आठ दस बूंद लाडेनमनाके डालना (३) अथवा कम्पाउन्ड रुबार्ब पाउडर ग्रेन २० पाणीमें देणा (४) एरोमेटिकपाउडर ऑफ ऑक (नं० ४०१,) (५) (नं० ४९३, ४९४, ४९९, ५१९, ५२०, ६०९, ६१०, ६११, ६१२) वगेरेमें वताये भये इलाज योग्य अयोग्यका विचारकर उपयोगमे लेना.

(होमियो पेथिक इलाज)–(१)–एलोझ–अटकने नही सके एसा पीलापाणी जेसा दस्त होय होजरीमें अवाज (२)–आर्सेनिक–दस्त झांखा अथवा पाणी जेसा प्यास बेचेनी होजरीमें दाह होय तब देणा (३)–ब्रायोनिया)–ग्रीष्मऋतूमें ठंढा शरबत पीणेसे भया जो दस्त–वो पतला फीण जेसा बादीका तथा दुरगंधिवाला उलटी और मुर्छा होय उसपर देना ४–कार्बोव्हेज–अंत अवस्था आखरी हालतमें हाथ पांव ठंढा तब देना ५–(कोलोसिन्थ)–पीले पाणी जेसा और आंकसी चले एसे दस्तमें देना.

(धरण–पेचोटी)–दस्त होता है, तब कितनेक लोक एसा मांनते हैं, के सुंटी नाभिके आगेकी कोइ गांठ खिसगई है, उससे दस्त होता है एसा समझ बहोतसी मूर्ख औरतोंमि पेट मसलाते हैं, लेकिन् धरण अथवा पेचोटी एसा कोइनांगका अवयव शरीरमें है, नही, और नही किसीभी पुस्तकमें एसा नांम मिलता है, इसवास्ते एसा झुठा खयाल रखना नही मिसरगोमें, वायू अस्त, व्यस्त होती है.

(विशेष सूचना)–दस्तोंके रोगमें खानपानकी बहोत सावधानता रखनी एकाध [illegible] पूरा लंघन करदेना रोग बहोतदिन चले तो पीछे दाह नही करे एसा खुराक

थोडा २ देणा जेसें चावल साबूदाणा इनोकी कूटी भई घाट दहीं चावल पथ्य उलटी लंघन नींद पुराणे लाल चावल मसूर तूर सहत तिल बकरी तथा गऊका दूध दही छाछ गऊका घी ताजा बीलफल जामुन कवीठ बेर अनार सब तुरापदार्थ हलका भोजन कुपथ्य-स्नान मर्दन करडा तथा चिकणा अन्न कसरत शेक नया अनाज गरमचीज स्त्रीसंग चिंता ओजागरा बीडीका पीणा गउं उडद केरी पूरणपोली कोला ऊख सराप गुड खराबजल कस्तूरी सब पत्तोंके साग ककडी खट्टापदार्थ ये पदार्थ अतिसारमे नुकशान करते हैं.

मरोडा आमातिसार-संग्रहणी-

डिसेन्टरी.

मरोडा आमातिसार और संग्रहणी ये तीनोनाम लगबग एकही रोगके अहवाल जताते हैं, वैद्यकशास्त्रमें जिसकुं आमातिसार कहते हैं, उसकूं लोक मरोडा कहते हैं, अतीसार और आमातिसार जब पुराणे होजाते हैं, तो उसकूं संग्रहणी कहते हैं, वो इस जगे दाखल करते हैं, बहोत करके ये रोग सर्व वर्गके लोकोंकूं लगता है, जिसतरे चोकस प्रकारकी जहरी हवासे चोकस जातके रोग फूटकर निकलते हैं, तेसें मरोडेकी भी चोकस हवा और ऋतू होती है, क्योंके मरोडाका रोग किसी २ कुं विरलेकूं होता है, लेकिन् किसी २ वख्त ये रोग बहोत फैलता है, वशंत और वर्षाऋतूमें उसका बहोत जोर होता है, (कारण)-मरोडा होनेका मुख्यकारण दोष है, एक किस्मकी शरदी हवा तथा खुराक हवाका असर बहोत करके एक जगेके रहनेवाले सब लोकोपर एक जेसा करता है, तोभी नाताकत पडे भये और पाचनक्रियाके गडबडवाले अदमीपर उस हवाकी जल्दी असर होती है, कचा और भारी अनाज मिरचां और गरम मसाले शाग तरकारी खानेसे बादी तथा मरोडा होता है, दस्त कब्ज रहनेसे मल आंतरोंमें भरकर रहता है, और आंतरोंके अंदरके पुडतकूं घसता है, उससे मरोडा होता है, गरम खुराक खानेसे अथवा गरमीकी मोसममें सख्त जुलाब लेनेंसे भी किसीवखत मरोडेका रोग होजाता है.

(लक्षण)-मरोडेकी सरुआत दोतरेसे होती है, सख्त मरोडा होकर पहली अतिसार जेसा दस्त होता है, अथवा पेट कब्ज होकर सख्त दस्त टुकडा २ जेसा आता है, सरुआतके इस लक्षण बिगर बाकी सब लक्षण दोनोप्रकारमे एकसरखा होता है, दस्तकी शंका बेर २ होती है, और पेटमे आंकडी आयकर दम२में थोडा२दस्त आता है, हाजत बेर २ होती है, करांजके दस्त आता है, बेठाही रहूं एसा मन होता है, खून और पीप गिरता है, थोडा बहोत किसी २ कुं बुखार भी होता है, नाडी जलद चलती है, जीभपर सुपेद थर होती है, रोग बहोतदिन चलता है, तेसे खून पीप जादा २ गिरता है, और आंकसीका दरद बढता है, मरोडेमें बडे आंतरेके पुडमे सोजा होता है, उससे वो पुड लाल होता है, पीछे उसमें लंबे और गोल जखम गिरता है, उसमेंमें पहली खून

और पीछे पीप गिरता है, ये तीक्ष्ण मरोडा तीन चार अठवा डेतक जो जारी रहजाय तब पुराना गिणेजाता है, पुराणा मरोडा वरसोंतक चलता है, अछा योग्य इलाज मिले तोही आराम होता है, इसीकुं संग्रहणी कहते हैं, पूरे पथ्य और दवा विगर हजारों अदमी मरते हैं, (इलाज) पहली तो पेट देखणा के आंतरोंमें सूजन है, के नहीं दबानेसें जिस जगे दुखणा मालम पडे उस जगे राईका पलाष्टर मारणा और रोगी सहसके एसा होय तो उसपर (१–२) डझन जोकलगवाणी और पीछे गरम पाणीसे सेक करना तथा अलसीकी पोटिस मारणी स्नान करना नहीं शरदीकी हवामे जाणा नहीं बिछोनेमे सोते रहणा आंतरोंमें मलका भराभया कचरा निकालणेकूं छ मासा जोहरडे अथवा सूंठके उकालीमें एरंडी तेलका जुलाब देणा वहोतसी वखत तो सरु होता मरोडा एसे जुलावसे ही मिटजाता है, कचरा मल नीकलजाता है, दस्त साफ आता है, आंकसी तथा दस्तकी हाजत बंध होजाती है, मरोडेवालेने एरंडी तेलविना दुसरा भारी जुलाब कभी लेणा नहीं एरंडीके तेलमे तली भई जोहरडे दोभर सूंठ पांचमासा सूंफ १ भर सोनामुखी १ भर तथा मिश्री ५ भर लगभग एरंडीतेलका काम सारती है, मरोडावालेकूं दूध चावल पतली घाट अथवा दालके सादे पाणी सिवाय दुसरा खुराक देना नहीं सरु होतेही इय इलाज करे बाद जरूरी होय तो नीचे लिखते हैं, सो इलाज करना (१ अफीम)–मरोडाका रामवाण इलाज है, लेकिन् युक्तिसें लेना चहिये हिंगाष्टक चूर्णके संग गऊंभर अफीम मिलाकर रातकूं सूतीवखत लेणा अथवा अफीमके संग आधे रुपे-भर सोवेकुं जरासेक कर पाणीके संग पीसकर पीणा मरोडा तथा दस्तकूं रोकने वास्ते अफीम अछा है, लेकिन् एरंडी तेल लेकर पेटमेंसे कचरा निकाले विगर पेस्तर अफीम लेणा अछा नहीं है, क्योंके मल विगडे भयेकुं अंदर रोकदेता है, दस्त बंधकर देता है, (२) ईस पूगल अथवा सुपेद जीरा मरोडेमें अछा फायदा करता है, दहीके संग आधे २ रुपियेभर जीरा अथवा ईस पूगल दिनमें तीनवेर लेणा ये दवा दस्तकी कब्जी करे विगर मरोडेकूं मिटाता है (३) एरंडीतेल एक वेर देणेपर मरोडा नहीं मिटे तो एक दोदिन ठहरके फेर एरंडीतेलही देणा वो सूंठके उकालेमें पेपरमींटके पाणीमें आदेके रसमें अथवा टाडेनम याने अफीमके अर्कमें देणा जिस्सें पेटमेंकी वायूकूं दूरकर दस्तकूं रस्ताकरे (४) बील–मरोडेके मरजमें बील अकसीर इलाज है, बीलकी गिर गुड दहीमें मिलाकर देणेसे मरोडा मिटजाता है, (५) एपीकाक्युआन्हा–या अंग्रेजी भूकी भी मरोडेमें बहोत उपयोगी है, उसमें एक अवगुण है, के उलटी लाती है, और पेटमें टिकती नहीं पेटमें रहे तो बहोत जल्दी असर करती है, पेटमें टिके एसा करनेवास्ते प्रथम पेट-होजरी की बांईतरफ राईका पलाष्टर मारणा और १५–२० बूंद अफीमके अर्कका इतना ठहाकर पीछे ईपीकाक्युआनेकी ३० ग्रेन भूकी सहदमें चटाय देना

इसपर जल पिलाणा नहीं और थोडी देरपडे रहने देणा एसा करणेसें उलटी होगी नहीं दोय तीन दिन एसे करनेसे अछा फायदा होगा और कभी उलटी होगी तो भी उसका असर जरूर होगा अब एपीकाक्युआन्हाकूं पचानेकी दुसरी तरकीब लिखते हैं, ६ रत्ती या भूकी ३ रत्ती अफीम उसकी १२ गोली करणी और तीन २ घंटेसे चार २ गोलिये लेणी (६) इतने इलाजोसें जो फायदा नहीं पडे तो दस्त पतला पाणी जेसा आता है, बुखार नब्ज जलद चलती है, और दुखणा जारी रहे तो समझणाके आंतरोमें अभी सोजन है, और अंदर जखम है, एसी हालतमें नं० २०९ का क्वाथ पृष्ट २९२ की लिखी भई स्तंभन दवाइयें तथा नं० ७०२, ७०३, ६१४, ७१५ की दवाइयां अछी फायदेचंद है.

(संग्रहणी)–पुराणा मरोडा अथवा संग्रहणीका निदान आयुज्ञानार्णव प्रसिद्ध ग्रंथमें एसा लिखा है के कोठेमें अग्निके रहणेका जो ठिकाणा है, सो अन्नकूं ग्रहण करता है, इसवास्ते इस जगेकुं ग्रहणी कहते हैं, ये ग्रहणी आंत कचे अन्नकूं ग्रहण करके रखती है, और पके अन्नकूं गुदाके रस्ते निकाल देती है, इस ग्रहणीमे अग्नि है, वो भी ग्रहणी कहलाती है, अग्नि खराब होकर मंद पडती है, तब उसका ठिकाणा ग्रहणी आंत भी खराब होती है, वैद्यकशास्त्रमें ग्रहणी और संग्रहणीमे कुछयक भेद लिखा है, आमवायूकूं संग्रह करे सो संग्रहणी ये रोग ग्रहणीसे जादा डरानेवाला है, इस जगे दोनोकों मिटावे एसा सामान्य इलाज लिखेगें और दोनोंका भेंदांतर नहीं रखेगें.

(कारण)–तेज मरोडा जिस कारणसे होता है, उसीकारणसे संग्रहणी होती है, अथवा तेज मरोडा मिटे पीछे शांतपडे पीछे मंद अग्निवालेके तथा कुपथ्य आहार विहारके करनेवालेके पुराणा मरोडा अथवा संग्रहणी रोग होजाता है.

(लक्षण)–संग्रहणी कचा अन्न ग्रहण करती है और पके अन्नकुं निकालती है, तब पेट छूट कचादस्त होजाता है, दस्तकी तादाद नहीं रहती थोडे दिन दस्त बंध रहता है, और पीछा होता है, किसीवखत एकाध दस्त होता है, और किसीवखत जादा दस्त होता है, मरोडेकी तेर पेटमें आंटा आमवायु पेटका कटणा बेर २ दस्त होय और पीछा बंध होय खायाभया अन्न पचाभया होय या पचता होय उस वखत आफरा होय और भोजन करणेसें शांति होती है, वादीके गोटेकी छातीके दरदकी और तिल्हीके रोगकी शंकाभया करती है, बहोतसी वखत पतला सूका कचा और अवाज तथा झागोंवाला दस्त होता है, बदन सूकते जाता है, खून उडजाता है आखरकों सोजन आती है, आखिरकों बोहतसे आदमी मरजाता है, संग्रहणीके दस्तमें खून पीप रंग २ का गिरता है, बहोतमी वखत.

(इलाज)–पुराणी संग्रहणी बहोत कष्टसाध्य है और साधारण इलाजमें मिटभी

नहीं सकती * संग्रहणी रोगमें रोगीकी जठराग्नि एसी खराब होती है, सो उसकी होजरी कोइ किसीभी किस्मके खुराककुं लेकर पाचन नहीं करसकती होजरी छोटे बच्चे कीसेमी घडी नाताकत होजाती है, इसवास्ते उसके खिलाणेकुं हलकेसे हलका खुराक देणा (१) (छाछ)–संग्रहणी रोगकी सर्वोत्तम खुराक है, दवा और पथ्य दोनोंका काम सारती है, दोषोंकी निगेदास्तीकर तली हींग तथा जीरा और सींधानिमक डालकर तक्र दहींमेंसे थर निकाल उसमें चोथाहिस्सा पाणी डाल विलोई भई जाडी छाछ इस रोगमे बहोत फायदाबंद है, संग्रहणीवालेकूं इकेली छाछ पोषणकर जठराग्नि प्रबलकरती है, किसी पूर्ण विद्वान वैद्यकी सलासे सबकां मकरणा अच्छा है, पीछे भात वगेरे हलका खुराक देणा सरू करणा मरणके मूंपर पडेभये हाडमात्र रहेभये विद्वानोंकी सलाहसे अमृतरूप छाछ जिलाती है, लेकिन् धीरज रखकर महीनोके महीनोंतक इकेली छाछ पीकर रोगीकूं रहणा चहिये इसके सिवाय साधन संग्रहणी रोग मिटणेका एसा ग्रंथोंमे विरला होगा एसा तक्र गुणानुवाद जैनाचार्य रचितयोग चिंतामणी ग्रंथ तथा हमारा प्रत्यक्ष अनुभव पथ्य और दवारूप हमने पतवाणा है, (२) अमृतवटी–गऊका दूध और योग्य अनुपानके संग संग्रहणीकूं मिटाती है, हम जादा क्या लिखे के जो प्राणी अपणी कष्टसाध्य संग्रहणी मिटाये चाहे सो व्यर्थ औरोके पास गोते क्यों खाकर धन और तनकूं बरबाद करते फिरे रामबाण लगतेही संग्रहणी प्रलय होतेही नजर आती है, रामबाण जभी नहीं चलता के जब उसकूं फेर जन्म लेणा होता है, (३) पडूष्ण–मूंगकी दालका पाणी धाणा जीरा सींधानिमक सूंठ डालकर छाछ पीणा (४) लाही चूर्ण–नं० २३८ छाछमें अथवा बीलकी गिर छाछके संग पीणी मात्रा अढाई मासा अनुपान और खुराक छाछ (५) दुग्धवटी–वछनाग शुद्ध अफीम चार २ वाल लोहभस्म ५ रत्ती अभ्रक मासा १ दूधमें पीस दोदो रत्तीकी गोलियें करणी संग्रहणी तथा सूजनका बहोत अच्छा इलाज है, ये दुग्धवटी खाणी जहांतक दूध सिवाय दुसरा खुराक खाणा नहीं (६ ह्रीवेरादि क्वाथ नं० २०९) अतिसार तेसें संग्रहणी दोनोंमें फायदेबंद है, इसपर भी दूध चावलसिवाय दुसरा खुराक खाणा नहीं तो दवा कुछभी फायदा नहीं करेगी (७) पंचामृतपर्पटी–ये दवा पूर्ण वैद्य रसोके बणाणेवालों पास मिलती है, अनुपान छाछ जीरा हींग सींधा पथ्य और छाछ.

(विशेष सूचना)–पथ्यापथ्य अतीसारमे लिखेमुजब संग्रहणीके रोगीने जादा स्नान करणा नहीं जादा जल पीणा नहीं चिकणाईवाला जादा खानपान लेना नहीं ओ जागरा करणा नहीं महनत करणी नहीं हवा अछी बदलणी दरियावकी हवा दरियावकी मुसाफरी जादा फायदेबंद है.

---

१ हमारे विद्याशालामें हमारा बनाया ग्रहणीसिंह सार्दूलरस अथवा ग्रहणी जीरकरससे मरणान्त कष्टके हुवे भये सैंकडों अदमी सुजन तकात आराम भये और होते है.

अरुचि-अन्नद्वेष-

एनोरेक्स्या.

खाणेका दिल होय नहीं अथवा अन्न देखकर दिलकुं रुचे नहीं वो रोग अरोचक कहलाता है.

(कारण)-ये कोइ अलग रोग नहीं है, कितनेक रोगोंमें खाणेमें अरुचि होजाया करती है, जादा करके अजीर्णमें बुखारमें तथा कलेजेके और मगजके रोगोंमें अरुचि होती है, शोकसे डरसे दरदसें क्रोधसे मनकूं आंखकूं तथा नाककूं अछा नहि लगे एसे पदार्थोंके देखणेसे अरुचि पैदा होती है, (इलाज)-१ जिस कारणसें अरुचि भई होयसो कारण दूर करणा दिलकुं रुचे और तासीरकूं माने एसा खानपान मिलणेसे खाणेपर रुचि पैदा होती है, तेज चमचमा मीठा और खट्टा और खारा पदार्थ खाणेमे रुचि पैदा करता है, इसवास्ते एसे चीजोंका उपयोग करणा अरुचि वादीसे भई होय तो वादीकरणेवाली चीजें खाणी नहीं इसतरे पित्त कफका समझ लेणा क्योंके एसी चीजोंपर स्वभावसे रुचि नहीं पैदा होती (२) बीजोरा नींबुकी पांखडिये घीमें सेक उसमें जरा सींधानिमक मिलाकर खाणेसें रुचि पैदा होती है, (३) शरवत-पक्की अंबलीकूं ठंडे जलमे घोल उसमें चहिये जितना कंद या मिश्री तथा इलायची लौंग मिरच तथा कपूर भुरकाकर थोडा भोजनके वखत पीणा पित्तकी अरुचि इससे मिटती है, नींबु तेसें अनारका शरवत उपयोगी है, (४) द्राक्षवटी-दाख अनारका सार सींधानिमक पीपर जरासेकी हींग तज वगेरेकी नींबूके रसमें बनाई भई गोलियां मूंमे रखणी (५) छाछ-रुचि करणेवाली है, राई जीरा हींग तथा सूंठ ये चार सेके भये पांचमा सींधा-निमक इन सबोके चूर्णकूं गऊके दहीमें अछी तरे मिलाकर दहीकूं कपडेमें छाण उसमें खट्टी छाछ डालणी ये छाछ रुचि पैदा करती है, (६) श्रीखंड-इलायची लौंग मिरच और थोडासा भीमसेनी कपूर डालकर किया भया सिखरण रुचिकारक है, (७) अद्रक-भोजनकी वखत पहली सींधानिमक लगाकर आदेके टुकडे खाणेसें रुचि बढाता है, आदेके रसमें सहत मिला चाटते हैं.

छर्दि-उलटी-ओकारी-

वॉमिटिंग.

उलटी दुसरे कितनेक रोगोंका चिन्ह है, तोभी उसकूं बंध करणेके जुदे २ इलाज हैं, इसवास्ते इस रोगकूं जुदा गिणकर इसके इलाज लिखे हैं.

(कारण)-अति पतला पदार्थ पीणेसे बहोत चिकणा पदार्थ खानेसे मनकुं नहि रुचे एसे अन्नपानसे बहोत खाणेसे अहित खानपानसे श्रामसे अजीर्णसे कृमिसे गर्भसे बिगडे भये वातपित्त कफसे नफरत और एसे चीजोंके देखणेसें सुंघणेसें

खाणेसे इत्यादि वहोत कारणोसे उलटी होती है, जादा करके अजीर्ण और पित्तके प्रकोपसे वेर २ कै होती है, इसके सिवाय गोसा उतरना आंतरेका वरम होजरीका क्षत कलेजेका रोग हैजा पथरी वगेरे रोगभी उलटीका कारण है.

(इलाज)–कारणकूं पहचान उलटीका इलाज करणा कितनीक वखत उलटी होणी फायदेके वास्ते होती है, वो होणे देणी रोकणी नहीं बहोत खाणेसे बिगाड जो होता है, वो उलटीके रस्ते निकल जाता है, उससे फायदा है, जो एसा नहीं होय तो पेटका दुसरा रोग होणा ताजब नहीं.

(सामान्य इलाज)–१ नींबूका शरबत इकेला अथवा सोडावाटर संग पीणा २ लोबानके फूल अथवा लोबानका पाणी ३ नींबूका रस सहत बीसमथ सोडा वगेरे देणा ४ सुपेद चंनणकुं घस उसके पाणीमें आंवलेका चूर्ण और सहत डालकर पिलाणा ५ पित्तपापडेके हिममें या क्वाथमें मिश्री और सहत डालकर पीणा ६ मोलेठी तथा सुपेद चंनणकूं दूधमें घसकर पीणेसे खूनकी उलटी भी बंध होती है ७ तुलछीके रशमें इलायचीका चूर्णडालकर पीणा८जाईके पत्तोंके रसमें पींपर मिरचमिश्री तथा सहत डाल पीणेसे वहोत दिनोंकी भी उलटी बंध होती है, ९ हरडेका चूर्ण सहतमें चाटणा तब दोष दस्तके रस्ते निकालकर उलटी बंध होती है, १० गिलोयके रसमें या हिममे या क्वाथमे सहत डालकर पीणेसे त्रिदोषकी उलटी बंध होती है, ११ जामुन आंब तथा बडके नरम कचे पत्तोंकी उकाली पीणेसें १२ रेसम और मोरपंखकी भस्मीकर सहतमें चटाणा १३ दाख तथा आंवले जलमें थोरी देर भिगाकर मसलकर उसके जलमें मिश्री सहत मिलाकर बुखार तथा पित्तकी उलटी मिटजाती है, १४ सोडा १५ ग्रेन साइट्रिक एसिड १० ग्रेन मिलाकर पीणा १५ मोफर्या विस्मथ तथा हाइड्रोस्यानिक एसिडका मिक्श्चर देणा १६ दूध तथा चूनेका नीतराभया जलसामिल पीणेसे उलटी बंध होकर पेटमें टिकेगा १७ नं० २२८, ५०२, ५६९, तथा ६०९ की दवाये १८ गर्भणीकी उलटी–धाणा तथा दाखका पाणी नं० ५०२, ५१३ का मिक्श्चर (कलंभा) बाहरका इलाज–१९ पेटपर राईका पलाष्टर मारणा २० लाडेनम तथा क्लोरो फॉर्म सम वजन एक रुमालपर छिडक वो रुमाल होजरीपर रखके उसपर दुसरा कपडा ढकणा (होमियोपथिक इलाज)–१ एन्टीमनीक्रूड)–बहोत खाणेसे या बहोत सराप पीणेसे होय जो उलटी उसमें देणा. २ आर्सेनिक कालापित्त पडे और बहोत बेचेनी होय उसमें देणा. ३ ईपिका क्युबान्दा कफपित्त और खट्टे पाणीवाली वेर २ उलटी उबाकीमें देणा ४ पल्सेटिला–गर्भके लिये होनेवाली उलटीमे देणा. ५ टार्टरइमेटिक–उलटीकेवास्ते बहोत उछाला और ताना आवे तब देणा अच्छा है.

अम्लपित्त–खट्टापित्त–

खुराक बराबर पचे नहीं उलटी होय या दस्त होय उसमें कडवा और हरे रंगका पित्त पडे इस रोगकूं आम्लपित्त कहते हैं.

कारण–बदनमें पहली अपणे कारणसे एकठा भया पित्त विरुद्ध आहार विहारसे याने बिगडा भया खट्टा दाह करणेवाला और पित्तकूं वधाणेवाले पदार्थोंके सेवन करणेसें प्रकोप पाकर इस रोगकूं पैदा करता है इस रोगका मूल कारण अजीर्ण है इस कारण जो अजीर्णका कारण है, उससे ये रोग पैदा होता है.

लक्षण–पहली जरा शिर दूखे हाथ पांवोमें नाताकती मालम दे पीछे कलेजेकी जगे-पर उस वखत दरद होजावे अजीर्णकी निशाणी मालम दे आखिर उलटी होय किसी २ वखत इस रोगसें बुखार और कामला पीलिया होजाता है, तब मृत्युभी होजाती है.

इलाज–आम्लपित्तका रस्ता दो तरफसें होता है, मुंसे या दस्तसे उलटीवालेकूं उलटीकी दवा देणी दस्त होता होय तो जुलाब देणा २–चावलोंकी या जौ धाणी मिश्री तथा सहत मिलाकर खिलाणी ३ कडवा परवल अथवा पटोल कुटकी नीमकी छाल तथा मेणफल इनोके क्वाथमें सहत मिलाकर देणा जिससे उलटी होती है पथ्य मूंगकी पतली दाल अलूणी मीश्री डालकर–४ त्रिफलाके क्वाथमें निशोतका चूर्ण तथा सहत डालकर पिलाणा दस्त होगा ५ वडी दाख तथा जो हरडे सम वजन इनके बरावर मिश्री इनोकी दोदो तीन २ तोले-की गोलिया करके खिलाणी इससे आम्लपित्त हिदय तथा गलेकी जलण प्यास मूर्छा भ्रम मंदाग्नि और आमवात इन सबोकूं मिटाता है, ६ भूंगिणी गिलोय अरडूसेके पत्ते इनोकी उकाली सहत डालकर पिलाणा इससे दम खासी उलटी तथा बुखारके संग आ-म्लपित्त मिटता है, ७ आंवलेका चूर्ण केलेके कंदके रसमें देणा ८ पटोल अरडूसेके पत्ते गिलोय पित्तपापडा तथा जल भांगरा इनोका क्वाथ सहत डालकर पीणा ९–क्युपिल ६ ग्रेण इपीकाक्युआन्हा १ ग्रेण एकस्ट्राक्ट डान्डेलीयन ६ ग्रेन इनोकी ४ गोली कर रा-तकूं सोते वखत दोदो गोली लेणी १० चूनेका निनरा भया जल एक औंस उसमें थोडा दूध मिलाकर पीणा १२ अमृतवटी दवा खाणेमें दूध और चावल इसका सेवन दो मही-ने तक करे तो असाध्य आम्लपित्त अजीर्ण उलटी वगेरे रोग मिटकर होजरी तथा आं-तरोंकी पाचनक्रिया खूब सुधर रोगी बलवान होता है.

(विशेषसूचना)–इस रोगमें उलटी और दस्तकूं बंध करनेवाली दवा नहीं देणी लेकिन् बढे भये पित्तकूं और अजीर्णकूं शांति करणेका इलाज करना कोईभी गरम दाहक और तेज पदार्थ नुकसान करता है, इस रोगमें बहोत सादा हलका ठिक शामक खुराक देणा (पथ्य)–जब गहूं मूंग लाल चावल तीन उकाला देकर ठंडा किया भया पाणी मिश्री घृत सहत कवीठ अनार (कुपथ्य)–उलटीकूं रोकणा तेज खट्टा खारा तीखा

कुलथी तिल उडद निमक दही नमा कच्चा अनाज ठंडी हवा रातकूं जागणा दिनकूं सोणा ये यात सब नुकशान करती है, करेले परवल पथ्य है.

यकृत्-कलेजेका रोग.

डिझीसीझ ओफ लिव्हर.

आगे उदररोगमें यकृतोदर इस नामका रोग संक्षपसें लिखा है लेकिन् यकृत् याने कलेजेपर पाचन क्रियाका • घडा आधार होणेसे उसके कितनेक विकारो विषे कुछइक जादा जाणणेकी जरूरी हैं, यकृत् ये शरीरमें घडा कामिल गर्म स्थान है. उसमें भया कोईभी तरेका विकार वो सब बदनकूं तकलीफ देणेवाला होजाता है रोगके सबब कलेजा छोटा और बडाभी होजाता है, कलेजेका मुख्यकाम पित्त पैदा करणेका है उस पित्तपर आंतरोके पाचन क्रियाका बडा आधार है कलेजेमें विकार होणेसें इतने रोग होते हैं.

१ कलेजेमें खूनका जमाव होता है.
२ कलेजेमें सोजा होजाता है.
३ कलेजा पकता है.
४ कलेजेमें पित्तका जमाव होता है.
५ कलेजा संकुडा जाता है.
६ पित्तकी पथरी अथवा कांकरी.
७ कामला पीलिया होजाता है.

(कारण)--कलेजेके रोगके सामान्य कारण इस तरसे हैं बहोत तेज मसालादार खुराक सराप गरमी और एस आराम पारा नवसादर वगेरोंमेंसे पित्त वढता है.

(कलेजेमें खूनका जमणा)--कलेजेके अंदरसे खून फिरकर जिस नसोंके रस्ते बाहर आता है उस नसोमें कोई तरेकी खराबी और अटक होणेसें खून कलेजेमें भरकर रहता है, तब खूनका संग्रह होणेसे कलेजेका कद बढता है, रक्ताशय तथा फेफसेकाभी यही हाल होता है बहोत दिन बुखार आणेसे जेसें तिलीकी गांठ बढती है तेसें यकृत्भी बढता है भोजन कर दोडणेसें या मैथुनसे या बहोत कसरत करणेसे कलेजेमें शूल मारती है वोभी खूनके भरावसेंही हाल होता है, गरमीमें रहणेसें तेज मसालोंसेंभी कलेजा बढ जाता है, लक्षण--कलेजा बढता है अंगुली धरकर ठोककर देखणेसे उसका स्वाभाविक पोला अवाज बदलकर सघन अथवा भद्दा अवाज मालम देता है, अजीर्णके लक्षण मालम देते हैं, पेटभरा तथा चढा भया मालम देता है, दस्त कब्ज रहता है, उबाकी तथा उलटी होती है--(इलाज)--पतला दस्त लाणेकूं निशोत अथवा एप्समसोल्ट देणा जुलाब लगणेसें कलेजेका जमाखून कम होजाता है, पीछे नं० ४६१--४६२ की रेचक दवाओं देणी और जरूर होयतो थोडे दिनोंतक देणा सरू रखणा कलेजेपर राइका पलाष्टर धरणा शेक करणा अलसीकी पोटिस मारणी कलीका चूना तथा सहतका लेपकर रुई दबाणा टिंकचर आयोडाइन हमेस लगाणा जरूर होय दरद नहीं मिटे तो जोके लगवाणी.

(कलेजाका तेज सोजन)--बुखारके संग कलेजेके तेज वरमकूं लोक मुंझारेकी गांठ

कहते हैं, (कारण)- गरम देशमें जादा होता है, सराप पीणेवालोंकूं इस रोगका जादा संभव है, बहोत गरमी बहोत ठंढी सन्निपात ज्वर और चोट लगणेसेंभी होता है, (लक्षण)-खूनके जमावका आगे बढा भया रूप सोजन है, कलेजा बढता है बुखार सख्त आता है दहणी तरफ शूल कलेजेके ऊपर तरफ दरद और श्वास कास तथा छींक लेते दरद बढता है, बांये तरफ सोये नहीं जाता बुखारके संग कपाल तथा शिर दूखे पेशाब थोडा और लाल आंख थोडी बहोत पीली सूकी खासी हिचकी तथा उलटी दहणें खंभेमें दुखणा वगेरे (इलाज) रोगी मजबूत होयतो कलेजेपर जोक लगाणी दस्तकब्ज और जीभपर सुपेद छारी होय तो ब्ल्युपील ६ ग्रेण और ऐपीकाक्युआन्हा २ ग्रेण इनोकी गोली देणी और तीन चार घंटे पीछे सोनामुखीके क्वाथमें ऐप्समसाल्टका जुलाब देणा अथवा नं० ४६१ वाली गोली लिये पीछे चार घंटेसे नं० ४६२ वाला मिक्श्चर लेणा जो दस्त कब्ज होय तो येही दवा हमेस या एकंतरे लेणा जारी रखणा जो मरोडाका कोइभी लक्षण मालम दे तो नं० ४९३ वाली दवा लेणी हमेस राई लगाणी गरम पाणीका सेक करणा पेटपर गरम कपडा लपेटे रखणा वेर २ गरमागरम पोल्टीस मारणी आटेकी अथवा अलसीकी नहीं, आराम होय तो नं० ५६३ का विल्स्टर मारणा-(यकृत्कापकणा)- यकृतके वरमसे यकृत पक जाता है, जब वरम मिटता नहीं तब जमा भया खून पकता है और फोडेकी तरे इलाजसे बैठभी जाता है या फूटता है, ये यकृत्का पकणा जेसें तेज सोजेसें होता है, तेसें धीरे २ भये सूजनसेंभी पकता है, ए रोग दारूपीणेवालेके बुखार तथा मरोडेके रोगसेंभी ए मरज होता है,-(लक्षण)- वरमका बुखार होय या उतर गया होय तोभी कलेजेके पकणेपर एकाएक ठंढ देके बुखार चढ आता है बधता है और पसीना होता है, इसतरे दम २ में होणे लगे तब समझणाके कलेजेमें पीप होणा सरू होगया है अजीर्णके चिन्ह मालम दे भूख लगे नहीं नाडी जलद चलती है और चहरा घभरा जावे दुसरे सब चिन्ह वरमके होते हैं, पसलीके नीचे तेसें छातीके तरफ दरद बढता है पीपके पडनेसे अंदरसें चभका मारता है पीप बढते जाता तेसें कलेजा बढते जाता आखरके एक दिन या महीना या वरस पीछै मूंहोकर पीप निकलता है ए जब फूटता है तब छातीपर दहने तरफ अथवा पीठपर पसलियोंके बीचमें पसलीके नीचे पेटपर या पीठपर मूंकरके फूटता है जो अंदर फूटता है तो छातीके अंदर फेफसेमें अथवा पेटमें फूटता है आंतरेमें या पित्ताशयमें मूं करता है तो पीप दस्तमें निकलता है, होजरीमें फूटता है तो उलटीमें पीप निकलता है अगर जो पेटमें टूटा फूटकर पीप फैले और उसकूं निकलणेकूं रस्ता नहीं मिले अदमी मरजाता है, (इलाज)- जेसें बाहिरके फोडेकूं पकाकर पीप निकाल घाव भरते हैं, तेसें इसकाभी इलाज करणा सख्त जुलाब या सख्त दवा देणी नहीं ताकत देवे एसा अच्छा खुराक देणा जिस जगे फोडेका जोर

होय और गूं होना मालम पडे उसजगे पोल्टिस मार जलदी फूटे ऐसा इलाज करणा रोगीकी ताकत वने रखणी यही मुख्य इलाज है, पारेकी कोईभी दवा पेटमें लेणेकी या ऊपर लगाणेकी सर्वथा काममें लेना नहीं बुखारके जोर मुजब बुखारका इलाज करणा दस्तकी कब्जी होय तो सोते वखत कम्पाउन्डरुवार्ब पील ५ से ६ ग्रेनकी गोली देनी अथवा फजरमें सीडलीझ पाउडरका जुलाब देना (लोशन)– नाइट्रिक एसिड १ ड्राम म्युरियाटिक एसिड याने निमकका तेजाब १॥ ड्राम और पाणी १० से १२ औंस मिलाकर इसमें कपडा अथवा वदली डुबाकर कलेजेके दरदपर चुपडणा अथवा महीन कपडा धरकर केलेका पत्ता तथा कपडेका पट्टा बांधना (पित्तका उछाला)– कोईभी दाह करणेवाली चीज होजरीमें जाणेसें अथवा विचाररहीतपणेसे कितनेक मुदततक खाया भया कुपथ्यसे होजरी तथा यकृत् व्यवस्थारहित होनेसे पित्तका उछाला आता है, उछाला और मूर्छा ए उसके लक्षण है, उलटी होती है, तब पहली होजरीमेंका पदार्थ निकलता है पीछे खट्टा पित्त निकलता है, और आंतरेमें दरद होता है, (इलाज)–उलटी रोगमें लिखे इलाज करणा राई तथा पाणी पिलाकर उलटी करानी उलटीकूं पैदा करणेवाली वस्तू बाहिर निकाल देना पीछे जुलाब देना सोडावोटर पिलाना दरद वहोत होता होय तो कलेजेकी पीपडीपर राईकी पोल्टिस मारनी दस्त कब्ज होय तो उसका इलाज करना)–यकृत्का संकुडाणा–वहोतसी वखत यकृत् बडे पीछे संकोचाता है, इससे छोटा होता है इस रोगके संग जलंदर जरूर होता है पांवपर सोजा पीलिया अजीर्ण अथवा दस्त आखर मोत)– जलंदर होनेके पहली कलेजेपर आयोडाइनका टिंक्चर लगाना अथवा ऊपर यकृत्के पकनेपर लोशन लिखा है, उसका वरताव करणा देशी लोक कलेजेपर गुरु देते हैं, वोभी फायदेबंद है जलंदर भये बाद जलंदरका इलाज करणा (पित्तकी पथरी)– पित्तके रहनेके ठिकाणेकूं पित्ताशय कहते हैं, इस पित्ताशयमें पित्त एकठा होकर आंतरोंमें जाता है लेकिन् जब पित्त कुछ विगडता है तब उसमें क्षार वगेरे पदार्थ घट्ट होकर करडी पथरी जेसी बंध जाती है ए पथरी एकया जादा गोल चिपटी खूनेया खड्डेवाली होती है, कदमें चिरमीसें ईंडे जितनी वडी होती है ए कांकरी पित्ताशयमें पडी रहती है अथवा आंतरोके रस्ते दस्तमें निकल जाती है, पित्तकी नलीमेंसे निकलती वो वहोत दरद करती है, कलेजेमें शूल जेसी पीडा होती है, रोगी तडफडता और पुकारता है, १ ठहर२कर दरद उठता है, उलटी होती है, दस्तकब्ज रहता है, पथरी पीछे पित्ताशयमें जाय अथवा आंतरोंमें जाय तो दरद नरम पडता है अगर जो नलीमें अटककर रहे तो आखिर पित्ताशयमें पित्तका भराव होकर कामला होता है, और रोगी मरजाता है (इलाज)– गरम पाणीका सेक अलशीकी पोल्टिस अफीम तथा बेलाडोना मिलाकर लगाना दरद वहोत होय तो इथर अथवा क्लोरोफार्म सुंघाना गरम पिलाकर उलटी करानी आंतरोंमें गये पीछे जुलाब देकर दस्तके रस्ते निकालदेनी

(कामला)-पित्ताशयका पित्त आंतरोंमें नही जाता है, पीछा खूनमें दाखल होता है तब कामला होता है, अथवा पित्त पैदा करनेकी क्रियाका अटकाव होनेसें खूनमें पित्त वढता है कलेजाके आगे कहे रोगोमें कमला होता है पित्त जादा पैदा होनेसें और मलकी कब्जीसेंभी कामला होता है इसके सिवाय चिंता डर दिलगीरी फेफसा मगज तथा रक्ताशयके रोग अजीर्ण बुखार सापका डंक तथा दुसरे जहर ए सब कामला (पीलिया)का कारणरूप है खूनमें पित्तका वढना उसका नाम पीलिया रोग है, (लक्षण)–वदनमें पीलापना ए कामलाका प्रगट लक्षण है ये पीलापणा पहली आंखमें पेशावमें नखमें और पीछे चामडीमें दिखाई देता है सुस्ती आलस बेचेनी कलतर शिरका दुखणा दस्तकी कब्जी और खुजली ए उसके दुसरे चिन्ह हैं कमला बहोत वढ जाता है तो सब वदन हलदी जेसा हो जाता है रोगी स्त्रीका दूध तथा आंसूभी पीला होता है, कपडेकें पीला दाग लगता है, पेशाब पीला केसर जेसा लाल कालाभी होता है दस्तसुपेद् कब्ज वायू डकार अपचा अरुचि और किसी २ वख्त दस्त उलटीमें या नाकमेंसें खूनभी गिरता है.

(इलाज)– १ दस्त खुलास आवे एसा इलाज करणा पहली दूध या घी पिलाकर दस्त देना २ त्रिफलाके उकालामें सहत डालकर पीना ३ गोमूत्रमें शिलाजीत अथवा सोराखार लेना ४ कडवे नींबकी छालका उकाला सहत डालकर पिलाना ५ त्रिफला दारुहलदी कडवानींब तथा गिलोय इसमेंके किसीभी दवाका अंगरस सहत डालकर पीना ६ कुटकी सर्वोत्तम इलाज है, इसका क्वाथ नवसादर तथा विलायती निमक डाल पीना ७ नवसादरभी कामलेका सर्वोत्तम इलाज है, नं० (६२६) (६२७) तथा ६२८ का मिक्चर कामल है, ९ तेसे नं० (७०७) तथा ७०८ का हकीमीनुसके फायदेबंद है १० त्रिफलादि क्वाथ नं० २११ अच्छा फायदा करता है.

(होमियोपथिक इलाज)–१ एकोनाइट–बुखारके संग पीलियेका अच्छा इलाज है, २ आर्सेनिकम आंख पीली दस्त अपचा बेचेनी प्यास ३ केलकेरियाकार्ब (यकृत्की वढोतरी) उसमें दरद दस्त मट्टी जेसा पेशाब काला तथा पीलाईलियेझांखा ४ आयोडाईन–बहरा पीला दस्त सुपेद पेशाब काला तथा पीलाईलिये पुराना कामलेमें ५ पोडोफाइलम) पित्तकी कांकरी अटकी भई पीलियेका इलाज–(विशेष सूचना)– भारी दाल दालऔर खटाई और चीकना खुराक घी तेल वगेरे चरबीवाला पदार्थ और नमकका परहेज रखणा पांडू रोगमुजब पथ्यापथ्य रखणा कामलामें लोक दूध खानेंकी मनाइ करते हैं. लेकिन् उसका कोइ कारण नही पाया गया माफकसर थोडा दूध खानेमें कोइ तकलीफ नहीहै (यकृत्के तमाम रोगोंका सामान्य इलाज) यकृत्के सब रोगोंमें दस्तकी कब्जी होती है, इसवास्ते दस्तका खुलासा रहे एसा इलाज सरू करणा दस्तकी कब्जी नही

होय तोभी आणेकी दवा देनी २ निसोतकूं उकाल उसमें एरंडीका तेल तथा दूध मिलाकर पिलाना अथवा इकेली निशोत पाणीमें पीस दूधमें पिलाना अथवा फकत एरंड तेल दूधमें पिलाना ३ करमालाके गिरमें दूध डाल उकालकर पिलाना ४ कुवारका रस हलदीका चूर्ण मिलाकर पिलाना ५ जो हरडे तथा लाल रोहींडेका क्काथ जवखार तथा पीपरका चूर्ण डालकर फजरमें पीना.

कृमि–चूरणिये–गिंडोले–वर्मस.

(विवेचन) कृमियोंके गिरनेसे वदनमें जोजो विकार होते हैं, उसका बयान बडा भयंकर है, लेकिन् लोक इस बेमारीकूं साधारन समझते हैं, देशी शास्त्रमें और डाक्दरीमें इस रोगका वहोत निर्णय किया है सो वहोतसी सूक्ष्म बाते समझने जेसी है, लेकिन् इस जगे संक्षेपसे उसका बयान करते हैं (प्रकार) कृमिकी मुख्य दो जात है याने बाहरकी जूं लीखचमजूं वगेरे (और अभ्यंतर कृमि) याने बदनके अंदरकी तांतू जेसें गोल चपटे कृमि २० से ३० फीटतक लंबी होती है, इसमें कितने तो कफमें कितनेक खूनमें और कितनेक मलमें पेदा होती है (कारण)–बहारकी कृमि वदन तथा कपडेके मैल गलीचपनेसें होती है और अंदरकी कृमि अजीर्णमें खानेवालेकूं मीठा तथा खट्टा पदार्थ खानेवालेकूं पतला पदार्थ खानेवालेकूं आटा गुड मीठा मिले पदार्थ खानेवालेकूं दिनमें नींद लेनेवालेकूं विरुद्ध अन्नपान वहोत वनस्पतीकी खुराक वहोत मेवा इत्यादिसें रोग प्रगट होता है वहोतसी वखत कृमियोंके इंडे खुराकके संग पेटमें चले जाते हैं और आंतरोंमें उनका पोषन होनेसें उनोंकी वढोतरी होती है लक्षण–बाहरकी जूं तथा लीख प्रत्यक्ष दिखती है, और चमडीदरद दोडे फोडे खुजली फुनसी गडगूमड ए उसके प्रत्यक्ष चिन्ह है.

(कफसे) पैदा भये कृमिमें कितनेक तो चमडेकी वडी डोरी जेसें कितनेक अनाजके अंकुर जेसे कितनेक बारीक और लंबे कितनेक छोटे होते हैं, कितनेक सुपेद और लाल झांइवाले होते हैं, उसकी ७ जात है उससे मोल मूंमेसे लाल अपचा अरुचि मूर्छा उलटी बुखार पेटपर आफरा खासी छींक श्लेष्म ए उसके लक्षण है, खूनसे होनेवाले ६ प्रकारकी कृमि खूनमें होती है, और सूक्ष्मदर्शक यंत्रसे देख सकते हैं, उनोंसे दुष्ट याने चमडीका दरद होता है, विष्टामें यान दस्तमें होनेवाली कृमि गोल महीन तथा जाडी रंगमे सुपेद पीली काली तथा वहोत कालीभी होती है, उसकी पांच जात है वो कृमि जब होजरीके सन्मुख जाती है, तब दस्त गोटा मलका अटकाव वदनमें दुवलपणा खरसटपना वर्णफीका रूखडा होना मंदाग्नि तथा वैठकमें खुजाल होती है, कृमि विशेष करके वच्चोंके होती है, उनोंकी कृमिसे भूख जाती रहती है, अथवा सब दिन भूखही भूख बनी रहती है, पाणीकी प्यास नाकघसना पेटमें दरद मूंमे खराब बदवो उलटी वे-

चैनी अनिद्रा गुदामें काटे दस्त पतला आवे उसमें कृमियें गिरे किसी वखत मूंमेसे पडे थोडा बुखार बकना बच्चा नींदमें दांत पीसै झबक उठै और हिचकी खेंचातानभी होवै कृमि रोगके ऐसे २ लक्षण होते हैं, सो वाजे वखत वैद्यया डाक्तरभी निश्चै नहीं कर सक्ते हैजा मिरगी और दिवानापना इत्यादि रोगभी कृमिसें पैदा होजाते हैं–

(इलाज)– गोलकृमि–१ सेन्टोनाईन सादा और अच्छा इलाज है, ऊपर मुजब १ से ५ ग्रेन दवा मिश्रीके संग रातकूं देनी और फजरमें थोडा एरंडी तेल पिलाना तब दस्तमें कृमियां निकल जायगें पेटमें जादा कृमियोंकी शंका रहे तो एक दो दिन बाद फेरभी इसीतरे करनेसें सब कृमियें निकल जाते हैं, क्योंके दो तीन दिनमें ९० से १०० तक कृमियें निकल जाते हैं, कितनेक लोक एसा मानते हैं के कृमिकी कोथली निकल जाती है, तो बच्चा मरजाता है, लेकिन् ये बात वहमकी है, सेन्टोनाइनके बदले बजारमें लोझेन्जीस याने गोल चिपटी टिकडियें बिकती है, उसमें सेन्टोनाइनके संग बूरा तेसें क्यालोमेलभी मिलाया भया होता है, उसकूं बच्चे मिठाइ समझ खा जाते हैं, वो देना. (२ क्यालोमेल)–इकेला अथवा इसके संग सेन्टोनाइन तथा सोडा मिलाकर देना ३ स्कमनी–जालप रुबार्ब एरंडी तेल निशोत–ए सब जुलाब आनेवाली चीजोंके संग कृमिकूंभी बाहिर निकालती है, पहली जालप वगेरे तीन दवा सामिलकरकेभी दीजाती है, ४ टरपेन्टाईन–कृमिकूं गिराती है, मात्रा ४ ड्राम उसके संग एरंडी तेल ४ ड्राम गूंदका पाणी ४ ड्राम और सोंवेका पाणी १ औंस मिलाणा ५ अनारके जडकी छाल १ तोला चूर्णकर आधा फजर आधा सांझकूं बूरेके संग फाकना दुसरे दिन विलायती निमकका जुलाब लेना ६ वायविडंग–कृमिका अच्छा इलाज है, वायविडंग २ वाल निशोतके छालकी भूकी१वाल कपीला१वाल इनोकों१औंस उकलते जलमें चार घंटे भिगाकर इसका निथरा भया पाणी दोदो चमचे तीन २ घंटेसे दो तीन वखत देना इससे कृमि निकल जाती है, बुखारमें ए दवा नहीं देनी–चपटी कृमि–७पहली जुलाब देना पीछे क्यालोमेल देना फेर जुलाब देना ८ मेलफरका तेल आता है, उसकी ३० या ४० बूंद गूंदके जलमें देना और ४ घंटे पीछे एरंडी तेल अथवा जालपका जुलाब देना–तांतूनेसी कृमि–९ क्यालोमेल तथा सेन्टोनाइन देनेसे निकल जाती है, लेकिन वेर २ होजाती है, इसवास्ते निमकके पाणीकी कपासियोंके पाणीकी अथवा लोहेका थर्कोरी और पाणी मिलाकर उसकी गुदामें पिचकारी मारणेसें कृमि धुपकर निकल जाती है. १० निमक ॥ से १ ड्राम मीठे जलमें ३।४ औंसमें गुदामें पिचकारी मारनी इससे कृमि सब निकल जाती है ११–पिचकारीकेवास्ते इसके सिवाय चूनेका पाणी टिंक्चर ओफ स्टील अथवा इसके पत्ते सितापके पत्ते बाफकर या पीसकर किया भया पाणी इसकी पिचकारीभी फायदा करती है, इसेस पिचकारी मारनी और ३।४ दिनसे जुलाब देना–(दुसरे इलाज) १२ पलासपापडेकी भूकी । तोला वायविडंग । तोला दाडिम मिलाकर दुसरे दिन जुलाब देना

१३ कोंच फलीके रूं दूधमें धोकर पिलाना और. दुसरे दिन जुलाब देना १४ पलासपापडा तथा काली जीरी १५ डीकामाली (कीडामारी) पाणीमें पीसकर पिलानी १६ वायविडंगके क्राथमें वायविडंगका चूर्ण डालकर पिलाना अथवा सहतमें चटाना १७ पलासपापडेकूं जलमे पीस सहत डालकर पिलाना १८ कपीला आधे रुपेभर तथा गुड १९ वायविडंग इंद्रजव उसकूं शेकके किया भया चूर्ण २० नींबके पत्तोंकों वाफा भया रस सहत मिलाकर पिलाना २१ त्रिफलादि क्राथ नं २१० कृमि तथा कृमिसे भये सब विकारोंकों मिटाता है, कृमिसें खून विगडकर वदनपर गडगूमड तथा पककर फूट जाता है और रोगी भयंकर स्थितिमें आ जाता है, इस क्राथका वहोत दिनोंतक सेवन करनेसे रोग जडसे जाते रहता है, २२ कृमि निकल गये पीछे बच्चैकी तनदुरस्ती सुधारनेकूं टिंकचर ओफ स्टील बूंद १० एक ओंस जलमें कितनेक दिनोंतक पीना.

(विशेष सूचना)-(पथ्य) तिलका तेल तीखा और कडवा पदार्थ निमक गोमूत्र सहत हींग अजवाण नींबू लसन कफनाशक तथा रक्त शोधक पदार्थ अछा है,-(कुपथ्य) दूध मांस घी दही पत्तोंकाशाक खट्टा तथा मीठा रस और अटेका पदार्थ ए कृमिकूं वधारनेवाले हैं, कृमिवाले बचेकूं रोटी देना होय तो निमक डाल तेलसे तवेपर तलके देनी वहोत अछी है, क्योंके तेल और करडा पदार्थ फायदेवंद है, इसवास्ते कृमियोंके इंडे जादा करके पत्तोंके शाग तथा फलोंपर लगे रहते हैं, इसीवास्ते पत्तोंका शाग विना तपासे खानेसे जैनाचार्य मांस खानेका दोप कहते हैं, मूल कारण यही है, और फलादिक वनस्पति खानेमेंभी दोप हिंसा और रोगकाही सिद्धप्रमान है, क्योंके देशीलोक वजारमेंसे शाग फल लाकर विगर धोये देखे विगर काममे लेते हैं, लेकिन् उसमें कितना नुकशान है सो नहीं जानते जीवोंके इंडे तथा जीव प्रथम तो पेटमें आंतरोंमें जाता है, दुसरे ए जीव रातकूं मुसाफरी करने निकलते हैं, तब एक वदनसे दुसरेके वदनमेंभी वाजे वखत घुस जाते हैं इस जातकी मादा वडी मुसाफरण होती है सो इंडाभी दुसरेके वदनमे धर देती है इसीवास्ते संग सोना और संग भोजन करना उसमें एक तो सफाई दुसरी रोगादिकके अनेक जरूरी करतव्य आये भये हैं, जैनशास्त्रकार जूं चमजूंकू ते इंद्री और पेटमें खुनमस्सेनारू वगेरेमें जंतुओंको दो इंद्रीवाला जीव मानते हैं, इसवास्ते नपुंसक है, नरमादा इनोंमें नहीं होता लेकिन् इन जीवोंका स्वभाव तो ऊपर लिखेमुजव जरूर है इनोकी उत्पत्तियाने जोनी इसीकिस्म है, विछोनेपर सोना और संगखाणा संग सोना वैद्यकशास्त्र इसीवास्ते वहोत फायदेके वास्ते मना करता है, इस अपेक्षाआश्री जैनके मुनि तथा जैनके पूरेपमी गृहस्थ अन्यका वस्त्रादिकका नियम छूने और वरतावके वास्ते धर्म पक्षमें मना करते हैं, उन वगेरेके वस्त्रोंमें और पुरुषके दुर्गंधके परमाणू तथा ए जीव प्रायें कम असर करते हैं, और हवासे परमाणु उड जाते हैं, इस वातोंको वहोतसे सुपढमी

अर्श हरस मस्सा ववासीर.

पाइल्स.

(वैठक गुदा)के आसपास कोरपर अथवा सफरेके अंदर महीनशिराओंका जाल फूलकर वधणेसे जो मस्सा होता है, वो हरस ६ प्रकारका है न्यारे २ तीनों दोषोंका तीनो दोष सामलका खूनका और औलादमें उतरणेवाला हरसकी मुख्य जाति २ दोय है, वाह्यार्स याने वाहरका अर्स जिसके मस्से आंखोसे दिखाइ देते और हाथ लगाणेसे भी मालम दे और अंतरार्स याने सफरेके अंदरका मस्सा उसमेंसे खून गिरता है, वाहिरके मस्सेमेंसे खून नहीं गिरता किसी २ के अंदरके मस्सेसेभी खून नहीं गिरता कफके मस्सेमेसें चिकणासा पाणी गिरता खून नहीं गिरता।

(कारण) सब दिन वैठे रहणा थोडी महनतकर वहोत खुराक खाणा वहोत मसाला वापरणा तेज दारू पीणा वहोत गरम या वहोत ठंढा पदार्थ खाणा हमेसकी कब्जी वेर २ सख्त जुलावका लेणा औरतोंकै गर्भका दवाव कलेजा तिल्ली गांठ संग्रहणी वगेरे रोग ये सब मस्सेके कारण है थोडेमें समझणाके जठराग्नि मंद पड जाणेसें अथवा पाचन क्रिया विगडणेसे जो जो रोग होते हैं वो सब रोग मस्सेके कारण है।

(लक्षण) वाहरका हरस—मलद्वारकी कोरपर होता है पहली चमडी सामिल होकर फेर वढकर मस्से जेसे होते हैं, सिकलविल्लीके स्तन जैसा कदमें छोटे और वडे भी होते हैं छोटे होते हैं तब जादा दरद नहीं करते जरा खुजली तथा गरमी मालम देती है, वडे होणेपर दरद करते हैं वैठक सव दुखती है ये पकके फूटते हैं अथवा खून जमकर मस्से पके पडे वाद शांत पडते हैं—(अंदरका हरस)—गुदामें खाज खुजली चटपटी लगे आगवले दरद होय दस्तजातेकरांजे दस्तकब्ज धंधा भया आवे उस वखत पुकारे इतना दरद होय सफरा घसणेसे मस्सेमेंसे खून गिरे दस्तमें कराजणेसे सफरेका रस पुडतखें चीज कर वाहर आता है और किसी वखत सव रग पुडत याने कांच निकल आती है अथवा नसोंके न्यारे २ गुछे वाहर आते हैं सफरेके दरदसे कमरमें पेडूमें और जांघमे वेचेनी कलतर होती है, खून गिरे पीछे मस्से नरम होते हैं, और रोगीकूं चैन पडता है अगर खून वेर २ और जादा पडे तो रोगी एकदम सिटा जाता है, चेहरा फीका पडता है, और चक्कर आता है, हरसका खून लाल किरमची रंगका होता है, वूंद २ अथवा धारसीर छुटती है। (इलाज)—जिस कारणसे हरसकी उत्पत्ति भई होय वो कारण रोकणेका इलाज करणा और दुसरा इलाज हरसके मिटाणेका करणा दस्त नरम पतला तथा साफ आवे एसा इलाज करणा।

(२ छाछ)—मस्सेका वहोत अछा इलाज है, खट्टी छाछमें सींधा निमक मिलाकर वो खुराकके संग लेणा उससे वादी तथा मलकूं रस्ते लाती है, ताकत रंग और अग्नि

वढाती है (३ सूरण)-मस्सेका एसा ही पका इलाज सूरण कंद है सूरणकूं युक्तिसे सेवन करे तो हरसकी जड जाते रहती है, सूरणका शाग सूरणकी पुडी सूरणके लड्डू शीरा वगेरे वणसकता है, लघुसूरण मोदक तथा बृहत्सूरण मोदकमें मुख्य भाग सूरणका आता है (४ नाग केशर)-खून गिरता होय तो उसकूं रोकणेमें अछा है, नाग केशरका चूर्ण मिश्री मक्खनमें चटाणेसें खून बंध हो जाता है (५ भीलावा)-मस्सेके रोगमें बहोत फायदे वंद है लेकिन् प्रकृति मोशम और पथ्यापथ्यका विचार करके देणा चाहिये तिल भिलावा हरडे और गुड समवजन लेकर लाडू करणा शक्ति मुजब देणा (६ हरडे)-जौ हरडे और हरडेका सेवन बहोत फायदेवंद है दस्त साफ आता है, गुडके संग या छाछके संग देणा ७ (मस्सेके रोगपर करणे लायक शांत इलाज) रगतचंनण चिरायता लाल धमासा मोथ दारू हलदी तज वाला और नीमकी छाल इनोका क्वाथ खूनकूं बंध करता है ८ मक्खण और तिलखाणेका अभ्यास रखणा अथवा थर विगरका दही खाणा इससे भी खून बंध होता है, ९ छोटी इलायची दाणा तज तमालपत्र नाग केशर मिरच पीपर सूंठ ये वृद्धि भागसे लेणा जेसे इलायची एक भाग तज २ भाग इनोके सम वजन मिश्री खानेसे हरस मंदाग्नि गोला आफरा अरुचि श्वास गलेका और छातीका रोग मिटता है (१० गंधकके फूल २ औंस क्रिमओफटार्टर ४ ड्राम सहत और नारंगीका शरबत २ औंस मिलाकर उसमेसे दरटंक १ ड्राम चाटणा) ११ कबाबचीणी २ तोला मिरच ।. तोला सहत २ तोला सोवा १ तोला मात्रा आधे रुपेभर १२ मिश्री तोला १५ सूरण ५ तोला सुपेद चिरमी तोला १ सोवा तोला १ इनोंका चूर्ण सहत अथवा मक्खणमें मात्रा १ ड्राम ।

(बाहरका इलाज) १४ ठंढा पाणी अथवा ठंढे पाणीका पोता रखणा १५ त्रिफलाके उकालीमें कपडा भिगाकर पोता धरणा १६ मांजू १ तोला अफीम ॥ तोला मक्खण और सादा मलम २॥ तोला इनोका मलम अंदर और बाहिर लगाणा १७ हीराकशी १२ रत्ती और ३ तोला पाणी उसकी रातकूं पिचकारी मारणी १८ फिटकडी अथवा मांजूफल २ रत्ती पाणी १ औंस इसकी पिचकारी लगाणी १९ टिंकचर ओफस्टील २० बूंद पाणी २ तोला पिचकारी लगाणी इस इलाजोंसे मस्सेका खून बंध होता है और सफेरमें मल भर गया होय तो वोभी निकल साफ हो जाता है २० नं० २९७ इसमें रुइ भिगाकर गुदेमें धरणा-होमियो पथिक इलाज-१ इस्क्युलसहीप-सूके मस्सेमें बहोत फायदेवंद है २ आर्सेनिकम-जलणेवाला और चटकवाला मस्सेमें उपयोगी है ३ बेला [illegible] गिरणेवाले मस्सेमें अछा है, इस्के सिवाय कोलिन्सोनिया टेमामेलीस ग्रेफा-[illegible] वगेरे दवायें मस्सेमें फायदेवंद है ।

(विशेषसूचना)-गरम तथा दाह करणेवाला खुराक खाणा नहीं दस्तकी कब्जी करे

एसा खुराक और दवा खाणा नहीं दस्त साफ आवे एसी दवा और अग्नि प्रदीप्त करणे वाला खुराक तथा दवा लेणी मस्से काटणेका इलाज अणघड ले भग्गू फिरणेवालोंके फंदेमे आके खराब होणा नहीं क्योके मूरखोंके काटणेसें हमने वहोतोंके नुकशान भया देखा है ।

(हितशिक्षा)–रोगोंकी संख्या और कारण वांचे पीछे समझमें आ जायगीके पाचन क्रियाके विकारसे जितना रोग होता है इतना दुसरे किसीभी कारणसें होता नहीं शरीरकी आरोग्यता पाचन क्रियाके आधीन है और पाचन क्रियामें केसे २ विकार होते हैं वो सब इस प्रकरणमें रोगोंका नाम तरे २ के कारण लिखा है सो वांचणेवाले अछी तरे समझेंगे कुदरती हवा और स्वभावसे मोशमका वदलणा इसपरभी कितनेक रोगोंका आधार है उसकूं अलग याने वाद कीये जाय तो पाचन क्रियाकी जादा खरावी आहार विहार संबंधी इसमें पुरुषोंकी अज्ञानता मूर्खता और गफलतके लिये रोग होता हैं सो हमने इस ग्रंथकी दुसरी किरणमें अछीतरे समझाया है और फेर इहांभी लिखते है के मनुष्यके शरीरमें मूंसे गुदातक एक लंबा नल है इस नलकूं अपणे पाचन क्रियाका संचा कह सकते हैं क्योंके मूंकी वारीमेंसे खुराक दाखल होकर गुदाकी बारीमेंसें बाहिर निकलता है लेकिन् बाहिर आणेके पहली उस खुराकपर वहोतसी क्रियायें गुजरती है इन सब क्रियायोंका आखरी नतीजा खून और शरीरका पोषण है जब पाचन क्रिया वरावर होती है तब खून वरावर साफ पैदा होकर वदनकूं अछा पोषण करता है जो उसमें कुछ विकार होता है तो खूनमेंभी विकार होता है खून कम या जादा नाताकत या ताकतवर विगडणा या शुद्ध होणा ये सब काम पाचन क्रियाके तालुक है लेकिन् आहार विहारके वावत जो आगे नियम लिखा है उस मुजब नहीं चलणेसे पाचन क्रियाका ये संचा विगडता है तब उस संचेमें पैदा होणेवाला शरीरका जीवनरूप खून कम होता है अथवा विगडता है खान पान विपरीत होणेसें पित्त विगडता है पित्तका काम पाचन करणेका है इसवास्ते पाचन दुरस्त होता नहीं तब वायु जोर करती है अजीर्ण होता है दस्तकी कब्जी होती है और आंतरोमें मलका भराव होकर संचा ठसोठस भर जाता है अज्ञान लोक इस वातोंसे नावाकिफ खुराक तो हमेस धके लेइ जाते हैं वहोतसे लोक येही कहते हैं जहांतक खाता पीता है कभी नहीं मरेगा जो जी माने सो खाणा लेकिन् ये खुराकका आगे क्या हाल होता है इस वातकूं वो लोक कुछ नहीं जाणते पाचनक्रियाका संचा मलसे भर जाणेसे और अग्नि बुझ जाणेसे खुराक वरावर नहीं पचणेसे जब नीचेके वडे आंतरेमें भर जाणेसे उसका संग्रह होता है तब एसा हाल होता है छोटे आंतरोमें जोके खून चढणेकी क्रिया होती है उसमेंसे मल अथवा वेका मलकूचोकूं वडे आंतरोमें उतरणेकी जगा चहिये इतनी जगा नहीं मिलणेमें छोटे

आंतरेमेंभी मल भर जाता है जो निरुपयोगी पदार्थ शरीरके बाहर निकल जाणा चहिये एसे विकारी पदार्थभी अंदरही भरके रहता है तब उसमेंसे सडणा सरू होता है तव उस सडेमें कीडे और कृमियोंकी पैदास होती है उसमेंसे कृमिजन्य अनेक रोग पेट और सब वदनमे हो जाते हैं आंतरे मलसे पूरे भर जाणेसें उसमेंसे सूजन होती है पीछे सडते हैं और उसमें जखम पडता है होजरी सह नहीं सके एसा भारी खुराक अथवा दाह कर-णेवाला खान पान उसमें पडणेसे वोभी विकारकूं प्राप्त होते हैं और विकार पाया भया होजरीका रश छोटे आंतरोमें गये पीछे उसका जो खून होता है वो भी विकारवालाही होता है होजरीमें खटास अथवा पित्त वढता है तो उस जगेभी वरम होता है जखम गिरता है उलटी होती है इसतरे पाचनक्रियाका सब संचा विगडता है तब सुधार-णेके वास्ते विचारा अज्ञान लोक वैद्य डाकतर और उनोंकी दवा पर भरोसा रखते हैं, लेकिन् जहांतक वो लोक इस संचेकी क्रियाके अजाण है तहांतक वैद्य या डाकतरोंकी दवा कभीभी उस रोगकूं मिटा नहीं सकती इसवास्ते जिस कारणसे संचा विगडता है उस कारणोंकों पहली रोकणा चाहिये जितना कुपथ्य संबंधी इंद्रियोंने मजा और स्वाद लिया होय उतनाही निग्रह (याने तप) ज्ञानसे किया जाय सो तो सकाम निर्जरा और अज्ञानपणे पांचो इंद्रियोंके स्वादसे वचणा जेसें वैद्यके कहे मुजब घरवाले खाणे पीणे कुपथ्य नहिं देवे सो परवशतापणे कर निग्रह याने अकामनिर्जरा, कर्मपूर्व बद्धकूं जीव दो तरे खपाता है जिसमें अकाम निर्जरासे कर्म खपाणेसें अज्ञानपणेकर फेर जीव समय २ कर्म बांध लेता है और ज्ञान तपसे नहीं बांधता है इसवास्ते कर्मोंके कडवे फल समझके पूर्वकृत दुष्कर्म वेदनाकूं मिटाणे ज्ञान संयुक्त पथ्य याने तप आचरे इछाकूं रोकणा उसका नाम तप है वस्तु हाजर रहते उसका उपभोग नहीं करणा उसका नाम तप कहो पर्याय नामसे पथ्य भी हो सकता है रोग जरूर मिटता है वीर प्रभूने तपके (पथ्य) के अनेक भेद दिखलाये हैं इस तपसे याने इंद्रियोंके विषयोंकों रोकणेसे निधे प्रदेशबंध रोग मिटता है ।

किरण ५ मी.

मूत्राशयसंबंधी रोग.

मूत्राशयमें फक्त गुरदा और वस्ति आया भया है इस किरणमें मूत्राशयके तमाम रोगोंका समावेश किया भया है विशेष करके मूत्राशयका रोग शारीरक है और मूत्र मार्गका रोग आगंतुक याने कोईभी बाहरके दुष्ट स्पर्शके चेपसें प्राप्त भये होते हैं ।

धातुश्राव.

स्पर्मेटोरीआ.

पेशाबमें धातू जाता है ये बात आजकल ज्यादा देखणेमें आता है दुसरी येभी बात

है धातु और वीर्य शिवाय दुसरी चीजोंभी पेशाबमें जाती है उनोंकों भी लोक धातु और वीर्यही कहते हैं पेशाबमें जाते जुदे २ पदार्थोंके नाम इस मुजब है १ प्रमेहके पदार्थोंमें जो सुपेद पदार्थ जाता है वो धातु नहीं लेकिन् पीप है अंदर जखम पडणेसें पीप वहकर बाहिर आता है इसवास्ते धातुस्रावसे जुदा रोग गिणना २ पथरीके रोगमें मूत्राशयके अंदरका श्लेष्म पदार्थ मूत्रके संग बाहिर जाता है वो पथरीके रोगके साथ संबंध रखता है लेकिन् धातु नहीं होता ३ पेशाबमें चरबी जाती है वोभी प्रमेहकी एक जाति है जिसकूं वसामेह कहते हैं लेकिन् वोभी धातूका जाणा नहीं, ४ डाकतरोंने रसायणिक प्रयोगसे निश्चै किया है के इसके अलावा पेशाबमें एक सुपेद पदार्थ और भी जाता है वो फोस्फेट नामका एक क्षार पदार्थ है ५ धातू जो वीर्य गिरता है पेशाबके आगे या पीछे या स्वप्नेमें और भीके इतरे धातू जाया करता है ऊपर लिखे पांचो पदार्थ पेशाबमें जाता है उसकूं लोक धातू जाणा कहते हैं लेकिन् वो जुदे २ पदार्थ है और उनोका इलाजभी लोक प्रायें धातूस्रावकाही करते हैं जो कभी अछी तरे परीक्षा कर इलाज करणेमें आवै तो तुरत इलाज हो सके लेकिन् इसमें कितनीक सूक्ष्म बातोंकी परिक्षा करणी होती है, जो इतनी बारीकीका विचार नहीं बण सके तो इन सब विकारोंपर सामान्य इलाज कितनेक दरजे चलसकते हैं.

(कारण) विषयमें बहोत चित्त रखणेसे वांचणेसे या सुणनेसे बहोत गरम खानपानसे और बीस वर्षकी ऊमर बाद वीर्यका स्वभाविक वेगकूं रस्ता नहिं मिलणेसे धातू पेशाबके आगे पीछे स्वप्नेमें दस्त पेशाबकी वखत कांजणेसे हथ रस बगेरेके कुटेवसे वीर्यकी नसों ढीली हो जाणेसें कितने एकोंके धातू झरणे लगजाता है.

(लक्षण) पेशाबमें अथवा स्वप्नेमें जब धातू जाता है, तब नाताकती आती है, मन फिकर बंद रहता है, हाथपांवोमें कलतर (फूटणी) होती है. यादशक्ति कम पडती है. छातीमें धडका चलता है, भूक मंद पडती है शिर दुखता है चक्कर आता है शरीर गलने जाता है, क्षय मिरगी वाईटे अथवा दिवानापणा बगेरे डरावणे रोग धातूके जाणेसें बहोतसी वखत पैदा होते हैं नामरदी संतानका अभाव भी होता है.

(इलाज) १ जिस कारणोंसे धातू जाणा सरु भया होय वो कारणोंको बंध करणा २ दस्तका खुलासा धातू गिरणेकूं बंध करता है इसवास्ते हरडेका चूर्ण अपनी तासीर तथा दोषोंके जोर मुजब हमेस लेणा तेसें सोनामुखी त्रिफला कोलोसिंथ रुबार्ब बगेरे दवा भी दस्तके खुलासा वास्ते लिये जा सकता है ३ ठंडे जलमें सिनान अथवा कमरतक ठंडे पाणीमें थोडे मिटोतक बैठणा शिरपर ठंडा जल जरूर डालना छया मास बंदमें रातकूं जादा नींद लेणी नहीं सादी किये मरदकूं अपनी औरतके पास रहणा इससेभी वीर्यका गिरणे बंद होता है, ४ फोस फारस लोह और कुचीलेकी बनावटी गोलीमेंसे किसीभी

है, ये दरद अच्छा होता है, लेकिन जो दोनों गुरदा वरमसें भर गये होय तो पेशाव बहोतही थोडा ऊतरता है, इससे पेशाबके संग जो नुकशानकारक पदार्थ बाहर निकल जाणा चहिये वो शरीरमें रहणेसें जहरके जैसा नुकशान करता है, इस जहरी पदार्थमें मुख्य युरिया है, युरिया खूनमें मिलणेसे बहोत नुकशाणी करता है, सूजन जलोदर वांइटे बेहोसी ये उसके आखरी दरजे हैं, (इलाज) इस रोगमें पेशाव लाणेवाली बहुत दवा देणी नहीं लेकिन पेशाबका दुसरे रस्ते निकाश होय एसी दस्तावर तथा पसीना लाणेवाली दवा देणी गुडदेपर थोडी जो के लगाणी जो रोगी नाताकत होय तो अलसीकी पोटिस मारणी अथवा राईका पलाष्टर मारणा अथवा अफीमके डोडाका या गरम पाणी शीशीमे डाल शेक करणा दरद बहोत होता होय तो कमरतक जलमें पाव घंटेसे आधी घंटेतक बैठाणा दस्त लाणेवास्ते गरम पाणीमें एरंडीका तेल या चामें देणा अथवा कम्पाउन्ड जाल १ ग्रेण ४० पाणीमें देणा सोनामुखीकी चाय २ औंसमें करमालाका गिर १ तोला देणा हवावाली या भीजी जगेमें रोगीकूं रखणा नहीं खुराकमें दूध तथा साबूदाणा देणा अफीमका लेपकर एरंडीके पत्ते बांधणा अथवा काली जीरी बीजाबोल फिटकडी अफीम सांचरका सींग सूंठ इनोका लेप घसकर करणा फेर गोवरीकी अग्निकी बाफसे सुका देणा पाणीकी एवजी पीणेकूं अलशी डालकर उकाला भया पाणी ठंढाकर पिलाणा, ठंढीचा, जवका या धमासेका जल (हिम) पीणेकूं देणा, बुखार होय जहांतक पसीना लाणेवाली दवा देणी डाया फोरेटिक्स देणी (नं० ५७०) ५७१ लाइकर एमोनी एसेटीस साइट्रेट ओफ पोटाश वाईन आफ एपीकाक्यु आन्हा एन्टीमनी वगेरे दवायें पसीना लाती है, (नं० ७०९) ७१० के हकीमी नुसके भी इस बेमारीपर देणा.

(गुरदेका जीर्ण वरम) गुरदेमें पहलीसें धीमें २ वरम होता है, अथवा तीक्ष्ण वरम नरम पडे पीछे उसके बाकी रहे चिन्ह जारी रहते हैं, उसकूं जीर्ण वरम कहते हैं, कारण तो ऊपर लिखाही है, तीक्ष्ण वरममें तेज लक्षण होता है. जीर्ण वरममें दीर्घ वरम जारी रहे पीछे रोगीका आराम होणा मुस्कल है, अंदरसे रोग बढते जाता है, तेसें २ खून बिगडते जाता है, पेशाबमें आल्ब्युमीन सूजन ये उसकी मुख्य निशाणियां हैं, किसी वखत एकाएक मरजाता है, (इलाज) अच्छा पुष्टिदार खुराक लोह किनाइन चंद्रप्रभा वगेरे दवाइयां दस्तावर पसीना लाणेवाली दवाइयां पारे सिवाय दस्तकी ...इ भी दवा देणी.

१ एसिड नाइट्रिक डिल्युट २० बूंद टिंकचर ओफकवास्या ६० बूंद
टिंकचर ओफस्टील ३० बूंद जल ३ औंस
एकठेकर दिनमें तीन वेर पिलाणा.

२ एसेटेट ओफ पोटाश ६० बूंद कीनाइन ३ ग्रेण
टिंकचर ओफ स्टील २० बूंद पाणी ३ औंस
दिनमें तीन वेर पिलाणा.
३ लाइकर आमोनीएसेटेटीस १ औंस लाडेनम १५ बूंद
एन्टीमोनियल वाइन ३० बूंद कपूरका पाणी २ औंस
मिलाकर इसकूं १ लिकर गिलास दिनमें तीन वेर देणा.

गुरदेका तेज तथा पुराणे वरमका थोडासा वयान थोडे इलाज ऊपर लिखा है, लेकिन् इस रोगका निदान तथा चिकित्सा करणेमें वहोत अनुभव और चतुराईकी जरूर है, वैद्य डाकटरोंकी देखरेखमें इलाज करणा अच्छा है, देशी निदानमें अंत्रवृद्धि अंडवृद्धिके अंतर्गत ये रोग है.

मधुप्रमेह–मीठा पेशाव–

डायाबीटीस मेलीटस.

पेशाव वहोत होता है, और उसमें सक्कर जाता है, और मधुप्रमेह कहाता है, प्रमेहके रोगसे ये रोग अलग है, खूनमें सक्करका भाग होता है, वो प्रमाणसर होता है, जहांतक तो पेशावमें निकलता नहीं लेकिन् बहोत सक्कर अथवा सक्कर जेसा गुणवाला पदार्थ तथा मगजके कितनेक रोग होणेसे पेशावमें सक्कर जाता है.

कारण–ठंढी शरदी सराप सक्कर मिठाईका बहोत खाणा मगज तथा करोडरज्जू (पीठकी हड्डी) इनोंके रोगसें मधुप्रमेहका भयंकर रोग होता है.

(लक्षण) इस रोगकी पहली खबर नहीं पडती कितनेक रोगियोंके मधुप्रमेहके सख्त चिन्ह जलदी मालम देते हैं और शरीर सूककर रोगी हैरान होता है, और कितनोंकों वरसोंतक ये रोग चलता है, तोभी शरीर टूटता नहीं पेशाब जादा और बहोत वखत २४ घंटेमें १० सेरसे ३० सेरतक पेशाव होता है. और उसमें सक्कर १ औंससे २ रतल जितना जाता है, पेशावमें कभी २ जलण और पीपभी जाता है, प्यास वहोत लगणेसें जल जादा पीता है, तब पेशाब भी जादा ऊतरता है, पेशावका रंग फीका पाणी जेसा स्वादमें मीठा वदवोभी मीठी सडी होती है, पेशावकूं थोडी देर पडा रहणे देणेसें उसमें झाग होणे लगता है. पेशावपर चिमटी वगेरे जानवर आते हैं, वो इस रोगकी सामान्य परीक्षा है, मूं जीभ गला सूकता है, जेसें प्यास वहोत लगती है, तेसें भूख भी वहोत लगती है, किसी २ वखत भूख विलकुल नहीं रहती जीभ लाल होतीहै दांतोंके मसूंडेमेंसे खून गिरता है. दांत गिर जाता है, दस्तकी कब्जी रहती है, थूकमें सक्कर मूंमे मीठापणा अजीर्ण वायू चमडी सूकी भूर उडे चहरा फिकरवंद नाताकती वढती जाय स्वभाव वदल जाय मरदमी घट जाय आगे जातां नींद नहीं आणा मंद

बुखार नाडी पतली और बदन धुप २ के हाड पिंजर रहजाता है, इस रोगसें क्षय चमडी-का रोग पांडू और किसी वखत आंखोंमें मोतिया बिंदू सोजन हिचकी बेहोसी आखर मृत्यु-(इलाज) इय रोग बडा और बहोतदरजे असाध्य है, आहारविहाररूप पथ्य चलणेवाले रोगीकी ऊमर लंबी होती है, नहीं तो जलदी मरता है, इसका इलाज चतुरोंसे कराणा चाहिये अफीम बंगभस्म लोह सोमल भांग किनाइन बेलाडोना अरगट आयोडाइन पोटासब्रोमाइड वगेरे दवाइयां इस रोगमें फायदावंद है.

(पथ्य) दूध मलाइ मखण घी तूरकी दाल चणा मूंग पत्तोंका साग मूलेके बीज कडू गरम कपडे फजर सांझ डोलणा फिरणा (कुपथ्य) गुड सक्कर मिश्री सहत वगेरे मिठास लिये चीज आलू, सक्कर टेटी, सक्कर कंद, चावल साबूदाणे गऊंका मदा आटेकी सत्ववाली चीजें बिलकुल वापरणी नहीं जो पेशाबमें सक्कर नहीं जाय तो वरता व करणा.

मूत्रकृच्छ्र—मूत्रगांठ,

इस रोगमें मूत्राशय और मूत्रनलीके कितनेक विकारोंका समावेश हो सकता है, पेशाब अटक २ बडी मुस्कलसे आवै उसकूं मूत्रकृच्छ्र कहते हैं-(कारण) पेसाबके बाहिर आणेका रस्ता है, उसका कोइभी भाग संकुडा जाता है उसका कारण बहोत है, मूत्रमार्गका स्नायु संकुडाणेसे रशपुड सूज जाणेसे बरमसे तथा जखमसे रस्ता संकडा हो जाता है, और पेशाबकूं बंध करता है. गरम खाणा पीणा ठंढ शरदी सडे पदार्थ गरमीमें फिरणा ये उसके मूल कारण है, पथरी आडी आणेसे भी पेशाब अटकता है.

(इलाज) १ एलायची पाषाणभेद शिलाजीत गोखरु ककडीके बीज सींधानिमक तथा केशर इनोंका चूर्ण चावलोंके धोवणमें देणा २ ककडीके बीज मोलेठी दारूहलदी इसमुजब चूर्ण ऊपरमुजब देणा ३ गोमूत्र सहत केलेका रश इनोंमेंसे हर कोई एक रशके संग इलायचीका चूर्ण देणा ४ जवखार ५ मासा मिश्रीके संग ५ गुड मिलाकर जरा गरम दूध पीणा ६ गोखरूके काथमें जवाखार ७ आंवलाके काथमें गुड १ तोला डालकर पीणा ८ कुलथीका काथ सींधानिमक डालकर पीणा ९ शिलाजीत तथा सहत अथवा शिलाजीत दूध मिश्री १० दूध सक्कर घी ११ हरडे गोखरू पाखाणभेद अमल-तास धमासा इनोंका काथ सहत डालकर पीणा १२ डाभ कांस डांगर (दूब) तिल तथा ऊखके मूलका काथ अथवा खार १३ भूरींगणीका रश तोला १६ सहत डालकर पिलाणा १४ खपाटके जडका काथ १५ मुनका तथा दही सक्कर चाटणा १६ सोडा पोटाश जलमें पीणेसे दस्त साफ रखणा (१७ मूत्रशलाका) हुसियार डाक-डालकर पेशाब साफ करवाणा देशी वैद्य इस क्रियाकूं कम जाणते हैं, दवासे होय तो आखरी दरजेका इलाज सलाका है १८ पेडूपर सेक तथा गरम विठलाणा.

मूत्राघात मूत्रका रुकणा.

(कारण) मूत्रकी गांठ पडजाणेसे अथवा पथरी आडी आणेसें पेशाव बंध होता है, मूत्रका रुकणा दो तरे होता है, एक तो पेशावकी उत्पत्ति होती अटकती है, जेसेके हैजेमें और दुसरी रीत यह है, कै मूत्राशय चैतना रहित होणेसें पेडू भर जाता है, लेकिन् पेशाब अटकता है, जेसैके ऊरुस्तंभरोगमें पेशाव बंध होजाता है, मूत्रकृच्छ्र मूत्राघातरोगमें इतना फरक है, मूत्रकृच्छ्रमें तो मूत्रमार्ग संकडा हो जाता है, और मूत्राघातमें मूत्राशय चैतन्यरहित झूठा पड जाता है, अथवा पेशावकी उत्पत्ति बंध हो जाती है.

(इलाज) १ ऊरुस्तंभ और हैजेसें पेशाब बंध होगया होय तो उण रोगोंका इलाज करणा २ गरम पाणीमें अफीमका डोडा उकाल पेडूपर शेक करणा तथा डोवर्स पाउडर ग्रेण १० पाणीमें पिलाणा ४ लाडेनमना ६० बूंद चावलोंके आटेमें मिलाकर गोली बणाकर गुदामें रखणा ५ सोडा कारबोनेट ओफ पोटाश सोराखार जवका पाणी इसके अंदरका कोइभी पेशाब लाणेवाला पदार्थ पाणीके संग पिलाणा ६ सहा जाय एसे गरम पाणीमें रोगीकूं कमरतक आधे घंटे बैठाणा मूत्रकृच्छ्रके इलाजसब मूत्राघातमें भी चलता है–(पथ्य) सालि चावल गऊका छाछ गऊका दूध मूंगका ओसावण मिश्री पुराणा कोला परवल आदा गोखरू ककडी खजूर नालियर चंदलिया छोटी इलायची तथा ठंढा अन्नपान ये सब हितकारक है–(कुपथ्य) सराप महनत मैथुन घोडेकी सवारी विरुद्ध अन्नपान नागरवेलके पान उडद निमक हींग तिल मूत्रके वेगकों रोकणा खटाई गरम तीखा दाहकारक तथा लूखा पदार्थ.

अश्मरी–पथरी–कंकरी.

(कारण) पेशाबमें स्वभाविक खार होता है, वो बढजाणेसें अथवा दुसरा खार पैदा होकर उसकी धीरे २ पथरी बंध जाती है, और पीछे बडी होती जाती हैं, लीवरकी अव्यवस्थित क्रियाके सबब किसी किस्मका पदार्थ गुरदेमें पडता है, और उस जगे पथरी बंध जाती है,

(लक्षण) पथरी जब बंधणी सरू होती है, तब मूत्राशय फूल जाता है, तथा अंदर बहोत दरद होता है, पेशाबमें बकरें जेसी बदबो आती है, पेशाब बंध होता है, बुखार आता है, बडे कष्टके संग बूंद २ पेशाब आता है, रोगी धूजता है, दांत पीसता है, सूंटीकूं दबाता है, इंद्रीकूं मसलता है कणते रहता है ये पथरी गुरदेमेंसें पेडूमे याने मूत्राशयमे जाते और पेडूमेंसे पेशाबकी नलीके रस्ते बाहर आते दरद करता है. इस पथरीका कद रेतीके कणसे मटर जितना होता है, और पीछे बढकर बहोत बडी हो जाती है, रेती बहोत करके तो पेशाबके रस्ते बाहर निकल पडती है, लेकिन बडी कंकरी या

पथरी मूत्राशयमें अटकके रहती है, और उसजगे कदमें बढजाती है, तब काटके निकालणेसिवाय इलाज नहीं.

(इलाज) मूत्रकृच्छ्र तथा मूत्राघातका सर्व पेशाब लाणेवाले इलाज पथरीमेंभीका मल है, क्योंकी मूत्रल दवासे रेतीकूं पेशाबमे निकालणा अथवा वडी पथरीकूं तोड फोडकर अथवा धोय धोकर पेशाबके रस्ते बाहर निकालणा इस दवायोंका ये मूल काम है.

(१ सूंठ वरणा गोखरू पाषाणभेद ब्राह्मी इनोंके काथमें गुड तथा जवखार डालकर पीणा २ गोखरूका चूर्ण सहतमें मिलाकर सात दिन बकरीके दूधमें पीणा ३ सहजणेकी जडका क्राथ जरा गरम २ पीणा ४ अद्रक जवखार हरडे तथा दारूहलदीका चूर्ण दहीके मट्ठेमें पीणा ५ वरणेके छालकी राख ३२ तोला जवखार १६ तोला और गुड ८ तोला मिलाकर एक तोला खिलाकर ऊपरसे गरम पाणी पिलाणा ६ वरणेके छालके उकालेमें कुलथी सींधानिमक वायविडंग मिश्री जवखार कोलेके बीज गोखरू पद्मकाष्ट वगेरे जो मिले उनोंकी चटणी पीस उसमें घी पकाणा इस घीके खाणेसे पथरी मिटती है, ७ वीर्यकी पथरी बंध जाती है, उसकूं शुक्राश्मरी कहते हैं, इसके इलाजभी ऊपरमुजबही करणा ८ दरदकूं कम करणा ये प्रथम इलाज है, गरम जलमें बैठणा और २५ ग्रेण क्लोरल देणा दरद फेरभी रहे तो ८ घंटे बाद फेरभी देणा ९ ड्राइक पिंग (नं० ५६८ कमरपर धरणा दस्त कब्ज होय तो जुलाब देणा, जवका पाणी, अलशीका पाणी, अथवा हलदीकी चा, खूब पिलाणा, १० बाइकारबोनेट ओफ पोटाश, तथा पाणी, ११ अथवा इसी दवाके संग सोराखार और साईट्रिक् एसिड डालकर सेर पाणीमें मिलाकर दिनमें पिला देणा.

(विशेष सूचना) पीछे लिखे दोनों रोगोंमुजब पथ्य पालणा बाहरकी हवा तथा हलका खुराक इस रोगकूं मिटाणेमें मदतकार है खाणे पीणेके पदार्थोंमें पथर कंकर रेती नहीं आसके इस बातका खयाल रखवाणा.

प्रमेह–सुजाक–फिरंग–
गोनोरीया.

(मूत्राशय) याने गुरदा और वस्तिके रोग कलेजेके अवयवोंके विकारके संग संबंध रखता है, तब मूत्र मार्गके रोग बहोत करके बाहरकी आचरणाके संग संबंध रखता है, उसमें सुजाक और गरमी (टाकी) ये दोय मुख्य रोगमें लिंग योनिका समावेश है.

(कारण) दुष्ट रोगवाळी योनि रोगवाळी और रजस्वला इनोंसे भोग करणेसे सुजाक होता है.

(लक्षण) पेशाबके रस्तेसे पीप निकलणा ये प्रमेहका प्रत्यक्ष लक्षण. है, लेकिन् किसी २ वखत हथ रसमें गरम गुड हींग मिरच वगेरे खानपानसे ओर वचोके कृमिरोगसे पेशाबके रस्ते पीप गिरता है, लेकिन् एसे रोगकूं नये वेद्य (डाक्टर लोक) प्रमेह नहीं कहते, क्योंके सुजाकका पीप तो चेपी होता है, वो तो फक्त दुष्ट रोगीली स्त्रीके संघर्षसेही होता है, परमा सरू होणेके पहले कितनेक चिन्ह पहली दिखाइ देते हैं, पीछे दुसरे दिन अथवा पांच चार दिन पीछे निशानिया मालम देती है, ओर सुजाककी ४ चार जाति मुकरर करी जावे तो १ पहली जातिमें पेशाबका पदार्थ सुपेद दूध या छाछ जैसा निकलता है, २ दुसरी हालतमें पीप जादा वहोतही जाता है, उसका रंग पीला पणा, लिये, हरास लिये किसी २ वखत उसके संग खून जाता है. मूत्र नलीमें दरद होता है, उसमें सूजन आजाती है, ३ तिसरी हालतमें सोजा ओर जलण कम पडता है, पीप कम आता है, दरद भी कम लेकिन् तीसरी हालतमे सूजाक जब मिटता नहीं तो पेशाब करते थोडीसी जलण ओर सलसलाट होता है, ४ चोथी हालतमें पीप पाणी जेसा और बूंद २ आता है, इस हालतकूं अंग्रेजीमे ग्लीट कहते हैं, प्रमेह होता है, तब इंद्रीके किसीभी ठिकाणे सोजा होता है, ये सोजा इंद्रीके अगले भाग तरफ होय तो पीप थोडा आता है, और ज्यों ज्यों अंदरके तरफ सोजन होय त्यों त्यों पीप जादा आता है, पहली अग्रभागपर खुजाल आती है, पेशाब नलीका मूं सूजकर लाल होजाता है, ओर चोडा कुछ जादा होजाता है, उसकूं दबाणेसे अंदरसे पीप निकलता है, पेशाबकी हाजत घेर २ होती है, और उसकी धार पतली होतीहै, जलण वहोत होती है, चणख मारती है, दरद जादा होय तो बुखारभी आजाता है, पेशाब नलीभरी भई करडी डोरीजेसी होजाती है, ओर जब जोरमें आती है, तब वांकी तिरछी करते उसमें जादा दरद होता है, एकाध अठवाडिये पीछे प्रमेह शांत पडता है, तब जलण कम पडती है, रसी सुपेद रंगकी आती है, अथवा वंध होती है, तो किसीके पोतेमें दरद किसीके वद होजाती है, और पीछे प्रमेह पुराणा गिणे जाता है, पुराणा भये वाद घेर २ जोर करता है, अगर जो रोगी मनोमती होकर वे परवा रहे तो उससे मूत्रकृच्छ्र तथा मस्सेका रोग ओर इंद्री तथा वदनपर छोटी २ फुनसियें होती है, जिसकूं प्रमेह पीडिका कहते हैं,-(इलाज) सोजन तथा दरद होय तो गरम पाणीका सेक करणा अथवा कमरतक गरम जलमें विठलाणा जुलाबकी दवा देणी पेशाबमें दाह होय तो पेशाबकी खटासकूं तोडे एसा खार तथा पोटाश सोडा वगेरे पीणा अलशीकी चा पीणी जवकूं उकाल उसका पाणी पीणा दूध पाणी मिलाकर पीणा सोडावोटर गोखरू ईसवगुल तुकमरीया वहुफली बेदाणा ये पेशाब लाणेवाली दवायोंका लुआब पीणा पेशाब खुलासा आवे एसा इलाज करणा (२) फलत्रिकादि क्वाथ (नं० २१६ हलदीका चूर्ण डालकर पीणा (३) पाषाण-

(१२ नीलमेह)–नीलके जैसा पेशाब उतरे ।
(१३ कालमेह)–सुरमे जैसा काला पेशाब उतरता है ।
(१४ हारिद्रमेह)–हलदी जैसा जलता भया और तेज पेशाब उतरे ।
(१५ मांजिष्टमेह)–कचे पदार्थका गंधवाला मजीठ जैसा लाल पेशाब
(१६ रक्तमेह)–कचे पदार्थ जैसा गंधवाला गरम खारा खून जैसा पेशा
(१७ वसामेह)–चरबी जैसा रंग चरबी मिला पेशाब उतरे ।
(१८ मज्जामेह)–मज्जा मिला वेसाही रंग पेशाब उतरे ।
(१९ हस्तिमेह)–हाथीके मद जैसा विना वेगका पेशाब उतरे ।
(२० क्षौद्रमेह)–तुरा मीठा रूखा पेशाब उतरे सो (मधुमेह) ।

इण वीसोंमेंसें पहिले लिखे १० तरेके प्रमेह कफसे पैदा भये होते हैं उसके वा छव पित्तसे पैदा भये आ खिरके ४ वादीका है, (कफ प्रमेह साध्य) पित्तजन्य क साध्य (मुस्किलसे) मिटणेवाला वादीका असाध्य है ।

(इलाज)–सामान्य इलाज इहां लिखते हैं–(१ कफ प्रमेहमें)–हरडे कायफल मोथ लोद इनोंका क्राथ सहत डालकर २ हलदी दारूहलदी तगर वायविडंग सहत डालकर ३ देवदारू कूठ अगर चंदन सहत डालकर ४ दारू हलदी इरणी हरडे बहेडा आंवला वच सहत डालकर ५ वच खसवाला नेत्रवाला हरडे गिलोय क्राथ सहत डाल कर (६ पित्त प्रमेहका इलाज)–वाला लोद आसोंदरो तथा चंदनका क्राथ सहत डालकर ७ वाला मोथ हरडे आंवले सहत डालकर ८ पटोल नींब गिलोय आंवले सहत डालकर ९ लोद, आंबेकी छाल, दारूहलदी, धावडीके फूल, क्राथ सहत डालकर १० पीपल वडे दरख्तकी छाल काली पाट चांवल नेतरवालेका क्राथ सहत डालकर ११ सरेस धाणा आसोंदरा क्राथ सहत डाल (सर्व प्रमेहोंपर)–आंवले तथा गिलोय अ-थवा उकालीमें सहत डालकर और हलदीका चूर्ण डालकर पिलाणा १२ त्रिफलाके क्राथमें सहत डालकर शिलाजीत वो नहीं होय तो सोरा डालकर पीणा १३ फक्त गि-लोयका रस सहत डालकर पीणा १४ आंवलेका रस हलदीका चूर्ण सहत डालकर १५ रातकूं भिगाये भये गेहूं फजरमें पीस इसमें थोडी मिश्री डालकर पीणा १६ केसू फूलो-के क्राथमें मिश्री डालकर पीणा १७ वायविडंग हलदी मोलेठी सूंठ गोखरूका क्राथ सहत डाल १८ शुद्ध गंधक गुड मिलाकर खिलाणा उसपर दूध पीणा १९ नींबोली चावलोंके धोवणमें पीस घी डालकर पीणा २० निर्मलीके बीज छाछमें पीस सहत डाल-

॥–(पथ्य) पद्दली टंघन वमन जुलाब डांगर जव साठी चावल मोठ गेहूं ...र्गा मूंग तूर चणा इन सबोंका ओसामण पुराणा सहत परवल करूडी टमण ... जामुन खजूर तरबूज कट्या तथा तुरा पदार्थ वगेरे पथ्य है–(...

पेशावकूं रोकणा बीडी पीणी पसीना निकालणा दिनकी नींद नया अन्न दही वरसातका पाणी गिष्टान्न मैथुन नयासराप तेल दूध घी गुड उष्ण पुष्ट पदार्थ सडे खारा खट्टा ये सब पदार्थ कुपथ्य है ।

गरमी टाकी उपदंश.

(सेन्कर-सीफीलीस.)

टाकी येभी प्रमेहकी एक वडी वहिन है और पापकृत्यकी वलाय और बुरे कर्मकी प्रत्यक्ष सजा है, ये वडा दुखदाई नाश करणेवाला दुनियामें इज्जत खोणेवाला महादुष्ट रोग है, इस रोगके मूत्राशयसे कुछ तालूक नहीं है, तोभी मूत्र मार्गके ऊपर संबंध रखणेवाला होणेसे इस किरणमें ये रोग दाखल किया है, निश्चे करके देखा जाय तो जैसे ये रोग चमडीका है तेसें ये रोग शरीरके सब संधोंपर उसका असर पहोंचता है, इस वास्ते शरीरके सामान्य रोगोंके साथ जादा संबंध रखता है, ये रोग चेपी है, इसका जहर एसा खराब है, सो एक छोटीसी टाकीसे फेलाव करके सब वदनमें फेलाव करता है, एक वेर खूनमें प्रवेश करे पीछे जड जाणी वहोतही मुस्कल है ।

(कारण)–दुष्ट औरत मर्दोंके संबंधसे आपसमें लगा भया चेप ये गरमीके रोगका मुख्य कारण है, मरदकी औरतकूं औरतकी मरदकूं गरमी लगती है (शिक्षाचारकल्पशास्त्र जैन) स्त्री पुरुषोंकी पवित्रता और सदाचारमें वहोतसी तारीफ कर उसका वहोत अछा फल दोनों भव आश्री लिखा है, और कुशील सेवणेपर वडा भारी दोष और अपवाद लिखा है, सो सव सच्च है, इसीवास्ते अनादि व्यवहारभी एसाही चलता आया सो युगलिक लोकोंका स्त्री मर्दका जोडा उसीसें मैथुन सेवणा और देखतेभी हैं, एक औरत मर्द संतोषवृत्तिसें जो संसर्ग करते हैं, उनोंके ये दुष्ट रोग कभी नहीं होता फेर एसाभी है पती एक और स्त्री अनेक है लेकिन् वो जब स्त्रियां एक पती टालके अन्य पुरुषसे गमन नहीं करती उनोका पती उन औरतोंकेटाल अन्यसे गमन नहीं करता तोभी रोग नहीं होता राजा लोकोंकीतरे, इसीवास्ते जैन शास्त्रोंमें जगे २ ग्रहस्थीकूं स्वदारा संतोषी लिखा है, लेकिन् वहोत स्त्रियों रखणेवाले कृष्ण माहाराजकीतरे वेपरवा होते है, देसा अनुराग और प्रेमशृंगार सुखकूं कम साधणेवाला और कदाग्रहरूप फास होता है, एक स्त्रीका प्रेम और सुख मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम रघुवर जेसा होता है बुद्धिवान समझेंगे, अब जो स्वच्छंदी लोक धर्मशास्त्रका हुकम और नीति मर्यादामें नहीं रहते उनोकों तो पहली इहांपर एसी सजा मिलती है, सो इहांतकके, मावापोके गरमी होती है, तो उनके वचेभी गरमी रोगका असर लेके जन्म लेते हैं, वहोतसे तो मरही जाते हैं, अगर वचेकूं दूध पिलाणेवाली धायके ये रोग होता है तो वचेके गरमीका असर लग जाता है, कहांतक लिखे योनिलिंग गुदा इनोंमे मैल जमणेसेभी टाकी जखम हो जाताहै।

(लक्षण) पुरुष तथा औरतोंका योनिलिंग छिल जाणेसें और चेप लग जाणेसें जगे फुनसियें होती है, और वो फूटकर जखम गिरता है, ये फुनसिये संयोग भये जलदी अथवा केइदिनोंबाद दिखाई देती है, जखमका जहर वदनमें फैलता हैं, उपदंशका रूप जाहिर होता है, तब लोक गरमी फूट निकली एसा कहते हैं, अनेक विकार होता है, विस्फोटक वद जखम चीरे २ गांठे संधिवाय फिरंगवाय हिस्टीरिआ उन्माद वगेरे) इस टाकीकी वोतजात है, सो लिखते हैं।

(१ नरम चांदी)–छिल जाणेसें तथा चेप लगणेसे होती है, ये जखम जादा इंद्रीके पिछले तरफ अथवा ऊपरके तरफ अथवा धुंगटेकी चमडीमें पडती है, टाक दालके दाणे जेसी गोल होती है, और दावकर देखणेसे उसकी कोर नरम मालम ह है, एक टाकीके चेपसे दुसरी टाकी पडती है, किसी वखत नलीके अंदर जखम पडता है, जिसका गुंघटा सुपारीपर चढा रहता है, और जखम पडके सोजन आती है तो गूंघटा ऊपर नहीं चढ सकता अर्थात् नीचे नहीं उतरता तब अंदर रोज साफ नहीं होणेसे जखम वढते जाता है, वदभी हो जाती है, (२ करडी चांदी) ये जखम खराब चेप लगे पीछे लगवग तीन अठवाडे पीछे सरू होता है, पहली फुनसी अथवा चमडीपर छोटा चीरा पडता है, वो वढकर गोल जखम होता है, उसमेंसे पतला पीप झरता है, पीछे थोडी मुदतसे टाकीके नीचे सख्त कंकर जमता है, और दो अंगलीसे दबाकर देखणेसें नरम हड्डी जेसी करडी मालम देती है, टांकीकी कोर उपसी भई सख्त और जाडी हो जाती है, जिससे चांदी दिखणेमें छोटे प्याले जैसी होती है, जांघकी जडमें वद होती है, वो वद दवाणेसे दुखती नहीं और आपसे पकतीभी नहीं इस जातकी चांदीमें वहोत करके एकही होती है, और उसका पीप किसीसाजे अदमीके चमडीमें दाखिल होय तो उसके भी ये रोग हो जाता है, इसकूं चेपी जखम कहते हैं, (फैलती भई चांदी) जखमकी कोर एकसदृश गोल नहीं होती लेकिन् खरखोदरी खाई भई वांकी टेढी होती है, वदवोवाला पतला पीप आसपासकी चमडी पिराते जाय वद होय वो पककर फूटे दुख दरद बुखार नींद नहीं आवे नाताकती वढती जाय वद जल्दी पकती है, अंदर गहरा खड्डा पडता है।

(सडेवाला जखम)–पहली चमडी सूजकर लाल होती है, वद वो लाल पतला पाणी झरता है, पीछे चमडीका भाग मुरदार होकर अलग गिरता है, रोगीकी हालत विगडती है बुखार नाडी जलद वैचेनी अनिद्रा इस जखममें वद नहीं होती ये चार तरेकी स्थानिक जखमकूं गरमीकी पहली हालत नाम स्थापन करें और इस जखमका जहर वदनमें फैलने गरमीके जो विकार होते हैं वो दुसरी हालत अथवा शारीरक उपदंश नाम दे सकते हैं।

(स्थानिक चांदीका बाहरका इलाज इसमुजब करणा.)

(१ प्रक्षालन)-धोणेका इलाज १ पंच वल्कल (नं० १५७) का उकाला कर उस पाणीसे जखम वेर २ धोणा २ त्रिफलेका काथ कर उससे या जल भांगरेके रससे टाकीकूं धोणा ३ रस कपूरका पाणी करके धोणा, (लेप) मलम-१ गोपीचंदन नीलाथोथा जलमें पीस कपडेपर लगाकर पट्टी लगाणी २ रस कपूर, सुपेद कथा, मुरदारसींग शंखजीरा मांजूफल तथा सोपारीकी राख अथवा त्रिफलाकी राखकूं घीमे खरलकर वो मलम चांदीपर चुपडणा ३ वावची १ गंधा विरोजा १ गूगल १ राल १ नीलाथोथा १ हींगलू १ पारा १ घी ९ और तिलका तेल ९ इन सबोंकों खरलमें डाल कडवे नीमके जाडे लक्कडसे चारे घंटेतक घोटणा ये मलमका अच्छा इलाज है, ४ फिटकडी सोनागेरू नीलाथोथा हीराकसी, सींधा निमक, लोद रशोत हरताल मनसिल तथा इलायची इनोका चूर्ण सहतमें मिलाकर लेप करणा ५ हरडे वहेडा आंवलाकी राख करके सींधानिमक सहतमें मिलाकर लेप करणा ६ रशोत इकेली अथवा हरडेका चूर्ण सहतमे मिलाकर लेप करणा ७ कणेरकी जड पीस लेप करणा ८ दशांग लेप पाणीमें अथवा घीमें मिलाकर लेप करणा हींगलू नीलाथोथा गूगल एकेक तोला वावची मस्तगी गूंद दो दो तोला राल ४ तोला तेल ७ तोला मलम करणा, भुकणी १ नीलेथोथेका चूर्ण अथवा इसके संग कथा मिलाकर दावणा २ करथा तथा शंखजीरेकी भुकणी दबाणी ३ पंच वल्कलकी महीन भुकणी दवाणी ४ त्रिफलेकी राख नीलाथोथा मिलाकर दवाणा, (अंग्रेजी इलाज) टांकी मिटाणे अंग्रेजी क्रम वहोत अछा है, चांदीकूं जलाणेवास्ते पहली १ नाइट्रिक एसिडके दो वूंद सिरप चांदीपरही लगाणा अथवा एसिडमें काडीसे रूईलपेट भिगाकर लगाणा ये एसिड सादी चमडीपर नहीं लगणे पावे उसकी संभाल रखणी जलण होय तो उस पर पाणीकी धार देणी जादा एसिड धुप जाता है, एसिड नहीं होय तो कास्टिक लगाणा उससे टाकी जब जल जाय तो उसपर पोल्टिस मारकर मुरदार मांश निकाल डालणा तब चांदी साफ होती है, लाल जमीन जब दिखणे लगे तब टेनिक एसिड अथवा झींक्सल्फास कम्पाउन्ड टींकचर लवंडर तथा पाणी उनमान मुजब मिलाकर पोता धरणा २ दुसरा इलाज, दो तीन दिन नीलाथोथा दावणा पीछे चांदीकूं साफ कर सादे मलमकी चत्ती लगाणी, अथवा ब्लेकवोश नं० ५४३ मे लींट अथवा नरम कपडा भिगाकर चांदीपर पोता धरणा, ३ चांदीके ऊपरका पीप जैसा, सुपेद थर निकले विगर जखम भरी जता नहीं (४ आयडोफोर्म)-चांदीका सडा निकालकर चांदीकूं भर देती है, ऊपरकी चमडीके नीचे टांकी टक गई होयतो ब्लेकलोशनकी पिचकारी लगाणी नीला थोथा और झिककी पिचकारी मारणी।

शारीरक उपदंश गरमीकी दुसरी हालत।

टांकीकी ऊपर जुदी २ जात लिखी है, इलाजभी लिखे हैं, ये टांकी तथा जादा करके करडी टांकी शरीरमें एकतरेका जहर करदेती है, वो कितनेक दिनोंसे पुराणे रूपसे दिखाई देती है, जखमकी पहली हालत शरीरके एकही ठिकाणेसे संबंध रखती है, और दुसरी हालत सब शरीरसे संबंध रखती है, पहली पडी भई चांदी जादा तर मरीज जाती है, और रोगी जाणता है में आराम होगया लेकिन एसा नहीं जाणताके दुस्मन रोग गुप्तपणे अंदर घर करके रहाभया है, जब रोगी गाफल होकर खाणा पीणे आदि इंद्रियोंके स्वादमें लयलीन होता है, तो अकस्मात् सब शरीरमें ये दुस्मन दिखाई देता है, गलेमें सांधोंमे नाकमें और हड्डियोंमें किसीकूं एकतरेसे किसीकुं दुसरीतरेसें एसे तरे २ के चैन करता है, पहली टांकीके जोर मुजब ये पिछली गरमी कमती या जादा जोर करती है, शरीरके सुंआले भागोमें जादा करके गलेकी भारी तथा नाककूं जलदी पकडती है, गलेमें सोजा सूंमे गरमी तालवेमें छेद पडे नाककी हड्डी सडे और वो चपटा होकर बैठ जाय अथवा टेढा होजाय नाकके अंदर छोड़े तथा पीप गिरें सब वदनमें फोडे फुटकर निकले सांधे पकडे जाय मांसमें गांठे पडजाय ये गांठे फूटकर उसमें छेद तथा चीरे २ पडे भगंदरका भारी रोग होजाय किसी २ कूं वातरक्तका भी रोग होजाय.

(उपदंशकी दुसरी हालतका सामान्य इलाज लिखते हैं.)

(१ पारा शुद्ध ये गरमीका सर्वोपर इलाज है,) क्योंके अनंत गुण पारेमें शास्त्रकार कहते हैं, लेकिन ये पारा अनुभवी विद्वान विचक्षण और निर्लोभी वैद्यके हाथ बिगर दुसरे लेभग्गू मूर्खोंके हाथसे खाणेसे बहोतही नुकशान करता है, क्योके पारेकूं शोधनके आठ संस्कार दवामें वरतणे बाबत है, उसमें बहोत युक्ति हुसियारी और अनुभव और धन खरचणा पडता है, तब वो निडरपणे वरते जासकता है, रसकपूर हींगलु पारेकी मुख्य चीजों है, और चंद्रोदय रससिंदूर पर्पटी वगेरे अनेक उत्तम दवायें पारेसे बणती है, जो के बुढापेका और मृत्युका दावा नहीं लगणे देती अंग्रेजीमेंभी थरमोमिटर वगेरे अनेक यंत्र पारेकी कुदरतसे बणाये गये हैं. क्यालोमेल वगेरे पारेकी दवाभी देते हैं, लेकिन कितनेक डाकतर विद्वान् इससे डरते हैं. क्योंके ये दवा बिलकुल निडर नहीं है, इसवास्ते २ अंग्रेजीमें दुसरे नंबरकी दवा पोटाश आयोडाइड है. वो गरमीकूं शांत करती है, अंग्रेजीमें गरमीकेवास्ते ये एकही दवा अछी है,) ३ वृहन्मंजिष्ठादि क्वाथ (नं० २२१) उसमें गूगल अथवा गूगलकी बनावटी केई किस्मकी दवा गरमीके रोगमें सर्व बिगाडोमें सुधारा करती है, (४ चोपचीणी) गरमीकी पुराणी में फिरंग रोगमें प्रसिद्ध है, वो चूर्ण नं० २३५ तथा पाक नं० २७९ मे दिया

जाता है, (५ गिलोय) शोधक है, इसवास्ते गरमीमें बहोत फायदेमंद है, उकाली गिलोयकी करके एरंडी तेल मिलाकर देणेमें दोषका शोधन होजाता है, (६ गूगल) शोधक दवा है. इसकी सर्व बनावटें खूनकूं शुद्ध करती है, त्रिफला, गूगल, किशोर, सिंहनाद गूगल, मंजिष्ठादि क्वाथ संग या गिलोयके क्वाथ संग लेणेसे ७ (नं० ६६७ से ६७३ तकका अंग्रेजी इलाजभी अच्छा है.

(बदका इलाज) १ नींबके पत्ते थोडे पाणीमें पीस उसमें हलदी तथा घी डाल गरम करके पोटिस बांधणी २ दोषघ्न लेप (नं० ३११) बांधणा ३ गूलरका दूध कपडेके लगाकर पट्टी चपकाणा या सीसेकी पट्टी बांधणेसे अंदरकी अंदर बिखर जाती है, ४ पुराणे गुडका पाणीकर अंगारपर चढाणा उसमे भंगकूं पीस थुरका तेजाणा जब गाढा होजाय तो बांध देणा ५ लसण भिलावा सहजणेकी छाल जलमे पीस बट्टी धरणी ६ पारेका मलम उसकी पट्टी मारणी ७ जोका लगाणी ८ गरम पाणीका शेक करणा ९ टिंकचर आयोडाइन हमेस दो वखत चोपडणा.

(विशेष सूचना) गरमीके रोगमें आहार विहारकी सावधानीपर रोग मिटणेपर आधार है, गरमीका रोग घेर २ उथला मारता है, खाणेपीणेकी जरा गफलत होणेसे फोरन दिखाई देता है, ये रोगका एसा दुष्ट जहर है, सो जड जाणाही मुस्कल है, लेकिन् परेजमें चलणेवाला इस रोगकूं कितनेक दरजे जडसे निकाल सकता है, ऊपर लिखी सब दवायें तुरत फायदा नहीं करसकती बहोत दिनोंतक सेवन करणेसे धीरज रखणेसें परेजके साथ एकवर्ष भरके साधनसे आराम होता है, अंग्रेजी विद्वानोंके मतसे अनंतमूलका अर्क (परेलासालसा) उसबा दो महीना दूधके साथ गेहूं चावल चूरा सीरा खाणेसे आराम होता है, निमक मिरच खट्टे खारेसे बचणा यूनानीवाले उसबेका अर्क इसी परेजसे दिलाते हैं, एक वर्ष लेणेसे सब रोग मिटकर बदन लाल बूंद होजाता है, देशीमे चोपचीणी या गूगलका साधन करणेसे ये रोग निर्मूल होजाता है, वसंत शरदमें जुलाब लेणा ठंढ कालेमें सतावर सुपेद मूसली सालम वगेरेका पाक खाणा निरोगी एक स्त्रीसे संबंध रखणा) इस ग्रंथका पथ्यापथ्य आहारविहारके प्रकरणमें दिया भया हितकारक आहारविहार पथ्य है, बाकी सब कुपथ्य है.

किरण ६ ठी.

मगजके साथ संबंध रखणेके रोग.

एपोप्लेक्षी.

मगजके तंतुओके साथ संबंध रखणेवाले रोगोंका इस किरणमें समावेश किया भया है, लकवा पक्षाघात ऊरुस्तंभ धनुर्वात आक्षेपवायु ये प्रगट रोग है, और आर्यवैद्यक

ग्रंथोमें इन रोगोकूं वातव्याधिमें समावेश किया है, लेकिन् ये सब रोग मगजके साथ संबंध धराते हैं इसवास्ते इस किरणमें दाखिल किया है, वादीके संग नहीं रखा गया.

(कारण) मगजपर एकाएक खून चढ जाणेसे ये रोग होता है. खून चढणेके वहोत कारण है,) जादा सराप पीणा बहुत कफ वहोत आलस वहोत पुष्टिदार खुराक वहोत गरमी वहोत टंढ जादा गुस्सा रिदय तथा गुरदेका दरद.

(लक्षण) ये रोग तीन तरेसे होता है, १ एकाएक जाणे कोइ घाव लगा होय एसा बेमालम रोगी नीचे गिरजाता है, २ पहली शिरमे दर्द बेचेनी मूर्छा आकर रोगी गिरपडता है, ३ एकाएक शरीरका एक अंग अथवा एक पांव रह जाणेसे रोगी वेहोस होजाता है, दुसरे एसे लक्षण होते हैं, मूंमें झाग चहेरेपर तेज आंखोंकी कीकीचोडी भई भई एक चोडी अथवा एक संकडी मूं एक तरफसे टेढा करडा पडा भया दस्त पेशाव इच्छा-विना जाय हाथ पांव ठंढा चमडीपर पसीना और बडे श्वासके संग मृत्यु किसी वखत एकाएक होजाती है, लकवा भया होय तो जिधरका अंग झिलगया होय वो अंगखेंचीजे जीभके लोचे पडे सरु होता ये रोग चाहे किसी भीतरे होय लेकिन पीछै वेहोसीके संग धीमा या जोरका या फूंफाडा मारता भया श्वास ये उसकी खास निशाणी है, किसीकूं होसभी रहता है, लेकिन जुवान बंध होजाती है) दारू तथा नसेवाला जहरी चीजोंके खाणे पीणेसें जो वेहोसी आती है, तो उसवातकी पहली पहचाण कर लेणी चाहिये उनोंकी परिक्षा इसतरे करणी १ हकीगत ऊपरले लोकोंसे पूछणी २ मूंकी खसवो लेणी दारूपीया भया होगा तो मूंमें वदवो आयगी आंखे देखणी दारू वगेरे पदार्थोंसे आं-खोंकी कीकी बरावर होती है, और मगजमें खून चढा होयगा तो एक कीकी चोडी और एक संकडी होयगी ४ सराप पिया भया अदमी जागता है, या बड २ करता है, और मगजपर खून चढणेवाला जागता नहीं ५ सरापके नसेवाला अदमीके दोनों पस-वाडेमें खून वगेरेकी क्रिया होती नजर आती है, और एपोप्लेक्सीमें एकही तरफ) मिरगी (एपीलेप्सी) और लकवा (एपोप्लेक्सी) में इतना फरक है के मिरगीमें फूं फाडा मारता श्वास नहीं होता और लकवेमें एसा श्वास होता है, मिरगीवाला तडफडता है, आंखे नीचे झुक जाणेसे सुपेद डोला फक्त दिखता है, और रोगी जादा पुकार करके नीचे गिरता है, लकवेमें एसा हाल नहीं होता.

(इलाज) छातीकी जगे खुली करके हवा डालणी निलाडपर टंढा पाणी छांटणा अथवा पोता धरणा और पांव गरम पाणीमें डुवाणा पींडीयोपर राईकी पोल्टिस लगाणी एक घंटेतक रहणे देणा रोगीपर वहोत चांदणा अदमियोंकी भीड गुलसोर होणे १ इन इलाजोंसे रोगीका मूं खुले तब एक औंस सल्फेट ऑफ सोडा २ औंस

पाणीमें डालकर पिलाणा उससे दस्त होगा जबरन पिलाणा नहीं दुसरी घेर पहोत न्याय पीछे तुरत ये रोग होजाय तो उलटी होय उसकूं रोकणेकी एवजीमें मूंमें अंगलीया पांख (पीछ) डालकर जादा उलटी कराणी (नं० ५५० मे लिखे भये पिचकारी पहोत फायदा करती हैं, इसवास्ते वो जलदी देणा जुलाबकी दवा रोगीके गलेमें नहीं उतरसके तो जीभपर (क्रोटन ऑइल) जमाल गोटेका तेल दो तीन बूंद लगाणा और जलदी दस्त आवे एसा करणा गरदनपर विलाष्टर मारणा ये रोग बडा डरावणा है, इसवास्ते पूरे वैद्य या डाकदरकी राहसे इलाज होणा चाहिये कभी इसरोगसे रोगी बचभी जाता है, तोभी सावचेती आये बादभी उनका एक हाथ एक पाव अथवा एक पसवाडा झूठा सून्य भया होता है, जुबान बंध चेहरेकी नसें विकार पाये मालम देते हैं,

पक्षाघात–हेमिप्लीज्या–

मगजके साथ संबंध रखणेवाली ज्ञानतंतु तथा गतितंतुओंकी क्रियाओं बंध पडणेसे जो रोग होता है, उसकूं मुसलमीनीमें लकवा अंग्रेजीमें पेरेसीस अथवा पाल्सी कहते हैं, इस वादीमें एकतरफका अंग रहजाता है, याने शून्य होजाता है, उसकूं देशीमें अर्द्धांग या पक्षाघात कहते हैं, कमरके नीचेका भाग सुन्न पडता है, उसकुं उरुस्तंभ कहते हैं, और जीभ तथा मूंके टेढा होणेवाले लकवेकूं अर्दित कहते हैं,

(कारण) मगजपर खून चढणेसें एकाएक लकवा होता है, और मगजके दुसरे बिगाडसे धीमे २ होता है, गिरजाणेसे अथवा दुसरे कारणसे मगजकी खोपरीकुं नुकशान पहोंचता है, उससेभी ये रोग होजाता है, इसकेसिवाय मिरगी हिस्टीरीया वांईटे और आंतरे तथा मूत्रपिंडके रोगसे भी लकवा होजाता है, वृद्ध ऊमरमे मगजकूं बराबर पोषण नहीं मिलणेसे इस ऊमरमें ये रोग जादा होजाता है, इसवास्ते बुड्ढेके और बच्चेके ये रोगभये पीछे मिटणा मुस्कल है.

(इलाज) ये रोग तकदीरसेही अच्छा होता है, अंग्रेजी इलाजसे इस रोगमें देशी इलाज जादा फायदा करता हैं, जैसें बडा योगराज गूगल रास्नादि काथ माल कांकणी इसका तेल नारायण तेल प्रशारणी तेल मगजकुं पुष्टी देणेवाली दवायें देणा मसलणा फायदेचंद है,

(पथ्य) तेलका मालिस स्वेदपान पसीने निकालणा गरम जलका स्नान घी तेल मीठा खट्टा तथा खारा पदार्थ गऊं उडद कुलथी परवल सहजणेकी फली लसण अनार बेर दाख नारंगी गोखरू एरंडी तेल गोमूत्र खांड पान आंवले चिकणा घी तेलका गरमागरम भोजन उडद सबसे जादा पथ्य है, (कुपथ्य) चिंता ओजागरा मलमूत्रकूं रोकणा उलटी महनत उपवास बटाणा चवला वाल मूंग गुड तलाव तथा नदी काजल जामुन

सुपारी ठंडा जल क्षार खट्टा तीखा तथा कड्वा पदार्थ स्त्री संग घोडेपर चढणा जिग्ना दिनमें नीद खराप जलसें स्नान करणा इत्यादि कुपथ्य है.

ऊरुस्तंभ.

पाराप्लीउया.

जेसे पक्षापातमें वदनका, बांया दहना एक आधा अंग शून्य पडता है, तेसे ऊरुस्तंभमें, कम्मरके नीचेका आधा अंग रहजाता है, पांवकूं हिला नहीं सकता जादा करके उसमें फरसका ज्ञानभी नहीं रहता और दस्त तथा पेशाब बे खबर बिछोणेमें होजाताहै, पसवाडाभी दुसरा अदमी फिराता है.

(कारण) करोडरज्जूके नीचले भागमें रोग होणेसे याने करोड रज्जुमें सोजन होणेसे अथवा वो जादा नरम या जादा करडा पडजाणेसे अथवा वो किसी चीजके भारसे दब जाणेसें जांघ शिल जाणेका रोग होता है. पीठपर मार पडणेसे गिर पडणेसे किसी भीतरे पीठकी हड्डीकूं इजा पोहचणेसें भी रोग होजाता है–

(इलाज) पीठकी हड्डीपर जरब पहोचणेसें कोइ दरद भया होय तो उस जगे जोक लगाणा जो उसजगे सोजन होय तो ठंढी दवा लगाणी लेकिन दवा गरम लगेगी गिरजाणेसे अथवा चोट लगणेसे ऊरुस्तंभ भया होय तो रोगीकूं पूरा आराम देणा जो कलगाणी तथा विलाष्टर मारणा दरदकी जगेपर बेलाडोना तथा अफीमका लेप करणा अथवा दोषघ्न लेप बांधणा पेशाब बंध होय जिसकूं सळाइ डालकर बाहिर निकालणा जादा देर पेशाब बंध रहे तो मूत्राशय पेडूमें वरम आजाता हैं, (इरंडी तेल देणा २ (रास्नापंचक (नं० २१४) ३ महारास्नादि क्काथ नं० २१५) रास्ना गोखरू एरंडीकी जड देवदारू साटेकी जड गिलोय किरमालेकी गिर इनोकी उकाली सूंठका चूर्ण डालकर पीणा ४ योगराज (गूगल नं० २५४) मिलावेका चतुर्थांश क्काथ मिश्री घी सहत काली मिरच डालकर देणा (६ किनाइन २० ग्रेण लाईकर स्ट्रिक्निया १५ बूंद टींकचर आफ स्टील १० बूंद और पाणी ३ औंस मिलाकर दिनमें तीन वेर पिलाणा ७ दरियावके पाणीका स्नान उत्तम है.

अर्दित–फेशियलपाल्सी–

(कारण) ये दरदभी मगजके रोगोमेंसें जन्म लेता है, किसी २ वखत पक्षापात और अर्दित संग होता है, अर्दित वायुसे जोखम नहीं है, ठंढी हवा कान तथा दांतका दरद कानकी गांठ वादी तथा गरमीका रोगभी इस रोगका कारण है.

(लक्षण) एक तरफका चहरा रहजाय मूंके दरवज्जोंका एक तरफका खूणा नीचे झुकजाता है, गाल ढीला पडता है, बोलते २ थूक या लाल गिरजाती है, पाणी पीणेसे पाणी निकल जाता है, फूंक सीधी नहीं आती–(इलाज)कारण जांणकर उसका इलाज

करणा पहली एक जुलाब देणा एरंडी तेलका अच्छा है, पीछे योगराज गूगल अथवा पोटास आयोडाइड देणा उडदके वडे तेलमें तल वहोत फायदेमंद है, रास्नादि क्वाथ अच्छा है. शिलाजीत गूगलके संग देणा.

धनुरवात-टिटेनस-

ये वहोत जुल्मगार आक्षेप वायू है, जिसमें सब सरीर कबाणकी तरे बांका होता है, पहली जबाडे सख्त होते हैं, वो थोडे घंटोमें या थोडे दिनों पीछे बंध होता है, रोग जब जोर करता है, तब अदमी कबाणकी तरे होजाता है, ये होणा कभी पीठसे और किसी २ वखत पसवाडोसे भी कबाण करदेता है, सब वदनकूं बेसुमार जोर देता है, और ये दोरा थोडी २ मिन्टोसे होता है, दरम्यान नसें सखत रहती है, अगर जो रोगीकूं नींद नहीं आवे तो श्वास बंध होकर मरजाता है.

(लक्षण) सब ऊपर लिखे हैं, कबाणकी तरे वदन होता है, इसवास्ते इस रोगका नाम धनुष लिखा है, कारण इस रोगका अभीतक पूरा ध्यानमें नहीं आया है, लेकिन् किसी वखतकी शरदी या जखम वगेरे कारणसे ये रोग होता है, हडक वायु और धनुर्वायुके लक्षण आपसमें लग भग मिलतेसे हैं, लेकिन् जरा २ फरक है, सोनीचे लिखते हैं, जिससे अलग २ परख सकते हैं.

(हडक वायु) पाणीकूं देखतेही ये रोग जोर करता है, रोगी कुत्तेकी तरे पुकारता है, तथा थूकता है, आक्षेपका जोर कम पडे पीछे नसें ढीली होकर पूरा शांत होता है, हडक वायुमें कुत्तेके काटणेकी निशाणियां होती है.

(धनुर) धनुष वायुमें इस लक्षणोमेंका एकभी होता नहीं.

(इलाज) स्नायु शैथिल्य कृत दवायें (अफीम) अच्छा इलाज है, खुरासाणी अजवाण तथा क्लोरोफोर्म और क्लोरोडाइन अथवा इकेला क्लोरलभी अच्छा है, बरफकी कोथली भरके पीठके हड्डीपर धरणा जादा सख्त धनुरवातमें क्लोरोफार्मका ५ बूंद और टिंकचर ओपियमका २० बूंद एक औंस जलमें देणा आखर नं० ५३२ वाला मोर्फीयाका मिकश्चर देणा और चार २ घंटेसे देणा जारी रखणा.

शिरोरोग-हेड एक-

(कारण) तथा लक्षण) शिरमे दरद होणेका अनेक कारण होता है, और वो हरेक कारण समझे विगर पहचाणे विगर शिरके दरदका पूरा इलाज फायदेमंद होसकता नहीं शिरके दरदका संबंध इतनी जगेसे होता है, अन्नाशय (होजरी) यकृत् (लीवर) पक्वाशय (आंतरे) मज्जातंतु या भवांरे अथवा आधा सीसी मगज (ब्रेन) और संधिवायु.

(होजरी संबंधी शिरमे दर्द) वहोत करके कपालमें अथवा एक आंखपर या आं-

खके आसपास दरद होता है, उससे प्यास तपत और उवाकी होती है, ये दरद थोडी मिन्ट या थोडा कलाक रहता है, और बहोत करके भोजन किये बाद अथवा प्रभात समें चढता है, इस दरदमें अजीर्ण मिटणेका इलाज करणा चाहिये सो लोक भूलसे मेलेरियाका इलाज करते हैं, ये दरद हमेस बैठे रहणेवाले जुवान अदमियोंके बहोत होता है, खाणे पीणेके अति योगसे और खराब सराप नहीं हजम होय एसा खुराक खाणेसें ये दरद होता है.

(इलाज) भोजन किये बाद शिर चढता होय तो राई और गरम पाणी पीकर उलटी कराडालणी सालवोलेटाइल २० बूंद साइट्रेट आफमेगनिस्या और तेज चा काफी पीणा आराम और नींदभी पथ्य है.

(यकृत् संबंधी शिरका दर्द) कपालके आरपार खेंचै जैसा दरद मालम दे अं घभरावै एसा दरद होय एक तरफ दरद जादा एक तरफ कम और पेटकी कोडीप टकोरा मारणेसे एकदम शिरका दर्द जाता रहे.

(इलाज) सोडावोटर जादा पीणा ३ बूंद क्लोरोफोर्म और साइट्रेट आफ-मेगनिस्या मिलाकर पीणा जादा दिन जारी दरद रहे तो (नं० ४६१ तथा ४६२ की रेचक दवायें देणी.)

(आंतरेसे भया शिरका दर्द) पेटमें अजीर्ण वधणेसे अथवा कब्जीयतसे दरद होता है, बहोत करके इस कारणका दर्द सब शिरमें होता है, और कारण दूर हो-णेसे मिटता है.

(मज्जा तांतुओंसे भया शिरका दर्द) मनके विकारसे या गुस्सेसें नाताकत अद मियोंके ये दरद होता है, हिस्टीरियावाली औरतें इस रोगके आधीन होती है, ये रोगमेंभी जादा करके होजरी तथा कलेजेमें किसी किस्मका विकार होता है, लेकिन् रोगी इस अव्यवस्थाकूं नहीं जाणता इससे परेज नहीं रखता जो लोक सराप नसेकी चीजें गरम पदार्थ नहीं आचरे लेकिन् वो लोक जो कभी चा काफी जादा पीवे तो उनोके शिरका दर्द होता है, टेम मुजब और उनमान मुजब नहीं खाणेवालेके बाहरकी खुली हवा खाणी चहिये सो नहीं खावे बंध कमरेमे पडारहे तमाखूका बहोत वरताव करणा (ये भी नरवस हेड एकका कारण है) (इलाज) आराम तथा नींद–कपूरके पाणीमें सालवोलेटाइल पीणा ऊपर लिखी जो आदतें उसका सुधारा करणा चा काफी पीणेवालोंने दूध और पाणी पीणा ऐस आराम अथवा अति उद्यम नहीं करणा बैठे रहणे वालेने हमेस खुली हवामें थोडा फिरणा तमाखूके व्यसनका त्याग करणा अथवा कम करणा और मसालादार तेज खुराकका त्याग करणा सादा और पथ्य भोजन करणा.

(आधाशीशी) मसांरका दरद मेलेरियाकी जहरी हवासे शिरमें ठंढके बुखारकी

तरे टेमोटेम दरद सुरू होता है सब दिन अथवा थोडी देरसे अच्छा होता है, किसी २ वखत दरद जादा होता है, अजीर्णसेभी आधासीसीका रोग होता है, वेर २ गर्भ रहणेसे वहोत दिनों तक वचेकूं चुंघाणेसें वहोत ऋतु धर्ममें खून जाणेसे नाताकत औरतोंकूंभी ये रोग होजाता है, इस रोगमें औरभी कष्ट देणेवाले अहवाल होते हैं, रोगी फजरसे ही शिरका दर्द लेकर उठता है, खाये जाता नहीं शिर धडकता है, बोलणा चालणा अच्छा नहीं लगता चहरा फीका आंखकी कीकी सुकुडाती है शिर गरम होता है, ठंढा उपचार सें शांति होति है रोगीकूं दुसरी गडवड अच्छी नहीं लगती.

(इलाज) इस रोगका मुख्य कारण मेलेरिया याने जहरी हवा है, इसवास्ते क्विनाइन अच्छी है,तीन २ घंटेसे ५ ग्रेण देणा और दस्तकब्जी होय तो जरूरीपर जुलाव लेणा होजरी लीवर तथा आंतरोंका विकार होय तो दस्तकूं साफ कर पौष्टिक दवा देणी औरतोंके रोगमें मुख्य करके प्रदर रोग होता है, वो मिटाणा लिंटके टुकडेपर क्लोरोफार्म छांटकर दरदकी जगेपर धरणा उसपर घडियालका काच धरणा अथवा कनपट्टीपर छोटी सी राईकी पट्टी मारणी गरम सेकसेंभी फायदा होता है, लेकिन् जादा करके ठंढा इलाज वहोत फायदा करता है, वरफ धरणा दशांग लेपका शिरपर मालिस करणा लवंडर अथवा कोलनवोटरमें दोभाग पाणी मिलाकर उसमें कपडा भिगाकर शिरपर धरणा गुलावजल अथवा गुलावजलके संग चंदण घसकर अथवा सांभरका सींग घस कर लगाणा नवसादर चूना अमोनिया सुंघणा पांवोंकूं गरम जलमें रखणा शिर दवाणा घीके संग १ ग्रेण ओफर्या मिलाकर सुंघणा भमारे पर दो जोकलगाणी नकछींकणी सुंघणी सूरज उगणेसे पहली तुलछी तथा धतूरेके पत्तोंका रस सुंघणा ताजी जलेबी या ताजा खोवा खाणा नींवगिलेयका हिम पीणा अमृतवटी दूधके संग सुवे पीणी ए सब इलाजभी करणेमें आवे अगर जो दस्तकी कब्जी होयगी अथवा पाचन क्रियामें कुछ विगाड होगा तो दरद मिटणेका नहीं इसवास्ते दुसरे सब इलाजोंके संग दस्त साफ आणेकी दवा देते रहणा.

(मगज संबंधी शिरका दर्द) आगे लिखे शिरके दरदके प्रकारोंसे ये प्रकार विलकुल जुदा है, जादावडी ऊमरके आदमियोंके शिरमें खूनका जोस चढणेसे होता है, सख्त दुखणेमें शिरमें सटके चलते हैं, आंखें लाल होती है. चहरा तेजी भरा होता है, शिरके आरपार खिचता होय एसा मालम देता है, वेर २ श्वास तथा वुखारभी आजाता है–इलाज–जुलाव गरम खानपानसे ... उन मानगुजय खाणा सूरजकी धूपमे दूर रहणा थोटी कसरत ... ये सब जरूरका इलाज है, सख्त ... ५३९ का लोशन) कानके ... रोगका वहोत भेद क्रिया

है—वायु, पित्त, कफ, सन्निपात, खूनका, रशक्षयका, क्रमियोंका, सूर्यावर्त्त, (सूर्य चढ़णेके साथ शिर दूखेसो) अनंतवात, (त्रिदोषका शिरोरोग) (शंखक कनफटी भयंकर शिरोरोग) अर्धाव भेदक, (आधा शिर पकडेसो)

(शिरके दर्दका इलाज) कितनेक तो पीछै लिखे हैं अब औरभी लिखते हैं, सोभी फायदे बंद है, सोवेरका धोया घी शिरपर भरणेसे अथवा केशर मिश्री बकरीके दूधके साथ चंदन घस नास देणेसें पित्तका शिर मिटता है, २ सूंठ मिरच पींपर कांज और सहजणेकी छाल उसकूं बकरीके मूतमें पीस नाकसे सूंघणा अथवा नींबोलीका तेल सुंघणा उससे क्रमि पडणेसे भया शिरोरोग मिटता है, ३ भांगरेका रस और बकरीका दूध सम वजन मिलाकर धूपमें गरम कर नाकमें सुंघणेसें सूर्यावर्त्त रोग मिटता है, ४ आधाशीशीके रोगमें पहली घी पीणा बाफ पाणीकी अथवा नास लेकर पसीना ला पीछै जुलाब लेणा सुगंध धूप लेणा और घीका गरमा गरम पदार्थ खाणा वायविडंग और काला तिल सम वजन दूधमें पीस लेप करणा उसहीकी नास देणी ५ दारू हलदी हलदी मजीठ नीमकी छाल वाला और पदमाखका लेप करणा ठंढे पाणीसे ठंढे दूधसे सींचणेसे और वड वगेरे दूधवाला झाडके छाल वगेरेका लेप करणेसे कनपटीका शिरोरोग शांत पडता है, ६—४ वाल जेठी मध और १ वाल वछनाग इनोका महीन चूर्ण कर राईके दाणे जितना सुंघाणेसे सब शिरका दर्द मिटता है, ७ आकके पत्ते कपालपर बांधणा आकके फूलोका लेप, वालेका लेप, चंदनका लेप, लोंगका लेप, सूंठका लेप नवसादरका पोता दशांग लेप, जायफलका लेप, गुलाब जलका पोता अगरका लेप करणा नकछींकणी तमाखू कायफल आदेका रस अगस्तियाका रस इत्यादिकोंकी नास लेणी (८ नं० ६५०) ६५१) ६५२ तथा ६५३ का इलाज करणा (९ दांत तथा कानका रोगसे शिरका दर्द होय तो उसका इलाज करणा) १० धातूका गिरणा तथा प्रदरसे शिरमें दर्द होय तो वो रोग मिटाणेसे शिरका दर्द मिटेगा.

शूल—चभका—चसक.

न्युरेल्जिकपेन.

शूलका रोग मज्जातंतुओंके साथ संबंध रखता है, वोवदनमें हरकिसी जगे होजाती है, जादा करके ये रोग कपालमें शिरमें दांतमें और पसळियोंमें होता है, रोग पहोत है, पेटकी शूळ अथवा आंकसीसे इस शूलकूं अलग गिणना.

(कारण)—दांतके सडणेमेंसे इस रोगकी पैदाश होती है, खाणे पीणेकी गफलत और अपथ्यसे इस रोगकी पैदास होती है, औरतोके ऋतुधर्मका वे प्रमाण जाणेसेभी ये रोग होता है, मेलेरियाकी जहरी हवासेभी ये चसकेका रोग होता है.

(लक्षण) शूळ अथवा चमके चलते हैं,

(इलाज) कारणकूं पहचाण इलाज करणा, शिरके दर्दका कारण या तो जहरी हवा या बदहजमी अथवा दांतका दरद अथवा औरतोंके गर्भका विकार इत्यादिकही होता है, इसवास्ते कोणसा कारण है, सो निश्चय करणा, जो दांत सडा हो यतो निकलवा डालणा, अथवा अछा करणा, जो अजीर्णसे चसके चलते होय तो जुलाब लेकर खाणेपीणेसें पाचन क्रियाकूं सुधारणी, जो ओरतोंके ऋतुधर्मके रोगसे शूल होय तो स्त्रियोंके प्रकरणमें लिखा सो इलाज करणा, जो मेलेरियासे होय तो किनाइन और लोहकी दवाइ कर मिटाणा, गरम शेक करणा, राईका पलाष्टर मारणा (क्लोरोफार्ममें लींटका कपडा भिगाकर दरदकी जगेपर धरणा) (होमियोपथिकइलाज)-(चहरेके अलग २ जगेके शूलपर) एकोनाइट आर्सेनिकम बेलाडोना कोस्टीकम कोलोसीन्थ हायोसवामस लाईकोपोडियम नक्सवोमिका फोसफरस जांघ तथा पगके चसकेमे-एकोनाइट कोलोसिन्थ नक्सवोमिका पलशेटिला वगेरे वांसा तथा कमरके चमकेमे ब्रायोनिया कोस्टीकम लाइकोपोडियम नक्सवोमिका सल्फर छाती तथा पंशलीके चसकेमे आर्निका ब्रायोनिया पल्सेटिला आर्सोनिक वगेरे.

अपस्मार-मिरगी-फेफरा.

एपीलेप्सी.

कारण ये रोग औलादमें ऊतरता है, २ बहोत दारू नसेकी चीजें, ३ बहोत विषयाशक्तपणा उससे भया धातुका क्षय, ४ हथरश (मास्टर बेशन) से वीर्य पटकणेसे, ५ मगजकी व्याधि कृमिरोग गर्भाशयका रोग पेशाब पथरीका रोग बचोंके दांत फूटणेसें होता रोग धास्ती गुस्सा वगेरे कितनेक औरभी रोग इस रोगकूं मदतगार है.

(लक्षण) साधारण मृगीमें थोडी देर वे शुद्धी (बेहोसी) आकर रोगी जिस हालत में बैठा होय उसही हालतमें स्थिर हो जाता है, वो थोडीसी देरमें सावचेत होता है, किसी २ वखत बेहोसीके संग मूं तथा हाथ पांवोकी नसें थोडी खेंची जती है, सावचेतीमें आये बादभी रोगी जरा मुरझा कर पीछे सुस्थ होता है, और पहले जो हालबीते हें उसका उसकूं खयाल बिलकूल नहीं होता सख्त मिरगीमें रोगी जोरसे चीस मारकर बेहोस होकर जमीनपर गिरजाता है, हाथ पांव खिंचने हैं, तणीजणेके सबब हाथपांव तथा सब बदन जोरसे तडफडता है, हाथकी अंगलिया टेढी होजाय श्वास परह २ करता चले चहरा लाल होजाय बहोतसी वखत मूं टेढा होजाय मूंमेंसे झाग आवे आंखके डोले चढजाय आंख लाल होय दांत खीली जोरसे बैठ जाय बीचमें जीभ आणेसे कट जाय दस्त पेशाबभी किसी वखत अंदर होजाय किसीकूं थोडी देरमें किसीकूं कइ घंटोसे पडे रहे बाद हाथ पांवका दबाव नरम पडे तब रोगी भर नींदका तो

दवा अमृतवटीका सेवन करे तो कष्टसाध्यतक मिरगी मिट जाती है, (७ होमियोपथिक इलाज)–(तेज और नइ मिरगीमें)– इग्नेसिया हाइड्रोस्यानिक एसिड, पुराणी मिरगीमें बेलाडोना, कुप्रम केल्केरिया ओपियम)–(कृमिजन्य मिरगीमें)–सीन्युटा और सेन्टोनाइन देणा.

आंचकी–खेंचाताण–वांइंटे–

कनवल्शन्स.

(कारण)–आंचकी ये कोइ स्वतंत्र रोग नहीं है, मिरगी हिस्टरीया धनुर हडक वायु वगेरे रोगमें वदनकी नसोंमें खेंचाताण होजाता है, बच्चोंके बेर२ खेंचाताणका रोग होजाता है, उसका मुख्य कारण कृमिरोग है, (बच्चोंके खेंचाताणका वर्णन किरण ११ मीमें किया है सो देखो) गर्भणी स्त्रीओंके बच्चा जणणेके पहले और जादा करके लडका भये पीछे खेंचाताण होजाता है, जखमसे अथवा दुसरी तरे बहोत खून जाणेसे मगजकूं पूरा पोषण नहीं मिलनेसेभी खेंचाताण होता है, मगजमेंकी कोइ खूनकी नली बंध होनेसें मगजकूं धक्का लगनेसे खोपरी फूटणेसे मगजमें खून झरणेसे खून बिगडणेसे बुखारसे तथा जहर खाणेसे खेंचाताण होजाता है, नाताकती तथा बुखारमें कुपथ्य होणेसेभी वांइंटे खेंचाताणका रोग होता है, ये सब कारण तंतुओंमें बिगाड करता है उन तंतुओंका संबंध मगज तथा करोडरज्जूके साथ है.

(लक्षण)–सब शरीर या हाथपांव खिंचते हैं चहरा खराब होजाता है दांत जकड जाते हैं, यानें जुड जाते हैं जुबान बाहर निकल आती है, आंखोंकी कीकी बडी होती है, श्वास कबूतरकी तरे घुटता है बेहोस हो जाता है, खेचाताण बंध होनेसे रोगीकूं नींद आजाती है किसी २ वखत खेंचाताण होकर बंध होता है, और किसी २ वखत बेर २ होता है और बंध होता है.

(इलाज)–मिरगी रोगमें लिखे सब इलाज करना मूंपर ठंडा पाणी छांटना आमोनिया सुंघाणा जुलाब देणा दांतखिटी बंध गई होय तो धरनमें पिचकारी मारणी शिर गरम होय तो पाणीका पोता बाबरफधरणा पोंचेपर पींडीपर राईकी पट्टी मारणी अथवा कनपट्टीपर विलाइर मारणा.

(२)–पोटाश ब्रोमाइड हामोस्यामस अफीम क्लोरल वगेरे इस रोगमें फायदेबंद है, ३ कृमिघ्न दवायें पृष्ट ३१६) तथा मगजकूं पुष्टी देणेवाली दवायें पृष्ट ३१७) त्रिफलादि क्वाथ नं० २१० वायविडंग तथा पीपरका चूर्ण डालकर देणा ५ अफीम एलिया कपुर कस्तूरी वगेरे दवायें रोगीका बलाबल देखके देणा नस खेंचाताणका दर्द कम पडता है.

उन्माद-पागल-दिवाना.

इन्सेनिटी-मेनिया.

मनका चंचलपणा बुद्धि अक्कल या ज्ञानका थोडा या बहोत नाश होना उसकूं उन्माद कहते हैं जिसमें मनका भ्रम होता है, (प्रकार)-उन्माद रोगका मुख्य तीन प्रकार है (१ चित्त भ्रम)-इसतरेके उन्मादमें अदमीकी बिलकुल अकल जाती रहती है मनमे तरंगे उठती है बकता है तोफान करता है, जुदे२ सन्निपातमें रोगीका जैसा अहवाल होता है एसे हाल चित्त भ्रममें होते हैं, अथवा चित्तभ्रम है सो सन्निपात है, रोता है कोइ गाता है कोइ नाचता है कोइ मारणे दोडता है, नींद नही आती खाणेकी पीणेकी दस्त या पेशाबका खयाल नही रहता (२ उदासीपणा)-इस उन्मादमें अदमी बिलकुल पागल नहीं होता लेकिन् किसी कारणसे चित्त भ्रमित होता है, संसार परसे प्रीति उडजाती है, और वैराग आता है तब जोगी फकडसामी सरडेकी गप्पोसें मुक्ति पहुंचे चाहता है लेकिन् अकलमें भ्रम होनेसे इतना विचार नहीं रहता के मुक्ति क्या न: जीकही है अथवा इन बेवकूबोंकी अज्ञान कष्ट क्रियासे दोनों भवबिगाडणा है तब विचारसे उसकूं जीणा व्यर्थ मालम देता है मनमें एसा विचार किसी २ वखत किया करता है के मैंने वडे २ अघोर पाप किये हैं इसवास्ते वो अपघात करनेका उद्यम् करता है कोइ धर्म दिवाना होता है कोइ आपअपणेकों राजा समझता है, कोइ बहोत दारूबाज जैसा कोइ हलालखोर होकर भटकता है कोइ बेफिकरा भटकता है कोई फिकरमें गरकाव होता है, कोइ बोलताही नहीं. एसे अनेक लक्षण हैं.

(३ बुद्धिका नाश)-इस तरेके उन्मादमें बुद्धि नाताकत हो जाती है वो कभी निरांत कर बैठता नहीं विनाकारण बकता है गाता है बहोत चलता है हरकोइ काम नहीं करणेका करलेता यादकुछ नहीं रहता सुख दुःख हर्ष शोक प्रीति अप्रीतिका होस नहीं रहता बुढापेमेंभी बुद्धिका नाश होता है ये एसा उन्माद नहीं मिटता.

(कारण)-उन्माद रोग होणेके बहोतसे हैं २ पागलकी ओलाद पागल होय २ अपणे गोत्रमें अथवा संबंधियोसे विवाह करलेणा ३ बहोत सराप पीणेका व्यसन ४ अफीम तमाखू भंग गांजा वगेरेसे ५ बहोत भोग करणेसे अथवा हथ रससे ६ वडा नुकशान होणा प्यार अदमीका मरणा पैसाकी नुकशानी शोग फिकर डर बहोत एकाएक फायदा आसनाका नहीं मिलणा ७ मगजकूं बहोत महनत या मगजमें कोई किस्मका रोग इत्यादि अनेक कारण उन्मादके हैं.

(इलाज)-उन्मादके रोगसे अदमी एक पशूसेभी जादा खराब हालतमें जागिरता देखणेसे दया आती है दिवाना अदमी दुसरेका नुकशान करता है इसवास्ते अंग्रेज सरकार उनोंके रखणेवास्ते हन्दुस्थानमें वडी हास्पीटलों बनाइ है उस जगे पागलोंकों

रोककर रखते हैं सोतो अच्छा है लेकिन् जैसें इनोंका तोफान रोकते हैं, तैसें इनोंका इलाज करके अच्छाभी करणा चाहिये लेकिन् अपसोसकी वात है के उस जगे वो के दियोंसेभी जादा बुरी हालतमें जिंदगी गुजारतेंहैं उनोंके लायक इलाज करणेमें आता होय एसा मालम तो नहीं पडाके जिससे वो अच्छे होजाय वोविचारे)–मैड हाउसमें कंगालों-कीतरे जिंदगी पूरी करते हैं सरकार केहेगी उनोकूं अच्छे करणेकी कोइ दवा नहीं है सच है अंग्रेजीमें एसी दवा नहीं होगी लेकिन् आयुर्ज्ञानार्णवमें उनोंके वास्ते वहोत असरकारक इलाज मोजूद है, फक्त अंग्रेजी वैद्यकका आधार रखके सरकार आयुर्ज्ञाना-र्णव जैसा उत्तम इलाजोंके संग्रहकूं भूल नहीं जाणा चहिये वहोतसे डाकटर लोक देशी इलाजोंके तरफ अभाव नजर रखते हैं, लेकिन् एसे करणेसें वो लोक ज्ञानकी वढोतरी पर एक तेरेका पडदा डालणे जैसा करते हैं,), उन्मादरोगका साधारण इलाजोंमें नसोंको ढीली करे एसी दवा अच्छी है इस इलाजसे जोर कम पडता है और नींद आती है वो दवा अफीम भंग क्लोरल हाइड्रेट पोटाश ब्रोमाइड कोनायम क्लोरोफार्म डिजीटे-लिस और सल्फोनलमुख है) २ मिरगी तथा वांइटेके रोगमें लिखी दवायें उन्मादमें फायदेचंद है) ३ मगजकूं ताकत देणेवाली सब दवायें इस रोगकूं अच्छी है एसी दवा देशी वैद्यक शास्त्रमें अनेक और वहोत अच्छी२ है, लेकिन् प्रतीति और युक्तिसें देणेकी कसर है, (४ सोना)–उन्मादकेवास्ते अच्छा है सोनेकी भस्मी, वर्क, सोनेका उकाला पाणी दवा है मगजकूं फायदा पोहचाता है सुवर्णवसंतमालती जिसमें सोना होता है वो चित्त भ्रममें मगजकूं शोधन पोषण करती है) ५ ब्राम्ही मूराकोला शंखा-हुली, गूगल मोलेठी शतावर वच आंवले ये सब मगजके रोगमें अच्छा फायदा करती है उनोकी अलग २ बनावटें प्रसिद्ध है वज एक साधारण चीज है मगर मगजकूं अद्भुत ताकत देती है इय वातकूं वहोत नहीं जाणते हैं. (६ अमृतवटी)–बुद्धि और मगजकूं सुधारती है खिसेभये मगजकूं ठिकाणे लाती है, ७ आहार विहार और उत्तम दवा इनोंसें बिगडा भया चित्त ठिकाणे आता है जैसे गांजा सराप भंग बुद्धिकूं भ्रष्ट करती है तेसें उपर लिखी दवायें बुद्धिकूं सुधारती है इसमें आश्चर्यही क्या है, इस उन्माद रोगका संपूर्ण व्याख्यान करे तो संसारके वहोतसे लोक उन्मादी है, बुद्धिका विषमपणा चंचल-पणा अस्थिरपणा और बुद्धिका हीन मिथ्या या अति[illegible] होने भये सर्व नुकशान-कारक कार्योंमें बुद्धिका उन्माद प्रत्यक्ष मालम [illegible] [illegible]ोंमें शुद्धपणा और समानपणा थोडेही भाग्यवान [illegible] [illegible] या वहोत अंमे उन्मादी है और [illegible] बुद्धिकूं नाश करणे-[illegible] है जो लोक सादा-[illegible] गुनीकी दवाई तेरे

शांत सत्तोगुणवाला आहार और विहारका सेवन करे तो बुद्धिसम और ठिकाणे रहे तब वो जगतमें न्याई सब काम अच्छाही करे तब जगतमें सुख संपत्तकी वृद्धि होय और क्लेश व्यग्रता बुद्धिका चंचलपणा आपसेही बंध होजाय जिस आदमीकी बुद्धिका प्रकाश बहुत देखणेमें आवे तो समझणाके अतियोग भया वो बुद्धिभी आखर उन्मादपणमें जाती है बुद्धि अथवा मनकी समानता उसहीका नाम ज्ञान अथवा स्याणापणा वो मुक्तिका साधक और संसारका साधक जाणना चाहिये.

पानात्यय–मदात्यय–सरापके रोग.

इस सराप पीणेकी प्रथा अनादि और इंद्री सुखोंमे मग्न एसे विवेक शून्यपनसे लोक पीते चले आये युगलिये सब सराप पीते थे एसा जैनियोंके शास्त्रोंमें लिखा है. कल्पवृक्ष उने देताथा पाप पुन्यका स्वरूप वो कुछ नहीं जाणतेथे बाद ऋषभदेवजीने हित अहितका विचार कर सब युगलकोंकों मदिरा छुडाई इक्षुका रस पिलाया तबसे इक्ष्वाकु वंश जाहिर भयाबाद पचास लाखकोडि सागरोपम वर्ष बीतेबाद सराप पीनेका सिल[illegible] सिला इवाके बरतावमें ब्राम्हण ऋषियोंने फेर नई कला सरूकी उनोका नाम इस मुजब धव प्रसन्ना, चंद्रहास, माध्वी, सुरा, विष्ठा आदि वो इस वखत नाम प्रसिद्ध नहीं है फेर तो मजेमें पडके राजा लोकोंने अनेक तरेके दारू बणवाये लेकिन् दारूके अधिक व्यसनमें भ्रम और बुद्धिका नाश होता है. उसकूं मदात्यय कहते हैं, सरापके अनेक नाम इस वखत प्रसिद्ध नहीं है लेकिन् इस वखत अंग्रेजीके प्रसिद्ध नाम लिखे हैं. वाइन लीकर स्पिरिट ब्रांडी रम जीन पोर्ट व्हिस्की शेम्पेन बीयर शेरी और देशी [illegible] नारीयल रस जिसकूं संस्कृतमें सीधू मद्य लिखा है इन सब सरावोंमें एक तरेका जहरी पदार्थ होता है, जिसकूं अंग्रेजीमें आल्कोहोल कहते हैं जिस सरावमें ये पदार्थ ज्यादा होता वो ज्यादा नशा और नुकसान ज्यादा करता दारू पीनेसें पागल बनते हैं [illegible] बंद होता. (लक्षण)-बेचैनी नींदका नाश भूख मारा और [illegible] जिसमें कलेजा की धडकन उठे मांस पेशी निकल जावे और पूरे दो चार पीने बाद [illegible] [illegible]
[illegible]
[illegible]

महनत छातीका जडपणा खासी हिचकी श्वास अनिद्रा उलटी दस्त उवाकी भ्रम चकणा भयंकर दिखाव और खराब स्वप्न (२ परमद)–कफका क्षय अंगोमें भार मूंमें वे स्वाद दस्त पेशाबकी कब्जी मींट प्यास अरुचि शिरमें दर्द सांधोमें हड फूटणी (३ पाना-जीर्ण)–मद्यका अजीर्ण होय तब आफरा उलटी डकार दाह तथा पित्तके प्रकोपका सब लक्षण होय (४ पानविभ्रम)–रिदय तथा दुसरे अवयवोमें दरद कफ कंठमें धूआं मूर्छा उलटी शिरमें दर्द मूंमें कफ भूख नहीं लगे–(असाध्य लक्षण)–ऊपरका होठ छोटा होजाय बहोत ठंड बहोत दाह, जाडी तेल जैसी चकचकती जीभ, होठ और दांत काला आंखें पीली तथा लाल रंगकी होय हिचकी बुखार उलटी कांपणी पशवाडोंमें शूल खासी और भ्रम.

(इलाज)–किसी २ वखत जुलाब पहली दैणा चहिये चहरा लाल रंग होय जीभ मैली होय खराब, बदबोवाला, श्वास होय तो और बहोत खाया पीया भया होय उसकूं जुलाब जरूर दैणा जोये चिन्ह नहीं होय तो पोपणकारक और अच्छे पतले खानपानसे रोगीकूं रखणेकी जरूरी है इस मदिरासे भये रोगमें जैसा पथ्यसें फायदा होता है वेसा दवासे फायदा नहीं होता इसकूं वैर २ थोडा २ खुराक दैणा जो रोगी बहोत लिबरी-जगया होय नाडी बिलकुल नाताकत मालम दै तो उसकूं थोडा द्राक्षासव अथवा डाक-तर लोक दूधमें ब्रांडी देते हैं मदिरासे भये रोगमें मदिरा कुछ फायदा और ताकत देती है सही लेकिन् असली फायदा नहीं देती इसवास्ते ताकत लाणेकूं दूध बिदाम गूंदकीरई इत्यादिक अच्छी पुष्टीदार चीजें देणी. २ तृप्तिकारकरस जैसें खजूर फालसा अनार वगेरे मीठे पदार्थोंका रस मिश्री तथा सहतडालकर पिलाणा अनार तथा आंवलेके रशमें दूध मिलाकर पिलाणा मीठा डाल रांधे भये चावलोंमें दूध डाल खिलाणा मिश्री सहत वगेरे मीठे रश दूध मखण मलाई दूधपाक श्रीखंड शरबत तथा सब शीतल और तृप्ति कारणे-वाले इलाज करणा.

किरण ७ मी.

आंख–कान–नाक–दांतके रोग.

आंख कान तथा नाकके अवयव बहोत बारीक और अद्भुत नाम कर्मकी रचना-वाला होणेसे उसमें अनेक रोग होते हैं (आंखके रोग)–आंखके रक्षा करणेका प्रयत्न थोडा लिखते हैं (उजाला)–आंखपर सीधी लकीरपर आणेवाला ये उजाला आंखकूं नुकशान करता है, जादा प्रकाशके तरफ ताककर देखणेमें आंखोंकों ताण २ के वांचणेमें या लिखणा वगेरे काम करणेमें आंखे नाताकत होती हैं, सूर्यके धूपमें कभी बैठणा नहीं मूंके सामने चराक धरकर कभी वांचणा लिखणा नहीं, (चस्मा)–शोखसें चस्मा लगाणेका प्रचार वढ गया है इससे, नजर नाताकत होती है

शांत सतोगुणवाला आहार और विहारका सेवन करे तो बुद्धिसम और ठिकाणे रहे तब वो जगतमें न्याई सब काम अच्छांही करे तब जगतमें सुख संपत्तकी वृद्धि होय और क्लेश व्यग्रता बुद्धिका चंचलपणा आपसेही बंध होजाय जिस अदमीकी बुद्धिका प्रकाश बहुत देखणेमें आवे तो समझणाके अतियोग भया वो बुद्धिभी आखर उन्मादपणमें जाती है बुद्धि अथवा मनकी समानता उसहीका नाम ज्ञान अथवा स्याणापणा वो मुक्तिका साधक और संसारका साधक जाणना चाहिये.

पानात्यय-मदात्यय-सरापके रोग.

इस सराप पीणेकी प्रथा अनादि और इंद्री सुखोंमे मग्न एसे विवेक शून्यपणसे लोक पीते चले आये युगलिये सब सराप पीते थे एसा जैनियोंके शास्त्रोमें लिखा है. कल्पवृक्ष उने देताथा पाप पुन्यका स्वरूप वो कुछ नहीं जाणतेथे बाद ऋषभदेवजीने हिताहितका विचार कर सब युगलकोंकों मदिरा छुडाई इक्षुका रस पिलाया तबसे इक्ष्वाकु वंश जाहिर भयाबाद पचास लाखकोटि सागरोपम वर्ष बीतेबाद सराप पीणेका शिलशिला द्वाके बरनावेमें ब्राम्हण ऋषियोंने फेर नई कला सरूकी उनोका नाम इस युगर पग प्रसन्ना, चंद्रहास, माध्वी, सुरा, सिधु आदि वो इस वखत नाम प्रसिद्ध नहीं है फेर तो मजेमें पडके राजा लोकोंने अनेक तरेके दारू बणवाये लेकिन् दारूके अधिक व्यसनमें भ्रम और बुद्धिका नाश होता है. उसकूं मदात्यय कहते हैं, सरापके बहोत नाम इस वखत प्रसिद्ध नहीं है लेकिन् इस वखत अंग्रेजीके प्रसिद्ध नाम लिखे है. वाइन लीकर स्पिरिट ब्रांडी रम जीन पोर्ट व्हिस्की शेम्पेन बीयर शेरी और देशी माल नाडीका रम जिसकूं संस्कृतमें शीधू मद्य लिखा है इन सब सरापोंमें एक तरेका जहरी पदार्थ होता है, जिसकूं अंग्रेजीमें आल्कोहोल कहते हैं जिस सरापमें ये पदार्थ ज्यादा होता वो ज्यादा नशो और नुकसान ज्यादा करेगा दारू पीनेमें चारन लागती है [illegible] बंद होगी. (लक्षण)-वेपनी नींदका नाश भूख मारे और भूखोंकी [illegible] जिसमें कल्पना की इधरउधर उठे [illegible] बाहर निकल जावे और भूखे होय पीछे बाद पीछे [illegible] और बहोत [illegible] किसी वखत भूख रहता है किसी वखत बडबडाट करे किसी [illegible] होनेका होय तो नींद आकर [illegible] [illegible] नींदका नाश बडबडाना पैदा और [illegible]

महनत छातीका जडपणा खासी हिचकी श्वास अनिद्रा उलटी दस्त उवाकी भ्रम चकणा भयंकर दिखाव और खराब स्वप्ना (२ परमद)–कफका क्षय अंगोमें भार मूंमें वे स्वाद दस्त पेशावकी कब्जी मींट प्यास अरुचि शिरमें दर्द सांधोमें हड फूटणी (३ पानाजीर्ण)–मद्यका अजीर्ण होय तब आफरा उलटी डकार दाह तथा पित्तके प्रकोपका सब लक्षण होय (४ पानविभ्रम)–रिदय तथा दुसरे अवयवोमें दरद कफ कंठमें धूआं मूर्छा उलटी शिरमें दर्द मूंमें कफ भूख नहीं लगे–(असाध्य लक्षण)–ऊपरका होठ छोटा होजाय बहोत ठंढ बहोत दाह, जाडी तेल जैसी चकचकती जीभ, होठ और दांत काला आंखें पीली तथा लाल रंगकी होय हिचकी बुखार उलटी कांपणी पशवाडोमें शूल खासी और भ्रम.

(इलाज)–किसी २ वखत जुलाब पहली दैणा चहिये चहरा लाल रंग होय जीभ मैली होय खराब, बदबोवाला, श्वास होय तो और बहोत खाया पीया भया होय उसकूं जुलाब जरूर दैणा जोये चिन्ह नहीं होय तो पोषणकारक और अच्छे पतले खानपानसे रोगीकूं रखणेकी जरूरी है इस मदिरासे भये रोगमें जैसा पथ्यसें फायदा होता है वेसा दवासे फायदा नहीं होता इसकूं वैर २ थोडा २ खुराक दैणा जो रोगी बहोत लिथरीजगया होय नाडी बिलकुल नाताकत मालम दै तो उसकूं थोडा द्राक्षासव अथवा डाकतर लोक दूधमें ब्रांडी देते हैं मदिरासे भये रोगमें मदिरा कुछ फायदा और ताकत देती है सही लेकिन् असली फायदा नहीं देती इसवास्ते ताकत लाणेकूं दूध बिदाम गूंदकीरई इत्यादिक अच्छी पुष्टीदार चीजें देणी. २ तृप्तिकारकरस जैसें खजूर फालसा अनार वगेरे मीठे पदार्थोंका रस मिश्री तथा सहतडालकर पिलाणा अनार तथा आंवलेके रशमें दूध मिलाकर पिलाणा मीठा डाल रांधे भये चावलोंमें दूध डाल खिलाणा मिश्री सहत वगेरे मीठे रश दूध मखण मलाई दूधपाक श्रीखंड शरबत तथा सब शीतल और तृप्ति करणेवाले इलाज करणा.

किरण ७ मी.

आंख–कान–नाक–दांतके रोग.

आंख कान तथा नाकके अवयव बहोत बारीक और अद्भुत नाम कर्मकी रचनावाला होणेसे उसमें अनेक रोग होते हैं (आंखके रोग)–आंखके रक्षा करणेका प्रयत्न थोडा लिखते हैं (उजाला)–आंखपर सीधी लकीरपर आणेवाला ये उजाला आंखकूं नुकशान करता है, जादा प्रकाशके तरफ ताककर देखणेमें आंखोंकी ताण २ के वांचणेमें या लिखणा वगेरे काम करणेमें आंखे नाताकत होती है, सूर्यके धूपमें कभी बैठणा नहीं मूंके सामने चराक धरकर कभी वांचणा लिखणा नहीं, (चस्मा)–शोखसें चस्मा लगाणेका प्रचार बढ गया है इसमे, नजर नाताकत होती है

और आंखके रोग होते हैं, आंखका कोइ रोग या कमनजर होय तब चस्मा लगाना चाहिये तोभी आंखके डाकटरकी सला लेकर आंखकी शक्तिमुजब लगाना, (अंजन)-जैसें फ्रान्स देशमें शोभाके वास्ते आंखोंकी कीकीयें वडी करणेकूं बेलाडोना वापरणेका कुचाला पडा है तैसें इस देशमें शोभाके वास्ते सुरमा तथा काजल डालणेका नुकशानीकारक चास पडा गया है क्योंकेभी डालते हैं काजल सुरमेंसे आंख अच्छी तो दिखती है लेकिन् जादा फायदा होता नहीं दिखता जिसकूं सुलाय देणेकी जरूरी नहीं उसकुं सुलाय देणेसें शरीरकुं जितना नुकशान होता है इतना नुकशान साजी अच्छी आंखमें काजल सुरमा डालणेसें होता है वैद्यक शास्त्रके हुकम मुजब बनाये भये काजल सुरमे तथा अंजन आंखके दरदमें अच्छा फायदा करती है लेकिन् अच्छी आंखमे सिणगारके वास्ते अंजन करणा विलकुल अच्छा नहीं इस देशके अदम्योंकी चालीस वर्ष पीछे आंखे विलकुल नाताकत हो जाती है इसके सब एसेही कारण है इसवास्ते कुटुंबमें जो बडेरे होय उनोंकों चाहिये ऐसे खोटे रिवाजोंकों बंधकर देना नहीतो आखर अवस्यामें जरूर नुकशान होगा (मगजकी रक्षा)-आंखोंके सुधारेका बहोतसा आधार मगजपर है, मगजकूं हमेशा ठंढा रखणा जो मगजमें जराभी गरमी मालम दे तो उसकूं ठंढा करणा शिरपर गरम पाणी कभी डालणा नहीं स्नान करते तैसें फजर सांझ शिरपर ठंढा पाणी छांटणा डालणा (धातूकी रक्षा)-हथरस और बहोत विषय सेवणाये दोनों एब आंखोंकों बहोत नाताकत पटकणेवाले हैं लडकोंकी छोटी ऊमरमें आंखें नाताकत पडती है उसका असल मतलब ऊपर लिखी दो बाते हैं धातूका बचाव वीस वर्षकी ऊमरतक होणा चहिये बाद सोले वर्षकी कन्यासें ऋतुचर्यामुजब दूध और पुष्ट पदार्थका हमेसा साधन करता भया शक्ति मुजब संसार साधे (आंखके रोगोंका इलाज)-(आंख दुखणी)-आंखमें थोडा या बहोत सोजन आती है तो उसकूं आंख आई कहते हैं आंख बहोत जोरसे दुखे उसमेंसे पीप निकले और उसका जलदी इलाज नहीं करे तो उसमें फूले पडते हैं और डोले फूट जाते हैं (पोता)-साधारण आंख दुखे तो आंखोंपर पोते धरणेसे आराम होजाता है, १ गुलाबजलमें भिगाया भया कपडा २ दूध अथवा दूध और पाणी ३ स्युगरलेड ८ ग्रेण पाणी २ औंस मिलाकर पोता धरणा (बूंद)-नीचे लिखी दवायोंकी बूंदे सोजेकूं उतारती है ललाईकूं मिटाती है, ५ त्रिफलाके उकालीकी बूंदे ६ औरतके दूधकी बूंदे ७ झिंक सल्फस ४ ग्रेण पाणी १ औंस ८ नीलाथोथा २ ग्रेण पाणी १ औंस ९ टेनिक एसिड २० ग्रेण ग्लिसेराइन २ ड्राम पाणी ६ ड्राम १० फिटकडी ३ ग्रेण पाणी १ औंस ११ स्युगर ओफ लेड ३ ग्रेण पाणी १ औंस १२ टेनिक एसिड ३ ग्रेण पाणी १ औंस हमेश दोचार वखत बूंदे डालणी मिलाणेके वास्ते पाणीके बदले गुलाबजल अथवा वरसादका झेला भया साफ पाणीका असर बहोत अच्छा होता है,

दरदके जोरमुजब ऊपर लिखी दवाइयोंमें कमवेशी कर सकते हैं पाणीमें जादा दवा डालणेसे जादा असर करती है लेकिन् साधारण दुखणेमें सख्त दवा उलटी नुकशान करती है, शेक-१४ शेक जादा करके दिनकुं करणा दरद जादा होय तो रातकूंभी करणा ताकतदारकूं गुलाब जल वगेरे ठंढे पाणीका शेक करणा और नाताकतकूं पोस्तकेडोडे उकाले भये पाणीका शेक करणा अथवा रोगीसे सहा जाय एसा सेक करणा १५ आंख घहोत दुखती होय और पीप निकलता होय और पोपचे सूज गये होय तो पोशकेडो-डेका शेक करके पीछै सील्वर नाइट्रेटके बूंदे डालणी सिल्वर नाइट्रेट १ से ३ ग्रेण और पाणी १ औंस १६ (पिचकारी) बहोत पीपके पडणेसे आंखके पोपचे मिलकर चिप गये होय तो गरम पाणीका या फिटकडीके पाणीकी अथवा जस्तके पाणीकी पिचकारी लगाणी अथवा रसकपूर १ ग्रेण नवसादर ६ ग्रेण पाणी ६ औंस इससें आंखोकों कपडेसें धोणी १७ (मलम) आंखकी भांपणी चिप नहीं जाय वास्ते रातकूं भांपणीपके कोरपर घी अथवा सादा मलम अथवा सालिडका तेल वेसेलीन अथवा एरंडीका तेल लगाणा (खील)-(टपोरिया) भांफणेके अंदर साबूदाणे जैसा छोटा २ सुपेद दाणा होता है उसकूं खील कहते हैं भांफणेकूं उथल कर देखणेसें वहोतसी वखत खील जैसे लाल दाणे दिखते हैं उनोकूं मूलसे टपोरिया कहते हैं भापणेकी खरदरीसे एसे दाणे दिखते हैं खील अथवा टपोरिया हमेस सुपेद होता है ये बात यादमें रखणी-(लक्षण) खील मेंभी आंख आणेके कितने लक्षण होते हैं आंख लाल होकर सूज जाती है पाणी झरता है उजाला सहा नहीं जाता आंखमें कंकर जैसा चुभता है और खटका होता है खील पुराणी होकर पीछै वेर २ आंख दुखणी आती है खील डोलेके संग वेर २ घसणेसे डोला झांका पडता है नजर मंद पडती है भांपण अंदर झुक जाती है झांका वढजाता है और आंख चूंची होती है (इलाज) आंख दुखणेके सब इलाज खीलमेंभी फायदे-बंद है, खीलके सख्त चिन्होंमें (१ आट्रोपिन अच्छा है) वो १ से ४ ग्रेण और पाणी १ औंस इनोंकी बूंद थोडे दिन डालणी २-बेलाडोना १५ ग्रेण पाणी १ औंस ३ वाइट प्रेसीपीटेट ५ ग्रेण सादा मलम १ ड्राम इनोका मलम लगाणा ४ कास्टीकके बूंदे ५ नीलेथोथे कालीसा टुकडा खीलपर घसणा अच्छा इलाज है अथवा बूंदे डालणी ६ टेनिक एसिडकी भूकी खीलपर दबाणी पुराणी. खीलमें-७ धूंवेसे तथा उजालेमे बचणा आसमानी रंगका चस्मा पहरणा-८ कास्टिककी बूंदेडाल थोडे दिन बाद बंध करणा पीछै मोरथोथा लगाकर उसपर एरंडी तेल चोपडणा टपोरिये बडे और बहोत होय तो स्युगरलेड अथवा टेनिक एसिडकी महीन भुकणी ऊपरकी भांफणी उथलकर अंजन करणा इसकूं बहोत दिनोंतक आंज सकते हैं ९ कांसीके पात्रमें मथन याने रगडा भया घी बहोत फायदा अंजन करणेसे करता है.

और आंखके रोग होते हैं, आंखका कोइ रोग या कमनजर होय तब चस्मा लगाना चाहिये तोभी आंखके डाकटरकी सला लेकर आंखकी शक्तिमुजब लगाना, (अंजन)-जेसें फ्रान्स देशमें शोभाके वास्ते आंखोंकी कीकीयें वडी करणेकूं वेलाडोना वापरणेका कुचाला पडा है तैसें इस देशमें शोभाके वास्ते सुरमा तथा काजल डालणेका नुकशानीकारक चास पडा भया है बचोंकेभी डालते हैं काजल सुरमेंसे आंख अच्छी तो दिखती है लेकिन् जादा फायदा होता नहीं दिखता जिसकूं जुलाब देणेकी जरूरी नहीं उसकूं जुलाब देणेसें शरीरकुं जितना नुकशान होता है इतना नुकसान साजी अच्छी आंखमे काजल सुरमा डालणेसें होता है वैद्यक शास्त्रके हुकम मुजब बनाये भये काजल सुरमे तथा अंजन आंखके दरदमें अच्छा फायदा करती है लेकिन् अच्छी आंखमे सिणगारके वास्ते अंजन करणा विलकुल अच्छा नहीं इस देशके अदम्योंकी चालीस वर्ष पीछे आंखे विलकुल नाताकत हो जाती है इसके सब एसेही कारण है इसवास्ते कुटुंबमें जो वडे होय उनोंकों चाहिये ऐसे खोटे रिवाजोंकों बंधकर देना नहींतो आखर अवस्थामें जरूर नुकशान होगा (मगजकी रक्षा)-आंखोंके सुधारेका वहोतसा आधार मगजपर है, मगजकूं हमेशा ठंढा रखणा जो मगजमें जराभी गरमी मालम दे तो उसकूं ठंढा करणा शिरपर गरम पाणी कभी डालणा नहीं स्नान करते तैसें फजर सांझ शिरपर ठंढा पाणी छांटणा डालणा (धातूकी रक्षा)-हथरस और वहोत विषय सेवणाये दोनों एब आंखोंकों वहोत नाताकत पटकणेवाले हैं लडकोंकी छोटी ऊमरमें आंखें नाताकत पडती है उसका असल मतलब ऊपर लिखी दो बाते हैं धातूका बचाव वीस वीर्षकी ऊमरतक होणा चहिये बाद सोले वर्षकी कन्यासें ऋतुचर्यामुजब दूध और पुष्ट पदार्थका हमेसा साधन करता भया शक्ति मुजब संसार साधै (आंखके रोगोंका इलाज)-(आंख दुखणी)-आंखमें थोडा या वहोत सोजन आती है तो उसकूं आंख आई कहते हैं आंख वहोत जोरसे दुखे उसमेंसे पीप निकले और उसका जलदी इलाज नहीं करे तो उसमें फूले पडते हैं और डोले फूट जाते हैं (पोता)-साधारण आंख दुखे तो आंखोंपर पोते धरणेसे आराम होजाता है, १ गुलाबजलमें भिगाया भया कपडा २ दूध अथवा दूध और पाणी ३ श्युगरलेड ८ ग्रेण पाणी २ औंस मिलाकर पोता धरणा (बूंद)-नीचे लिखी दवायोंकी बूंदे सोजेकूं उतारती है ललाईकूं मिटाती है, ५ त्रिफलाके उकालीकी बूंदे ६ औरतके दूधकी बूंदे ७ झिंक सल्फस ४ ग्रेण पाणी १ औंस ८ नीलाथोथा २ ग्रेण पाणी १ औंस ९ टेनिक एसिड २० ग्रेण ग्लिसेराइन २ ड्राम पाणी ६ ड्राम १० फिटकडी ३ ग्रेण पाणी १ औंस ११ श्युगर ओफलेड ३ ग्रेण पाणी १ औंस १२ टेनिक २ ग्रेण पाणी १ औंस हमेश दोचार वखत बूंदे डालणी मिलाणेके वास्ते ,, गुलाबजल अथवा बरसादका झेला भया साफ पाणीका असर वहोत

तो निकालणेका इलाज करणा, एक जुलाब लेना, हलका खुराक लेना, ठंढी हवामें फिरना नहीं बुखार होय तो पसीना लानेकी दवा दैणी, दरद वहोत होय तो वेर२ सेक करना जो क लगवाणी कानके पिछाडी पलाष्टर मारना, रोगीकूं एकांतमे शांतपणे गुपचुप सुलाये रखणा नाताकतकूं ताकतकी दवा दैणी, (कानका मैल) वहोतसी वखत कानमें मैल चढ जाता है, तब कानमें वहोत दरद होता है, कानका रस्ताभर जाणेसे बराबर सुणी जता नहीं छमछमें वजे ऐसा कानमें सुणांई देता है, मूं फाडकर देखणेंसे कानमें कट२ एसा अवाज होता है, कानकूं उंचाकर देखणेंसे मैलका डूचा मालम देता है, किसी२के कानमें मैल जमतेही रहता है (इलाज) मैल निकालनेकूं रातकूं सूतीदफे कानमें मीठा तेल बदामका तेल ग्रीसराईन अथवा सालीडके तेलकी बूंदे नाखणी और फजरमें जरा गरम पाणीकी पिचकारी मारणी गरम पाणीमें साबूका फेण निकालकर उस पाणीकी पिचकारी ८।१० वखत मारणेसे मैल सब निकल जायगा कान कुचरणेसे वहोत नुकशान है, इसवास्ते कुचरकर मैल निकालणा नहीं कानमें कोइ चीज या जानवर जाणेसे दरद होय तो उसकूं निकालनेकूं सली या हथियार डाल कानकूं छेडणा नहीं ऊपर लिखे मुजब पिचकारी मारणी या तेलकी बूंदे डालणी जीव गया होय तो तेल या कडवी बिदामका तेल कानमें डालना अथवा लाडेनमके ४।५ बूंदे डालते हैं उससे अंदरका जीव मर जाता है पीछे पिचकारी मारेणेसे पाणीके संग धुपकर बाहिर निकलता है, ये डाकतरोंकी शिक्षा है.

(कानका पकणा) कानका अगला हिस्सा अथवा आखिरीका अंदरका पाक होता है उसमेंसे पीप निकलता है जाडा, किसी वखत कानके अंदरकी नरम हड्डी सडती है, तो पीपके संग खूनभी निकलता है, सरू होते कानमें सोजन होता है और पीप सरू भये बाद दरद कम पडता है—कारण—ये रोगभी कानके सोजेमें लिखे कारणोंसेही होता है, नाताकत और फोडे फुनसीवाले बच्चोंके ये रोग वेर२ होता है और तनदुरस्त होणेंसें मिटता है, कानकी नाडी पकती है उसकूं नाडीव्रण कहते हैं ये वेर २ भरता है और वेर २ रुकता है (इलाज) १ फुलालीन पोस्तके डोडाका अथवा नींबका पत्ता बांधकर शेक करना २ सरुआतमें पीप बंध करणेकूं सख्त दवा डालणी नहीं नरम कपडेकी बत्तीकर कानकूं साफ करना गरम पाणीकी पिचकारी देकर दिनमें दो तीन वखत कानकूं धोना कानकूं फेर सूका कर देणा कानमें चुलचुलाट या खुजाल होय तो सालिड तेल ग्लीसेरीन या तिलके तेलकी बूंदे डालणी इतने इलाजोंसे पीप बंध नहीं होय तो ३ लाल गुलाबके फूलके क्वाथके पाणीकी पिचकारी मारणी ४ फिटकडीके पाणीकी पिचकारी मारणी ५ त्रिफलाके उकालीकी पिचकारी मारणी ६ पंचवल्कलके उकालीकी पिचकारी बहोत फायदा करती है, ७ पिचकारी मारकर कानकूं सुका डालना पीछे जात्यादि तेल

कर ऊपर दूध पीणा १५ त्रिफला तज लोहभस्म मोलेठी महुवेका फूल इनोंका चूर्ण मात्रा ३ मासा (अनुपान घी तथा सहत)-(शिरकी मगजकी शक्ति वधाणेका इलाज) इस करके मगज पुष्ट होता है,१६ बिदामकी मीजी १ तोला रातकूं भिगा फजरमें छिलके दूर कर उसमें छोटी इलायची दाणे ३ मासे और मिश्री १ तोला गऊका ताजा घी २ तोला इन सबोंकूं कलाईके पात्रमें धर रातकूं छतपर रख फजर तथा सांझकूं चाटणा दो हप्ते तक ताजा २ खाणेसे मगजकी गरमी दूर होकर आंखोंकी गरमी दूर होती है, १७ बिदामकी मीजी तोला १० इलायची तोला ५ पीस्ता तोला ५ खसर तोला ५ दाख तोला ५ सबकूं पीस अथवा गऊके दूधमें उकाल उसका गोला करना उसमें गऊके दूधका खोवा १ सेर अच्छा बूरा १ सेर मिलाकर इसमेंसे फजर सांझतो ५ खाणा इससे मगज भरतर होकर आंखोंमें तेज आता है १८ गऊका मखण २ तोला मिश्री १ तोला इलायची दाणा १ मासा इस प्रमाणसे फजर सांझ १४ दिन चाटना आंखके सब रोगोमें अच्छा है, १९ गऊका ताजा २ तोला घी खोवा १ तोला मिश्री विदाम दोउं ॥ तोला शीतल मिरच सहत इलायची दाणा हरेक । तोला सब एकत्र कर सांझ और फजर खाणा ३ हप्ते खाणेसे हाथपांवकी जलण और आंखके विकार मिटते हैं २० गऊका ताजा मखण २ तोला मिश्री १ तोला इलायची दाणा ६ मासा नागकेशर ४ मासा इसप्रमाण नित्य प्रातसमें खाना ३ अठवाडिये खानेसें आंखोंकी गरमी ललाई वगैरे सब विकार मिटते हैं.

कानके रोग—

कानके वहोत रोग होते हैं उसके मुख्य ३ भाग किये जाय तो १ कानका सोजा २ कानका पकणा ३ बहरापणा इनोंका इलाज नीचेंमुजब करना.

(कानका सोजा) कानके वाहिरका भाग और वहोतसी वखत अंदरका भाग पडदा सूज जाता है तब दरद बुखार इत्यादि वरमके सब लक्षण होते हैं, शिरमें दरद कानमें चभके बुखार दस्तकब्ज नाडी जल्द ये उपद्रव होते हैं पकणेसे पीप होता है (कारण) ठंढी हवा जाणेसें गरम दवा डालणेसे कानकूं कुचरणेसें सख्त मैल कानमें जमणेसे अथवा कानपर चोट लगणेसे सोजन आती है विगडे भये खूनके बच्चोंके ये रोग बेर २ होता है एसा देखणेमें आता है, (इलाज) कानमें थोडाभी दरद होयके गरम पाणी अथवा पोस्तके डोडे उकाले भये गरम पाणीका शेक करणा कानके अंदर ठंढी हवा नहीं जाणे पावै इसवास्ते रुई आडी रखणी (इसीवास्ते जैनके मुनि रातकूं) यापोसहवंत गृहस्थ (कानोंमें रुई देते हैं, एसा जैन ग्रंथोंकी वर्तमान आज्ञा है,) चाहिये सबोंकों हमेश एसा किया करे एसा करणेसे दोनोंभव आश्री फायदा है कानका मैल आपही निकल जाता, ठंढी या गरम हवा रेती या दुष्ट जीव घुस नहीं सकते, कानमें मैल होय

है, ३ मोम तथा गूगलकूं इकठेकर उसका युक्तिपूर्वक नाकमें धूआं लेणेसें वडी अवाजवाली छींके तथा विगडा भया कफ निकलता बंध होता है, ४ मिरच दही गुड इन तीनोंकों मिलाकर खाणेसे नाकके तमाम रोगमें फायदा होता है, इसवास्ते शरदी या पीनस रोगमें देणा (५ नस्य)–तुलशीके पत्ते नकछींकणी वगेरे छींक लाणेवाली पदार्थोंकी नाश लेणेसे पीनस तथा शरदीका कफ झरके निकल जाता है (६ नकसीर छूटणी)–(एपीस्टेकसीस) ठंढा जल शिरपर तथा नाकपर वहोत डालणा अथवा कपडा भिगाकर शिरपर धरणा पीली मुलतानी मट्टी ठंढे जलमे मिला तालवेपर धरना ठंढे पाणीकी पिचकारी मारणी नाकमें फटकडी या मांजू फलकी महीन बुकणी नाकमें दाबणी कांदेका रस या हरडे वडी जलमें घसकर या अनारके फूलका रश या दोबका रशकी नास देणी या इस पूगलकूं जरा जलमें मकरोय शिरपर लगाणा जल थोडा २ छांटणा जसतके फूलके पाणीमें रू भिगाकर उस रुईसे नाक बंध करणा टिंकचर ओफ स्टीलमें रू भिगाकर नाकमें दाबणा जो कोइ दवा नहीं होय तो रुईकूं ठंढे पाणीमें भिगाकर नाकमें दाबणा नीलेथोथेके पाणी की पिचकारीभी खूनकूं बंध करती है, (७ पीनस)–(ओझीना) सलेपममेंसे वेर२ ये रोग होता है, इस सिवाय नाकमें कोइ पदार्थ जाणेसें सोजा होकर पीप होता है, नाकमें मस्सा होकर पीप निकलता है, तैसे अंदर हड्डी सडणेसें पीप निकलता है, गरमी सुजाकके रोगसेंभी पीनस होता है, और नाक सडके गिर जाता है मसेकूं कटा डालणा पिचकारी लगाकर नाक हमेश धोडालणा एक औंस पाणीमें एक दो ग्रेण फिटकडी अथवा जसतके फूल अथवा क्लोराईड ओफ झिंक डालणा जात्पादि तेलकी बूंदे डालणी, १ ड्राम विस्मथ, और १ औंस मिश्री मिलाकर सुंघाणा, कारबोलिक एसिड १ भाग ताजा घी ८ भाग मिलाकर सुंघणा इसके शिवाय तनदुरस्ती सुधारणेवाली दवाइयां जैसेके मंजिष्ठादि क्वाथ किशोर गूगल योगराज गूगल लोहके बनावटकी दुसरी दवाइयां सारसापरेला पोटाश आयोडाइड वगेरे दवाओंकूं देणा (नाकमें जीव)–जिसके नाकमें जीव पड जाता है, उसका नाक चपटा फीडा होजाता है उसमें नींबोलीका तेल नाकमें डालणा पांच रुपेभर पाणी गरममें टरपेन्टाइन २ ड्राम मिलाकर पिचकारी लगाणी सोल्युसन ओफस्टील ४ ड्राम पाणी ३ औंस टरपेन्टाइन १ ड्राम मिलाकर पिचकारी लगाणी टरपेन्टाइन तथा कपूर मिलाकर उसमें रु भिगाकर नाकमें सुंघणा और रखणा ९ नाकका मस्सा (पोलीपस) नासार्श)टेनिक एसिडकी भूकी सुंघणी धूंएकी धूंमस (भेश) पीपर देवदारू दूधकरंज सींधानिमक और आंधे झाडेके बीज इसमें पकाया भया तेल डालणा मस्सा वडा होय तो चिमटेसे पकडेकर खेंचकर निकालणा अथवा कतरणीसे काट डालणा.

दांतके रोग.

दांतकी जडमें या मसूडोमें या दांतके ऊपरके भागमें सोजा या सडणेमें दांतका

(नं० २९९) वाला डालणा अथवा ७ नींबोलीका तेल डालणा ८ कोईभी तरेका तेल नहीं मिले तो तिलीका तेलभी अच्छा है ९ आंब जामुन महुआ वड इनोंके नरम पत्ते पीस उसमें चोगुणा तेल तेलसे चोगुणा पाणी डाल उकाला भया तेलकी बूंदे डालणी.

(बहरापणा)–कानमें सोजन होणेसें कान पकणेसें या मैल भरणेसें बहिरापणा आता है कान कुचरणा पाणीका जाणा ठंढी हवा लगणी भीजी जमीनपर सोणेसें कानमें सोजा होणेसेंभी ये रोग होता है, सुणणेकी तंतुओ नाताकत पडणेसेंभी रोग होता है, (इलाज)–बहरापणाके वास्ते लोक कितनेक सख्त इलाज करके कानकुं उलटा नुकशान करते हैं, कानके अंदरका पडदा एसा बारीक और पतला है, सो गरम और दाहकारक स्पर्शकूं सह नहीं सकता बहरापणा समझके मात्र गरम दवायें डालते जाणा इसमें बडा नुकशान है, जो सोजा होय तो सोजेका इलाज करणा मैल होय तो निकालणेका इलाज करणा गलेके दरदसेभी कानमें बहिरापणा होजाता है, कानपका होय तो पीप निकालणेका इलाज करणा लसण कांदे दारू वगेरे गरमागरम पदार्थ डालणेका रिवाज बहोत नुकशांनकारी चल रहा है, बहिरापणेका कोई कारण मालम नहीं पडे तो तिलीका तेल सरसूंका तेल ग्लीसेरीन सालिड तेल वाइन ओफ ओपियम सल्फ्युरिकइथर वगेरे दवायोंके पांचसात बूंद हमेश रातकूं सोते वखत डालणा ३ आंधी झाडेकी राखका नीतरा पाणी तोला २० तेल तोला ५ और आंधी झाडेका खार तोला १। पीछे तेल बाकी रहै तहांतक उकाला तयार कर वो तेल कानमें डालणा.

नाकके रोग.

(लक्षण) नाकमेंभी अनेक रोग होते हैं, जैसें सुगंध दुर्गंध परखणेकी शक्तिका नाश खराब बदबो नाकका पकणा उसमेंसें खूनमिला पीप वहणा वडी अजाबके संग छींकें जलण गरम धूआं नाक सूककर श्वासका रुकणा प्रतिश्याय याने श्लेषमपी नस नकसीर फूटणी नाडीव्रण नाकके मस्से वगेरे (इलाज)–नाकके बहोत रोगोंका मगजके साथ संबंध है, जैसेके शिरका कफ नाकमें उतरता है, तेसें मगजका खून नकसीरहो कर नाकके रस्ते बाहर आता है, मगजका इलाज करणेसें ऐसे रोग मिटते हैं नाकमें मस्सा बंधता है, उसके इलाज या शस्त्रसे काटणेसे मिटता है, शरदी होणेसें शिरका कफ विगड नाक तथा गलेके रस्ते झरता है, बहोतसे लोक शरद गरमीकूं साधारण रोग समझ इलाज नहीं करते तब नाकका पीनस वगेरे खराब रोग पैदा हो जाते हैं, (इलाज)–१ कायफल पोकर मूल (एरंडीकी जड) काकडा सींगी सूंठ मिरच पीपर धमासा अजवाण इनोके चूर्णमें अथवा क्वाथमें आदेका रस मिलाकर पीनेसे कास श्वास कफ पीनस वगेरे सब मिटता है, २ मूंगणी जमालगोटा जव सहजणेकी छाल तुलसीके पत्ते सूंठ मिरच पीपर तथा सींधेलूणकी बटणी कर नेल नाकमें डालना उससें नाकका दुर्गंधवाला श्वास सुधरता

है, ३ मोम तथा गूगलकूं इकठेकर उसका युक्तिपूर्वक नाकमें धूआं लेणेसें वडी अवाजवाली छींके तथा विगडा भया कफ निकलता बंध होता है, ४ मिरच दही गुड इन तीनोंकों मिलाकर खाणेसे नाकके तमाम रोगमें फायदा होता है, इसवास्ते शरदी या पीनस रोगमें दैणा (५ नस्य)–तुलशीके पत्ते नकछींकणी वगेरे छींक लाणेवाली पदार्थोंकी नाश लेणेसे पीनस तथा शरदीका कफ झरके निकल जाता है (६ नकसीर छूटणी)–(एपीस्टेकसीस) ठंढा जल शिरपर तथा नाकपर वहोत डालणा अथवा कपडा भिगाकर शिरपर धरणा पीली मुलतानी मट्टी ठंडे जलमे मिला तालवेपर धरना ठंडे पाणीकी पिचकारी मारणी नाकमें फटकडी या मांजू फलकी महीन भुकणी नाकमें दाबणी कांदेका रस या हरडे वडी जलमें घसकर या अनारके फूलका रश या दोबका रशकी नास दैणी या इस पूगलकूं जरा जलमें मकरोय शिरपर लगाणा जल थोडा २ छांटणा जसतके फूलके पाणीमें रू भिगाकर उस रुईसे नाक बंध करणा टिंकचर ओफ स्टीलमें रू भिगाकर नाकमें दाबणा जो कोइ दवा नहीं होय तो रुईकूं ठंडे पाणीमें भिगाकर नाकमें दाबणा नीलेथोथेके पाणी की पिचकारीभी खूनकूं बंध करती है, (७ पीनस)–(ओझीना) सलेपममेंसे वेर२ ये रोग होता है, इस सिवाय नाकमें कोइ पदार्थ जाणेसें सोजा होकर पीप होता है, नाकमें मस्सा होकर पीप निकलता है, तैसे अंदर हड्डी सडणेसें पीप निकलता है, गरमी सुजाकके रोगसेंभी पीनस होता है, और नाक सडके गिर जाता है मसेकूं कटा डालणा पिचकारी लगाकर नाक हमेश धोडालणा एक औंस पाणीमें एक दो ग्रेण फिटकडी अथवा जसतके फूल अथवा क्लोराईड ओफ झिंक डालणा जात्पादि तेलकी बूंदे डालणी, १ ड्राम विस्मथ, और १ औंस मिश्री मिलाकर सुंघाणा, कारबोलिक एसिड १ भाग ताजा घी ८ भाग मिलाकर सुंघणा इसके शिवाय तनदुरस्ती सुधारणेवाली दवाइयां जैसेके मंजिष्टादि क्वाथ किशोर गूगल योगराज गूगल लोहके बनावटकी दुसरी दवाइयां सारसापरेला पोटाश आयोडाइड वगेरे दवाओंकूं दैणा (नाकमें जीव)–जिसके नाकमें जीव पड जाता है, उसका नाक चपटा फीडा होजाता है उसमें नींबोलीका तेल नाकमें डालणा पांच रुपेभर पाणी गरममें टरपेन्टाइन २ ड्राम मिलाकर पिचकारी लगाणी सोल्युसन ओफस्टील ४ ड्राम पाणी ३ औंस टरपेन्टाइन १ ड्राम मिलाकर पिचकारी लगाणी टरपेन्टाइन तथा कपूर मिलाकर उसमें रु भिगाकर नाकमें सुंघणा और रखणा ९ नाकका मस्सा (पोलीपस) नासार्श)टेनिक एसिडकी भूकी सुंघणी धूंएकी धूंमस (मेश) पीपर देवदारू दूधकरंज सींधानिमक और आंधे झाडेके बीज इसमें पकाया भया तेल डालणा मस्सा बडा होय तो चिमटेमे पलटेकर खेंचकर निकालणा अथवा कतरणीमे काट डालणा.

दांतके रोग.

दांतकी जडमें या मसूडोंमें या दांतके ऊपरके भागमें सोजा या सडनेमें दांतका

रोग होता है, (कारण)—पेटमें विगाड और दस्तकी कब्जी होणेसे ठंढमें जबाडेमें वादी आणेसे पारेकी बहोत मूं आणेकी दवा खाणेसें दांतमें सडणा लगणेसें दांतपर मैलका थर बंधणेसें इत्यादि कारणोंसे दांतका रोग होता है.

(इलाज)—१ दांतमें सहज दरद होय तो दस्त साफ होय एसी दवा लेणी २दरद वहोत होय तो जबाडा तथा गाल सूज जावे तो गरम कपडेका तथा पोस्तका डोडा उकालकर उस गरम पाणीका वेर २ सेक करणा खुराक हलका तथा हजम होय एसी दवा देणी ३ मसूंढा सूज जावै और बुखार आवै तो बुखार मिटाणेकी दवा दैणी और दांतके मसूंढोंपर जोकैं लगाणी जोके लगाणेकी काचकी नली आती है, ४ अगर जो दांतके पारेकी बाजूमें गांठ होजाय तो नस्तर लगाकर पीप निकलवाणा और हलका खुराक देणा, (सडणा दांतोका)—दांत दोतरै सडते हैं, एक तो दांतके आसपास पापडा बंधकर बोसडकर उसका सडणा दांतके जडसे सरू होता है, तब दांतके आसपासका भाग खाईजकर विचमेंका नाकेवाला भाग खुला होजाता है, दुसरी रीत यह है की दांत ऊपरसे सडणा सरू होता है और काला दाग पडता है, पीछै वो सडणा विचमें जड तक पहुंचता है और दांत खाईजकर खोखा होजाता है इसमें दरद वहोत होता है दांतसें चावणा खाणा ठंढा पाणी पीणा वगेरे नहीं होता सब जबाडेमें दरद होता है, नींद नहीं आती रोगी मरणे चाहता है एसा बुरा दरद होता है (कारण) दांतकूं साफ नहीं रखै इसी कारणसें दांत सडते हैं, भोजन कर बराबर दांत साफ नहीं करणेसे खुराककी कणिये दांतोमें रह जाती हैं, पीछै वो फूलती हैं तथा सडती हैं, इस करके मसूढे सूज जाते हैं, पेटकी वादी और विगाडभी दांतके सडणेका कारण है बहोत गले पदार्थ पेटमें वादी और थूकमें खटास पैदा करता है, और खट्टा थूक दांतोंकों विगाडता है, बहोत खटाई खानेसेभी दांत विगडता है वहोत गरमागरम उष्ण स्वभाववाली वहोत ठंढी चीज खाणेसे भी ये रोग होता है पूरा ताजा खुराक नहीं खाणेसे जो रोग होता है, उसके संग दांतकाभी रोग होता है, (इलाज)—१ लोंग पीस उसका पाणी अथवा लोंगका तेल दांतपर चुपडणा, २ अफीम तथा कपूरकी गोलीकर सडे भये दांतके खोतरमें भरके रखना ३ अफीमके अर्कमें रु भिगाकर दुखते दांतपर लगाणा ३ क्रियासोटका एक दो बूंद सडे भागपर डालणा ५ क्लोरोफार्म अथवा सल्फ्युरिक इथरमें रू भिगाकर दांतमें धरणा ६ इससे दरद कम नहीं पडे तो कास्टीककी छोटी लकडी लेकर दांतके कोतरमें थोडे मिनट तक रखकर पीछै लेणी एसे इलाजोंसें एक वेर तो दांतका दरद हलका पडता है, लेकिन् इसमें कोचरा भरी जता नहीं तब फेर ये दरद उठ जाता है, इसवास्ते बिलकुल दरद रहै एसा इलाज करना चाहिये ये एसा इलाज दो तरेसे होता है, यातो कोचरकूं पदार्थसे भर देणा अथवा दांत निकाल डालणा.

(दांतके कोतर भरणेकी रीत)–पहली दांतकूं महीन हथियारसें कोरके साफ करणा और पीछे अंदर भरनेकी दवा धरणी कितनीक चीजें थोडा दिन रहके निकल जाती है, और कितनीक हमेश रह सकती है, सो लिखते हैं १ मस्तंगी अथवा चंद्रस जो मिले उसकूं सल्फ्युरिकइथर आल्कोहोलमें पिघलाकर गुड जैसी गोली करणी वो लुगदी दांतका खड्डा भरीजे इतना रूमें लपेट दाब देणा २ गटापरचा दांतका खड्डा भरणेकूं तयार मिलता है, यो जादा टिकता है उसका एक छोटा टुकडा लेकर स्पीरीटलैंपसे अथवा दुसरी गरमी देकर पिघलाकर नरम करना पीछे दांतके खड्डेकूं कपडेसें पूछकर गटापरचेकूं थोडा २ तिणखेसें दांतके कोचेरमें दाबणा ३ (ओकसाइड ओफझिंक)–इयभी जादा वखत दांतमें टिकता है इसकूं सोल्युसन ओफ झिंकमें मिलाकर गुड जैसा नरम कर दांतके खड्डेमें दाब देणा ये दवा छसात महीनेतक अंदर रह सकती है, ४ बहोत मुदतके टिकाववास्ते)–पारा तथा चांदीकूं अरगतीसे रगडकर भूकाकर उसकूं पारेके संग हथेलीमें मसलणा जब लुगदी होय उसकूं दबाणेसे जादा पारा होयगा सो निकल जायगा और मिली भई लुगदीकूं कोचेरमें भर देणा इकेले चांदीकी एवजीमें १ भाग सोना २ भाग रूपा और २ भाग कलाई एक जगे गालकर उसकूं अरगतीसे रगड अगली तरे पारा मिला दबाना ये बहोत अच्छा है, इस मुजब कोचर भरनेसें थोडी देर दांतमे दरद होय तो स्पिरिटकेम्फर अथवा मस्तंगी गुंदका पाणी दांतपर लगाना.

(दांतके मंजन)–दांतके दरदमुजब मंजनोमें दवा मिलाणी दांतके कलतरमें कपूर बीजाबोल मस्तंगी वगेरे मिलाणी मसूडोंकी मजबूतीवास्ते कथा मांजूफल सिंकोना बार्क वगेरे चीजें वापरणी मूंकी बदबो दूर करणेकूं कोयला मस्तंगी गूंद कपूरका उपयोग करना बलचिंग पाउडर वगेरे तयार मिलती दवायें वापरणी-(१ पृष्ट ४०६) नंबर ७५० स ७५२ तकके सब मंजन अच्छे है, धोया भया चाक तो ५ कपूर पाव तोला दांत कुलणेपर ये मंजन अच्छा है, कपूर जादा डालना नहीं २ हीराबीजाबोल तो १ कपूर छ मासा चाक ५ तोला दांत साफ होते हैं, कुलते मिटते हैं, ४ हीराबोल कथा मांजू एकेक भाग बार्क २ तोला दांत खाईजते होय तो मिटते हैं ५ मस्तंगी मोचरश हीराकमी अनारके सूके फूल जो हरडे आंवले कथा सम वजन महीन चूर्ण मसलणा (मूंके खराब बदबोका इलाज)–जिस कारणसें दांत सडते हैं, उसी कारणसे मूंमे बदबो आती है, भोजनबाद दोनों वखत दांतकूं कुरले कर २ साफ धोना दांतमे रहे अन्नके कनोकों निकालणेकूं लोक दांत कुचरणी रखते हैं, या तिणखोंसे कुचरते हैं, इससे और दांत चोडे होकर अन्नके कणे भरी जते हैं, इससे जादा नुकशान है, दांतकूं साफ करणेका पूरा इलाज मूश है, गरम पाणीके कुरलोंमेंभी साफ होजाता है, दांतोपर नीलण पुडपुडे जमते हैं वो निकाल डलवाणा चहिये बहोत बरसोंका जमाभया मैल दांतोका

डाकदर साफ कर देते हैं, और छोटे चकूके धारसें धीरे २ घसणेसेंभी लील निकल सकती है, ऊपर दांतोंके मंजन लिखे हैं, उसमेंसे नं० ३१४ वाला मंजनमें कोयलेका भूका डालकर उससें दांतण करणा नं० ५६९ में लिखे भये कोनडिस सोल्युसन ड्राप १ में अधसेर पाणी डाल कुरला करना.

(दांत साफ रखणेके नियम)–१ दांतकूं बांवलके दांतणसे या ब्रूससे हमेश घसणा लेकिन् दांतोंकों जोरसे घसणा नहीं २ कोयलेका भूका लूण चाक और कपूर साधारण मंजन हमेस दांतोंको रगडणा ३ दांतोंके छेकडोमें नाज भर जावे उसकूं कुरले या ब्रूससे निकाल डालना जो अंदर रहा तो बहोत नुकशान है, इसीवास्ते जैनके साधू भोजन कर दांतोंकों साफ नहीं करे तो व्रतभंगका दोषण मानते हैं, और दांत साफ करते हैं, दिगंबर जैन दांत साफ करणेमें व्रतभंग मानते हैं, श्वेतांबर साधूओंकी साफ करणेकी मर्यादा है, लेकिन् भोजन किये बाद पहले नहीं ४ रातकूं बिलकुल दांतोंमें अन्नका कणा नहीं रहणा चहिये ५ लील होय तो छीलके निकाल डालनी मंजन ऊपर लिखे सो र डणा सो फेर लील बंधेही नहीं ६ बहोत मीठे और खट्टे पदार्थ हमेस खाणा नहीं ७ सुपा दांतोकों बिगाडती है सो खाणी नहीं सुपारीकी राख दांतोंके मसलणी ८ तमाखू रगड णेसें दांत तो साफ होता है, लेकिन् होजरीपर उसका असर बुरा होता है, इसवास्ते तमाखूका बिलकुल वरताव करणा नहीं ९ दस्तकी कब्जी होणे दैणी नहीं १० खुराक पचै एसा खाणा अजीर्ण होय तो फोरन् इलाज करना ११ पेटका खुलासा और पाचनशक्ति पर दांतके रोगोंका संबंध है.

चमडीके रोग–

किरण ८ मी.

चमडीपर अनेक तरेके रोग होते हैं, कितनेक तो रस बिगडणेसे कितने एक खून बिगडणेसे और कितने एक इनोसेभी अंदर घुसे भये दोषोंसे पैदा होते हैं, कितनेक रोग बाहरकी मलीनतासे होते हैं और कितनेक अंदरके दोषसे होते हैं, अंदरके दोषसे भये २ चमडीके बहोतसे रोग दुसरे रोगोंके विकार रूपसे फूटकर निकलते हैं, इसवास्ते उन रोगोंके इलाजोमें उण विकारोके इलाजोंकाभी समावेश होजाता है, इसवास्ते अनेक रोगों-मेंसें चमडीकै सामान्य रोगोंका इलाज और लक्षण लिखते हैं.

खुजली–(प्रराइटस) संस्कृतमें कंडू कहते हैं, खस खाज दाद चित्री शीतपित्त वगेरे दुसरे रोगोंमेंभी खुजली आती है, इनोके सिवायभी बहोतसी वखत चमडीका को ... विगरभी चमडीपर खुजली आती है, गरमी प्रमेह प्रदर मधुप्रमेह पीलिया अजीर्ण रोगोंमें बहोतसी वखत खुजली आती है, इलाज–१ नींबके पत्ते २ आंवले ३ खै-... छाल ४ पंचवल्कल अथवा बेर बंबूलकी छाल ५ बालेका पाणी इत्यादिकोंसें स्नान

करणा ६ गोमूत्र मसलके स्नान करणा ७ दाहशामक दवायोंका लेप पृष्ठ ३१२) ८ चंदनका लेप ९ गंधकका लेप १० सोहागीका जल मसलणा ११ चंदनका तेल लगाणा १२ तिलका तेल मसलणा १३ लोशन कार्बोलिक एसिड १ ड्राम ग्लीसरीन १ औंस पाणी ३ औंस रेक्टिफाईड स्पिरिट २ औंस १४ लोशन–कपूर ॥ ड्राम क्लोरल हाइड्रेट ॥ ड्राम ग्लीसरीन १ ड्राम गुलाब जल ५ औंस १५ गंधकका साबू (सल्फर सोप) वदनके मसलके नाहणा १६ कारबोलिक सोप १७ चंदलाईके पत्ते उकालके पीणा १८ गिलोयका रस पीणा १९ गाजुवांका रस पीणा २० नं० २९५ ३१३ ३१७ ३२४ ३२६ का इलाज है सो करणा.

(फुनसी–लाईकेन) चमडीपर महीन २ फुणसियें होती है, गरमीकी मोसममें बहोत होती है, अदमीकुं बहोत तकलीफ देती है,–इलाज–१ चंदनका लेप करणा २ वाला शंखजीरा तथा कपूरकाचरीका लेप ३ गेरूका लेप करणा ४ हरडेका जुलाब देणा ५ मासा तथा पोस्तके डोडोंके जलसे नाहणा.

(लूखापणा)–(प्रुराईगो) सब वदनपर बहोत खुजली आती है, तथा महीन २ फुनसियें होती है, अदमी खुजालते २ खूनतक निकाल लेता है तैसें २ जलण और खुजाल वढती है, चमडी लूखी और खरदरी होती है,–इलाज–ऊपर लिखे सब खुजलीका इलाज करणा १४ मासेके जलसे स्नान कराणा २ चंदनका लेप करणा ३ चीरोंजीका लेप करणा ४ गंधक १ ड्राम ग्लिसरीन १ ड्राम धोयामयाधी १ औंस इनोकों मधकर वदनके लगाणा ५ रस कापूरका पाणी लगाणा ६ गंधक २ ड्राम ग्लीसरीन तथा वेसेलीन एकेक औंस मिलाकर मसलणा ७ चंदलियेका रस नींबके पत्तोंका रस गाजुवानका रस इनोंमेंसें कोईभी दवा थोडा दिन पीणा ८ आंवला अथवा त्रिफलाका जल पीणा ९ गुलाबकलीका जुलाब अथवा सोनामुखीकी चायाफकी लेणी १० आंवलेका मुरब्बा या कोला पाक अमृतवटी मंजीष्टादिकाथ वगैरेका बहोत दिनोंतक सेवन करणेसे लूखास मिटती है.

(खस)–(ईच)–खसके रोगकूं सब जाणते हैं, ये एक तरेका सडणा है, गंधे छोकरोंके बहोत होता है, उसमें जीव छोटे कीडे होते हैं, उसका चेप फैलता है–(इलाज)–१ गंधकका लेप अथवा मलम (नं०५४५) २ कासीसादिघृत (नं० ३०३) ३ पारेका मलम (नं० ३०४) ४ खसका लेप (नं० ३२४) ५ (नं० ५४९) वाला मलम ६ अर्कतेल (नं० २९३) ७ लीडे थोथेका तेज पाणी चुपडणा ८ नींबके पत्तोंको उकाल उससे स्नान करणा या गोमूत्रसे.

(खरज)–(ध्योंची)–(एकझीमा)–ये चमडीका बडा रोग है, ये जादा करके हाथ पांव शिरमें कानकी कोरपर वगैरे भागोंपर होती है, पहली चमडी लाल होकर सूज

जाती है, पीछे उसपर फोडे फुनसियें होती है पीछे फूटकर जमता है, तथा खलन गिरता है, वो वेर २ सूकता है और हरा होता है, कितनेक सूके होते हैं, और कितनेक चिकते है-(इलाज)-१ (२९३, ३०३, ३०४, ३०७, ३६६, ५४५, ५४६, ५५२ नंबरका इलाज २ कील चुपडणा, ३ लसण पीसके लेप करणा, पीछे खरज वायु साफ होय, तब सादा मलमका लेप करणा, ४ नींबके नींबोलीका तेल, ५ खुजली सूकी होय अथवा खरूंट आया भया होय तो उसपर रातका घी चुपडणा, गऊंके आटेकी पोल्टिस या अलसीकी मारणी, जब खरूंट नरम पडे तब गरम पाणीसे धो डालणा पीछे घाव भरणेकी ऊपर लिखी कोईभी दवा लगाणी)-जैसेके ६ ओलीव सालिड तेल ग्लीसरीन कासीसादिघृत (नं० ३०३) अथवा अर्कतेल (नं० २९२) लगाणा ७ टिंकचर आयोडीन हमेस लगाणा ८ कास्टिक अथवा नाइट्रिक एसिडसे खरज वाकूं जला देणा खून साफ करणेवाली दवा देणी.

(दाद)-(रींगवर्म)-(गजकर्ण)-चमडी लाल होकर उपड जाती है सुपेद फोतरी उडती है उसमें खुजली आती है, चक्कर २ जैसी शिकल होती है, और फैलता है, पुराणा भये पीछे जमीन काली पडती है, बहुत खट्टा तथा गरम पदार्थ खाणेसे तथा मलीनतासें ये रोग होता है, मलेवार तथा मंबई कलकत्ता वगैरोंके पाय खाणेकी हवासे तथा जलसेंभी ये रोग हो जाता है, जिसमें काछोंके दाद असाध्य है-(इलाज)-दादका असंख्य इलाज है, जादा करके कृमिहर कुष्ठहर इलाज दादका होता है, पवाडके बीज छाछमे पीसके लेप करणा, २ पलासपापडा पीसके जलमें लेप करणा, ३ हरतालका लेप या नींबूका रश, ४ फिटकडी टंकण लीले थोथेका तेज पाणी चुपडणा, ५ सल्फ्युरिक एसिड लगाणा, ६ कार्बोलिक एसिड, अथवा रसकपूरका लोशन प्रमाण दवा २ ग्रेण पाणी १ औंस ७ टरपेन्टाइन घसके चुपडणा पीछे उसकूं साबूसे धोकर टिंकचर आयोडिन लगाणा ८ कारबोलिक एसिड लगाणेसें पुराणा दादभी मिटता है, ९ रसकपूर ४ ग्रेण गंधक तथा पोटाश कार्बोनास हरेक -॥- ड्राम वेसेलीन २ औंस सब मिलाकर जोरसे रगडणा १० रसकपूर मुडदासिंग गंधक नीला थोथा और टंकण ये सब सम वजन मख्खणके संगमिलाकर लगणा, ११ गोआ पाउडर, १२ पारेका मलम सादा मलम सम वजन मिलाकर लगाणा, १३ केलोमेल २ ड्राम, क्रियासोट ४ ड्राम, गंधकका मलम १ औंस मिलाकर लगाणा.

(उंदरी)-(अथवा शिरकी चांय गिंज)-ये दादकी जात है और शिरपरही होती है, वालोंकी जडमें कीडे पडके महीन फुणसियें होकर फुटती है और पककर चिकती तथा पपडी जमती है, (इलाज)-दाद तथा खाजके सब इलाज गींजपर ... हैं, वालकतरा डालना या उस्तरेसे मुंडा डालना साबूसे धोकर शिर दोनुं

वखत साफ करवाणा पपडी उखडकर शिरकी जमीन साफ निकल आवे एसा इलाज करणा नीला थोथा १५ ग्रेण चार औंस पाणीमें मिलाकर कपडा भिगाकर थोडे दिनोंतक शिरपर लपेटणा पीछे एरंडी तेलमें कपडा भिगाकर उसपर लपेटना इस तरे दो चार दिन करनेसें पपडे नरम पडते हैं, और अलग हो जाते हैं, बाद एरंडीका तेल लगाणा अथवा घावभरी जे एसा रोपन मलम लगाना २ भूरींगनीके रशमें सहत डालकर लेप करना ३ चिरमीकी जड तथा फल पीसकर लेप करना ४ चिरमीकुं जलमें पीस उसमें भांगरेका रश तथा तेल डालके सिद्धकरा भया तेल चुपडना (ये अवल गुंजादि तैल.)

(खोरा)-(स्कर्फ) शिरमें होता है उसमेंमें सुपेद फोंतरा ऊडता है, तथा बाल गिर पडता है खोरा एक तरेका जीवका विकार है-(इलाज)-१ गुंजादितेल चिरमीका ऊपर लिखा सो २ नींबोलीका तेल ३ हरतालका लेप ४ टंकन तोला -।- एकसेर जलमें मिलाकर उसजलसे हमेस शिर धोना अथवा सालिडका तेल चोपडना.

(टाटका पडना)-(एलोपेश्या)-शिरके बाल उडजाते हैं उसकूं टाट कहते हैं बहोतसी वखत मूंछ तथा भवांरेके बालभी उड जाते हैं, उंदरी कीडा अथवा उपदंशकी गरमी ये बाल गिरनेका मुख्य कारन है, इसवास्ते खून सुधारनेका यत्न करना-(इलाज)-१ चिरमीका वूका पीस लेप करना भांगरेके रशमें सिद्धकरा भया तेल चुपडना ३ कडवे परवलके पत्तोंका रश तीन दिन लेप करना ४ भूरींगनीका रश सहत मिला लेप करना.

(खील)-(आक्नी)-चमडीके पिंडमे एक तरेका चिकना पदार्थ भर रहा है जब वो बाहर नहीं निकलता तब खील होकर बाहिर फुटती है जादा जुवानीमें चहरे पर फुटती है-(इलाज)-फजर सांझ गरम जलसें धोना गरम जलका बफारा देना २ रसोतका लेप करना ३ टंकणखार गुलाव जलमें लगाणा ४ गंधकका मलम (गंधक १ भाग बेन्झोयेटेडलार्ड ४ भाग) ५ गूगल लोह काडलीवर बगेरे दवाओं देणी ६ गोरोचन काली मिरचका लेप ७ लोद धाणा तथा वचका लेप ९ शेमलके कांटाओंकूं दूधमें पीस लेप करना.

(करोलिया)-(सोरायासीस) चमडीपर सुपेद चट्टे होते हैं, ऊपरकी चमडी उतरती जाती है और नीचे सुपेद चट्ठे निकलते जाते हैं, इसकूं सिध्मा थमूती या श्वित्री कोढभी कहते हैं, ये रोग जादा करके मूं, छाती, पीठ कभी २ सब बदनपर होता है, (इलाज) १ कुष्टहर लेप (नं० ३२१) गंधकका तेल (नं० ६६) ३ हरतालका लेप (नं० १८९) ४ ठंडे पाणीमें भिगाई भई चद्दर बदनपर लपेट उपर गरम धावला ओढाकर दो चार घंटे सुला देना और दोचार वखत खूब जल पिलाणा जिससे पसीना आकर फायदा होता है. ५ टार, झींक, ओक्साइड और बिदामका तेल सम वजन मिलाकर करोलियेपर घसकर लगाना, ६ पवांडके बीज तथा बावचीका लेप इसतरे दि-

नमें दो वखत दवा लगाणी, गरम पाणी और साबूसें धो डालना, कोरे रुमालसे साफ पोंछ डालना, फेर दवा मसलके लगाणा.

(कोढ)–(ल्युकोडर्मा) चमडीका कुदरती रंग बदलकर उसपर सुपेद काले लाल वगेरे वहोत तरेके चट्टे निकलते हैं, साधारण लोक सुपेद चट्टोंकों कोढ समझते हैं, लेकिन् वो १८ जातिमेंकी एक जाति है, दाद, चित्री, करोलिया, विचर्चिका, पांव वगेरेभी कोढ रोगका हलका विकार है, दुसरे दुष्ट कोढ रोगका दोष धातूमें प्रवेश कर अंदर ऊतरता है, विरुद्ध अन्नपानका सेवन ये कोढ रोगका कारण है, (इलाज)–(कुष्टहर लेप) तथा अवल गुंजादि लेप (नं० ४२) (नं० ३१३) (वज्री तैल नं० २९५) मरिचादि तैल (नं० ३००) काली जीरीका लेप (नं० ३१७)५ सुपेद कोढका लेप (नं० ३२१) ६ अवल गुंजादि क्वाथ (आंवला तथा खैर सारका क्वाथ) उसमें बावचीका चूर्ण डालकर पीना)–(खानेकी दवायें) मंजीष्ठादि क्वाथ (निंबपंचाग चूर्ण (नं० २२९) अमृताघृत (नं० २८७) १० किशोर गूगल(तथा योगराज गूगल)(पृष्ठ २५३) पथ्य आहारके संग एसी कुष्टहर दवा देणेमें आवे तो चमडीका रोग आराम होता है.

(शीतपित्त)–(उददे)–(कोठ)–(उत्कोठ)– (अर्टिकेरिया)–बदनपर चट्टे उठ जाते हैं, ये ददोडे छोटे वडे लाल तैसें सपेद रंगके होते हैं, चमडी सूजी भई तथा, उपसीभई वहोत खुजली तथा दाह होता है, पित्ती एकदम अंदर घुस जाती है, किसी२कूं ये रोग वेर२ होता है, अजीर्ण अथवा उसका विगाड खट्टा अथवा नारूकी बेमारी ये सब पित्ती अथवा पित्ती जैसा चट्टेका कारण है, कोइ जहरी जांनवर काटे (मकडी) मसलसणेसे या खानेमें आवे औरभी तो पित्ती निकल जाती है. इलाज–सरसूंके तेलका मालिस २ गरम पाणीका शरीरपर सींचना ३ सरसूंका दाणा हलदी पमाडके बीज तथा तिल इनोंकूं सरसूंके तेलमें मिलाकर लेप करना ४ लेडलोशन कारबोलिक लोशन कपूरका अर्क वगेरे लगाना ५ गरम कपडे पहराणा पुराणी वेमारीमें नींवके पत्तेका रस पीणा ६ सोनामुखी तथा दस्तावर दवा (देणी पृष्ठ. ३१६) ७ कालीजीरीकी चाकरके पीणी ८ त्रिफला गूगल तथा पीपरका चूर्ण देना ९ अद्रकके रसमें पुराना गुड पिलाणा १० त्रिकटुका चूर्ण और मिश्री ११ त्रिकटु तथा अजमोद १२ जुलाब लेना किरमाला पंचक (कुटकि देवदारू मोथ अतीश किरमालेकी गिर अथवा विलायती निमक इसमेंका जुलाब देना) १३ काली मिरच घीमें मिलाकर चाटणा तैसें ऊपर लगाणा.

चकाया–इरीथीमा–चमडी लाल होजाती है, इलाज–ठंढा इलाज करना १ कली चूनेका नितरा भया जल और तेल मथकर लगाना २ गुलाब जल तथा ग्लिसरीन जात्यादि घृत ४ झिंक ओइन्टमेन्ट नं० ३०२।५ ओक्साइड ओफ झिंक तबदीर

वगेरे घसणा ६ दशांग लेप नं० ३१२।७ जुलाव एरंडीका तेल गुलाबका फूल अथवा सोनामुखी वगेरे देणा मंजिष्ठादिकाथ अथवा चूर्ण.

कालादाग–चमडीपर काला दाग पडता है, किसी रोगसे या बुढापेसें या बिलास्टर मारे पीछे चमडीपर काले दाग रह जाते हैं, (इलाज) शरीरसंबंधी कोइ रोगका कारण होय तो उसका इलाज करणेसे दाग अदृश्य होगा जैसेके गरमीके रोगसे हथेलीमें भये दाग रसकपुरका पाणी मसलणा २ व्हाइट प्रेसीपीपटका मलम (सादा मलम १ औंस आयोनाटेट मर्क्युरी १ ड्राम मिलाकर मलम करना ४ आल्कोहोल १ औंस कपूरका पाणी उसमें रू भिगाकर दागवाले भागपर धरणेसें चमडी लाल होगी अथवा बिलाष्टर उठकर नई चमडी आयगी.

(झामरा)-(पेमफीगस) चमडीपर एक वडा फफोला उठता हैं, उसमें पहले पाणी होता है पीछै पीप होता है सख्त दरद तथा जलण होती है, (इलाज) १ अफीमका लेप करना अथवा पोस्तके डोडेका सेक करना २ तुकमरिया पीसके बांधणा, ३ सुईसे फोडकर सादे मलमकी पट्टी मारणी ४ धोया भया घी अथवा मक्खण अथवा झिंक ओइन्टमेन्ट लगाना ५ चमडी अलग पडे पीछै घाव भरणेकूं आइडोफोर्म कारबोलिक तेल अथवा बोरासिक एसिडका मलम लगाणा.

(कखवायु)-(ऊसरणी)-(हर्पिज) काखके नीचे छातीकी बाजूमें चमडी लाल होकर उसपर मोतीका दाणा जैसा फुणसियें होती है, किसी२ वखत और जगेभी होती है नाताकतीसे होता है, बुखार उतरे पीछे एसे दाणे होठपर होते हैं, उसकूं लोक धूरामूत गया एसा कहते हैं, उसमें दाह होता है बुखारभी आजाता है, (इलाज) १ गेरूका लेप, (२ दशांग लेप नं० ३१२), ३ स्युगरलेडका मलम, ४ झिंक लगाना, ५ लेड लोशन, ६ ग्लिसरीन मेटेनिक एसिड मिलाकर चोपडणा,

(बिस्फोटक)-(एकथीमा)-(इम्पीटाइगो)-चमडीपर छोटे या वडे, पीलेपीपवाला पफोला होता है, उसकूं विस्फोटक कहते हैं, ये फफोले उठकर जखम पडता है, खरूंट जमते हैं, और अंदरसे चिकता है, (इलाज) पंचवल्कलका उकालकर उससें हमेश धोणा, २ धमासा अथवा पोस्तके छिलके उकाल पाणीसे दोतीन वेर स्नान करना ३ जाईके पत्तोंके हिमसे स्नान करना, ४ खरूं टोपर पोटाश बांधकर अथवा तेल लगाकर उखेड उसपर सादा मलम अथवा जखम भरे एसी दवा लगाणी, ५ नींबोलीका तेल लगाणा, ६ पंचवल्कलकूं कूट उसका महीन चूर्ण दावणा अथवा जलमें पीस लेप करना ७ कारबोलिक और बोरासिकका मलम लगाणा, ८ गिलोयके उकालीमें एरंडीका तेल डाल दोचार दिन पीणा, ९ मंजीष्ठादि काथ, गाजुवाका रस मालसापरीलाके छालका उकाला, तेसें काडलीवर कीनाइन, लोह वगेरे दवायोंका सेवन डाक्तर करवाते हैं.

(मस्सा)-(वार्ट) शिरपर तैसें शरीरपर किसीभी जगे छोटे वडे चमडीके अंकूर फूटते हैं, बहुतोंके जीभ होठ नाक कान मलद्वार वगेरे गुप्त जगोंपरभी होते हैं, (इलाज) छोटे मस्से, कासटिक अथवा खारसे जलके गिरजाता है, वडे मस्सेकूं डाक्तर कतरणीसें काट कासटिकसे वो जगे जलाकर मलम लगाते हैं, २ आंधी झाडका क्षार लगाणा, ३ अर्क तेल (नं० २९२) ४ कलीचूना लगाना, ५ घोडेका बाल बांधकर हमेश जरा२ खेंचणेसें कितनेक दिनोंमें मस्सा गिर जाता है.

(कपासिये)-(कॉर्न) कपासियेकूं आंठणभी कहते हैं, वो हाथ पैरपर होता है, चमडी जाडी होती है, किसीके दरदभी होता है, किसीके सख्त पडणेसें दरद नहीं होता, (इलाज) कटाकर कानका मैल भरणा दुसरा इलाज देखणे सुणनेमें नहीं आया है, कांटा अंदर रहजाकर पुराणी हालतमें कपासिये बंध जाते हैं.

(जूं)-(लीख)-(लाउस) गलीच अदम्योंके कपडेमें तथा बालोंमें जूंलीख पडती है, कपडोंकी सुपेद और बालोंकी जूं काली होती है, (इलाज) स्नान और कपडे साफ रखणा, २ नींबूके रसमें कालीजीरी पीस बालोमें लगाना,३ नींबोळीका तेल लगाना ४ धतूरोंके डोडोंकूं तेलमें उकाल बालोमें वो तेल लगाणा, ५ पारेकूं नीमके रसमें घोट या मूलीके पत्तोंके रसमें घोट लगाणा, या पारेका मलम लगाणा, ६ रसकपूर दो ग्रेण एक औंस जलमें मिलाय वो पाणी शिरमें लगाणा, ७ कारबोलिक एसिड तथा तेल, ८ सिरका और नवसादर, ९ गंधक या गंधक तेल, १० नींबूका रस और खांड.

(वाला)-(नारू)-(गीनीवर्म)-चमडीमेंसे सुपेद रंगका सवा हाथ एक तार जैसा दो इंद्रियवाला जीव निकलता है, जैनोके सूत्रमें, हरसमें, कंठमालामें और नारूमें दो इंद्रीवाला जीव कहते हैं, वोही बात इस वखत पश्चिमी विद्वानोंने सिद्ध किया है, ब्राम्हणोंके बनाये शास्त्रमें मांस सूककर नारू होता है, एसा लिखा है, लेकिन् प्रमाणसें सिद्ध नहीं होता, ऊपर जो लिखा है सो यथार्थ है, इससे महीन इंडे पाणीमें रहते हैं, जो विगर छाणे पाणीसे स्नान पानादि करते हैं, उनोके ये रोग जरूर होता है, श्रीवरजी पंडित अमृतसागरके नोटमें लिखा है एक अंगरेज गंधे जलमें पहरभर सिकारके वास्ते खडा रहा, सो मेरे सामने रामजी गणो डाकटरने दोनों पेरोंमेंसे पचास नारू निकाले, इसीवास्ते जैन धर्मवालोंका सिद्धांत हुकम है की पाणी दिनमें दो वखत छाणना और रातकूं जल पीणा नहीं, इस हुकमकी तामील करणेवालोंकों नारू कभी नहीं निकलता, बारीक इंडे चमडीमें प्रवेश कर अंदर बढता है पीछे बाहर आता है, वाला निकलणेकी सरुआत दो तीन तरेसें होती है, किसी २ के तांतका गुंचला चमडीमें जाहिरा मालम है, किसी२ के सोजा तथा दरद होकर पककर फूटता है, तांत बाहर आती है, किसी २ कूं पित्ती निकलती है, बहोत तक्लीप होती है, (इलाज) जो दिखता मालम

है तो निकलता हालणा शुरूमें चमडी काटके और, स्वतः तांत बाहिर आवे तो उस तांतकुं बांध देणा क्योंकी जिसमे अंदर पीछा नहीं जामके जो खेंचणसें तूट जावे तो बहोत तकलीफ होती है, (इलाज) एक नारू सहम दारू है, लेकिन् मुख्य पतवाणे भये इलाज लिखते हैं) मूंकर बाद छाणे भये पाणीके होदमें बेठणेसे निकल जाता है पहरमरमें) हींग अफीमका लेप बहोत दिनोंतक करणेसे, मूं करणेके पहली, अंदर साफ होता देखा है, माह सुदि सप्तमीकूं निराहार मिश्रीचावे तो नारू होताही नहीं, एसी वृद्ध संप्रदायसे सुणी है, लेकिन् सांझ पडे बाद घरसे बाहर उस रातकुं न निकले तार नहीं देखे, जो मूत्रा नहीं रहमके तो सांझकूं पाव मिश्री चावे कृत्य ऊपर मुजब)-३ नारू जब बहोत जोर करे या तूट जावे या तोडपड जावे तो पहले काले तिलोंकों एक कढाईमें एसा सेके सो जलणे जैसा हो जावे, बाद उनोंको पीस सब सूजनपर लेप कर देवे मूं खुला रहणे दे, बाद क बार पढेकी गिरतो ४ उसकूं एक मट्टी पात्रमें डाल उसमें तेल १ रुपेमर एक रुपेमर ईसपूगल मासामर सिंदूर रत्ती सुहागा रत्ती अफीम रत्ती नोसादर डालके अंगारपर सिजावे, बाद एक आक पत्ते पर लेके नारूके मूंपर धरे और बाकी आकके पत्तोंपर तिलीका तेल लगाकर दो पत्ते आपसमें जोड अंगारपर जरा गरम कर तिलोंका जहां २ लेप है, उसपर धरके कपडेमे बांध देवे तीसरे दिन पट्टा खोले, एसे तीन ४ पट्टे बांधणेसे सब दरद और नारू गलके निकल पडेगा, घाव भरणेकूं गाभणिया फोहा बांधाकरे, या किसी मलमकी चत्ती लगावे, ४ नीलाथोथा जलमें उकाल नारू पर झारा करे, सुहावते जलका और गाभणिया फोआ बांधे आराम होता है, ५ आकके पत्ते एरंडके पत्ते एरंडी तेलका पोता अफीम धतूरेका पत्ता नींबके उबाले भये पत्ते, हींग कारबोलिक तेल, सांबू, कांदे दोनो मिलाके, पकाये भयेका पट्टा इत्यादिसे नारू मिटता है, साफ नहीं होय जहांतक हलणा चलणा नहीं, नहीं तो तोड पडता है, प्रभातसमे बीकानेरकी मिश्री देसी खांडकी चाब पाणी नहीं पीवे तो नारू अंदर साफ होजाता है.

(ब्याउफटणी)-(विपादिका)-(चिल्बलेन)-हाथ पैरोंमें जरा सोजन दाह खुजली आकर उसमें फटणा होता है, ये एक हलके तरेका कुष्ट रोग है, और वो भीगी जगा तथा शरदी हवाके कारण होता है, (इलाज) कोढमें लिखे सब इलाज करणा, कोकम जो गुजरातमें खटाई होती है उसका तेल मंहदीके पत्तोका लेप, रालका लेप, वडके दूधका लेप वगेरे फुलमा तथा मोम लगाकर जलती बत्तीसे सेकणेसे दरद फोरन मिटता है, शरदी और भीजी जगेसे बचके रहणा ठंढे जलसे धोणा नहीं पांवोंमें मोजे रखणा.

(विचर्चिका)-(लेप्रा)ये-एक कोढ और करोलियेकी जातका रोगहै करोलियेके रोगमें चक्कर बदनमें हर किसी जगे होकर फोंतरे उडते हैं, जिसकूं विभूती कहते हैं, और ब्योंची

हाथ पैरो के तलेमें तेसें जांघ और गोडांके तथा पैरोंके ऊपर गिरियेके पास चीरे पडते हैं, खुजली आती है, और खरूंट जमते हैं (इलाज) तनदुरुस्ती सुधरे एसी दवायें देणी कोढके सब इलाज इसपर चलते हैं बाहरके इलाजमें गंधक तथा पारेकी मिलावटका मलम अच्छा है खस खुजलीका सब मलम अच्छा है २ रसोत कोकमका तेल मेंहदीके पत्तोंका लेप रालका मलम वडके दूधका लेप वगैरे फायदे बंद है, ३ दाहकूं मिटाणेवाली दवायें जेसेंके आंवलेका चूर्ण त्रिफला चूर्ण गुलकंद आंवलेका मुरब्बा वगेरे, बद हजमी और बंध कुष्ट होणे देणा नहीं.

(चित्री)–(व्हाइटलेप्रा)–येभी करोलियेकी जातका चमडीका रोग है चमडीपर खुजली आती है और खुजालणेसें चमडी परकी फोतरी ऊतर जाती है सुपेद चठे पडते हैं चित्री मूंपर और पीठपर जादा होती है–(इलाज)–काली जीरी खिलाणी कालीजीरीका लेप २ गंधकका लेप ३ तिलका मालिस ४ बावची पाणीमें पीस उसका लेप करणा ५ हरतालका लेप गोमूत्रमें पीसकर करणा हरताल १ भाग त्रिफला १ भाग कालीजीरी ४ भाग ६ नीले थोथेके पाणीमें तेल मिलाकर मसलणेसें चित्री जल्दी आराम होता है.

किरण ९ मी.

छुटकर रोग. एकाएक होणेवाले.

बाकीरहे जो रोग तथा अकस्मात पैदा होणे वाले शरीर और मन संबंधी इजाओंका वर्णन इस किरणमें प्रकास करते हैं.

(आंगुलियोंकीवादी)–अंगुलियोंमें वादी आणेसें लिखते आंगलियें धूजती है–(इलाज) सुद्ध कुचीलेका प्रमाण सुजब कितनेएक दिनों तक सेवन कराणा.

(कमरका झिलणा)–(लम्बेगो)–कम्मरमें वादी आणेसें कमर झिल जाती है–(इलाज) कुचीलेकी फकी, वछनाग, वडी हरडेका सेवन, एरंडीकी जडकाचूर्ण, योगराज गूगल, २ राईकी पट्टियें मारणी, वंशीकी शिकलवाली, फलालीनकी कोथली करके, उसमें गंधकका भूका भरके, वो कोथली कमरपर बंधी रखणी, टरपेन्टाइन, तथा सालिड तेल लगाणा, १ भाग आमोनिया, तीन भाग तेल मिलाकर, कमरपर मसलणा, आयोडाइनपेइन्ट, ओपियमलीनीमेन्ट.

(कमरका दुखणा)–औरतोंके वेर २ कमरमें दरद हो जाता है, रजोदर्शन याने ऋतुधर्मकी वखतमें, सहजसा दुखता है, लेकिन् जो ऋतुधर्म संबंधी कोइ रोग होता है तो दरद वढता है, कुसुआवड (अधूराजाणा) प्रदर वगैरे, कमर दुखणेके कारण है–(इलाज)–जिस कारणसे दरद भया होय उसका इलाज करणा, स्त्रीयोंके रोगके किरणमें आगे लिखा है, योगराज गूगल अथवा सादा गूगल, अच्छा इलाज है.

(पसीना)–(परस्पीरेशन)–हरेक अदमीके वदनके छेदोंमेंसे पसीना हमेस आया करता है, हवा और कपडोंके स्पर्शसे सूककर, दिखाई नहीं देता, लेकिन् किसी २ वखत वदनके प्रसिद्ध जगोंमें, अथवा दिनके चोकस वखतमें, पसीना आता है रातकूं पसीना आता है, तव बुखारकी शंका पैदा होती है, नाताकती, तथा जीर्णज्वरमें, रातकूं पसीना आता है, क्षयरोगमें तथा उरक्षतमें, जब मर्मस्थानमें जखम पडता है, तवभी रातकूं पसीना आता है, इस बुखारकूं प्रलेपकज्वर कहते हैं, अंग्रेजीमें हेक्टीक फीवर कहते हैं–(इलाज)–(वशंतमालती नं० ५४) बुखार सिवाय दुसरे कारणोंसे, शिर, कपाल, वगल वगेरे, अवयवोंमें, वहुत पसीना आया करता है, उसकेवास्ते गरम दवायें खाणी, कुलथीका आटा मसलणा.

(थूक)–(वहोत थूकका आणा)–(सलावेशन)–(कारण)–दांतोंके मसूडे और मूंके वरमसें ठंढ नाताकती अजीर्ण दांतोंका आणा और पारे संबंधी दवाखाणेसे मूंमें वहोत थूक आता है–(इलाज) १ फिटकडीके कुरले करणा ये सबसे अच्छा इलाज है, स्तंभक दवायें, जैसेके, कचनारकी छाल बेरकी छाल, खेरकी छाल, बांवूलकी छाल, पंचवल्कल तथा सुहागेका कुरला करणा, जिसकारणसे, थुक आता होय वो कारण बंध करणा.

(स्वरभंग)–(सादवैठजाणा)–गलेके मर्मस्थानमें कोइ दरद होणेसे गरम चीजों खाणेसें तेसें शरदी लगणेसें साद वैठ जाता है–(इलाज)–१ आंवलेका चूर्ण सांझकूं दूधके संग पीणा, कत्था, इलायची, खैरसार, कबाबचीणी वगैरे ठंढी दवायें कंठकूं खोलती है, बंबूलके पत्ते बेहडेकी छाल, नागकेशर, चिरमीके पत्ते, मोलेठीका सत वगेरे अवाजकूं सुधारती है, २ फिटकडीके कुरले करणा, अथवा पोर्ट वाइन, पाणी मिलाकर उसके कुरले करणा ३ वहुत वोलणेसें या वहोत गाणेसें अवाज वैठगई होय तव कंठकूं आराम देणा मौन रखणा या गरम दूध घी डाल पिलाणा हरडे वडियाकी छाल छमासा आने भरपाणीमें उकाळ सुहावता हरडे–समेत पीणेसें स्वरभंग मिटता है गाणे-वालेकूं इतनी चीजें अच्छी है (दुहा) सूंठ कुलिंजन मिरमिरी राई पीपर पान इतना लेवे मिलायके कंठकोकिला जाण (१) इतनी चीजें विद्या पढणे वालेकूं और गाणेवालेकूं त्यागणा चहिये (दुहा) खट्टा खारा खोपरा, सोपारी अरनेल, जो विद्या गाना चहे, इतना दूरां मेल (१)

(हिचकी)–(हिक्कप)–करडा और रूखा और दस्तबंध करणे वाले पदार्थ ठंढापाणी ठंढावद्य धूआं धूल नाकमें जाणा गरमी तथा हवा वहोत खाणी उपवास ये सब हि-चकीकूं पैदा करणेवाले सामान्य कारण है–(इलाज)–मोर पंखकी भस्म तथा टीडीपीपर सहत मिलाकर वेर २ चाटणा २ मोलेठीका चूर्ण सहतमें चाटणा ३ धमासेके क्वाथमें

सहत मिलाकर दैणा ४ आंवला पींपर तथा सूंठका काथ मिलाकर पीणा ५ रहामया दूध पीणा ६ उडद तथा हलदीके चूर्णकी बीडी पीणी ७ संभालूका काथ पीणा ८ लसण घीमें तलके खाणा.

(कफकाजाला)–वहोतसी वखत छातीमें कफका जाला जमता है, उसकुं मिटाणे कफकूं नाश करणेवाली दवायोंका उपयोग करणा–(इलाज)–आंधी झाडेका खार २ अरडूसेका रस सहत मिलाकर पीणा ३ आकके जडका चूर्ण अथवा एपीका क्युआन्हा पाउडरसे, उलटी कराकर कफकूं निकलवा दैणा ४ कोनरूगूंद टंकणखार नवसादर ये दरयेक चीज कफके चिकणे व लगमकूं तोडता है.

(वाल निकालणेका इलाज)–हरताल ॥ द्राम चूना ४ द्राम गहूंका आटा १ द्राम जलमें मिलाकर उसकी पोटिस लगाणी थोडी देर रखकर निकाल डालणी और तिलका तैल लगाणा इससे वाल गिर जाते हैं, २ हरताल ॥ तोला शंखका चूर्ण अथवा शंख· भस्मी १॥ तोला पलासपापडेका खार ॥ तोला इनोंकों केलेके थडके रशमें अथवा आकके पत्तोंके रशमें घोट लेप करणा ३ हरताल १ भाग शंखचूर्ण २ भाग मनशिल ॥ भाग साजीखार १ भाग इनोका लेप करणा पहली उस्तरेसे वाल निकाल डालणा पीछै सात दिन हमेस लेप करणेसे फेर वाल ऊगेगा नहीं.

(वाल रंगणेका इलाज)–(कल्य) (खेजाप)–(केनाईटीस)–बुढापेमें वाल सुपेद हो जाते हैं, मगजकी नाताकती फिकर और मा वापके होय तो वचेके जुवानीमेंभी वाल सुपेद हो जाते हैं सुपेदी होणेसे लोक बुड्ढा कहा करते हैं चंद्रवदनियां वावाजी कहकर हसती है इसवास्ते वहोतसे लोक काले वाल किये चाहते हैं १ मंहदीके पान पीस एक घंटे वालोंके लगाये रखणा उससे वाल लाल होगा पीछै नीलके पत्ते पीस थोडे घंटे बांध रखणेसे वाल काले होंगे २ त्रिफला नीलके पत्ते लोहका बुरादा भांगरा इनोंकों वकरीके पेशावमें पीस लेप करणा ३ आंवला ३ वहेडा १ हरडे २ आंवेकी गुठलीके अंदरका मगज ५ भाग लोहका बुरादा १ भाग इस वजनसे लेकर महीनपीस लोहकी कढाईमें धर रखणा दुसरेदिन लेप करणा ४ हाइपोसल्फेट ओफ सोडा १ द्राम पाणी १ औंस संगमिलाकर दो चार दिन वालोंपर लगाणा ५ नाइट्रेट ओफ सिल्वर ३० ग्रेण पाणी १ औंस ये पाणी लगाणेसे वाल काले होयगें लेकिन् चमडीपर दाग गिरता है, ये दाग निमक अथवा साइनाईड ओफ पोटाशके पाणीसे निकल जाता है.

(हडकवायु)–(हाईड्रोफोबीआ)–हिडकियाकुत्ता वरु स्याल वगैरे जानवरोंके काटणेमें आदमीकुं हडक वायूका रोग होता है शरीर खिचता है गलेमें अवाज होता है मूंमें ... हरनी है पानी पीनेमें, या देखणेमें, वायुका जोर उठना है पाणीसे ये रोगी डरता ६ हडकवायु उठेवाद रोगी दो तीन दिनमें मर जाता है–(इलाज)–जिस जगेका-

टा होय उम जगेकुं तुरत काट डालकर जला देणा ये हडकवायु उठे बाद फेर मिटाणेका इलाज फायदेमंद अभीतक कोइ मिला नहीं है, पहलीके तो इलाज और मंत्र करके अजमायाभी है सो हडकवायु बिलकुल उठा नहीं आराम होगया रोगीकूं अंधारी कोठडीमें रखणा नशोंकों ढीली करे एसी दवा देणी जैसेके अफीम भंग बेलाडोना वगेरे दवा देणी ३ कूकडवेल देणेसें सख्त उलटी होकर जहरी जानवर निकल जाते हैं, तेज उलटीकी दवासे रोगी बचता है योगचिंतामणीमें इस रोगकी दवा लिखी है सो देख लेणा.

(लू लगणी)-(सन्स्ट्रोक)-धूपमें फिरणेमें लूलगती है बचोंकों धूपका असर जल्दी मालम देता है, दाह प्यास शिरमें चकर भ्रमण आखर बेहोश तक होणा ये उसके चिन्ह है, (इलाज) खट्टी तथा पित्त शामक दवायें देणी, २ बहुफली तेसें हुकमरियांका लुआब पिलाणा,३करमाला पिलाणा,४गेरू तैसें चंदनका लेप करणा, ५ शिरपर तेसें छातीपर ठंढा पाणी डालणा अथवा बरफ धरणा पोंचीपर विलष्टर मारणा पेरोंकी पींडीयोंपर राईका लेप करणा, ६ बदन बहोत गरम होय तो साधारण गरम पाणीमें रोगीकूं बेठाणा जुलाब देणा बुखार मिटाणेकी दवा देणी धूपमें फिरणेकी जरूर पडे तो शिरपर गीला कपडा रखणा शिरपर आकके पत्ते बांधणा दारू वगेरे जल्द पतला पदार्थ पीणा नहीं लेकिन् चा सोडावोटर और ठंढा शरबत पीणा और पसीना होणे देणा एसा करणेसे फेरभी लूलगेतो छायामें जा सोणा और शिरपर ठंढा पाणी डालणा.

(अनिद्रा)-नींद नहीं आणा ये दिवाना होणेका पूर्वरूप है कितनेक रोगोमें बहोत दरद होणेसें तैसें चिंता डर वगेरे कारणसें निद्रा जाते रहती है-इलाज-जो कारण होय उसकूं रोकणा मगजमें जादा गरमी होणेसें अनिद्राका रोग भया होय तो मगजकूं शांत करे एसा ठंढा इलाज करणा जैसेंके पेठा पाक, दूधी (कद्दूका पाक) अथवा हलवा १ रातकूं गरम पाणीसें स्नान करणा और रातकूं शिरपर ठंढा पाणी डालकर सोणा सोते वखत गरम किया दूध पीणा पग चंपी कराणी पेरोंके तजवे घीसे मसलाणा २ गुडमें पीपला मूलका चूर्ण खाणा ४ पीलू (जालकी जडका क्वाथ) गुड डालकर पीणा ५दूध सहत दही तेलका मालिस शिरमें कानमें आंखोंमे तेल डालणा ६ शाक दाल घी तैसें दूधमें कांदेका रश देणा ६ अफीम तथा भांग फजूल नींद कृत्रिम लाती है, दुखकूं भुलाणेके वास्ते ये कैफी चीजें कामकी है लेकिन् जहांतक साधारण इलाज नींदके वास्ते बण आवे तहांतक एसे नसेका इलाज करणा नहीं.

(मूर्च्छा)-(फेइन्टिंग)-ज्ञानेंद्रियों तथा कर्मेंद्रियोंमें दोष प्रवेश करता है तब मूर्च्छा आती है थोडी देर बाद बेहोस रह कर फेर होसमें आणा उसकूं मूर्छा कहते हैं मूर्च्छा ये विशेष करके मन संबंधी विकार और मनका धक्का लगणा है-(इलाज)-मूर्च्छावाले अदमीकूं शिर नीचे करके बेठाणा मूंपर ठंढा पाणी छिडकणा ठंढा पाणी तैसें

हवा डालणी सोणेके कमरेमें ठंढी हवा आणे देणी खुली हवामें रोगीकूं लेजाणा २ साव चेत करणेवाली दवाकी नाश सुंघाणी हाथ पैर अच्छीतरे मसलणा.

(वेहोसी)-(कोमा)-खोपरीकूं इजा मगजका रोग मूर्च्छा सापका डसणा अफीम तथा दारू वगेरेका जहर वहोत ठंडी वहोत गरमी भूख वाई (मिरगी) हिस्टीरीया वांईटे वगेरे वेहोसीका कारण है, (इलाज)-१ जिस कारणसें वेहोसी आई होय वो दूर करणेका इलाज करणा आंखपर शिरपर ठंढा पाणी छिडकणा, २ तीखी नाश देणी जैसेके अकलकरा कपूर कांदेका रस तज नकछींकणी पींपर वगेरे ३ आमोनिया सुंघणा ४ छातीपर राई मारणी और वेहोसी जादा वखत रहे तो दस्त पेशाबका कोईभी रस्तेसें खुलासा करणा.

(तंद्रा)-(मींट)-ये सन्निपात ज्वरका अथवा भयंकर किसीभी रोगका लक्षण है, इस रोगमें वायु प्रधान होणेसे रोगी आंख मूंचकर पडे रहता है, (इलाज)- सन्निपातकी मींटमे सन्निपातका इलाज करणा और तेज अंजन करणा (भार्ग्यादि काथ नं० १९६) १९७ अच्छा है २ जो रोगीके मर्मस्थानोंमें कुछ चैतन्य होय तो शरीरमें जाग्रती लाणेवाली दवा देणेसे होंस आता है. कस्तूरी अकलकरा तुलशी लींडी पींपर वच्छनाग सूंठ ये हरेक वस्तु जागृती लाती है ३ मींट दूर करणेकूं तज पींपर त्रिकटु वगेरेका अंजन किये जाता है.

(चकर)-(भमळ)-(गीडीनेस)-रोगी वाहरकी चीजोंकों फिरती देखता है अथवा अपणा बदन और शिर फिरता मालम देता है मगजकूं कुछ तकलीप पहोचणेसें तमाखू सराप वगेरे नसेकी चीजोंसें किनाइन जैसी दवायोंसें पांडू नाताकती फिकर चिंता तथा महनतसे खराब पदवोसें बुखार तथा हींडोलेके हींडणेसें चकर आता है, पहोत उंचा चढके नींचा देखणेसें पित्तका विगाड ये भमलका मुख्य कारण है, इस वास्ते कारण जाणके इलाज करणा, (इलाज)-सोंफ काली मिरच मुनका घोटकर पीनेसें पित्तका चकर मिटता है, नसेका चकर ठंढा जल आंखोंपर छांटणेसें मिटता है, कागजी मींठे बिदाम और मिश्री घोट पीणेसें मगज संबंधी चकर मिटता है सूंठ घीमें सेक बूरा मिलाय खाणेसें सबनरेका चकर मिटता है, धमासा रुपभर उकाल पी डालके पीना फेर दोषानुसार इलाज करणा.

(सोजा)-(ड्रोप्सी)-सोजा सब बदनमें होता है किसी एक ठिकाणेभी होता है उसकूं अंग्रेजोंमें (इन्फ्लेमेशन) सें जुदाही रोग गिणते हैं दुसरे कितनेक रोग मांहेसे कारन होता है, तोभी वो रोग दबकर शोथ रोग मुख्य रोग होजाता है, इसवास्ते देशी वैदक शास्त्रमें उसकूं जुदा रोग गिना है, (इलाज)-(१ पुनर्नवादिकाथ नं० २१९) २ पवित्र चूर्ण (नं० २३२) ३ नारसिंह चूर्ण (नं० २३१) ४ सूंठके उका-

लेमें दूध डालकर पीणा ५ त्रिफलाके क्वाथमें भैंसका घी डालके पीणा ६ गुड, तीन वर्षका लींडीपीपर तथा सूंठका चूर्ण खाणा ७ त्रिफला दारूहलदी पटोलपत्र देवदारू नीमगिलोय नीमकी छाल मकोय इनोकुं सम वजन लेके क्वाथकर ठंढा होणेपर सहत डालकर पिलाणा पथ्यमें पुराणे चावल या मूंगकी दाल निमक नहीं देणा ८ धतूरेके बीज शुद्ध तो. १ हींगूल शुद्ध तो. १ काली मिरच तो. २ दूधमें खरलकर रत्ती २ दो नो वखत विना मीठे गउके दूध संग देणा, पथ्य खाली दूध या चावल मिळाकर ९ इसीतरे वसंत मालतीभी इस अनुपांनसे सोजा उतारती है १० संग्रहणी रोगमें दस्तके थांभणेकी दवा देणेसें जो सूजन आई होय तो हमारी बनाई अमृतवटी या ग्रहणी जीप करश तक्र और जीरे सूंठके संग देणा (११ बाहरका इलाज)–साटेकी जड सूंठ तथा वछनागका लेप १२ कांकच आक तथा एरंडीकी जड इन तीनोंके पत्ते पीस गरम कर लेप करणा ९ दोषघ्न लेप नं० ३११.

(दाह)–जलण दोतरेसे होती है एक तो किसीभी जगे, दुसरी सब बदनमें, जख-ममें, भिलावा वगेरे दाहक चीजोंके स्पर्शवाले भागमें, और हाथ पैरोंमें दाह होती हैं, बो तो स्थानिक दाह कहलाती है बुखार वगेरे कितनेक रोगोमें सब बदनमें दाह होती है, (इलाज)–दाह मिटाणेकुं ठंढा इलाज करणा एक ठिकाणेके दाहमें लेप वगेरे बाहरका इलाज और सब बदनके दाहमें पेटमें दवा खाणेकूं देणा २ दशांग लेप चंदन तथा वाला मल्लम अरीठेका जल नवसादरके जलमें भीगाया भया कपडा गुलाब जल लवंडर तथा कोलनवोटर ३ शारीरक दाहमें पीणेकी दवा पित्त शामक दवायें (पृष्ठ २८०) गुलकंद गाजुबांका रस गिलोयका रस तुकमरियाका लुआब बहुफली गोखरू त्रिफला अनार दाख धाणा पित्तपापडा चीलका शरवत चंदलियेका शाग जवका पाणी कली चूनेका पाणी चंदन तथा सूंठकू घसा भया पाणी चावलोंका धोवण चंदन मिश्री और सहत.

(पकणा)–(सप्युरेशन)–किसीभी जगे या मर्मकी जगे पकणा तीक्ष्ण दाहसे जितना रोग हो जाता है उससे बदनमें किसीभी जगे पकणा होता है, फेफसा आंतरा यकृत् मगज ये उसकी मुख्य जगे है खूनका जमाव सोजा दाह तथा बुखार ये उसके मुख्य लक्षण है (इलाज)–पोस्तके डोडोंके जलका शेक २ अलशीकी पोटिस ३ नव-सादरके जलका पोता.

(हड्डीका सोजा तथा सडणा)–इसका मुख्य कारण उपदंश होना है गरमी सुजाकका आगे बढा भया दोष हड्डीमें दाखल होकर उसमें सोजा तथा सडा पैदा करता है, (इलाज) १ योगराज गूगल २ शुद्ध पारेसे बणा भया और पीछेभी सोधा भया रस

कपूर हिंगूल वगेरे दवाभी इस रोगमें फायदेबंद है चतुर वैद्यकी राहसें लेणा जो दवासे नहीं सुधरे तो आखर शस्त्रसे सडा भया भाग निकलवा डालणा.

(ग्रंथी)-(गांठे)-(ट्युमर्स)-रसोली अर्बुद विद्रधी गलगंड कंठमाला वगेरे वहोत तरेकी गांठे होती है, ये गांठे शरीरकी विगडी हालतकूं कहती है अर्थात् वदनमें खून वगेरे धातु विगडणेसें एसी गांठे निकलती है इसवास्ते वाहरका इलाजकरनेसे अंदरका इलाजकीवहोत जरूरी है, (इलाज)-खून सुधारणेवाली दवा जैसें कोडलीवर आयर्न वगेरे डाकतर देते हैं (देशी दवा) कचनार ग्रंथी रोगपर वहोत तारीफ करणे लायक लिखी है कचनार दरखतकी छालका क्वाथ अथवा (कचनार गूगल नं० ४०) वाहरके इलाजोंमें २ दोषघ्न लेप वहोत प्रसिद्ध है और उसका वहोत दिनोंतक जाडा लेप हमेश ताजा ताजा वांधणेसें दोषकूं खेंचता है ४ टिंकचर आयोडाइन हमेस दो तीन वखत लगाणा इसके सिवाय पोल्टीस शेक वगेरे पकाणेका इलाज करणा.

(रसोली)-(मोल्स्कम)-एक तरेकी वढणेवाली गांठकूं रसोली कहते हैं वो दावणेसें नरम गहुंके कणक जैसी मालम देती है, चीरणेसें उसमें एक थेली मालम देती है उसमेंसें चिकणा रस अथवा गहुंके कणक जैसा डूचा निकलता है उसका पीप खराव वदवो मारता है (इलाज)-गुल देणेसे तथा विखरणेकी दवा लगाणेसें मिटती है, २ आयोडीनपेन्ट, जो मेदकी गांठ तकलीफ नहीं देवे उसकूं छेडणा नहीं अडचल देणेवाली रसोली जो उपर लिखे इलाजसें अच्छी नहीं होय तो शस्त्रसे निकलवा डालणी.

(तिली)-(स्पलीन)-पेटके वांई तरफ पांसलीके नीचे तिली विषम ज्वर और मेलेरियाके ठंढ देके बुखारमें पैदा होती है जब ये वहोत वढती है तब सब पेटमें भर जाती है ठंढके तपके हुमलेमें तिली खूनमें भर जाती और उसमें खून जमजाता है, इसी सबवसें तिलीवालेका चहरा खून विगरका फीका लगता है, (इलाज)-१ तिली पर ऊमर मुजब २५ जोंके लगाणी २ जो इस रोगमें दस्त नहीं लगता होय तो दस्त लाणेकी दवा देणी जैसेंके हरडे अथवा सल्फेट ओफ सोडा कीनाइन और आयर्न देणा जो स्वतः दस्त लगता होय तो सोडा नहीं देणा ३ बुखार संग होय तो बुखारकी दवा देणी ४ जो बुखार विगर तिली कुछभी दरद करे विगर वढती होय तो कीनाइन और लोहकी वणी दवा देणी ५ ऊपरकी चमडी गीली होय तहांतक पौष्टिक दवायें निरंतर हमेस टिंकचर आयोडीन लगाणा ६ आयोडाइड ओफ मर्क्युरीका मलम लगाना ७ कुमारिकासव लोहासव, मंडूर भस्म, चंद्रप्रभा सहजणा सरपंखा इसकी छालका चूर्ण अथवा क्वाथ पीना.

(शानक्रिआई)-(एब्सेस)-कानके अंदरका फोडा)-(इलाज)-इसपर ठंडीका उपाय करना २ अफीमके डोडोंका गरम पानीका सेक करणा अलसीकी पोल्टिस

अथवा गहूंकी पोल्टिस बांधणी पके पीछे उसकूं फोडणी दवा लगाकर या शस्त्रसें पीछे भरणेका इलाज करणा.

(बद)-(ब्यूवो)-बदकी गांठ आजकल बहुतोंके होती है वो बदफेली सुजाक और गरमीसें होती है, (इलाज)-दोषघ्न लेप अलशीकी पोल्टिस २ नवसादरका पोता ४ बडके दूधकी या गूलरके दूधकी या कोनरू गूंदका लेप करणा या पट्टी मारणी ५ पारेका मलम ६ सीसेकी पट्टी या गुड चूनेका लेप कर रुई चपकाणा ७ या गुडकूं पाणीमें डाल उकालते जाणा और भंग पीस बुरकाते जाणा जाडा भये बाद लुपरी बांधणी दुसरे दिन फेर इसीतरे बहोत दिन करणेसें बैठ जाती है, पकणेसें चीरा दिलाणा या दवा लगाके फोडणा पोल्टिस बांध पीप निकाल भरणेका इलाज करणा.

(पाठा)-(कार्बकल)-(उसके लक्षण)-चमडी लाल तथा करडी जलण तथा दरद होता है, थोडे वखत पीछे सूजन दिखाई देती है, और काछवेकी पीठ जैसा उपसा भया गोल करडा फफोला उठता है सोजा बढणेके संग जलण तथा दरद बढे बुखारके लक्षण होय थोडे दिनोंमें पाठेका रंग काला पडता है और सूजनके चोतरफ छोटे२ दाणे जैसी फुणसियां होती है वो फूटणेसें पाठेमें छेद पड जाता हैं, उनोंमेंसें पीप झरता रहता है, तोभी पथर जैसा करडा होता है थोडेही दिनोंमें रोगी नाताकत होकर घभरा जाता है आगे बढणेसें सब छेदके आसपासकी चमडी सडकर निकल जाती है, और उस जगे बडा खड्डा पड जाता है, उसमेंसें बदबो मारता पीप तथा मांसका छींछडा निकलते रहता है, पाठा जादा करके एकही होता है, लेकिन् कितनी एक वखत एक मीटे पीछे पासहीमें दुसरा दुसरा मिट कर तीसरा अथवा संगही पांच सात पाठे होता है, पाठा बहोत करके पीठकी करोडपर गरदनपर खंधेपर चूतडोंकी बिचली हड्डीपर कभी २ हाथ पैर होठ छाती पेट वगेरे ठिकाणोंमेंभी होता है, (इलाज)-१ जुलाब लेकर पेट साफ करे पीछे बुखारकी दवा लेणी २ जलण तथा दुख मिटाणेकूं दशांग लेप गुलाबजलका या कपूरके पाणीका या चंदनके पाणीका कपडा धरणा ओपियम और बेलाडोनेका लेप अथवा विलाष्टर मारणा ३ सबसें अच्छा इलाज गहूंके आटेकी या अलसीकी पोटिस है, इस पोटिससें पाठा फूटे तो चीरके निकलवाणा नहीं कारण पाठेके रोगसे भई नानाकतीसे रोगी शस्त्रसह नहीं सकता फूटे पीछे व्रणका इलाज करणा गरम पाणीमें हमेस धोणा छींछडे निकाल डालणा ४ टरपेन्टाइन तथा सालिडका तेल अथवा जात्यादि तेलमें रेसेवाला कपडा या लीटकूं भिगाकर पाठेकी पोलारमें दबाकर ऊपरमें पोटिस मारणी ५ कारबोलिक एसिड १ ड्राम उसकूं २ औंस पाणीमें मिलाकर उसका लोशन पाठेपर धरणा और पाठेकी जमीन जहांतक दीखे तहांतक सादे मलमकी पट्टी मारणी ६ जात्यादि घृत पाठेमें भरणेमें और उसपर दोषघ्न लेपका जाडा थर लगानेमें

पाठा जलदी आराम होता है ७ पाठेके रोगमें खून साफ करणेवाली तथा दवा ताकत वर पेटमें जरूर लेणा चाहिये.

(भगंदर)-(नवासीर)-(फिस्युलाइनएनो)-गुदा चक्रके आसपास एक बडा गंभीर व्रण होता है उसकूं भगंदर कहते हैं भगंदर पुराणा भये बाद बहोत बढता है तब बैठकमें दुसरा मूं करता है उस करके भगंदरमेंसें पीपके संग दस्तभी आता है एसा भगंदर मिटता नहीं (इलाज)-गुदा चक्रके आसपास फुणसिये होय तब लंघन जुलाब वगेरे करणा त्रिफला गूगलका सेवन करणा, पथ्य प्रमेह तथा हरस मुजब करणा रातका भिजाया भया अन्न कच्चा करडा ठंढा अन्न गरम पदार्थ उंठ घोडेकी सवारी मैथुन ऊकडु बैठणा दिनकूं सोणा तथा कृमि पैदा करणेवाले पदार्थ गुड तैल बैंगण हींग जादा मिरच भगंदरवाला आराम भये बादभी वर्षभर पीछे नहीं करै भगंदर पांच किस्मका होता है, हर किस्ममें फुणसियें फोडे और जखम होते हैं इसके होणेका मूल कारण गरमी सुजाक या अशुद्ध पारेकी दवा खाणा वा जे वखत कृमिरोगसेभी ये होजाता है, इस रोगमें दस्तकी दवा लेते रहणा त्रिफला सनाय वगेरे २ फूटे पीछे इसकूं चतुर डाकतरसें चीराणा अथवा आकका दूध इस घावमें भरणा अथवा कोइभी नीलाथोथेका सोरेका गंधकका तेजाब या साजीखार वगेरेसें घावकूं जलाणा या गुल देणा पीछे आइडोफारम वगेरे भरके व्रण भरणेका इलाज करणा ३ निसोत तिल जमालगोटा मजीठ और सींधानिमक घी तथा सहत इन सबोंकों पीस भगंदरपर खूब मसलकर पीछे लेप कर देणा ४ हरडे बहेडा आंवला के रसमें बिल्लीकी हड्डी पीस इसीतरे लेप करणा ५ थोहर तथा आकके दूधमें दारूहलदीकूं पीस उसकी वत्ती भगंदरके छेदमें देणा ६ त्रिफला भैंसा गूगल तथा वायविडंगका काढा पीणा ७ वायविडंग त्रिफला और २ भाग पीपर इनोंका चूर्ण सहत तथा तेलमें चाटणा ८ त्रिफला १८ तोला शिलाजीत शुद्ध १८ तोला पींपर १८ तोला इलायची १८ तोला वंशलोचन १८ तोला वायविडंग १८ तोला गिलोयसत ९ तोला समवजन बीकानेरकी मिश्री मिलाय दूध तुरतका दुहा भया उसमें सहत डाल तोले दोयकी फक्की दोनों वखत लेणी और पूर्वोक्त पथ्य करे कसरत क्रोध करे नहीं भारी अन्न खाय नहीं भगंदर निश्चै मिटै.

(नासूर)-(नाडीव्रण)-जखम जब रगोंमें प्रवेश करता है, तब नासूर होजाता है नासूरका मूं सांकडा जखम गहरा होता है तथा उसमेंसें पाणी तथा पीप झरते रहता है, (इलाज)-१ त्रिफला गूगल आंवला योगराज गूगल हवा बदलणी (अच्छा ... खुराक) तथा चोफूलिया चीरा दिलाणा सल्फेट ओफ झिंक ३ से ५ ग्रेण पाणी १ औंस पिचकारी लगाणी कास्टिक २ से ३ ग्रेण डिस्टील्ट वोटर १ औंस दोनोंकों मिला पिचकारी देणी ५ टिंकचर आयोडिन १ ड्राम पाणी १ औंस पिचकारी मारणी

५ नासूरका छेद वडा होय तो कास्टीककी अणी नासूरके मूंमे देणी ६ रूपेकी सली सोरेके तेजाबमें डबोकर नासूरके छेदमें फेरणेसें किसी वखत नासूर मिट जाता है.

(गूमडा)-(छोटीगांठे)-(बोइल्स)-जादा करके चहेरेपर थोडे दरदवाली गांठे संख्याबंध होती है उसकूं गुमडे कहते हैं वो करडी मटर जैसी जरा आसमानी रंगकी तथा लाल रंगकी होती है, उसमें पीप धीरे२ होता है, और कितनीक जातके गुमडोमें पीप नहीं होकर धीमें२ बैठ जाता है, उसमेंसे जो पीप निकलता है वो विगडा भया होता है, वहोत पित्त प्रकृतिमें तथा पित्तकारक और अवगुणवाला खुराक खाणेसें खून गरम होकर विगड जाता है, तब एसा गडगूमड निकलता है, गरमीकी मोसममें ये जादा निकला करता है, (इलाज)-पित्तशामक दवाइयोंसें खूनकी शांति करणी जैसेके मंजीष्टादिक्काथ चंद्रप्रभा आंवलोंकी बनावटे अमृतवटी वगेरे २ त्रिफला गूगल ३ कंचनार गूगल ४ खेरसार तथा त्रिफलाका क्काथ ५ नींबकी छालका क्काथ बाहरका इलाज ६ वडी गांठोंका इलाज इस छोटी गांठोपरभी चलता है जैसेंके शेक पोटिश नस्तर मलम पट्टी ७ कोनरूगुंद रसोत रक्तचंदन कपूरकाचरी खापरिया वगेरे रोपण दवायोंका लेप करणा.

(खील)-(व्हिटलो)-अंगलियोंके पेरवेमें कांटे जैसी कोइ बारीक चीज रह जाणेसें वो पक जाती है. और बहोत दरद करती है, (इलाज)-खारेतूंबेका फल सिजाकर बांधणा ग्रंथी तथा व्रणका इलाज करणा एक कपडेके मख्खण लगाकर उसपर नोसादर कपूर भुरका कर बांधणा और पाणीकी भीगी पट्टी हरदम रखणेसें फायदा करती है.

(आंजणी)-(स्टाई)-ये दरद जाहिर है, गरम पाणीका शेक करणा सिंदूर लगाणा अथवा सिंदूरवाला लेप चोपडणा सुईकी अणीसे आंजणीकूं फोड डालणी आंजणी का दरद खूनके विगाडसे होता है,वो वेर २ मिटता है, और फेर होजाता है, इसवास्ते खून सुधारणेकी दवा देणी मारवाडमें आंखमें होती जिसकूं गुरांजणी कहते हैं.

(व्रण)-(चांदी)-(जखम)-(अलसर्स)-जखमसें अथवा दुसरे कारणसें कोईभी जगे पककर फूटता है उसमें जखम अथवा चीरे पडणेसे वो जगे गीली होजाती है उसमेंसें पाणी और पीप झरता है कुष्ट रोग गलत कोढ उपदंश और खुजली वगेरे दरदोंमेंभी चीरे पडते हैं व्रणकी वहोत जाति है मुख्य २ इस मुजब (१ नाडीव्रण)-नाडीके संग संबंध रखणेवाला व्रण.

(२ सादाव्रण)-तनदुरस्त अदमीके भया २ जखम.

(३ नाताकत जखम)-जखमका अंकूर वडा फीका और उंचा होता है, कोर नीची होती है, पीप पतला पाणी जैसा और जखम धीरे२ रुकता है.

(४ दुष्ट जखम)–विगडा भया वदवो मारता पीप निकलता है सपाटीपर मराहुआ मांसका सडा भया भाग सुपेद या काले रंगका होता है, ये जखम फैलता है.

(५ दाहक व्रण)–जखमके आसपास सूजन अंदर दरद होता है.

(इलाज १)–पहली सोजेका इलाज करणा इसपर लेप पोल्टीस गरम पाणीकी वाफ वगैरे इलाज होता है, पित्तके जलणवाले जखममें दशांग लेप गीला या सूका लगाणा अथवा एसीही दुसरी ठंढी चीजोंका लेप करणा वादी तथा कफके जखममें सोजेमें दोषघ्न लेप छाछमें पीसकर करणा अलशीकी गहूंकी थूली या आटेकी या कांदेकी गरम पोल्टिस वांधणी पोस्तके डोडोंके गरम पाणीका शेक करणा वेर २ इसतरे व्रणकूं पकायां पीछे उसकूं फोडणेका इलाज करणा शस्त्रका इलाज सवसे अच्छा है क्योंकी इससें विगडा भया दोष जल्दी निकलता है, जो पका व्रण जल्दी नहीं फूटे तो अंदरका पीप विकार करके खरावी करता है, शस्त्रका पूरा वैद्य नहीं मिले तो फोडणेकी दवा लगा जमाल गोटेकी जड चित्रककी जड थोर तथा आकका दुध गुड मिलावा हिराकशी सीध निमक इनोकों पाणीमें पीस पके भये व्रणपर लेप करणेसें व्रण जल्दी फूट जाता है, हाथीदांतके भूकेकूं पीसके पके भये फोडेपर वूंद डालणी साजीखार जवखार वगैरे खार लगाणेसेंभी तैसे (जालका) दारूडीका लेप करणेसें फोडा फूट जाता है.

३ पीछै उसकूं शोधन करणेकी जरूरी है, इसवास्ते फेर फोडेपर शेक तथा पोल्टिस वांधकर पीपकूं वाहर निकाल डालणा तिल मोलेठी नीवके पत्ते दारूहलदी हलदी निशोतकी छाल सींधानिमक पाणीमें पीस घी मिलाकर फूटे व्रणपर लेप करणा अथवा पहली लिखी चार चीजोंका लेप करणा ४ दुष्ट व्रणकूं सुधारणेवास्ते कडवे नीवके पत्ते तिल जमालगोटेकी जड निशोत तथा सींधानिमक इनोंका चूर्ण सहतमें मिलाकर फोडेपर वांधणा उपलसिरीका लेप करणा फकत नीवके पत्ते पीस चिकते फोडेपर वांधणेसें दोष का शोधन होता है, नीलेथोथेके पाणीमे फोडेकूं धोणा अथवा नीलेथोथेकी टली फोडेपर दो चार दिन लगाणेसें उसकी दुष्टता दुर होती है, कोनरूगूंदकी गंधे विरोजेकी पत्ती लगाणी ५ व्रणमें जीव पडे होय तो करंज कटवा नीव तथा संभालूके पत्ते पीस लेप करणा इसमें जरा कपूर मिलाणा लसण पीसके लेप करणा कटवे नीवके पत्ते तथा हिंग पीसके लेप करना कीडे सुपटणा इन दवायोंसेंफोडेके कीडे निकल जाते हैं, हीराला (कुन्दासंग) पीसें मिलाकर दावणा नीलाथोथा गोपीचंदन तथा गेरू दावणा करणा तथा [illegible] पीसकर दावना कत्था ४ भाग हीग १ भाग पीसकर दावणा लिखी [illegible] पीस मदन मिलाकर फूटे घाव पर लेप करना मदन तथा मधार लेप करना [illegible] इनसबोंके पत्तोंका लेप करना कानी तुलसीके पत्तोंका लेप करणा [illegible]

महीन चूर्णकूं पाणीमें पीस लेप करणा जात्यादिघृत तथा जात्यादि तैल (नं० २०२) (२९९) इसकी वत्ती बणाकर घावमें भरणेसें तथा पिचकारी मारणेसें गहरा अंदर गयाभी व्रण भर जाता है, अथवा नाइट्रिक एसिड लगाकर पीछे पोटिस बांधणा जिससे विगडा भया मांस अलग होकर घाव अच्छा होकर जब ठहरता है, तब घाव भरणेकी दवा लगाणेसें भर जाता है आइडोफोर्म कारबोलिक तैल एसिडका मलम अथवा नाइट्रिक एसिड ४ बूंद पाणी १ औंस २ क्लोरलहाइड्रेट १० ग्रेण पाणी १ औंस ३ सल्फेट ओफ झिंक २ ग्रेण पाणी १ औंस (७ व्रणकूं धोणेकी दवा)–दारू हलदीका क्काथ४मासेका क्काथ पंचवल्कलका, उकाला नींबका पाणी, त्रिफलोंका पाणी, स्तंभन दवायें, रोपण दवायें कारबोलिक लोशन (नं० ५५०) ५५१ तथा ५५२ का लोशन कोन्डिसफलुइड (नं० ५६९) ८ पेटमें खून साफ करणेकी दवा खाणी चहिये जब घाव नहीं भरे तब गूगल और गूगलकी सब बणावटें अकसीर इलाज है, गूगल व्रण शोधक है, त्रिफला गूगल किशोर गूगल तथा कचनार गूगल ये सब अच्छे हैं देखो गूगलका बयान.

(गंभीर व्रण)–जो जखम बहोतही गहरा और हड्डीतक पहुंचा होय और भरता नहीं होय उस व्रणमें हड्डी सडी भई प्रायें होती है, (१ इलाज)–गूगल इसपर सर्वोत्तम इलाज हैं, योगराज वगैरे बहोत दिनोंतक साधन कराणा दुष्ट व्रणका एक एसाभी इलाज फायदेमंद सुणा है, पुराणा सो वर्षका दिवालका चूना महीन पीस घीमें मिलाय गंभीरव्रण में भरे तो घाव अच्छा होय २ खैरसारकी उकालीसें इस व्रणकूं धोणा.

(पथर)–(भाठा)–(बेडसोर्स)–बहोत दिन बेमारी रहणेसें रोगीकी पीठमें पत्थर जैसें होते हैं पहली लाल चांदी गिरती है और पीछेसे वो भाग सडकर गलता है, (इलाज)–कोयलेके भूकेकी पोटिस मारकर भाठेका सडा भया भाग अलग करणा एरंडीका तेल लगाणा अथवा इसका पोता धरणा २ वोटरड्रेसिंग (नं० ५४०) ३ कारबोलिक लोशन १ भाग कारबोलिक एसिड और ४० भाग पाणीसे धोणा उस-पर आयडोफोर्म भुरका कर कारबोलिक तेल धरणा एक तरफ बिछोनेमें बहोत दिन पडे रहणेसें शरीरका जो जो भाग दबे रहता है, उसमेंसें स्पर्शज्ञान कम होता है, उस करके भाठा पडता है, उहांतक तो बेमारकूं मालम नहीं पडता इसवास्ते एसे बेमारकी हर-बखत दरियाप्त करणी फेर एसे दबे भये बखतें मेंथ भागोकूं हमेस दो वखत फिटक-डीके पाणीसे धोणा जिसमें चमडी करडी होजावे.

(गुदभ्रंस)–(कांच)–(प्रोलेप्समईनएनी)–गुदाके अंदरका भाग बाहिर निक-लता है, नाताकत अदमियोंके नाताकत बचोंके कांच निकलती है, दस्तोंकी बेमारीमें बेर२ करांजणेमे आमण निकलती है, (इलाज)–कांच बहोत करके आपहीसे अंदर चली जाती है, अथवा बेमार आपही दाबकर अंदर दाखल कर सकता है, कांचनार

तेल लगाकर उसपर एक कपडेका टुकडा धरकर अंगुठेसे दबाकर अंदर डाल देणी हरस पथरी मूत्रग्रंथी वगेरे जो कारण होय उसका इलाज करणा २ गऊका गोबर गरम कर उसका सेक करणा ३ खट्टी वस्तुओंसें सिद्ध करा भया घी चुपडणा ४ भंगकी लुगदी बांधणी ५ हीराकसी १ से २ रत्ती तीन तोला जलमें मिलाकर उसकी पिचकारी लेणी अथवा उससे कांच धोणी तब सुकड कर बैठ जाती है, ६ गहूंके आटेमें अच्छीतरे घीका मोण देकर उसका शेक करणा ७ जामुनकी छालकी उकाली छांटणा.

(कूब)–(हम्प)–करोडकी हड्डी बांकी होती है, उसकूं कूब कहते हैं, ये तीन तरेकी है अगली १ पिछली २ बाजूकी ३, (इलाज)–योगराज गूगल.

(अंत्रवृद्धि)–(सारण)–(हर्निया)–पेटके पडदेके छेदोंके रस्ते आंतरा जांघकी जडमें ऊतर आवे इसके सिवाय आंतरे वृषणकी कोथलीमें उतरता है, तैसेंइ नाभिके छेदके रस्ते पेटके ऊपर चढ आता है, उसकूंभी कितनेक सारण कहते है, निश्चै देखणेसें वृषणके आंतरोंकों अंतर्गल और नाभिपर चढे भये आंतरोंकों टूंडा एसी जुदी२ संज्ञासे पहिचानते हैं, (इलाज)–आंतरे नीचे नहीं उतरे इसवास्ते कमर पट्टा आता हैं वो बांधणा २ आंत उतरे तो नवसादरका पोता धरणा तो संकुडा कर चढता है.

(अंडवृद्धि)–(हाइड्रोसील)–(कारण)–सोजेसे जल भरणेसें खूनके भरणेसें गांठ होणेसें नस फूलणेसें कोथलीकी चमडी जाडी होणेसें आंतरा उतरणा वगेरे बहोतसे कारणोसें आंड बढकर बडे होते हैं देशी वैद्यकमें इन सब रोगोंकूं वृद्धि कहते हैं अंग्रेजीमे इन सबोंका नाम जुदा२ है, सो लिखते हैं,

(आंडोंकाबरम)–(ओरकाईटीस)–वृषणबडे उसमें बहोत दरद थोडा बुखार उलटी (इलाज)–१ कोथलीकूं गदीके आसरेसें अथवा पट्टेसें अधर रखणी गरम पाणीका सेक और बेलाडोनाका लेप २ रेचक तथा पसीनेवाली दवा देणी दोपग्न लेप जल्दी उतारता है,५ जीर्णबरममें पारेका मलम लगाणा ६ सेलारस तथा तमाखूका पत्ता बांधणा ७ रालके लेपकी आडी खडी पट्टी मार उसपर लंगोटी मारणी.

(जलवृद्धि)–(हाइड्रोसील)–वृषणकी कोथलीके आसपासके रस पुडतमें पाणी भर जाता है, इस तरे पाणी भरणेसें बढते हैं छोटे बचोंके जो नल बढते हैं, उसमेंभी यही कारण है (इलाज) एरांडी तेलके जुलाबसे साधारण नलवृद्धि मिटती है. २ डाकतर लोक पाणी नस्तरसें निकालकर पिचकारी फेर एसीभी देते हैं सोफेर पाणी नहीं भरता ३ एसा सुणा है की पंजेवाली थोरके कांटे छीलके उसकूं गरम जलमें सीजा, कर बांधणेसें चमडीमेंसें पाणी झर२ निकल जाता है, फेर कपडेपर मखण लगाकर ।।।।।९ भुरका कर पट्टी बांधणी फेर फिटकडी या मांजूफल हरडे इत्यादि भुरकाणा जिससे घाव सूक जाता है, काली तमाखूके पत्ते बांधणेसें उलटी होकर कम पडजाता है.

(रक्तजन्यवृद्धि)–(हिमोटोसील)–रस पुडतमें खून भर जाता है, वृपणमें कुछमी तकलीप पोहचणेसें एकाएक नल नारंगी जितना होजाता है, अंदर खून झरणेसेंभी रक्तवृद्धि होती है, ये वृद्धि पाणीकी वृद्धिसेंमी जादा कष्टदायक होती है, (इलाज)–१ ठंडे पाणीका या नवसादरका पोता धरणा २ जुलाबकी दवा देणी ३ खून जम जाय तो कोथली चीराकर निकलाणा.

(शिरावृद्धि)–(वेरीकोशील)–शिरा याने रगें फूलणेसें वृपणका कद वडा होता है–वृपणकी शिकल आंडोंकी तरफ तो वडा और पेटकी तरफ संकडा होता है–थेलीमें कमियां भरी होय एसा मालम देता है, सुणेसें तथा दाबणेसें कदमेंकम होता है, और खडे रहणेसे फेर भर जाता है हवा भरणेसे ये रोग होता है लंगोट या काछिया बांधणा.

(वृपणकी गांठ)–(सारकोसील)–गरमी सुजाक वगेरे शारीरक बेमारीसे नलोंकी गांठ वधकर नींवू जैसी करडी होती है, गरमी सुजाक भये पीछे बहोत दिन पीछे नलोमें गांठ होती है इसवास्ते सुजाक गरमी मिटे एसा इलाज करणा राजलका लेप लगाणा दोपघ्न लेप लगाणा वहोत मुदत भये पीछे इलाज लगेगा नहीं.

(कोथलीकी वृद्धि)–(एलीफन्टायासीस)–इस बेमारीमें गोलीकूं कुछ इजा नहीं होती लेकिन् कोथली जाडी होती है, और उसमें वरम होकर वधते २कितनीएक वखत इहांतक वढती है, सो खडे रहे अदमीकी कोथली जमीनतक पहुंचती है, और वजनमें ५० से सो रतल तककी होती है, (वृद्धिका सामान्य इलाज)–१ एरंडीका तेल सबसे अच्छा इलाज है दूधमें मिलाकर एक महीनेतक पीणा २ एरंडी तेल गूगल गोमूत्रका सेवन करणेसें बहोत दिनोंतक, तो नल वढणा मिटता है, ३ ठंडा लेप और जोक लगाणेसें पित्त और खून भरणेका नल वढता मिटता है, तीखे तथा गरम लेपोंसें सेक तथा बांधणेसें रसवृद्धि तथा मेदवृद्धिका नल मिटता है, ४ रास्नादि क्काथ और योगराज गूगलका साधन अंत्रवृद्धि तथा वायु संबंधी नलका रोग मिटाता है,५कडवे तूंबकी जडके क्काथमें एरंडी तेल तथा दूध डाल पीणेसें सब तरेका नलवृद्धिका रोग मिटता है, ६ वच तथा सरसूका लेप करणा अथवा सहजणेकी छाल और सरसूंका लेप करणा, ७ दोपघ्न लेप सबमें फायदेमंद है.

(जलणा)–(बर्नसएन्डस्कोल्डस)–(दाझणा)–दाझणेकी और जलणेकी बदनपर जखमकी तरे असर होती है, १ जलाणेवाली गरम चीजके थोडे स्पर्शमें चमडी लाल होती है, और जलती है, २ जादा जलणेमें फफोला उठता है, ३ और मस्त जलणेमें ऊपरकी चमडी तैसें अंदरके पुडतकाभी नाश होजाता है चमडी बिलकुल स्याह होजाती है, (इलाज)–कपडे जलणे लगे तब दोडणेके बदले जमीनपर सोकरके शरीरकूं जमीनके संग अथवा पासमें पडी चीजके संग घसणा जिसमें भडका बंद होगा जलेगा नहीं

अगर जो पास जल होय तो ऊपर डालणा, २ पीछे बेमारकूं बिछोणेमें सुलाणा और वहोत इजा गई होय तो उसकूं सतेज करणेवास्ते गरम काफी अथवा पाणी पिलाणा डाकतर लोक ब्रांडी पिलाते हैं, ३ जले भये भागके ऊपरका कपडा फाडकर निकाल डालणा लेकिन् जली भई चमडीकूं अलग करणी नहीं ४ पीछे टरपेन्टाइन अथवा स्पीरिट वाइन अथवा केरोसीन (घासलेट) अथवा ब्रांडी और सम वजन पाणी अलशीका तेल घी अथवा तिलीका तेल और चूनेका नितरा भया पाणी इनोंके अंदरका कोई भी पतला पदार्थमें महीन कपडा भिगाकर दाझे भये भागपर धरणा और कपडा तर रखणेकूं वोही पतला पदार्थ सींचते जाणा ५ ये चीजों तुरत नहीं मिल सके तो जले भये भागपर चावलका या गहूंका महीन आटा जखम ढक जाय तहांतक जाडा थर करके दाबणा इस आटेका पापडा जमकर आपही खरूंट लेकर उतरता है, लेकिन् जो कभी पीप पड जाय तो पापडा उतार धीरेंसे जखमकू धोकर सादे मलमकी पट्टी मारणी फफोले उठें होय तो सुईसें फोड पाणी निकाल डालणा लेकिन् चमडी उखेलणी नहीं इस जलणे या दाझणेपर इतना खयाल जरूर रखणा सो ठंडा पाणी या ठंडा इलाज कभी करणा नहीं नुकशान करता है, इहांतककी बाहरकी हवाभी उसके अंदर नहीं घुसणे पावे उस जली भई जगाकूं थोडी देरभी खुला रखणा नहीं.

(जखम)-(वुन्ड)-तलवार छुरी वगेरे कोईभी हथियार लगणेसे चमडीका कोईभी भाग कट जाता है, (इलाज)-पहली तो वहते खूनकूं बंध करणा इसकी जरूरी है, रक्त स्तंभक दवा ७७ (२९२) का पाणी डालणा अथवा उनोंका चूर्ण दाबणा ३ निमकके पाणीका पट्टा बांधणा, ४ इकेला पाणी डालणेसे खूनकी नली दाबणेसे अथवा बांधणेसें जखमका खून बंध होता है, वडे जखमोंके शस्त्रवैद्य हैं सो टांके देकर सांधते हैं, वडे जखमकी दोनुं कोरें जब एकठी मिलती है तभी उसमें भराव आता है, खेंचकर पट्टा बांधणेंसे जखम मिल जाता है, ५ रालके पलास्टरकी पट्टी मारकर जखमके दोनो नाके एक जगे करणा एक वेर धोकर साफ करे पीछै जखमपर वेर२पाणी डालणा नहीं ६ भराव लाणेकूं तेलका पट्टा बांधणा और तेलही सींचते जाणा ७ कारबोलिक एसिडमें दशगुणा तिलीका तेल मिलाकर उसकी पट्टियें लगाणी दो दो दिनसें बदलणा ७ बोरासिक एसिड एक द्राममें एक औंस सादा मलम मिलाकर पट्टी लगाणी जल्दी भरणेके वास्ते उसमें आयडोफोर्म मिलाणा (पका भया जखम)-९ पोटिस बांधणा हमेस एक दफे कारबोलिक लोशनसें धोणा एक भाग कारबोलिक एसिड धोणेवालेमें ४० गुणा जल मिलाणा.

(हड्डीका टूटणा)-(फ्रेक्चर)-हड्डी सांधणेका कुदरती काम जैसा अंदरकी शक्ति करती है एसा आदमी नहीं कर सकता हड्डी जोडणेवाले वैद्य जर्रे और डाकदर ठेप

और मलम पट्टीकेवास्ते मगरूरी रखते होय तो वेलाशक रखे लेकिन् उसमें मुख्य कारीगरी निर्माण नाम कर्म कुदरतकी है, अदमीकी हाथ चलाकी और चतुराई फकत हड्डीकूं ठिकाणेपर बैठा देणेमें काम देती है, और पीछे हड्डी सांधणेका काम कुदरतसे याने स्वभाव वगेरे सववायोंसें आपही होजाता है, इसमें पुरुषकृत उद्यम समवाय इतना काम जरूर देता है, हड्डीके टूटे भये दो टुकडे जोडे पीछे रोगीने इतनी सावधानी रखणीके जहांतक टूटा भया अवयव संधी जे उहांतक जराभी हिलाणा नही इस टूटे भयेकूं सांध मिलाणेमें पट्टा प्रमुख बांधणेसें इसवातका अनुभवी वैद्य डाकदरोंकी सल्ला लेणी उनोंसेही बंधाणा, (इलाज)-(१ नं० ३१८) वाला लेप २ सोवेरके धोये भये घीमें चावलोंका आटा मिलाकर उसका लेप करणा ३ मैदा लकडीका चूर्ण या सादडकूं दूधमें पीणा ४ लसण सहत और पीपलकी लाख घी सकरसें चाटणा ५ गहूंके आटेका घी गुड मिला हलवा हमेश खाणा.

(लचक)-(किचरीजणा)-(स्फईन)-शरीरका कोईभी भागकूं कुछ इजा होती है, तब उस जगे खून जमणेसें सोजन तथा दरद होता है, (इलाज)-अशालियेका लेप २ आंबा हलदी साजीखार तथा मैदा लकडीका लेप ३ बांबूलके पत्ते बाफकर बांधणा ४ ब्रांडी स्पिरिट वगेरेका भीगा कपडा धरणा ५ ईस सयाने कोनरू गूंदका लेप ६ डाकदर लोक मुरगीके इंडोके छिलकोंका लेप कराया करते हैं, ७ गूगलका लेप ८ ओपियम लीनीमेन्ट लचकवाले सांधेकूं मजबूत पट्टेमें लपेटणा ९ लचक पुराणा भये पीछे उसपर तेल लगाकर अच्छीतरे सेक.करणा १० टिंकचर आयोडीन लगाणा.

(चोट)-(कन्टयुशन)-चमडीपर जखम पडे विगर शरीरका कोइभी भाग किचरीजे अथवा पछाडीजे अथवा मार पडै तब उसपर ठंढा लोशन लगाणा १ भाग स्पिरिट ८ भाग पाणी उसका पोता धरणा २ सोजन तथा दरद होय तो सेक करणा लचकका सब इलाज इसपर करणा सूजी भई जगा पकती मालम दे तो पकाणेका इलाज कर फूटे बाद घाव भरणेका इलाज करणा.

(धोरीरगका कटणा)-जखम होणेसें हर शखसें जब धोरीनस कट जाती है, तब उसमेंसें चिरमी जैसा लाल खूनकी धार शीर फूटती है इस धार अथवा शीरका जल्दी अटकणा नहीं होय तो रोगीका चेहरा फीका होते जाता है, नाडी नाताकत पडते जाती है, चक्कर आता है, और आखर बेहोस होकर मर जाता है, (इलाज)-छोटी नस होय तो फक्त ठंढा पाणी डालणेसें बंध होजाती हैं अथवा ठंढा पाणीमें भिगाया भया कपडा जखमपर धरणा जो पाणीसे बंध नहीं होय तो फिटकडी अथवा मांजू फलका पाणी या भुकणी जखमपर दवाणा ३ टिंकचर ओफ स्टीलमें कपडा भिगाकर कटीभई नसपर धरणा अथवा कास्टिककी अणी नसके मूंपर लगाणी खून तुरत बंध होगा ४ नसपर दाबणेमें

अथवा जहां कटा होय उसके ऊपरके भागमें कसके डोरी बांधणेसेंभी खून बंध होजाता है, ५ धोरीरग कटी होय और ऊपरके इलाजोंसें खून बंध नहीं होता होय तो डाक्टर जहांतक आकर नहीं पहुंचे तहांतक ऊपर लिखे इलाज करणा नसपर बांधणा और दबाणा इस बातोंकों भूलणा नहीं कटी भई नसपर सखत गद्दी धरकर जोरसें पट्टा बांधणेसें जल्दीके वास्ते खून बंध हो जायगा, ६ योग्य इलाज होणेके पहली खून बहोत निकल गया होय उस करके अदमी बहोत नाताकत होकर बेहोस होगया होय तथा नाडी हाथ नहीं लगती होय तब डाकतर लोक ब्रांडी पाणीमें मिलाकर देते हैं, अथवा पोर्टवाइन या द्राक्षासव देते हैं, साल बोलेटाल बूंद ४० सें ६० तक थोडे जलमें मिलाकर पिलाणा इस करके नाडी अगर तेज नहीं होय तो फेर पिलाणा ७ शीरा दूध मिली चावलोंकी कांजी वगेरे अच्छा पौष्टिक खुराक और सूता रखणा.

(पाणीमें डूबणा)–(डाउनिंग)–पाणीमें डूबणेसें गलेमें फासी खाणेसें और प्राणवायु बिगरकी खराब हवा श्वासमें लेणेसे श्वास रुककर अदमी गुंगलाकर मरता है, एसे अकस्मातोंमें कृत्रिम श्वासोश्वासकी क्रिया चलती करणेकूं बिलकुल देरी करणी नहीं पाणीमें डूबे भये अदमीके भींगे कपडे निकाल उसका शरीर पूंछणेका काम किसी दुसरे अदमीकूं सोंप पासमें खडे भये चालाक अदमीनें डूबे भये अदमीका श्वासोश्वास चलता करणेकी क्रिया सरू कर देणी जलदी डाकतरकूं बोलाणा तथा कंबल और सूके कपडे मंगाणे अदमियोंकों दोडाणा डूबे भये अदमीके इलाज करणेमें दो बातका खयाल जरूर रखणा. पहली तो श्वासोश्वास शरू कर देणा और श्वासोश्वास सरू भयाके बदनमें गरमी लाणी तथा खून फिरणेकी क्रिया सरू कर देणी.

(श्वासोश्वासकी क्रिया चलती करणेकी विधि)–१ श्वास नलीमें हवा आणे देणेकूं मूं तथा नसकोरे साफ करणा मूं खुला करणा जीभकूं बाहर खेंचणा जीभ तथा हडकीके बीचमें चिपिया अथवा चीकणी पट्टी लगाकर जीभकूं बाहर रखणी छाती तथा डोकपरका तंग कपडा दूर करणा २ बेमारकूं अच्छी तरे सुलाणेकेवास्ते सीधी जमीनपर चित्ता सुलाणा और छातीके तरफका जरा भाग उंचा रखणा शिर तथा खंभोंके नीचे कपडा या गूदडेका वींटा देणा ३ श्वासकी क्रिया चलाणेकूं क्रिया करणेवालेनें शिरके आगे बैठके बेमारके हाथ कोणीके ऊपरसे पकडणा और धीमेसें लेकिन चालाकीसे उचककर शिरतक लाणा फक्त दो सेकंडेतक गिणती होय तहांतक रखकर पीछा वो छातीकी तरफ लाकर बेमारके छातीके संग धीमेसें और मजबूतीसें दाबणा इस तरे भयेके हाथ छातीसे शिरके संग और शिरसे छातीके संग बेर२ लेणा वो एसा जलदीसें के ये क्रिया १ मिंटमें १६ वखत होय और बेमार स्वाभाविक रीतसें श्वास लेता

मालम पडै तव ये कृत्रिम क्रिया छोड देकर उसके शरीरमें गरमी लाणेकी क्रिया नीचेमुजब करणी.

(गरमी लाणी तथा खूनका फिराणा)-बेमारकूं धावलेमें या कंवलमें लपेटणा और उसका हाथ पैर नीचेसे दवाणा गरम फलालीन गरम पाणीकी शीशीका शेक गरम पाणीका कपडेका शेक गरम ईंटोंका शेक इनके अंदरसे जो मिले उससे कोडीपर खंधे जांघ और पेरोंके तलियोंपर शेक करणा श्वास सरू भये पीछे गरम जल और सराप ब्रांडी तथा पाणी डाकदर लोक देते हैं, काफीका एक चमचा पिलाणा बेमारकूं नींद आवे तो लेणे देणा श्वासोश्वास फेर बंध होता मालम दे तो छातीपर और बगलके नीचे राईका पलाष्टर मारणा.

(मोतके निशाण)-पाणीमें डूबा भया आदमी मर गया होगा तो उसमें श्वास अथवा रक्ताशयकी क्रिया बंध मालम देगा आंखोंके पडदे आधे मिच जाते हैं, आंखोंकी कीकी चोडी होती है, जबाडे करडे और टेढे होजाते हैं, अंगलियें आधी परधी छोटी पड जाती है.

(रक्तश्राव)-(ब्लीडींग)-शरीरके जुदे२ भागमेंसे खून गिरता है, उसकूं रक्त-पित्त देशी वैद्यकमें लिखा है, (देखो पृष्ठ ४५२) १ नाकमेंसें खून गिरणा देखो पृष्ट (६००) २ जोकके डंकमेंसें खून गिरणा उसकूं बंध करणा चहिये, (इलाज)-ठंढा जल अंगली धरकर दवाणा फिटकडीका चूका दवाणा स्पिरिट वाइनमें डुवा भया कपडा डंकपर दवाके धरणा कास्टिकके अणीका डंकपर स्पर्श करणा (३ दांतमेंसें खून गिरणा)-दांत निकलवाणेसेंगिरणेसे चोट लगणेसें बहुत खून गिरता हैं, (इलाज)-लींटका अथवा नरम कपडेका एक गोटा दांतमें रखकर दांत भीड देणा शिर तथा दाढीकूं एक बंधनसें जकड देणा जिस करके मूं खुल नहीं सके इसतेरे कितनेक घंटोंतक दोनों दांतोंके बीचमें वो कपडा दवा रहणेसें खून गिरते बंध होजाता है, (४ अंदरका खून गिरणा)-अंदरके खून नलियोंकों इजा पहुंचणेसें या दरद होणेसें शरीरके अंदरके मर्म स्थानोंमेंसें खून झरता है, जैसें कफके संग खून पडै तव समझणाके फेफसेमें रक्तश्राव भया है, इसीतरे उलटीमें खून पडणेसें होजरीमें रक्तश्राव जाणना दस्तमें खून गिरे तो आंतरोंमें जाणना और पेशावमें खून पडे तो मूत्राशयमें रक्तश्राव जाणना शिरकी खोप-रीमें और मगजमेंभी रक्तश्राव होता है, इस सब तरेके खूनके झरणेमें रक्त पित्त रोगमें लिखे इलाज करणा.

(फफोला)-(बिलस्टर्स)-चमडीके ऊपरके नीचेके पुडतके बीचमें पाणी भरके फफोला उठता है, उसकूं ब्लिस्टर कहते हैं,)-जोकोंके डंकसें अथवा दाहकारक जहरी वस्तूका लेप मारणेसें बिल्सटर उठता है, बहोत छोटे फफोले इलाज करे विगरभी सूक

जाते हैं. बडे फफोले हथियारसें अणीसें या सूइसें फोड जल निकाल डालना लेकिन फफोलेकी सुपेद चमडी ⁅ निकालणी नहीं उसपर हमेस मलम पट्टी लगाणी और उसपर कोई धका या दबाव होणे नहीं देना.

(बाहरका पदार्थ अंदर चले जाना)-(फोरेनबोडीस)-नाक आंख कान अंगोंमें किसी२ वखत बाहरकी कोइएक वस्तु अकस्मात् भर जाती है, तब अदमी बहोत दोडादोडी करते हैं विचारते हैं अब ये चीज डाक्टर विगर किसीतरे नहीं निकलेगी सो निकालणेकी तजवीज लिखते हैं-(१ नाकमें गई चीज)-छोटे बचे खेलते२ नाकमें चाल चिरमी चिणे स्लेट पेनका कपडा पत्थरका टुकडा चोअनी पाई वगेरे वस्तु नाकके नसकोरोंमें डाल देते हैं. अथवा उडता जीव घुस जाता है, (इलाज)-एक नसकोरेकूं दबाकर दुसरे नसकोरेकूं जोरसे सिणकणा २ छींक लाणेकूं तमाखू वगेरेकी नास देणी ३ गरम पाणीसें नाकमें पिचकारी लगाणी ४ इस इलाजोंसें नहीं निकले तो राई तथा गरम पाणी पिलाकर उलटी कराणी और उलटी होते वखत मूंकूं हाथसें बंध करणा याने उलटीका वेग मूंसे निकलणेवाला नाकसे निकालती वखत नाकमें गये चीजकों बाहिर निकाल डालती है, ५ ये सब इलाज निष्फल जाय तो आखर बालका नाका अंकोडेकी तरे नाकमें गई चीजके ऊपर चढाकर खेंचणेसें निकल जाती है, अथवा छोटे चिमटेसें पकडकर निकाल डालणा लेकिन इस आखरीके इलाजसे अंदरकी चीज ऊपर नहीं चढजाय इसकी निगे रखणी.

(२ कानमें गई चीजका इलाज)-१ पिचकारी २ चींपिया ३ आंकोडा टेढा किया भया ४ तेल अथवा निमककूं जलमें डाल वो कानमें डालणेसें अंदर घुसा जीव निकल जाता है, अथवा अदमीकूं तकलीप कुछ नहीं देगा २ महीन और नरम बालकूं दोलडा करके कानमें उतारणा पीछे धीमेसें उसकूं बाहर निकालणा जिस करके अंदरकी चीज बालके बीचमें होकर निकल जायगा इसतरे कानकी चीज निकाले पीछे रुईका फोआ दाबणा नहीं तो कानमें सोजा या पकणेका डर है.

(३ आंखमें गई भई चीजका इलाज)-ऊपरकी भांपणी ऊंची करके नीचेकी भांपणीपर चढाणी पीछे दोनोंकों अलग२ कर देणा २ नाक बहोत जोरसे सिणकणा ३ आंख उघाडके रुमालकी कोर अथवा महीन ब्रस आंखमें फेरणा ४ ऊपरकी भांपणी तिणखेसे या पेनशिलसे उथला कर अंदर रही चीजकों जीभसें उठा लेणा.

४ होजरीमें गई चीजका इलाज-पैसा पाई काच बटन वगेरे वस्तु किसी२ वखत गलेसे उतर होजरीमें चली जाती है, उसकूं निकालणेका इलाज-पतला खुराक खाणा नहीं तब करडे दस्तके साथ होजरीमेंसें आंतरेमें उहांसें गुदारस्ते बाहर निकलती है,

गलणेवाली चीज पैसा वगेरे धातू होय तो खटाई बिलकुल खाणी नहीं नहींतो धातू उगटकर जहर पैदा करता है.

५ चमडीमें घुसी गई चीज–कांटा फांस सुई वगेरे बारीक चीज चमडीमें घुस जाता है, इलाज–१ चिपियेमें आयसके तो खेंचके निकाल डालणा नहीं तो सुइयेसें कुचर कर निकालणा २ एक दो दिन उसपर पोटिस बांधणा पीछे चमडी नरम पडणेसें नखसे या चींपडीसे खेंचलेणा.

औरतोंका रोग.

किरण १० मी.

इस किरणमें औरतोंके खास रोगोंके इलाज लिखे हैं, येहोस इलाज सरू करणेके पहली संसारमें घदफैली और कुचालजो नाजुक औरत जातकी शरीरकूं बिगाडता है, उस तरफ ध्यान वांचणेवालोंकों पहली देणा चाहिये सबसे वडा कुचाला तो छोटेपणमें जो व्याह करणा सोहे, सोले वर्ष पहले जो स्त्री मैथुनसे वेगी उसके प्रदरादिक अनेक रोग होणा संभव है, आगेभी ऋषियोंके वाक्य है की ऋतु दान किया मतलब ऋतु आये वादही पुरुषका गमन होणा शंशार विधि सुधारक है. योगशास्त्रमेंभी एसा लिखा है समान कुल होणा याने गोत्री न होणा और द्रव्यमें धलमें सम होणा कन्यासे डेढी ऊमरका वर समान गिणा जाता है, कन्यासे अवस्थामें त्रिगुण जादा होय याने शोलेकी कन्या अडतालीस वर्षका मरद विषम रति होणेसें देणा निषेध है ये तो सामान्य नयवाद है, विशेष नयवाद एसा हैकी निरोग होय द्रव्यवान होय पूर्णवैद्यके आज्ञानुसार वर्त्तणेवाला उदार चित्तसे वाजीकरणादिक औषधीमें द्रव्य लगाकर खाणेवाला एसा पुरुष तिगुणेवर्षवाला पूर्वोक्त कन्याके योग्यवर माना जाता है, लडका वीस वर्ष पहिले मैथुन करेगा तो रोगी जन्मभर रहेगा किसी कवीने कहा है, (दुहा)–तिरिया जोवन ती सलग, घलध व हे दश साख, पुरसां जोवन सोलगे, सुखशंपत खुराक १ सब लोकोकों मेरा उपदेश है के बालप्रमें वहोतर नुकशांन समझके लोकरूढीकों छोडणा अच्छा है किंवहुना.

(गर्भाधान)–(कनूसेप्शन).

पुरुष जो औरतकों ऋतुदान देता है, उसकूं गर्भाधान कहते हैं, इसकी क्रिया वैद्यकशास्त्रमें. तैसेंइ जैन सूत्रतंदूल वेयालीमें लिखा है, योग्य स्त्रीसे योग्य पतीनें अच्छा बालक पैदा करणा ये उसका हेतु है, इस विधिके लोक अजाण इसवास्ते शंतान पैदा करणेमें पतित होरहे हैं, इसवातकूं उपयोगी समझके पहले वडे२ ऋषियोंने तथा ऋषभ प्रभूनें आत्रेय पुत्रकूं जो विधि सिखलाई सो इस जगे लिखताहूं इस बातकूं देखके हमारे

जैनाभास परमार्थ शून्य वैराग्यके आडंबरी लौकिक लौकोत्तर शास्त्रोंके अजाण उपहास्य करेंगे लेकिन् इतना जरूर विचारणा चहिये की प्रथम तो जैसा पूर्वोक्त आत्रेय तथा ज्ञानार्णवोंमें लिखा देखा दुसरे विषय सेवणेकी आज्ञा धर्मशास्त्र देता नहीं औरन सम्यक् ज्ञानवंत जीव विषयमें प्रवृत्ति कराता यह तो अनादिकालसें जीवके विषय सकर्मोंपणेसें सहचारी है, इसकी जयणा करणा ये शास्त्रका उदेश है, ये वात छोटी मनुस्मृति जो की भृगुजीने बनाई उसमेंभी लिखा है, (यतः) न मांसभक्षणे दोषो, न च मद्ये न मैथुने, प्रवृत्तिरेषा भूतानां, निवृत्तिस्तु महाफला. १ परमार्थ इसका एसा है के न मांस भक्षणमें दोष है, न मदिरामें न मैथुनमें क्योंकी सब जीवोंकी ये प्रवृत्ति है, लेकिन् छोडणेमें फल है, १ अब इसके परमार्थमें हम सम्मती नहीं देते कारण जिसके करणेसे दोष नहं उसके छोडणेसें फल कैसें हो सकता लेकिन् फक्त इसका तीसरा पद जो है सो यथार्थ दिखता है कारण अज्ञान कर्मोंके वश जीवोंकी प्रवृत्ति इस कामोंमें है सो तो प्रत्यक्ष दीखभी रही है, मातापिता वा वो आप जो व्याह कराते कराते हैं, उनका फल फक्त शंतान उत्पत्तीका है अगर इस कर्त्तव्यकों छोडे तो अमरपद पावें ये चोथा पद अतीव श्रेष्ठ है किंबहुना.

शंसारी जीवोंका ये कर्त्तव्य है, दोनों पवित्र और प्रसन्नतासें वैद्यक शास्त्रके लिखे मुजब सदाचारमुजब परदाराका त्यागी होकर पुत्र पैदा करे वो सुंदर सुघड और ताकतवर मुक्ति मार्गका साधक एसें पैदा करणा मनुष्यके आधीनताकी वात है, लेकिन दुराचारी जोडा अज्ञान कर्त्तव्यसें महादुष्ट प्रजाकूं उपद्रव करणेवाला नरकादि गतीमें जाणेवाला शंतान पैदा करता है, इस अच्छी शंतान पैदा करणेमें लोक तदन अज्ञान है लेकिन् हम इस जगे संक्षेपसें लिखेंगे, पहले ब्रह्मचर्यका पालणा, जादा विषय सेवणेवालेके शंतान अच्छा नहीं होता ये वात दोनोंकों चहिये दुसरे ताकतवर औषधी जो हम आगे सातमें प्रकाशमें लिखेंगें उसका साधन दूधका साधन थोडे पानबीडे भीमसेनी कपूर कस्तूरी अंबर डाला भया सुगंध चंदनादि तेलका मालिस कराकर सुखोष्ण गरम जलसें स्नान पुष्पमालाका धारन ऋतुमुजब अतरादिक लगाया भया ऋतूका सातमा दिन या नवमा इग्यारमा एसें एकीके दिन पुत्रीकेवास्ते, बेकीके पुत्रकेवास्ते, अच्छा मुहूर्त्त बलवान पुत्रकेवास्ते सूर्यस्वर, चंद्रस्वर पुत्रीकेवास्ते विशेष विस्तार पूर्वोक्त ग्रंथादिकसें देख लेणा.

(गर्भणी स्त्रीनें इस मुजब नियम पालणा)–महनत पुरुषसमागम बोझा उठाणा दिनका सोणा रातका जागणा शोक करणा असवारी करणी डर डेढा झुकणा दस्त वगेरे वेगोंकों रोकणा इतनोंका त्याग करणा अच्छा सादा खुराक लेणा साफ हवामें रहणा आनंदमें रहणा अच्छी चाल चलणवाली औरतोंकों पास रखणा साफ सुंदर

बढिया कपडे और गहणे पहरणा अच्छे२ उत्तम पुरुषोंकी तसवीर मूर्तिके हमेश दर्शन करणा उत्तम पुरुषोंके चरित्र तथा दानशील तपभावना जिन२ पुरुषोंने आचरण किया एसोंकी कथा वार्ता सुणनी और उसनेभी ये काम यथाशक्ति जरूर करणा मतलब गर्भावस्थामें जिस२ वस्तुका दर्शन स्त्री करती है, और जैसे२ पुरुषोंकी कथा सुणती है तैसा२ स्वभाव गर्भगत बच्चेका होता है, (प्रश्न)–तुम तो कर्मकूं प्रधान मानते हो फेर इत्यादि क्रिया करणे क्यों लिखी (उत्तर)–कर्म तो प्रधान हैही क्योंकी गर्भगत जीवका जैसा कर्म होगा वेसी बुद्धि और वेसाही कर्त्तव्य सब मातापिताके वण आता है लेकिन् हमारा स्याद्वाद पक्ष है, हम सब कामोंमें पांच समवाय संबंध मानते हैं, देखो दुसरा प्रकाश एकांत कर्मके भरोसे अगर रहे तो रोगादिकोंपर दवा अथवा और संसारिक कृत्य कुछभी करणा सिद्ध न होगा और होता प्रगट देखते हैं, किया जाय सो कर्म, तब तो अच्छी रीत मुजब करणा तब तो अच्छा शंतानादिक कृत्य होता अशुभ कर्मसें अशुभ शंतानादिक कृत्य कर्मका पक्ष किसी तरे हट नहीं सकता उद्यमकर्म व्यवहार नयसें दो दिखता है,निश्चय नयसें विचारो तो एकही है पहले जो निकाचित बंध जाते है वो शुभ वा अशुभ भोगणेसें छूटता है,प्रदेशादिक बंध शुभ कर्मके योगसें टूट जाते हैं निकाचित-भी तप कर्मसें जल जाते हैं इसका जादा विस्तार नयवाद ग्रंथोंमें है, इहां ग्रंथ बढजाय इसवास्ते नही लिखते अच्छा शंतान जब पैदा होता है, दोनोंकी पक्की उमर बदन दोनोंका निरोग योग्य मोसम योग्य दिन और बखत दोनोंकी खुस बखती जिस करके मन प्रशन्न रहे एसे मकान सेज वगेरे सब सामग्री–(गर्भधारणेलायक पुरुषका वीर्य) फटिक जैसा साफ पतला चिकणासवाला मीठा सहत जैसा खुसबोवाला वीर्य शुद्ध गिणा जाता है वीर्य दुरगंधवाला गांठोंवाला और पीप जैसा होय तो अशुद्ध जाणना (गर्भके धारणे योग्य स्त्रीका रज)–खरगोसके खुनमाफक ठाल लाखके रंग जेसा कपडेपर धोणेसे दाग नहीं रहेवो शुद्ध जाणना, मेलाफीका गांठोवाला और बदबो मारता एसे वीर्यसे गर्भधारण होय नहीं या रोगी पैदा होय या मर जाता है,)–(गर्भस्थानके बारीक नसों-मेसे दर महीने निकलणेवाले खूनकूं ऋतु कहते हैं तनदुरस्त हालतमें ये खून पतला होता है, रोगी हालतमें बंधकर टुकडा२ होजाता है और गिरता है, गर्भ रहता है तब ऋतु बंध होजाता है, और वो ऋतुका खून गर्भाशयमें जाके गर्भकूं पोषण करता है, जब पोषणकी जरूरी नहीं रहती तब स्वभावसे बाहिर गिरता [illegible]

(गर्भ किसतरे रहता है)–पुरुष स्त्रीके समागममें [illegible] पतला खून पैदा होता है उसमें पुरुषका वीर्य जब मिलता [illegible] सार उहां जाके आहार [illegible] करता है. (प्रश्न [illegible] कमें सिद्ध

होवे शरीर विगर आहार जीव करे तो सिद्ध ईश्वरकूंभी आहार करणा सिद्ध होगा, (उत्तर) सिद्ध परमात्माके कोइभी शरीर नही है वे तो फक्त जीवका निज स्वभाव ज्ञान दर्शन-चारित्र अनंत गुण विराजित है, और गर्भावासमें आणेवाले जीवके दो शरीर संग है, एक तो तेजस १ जो खाये पीयेकुं हजम करे दुसरा कार्मण सूक्ष्म शरीर जिस शरीरसें दृष्टिमें आणेवाला शरीर रचा जाय इसवास्ते इस सूक्ष्म शरीरके होणेसे आहार पर्याप्ती पहली वीर्य और रजका आहार कर फेर स्थूल शरीर रचता है ये वात वेदांतीभी मा है, कहते है परभव जाते जीवके सूक्ष्म शरीर रहता है.

(जोडेसे गर्भ पैदा होणेका कारण)–गर्भाशयमें पडा भया वीर्य वायुसें दो भा होकर अलग२ होता है तब दो जीव पैदा होते हैं.

(नपुंसक होणेका कारण)–दोनोंका रज वीर्य सम वजन होय तो नपुंसक पैदा होता है.

(स्वप्नेमें रह जाय सो गर्भ)–ऋतुस्नान करे पीछे किसी २ औरतकूं पुरुषके संग सोवत करणेका स्वप्न आता है, उसमें जो गर्भ रह जाता है, उसमें बापके वीर्यके गुण विगरका मांसका गोला जैसा गर्भ वढ जाता है, औरतें, आपसमें समागम करणेसेंभी यही हाल होता है, ये प्रत्यक्ष तथा जैन ग्रंथोंमेंभी लिखा है,

(अंगोपांगमें हीन गर्भका कारण)–वादीके कोपसें गर्भावस्थामें औरतकुं चेष्टा करणेसें और गर्भणीके मनके पैदा भये भाव मुजब खानपानादिक काम नहीं होणेसें जिसकूं दोहद कहते है वो नहीं पूरा होणेसें जो बचा होता है, सो लूला पांगला काणा कूबडा होता है.

(जुदे२ रंगका कारण)–मा तथा बापके शुद्ध या अशुद्ध बीज और जादा करके माके आहारपर बच्चेके शरीरका रंग होता है, (समदिन)–बेकीका उसमें पुरुषका वीर्य जादा होता है जिस करके लडका होता है, एकीके दिनमें औरतका रज जादा होता है जिससें लडकी पैदा होती है)–माताकी चेष्टा वोही गर्भकी चेष्टा वोही चेष्टा बच्चा जणे बादभी करता है, माताके श्वासके संग बच्चा श्वास लेता है, और बोलते चलते सूते रोते जो जो चेष्टा जो क्रिया मा करती है, वो सब बच्चाभी करता है उसमें एसेही भाव बंधते है इसवास्ते गर्भवंतीने खराब चेष्टा करणी नहीं)–माताका पोषण वोही गर्भका पोषण)–गर्भकी सूंटीकी नाडी माके रस वाहनी नाडीमें बंधी भई होती है, जिससें मा जो जो खाती पीती है, उसका रस बालककूंभी मिलता है, माके पोषणका तीन हिस्सा होता है एक हिस्सा बच्चेकूं एक हिस्सेका स्तनमें दूध होता है, और तीसरे हिस्सेसें माका शरीर पोषण होता है, इसवास्ते गर्भणी औरतोकों अच्छा पोषण खुराक तथा पथ्य करणा चहिये गर्भणीका सब खानपान पथ्य कल्पसूत्रकी टीकामें देखणा, जैसें भगवान महावीरकी मातानें किया.

(गर्भ रहेकी पहचाण)–गर्भ रहे वाद तीन चार महीनेसें ये लक्षण मालम देते हैं स्तनपरकी पीटणीके आसपासकी जमीन काली पडती हैं, रूं खडे होते हैं, आंखका टमकारना वेर२ बंध होणा कारण विगर उलटी सुगंधदार पदार्थ अच्छा नहीं लगणा मूंमेंसे लार गिरें और वदन कांपणे लगे,

(३ ओरतोंके सामान्य रोग)–

औरतोंके रोगके इहां तीन हिस्सा किया गया है, १ औरतोंके सामान्य रोग २गर्भावस्थाके रोग ३ जापेका सूतिका रोग और उसके रहे भये पुराणे विकार

(प्रदर)–(ल्युकोरीया)–स्त्रीके संबंध रस्तेके जुदे २ मार्गोमेंसे कमलके और मूंमेंसें पाणी जैसा जरा२ चूणा तो हमेश होते रहता है, जिससे वो जगा हमेश गीली रहा करती है, जब कितनेक कारणोंसें ये झरणा वढता है, और प्रवाहकी तरे बाहर गिरकर कपडोंको खराब करता है तब उसकूं (प्रदर)–(वदनका धुपणा)–सुपेद गिरणा) इत्यादि नामसे कहा करते हैं,–(कारण) विषय भोगणेमें नियम नहीं रखणेसें वेर २ गर्भ रहणेसें ऋतूकूं बंध करे एसी चीजें वापरणेसें वच्चोंको वहोत वखततक चुंगाणेसें वहोत ऋतुधर्ममें खुन जाणेसें गर्भ रहणेसें दुसरे रोगसें आई भई नाताकतीसें वहोत पुष्टिदार खुराक खाकर योग्य कसरत याने महनत नहीं करणेसें और सराप वगेरे गरमी पैदा करणेवाली वहोत चीजों वापरणेसें ये रोग पैदा होता है, (लक्षण)–पाणी जैसा अथवा जाडा और चिकणा सुपेद पीला या गूगला रसीका वहणा ये इस रोगकी प्रत्यक्ष पहचाण हैं, (धातु ये दोय रस्तेसें वहता है) संबंध मार्गमेंसें और गर्भस्थानमेंसें संबंध मार्गकी धातू पहिले तो पाणी जैसी होती है और बाहर आते उसका रंग दूध जैसा अथवा पीला शपर होता है वो खट्टी होती है, और तेज होणेसें किसी वखत उसके स्पर्शसें सुंआली जगोंमें ललाई अंगार तथा खुजली आती है, इसतरेके धातु गिरणेमें अंदरके अवयवमें सोजन और दरद होता नहीं फकत कमर तथा पेडूमें जरा दरद और वहोत दिनोंवाद नाताकती मालम देती है, गर्भ स्थानकी धातु कमलके मूंमेंसें निकलती है, तब वो इंडेके अंदरके रस जैसी होती है, लेकिन् बाहर आते साबूके फेण जैसी और किसी २ वखत पीले रंगकी होती है, किसी २ वखत वहोत जाडी होती है, गर्भस्थान और कमलके मूंके सोजनसें ये रोग पैदा होता है, उसके संग शिरमें दर्द मंदाग्नि अरुचि पेटमें वायु थकेला श्वास जीभपर मैठ फीकापणा दस्तकी कब्जी छातीमें धड़का चक्कर बेहोसी पीठमें तथा दहिणे पडखेमें दरद और किसी २ वखत हिस्टीरीयाके लक्षण होजाते हैं,

(इलाज)–प्रदरके वहोत इलाज है, योनिमार्गमेंसे जल गिरता है, उसमें बाहरका इलाज जल्दी फायदा करता है, और गर्भाशयके धातू गिरणेमें पुष्ट दवाइयां तथा योग्य प्रमाणोपेत आहारविहारके सेवनसें सुधारा हो सकता है, (बाहरका इलाज)–१ पंच-

होणा सो नहीं होता है, जैसे ठंढी हवा भीगी जमीन ठंढे पाणीसे स्नान गीले कपडे बहोत वखततक खडे रहणा भारी मैदा वगेरेका खुराक बहोत महनत डर गुस्सा इन सब कामोंमें इसकूं अलग रखणा चहिये लेकिन विचारहित महा अज्ञान अपणे हठसें चलणेवाली औरतें ऊपर लिखे नियम न रखती न रखाती है, ऋतुधर्मकूं बंधकरणेवाली दवाइयोंके लेणेसेंभी प्रदरका रोग होजाता है, औरतें खानगी रोगोंमें कोइ२ अज्ञान दाइयोंके हाथसें इलाज कराया करती है, उससेंभी रक्तप्रदर रोग होजाता है, इस्के संबंधी बात कची ऊमरमें सुणणेसें गर्भस्थान उस्कराकरभी प्रदर होता है, ऋतुधर्म जलदी आणेसेभी दस्तानका रोग होता है गर्भ रहे पीछे योग्य हुसियारी नहीं रखणेसें अथवा अधूरा जाणेसेंभी दस्तानका रोग होता है, गर्भस्थानका कोईभी विगाड दस्तानका कारण होता है.

(प्रकार तथा लक्षण)--१ ऋतुका बंध होणा २ ऋतुधर्म बहोत दरद होहो करके आणा३और बहोतही ऋतुधर्म चहिये जिस्से जादा गिरणा एसे ये तीन तरेसें दस्तानका रोग होता है, इन तीनोंका इलाज आगे लिखते हैं, (नष्टार्त्तव)-(एमेनोरीया)(कारण) स्वभावसे अवयवका कमीपणा स्त्रीअंडका थोडापणा अथवा बिलकुल नहीं होणा योनिके रस्तेका संकोच अथवा बंध कमलके मूंका बंध, होणा वगेरे कारणोंसें दस्तान पैदा होता नहीं अथवा पैदा होताहै,तो प्रतिबंधके लिये बाहिर दिखाई नहीं देता बहोत एसआराम आलस बहोत नींद खराब हवा और गीलासवाला घर येभी आर्त्तव रोगके कारण है, (लक्षण) हर महीने ऋतूके समय दस्तान बाहर आणेका यत्न करे लेकिन् बाहर गिरे नहीं उसकरके पेडू कम्मर तथा जांघोंमें दरद बदनमें धूजणी गलेमें गांठें किसी वखत आंखे दुखणी आवै प्रदर तथा नाक और मूंमेसें खून गिरे हिस्टीरीया छातीमें घभराट दम मंदाग्नि दस्तकी कब्जी येभी उसके लक्षण है, (इलाज)—कोइभी अवयवका विगाड होय तो उसकी दरियाप्त करणी (इलाज करणा)-१ दस्तकी कब्जी होय तो दस्त खुलासकी दवा लेणी २ गरम पाणीकी पिचकारी लेणी ३ गरम पाणीमें बैठाणा अथवा पेडूपर गरम पाणीका शेक करणा ४ एलिया तथा बीजा बोलकी बडी गोली पहराणी ५ एलिया लोह कवार पठा गूगल वगेरे दवायें दस्तानके रोगकूं मिटाती है, इसवास्ते बोइकेली अथवा दुसरी दवायोंके संग लेणी ६ एलिया ४ तोला बीजाबोल २ तोला गुलकंद ५ तोला इन सबोंकों मिलाकर दोदो बालकी गोली करके पाणीके संग पीणा एकेक गोली दर टंकमें ७ सुहागा १ बाल एलिया १ रत्ती मंडूर १ रत्ती गोली जलके संग ८ कुमारिकासव लोद्दासव लोह ऋतूका खुलासा करती है, ९ टिंकचर आफ स्टील १० से १५ बूंद १ औंस पाणीमें मिलाकर दोनों टंक पीणा १० सल्फेट आफ्आयर्न२४ ग्रेण कारबोनेट आफ पोटास १२ ग्रेण मर १२ ग्रेण एलिया ६ ग्रेण उसकी २४ गोलिये

चणाकर दोदो गोली दिनमें तीन वखत लेणी ११ टंकण ३० ग्रेण लिकीड एक्स्ट्राक्ट आफ अरगट १॥ ड्राम और कम्पाउन्ड डिकोक्‌सन आफ एलोझ ३ औंस उसका तीन भाग कर दिनमें तीन वेर पीणा.

(दरदसे ऋतुधर्म)–(डिसमेनोरीया)–(कारण)–शारीरक तथा मानसिक नाजुकपणा गर्भस्थानका वरम और ऋतूका झरणा बंध होणेका कोइभी मुख्य कारण ये सब इस रोगका कारण है, गर्भाशयमें खून जमणेसेभी ये रोग होता है, (लक्षण)-ऋतूधर्मके सरू होणेके पहले एक दो दिन दरद सरू होता है, कम्मरमें सख्त शूल शिरमें दरद पेडूमें गांठ जैसा जमाव तथा बोझा ऋतूका झरणा कम या जादा बंध होय और फेर आवै उसके संग दरद वधे घटे हिस्टीरीया डकार तथा दस्तकी कब्जी ये सब इस रोगके लक्षण है, कमलका मूं बंध पडणेसें अथवा अंदरका रस्ता संकडा होणेसेंभी ऋतु बंध होता है, (इलाज)–(दरद होय तब करणेका इलाज)–१ अफीम ४ ग्रेण कपूर ८ ग्रेण घारे गोलियें करके एकेक दो दो गोली तीन २ घंटेसे देणी २ अफीम तथा सुहागा मिलाया भया गोलियें इसी वजनसें फायदा करती है, ३ बेलाडोणेकी सोगठी पहरणी बेलाडोणा १२ ग्रेण जसतके फूल ४८ ग्रेण सहतमें घोटकर उसकी ४ सोगठी करके हमेस रातका पहरणी ४ गोफर्याकी पिचकारी लेणी और गरम पाणीमें बैठाणा गर्भाशयमें सोजा गांठ और गर्भाशय फिर गया होय तो उसका इलाज करणा दरद मिटाणेका इलाज एसा करणा सो फेर जडसेंही मिट जाय ५ कुमार पट्टेका पाक कुमारिकासव अथवा उसका अवलेह ६ कोला पका केला मुरब्बा या अवलेही लोह फोडलीवर किनाइन ७ योगराज गूगल ओरतोंके गर्भाशयके तथा ऋतु दोषके वास्ते सर्वोपरी इलाज है.

(अत्यार्तव)–(बहोत खून गिरणा)–(मेनोहेज्या)–ऋतुधर्म हरमहीने आनेके बदले थोडी२ मुदतसे आवे या जादा आवे तीन चार दिन दर महीने होणा चहिये सो जादा दिन तक दिखाइ देवें.

(कारण) शरीरके दुसरे रोग जैसेके रक्ताशय यकृत् हीद तथा फेफसेका रोग तथा पांडू वगेरे रोगोमें ये रोग होता है, २ गरमी तथा गरम खुराक ३ गर्भाशयके अंदरकी गांठ अथवा मस्सा ४ गर्भाशयका खिसना तथा गर्भ अंट और कमलके मूंके वरमका दबाण ५ गर्भ धारन पीछे गर्भ मूकणेसें अथवा जापा भये पीछे पिछला भाग रह आनेमें ६ संसार भोगका अतियोग अथवा हीन योग (लक्षण)–दस्तान थोडा२ आया करे ॥ एक मनवंतर घटकर फेर बंध होजाय बदन खाटी होजाय फीका पडे भाग दिनतार पोदर उष्णी मंदाग्नि मनकी व्याकुलता और दस्तकी कब्जी (इलाज)-(रम अंकेय इलाज)–१ ठंडे पाणीका पोना रखना अथवा बरफ धरणा २ टेनिक

एसिडकी पिचकारी मारणी ३ फूलाई भई फिटकडीकी पिचकारी लगाणी ४ पंचवल्कल अथवा त्रिफलाके पाणीकी पिचकारी लगाणी या इससे धोणा (अंदरका इलाज)-रयुगरलेड ८ ग्रेण अफीम १ ग्रेण गुलकंद ५ ग्रेण मिलाकर ४ गोली कर एकेक गोली तीन तीन२ घंटेसे देणी ६ गेलिक एसिड १५ से २० ग्रेण इसकी तीन पुडी कर तीन२ घंटेसे देणी जलसे ७ ग्यालिक एसिड ४० ग्रेण लिकीड एकस्ट्राकट ओफ अर्गट द्राम १॥ डिल्युट सल्फ्युरिक एसिड ४५ बूंद तजका पाणी ३ औंस मिलाकर दिनमें तीन वेर पीणा ८ एक ग्रेण अफीमकी २ गोलियें करके तीन२ घंटेसे खाणी ९ पाउडर आफ अर्गट १५ ग्रेण ग्यालिक एसिड २० ग्रेण उसकी ४ पुडी करके तीन२ घंटेसे देणी १० फिटकडी ३० ग्रेण डिल्युट सल्फ्युरिक एसिड ३० बूंद नवसादर १० ग्रेण पाणी १२ औंस चार २ घंटेसें तीन वखतमें पिलाणा ११ देशी दवायोमें अफीम आंवले ईसव गुल सुहागी कोला गुंदपाक बीजाबोल चंद्रप्रभा वगेरे खूनकूं बंध करती है.

(हिस्टीरीया)-इस रोगकूं देशी वैद्यक शास्त्रवाले केइयक तो वादीके रोगोंमें और केइयक उन्माद चित्तभ्रमके रोगोंमें समावेश करते हैं, यूनानीवाले होलदिलमें और अंग्रेजीमें मानसिक याने मगजके रोगोंमें गिणते है, और वेकूब लोक इस रोगकूं सेतान लगा हुवा जाणके जंत्रमंत्र उतारा पलीता वगैरे इलाज भूत निकालणेका यत्न करते हैं, हमतो जंत्रमंत्र जो यथार्थ है, उसकूं झुट नहीं कहते लेकिन् दुनियाका जब ठगाई भरा ढंग देखते हैं, तब तो झूट कह सकते हैं, क्योंकी यंत्रमंत्र उसी आदमीका सचा है, जो इन वार्तोंमें मजबूत हो अव्वल तो जिसका शील बिलकुल पूरा हो लेकिन् एसे मिलणे लखोंमें एकभी दुस्वार तोभी इसवातका जो प्रमाण मुजब नियम रखणेवाला हो पंचोंकी साक्षीसें धारण करी भई स्वदारा संतोषी हो धर्मके कायदे मुजब सदा सच बोलणेवाला हो परमेश्वरकी वंदगीवाला हो पराया दुख देखके करुणावाला हो इस वातोंवाला मन वचन कायाका स्थिरता रखके दृष्टि या पासादिक मंत्राम्नाय साधकके कर्त्तव्यताकूं धन्यवाद है, बाकी सब दुकानदारी है, वो दादा जिन दत्त जिन कुशल जिन चंद्र सूरजीकी तरे सब कष्ट साध्य रोगीकूं मिटाणे समर्थ होता है जो कभी असाध्य पर दृष्टिपास या हस्तपासादिक अलक्ष्य मंत्रादिक क्रिया करे तो वो तो मरेही लेकिन् प्रतिकारके कर्त्ताकेभी तकलीफ होय हिस्टीरीया मन संबंधी रोग है, मनकी नाताकती शरीरकी नाताकतीसें होती है, तैसे मगजके विकारोंकी वदनपर बहोत बुरी असर होती है हिस्टीरीयेका रोग जादा करके औरतोंकेही होता है, और किसी२ नाताकत मनके अदमीकूंभी होता है, (कारण)-गर्भाशयका रोग आर्त्तव दोष मगजकी नाताकती भय शोक मदनतसें खेचल कामविकार दयरस बहोत तमासबीनी इत्यादि कारणोंसें ये रोग पैदा होता है, नाताकतीमें उठती जवानीकी छोकरियोंका मन इस्क भरी प्यारकी और

विषयकी वातें सुणके या पढके तरे२के ख्यालोंसे उमंगता है, कामविकारसे वो विकार पूरा नहीं होणेसें पुरुषके संग अणवणतसें अप्रीतिसें और ऋतुधर्ममें कीडे पडणेसेंभी ये रोग होजाता है, (लक्षण)-(इस रोगके अनेक लक्षण है)-वाइंटे खेंचाताण हसणा रोणा धुणना बूंम मारणी गोला.चढणा बिलकुल बोलणा नहीं उलटी ओहीयां ओहीयां एसे शब्द करणा लंबी निसासे डालणा ये उसके सामान्य लक्षण है, हिस्टीरीयावाली औरतोंके सब लक्षण बहोत त्रासदायक होते हैं, और बहोतसी वखत जो बेमारी वो बतलाती है वो होती नहीं और बोम मारती है जैसेके जलण नहीं लेकिन् कहती है, जलती हूं और पाणी मांगती है उसकूं बदवो आती है जीभ वेस्वाद गोला चढता है, और वो जाणे गलेतक भर गया है, अभी ज्यांन निकलही जायगी एसा जोर करता है, बदनमें गोटा चढता है दांत जकड जाते हैं, अवाज बैठ जाती है पेट बडा होता है, और महीने चढें होय एसा लगता है.

(इलाज)-इस रोगमें खास तोरपर एकभी दवा नहीं है, हिस्टीरीया होणेका जो मूल कारण होय उसका इलाज करणा इस कारणकूं निश्चै करणे वास्ते उसकी मिजाजका जाणकार पास रहणेवालेसें संसारकी सब स्थितीकी वाकबी होणी चहिये उसके व्यसन वगेरे सब निज खासितसें वाकव होणा चाहिये औरतोके ये रोग जादा करके ऋतुधर्मके विगाडसें होता है, इसवास्ते ऋतुधर्मका जो विगाड होय सो पहली मिटाणा सुखी घरकी औरतोंने एसआराममें मसगूल होकर हरमद घरके अंदरही नहीं पडे रहणा खुली हवामें फिरणा चहिये माफकसर महनतभी करणा हिस्टीरीयावाली औरतका मन किसी तरेभी विगडणे नहीं पावै इसवास्ते उसकूं हमेस खुस रखकर उसपर दया और प्रीती बताणी हिस्टीयाका जब दोरा हो उस वखत करणेका इलाज १ मूंपर ठंढा पाणी छांटणा और नाकके आगे आमोनिया दुसरा तेजनस्य धरणा जिससे होस आवै एसा इलाज करणा २ हाथ पैरोके तले अच्छीतरे मसलणा ३ बेहोस भये विगर गोला वगेरे वादीका होय तो धीमे तलकर हींग निगलाणी गुडमें लपेटकर दस्त खुलासा आवै एसी दवा देणी ४ (दुसरे सामान्य इलाज लिखते हैं)-योगराज गुगल ५ रास्नादि काथ ६ त्रिफलादि काथ नं० ५२३) ७ तथा ६६४ की अंग्रेजी दवाकी मिलावटें (८ नं० ७४३) तथा ७४४ हकीमी नुसके.

(गर्भाशय प्रदर)-(देखो प्रदरका वर्णन) पृष्ठ ६५५)

(गर्भाशयका वरम)-सुआवड (जापा) के विगाडमेंसें गर्भाशय सूजकर उसमें दरद बुखार तथा दस्तकी कब्जी ऋतु तथा प्रदर बहोत जाता है, इस दरदसे औरतके गर्भ रहता नहीं वरम पुराणा होणेसें उसमें मस्सा रसोली वगेरे गांठे जमती है, और खून दस्तानमें बहोत गिरता है, (इलाज)-भोजनका सब इलाज

करणा जुलाब शेक पोल्टीस लेप २ गरम पाणीकी पिचकारी ३ पेडूपर अलशीकी पोटिस मारना अथवा आखर कमलके मूंपर थोडी जोके लगाणी ४ संसार भोगसें दूर रहणा खुराक हलका तथा सादा लेणा पुराणा वरम मिटणा मुस्कल होता है, ५ गर्भकूं सुधारणेवाली दवा खाणेसें सुधारा होता है, (फलघृत नं० २९०) वरम नीचेके भाग तरफ होय तो कासटिक लगाणा अथवा टेनिक एसिड या जसतका फूल कोकमके तेलमें मिलाकर अंदर चुपडणा इस वरमके सबब किसी२ वखत कमलका मूं बंध होजाता है, उसके गर्भ नहीं रह सकता और ऋतुधर्म अंदर भरा रहणेसें दरद होता है, (कमलमें जखम)-जखम होणेसें खून गिरता है, किसी वखत ऊपर छाला गिरता है, किसी वखत गहरा जखम पडता है, इस रोगसेभी वेटेमवे परमाण दस्तान आता है, कमरमें वहोत वेतरेका दरद होता है, धातू जाता है, खूनभी गिरता है, (इलाज)-व्रणका इलाज करणा पंचवल्कलकी अथवा त्रिफलेकी अथवा मांजूफलके पाणीकी पिचकारी लगाणी २ फिटकडी अथवा जसतके पाणीकी पिचकारी मारणी ३ टेनिक एसिडकी सोगठी पहरणी ४ कास्टिक लगाणा ५ ग्लीसरीन और टेनिक एसिडकी अथवा सुहागा और टेनिक एसिड लगाणा, (गर्भाशय ग्रंथी)-गर्भाशयमें गांठ होती है, ये गांठ छोटी सुपारीसे वढकर कभी२ गर्भमें वढते२ बालक जितनी होती है और उसके लिये गर्भस्थानभी वढता है, गांठ छोटी होय तहांतक बहुत इजा नहीं करती जब वडी होती है, तो गर्भाशयमेंसे प्रदर जैसा निकलता है, उसकूं मिटाणेका इलाज करणा गर्भाशयके अंदरकी गांठ मिटणी मुस्किल है, क्योंके उस जगे शस्त्रका इलाज होणा मुस्किल है, जो मस्सा होय तोभी गर्भाशयमेंसें खून झरते रहता है, मस्सा बाहर होय तो डाकतर लोक कतरणीसे काट डालते हैं, अथवा डोरा बांधणा घोडेका वाल बांधणा मस्सा गिरपडता है, दवा लगाणेकी हमारेपास अर्शउन्मूलनार्क है उसके लगाणेसें मस्से खिर पडते हैं, गर्भाशयके अंदर मस्सा होय तो वादली धरकर कमलका मूंचोडा करके पीछे आंटा देकर या फासा देकर मस्सेकूं तोड डालते हैं, लेकिन् ये कर्त्तव्य डाकतरोंसें करवाणा, (गर्भाशय भ्रंस)-जैसे गुदामेंसे कांच बाहर निकलती है, ऐसें गर्भाशयभी नीचे उतर आता है, ये दरद वडी ऊमरकी औरतोंके होता है, वेर२ बचा जणणेसें वस्ति चोडी होणेसें गर्भाशय बाहर आता है, गर्भाशय सूज जाणेसें उसमें गांठ होणेसें कारांजणेसे गर्भस्थान तथा योनिबंधन ढीला होणेसें गर्भाशय नीचे उतरता है, तपासणेसे जो उसके संग कमलका मूं होय तो जाणनाके गर्भाशय नीचे उतरा भया है, कांचकी तरे उसकूं दाबके उंचा चढाणा राल्के लेपकूं करके खेंचकर पट्टा बंधवाणा औरतोंने उस रोगमेंबिछोणा छोड बाहर जाणा नहीं ठंडे पाणीमें बैठणा अथवा स्तंभक दवाकी पिचकारी मारणी अथवा सोगठियें पहरणी जिससे बंधन सखुत होकर गर्भाशय नीचे उतर

सकेगा नहीं ताकत आव एसी दवा लेणी, (स्त्री अंडका वरम)—जैसे पुरुषोंके वीर्य पैदा करणेवाली वृषणकी गोलियें होती है, तैसें औरतोंकेभी रज पैदा करणेवाले दो अंड पेडूके दोनोंतरफ होते हैं, अंग्रेजीमें उसकूं (ओवरी) कहते हैं, उसमें वरम होता है, तो बाजूमें चमका होता है, पेसाव लाल होता है, ऊपरसे दबाणेसे गांठ जैसा लगता हैं, और दरद होता है, दस्त आते वखत दरद होता है, बुखार जीमित लाणा उलटी पेटमें हवा होती है, ये अंड पकते हैं, तब फूटकर पीप निकलता है, जादा करके बांये तरफ वरम होता है, (इलाज)—वरमके सब इलाज करणा गरम पाणीमें बैठणा अफीम तथा बेलाडोणेकी सोगठी पहरणी शेक तथा पोल्टिस पेडूपर दरदकी जगे मारणा पुराणा वर्म भये पीछे दरद नरम पडता है ऋतुधर्म थोडा और बहोत कष्टसे उतरता है, वेर२पेशाब होता है, प्रदर होता है, हिस्टीरीयाकी कितनीक निशाणियें मालम देती है, (इलाज)—पेट तथा पेडूपर गरम कपडा हमेश लपेटे रखणा उस वखत गरम पाणीमें बैठणा ठंडे पाणीका स्नान पुरुष गमन सर्वथा नहीं करणा ताकत लाणेवाली दवायें देणी, (स्तन छातीका सोजा)—बहोतसी वखत स्त्रियोंका स्तन पक जाता है दूध पैदा होणेकूं खूनका जोस चढ आता है उससें स्तन भर जाता है और बुखारके संग स्तनमें सोजन चढ आता है, एक या दोनोंमें होता है, तब स्तन भरा हुवा लगता है उसमें गांठे बंधती है, सखत वरम होकर चमडी लाल होती है, ठंढ देके बुखार आता है बेचेनी अनिद्रा और पकती वखत ठणका मारता है, बच्चेकूं वखतसर नहीं चुंघाणेसें अथवा भरे स्तनमें हाथोंकों बहोत हिलाणेसें बहोत गरम खुराक खाणेसे तथा मनके आवेशके असरसेभी वरम होता है, (इलाज)—१ दरदके सरुआतमें थोडा दरद होय तो फुलालीनका अथवा अफीमके डोडोंके गरम पाणीका शेक करणा अथवा साबूका मलम (सोप लीनी- मेन्ट लगाणा दाह होता होय तो ३ गुलाबजलका पोता धरणा अथवा ४ चंदन रगत चंदनका लेप वेर२ करना ५ वखतपर दूध खेंचलेणेका इलाज करणा दूध खेचणेकी शीशीयों आती है, वो नहीं मिले तो किसीसे चुंघाकर निकलवा डालणा अथवा धतूरेके पत्ते और हलदीका अथवा कडवे तूंबेका लेप करणेसें दूध खींचता है, एसा संभव है, दरद बहोत बढजाय तो शेक और अलसीकी पोटिस बांधणी ७ नींबके पत्ते बाफ कर बांधणा दस्त साफ लाणेकी तथा बुखारकी दवा देणी रोगी ताकतवर होय और दरद बहोत होते होय तो स्तनके सूजे भये जगेपर ८।१० जोंक लगाणी और पीछे शेक करना जो पकणेपर होय तो पकाकर फोडणेका और बाद भरणेका इलाज करना व्रण ""जन (फूलजाणा)—कितनीक औरतें बदनमें फूल जाती है, बाद किसी२कुं गर्भ नहीं १८.. ऋतुधर्मके दोषके अटकणेसे अंदर जमाव होते जाता है, जिस करके औरतोंका पेट तथा पेडू फूल जाता है, किसी२के एकाध बचा होकर पीछे ये रोग होता है

फेर बचा नहीं होता, (इलाज)—इस रोगपर दवा करते आहार और विहारका पथ्य जादा फायदे बंद है, खुली हवामें फिरना घरमेंभी शरीरकूं महनत पडे एसा कामकाज करना शरीरकी वादी और चरबी कम होय एसा इलाज जैसेके दस्त साफ लाणेकी दवा हरडे जुलाफा एलीया हींग वगेरे वादीके तथा दस्तके खुलासा वास्ते देणा ३ ऋतु खुलासा लाणेकूं गरम पाणीमें राई डालकर पग भीजाणा कमरपर शेक करना पेडूपर सींगडी या कपिंग (देखो पृष्ट ३७१) करणा इण इलाजोंसे पेडूका जमाव नरम पडेगा और जमा भया खूनका ऊपर खेंचाण होकर गर्भाशय खुला होगा ४ योगराज गूगल वायू तथा चरबीकूं कम करता है, वास्ते वहोत दिनोंतक सेवन कराणा गर्भाशयके दुसरे दोषोकोंभी दूर करता है, ५ त्रिफलेका क्वाथ सहत डालकर पीणा ६ पाणी गरमकर ठारकर उसमें सहत डाल कर हमेस पीणा इससे चरबी गल जाती है,

(गर्भवंतीके रोग)—औरतोंके गर्भ रह्यां पीछे हमलके खास रोग होते हैं, तैसें बुखार दस्त मरोडा वगेरे सामान्य रोगभी होते हैं, उसमें गर्भके कारणसे उनके इलाजोंमें कितनेक दवाओंकों छोडणा पडता है, जो इस बातका खयाल नहीं रखे तो नुकशान होणा ताजुब नहीं, (नाताकती)—दुबली और नाताकत औरतोंके गर्भ रहता है, तब उसकूं ताकतवर दवा और खुराक देणा चहिये जो नहीं दिया जायगा तो शंतानभी दुबला और नाताकत पैदा होगा थोडी ऊमर पायगा और जापेमें औरतभी मर जाय तो ताजब नहीं जोखमका काम है, (इलाज)—सामान्य इलाजोंमें दूध सर्वोत्तम इलाज है, गऊ या बकरीका मोलेठी तथा सूठके टुकडे तीन मासा अधसेर दूध और अधसेर जल डालके उकालणा पाणी जले बाद ठंढाकर थोडा बूरा डाल पिलाणा बहोत दिन पीणेसे ताकत आती है,और बुखार खासी वगेरे कुछभी तकलीफ होती है, तो मिट जाती है, २ [1] वसंत मालतीका साधन दूध मिश्रीके संग देणा ३ गर्भ पोषक नामकी दवा हमारेपास है वो मा और बचेकूं निहायत फायदे बंद है, (बुखारका इलाज)— १ मोलेठी रगत चंदण वाला उपलसिरी और कमलके पत्ते इनोंका क्वाथ मिश्री सहत डालकर पीणा २ रगत चंदण उपलसरी लोद तथा मुनक्काका क्वाथ मिश्री डालकर पीणा ३ बकरीके दूधमें संठ ऊपर लिखे मुजब उकालकर पीणेसे विषम ज्वर याने बेटेम आणवाला ठंढदेके आणेवाला ज्वर मिटता है, दस्तका इलाज—१ मजीठ मोलेठी लोद इन तीनोंकों पीस इनोका पाणीकरके मिश्री मिलाकरके पीना २ आंबकी तथा जामुनकी छाल उकालकर मिश्री सहत डालके देणा इसमें चावलोंकी लाईका सत्तू डाल मिलानेसे संग्रहणी भी मिटती है, सख्त दवासे गर्भकुं नुकसान होता है, (उल्टी)—१ धाणाकूं पीस चावलोंके धोवणमें छाण सहत मिश्री डालकर पीना २ कलौंजी)—इसका चूर्ण अथवा

[1] सोनेका बीच रहता है, अनुपान इलायची बरटोंवर मिश्री दूध।

क्वाथ मिश्री तथा सहत डालकर देणा ३ सोडावोटर तथा बरफ पिलाणा ४ कलेजेपर राईकी पट्टी मारणी अथवा लाडेनम लगाणा खुराकमें सिरप दूध अथवा दूधमें कांजी चावलोंकी गरिष्ठ खुराक देणा नहीं, (अरुचि)-१ अजमोद सूंठ पींपर तथा जीरा गुडमें [illegible]ठी करके देणा, (कब्जी)-गर्भवाली औरतकूं कब्जी बहोत रहती है, लेकिन् उसकूं जुलाब वेर २ देणेसे गर्भकुं नुकशान पहुंचता है, इसवास्ते देणा नहीं १ दूधसे दस्त खुलास आता है, २ एरंडी तेल दूधमें देणा ३ सख्त कब्जीमें एरंडी तेलकी पिचकारी मारणी.

(खासी)-बहुफलीकी जड बलबीजकी जड और अरडूसेका क्वाथकर पिलाणा इस क्वाथसे गर्भणीका सोजन श्वास कास रगतपित्तमेंभी अच्छा है, खेरसार तथा कत्थेकी गोली २ शीतोपलादि चूर्ण सहतमें (हैजा)-१ सूंठ तथा चीलकी जडका क्वाथकर पिलाणा उसके संग जवकूं शेक तथा दलके शेका भया सत्तू थोडा२ पिलाणा सख्त दवासे गर्भकुं नुकशान पहोंच जाता है, (शूल)-डाभ कांस एरंड तथा गोखरूकी जडकूं पाणीमें पीस वो डालकर पकाये भये दूधमें मिश्री सहत डालकर पिलाणा सख्त दवा वापरणी नहीं.

(मट्टी खाणेकी आदत) मट्टी खाणेकी आदत बहुत औरतोंकों रहती है, सो बुरी है, गर्भणीकुं जादे चाहियेके अच्छे २ पदार्थ इच्छा मुजब खाणेका वैद्यकशास्त्र लिखता है, लेकिन् एसी नुकशानकारी वस्तु खाणेकी इजाजत वैद्यक शास्त्र नहीं देता है, मट्टी नुकशांन करणेवाली चीज है, इसका सख्त बंदोबस्त करणा चाहिये लडकेभी इसी मुजब चूना मट्टी कोयला खाते हैं.

(छातीमें दरद)-स्तनोंमे दरद होय तो फुलालीनका अथवा पोस्तके डोडेका उकाला भया पाणीका शेक करणा सोजा होय तो शोजेका इलाज करना, (नींदका नाश)-हवा नहीं आवे एसी बंध जगेमें रहणेसें और गरम खानपानसें नींदका नाश होता है, इस कारणोकों बंध करणा दस्तकी कब्जी होय तो एरंडतेलका जुलाब देणा चा काफी तथा सराप नींदका नाश करती है, इसवास्ते इनोंसें बचाणा दूध तथा वनस्पतीका सादा खुराक खिलाणा आखर जरूर पडे तो नींद लाणेवाली दवायें लेणी, (ऋतूका झरणा)-हमल रहे बाद ऋतूधर्म बंध होता है, तोभी किसी२ औरतके दिखाई देता उस वखत औरतका ऋतुधर्म बंध करणेसे सख्त इलाज न करते बहोत हि फाजत चाहिये जैसे ठंढी हवा भीगी जगा उघाडे पैरोंसे चलणा भीजी जमीनपर बैठणा ठंढा पाणीसे नाहणा बहोत देरतक खडे रहणा जादा खाणा जादा महनत हर तथा जुलाब ये सब खून गिरणेकूं बढाता है, इसवास्ते इन बातोंसें बचाणा सुवाये रखणी हलका खुराक देना.

(धातु गिरणा)–प्रदर गर्भणीके गिरता है, (इलाज)–१ स्वच्छता रखणी प्रदर रोगमें लिखा प्रक्षालन पिचकारी तथा पोता धरणा २ ताकतवर खुराक लेणा ३ प्रदर का ठंढा इलाज करना.

(बहुमूत्रता)–गर्भणीकूं वेर२ पेसाब होता है, (इलाज)–जवका जल पिलाणा २ एरंडतेल दे दस्तका खुलासा करणा ३ दरद होय तो पेडूपर फुलालीनके कपडेका सेक करणा ४ चंद्रप्रभा वगेरे मूत्रल और सारक दवायें देणी गर्भणी स्त्रियोंके कितनेक इलाज साधारण लिखे हैं, कुदरत स्वभावसे गर्भणी औरतोंके भारी बेमारी आती नहीं और गर्भ रहे पहले जो बेमारी होती है, वोभी दब जाती है, गर्भके रक्षणकूं पांचसमवायोंके संबंधसे ये कुदरत बणती है, और कोइ२ गर्भणीके इन पांचो समवायोंके प्रतिकूलपणेसें जब वडा रोग होता है, तो या बच्चा या वो आप मरती है, एसा हमने देखा है लेकिन् प्राय बडे रोग थोडे होते हैं, फेर बच्चा भये बाद पहलेके दबे भये रोग पीछा जोर करता है.

३ सुवावड और सुआरोग.

(स्वभावजन्य प्रसव)–आहार याने खानपानकी हुसियारी नहीं रखणेसें होजरी और आंतरोमें तरेके२ विकार होते हैं, उससे मलमूत्रके हमेस वेगोंमें तरे२के उपद्रव होते हैं, गर्भाधान और प्रसव ये दोनोंही स्वभावादिक पांच समवायोंका धर्म है, और उस क्रियामें विवेक विचार और संभाल जो पुरुषकृत उद्यम समवाय अच्छा नहीं रहे तो प्रसवकी वखतमें समवायोंकी प्रतिकूलतासें केइ किस्मके विकार होते हैं, इसमें अचरजही क्या निरोगी आदमीकों दस्त जितना सहजसे होता है इतनीही सुख शांतीसे प्रसव होय उसकूं सहज स्वभाव प्रसव जाणना और कष्टसें बच्चा होय उसमें विगाड भया समझणा एसे विगाड पुरुष तथा औरतोंके विरुद्ध आचरणोसे होता है, सो विरुद्ध आहार विरुद्ध विहार विरुद्ध चेष्टासे बैठणा उठणा सोणा चलणा दोडणा टेढा झुकणा वगेरे इस सबोंसें पैदा भये विकार और रोगोंका समावेश होता है, ये सब विकार और रोग मनुष्यकृत है, स्वभावजन्य नहीं शरीर रचनाकी खोडोंकूं कितनीक स्वभावजन्य लोक केनेहैं, वोभीतत्वदृष्टिसे देखे तो स्वभावजन्य नहीं कर्म और जीव दोनोंकी कुदरतने पदार्थ पैदा किया और उनोका स्वभावरूप समवायोनें उनोका धर्म पैदा किया है, इन पदार्थोंका योग होणेसें तरे२के पिंड और पदार्थ पैदा होणा ये समवायोंसे पदार्थोंका कुदरती धर्म है, पदार्थ अपने२ धर्म मुजब दुसरे पदार्थोंका मिलाप योग करलेना है, और पदार्थोंका पुरा२ धर्म केवली सर्वज्ञ जाणते हैं, तोभी उनोंका वचनरूप जो श्रुतज्ञान है, सो अपने मतिज्ञानके क्षयोपशम मुजब उस मति श्रुति ज्ञानसें मनुष्यभी यथाशक्ति जान सक्ता है, उसमें अज्ञान कर्मके वश अनेक भूल और मिथ्या विपरीत योग याने आचरणोंमें जीवकुं लेजाता है, मनुष्यके

अज्ञान कर्मसें विपरीत वर्त्ताव प्रजाकी उत्पत्ति वगेरे दोनों भव साधनरूप धर्म नहीं पलता उस करके गर्भमेंभी विगाड अथवा दोप रहता है, धन्य है वो मनुष्य जिसने सम्पग ज्ञान पाया वो जन्म लेणेसें छुटता है, अज्ञानके वश विकारवाला दोपवाला शंतान पैदा होता है, धर्मशास्त्रमें लिखा है मनुष्यजन्म और आर्यकुल पंचेद्रीय निरोग दया धर्म श्रद्धारूप निर्मल बुद्धि पुन्य विगर जीव नहीं पाता इसवास्ते मातापिताकी अच्छी आचरणा ये पथ्य ये सब पुन्यवंत शंतान पैदा करणेका एक वडा भारी उद्यम समवाय समझणा जादा क्या लिखें जिस२ कारणोंसे शंतानके शरीरमें गर्भमें विगाड होता है, वो वो कारण प्रसव समयमें और सूवा रोगरूप कष्टका कारणभी होजाता है, जैसें औरतोंकी अज्ञानताका विगाड है, तैसे२ पुरुपभी परस्त्री गमन मिथ्या भोगादि कोंसे स्त्रीका शरीर विगाड देता है, फेर तो शंतानभी दुष्टही पैदा होते हैं.

कितनेक प्रशव तो सुख शांतिसे होते हैं, और कितनेक वडे कष्टसे इसवास्ते उसके २ भाग कल्पन किया जाय तो एक स्वभाव प्रशव १ वो तो जैसे दस्त वेसाव वगेरे शरीरके दुसरे वेगोंकीतरे ये शरीरका धर्म है, सो झट होजाता है, दस्त लगे इतनी देर लगती है, और थोडी नाताकती खेचल वगेरे और दुसरा कष्ट प्रशव २ सो दरद और दुसरे वेमारीकी संग वो अस्वाभाविक प्रशव २ पहला प्रशव तो पथ्यमें चलणेवाली स्त्री और निरोग पुरुपका वीर्य उनोंके होता है, १ दुसरा इनसे विपरीत चलणेवाली औरत तथा मर्दके संबंधसे होता है, २ गर्भवंती औरतें जिसतरे खानपान वर्त्ताव करे सोकल्प सूत्रकीटीकासें जाणना महावीर स्वामीके जन्माधिकारमें ग्रंथ वढणेके भयसे नहीं लिखा.

(देशी सुवावडका हाल)–अव्वल तो कची ऊमरमें रहा भया और रोगी हालतमें रहा भया अथवा पीछेसे कुपथ्य करके विगडा भया गर्भ बूरी हालतमें मा और बचेकूं डालता है, अपणे देशमें जापेवाली औरतकी सरवरा अथवा इलाज बहोतही बूरी हालतमें होता हैं, जिस काममें चतुराई और सब तयारी करणी चाहिये उस जगे मलीनता और सब तरेकी मुसीवतें धरी भई नजर आती है, याद रखणा चाहियेकी ये जोखमका काम है, और मनुष्यावतार नया प्रगट होणा है, क्यों के जिसकेवास्ते अदमी बहोत उमेदवारी धराते हैं. और जपतप योगी जतीका चरण सेवते हैं, जिस विगर औरत और मर्द अपनी जिंदगानीकूं निष्फल मांनते हैं, तो एसे नररत्नकी पैदाशकी वक्त उसकूं तथा उसकी माताकूं कैसे दुष्ट हालतमें डालते हैं, (सो इस मुजब)–पहली तो एक अंधारी कोटडीमें एक उंडे खूणेमें उसका खाट डाल्ते हैं, उसके आसपास मलीन और गंधी चीजोंका भराव रखते हैं, पुराणी मूंजका टूटा झोली जैसा खाट सुएवालीके तइयार रखते हैं, फेर जूनी पुराणी फटी टूटी अनेक वेर सुवावडके काममें आई भई एसी एक गूदटी उसपर विछाणेमें आती है, जापेवालीकूं गंधे मेले फटे टूटे कपडे

पहिराणेमें आता है खाटके आसपास एसीही जुनी पुराणी गंदी चीजे लाकर रखणेमे आती है ये लोक एसा जाणते हैं की जापेमें सब चीज मलीनही चहिये जिस बच्चेकूं जमीनका प्रकाश उजाला साफ हवा और सृष्टीकी सुंदरता धर्म वगेरे पुन्यके साधन वास्ते जन्म लेता है वो बालक जन्मते ही क्या देखता है अंधेरा गलीचपणा खराब हवा बच्चेके श्वासोश्वास वास्ते साफ हवा चहिये जिस्सें प्रफुलित रहे उसमें पूरी २ खलल पोहचणेका साधन पूर्वोक्त गंधापणा रखते हैं परम पवित्र परमेश्वर श्रीऋषभ देवने जो पवित्रताका धर्म ग्रहस्थोंकों सिखलाया विधि आत्रेयादि पुत्रकूं बताई उनोनें शास्रोके द्वारा प्रकाश किया वो अभीतक आर्य लोकोंमें चल रही है लेकिन् सोचणा चाहिये ये स्नान वगेरे जो शुद्धियां है वो किस कारणके वास्ते है जो इस बातकूं जाणते तो कभी किसीभी जगे अपवित्रता नहीं रखते स्नान वगेरे शुद्धिकी जो महिमा चली है वो लोकोंकूं दिखाणेवास्ते नहीं अथवा हम धर्म बहोत पालते हैं एसी जूठी गप्प मारणेकूं नहीं चली लेकिन् केवल मनके प्रफुलित और बदनकी सफाईवास्ते और इस स्नानसें बदन निरोग रहता है इसीवास्ते जैनियोके सूत्रोंमें गृहस्थ श्रावगोंके वर्णनमें पहली स्नान और देव पूजा बाद किसीभी कार्यका स्वरूप लिखा है ये स्नानका स्वरूप ब्राम्हन जटाशंकरभी अपणे मासिक पत्रमें एसाही लिखा है जैनियोके सूत्रमें न्हायाकयवलिकम्मा अर्थ इस सूत्रका एसा है स्नाता कृतवलिकर्मा (भाषा) स्नान किया करी अपणे इष्ट देवकी पूजा (प्रश्न०) क्यों जी हमने तो देखा और सुणा है के जैन लोक तो बडे मलीन और स्नानमें पाप मांनकर बहोत लोकोंकों ढूंढिये तेरा पंथी नामके साधू है वो वणियोंको सोगन दिलाते हैं और तुमने जैनियोके सूत्रका पाठ लिखा—(उत्तर)—हे महोदय हम फक्त स्नानकूं मुक्ति साधन रूप धर्म कब लिखते हैं और न ब्राह्मण जटाशंकर घरवेदूं ग्रंथमें धर्म लिखता है लेकिन् शरीर शुद्ध मन प्रफुलित होनेसें बाद देवपूजा गुरुवंदन ग्यान ध्यान जो किया जाता है उसमें धर्म है जहां बदन निरोग होगा उससे धर्म सधेगा बेमार धर्म नहीं साध सकता है दुसरे देहीकी अपवित्रतासे परमेश्वरका नाम जप जाप मुखसे प्रगट स्तवना कहणेसे निरफल और पाप जैन सूत्रोंमें माना है ठाणांग सूत्र तथा टीका दसमे ठाणेमें देखणा स्वाध्यायकी मनाई है अपवित्रतामें, जैन मुनिका धर्म सुच है वो अपवित्रता रखते नहीं है स्नान सोले सिणगारोंमेंसे पहिला शृंगार है और जैनके मुनि शृंगारके वास्ते स्नान करते नहीं जो कोइ साधू उत्सर्ग मार्गमें चलता भया मैलका उपसर्ग सहता है तो भी क्रोध मान माया लोभसे रहित है इसवास्ते उनोका अंतरंग आत्मा शुद्ध है इसवास्ते एसे परम पुरुषको मैला कहे सो मैला है लेकिन् जो क्रोध और अहंकारके वस परमेश्वरके कहे शास्र न माने देवकी मूर्त्तिको पत्थर कहकर हीलना करे दया लाकर जो किसी दीन दुखीकों

दान देवे सो देणेमें पाप वत्ताकर अणुकंपा दान निषेधे श्रुत केवलीके वनाये शास्रोंको न माने और ज्ञानवंत पंडितोंको तुछ समझे गृहस्थका और साधूका सब धर्म एक बतलावे इत्यादिक धर्म और पुन्यकी वार्तोमे अनेक कुयुक्तियें लगाकर गृहस्थोकों उलट जालमें फसाकर अपणे मान महत्व भोजन वस्त्रका उपाय करे रातकूं जल नही रखे और फरागत रातकूं जावे तो पैशावसें गुदा धोवे उसी पात्रमें पेशाव करे उसीमें प्रभाततमे आहार पाणीलाके खावै कोइ पंडित पूछे तो मोयपडिमाका (याने मुक्त पडिमा) नियम धारीका प्रमाण वतलावै शब्दार्थ और है और प्ररूपणा उलटी करे पेशावसे गुदा धोया भया आवस्यक वगेरे परमेश्वरके वचनरूप शूत्रका उच्चारण करे पेशाव कर विना हाथ धोये पुस्तक जो परमेश्वरके तुल्य सूत्र है उनोके हाथ लगावै ये सब काम ओपडोकीतरे करे वो जैन मतके साधू नहीं मन मतके साधू हैं विचारे भोले जीवोकों धोखेवाजीसें सूत्रका नाम और कल्पित अर्थोसे उलटा समझावै एसे लोकोंकी ऊपरकी मलीनतासें पूर्वोक्त परमेश्वरके हुकम तोडणेसें अंतरंग कषायसे अंदरकीभी मलीनता समझणी दश धर्म यती साधुओंका है उसमे सौच जो कहा है वेसा ऊपर और अंदर द्रव्य करके और भाव करके शुद्ध वो जैनके साधू है भगवती सूत्रमें पंचमे कालमें दो प्रकारके साधू अभी वतलाये हैं वो साधू ही यथार्थ है वकुस १ और कुशील २ एकेकका पांच २ भेद है उस सूत्र और टीकासे देख लेणा ग्रंथ वढणेके सयय नहीं लिखा जैन वगेरे सैवादिक पवित्रता पूर्वोक्त कारणके लिये मानते हैं इति प्रश्नोत्तर। हे महोदय, जैन धर्मका चलणा इस दुनियांमे सब धर्मोसे पहिला है इस वातका निश्चय देश अमेरिका चीकागो सहरमें वडे २ यूरोपी विद्वानोंने दरयाप्त करके लिख दिया है पुस्तकोंमें पुस्तक पुराणा लिखा वेदका उनोने सावत किया है क्योंकी जैन धर्मका ग्यान कंठाग्र मुनियोंके था इसवास्ते सब लिखा नहीं था लेकिन् ये तो स्वतः सिद्ध हो गयाके जिसका धर्म पहली उनका ज्ञान पहली ज्ञान विगर धर्म हरगिज नहीं याद शक्ति जबरके कारण नहीं लिखा जिनोंकी बुद्धि कमथी उनोने मत चलाते लिख लिया होगा लेकिन जैन धर्ममेंमे निकले तीन फिरका उनोंकी चलन देख अन्य लोकोंने जैन धर्मकूं तीन कलंक लगाये तीर्थंकरकी नग्न मूर्त्ति दिगांबरोंने वनाई उससे लोक जैनोंके नंगे देव कहणे लगे नंगी मूर्त्ति स्टर्की है जैनोंकी नहीं १ दूसरे मलीनता याने ऋतु धर्म स्त्रीकूं आवे उसवीभी छूत छात नहीं और चाहे गृहस्थका केसाइ हो लेकिन सामायक भगवंतका नाम सुनना वगेरे शुभ काम करने हुंदी ये तेरा पंथके मनका देख जैन धर्मकूं मलीन होके कहने लगे लेकिन वानप्रस्थ आश्रममें जो मलीनता तथा वेदोंका यज्ञ अश्वमेध गउमेध इन यज्ञमें वकरे प्रमुख अनेक जीवोंको मारणा और मांस खाना सौत्रामणी यज्ञ का मदिरा पीना इत्यादि कार्तिमनार्थ अंतरंग है मलीन जिनोंका वो मलीन है जैन धर्म

दया मई होनेसें ये मलीनता जैनोमें नहीं २ तीसरे दान पुन्य निषेध रूप उपदेश विल्ली चूएकूं मारती होय तो छुडाणा नही इत्यादिवातोसें तेरा पंथियोंकी चलन देख लोक जैन धर्मकूं कलंक लगाते हैं ये वात भी अपणे स्वार्थमें तत्पर एसे शास्त्रोकों वणाणेवाले अपणी जातिकी उच्च दसा दिखाकर अपणे पुराण और स्मृतियोंमें केइ जगे लिखा है के फक्त दान देनेका पात्र एक जगत्में ब्राम्हन है दुसरे सब पाषंडी है पाषंडियोंको देनेमें वडा पाप है विल्ली चूहेकुं मारते नहीं छुडाणा ये वातभी वहोत अनार्य निर्दइ म्लेछ कहते हैं के वो उसका भक्ष है छोडावे तो अंतराय कर्म बंधता है वेदांती ब्रम्ह अद्वैत वादीयोंका भी यही सिद्धांत है ब्रह्म तो मरता नहीं वाकी तो सब स्वप्नवत् जूठा है ब्रह्मनें ब्रह्मकूं मारा ब्रह्मकूं पाप लगता है नहीं चार्वाकभी मारणेमें पाप वचाणेमें पुन्य नहीं मानते हैं जीवकूं मारते देख अपणी शक्ति मुजब नहीं छुडावै और करुणा नहीं आवै ये काम नर्क जाणेवाले चंडाल विना दुसरेके कभी नहीं हो सकते ये वातभी जैन धर्ममें नहीं है के दान न देणा और मरतेकूं नहीं वचाणा ३ जैन धर्ममें ये तीनोंही वात नहीं, पुन्य मुक्ति जाते हुये जीवके वोलाउरूप है तेरमे गुणस्थानकतक पुन्य जीवके संग रहता है ये तीनोंही कल्पना मनुष्य कृत है तीर्थंकर तो स्याद्वादनयसें उपदेश करते हैं उनोके वचनका एक नय मकडके जो अपणा मत थापे वो मिथ्यात्वी देखो भगवंत कहते हैं व्यवहार नयसें पुन्य आदरणे योग्य निश्चय नयसें छोडणे योग्य अब विचारणा साधूपणा श्रावकपणा तप जप विहार वगेरे और सब क्रियानुष्ठान व्यवहारनयकूं प्रवल मान कर व्यवहार साधते हैं और कहते हैं व्यवहार साधणा चाहिये निश्चय धर्म तो केवली जाणते हैं लोक तो जिसका व्यवहार शुद्ध देखते हैं उसका इस लोकमें प्रतिष्ठा सत्कार करते हैं सब मतोंवाले तो फेर पुन्य करणेमें व्यवहारनयकूं केसें उठाया निश्चय नयतो भाव आश्री है जिसकूं मनका परणाम कहते हैं प्रत्यक्ष देखते हैं दिया भया निरफल होता ही नहीं जेसा २ अगला पात्र इत्यलं इसवास्ते वालक जन्मणा ये एक मंगल काम है इस जगे सब सामग्री पवित्र उजाला और शुद्ध हवा चहिये जिस जगे वडी भूल अपणे २ न्यात जात मुजब अलग २ रीतरीवाज रूढी आचारके आधीन होकर वच्चा और जापेवालीका केसा संस्कार करते हैं।

(जापेवालीका उपचार)–खाट हवाकी जगे उजाला होय उहां रखणा उस जापेवालीके आस पास वहोत भीड तथा वात चीत नहीं होणे देणा पीड मन्द भये पीछे वहोत करके २४ घंटेके अंदर वचेका जन्म होता है जो पीड वहोत कष्टके संग आवे अथवा कोइ दुसरा कारण वणे तो वच्चा होने २ औरत होल्नी है और जो वच्चा सुख शांतिमें होय तो भी औरतकूं वडा परिश्रम पडता है इसवास्ते वच्चा भये वाद उसकूं थोडे घंटोंतक विसरामके लिये सोणे देणा जो नींद आजायगी तो थकेला उतर जाता है

और हुसियारीमें आती है जो नाताकती वहोत मालम दे और नींद नहीं आवे तो जाग्रती और ताकत लाणेवाली दवा देणी द्राक्षासव देशी वैद्य देते हैं डाकटर वाइन और ब्रांडी देते हैं किसीतरे हुसियारीमें लाणा ऊपर लिखे मुजब एक नींद लिये पीछे और हुसियारीमें आये पीछे पाणीमें बेरकी जडकी छालकूं उकाल दिनमें दो चार वेर अथवा पाणीमें ब्रांडी मिलाय योनिके बाहरके भागोकूं धोणा चहिये और आमल गिर गये पीछे गरम पाणीमें कपडा डुबाकर बाहरके भागपर वेर २ धरणा जापेवालीकूं थोडे दिनोंतक तो खाटमेंही सुलाये रखणा विछोणेमेंसे ऊठके फिरणे चिरणेसें वैठणेसें गर्भ-स्थान खिस जाता है खून गिरणे लग जाता है और उससें दुसरे वडे २ डरावणेवाले रोग पैदा हो जाते हैं आठ दिनतक तो जरूर सुलाये ही रखणा दस्त पेसावभी उसी खाटमें पडीकूं ही कराणा वाद वैठणे उठणेकी जरा २ टेव डालणी पनरे दिन पीछे हाल चाल करणी सो भी हलू २ अपणे लोक एसी तजवीज कुछ नहीं रखते इसवास्ते योनिमें केइ २ तकलीपें पैदा हो जाती है इस वातका पूरा २ खयाल औरतोंने रखणा परिश्रम मैथुन गुस्सा ठंढा और वासी पदार्थ हवाकी जगा उसकूं त्यागणा एक महीनेतक थोडा और हलका भोजन लेणा हमेस सेक करणा और तेल मसलाणा ।

(दुष्ट कष्टीपणा)--पीड चले पीछे २४ घंटेमें प्रसव होणा चहिये और होय नहीं कष्ट पडे जाणना चहिये वचा आडा पडणेसें अथवा वचेका शिरवडा होय अथवा और-तके कोइ दुसरी इजा होणेसें वैठकमें सख्तमल बंधा भया रहणेसें अथवा गर्भस्थानमें वहोत पाणी होणेसें वो ढीला होता सुस्त होता है और चहिये जितने जोरसे सुकडता नहीं और इसतरे होनेसें कमलका मूं चहिये जितना खुलता नहीं उस करके गर्भ बाहर नहीं निकल सकता दाइ उसकूं जोरसें करांजणेका कहती है उससें भी उसकूं वहोत कष्ट होता है ।

(इलाज)--दस्त कब्ज होय तो गरम जलकी या एरंड तेलकी पिचकारी लगाणी२ वहोत थकेला होय तो थोडी देर सोणे देणा--(गर्भका वेग)--वचा जणती वखत जो आता है गर्भाशयकी शिथलताके कारण वहोतसी वख्त वेग बंध होता है इसवास्ते एसी दवा उस वख्त देणी चहिये सो वेग चला आवे लेकिन् गर्भ अटकणेका दुसरा कोइ कारण होय तो वेगकी दवा फायदा नहीं करती टंकण और अरगट ये दोनों दवा वेग लाता है ।

(रक्त श्राव)--वचा भये पीछे ऋतू धर्मकीतरे खून गिरता है उस खूनके संग आमलका कितनाक हिस्सा तथा गर्भस्थानमें रहा भया कितनाक कचरा बाहर आता है ये श्राव धीरे २ कम होता है और रंग वदलणे लगता है ये खून और खून मिला भया हरे २ रंगका पानी दश पनरे दिनतक चलते रहता है और पीछे बंध होता है

इसकूं दवा दे कर एकदम बंध करना नहीं गरम पाणीमें कपडा भिगाकर बाहरके द्वारपर धरणा अथवा ठंढा पाणी एसे श्रावकूं तुरत बंध कर देता है उससे फायदेके बदले उलटा नुकशान दुसरा रोग पैदा होता है किसी वख्त जब खून जादा जाता है तो नाताकतीकाडर होता है इसवास्ते अत्यार्त्तव रोगपर लिखे भये इलाज करणा ।

(जखम)–बहोत सीदाइयें धीरज और सावचेती नहीं रखकर जल्दीसें बचेकूं खेंचणेकी अजमायस करती है उससें औरतके इजा होती है अंदरमें फटकर चीरे पडते हैं वो जखम बडी मुस्किलसें रुकते हैं उसकूं गरम पाणीसे धोणा आपसमें दोनो बाटिये घसीजे नहीं इसवास्ते चलणे नहीं देणा नरमदस्त आवे एसी दवा देणी (खुराक)– मुलक २ के जात २ के अलग २ रीत रिवाज चल रही है इसवास्ते इहां सामान्य खुराक में लिखूंगा इतनाही बस है तैलंग देशमें तीन दिन जापेवालीकूं लंघन कराते हैं सो ताकतवर औरत या कोई सामज्वरवालीकूं फायदेचंद है लेकिन नाजुक और नाताकतीवालीके लिये अछा नहीं ये लंघन इस मुजब कराणा चाहिये बचा भये बाद चार पांच दिनतक साबू दाणोंका दलिया थोडा फुलका पुराणे साठी चावल दूध चाह एसा पतला और हलका खुराक देणा और पीछे हलवा वगेरे घीवाला खुराक देणा ।

(अधूराजाणा)–गर्भ रह्यां पीछै ७ महीनेके अंदर अधूरा गिर जाता है सातमें महीनेसे लेकर नवमे महीनेके पहली जो बचा होता है वो सतमासिया अठमासिया कहलाता है वो भी अधूराही गिणा जाता है अधूरा जादा करके तीसरे महीने जाता है वो बंधा भया जादा नहीं होनेसें खूनही गिरता है चोथे महीने पीछे गर्भका शरीर करडा बंधता है वो गिरणा गर्भपात कहलाता है अधूरा एक वेर पडे पीछे वेर २ गिरणेका डर है कुसुआवडसें औरतका शरीर बहोतही बिगड जाता है । (कारण)– नाताकती अयोग्य आहार विहार और महनत गुस्सा डर कामविकार उंचा नींचा गिरणा गर्भाशयकी नाताकती अथवा उसका रोग वगेरे उसका कारण है गरमीके दोष वाले वीर्यसें और नाताकत औरतके रहा भया गर्भ पूरे महीने टिक नहीं सकता जो कभी हो भी जाता है तो जीता नहीं (लक्षण)–बेचैनी आलस थकेला कमर तथा पेडूमें शूल थोडा २ खून झरणा ये उसके पूर्व लक्षण है पीछे जणणेके वखत केइ यक चिन्ह मालम देते ही एकदम अधूरा गिर जाता है अथवा ये चिन्ह थोडे दिन कायम रहके पीछे होता है बहोत खून गिरणा ये जोखम तथा मोतकी निसाणी है– (इलाज)–जो खून थोडा गिरे तो गर्भ थांभणेका इलाज करणा १रोगीली औरतकूं एक ठंढककी जगामें करडे बिछोणेपर अत्यंत सुख शांतिमें सुलाये रखणा २ अत्यार्त्तवका इलाज करणा चार आनाभर फुलाई भई फिटकडीकूं अधसेर जलमें मिला चार २ घंटेमें नीतरा भया जल पिलाते रहणा ३ क्लोरोडाइनकी ३० बूंद एक औंस पाणीमें मिलाकर पीणा खूनका

रोगी एक पर दोय वैद्य इतने दो दो कभी एक जगे अछे नहीं इसवास्ते राजा महराजोंकी वात अलग है कारण आपसमें मिलणे नहीं देते और एक स्त्रीपर प्रेम राम जेसे रख्खा वेसा रहता है वहोत स्त्रियोंपर प्रेम कृष्णने रख्खा वेसा रहता है आपसमें ताने मोसे होतेइ रहते हैं वहोत मूर्ख कहा करते हैं वांझडीका इलाज है ही नहीं क्योंकी उनोंने वैद्यक शास्त्र पूरा जाणा नहीं कारण वांझडीपणा ये वदनका येक रोग है सो शास्त्रसें या दवासें मिट सकता है जब जमीनका और बीजका स्वरूप विचारेंगें तो ये सब वात समझमें आ जायगी जेसे जमीन अशुद्ध झाडी और झाखवाली पथरोंकी खार वाली और पाणीभी बेमोसमका खराब और खात विगर डाली भई जमीन विगर संस्कारकी होती है तो उसमें अछा बीजभी पैदा नहीं होता जो कभी पैदा होता है तो फल या दाणे नहीं पकते इस किसम जो जमीन सब किस्म अछी हो और उसमें वोणेका बीज विगडा भया सडा भया होय तो यही हाल होता है अपणे प्रत्यक्ष देखते हैं एसी खराब जमीनकूं हलसें फोड खात डाल अनेक जतनोंसे सुधारेबाद उसमें अछा बीज बोया जाय तो अछे फल लगते हैं इसी किस्म औरतका वदन निरोग मेद मलीचपणा सोजा गांठ जखम गरमी पीप पकणा धातू गिरणा खून गिरणा वगेरे होय तो दूर करणा तो फल देणेवाली होती है वांझडी होणेका कारण–औरतके योनिमें स्वभावसें खोड जेसे कमलका मूं टेढा चमडीका पडदा अथवा कमलका मूं संकडा और स्त्री अंडकी अपूर्ण स्थिती २ औरतके शारीरक दोष जेसेके रजोत्पत्तीकी कसर अथवा विकार अथवा वदन फूल जाणा अथवा जल जाणा जादा ताततपणा सूवा रोग वगेरे ३ (स्थानिक दोष)–जेसेंके गर्भाशय प्रदर गर्भाशयका वरम गर्भाशयमें चरबी गांठ वगेरेका जमाव गर्भाशयका फिर जाणा टेढा होणा कमल मुखका वरम तथा जखम योनी मार्गका सोजा दाह तथा असहणा गरमी सुजाक वगेरे चेपी रोग ४ पुरुषके वीर्यका दोष जेसे थोडा वीर्य दूषित वीर्य गरमी सुजाक वगेरे अथवा इनोंसें भया दुसरा रोग।

(इलाज) बहोतसे रोग तथा दोषोंका इलाज इस किरणमें तथा पीछे लिख दिया है इहां विस्तारसें लिखणेकूं अवकास नहीं है शारीरक या स्थानिक रोग मालम पडे वो मिटाणेका और सामान्य आरोग्यता बधाणेका इलाज करणा एसे रोग उलटे वढे एसा आहार विहारसें दूर रहणा पवित्रता और अछी आचरणा और सादा खुराक देणा।

(गर्भ पैदा करणेवाले इलाज)–गर्भाशयकी शुद्धि करके गर्भ धारणमें मदत करे एसे थोडे सामान्य इलाज इहां लिखते हैं १ फल घृत नं० २८०, २ योगराज गूगल नं० ५८, ३ उडद तिल पुराणा चांवल गुड मूलीके बीज गाजरके बीज दही गडी छाल कशारपटा गूगल ए लियेसें ऋतू धर्म आता है ४ मातुलुंगनीके पत्ते मार्जारगार वज्र

तथा भिलावा इनोंकों पीस पीणेसें ऋतू धर्म आता है ५ पल बीज जेठीमधु खपाट वड वाइकी नरमसाखें नागकेशर तथा मिश्री सहत दूध तथा घीमें पीणा ६ आस गंधके क्वाथमें पकाया भया घी प्रभातसमें पीणा ७ पुष्य नक्षत्रमें सुपेद रींगणीकी जड निकालके दूधमें पीस कर पीणा ८ पीले फूलोंका कांटा शेलियाकी जड धावडीका फूल वडकी शाख काला कमल उसकूं पीस दूधमें पीणा ९ जीरा सपेद फूलोंका सरपंखा और पारस पीपलका फल बांटकर पीणा १० खाखरा (पलासके पत्ते) दूधमें पीस कर पीणा इन इलाजोकों ऋतु स्नान करे पीछे १ से ८ दिनतक अजमाकर गर्भाधान करणा ।

किरण ११ मी.

बचोंका रोग.

जेसें औरतोंके केइयक रोग अलग होते हैं तेसे बचोंके केइयक रोग अलग २ होते हैं जेसेके दांत आणा वांइटे कृमि ओरी अचवडा खुलखुलिया खासी गाल पचोरिया इतना और भी तफावत है के बडी ऊमरवालेका और बचेकी नाजुक मिजाजके कारण इलाजोमें फेरफार करणा पडता है बचोंकी पिलाणेवाली दवाओंमें अफीम सोमल पारा धतूरा वछनाग हाइड्रोस्यानिक एसिड फोसफरस तथा कितनेक सख्त ऐसिड और क्षारोका देणा बणे जहांतक कभी नहीं करणा एसा विद्वान वैद्य और तबीबोंका फुरमाण हैं आरोग्यताके साथ ऊमरकी उन्नती चाहणेवाले वैद्य और डाक्टर जो परोपकारी है सो इन चीजोंका बरताव बिलकुल नहीं करते हैं अब बचोंका सादा और हमेसा केलिये भला एसा सामान्य इलाज लिखते हैं.

(जन्म घूंटी)-(गलथूथी)-बचा जब जन्मता है तब उसकूं गलथूथी पिलाणेकी बहोत जगे चलण है गुडची वगेरे बचेकूं इसवास्ते ये पिलाई जाती है के बचेकी शारीरक तथा मनकी शक्ति तथा बुद्धि बधाणेकूं और वैद्यक शास्त्रका हुकम है के बहोत दिनोंतक सेवन करणा चाहिये अज्ञान इहांतक फैल गया सो मूर्ख और तें मरजी मुजब एकाध गुड वगेरे चीज बचेके तालवेके लगाकर एक तरेका नेक चार किया करती है सोभी मुलक २ की अलग २ रिवाज ठहरायली हैं जन्म घूंटी इस वजे देणा चहिये सोना ब्राम्ही शंखावली सहत घी ये ताकत और अक्कलकूं वढाती है घी तथा सहतमें सोना घसकर पिलाणा शंखावली तथा सुपेद वचका चूर्ण घी तथा सहतमें चटाणा ये गलथूथी पहिले महीनेमें हमेस एकेक रत्ती दुसरेमें दो रत्ती एसे बरसभरकूं १२ रत्ती ... वर्ष वर्ष दीठ पांच २ रत्ती मात्रा बधाणी-(बचोंके रोग तथा कारण)-१ बचोंके ... ज्यादा करके माताके कुपथ्यमें होता है भारी तथा विषम खुराक माके दूधके बिगा·

डता है उसके पीणेसें वचा वेमार होता है २ दांत जब आणे लगते हैं तब बुखार दस्त उलटी तथा वांइटे चमकणा वगेरे वडी डरावणी हालतमें जागिरता है ३ दूध पीणा छोडे बाद खाणा जब सीखता है तब अयोग्य आहार ठंढ या गरमी हवासें वेमार होता है और मायापकी गफलत इसमें मुख्य कारण है देखते हैं सो वहोत अदमी तुल वृश्चिकी संक्रांतकूं ठंढ कालमानके गरम खान पान दिनका सोणा दही मसाले जादा गरिष्ट और पेटभर खाणा और ताकत वर दवायां खाणा सरू करते हैं कुंभ मीनकी संक्रातीमें दिनका सोणा गुड तेल वासी ठंढी चीजें लोक खाकर वेमार गिरते हैं इसी किस्म वचोंकूंभी वेमार डालते हैं ४ चेपी रोग जेसेके ओरी अचपडा वडी खासी वगेरे—(लक्षण)—बुखार दस्त खासी वांइटे वगेरे कितनेक रोगकी परिक्षा झट हो जाती है विगर वोलणेवाले वचोंके कितनेक रोगोंकी मालम सहजमें नहीं पडती वालक रोता रहे तब समझणा के तो इसकूं भूख लग रही है अथवा वदनमें कोइ दरद है शिर आंख कान नाक पेट वगेरे अवयवोंके अंदर जब दरद होता है तब वचा दम २ में उधर हाथकूं ले जाता है ओर दुसरा कोई उहां दबाता है तो जादा रोता है (१ बुखार)— दूध पीणेवाले वचेके विकारवाले दूधसे रोग होता है या अजीर्णसे होता है या आगंतुक कारणसें रोग होता है—(इलाज)—१ अतीस १ रत्तीसें १ वाळ सहतके संग चटाणा फायदे वंद है २ कृष्णादि चूर्ण नं० २२२ सहतके संग वालकका दूध छुंगणा कभी वंध नहीं करणा मा या धायकूं पथ्य करणा माकूं पथ्य या लंघन येही वालकका पथ्य या लंघन समझणा ३ खाणेवाले वचेकूं पसीनेकी दवा तथा दस्त साफकी दवा देणी हरडे या एरंडी तेल ४ फक्त कुटकीकूं शेक उसकी फकी जलसें देणी—(दस्त) दूधके दोषसें दांत निकलणेसे अपचेसें ठंढी हवाकी असरसें ओर ओरी अचपडा वगेरे फूटके निकलणेवाले रोगसे दस्त होणे लगते हैं—(इलाज)—१ एरंडी तेलका जुलाब देणेसें दस्तका कारण वंध हो जाता है २ इंद्रजव जरा सेक कर दूधमें अथवा मूंमे देकर चूंची पिटाणा ३ वीलकी गिर धावडीके फूल वाला लोद तथा गजपीपर इनोंका क्वाथ अथवा चूर्ण सहतके संग ४ अतीस सुंठ मोथ वाला इंद्रजवका क्वाथ ५ इंद्रजव तथा वायवि डंगकूं शेक इसकी फकी ६ होवर्स पाउडर देणा ७ अजमोदादि गुटिका नं० २४७.

(बुखारके संग दस्त)—१ शृंग्यादि चूर्ण नं० २२२ सहतमें देणा २ होवर्स पाउडर तथा क्विनाइन देणा ३ अतीस सहतमें चटाणी.

(आम मिला दस्त)—१वायविडंग अजमोद छोटी पीपरका चूर्ण गरम पाणीके संग देणा २ कुटकीकूं शेक पुराणे गुडमें गरम पाणीसे देणा—(खूनका दस्त)—१ सुंठ

अतीस नागरमोथा वाला तथा इंद्रजवका काथ २ वाला तथा सहत चावलोंके धोये जलमें ३ डोवर्स पाउडर.

(६ खासी)-१ शृंग्यादि चूर्ण नं० २२२ सहतके संग २ मोथा अतीस छोटी पींपर तथा काकडासींगीका चूर्ण अथवा काथ सहतके संग ३ अतीसका चूर्ण सहतमें ४ ईपीकाक्युआना पाउडर १ ग्रेण एन्टीमोनियल पाउडर ३ ग्रेण मोलेठीका चूर्ण ९ ग्रेण दो दो ग्रेण खांडके सीरेमें देणा ५ केलोमेल ५ ग्रेण रुबार्ब पाउडर ४ ग्रेण मिलाकर दो पुडीकर एक चीणीके सीरेमें देणा उससे दस्त साफ नहीं आवे तो ५ घंटे पीछे दुसरी फेर दे देणी ६ इतने इलाजोंसे खासी कम नहीं पडे तो एन्टीमोनियल वाइन दश बूंद एपीकाक्युआन्हा वाईन २० बूंद नाइट्रेक ओफ पोटाश ग्रेण ६ केम्फर वोटर ग्रेण ६ इनोकों मिलाकर टंकमें एक छोटी चिमचीभर दवा दिनमें तीन वेर देणा.

(७ वडी खासी)-खुल खुलिया खासी एक चेपी रोग है ये वच्चोंकेही होती है उसमे थोडा बुखार आता है और खासते उलटी हो जाती है और खासते २ मूं लाल हो जाता है मुरझा जाता है किसी २ वखत दस्त पेशाव भी अंदर निकल जाता है इस रोगमें वाजे वखत चमक और वांइटे हो जाते हैं दुसरे अठवाडियेमें इस रोगका जोर वहोत वढता है लोकीकमें अढाई महीनेकी मुदत इसकी मानते हैं अगर अच्छीतरे सार संभाल दवा करणेमें आवे तो तीसरे अठवाडे पीछे मिट सकता है-(इलाज)-कस्तूरी इकेली अथवा किसी दुसरी दवाके संग देणा २ भीमसेनी कपूर फायदा करता है ३ कांटा शेलियेकी छालका उकाला पीणा ४ ईपीकाक्युआना हींग ५ सुय रींगणीका उकाला सहत डालकर पिलाणा ६ हरडेकी अवलेही नं० २६४, ७ कंटकारी अवलेह नं० २६३, ८ नींद लाणेकूं अफीम किरमाणी डोवर्स पाउडर वगेरेका उपयोग करणा.

(८ हांफणी)-१ शृंग्यादि चूर्ण नं० २२२, २ हरडे वहेडा मोलेठी सम वजन गरम पाणीमें पीस उसमें जरा सींधा निमक तथा सहत मिलाकर २ से ३ वाल दिनमें तीन वेर चटाणा जरूर लगे तो रेवचीणीका शीरा डालणा ३ अरडूसेके पत्तोंका रस जरा गरम कर अंदर सहत डालकर पीणा ४ वडी ऊमरके वच्चेकूं पापडखार चिणेकी दाल इतनाही गुड तथा गरम दूधमें मिलाकर पिलाणेसें उलटी होगी ५ डाकतर लोक ब्रांडीका दो चार बूंद चिमचा भर पाणीमें पिलाते हैं (६ वाहरका इलाज)-फुलालीन टरपेन्टाइन तथा पोस्तके डोडेका छातीपर सेक डीकामाली रेवचीनी तथा एलियेका पेटपर लेप अरडूसेके तथा नागर वेलके पत्तोंकूं पेटपर वांधणा.

(श्वास तथा खासी)-१ द्राख अरडूसेका पत्ता हरडे तथा पींपर चूर्ण सहतमें २ भीमसेनी कपूरका चूर्ण सहतमें ३ धमासा पीपर दाख तथा हरडेका चूर्ण सहतमें ४ धाणा

तथा मिश्री चावलोंके धोवणमें ५ काकडासींगी मोथ तथा अतीसका चूर्ण सहतमें ६ अरडूसेके पत्तोंका पुटपाक कर रस निकाल उसमें सहत पींपर तथा फुलाया टंकण डाल पिलाणा ७ अरडूसा सूंठ तथा भूरींगणीका उकाला सहत डाल ८ अलशीकी पोटिस गरम २ छातीपर बांधते जाणा–१० (उलटी)–मोथा अतीस काकडासींगीका चूर्ण सहतमें २ जायफलकूं सहतमें घसकर देणा ३ कुटकी सहतमें चटाणा ४ चित्रक सूंठ सहतमें.

(दूधकी उलटी)–१ आंबेकी गुठली चावलोंकी धाणी सींधा निमकका चूर्ण सहतमें २ कली चूनेका नीतरा भया पाणी दूध मिलाकर पिलाणा ३ हरडे अथवा एरंडी तेल देकर पेटका विकार होय सो निकाल डालणा–(१२ गलेका पडणा)–तालवेमें खड्डा पडता है बचा चूंग नहीं सकता दस्त पतला पाणीकी प्यास डोक तथा मूंमें दरद दूधकी उकारी करे–(१ इलाज)–हरडे वच तथा उपलेट सम वजन दूधमें उकाल उसमें तीजे भागका सहत मिलाय फजर सांझ चिमचा २ भर पिलाणा २ एरंडीके पत्ते घीसे चोपड तालवेपर बांधणा ३ तालवेपर हमेस घी तथा तेल लगाकर चिकणा रखणा ४ सेंमरका सींग दूधमें घसकर पिलाणा तथा तालवेपर लेप करणा ५ वज तथा जायफल घीमें पीस लेप करणा.

(१३ गाल पचोरिया)–गाल पचोला कानकी जडके नीचेके गलेके दोनों भाग लाल होकर सूज जाता है तथा गांठे हो जाती है.

(इलाज)–१ फिटकडीके कुरले कराणा मांजू फलके कुरले कराणा उकाल कर अकलकरा मूंमे रखवाणा ३ जंगली उपलोंकी राख मुलतानी मट्टी सींधा निमकका लेप ४ सहत कलीचूनेका लेप कर रुई चपकाणी जादा तकलीप होती दीखे तो जोकसे खून निकलवा डालणा और कर्णक सन्निपातसे गांठ होय तो घी पिलाकर सात दिनमें या तो मिटे नहीं तो वाद जोक लगाणी या चित्रक आककी जड बीजोरेकी जड दारू हलदी अरणीकाष्ट रासना सूंठ इनोंको पीस गरम कर उसपर लेप करणा पेटमें दवा कर्णक सन्निपातकी देणी.

(१४ पारगला)–गर्भवाली औरतका दूध पीणेसें हाथ पैर तो सूके जाते हैं पेट घडे जेसा खासी मंदाग्नि उलटी अरुचि अंधेरी झांखा पडणा भ्रम ये उसके लक्षण हैं–(इलाज)–१ छोटी पींपर सहतमें चटाणी २ वडी हरडे तजकुं घस जलमें देणा ३ अजमोद जीरा स्याहजीरा सूंठ इनोका [illegible] मिरच गरमागरम जलमें डाल ठंढा भये बूरा डाल पिलाणा ५ [illegible] या सहतमें या घीमें.

(१५ [illegible] दांत आते वखतमें होणेसें आंतरोंमें सख्त

मल बंध जाणेसें ४ अतीसारकी बेमारी वहोत दिनोंतक रहणेसें ५ बुखारसें ६ खुल खुलिया खासीसें ७ और मृगी वगेरे मगजके विकारसें वांइटे आंचकी हो जाती है– (इलाज)–१ गरम पाणीकी वाफ नं० ५६६ बच्चा नाताकत होय तो वाफकी एवजीमें लिखा धावलेका प्रयोग करणा २ दस्तके विगर दुसरे कारणसें आंचकी भई होय तो एक जुलाब दे देणा एरंडी तेलका अथवा सल्फेट ओफ सोडा ३ दस्त लगते होय तो दस्त बंधकी दवा देणी जेसे क्लोरोडाईन संजीवनी वगेरे ४ जो पेटमें वहोत बोझा होय और उलटी होती होय तो उलटी कराणेकी दवा देणी अथवा गलेमें पींछा फिराके उलटी कराणी ५ पेटपर राईके पत्ते अथवा कपडा दोलडेके बीचमें राइका पलाश लगाणा चमडी लाल होय तब निकाल डालणा ६ दांतके मसूंढे गरम और नरम होय तो शस्त्र वैद्यसें ऊपर दांत निकलणेकी जगे चीरा दिलाणा ७ कृमिसें होय तो कृमिहर दवा पृष्ट ३१६, सेन्टोनाइन १ से दो ग्रेण चूरेके संग देणा और ४ घंटे बाद चिमचा भर एरंडीका तेल पिलाणा सब निकल जायगी जो दस्त सुपेद आता होय तो डोवर्स पाउडर देणा.

(१६ मृगी)–(वाई)–सपेद पेठेके रसमें मोलेठीका चूर्ण देणा २ गऊका दूध घी दही और गोवरमें पकाया भया घी चटाणा ३ शीतल मिरच हमेश एकेक दो दो खिलाणा ४ वचकी सहतमें ॥. सें एक वालकी गोली कर खिलाणी.

(१७ फूटकर निकलणेवाले बुखार)–इन सबोंका इलाज बुखारके किरणमें लिखा है शीतला औरी अचवडा वगेरेका.

(१८ पेटका फूलणा)– १ सींधा निमक सूंठ इलायची तथा सेकी भई हींग घीमें चूर्ण अथवा जलके संग २ सूंठके तथा हींगके उकाले जलमें एरंडीका तेल ३ पेटपर हींग अथवा एलियेका लेप ४ भाइट्रेट ओफ मेग्नीश्याका थोडा ग्रेण पाणीके संग देणा.

(१९ कृमि)–(पृष्ट ३१६) लिखे इलाज कृमिका करणा.

(२० मार)–बच्चोंके पेटमे मार रहता है उस करके पेट तुंबातूंब रहता है और बच्चा हांपते रहता है पेटमें दरद होता है और थोडा २ दस्त टुकडा २ होता है— (इलाज)–दीपन पाचन दवाके संग दस्तकी दवा देणी २ एरंडीका तेल देणा ३ कुन्कीई शेक उसकी फकी गरम जलमें ३ हीकामारी देणा ४ जुलाफा अथवा रेवचीनीका सीरा देणा–(२१ दांत फूटणा)–१ दांत फूटतीवख्त टीडी पीपर धावडीके फूल सहतमें मिलाय मसूढोंपर रगडणा २ दांत निकले नहीं और तकलीफ करे बुखार दस्त वांइटे वगेरे तो नस्तर देकर दांतके मसूंडे चीराणा ३ दस्त बहोत होता होय तो दस्तकी दवा करणी एरोमेटिक पाउडर ओफ चोक देणा.

(२२ चूंचापणा)-आखोंकी भापणीमें खुजली दरद तथा पाणी झरता है उस करके बच्चा आंखोंकूं नाककूं तथा निलाडकूं मसलते रहता है सूर्यका धूप देख नहीं सकता और आंख खोल नहीं सकता-(इलाज)-त्रिफला साटेकी जड लोद सूंठ और दोनों रींगणी इन सबोंकों जलमें पीस जरा गरम कर भांफणीपर लेप करणा.

(२३ मुखपाक)-माके दूधके दोषसें अथवा गरम खाणेसें वचेका मूं आजाता है १ शंखजीरा तथा सोनागेरूका चूर्ण मूंमे रगडाणा २ कंकोल मिरच मिश्री वंशलोचन फुलाई भई फिटकडी इलायची मूंमे लगाकर लाले पटकाणी ३ गोपीचंदन दूधमें पीस लगाणा ४ गिलोय सत्व मूंमे लगाणा ५ बकरीके दूधकी धार मूंमे दिराणी ६ तवखीर मूंमे लगाणी ७ सुहागी सहतमें मिला मूंमे लगाणा ८ चार इलायचीके दाणेमें सोनागेरू ॥ भर पीस मूंमे लगाते रहणा लाल गिरके गरमी निकलती है.

(२४ नाभिका पकणा)-१ बकरीकी लींडिये दूधमें पीस लेप करणा २ तज चंदनका चूर्ण दबाणा.

(२५ गुदाका पकणा)-१ रसोत पिलाणा तथा गुदाके लगवाणा २ संख मोलेठी तथा रसोतका लेप करवाणा.

(२६ खुजली)-घरका धूंआ हलदी उपलेट राई तथा इंद्रजव छाछमें पीस लेप करवाणा २ गंधक कपूर खोपरेके तेलमें पीस महीन भयेबाद लेप करवाणा.

(२७ मूतका निकलणा)-वडी ऊमरके वचें नींदमें बिछोणेमें मूत देते हैं उसकूं रोकणे १ पींपर सूंठ मिरच इलायची तथा सींधा निमकका चुर्ण बूरेकी चासणीमें डाल अवलेही वणाकर चटाणा २ कुचीलेकी फकी जरासी गहूंभर देणी.

(२८ मूत्रकृच्छ्र)-१ गऊके दूधमें जरा गुड डालकर पिलाणेसें पेसाव खुल जाता है २ एरंडीके तेलमें अथवा गोमूत्रमें दूध तथा जरा गूगल मिलाकर पिलाणा.

(२९ रोते रहणा)-बच्चा रोता रहे और उसका चोकस कारण मालम नहीं पडे उहांतक एसा इलाज करणा १ त्रिफला छोटी पींपर सहतमें चटाणा दो चार दिनोंतक.

(३० नलोंका बढणा)-१ नवसादरके पोते धरणा २ शुद्ध एरंड तेल पिलाणेसें वृद्धि मिट जाती है.

(३१ मट्टी खाणी)-१ सोनागेरू खिलाणेसें दस्तमें मट्टी निकल जाती है २ थोदारका जुलाब देणा ३ फुटकीकूं सेक गरम जलमें फकी ४ मट्टी बचेकूं बिलकुल खाणे नहीं देणा ५ मंडूर मट्टीका विकार निकाल देती है त्रिफला त्रिकुटा चित्रक नागरमोथा वायविडंग पीपरामूल पुराणा गुड सम वजन सब एकके वजन मुजब मंडूर तक्रमें देणा इससे पांडूवाद जेसा मिट जाता है.

(३२ रेच)-छोटे बचेकूं बेरर जुलाब देणा नहीं बहोतही जरूरी होय तो देणा,

१ शुद्ध एरंडीका तेल नरम जुलाब है, २ हरडे मध्यम रेचक है, ३ रेवचीणीका सत सख्त है, ४ सोनामुखी खलखलते जलमें डाल छाण गुड डाल, देणा ५ गुलाबकली जोहरडे सोनामुखीका क्वाथ बूरा डाल ये वचेकूं नरम जुलाब है लेकिन् रोग देख देणा.

(दुबला नाताकत)–१ भूमिकुष्मांड (विदारी कंद) गहुं तथा जवका आटा घीमें चटाय ऊपर मिश्री सहत डाल दूध पिलाणा, २ आसगंध १ भाग दूध ८ भाग उसमें घी डाल पकाकर चटाणा, ३ हरडेकी अवलेही चटाणेसें पुराणे दोष मिटाकर कुव्वत देता है, ४ सीतोपलादि चूर्ण ५ मंडूर ६ अमृतवटी दूधके संग दुबले वच्चोंकूं पुष्ट करणे सर्वोत्तम इलाज हैं.

किरण १२ मी.

अश्वादि पशुचिकित्सा.

वैद्यदीपक पुस्तकमें घोडा वगेर जानवरोंका इलाज नहीं होय तो ग्रंथ अपूर्ण प्रकाश हो जाय एसा विचार करके इस किरणमें घरोमें रहणेवाले पशुओंका कितनेक मुख्य२ रोगोंका थोडे इलाज दाखल करणेमें आता है, जैसें औरत मर्द और बालवच्चे हैं, तैसे इस दुनियांमें जांनवरभी मनुष्योके संग रहणे वालेभी वडे उपयोगी है, मनुष्य बहोतसे इस जांनवरोंकी प्रतिपालसे अपना गुजरान चलाते हैं, सो प्रत्यक्ष है लिखणेकी जरूरी नहीं उनोके दूध दही गोवर मूत्रादिकसे अनेक रोग मिट जाते हैं, मजूरी कर अपणा और मालकका पेट भर देता है इसवास्ते सर्व जीवोंकी रक्षा करणा ये परम धर्म जैनियोंका है, दुसरोंका नहीं (प्रश्न) क्योंजी क्या दुसरे धर्मोंकी किताबोंमें दया धर्म नहीं हैं, और क्या नहीं पालते हैं, (उत्तर) हमारा लिखणा किसी वैर विरोधके वास्ते नहीं लेकिन् क्या तुमने नहीं सुणाके वेद शास्त्रोमें अनेक जांनवरोंका यज्ञ लिखा है और असंख्या जीवोंकूं अग्निमें हवन कर लोक खागये और बंगाली पंजाबी आदि ब्राम्हन अभीबी खाते हैं, मुसलमीन वोद्ध चीन वगेरेके सब इस वखत मांस खाते हैं, सो सब तुम देखते हो भारतमेंभी लिखा है ब्राह्मन पंचनखी जांनवर मच्छ कच्छई खावे तो दोष नहीं इस लेखसेही बंगाली पंजाबी ब्राह्मन सब तरेका मांस प्रगट खाते हैं, वैष्णव जैनियोंकी देखादेख दयाधर्म मांनते हैं, लेकिन् पूर्वोक्त वेदादि शास्त्र पर यकीन रखते हैं, बुद्ध खुद मांस खाता था ललितविस्तर ग्रंथमें लिखा है, तो उसके मतावलंबी चीन जपानमी खाते हैं, इसवास्ते जैनियोंका शास्त्र और जैनी कोइभी मांस नहीं खाते इसवास्ते दयाधर्ममें चलणेवाले सर्वोत्कृष्ट जैन है, (प्रश्न) दयानंदजी वेदोंका भाष्य बनाया उसमें तो दया सिद्ध करदी (उत्तर) हे बुद्धिवानों वेदोमें दयाकी मुस्कमी नहीं है अगर होती तो वेदोंके भाष्यकार उव्वट महीधर सायनाचार्यभी

एसा अर्थ लिखते सो उनोंने जीवोंका हवन करणाही वेदोंका अर्थ लिखा दयानंदजीनें धातुओंको खेंचताण मनकल्पित अर्थ करके अपणे मतके पूर्व भाष्यकारोंकों मूर्ख ठहराया लेकिन् उनोंका अर्थ किया मया खुद दयानंजीका उनोंके समाजकेही आधे लोक मंजूर नहीं करते भीमसेनादिक जैनियोंकीदयाकी बराबरी करणेकूं दयानंदजीनें वेदोंके अर्थोमें गडबडाट मचाया था कुछ करोजिसके मूल सूत्र और अर्थ हिंसाके भरे हैं वो कल्पित अर्थोसें दयाके कभी नहीं होसकते कोइ कहते हैं वेदकी रुचासे जो जीव मारे जाते हैं उसमें हिंसा नहीं होती कोईकहते हैं मारके जिला देते थे, कोइ कहते हैं ये यज्ञ शत युगमें होते थे कलियुगमें नहीं कोइ कहते हैं जिन जीवोंकों होमतेथे वो स्वर्ग चले जाते हैं इत्यादि वातोंसें हिंसा छिपा कर वेदोका महात्म वढाणेकूं अनेक गपोडें लोकोंकों समझाया करते हैं, इसमेंसे एकभी वात यथार्थ नहीं सो न्याय पक्षसे हमलिख दिखातें हैं जहां जीवोंके प्राण लिये जांयगें उहां परजीवकूं महाकष्ट होणेसें हिंसामें पाप नहीं एसा कोन दयाधर्मी मांन सकता है, ये कहणाभी महानिर्दयी कठोर दिलवाले मांस खाणेवाले लालचियोंका है, वेदकी हिंसा हिंसामें नहीं तो देखें वेदका मंत्र पढ तुमारे अंगली तो जरा अंगारमें दो और छुरीके धारसे मिलाओ इति १ मारके जिला देणा किसी तरे सबूत नही हो सकता अगर एसा होता तो अपणे प्यारोंकों मरे वादभी जिला लेते और आप क्यों मर गयें २ जिस युगमें घोडे गउ सांड बकरे जलचर थलचर खचर असंख्या जीव मारे जाते थे वो तो सतयुग और नहीं मारे जावे वो कलियुग भलां ये वात विना पोपोंके कोइ अकलवर तो नहीं मान सकता ३ इसकुं तो एसे कारणसें उलटा नांम कहणा चाहिये पशुओंकों जीते जी जलाकर स्वर्ग पोहचाणा इसतरे स्वर्ग होता है, तब तो स्वर्ग इसवजे अपणे स्वजन संबंधियोंकों क्यों नहीं पहुंचाते क्या स्वर्ग तुम नहीं पोहचे चाहते विचारे उन पशुओंनें कब इच्छा करके यज्ञ करणेवालोंको कहाकी तुम हमें स्वर्ग पहुंचाओ ४ इत्यादिक युक्तिये लगाकर हिंसा करणेकी पुष्टि जो मतोंवाले करते हैं, वो सब निर्दयी हैं क्योके हिंसा करणी कराणी और उसकूं अच्छी समझणी वो सब कसाई है, मनुजीनेभी आठ कसाई मानें हैं, दयाधर्म है सों सब धर्मोका राजा है, कोईभी जीव मरणा नहीं चाहता कष्ट होगया होय तो उसकी रक्षा करणी जहांतक होसके वाकी तो अज्ञान कर्मके वश जीव जीवका लागू हो रहा है, ज्ञान पाणेका फल वोही है की सब जीवोंकी रक्षा करणी एसे २ शास्त्रोंके सबब राजा और प्रजा मांस मदिरा खाणे पीणे लग गये आर्य थे सो अनार्यकी करतूत करणे लगे कलियुग जिसकूं तुमनें यज्ञोकी मनाई करी उसमेंभी सुणते हैं के जयपुरके महाराज जयसिंघजीनें घोडेकूं होमतें अनेक जांनवरोकों होमा अभी किसनगढके राजानें सोम यज्ञ कर पचीस बकरोकों जीते जी होम डाला जब वेद एसी करतूतका शास्त्र है, तभी तो एसे अनर्थ करते लोक धर्म

समझतें हैं एसें शास्त्र इश्वरकृत कभी नहीं हो सकते क्योंकी ईश्वर सबकी रक्षा करणे-वाला हे जांनवरोंसे खेती होती है, गांमोंके वासिंदोकी प्रत्यक्ष मिल्कीयत पशू है, जब ढोर बेमार होजाता है तो विचारोंकों घरके अदमीके बराबरका फिकर होजाता है, मर जाता है तो कमाउबेटे जितना फिकर करते हैं, अबोल जांनवर मूर्ख मनुष्यसें बहोत कीमतदार चीज है. दयाधर्मरूप वेदोंकों जैनभी मांनते हैं

(१ मूंगारोग)–तालवेपर खूनका चढणा जमणा, (इलाज)–नस्तरसें खून निकलवाके फिटकडी अथवा निमकके जलसे धोणा २।४ द्राम एलिया १ द्राम सूंठ मिलाके खिलाणा २ दूध घीका जुलाब देणा.

(२ मूंका आणा)–(इलाज)–१ जुलाब देणा २ शङ्खजीरा कत्था ओर पठाणी (सींधा निमक) का भूका कर मूंमें छांटणा ३ जोखार सरसूं राई सोवा हलदी सींधानिमक इन सबोंकों आंवलीके कुंकचेके आटेके संग पीस लेप करणा,

(३ बोरहडीका इलाज)–१ बीन आयोडाइड आफ मर्क्युरी १ द्राम मोम और सादे मल्हमके संग मिलाकर वधी भयी हड्डीके जगे उस्तरेसें बाल निकालकर उसपर रगडणा तब बिलष्टर उठ आयगा और आराम होगा २ बिलष्टरकी जगे साफ चमडी भये पीछे सीसेका टुकडा धर पट्टा बांधणा.

(४ चक्रावल)–(इलाज) १ गोल नाल जडणी २ गरम पाणीका सेक करणा ३ पोटिस बांधणी ४ बिलष्टर मारणा ५ डांम देणा ६ उस जगेका बाल निकाल उस-पर हींग १ तोला मकडियोका जाला ६ मासा कत्था ६ मासा जमालगोटा ६ मासा इनोकों नींबूके रसमें पीस लगाणा और उसपर हलदीका टुकडा सिलगाके डांभ देणा ७ सीपका तथा कोडीका चूना सहतमें लगाणा.

(५ मोथरा)–(इलाज)–१ उंची एडीकी नाल जडाणी २ शेक करणा ३ हलदी १॥ सेर नवसादर ५ भर मांग तीन पाव सबोंकी २१ गोलियें करणी एक हमेस देणी ५ पींपलामूल काली मिरच कायफल कालीजीरी सूंफ घोडावच टंकण ये एकेक पाव गऊके घीमें मिलाय २१ दिन चटाणा.

(६ श्लेष्म)–(शरदी)–(इलाज)–१ सादी शरदी होय तो बदनपर गरम झूल ओढाणी और स्पिरीट नाइट्रीक इथर १ औंस २० औंस जलमें मिलाकर पिलाणा गलेके नीचे कानकी लकीरपर राईका पलाष्टर मारणा २ बुखारके संग शरदी होय तो ऊपर लिखी दवा पिलातें उसमें २ द्राम एलिया पीसकें मिलाणा गरम पाणीकी बाफ ३ अजमाण और बूरा सम वजन पीस अंगारपर डाल इसका धूआं नाकमें जाणे ४ हीराकसी १ द्राम हमेस आठ दिनोंतक देणी पीछे फेर आठ दिनोंतक नीला-थोथा १ द्राम देणा ५ आकके पत्ते पांच हलदी ७ तोला अजमा २ तोला हींग १ तोला

इण सबोंकी गोली बणाकर खिलाणी ६ पुराणे टाटका टुकडा चिलम बणाकर उसमें अजवाण और आंबीहलदी पीस, डाल उसका धूंवा देना, हरडे कालीजीरी हलदी सूंठ मिरच पीपर गुड पीस मिलाकर २ तोलेकी गोली बणाकर फजर सांझ खिलाणी.

(७ फेफसेका खून नाकके रस्ते निकलणा)-(इलाज)-१ छातीकी पसलियों-पर बरफ घसणा अथवा ठंडा कपडा रखणा २ उकलते जलमें सिरका डाल उसका बफारा देणा ३ करथा ३ ड्राम शुगर ओफ लेड १५ ग्रेण सल्फट आफ झिंक ३० ग्रेण इनोंकी गोली बणाकर देणी ४ कडवी तूंबीकी जड दूधमें घसकर नांकमें बूंदें डालणी.

(८ मृगी)-(इलाज)-१ शिरपर ठंडा पाणी डालणा २ फस्त खोलाणी ३ हलदी शुद्धपारा पीपरा मूल बछनाग शीसेकी भस्मी सहतमें मिलाय चटाणा.

(९ सख्त बदहजमी)-(इलाज)-एलिया २॥ भर सूंठ तीन मासा मिलाकर जुलाब देणा २ टरपीन्टाइन तेल जलमें मिलाकर गुदामें पिचकारी मारणी ३ जमाल-गोटेका तेल २० बूंद अलसीका तेल सेर मिलाकर पिलाणा ४ नवसादर १ तोला सोनामुखी ५ तोला अजवाण काली मिरच एकेक तोला इन सबोंकों नींबूके रसमें तीन दिन भिगाकर पीछे पीसके खिलाणा.

(१० थोडी बदहजमीका इलाज)-सींधेलूणकाडला घोडेके ठाणमें रख देणा जिससे वो वेर२ चाटे २ एलिया सवा रुपेभर सूंठ पाव तोला मिलाके खिलाणा इससें जुलाब होगा बहोत दस्त होता होय तो करथा २ ड्राम अफीम पाव ड्राम सूंठ १ ड्राम और चाक ४ ड्राम मिलाकर खिलाणा.

(११ आफरेका इलाज)-१ दोडाणा २ मालिस करणी ३ स्पीरीट एमोनिया एरोमेटिक १ औंस २०औंस जलमें मिलाकर पिलाणा ४ जुलाब देणा याने टिंकचर एलोझ ४ औंस टिंकचर ओपियम ॥ औंस पिलाणा ५ गुदमें पिचकारी मारणी ६ पीणेकी दारू २ औंस काली मिरच २ तोला कुटकी २ तोला इन सबोंकों मिलायके पिलाते हैं आंधी झाडाका तथा कांगकी जड और खाखरेके बीज दरेक ४॥ मासा हींग ३ मासा इनोंकों आंधी झाडेके पानके रसमें डाकतर खिलाते हैं.

(१२ कुरकुरी)-(अथवा चूंक)-(इलाज)-१ गुदामें पिचकारी देणी २ पेटपर मालस करणा ३ पेटपर गरम दवायें मसलणी ३ टिंकचर ओपियम १ ड्राम टिंकचर एसेफटीडा २ ड्राम स्पीरीट एमोनिया एरोमेटिक १ ड्राम स्पीरीट नाइट्रीक इथर १ औंस इनोंको २० औंस पाणीमें मिलाकर पिलाणा ५ छ कलाकोंमें ऊपरकी दवासें आराम नहीं होय तो फेर इसी दवाकी अंदर ४ औंस टिंकचर एलोझ मिलाकर पिलाणा ६ पीपलामूल २ तोला लींडी पीपर २ तोला काला निमक २ तोला टंकण

खार २ तोला कडू २ तोला पीणेका दारू ॥ शेर मिलाकर डाकतर लोक पिलाते हैं, ७ एरंडीकी जड साजीखार काला निमक लसण इनोंकों आदेके रसमें देणेसें आराम होताहै

(१३ जुलाब याने दस्त होणा)–(इलाज)–१ गरम झूलयां घणी, २ पेटपर गरम दवायें मसलणी ३ अलसीकूं कूट जलमें उकाल वो चाहकी तरे पिलाणी ४ अलसीका तेल १। सेर टिंकचर ओपियम १ औंस मिलाकर पिलाणा (५ नं० १० में) थोडी वद हजमी मिटणेकूं अंतकी लिखी दवा देणी ६ अफीम १ ड्राम चाह ४ ड्राम गहूंका आटा ८ औंस मिलाकर पिलाणा ७ खुराक अच्छा देणा ८ शंखजीरा और काली मिरच ये दरेक चार चार तोला लेकर पीसके खिलाणा ९ दोदो घंटेके अंतर हींग और सूंठ गहूंका आटा धीमें गोली वणाकर देणा १० हरडे मेथी जीरा उसका दो दो तोला चूर्ण तीन दिन दहींमें पिलाणा ११ कचे बीलकी गीरी अनारका दाणा और धावडीके फूल इनोंका १॥ तोला चूर्ण ७ दिन दहींमें देणा.

(१४ मरोडा)–(इलाज)–१ गरम झूल अथवा गरम पट्टा बांधणा दाणा तथा चारा महीन करके देणा (३ नं० १३ में लिखी दवा) अलसीकी चाह और कांजी देणी ४ पेटपर गरम दवायें मसलणी केलो मेल और अफीम दरेक २० ग्रेण देणा ६ फिटकडी ४ ड्रामतक देणी ७ नाइट्रोम्युरीयाटीक एसिड १ ड्राम जलमें डाल दिनमें दो वेर देणा ८ टरपेन्टाइनका तेल ॥ औंस देणा ९ पोस्तके डोडे पाणीमें उकाल उस जलकी पिचकारी बैठकमें मारणी १० एपीकाक्युआन्हा पाउडर १॥ ड्रामतक दिनमें तीन वेर देणा ११ आकके जडकी छाल देणी १२ बंबूलका गूंद ६ तोला लेकर पाणीमें पिघलाय देणा १३ शंखजीरा १ तोला हींग १ तोला अफीम ॥ तोला आटेके संग जलमें मिलाकर पिलाणा.

(१५ दस्त थोडा होणा अथवा बंध होणा)–(इलाज)–१ पिचकारी मारणी २ पाचक दवा देणी ३ सूंठ और चिरायता दरेक १ तोला देणा ४ सोनामुखी गरम उकालते पाणीमें डाल वो ठंडा कर पिलाणा ५ जुलाब देणा और जुलाब बहोत लगे तो बंध करणेकूं सूंफ २ तोला लेकर सूंठ विलायती साबू और गुलकंदमें मिलाकर देणा बहोत जुलाब देणेसें लीद नरम होती होय तो ६ दस्तकी दवा एकदम बंध नहीं करणा ७ दाणा थोडा देणा ८ जलमें गहूंका आटा मिलाकर पिलाणा ९ मैदा अथवा गहूंके सतका पटोलिया पिलाणा अथवा इसकी बैठकमें पिचकारी लगाणी १० गरम झूल पट्टा ... ११ ओट कांजी मूसा वगेरे खाणेकूं देणा १२ बहोत दिनोंकी बेमारी होय तो दूध गरम करके पिलाणा और १३ टिंकचर ओपियम १ औंस नाइट्रीक इथर मिलाकर पिलाणा १४ दस्तकेवास्ते पहले लिखासो इलाज करणा.

(१६ हरस)–(बवासीर)–(इलाज)–मस्से बाहर होय तो शस्त्रसे या खार

लगाकर कटा डालणा २ थोडा२ तेल पिलाणा ३ नरम खाणेकूं देणा ४ एकस्ट्राकट ओपियम १ ड्राम गोलाडर्स एकस्ट्राकट २ औंस तथा पाणी ८ औंस मिलाकर पिचकारी मारणी ५ मस्सेपर बेलाडोना लगाणा.

(१७ कलेजेका सोजा)-(इलाज)-१ फस्त खुलाणी २ कलेजेकी बाजूपर राईका पलाष्टर लगाणा ३ सख्त जुलाब देणा ४ सल्फेट ओफ मेग्निस्या जिसकूं एप्सम सोल्ट कहते हैं, वो १ पाउन्ड नाइट्रिक इथर १ औंस तथा पाणी ३० औंस तीनोंकों मिलाकर पिलाणा ५ हाथ पैरपर मालिस करणा ६ गरम झूल और पट्टा बांधणा ७ चार२ घंटेके अंतर नाइट्रिक इथर एकेक औंस देणा ८ एपीकाक्युआना पाउडर अथवा आकके जडकी छाल १॥ ड्राम देणा ९ सल्फेट ओफ मेगनीशीया ६ औंस तथा नाइट्रिक इथर १ औंस पिलाणा १० हराघास और भूसा खाणेकूं देणा ११ नाइट्रोम्यु-रियाटिक एसीड १ ड्राम बहोत जल मिलाकर पिलाणा १२ थोडी महनत कराणी, १३ दूध घीका जुलाब देणा.

(१८ कमला)-(इलाज)-१ नंबर १७ में कलेजेके सोजेमें जो इलाज लिखा है सो करणा.

(१९ पेटकी कृमि)-(इलाज)-१ सल्फेट ओफ कोपर अथवा नीलाथोथा २ ड्राम बहोत महीन पीस दाणेमें मिलाकर चार दिन खिलाणा पीछे२ जुलाब देणा पाचक दवायें देणी ४ आगेके दिन सांझकूं दाणेके संग सेन्टोनाइन १ ड्राम देणा दुसरे दिन फजरमें जुलाब देणा ५ पित्त पापडा १ तोला और बाजरीका आटा १ तोला दोनोंकूं तेलमें तलकर देणा ६ राई १ तोला अजवाण १ तोला जंगली बंबूलकी फली २ से ४ काला निमक ये सब छाछमें पिलाणा, ७ सीताफलके बीज पीस छाछमें पिलाणा.

(२० गुरदेका सोजा)-(इलाज)-१ फस्त खोलाना २ जुलाब देणा ३ गरम पाणीकी पिचकारी मारणी ४ बकरेका चमडा कमरपर रखना ५ टारटर इमेटिकका मल्म कमरपर लगाणा ६ राईका पलाष्टर लगाना ७ अलसीकू उकालनी फूटकर पाणु-जब पिलाणा ८ बंबूलका गूंद पाणीमें भिगाकर पिलाना ९ राल १ तोला शंगजीरा १ तोला इन दोनोंको गूलरके चीकमें मिलाकर गोली बना देनी १० इलायची शंग-जीरा और कत्था ये दवा हरेक चार२ मासा लेकर गोली बनाकर खिलानी ११ कमर-पर मोराखार रखणा.

(२१ पीके रंगका पेसाब)-(इलाज)-१ घास दाना बदलना २ पोटास आयोडाइड १ ड्राममें पाणी १० औंस मिलाकर दिनमें एक बेर आराम होय जहांतक

देणा ३ अफीम कत्था सींधानिमक और पावची ये दरेक ॥ तोला गुलमें गोटी बणाकर खिलाणी.

(२२ पेशावमें खर पडता है)-(इलाज)-नाईट्रोम्युरी एटिक आसीड १ ड्राम पाणी २० औंस मिलाकर दररोज दो वखत पिलाणा २ अकलकरा पठाणी निम वायफूंभा सपेद मूसली गुडसे गोलीकर खिलाणी.

(२३ पिशावमें खून)-(इलाज)-कम्पाउन्ड टींकचर ओफ सीनामन ३ औं कमजोर सल्फुरीक आसीड ५ औंस पाणी २० औंस मिलाकर दिनमें तीन वेर १ औं की मात्रासे देणा २ गंधा बेरजा और कत्था देणा ३ चिणेके फोतरे राल और फुली भई फिटकडी इनोंकों मिलाकर देणा ४ बंबूलका गूंद ४ आउंस पाणीमें भिगा कर पिलाणा.

(२४ पिशावमें पथरी)-(इलाज)-अलशीकूं पीस उकाल चाहकीतरे बणाकर उसमें अफीम १ ड्राम मिलाकर पिलाणा २ नाइटोम्युरी एटिक आसीड २ ड्राम जलमें मिलाकर पिलाणा ३ अफीम १ ड्राम पाणीमें पिघाल दिनमें तीन वखत पिलाणा ४ आधे२ घंटेके फासले गरम जलकी पिचकारी गुदा रस्ते मारणी ५ मेथीना सफाल लाहोरी निमक नवसादर कलीचूना गोरयोथा कुसतासाक और खूबजीका बीज इनोंकी गोली बणा दररोज १ देणी ६ नवसादर वछनाग और अफीम इन चीजोंकों डाकटर लोग दारूोंके सरापमें मिलाकर देते हैं.

(२५ पेशाव वेर२ थोडा२ होणा)-(इलाज)-१ कमरपर गरम पाणीका शेक करणा २ बंबूलका गूंद ४ आउंस टींकचर ओपियम १ औंस और गरम पाणी ३० औंसमें मिलाकर इंद्रीमें पिचकारी मारणी ३ खसखसके डोडे जलमें उकाल उस जलकी गुदामें पिचकारी मारणी ४ अलसी जलमें सिजाकर खिलाणी वो पाणीभी पिलाणा ५ सुरमा १ ड्राम सोराखार २ ड्राम गंधक २ ड्राम पीस दाणेमें मिलाकर खिलाणा.

(२६ प्रमेह)-(इलाज)-१ जुलाब देणा २ गहूंका भूसा जलमें भिगाकर देणा ३ शेक करणा ४ अफीम ॥ ड्राम कपूर २ ड्राम सल्फ्युरिक इथर १ औंस इन सबोंकों अलशीकी चाह संग मिलाकर पिलाणा मुगलाई बेदाणा ५ रुपियाभर बूरा ५ भर जलमें भिगाकर फजर देणा ६ तिलके फूल २॥ भर खिलाणा ७ पुराणे मकानका चुना फजर सांझ खिलाणा.

(२७ प्रदर)-(इलाज)-१ फिटकडी २० ग्रेण एक औंस जलमें गलाकर गुप्त स्थानमें पिचकारी मारणी २ शुगर ओफ लेड १ ड्राम अफीम १ ड्राम अलसीके चूर्णके संग मिला गोली फजर सांझ देणी ३ ठंडे पाणीमें खडी रखणी ४ कमरपर ठंडा जल छिटकणा ५ कत्था संखजीरा सुपेद केलेके थडके रसमें मिलाकर पिलाणा.

(२८ चांदणी)-(इलाज)-नसा पैदा करणेवाली दवायें सरुआतमें देणी जेसके बेलाडोना क्लोरोफोर्म चरस डीजी टेलीस धतूरा विगेरे २ इथर अथवा क्लोरोफोर्म सुंघाकर कोटडीके अंदर बंध करणा ३ जखम होणेके सबब भया होय तो जखम रुके एसी दवायें करणी ४ पूंछडीके जडके पास १ आंगल चीरके उसमें सिंगरफ भरणा दोनो कानोमें दो तोला पारा भरके बंदूकका अवाज करणा.

(२९ लकवा)-(इलाज)-१ जुलाब देणा २ पलास्तर लगाणा ३ गुल देणा.

(३० खुजली)-(इलाज)-१ दुसरे सब जानवरोंसें दूर रखणा २ जुलाब देणा ३ कील टरपेन्टाइन और अलशीका तेल बराबर सब लेकर सब जगे मसलणा २ धोके साफ करे बाद उसपर कील १ औंस गंधक ॥ औंस मैण और तेल १॥ औंस इनोंका मलम बणाके लगाणा ५ फस्त खोलणी ६ गंधक सुरमा वछनाग सोरा एकेक रुपिया भर महीन पीस थोडा२ बूका दाणेमें खिलाणा ७ मनसिल १ रुपियाभर १ सेर तेलमें मिलाकर बदनपर मसलाणा.

(३१ खून बिगडणेसें भई खुजली और फोडा)-(इलाज)-गहूंके भूसेमें सोरा २ ड्राम मिलाकर खिलाणा २ नरम खुराक खिलाणा ३ सिरका पाणीमें मिलाकर लगाणा ४ सींधे निमकका डला ठाणमें रख छोडणा जैसे वो चाटे ५ सल्फ्युरीक आसिडका कमजोर पाणी लगाणा ६ फाउलर्स सोल्युसन ओफ आरसेनीक १ ड्राम देते रहणा ७ छाछ मसलणी ८ काली मिरच सोनागेरू एकेक तोला भूरींगणीका बीज १ तोला पीस दाणेमें खिलाणा ९ लोबानका धूआं देणा १० काली मट्टीका शरीरपर लेप कर धूपमें खडा रखणा.

(३२ सब बदनपर नरम सोजा अथवा पित्ती निकलणा)-(इलाज)-१ सोरा ३ ड्राम दाणेके संग खिलाणा २ सिरकेका पाणी लगाणा ३ गेरु और सोरा इन दोनोंकी गोली देणी ४ लोबानका धूआं.

(३३ दाद)-(इलाज)-१ साबू और जलसें धोकर उसपर केथेरीडीस १ औंस ८ आउंस सिरकेमें १४ दिन भिगाकर लगाणा २ नींबूका रस लगाणा ३ नींबूके रसमें मनसिल मिलाके लगाणा.

(३४ मट्टीका बुखार)-(इलाज)-अलसीका तेल १ सेर पिलाणा २ सोरा खार २ ड्राम दाणेके संग फजर सांझ देणा ३ पेटपर सोजा होय तो ग्लीसराइन लगाणा ४ कपूर और सोरा देशी सरापमें देणेका जांनवरोंका इलाज करणेवाले कहते हैं.

(३५ जूं)-(इलाज)-१ तमाम बदन धोकर तमाखूका पाणी मसलणा २ कारबोलिक एसिडका कमजोर पाणी लगाणा ३ सीताफलके पत्तोंका रस लगाणा.

(३६ जखममें कीडे पडणा)-(इलाज)-१ जखमकूं ढके रखणा २ कीडोंकों चिंपीयेसें निकाल जतनसे डालणा ३ टरपीनटाइनका तेल १ भाग अलशीका तेल ३ भाग मिलाके लगाणा ४ डीकामाली कपूर और तमाखूकूं पीस जखममें भर देणा ५ मिश्री पीसके भरणा.

(३७ गुमडां)-(फोडा)-(इलाज)-१ शेक करणा २ पोटिस बांधणा, ३ खुराक अच्छी देणी ४ छाणेसे रगड उसपर तेलमें मिलाय मनसिल लगाणां.

(३८ वरसाती)-(इलाज)-१ कास्टिक पोटाससें जलाणा २ कोयले और फुलाई भई फिटकडी जखमपर छांट जखमकूं सूका रखणा ३ मेगड्डगल डीसइन फेकटींग पाउडर छिडकणा ४ धीन आईओडाईड ओफ मरक्युरीके मलमका पलाष्टर लगाणा ५ केलोमेल २० ग्रेण तथा अफीम २० ग्रेण दिनमें तीन वेर मूं आणेकी निसाणी दीखे जहांतक देणा ६ नीलाथोथा चुना फटकडी गोमूत्र मिलाके लगाणा ७ कत्था लगाणा ८ चोमासेमें भये सहतके छत्तेके मोमसें चाठोंकूं मसलणा खून निकले जहांतक फेर उसपर मोम और राईके तेलका मलम बणाकर उसमें बंदूकका देशी दारू और खुरसाणीके कोयलोंका भूका मिलाकर वो मलम लगाणा.

(३९ भाठा)-(इलाज)-१ आसपास पलास्तर मारणा २ पोटिस बांधणी ३ काली जीरी मुरदासींग मोम सिंदूर और थोडा नीलाथोथा इनोंका मलम लगाणा.

(४० बुखार)-(इलाज)-मालिस करके बदनपर गरम झूल बांधणी २ नाइट्रिक इथर २ आउंस लाइकर एमोनिया एसीटेट १ आउंस पाणी २० औंस मिलाकर पिलाणा और घंटे २ के फासलेसें देते रहणा ३ एपीकाक्युआनेका भूका १॥ ड्राम फजर सांझ देणा अथवा इसकी एवजी आकके जडकी छाल देणी ४ कोंनाइन ३० ग्रेण चार २ घंटेके अंतरसें देते रहणा ५ फस्त खोलाणी ६ एलिया ५ ड्राम टींकचर ओपियम १ आउंस मिलाकर जुलाब देणा ७ गरम जलकी पिचकारी बैठकमें ८ आराम देणा ९ टींकचर एकोनाइट पांच बूंद दो दो घंटेके फासले देते रहणा १० कपूर और सोराखार एक २ तोला मिलाकर गोली देणी ११ कपूर और चिरायता सरापमें मिलाकर इलाज करणेवाले देते हैं, १२ जखम अथवा फोडेके लिये बुखार होय तो उसपर बेलाडोना अथवा अफीमका लेप कर उसपर पोटिस बांधणा.

(४१ शरदीका बुखार)-(इलाज)-१ गलेपर पलास्तर मारणा २ अच्छी हवामें रखणा ३ एलिया १ ड्राम हमेसां लीद नरम होयतो उहांतक देते रहणा ४ केलोमेल २० [illegible] ॥ (५ बुखार उतारणेकी दवा नं० ४० में) सो देणी ६ नाइट्रीक इथर [illegible] अमोनिया एसीटेट १ आउंस पाणीमें मिलाकर पिलाणा ७ गरम [illegible] मारणी ८ बफारा देणा ९ आंबी हलदी अजवाण मीठा तेल गुड इन

सवोंकी गोली बणाकर देणी १० सोरा २ ड्राम कपूर २ ड्राम भींडीका बीज २ ड्राम सल्फेट ओफ सोडा दो आउंस मिलाकर चार२ घंटेके फासलेसें चटाणा.

(४२ संधीवा)-(इलाज)-१ टारटर इमेटीक २ ड्राम सल्फेट ओफ सोडा २ आउंस मिलाकर दो दो घंटेके फासले एकेक आउंस देणा (२ सोजेपर) बेलाडोना ३ ड्राम कपूर २ ड्राम स्पीरीट वाइन १० बूंद एकस्ट्राकट हेमलोक ॥ आउंस सादा मलम ७ आउंस इनोंका मलम बणाकर लगाणा गरम पट्टा बांधणा ३ वफारा देणा.

(४३ गंडमाला इलाज)-१ वफारा देणा २ पोटिस बांधणा ३ पीप नहीं आवे तो पलास्तर मारणा ४ पीप होय तो चीरके निकाल डालणा ५ पींप हो जाय एसी दवा लगाणी ६ बुखार होय तो सोराखार ३ ड्राम दाणेमें मिलाकर देणा ७ बुखार गये बाद पाचक दवा जेसेंके चिरायता जनशन सूंठ वगेरे देणा ८ खुराक देणा शेक करणा १० पककर चीरादिया भया होय तो उसपर डीकामालीका तेल रगडणा ११ आकका दूध लगाणा.

परचुरण-मसाला.

(४४ शरीर अकड जाणा)-(इलाज)-१ खारककी गुठली निकाल उसमें अफीम भरके कपड मिट्टी करके अंगारपर शेक ये खारक आधी खिलाणीं जितना दिन खिलाणा उतनाही दिन दाणा देणा नहीं और जल गरम कर पिलाणा २ साजीखारसें भर निमक जोड अजवाण सालम एक २ पेसे भर लेकर उसमें पावगुड मिलाकर फजर साझ फकत् गेहूंके आटे सेके भयेमें मिलाकर खिलाणा दाणा खिलाणा नहीं २ दो पेसा भर गूगल गोमूत्रके संग खिलाणा ३ सेंभर निमक और लसण सम वजन खिलाणा पाणी गरम पिलाणा.

(४५ खुजली)-(इलाज)-१ गंधक मनसिल और वायविडंगकूं महीन पीस एक रात पाणीमें भिगाकर फजर कडवे तेलमें मिलाकर बदनपर मालिस करणा तीन घंटे धूपमें खडा रख फेर मट्टी मसल धो डालणा.

(४६ वायूका रोग)-सोजा और लीद बंध होय तब कालीजीरी मिरच फुलाया भया टंकणखार साजीखार कुटकी राई हींग एकेक पेसे भर लेके सबोंके वजन बराबर अजवाण डाल आदेके रसमें गोली बणा पांच रुपियाभर खिलाणा.

(४७ आंखका फूला)-(इलाज)-सोनामखीके पत्थर लेके उसमें फिटकडी फुलाई भई सरसूंके बीज मिश्री काली मिरच और कपूर मिलाकर महीनखरलकर सात दिन अंजन करणा २ मछली तथा बकरीका पित्त सहतमें खलकर अंजन करातेहें.

(४८ नाकमेंसें खून गिरणा)-(इलाज)-१ सूंफ धाणा जीरा सूंठ इन चारोंकों महीन पीस घोडेके कपालमें लेप करणा और ऊंटके मींगणोंकों महीन पीस उसकूं

पाई १ भर सींधे निमकके संग गऊके घीमें मिलाकर अंगारपर धर उसका धूवां नाकमें देणा.

(४९ भूक लगणेकेवास्ते)-(इलाज)-चंबूलकी छाल सींधा निमकसेंभर निमक साजीखार सेंचल राई लसण काली जीरी अजवाण आंबा हलदी वायविडंग सुपेद मूसली और फुलाई भई सुहागी इनोंकों सम वजन लेकर गऊके दहीमें मिलाकर हमेस एक रुपिया भर देणा गरमीकी मोसममें देणा नहीं.

(५० जहर बायवास्ते)-(इलाज)-मिरच कसोंदी और अदरक खाणेके पान सम वजन सब मिलाके देणा २ राइ तथा मिरच पीपलामूल ये दरेक एकेक तोला हींग टंकणखार और अफीम ये दरेक ॥ तोला सब दवायोंके बराबर लोंग अकलकरा सुंठ और पीपलामूल मिलाकर फजर सांझ देणा.

(५१ ताकतदार मसाला)-पींपर लसण पीपलामूल कुटकी वायविडंग कचूर सोहगी कालीजीरी अजवाण हलदी घोडावज गूगल दही साजीखार मेथी सुंठ मयणफल कासणीकाबीज चित्रक वधायरा जीरा भांग हींग फुलाई फिटकडी आटेके संग मिलाकर देणा.

(५२ सब रोगनाशक मसाला)-कुटकी कालीजीरी आंबीहलदी वायविडंग टंकणखार फुलाई भई फिटकडी मिरच करंज पीपला मूल हरडे बहेडा आंवला कर-माला आसगन्ध अजवाण मेथी राई ये सब सम वजन सबोंसें दूणा गुड इसमेंसे पांच रुपे भर मात्रा देणी इससे शरदी जहर वाद सब जाता है.

(५३ चांदणीवास्ते मसाला)-राई मिरच पीपलामूल ये सब सम वजन लेकर उसमें पीपर काली मिरच सुंठ पान सहजणेकी छाल करंज मयणफल ये सब एकेक पैसे भर मिलाकर फजरकूं देणा और उसका मूं बांध अंधेरेमें बांधणा २ लसण हींग टंकण खार कालीजीरी अजवाण पीपलामूल मिरच सुंठ रींगणी सींधानिमक सेंचल साजी खार जलाया भया सेंभरसींग जवासेकी जड अतीसकी कली पान अदरक इन सबोंकों सेंके भये आटेमें मिलाकर देणा और दो पहर बांधके रखणा और गरम किया भया पाणी ठंडा कर देणा.

किरण १३ मी.

जहरके इलाज-

जहर दो तरेका होता है, स्थावर और जंगम, स्थावर जहरमें खानेसे पैदा भये या संयोगमे बणे भये या दरख्त वगेरोंका समावेश होता है, और जंगम जहरोंमें सांप वगेरे जहरी जांनवर जाणना जुदे२ जहरोंका जुदे२ लक्षण होते हैं, और लक्षण जाणे बाद वखतपर इलाज होय तो कितनेक रोगी बच सकते हैं, बदनमें दोतरेसे जहर घुसना

है, एकतो जांण बूझकर जहरी चीज खाणे पीणेसें दुसरा भूलसें या जहरी जानवरोंका डंक लगणेसें जहर चढता है, केइयक आपघात करणेकूं जहर खा लेते हैं, जहरी चीजें जगतमें थावर जंगम असंख्य है, सामान्य इलाज इहां लिखेंगें जिस करके बचाव कुछ होय बाद विशेष इलाजीका आसरा लेणा मुख्य२ जहरोंका इलाज लिखते हैं.

(सोमल)–(आर्सेनिक)–अफीमके दुसरे नंबरमें सोमल जहर है, वो थोडीभी प्राणियोंका प्राणनाशक है, सोमलमें कुछभी स्वाद नहीं है, इसवास्ते बेमालम खाणे पीणेमें आजाता है, शंखिया मारवाडमें इसकूं कहते हैं, (सोमलके जहरके चिन्ह)–खाये पीछे एक घंटे बाद पेटकी कोडीमें दरद होता है, दाबणेंसे दरद होता है, पीछे उबाकी उलटी होती है, बदनमें शीतांग सन्निपात जैसा पसीना होता है, अवयव धूजता है, हाथ पैर तथा नाककी डंडी ठंडी पडती हैं, आंखोंकी आसपास आसमानी चक्कर फिरते नजर आते हैं, नाडी करडी और जल्द होती है, पीछे दस्त लगणे लग जाता है, पेटमें चूंक तथा कटाव होता है, पेशाब थोडा आता है, उसमें अंगारसी मालम दे पेशाब बंधभी होजाय खूनभी गिरणे लगे आंखोंमें जलण लाल होजाय शिरमें दर्द छातीमें धडकणा श्वास जल्द और रुकता आवै अत्यंत दाह होणेसें रोगी पुकारणे लगे विछोणेमें हाथ पैर पटकै हाथ पांवोंमें वांइंटे आवै नबज बैठ जाय चहरा लेबाई जाय रक्ताशय बंध पडे और मर जाय, सोमलके जहरवाला आखरतक हुसियारीमें रहता है.

(इलाज)–सोमल कमसे कम किसी वखत अदमीकूं २॥ ग्रेणमें मार डालता है, लेकिन् सोमल वजनदार होणेसें दस्त उलटीमें बहोत भाग तो निकल जाता है, इसवास्ते सोमलका जहरी आधे सुधर सकते हैं, (१ उलटी) इसकेवास्ते अच्छा इलाज है, उलटीकेवास्ते अफीमके जहरमें लिखे उससेंके कराणा उलटी आपसेंही होणे लगे तो उलटीकी दवा देणी नहीं (२ पालण)–उलटी भये पीछे जहर मिटाणेकूं थोडे२ मिनटोंसें दो दो प्याले दूध अथवा दूध और बरफ मिलाकर देणा बरफ चुसाणा दूध तथा चूनेका पाणी सम वजन मिलाकर पिलाणा अथवा चूनेका पाणी सालिड तेल देते रहणा (दाह मिटाणेकूं)–ठंढा जल बरफ नींबूका अथवा नारंगीका सरबत और पाणी सोडावाटर साबू दाणेकी कांजी गूंदका पाणी वगैरे ठंडी चीजें एरफेरसे देते रहणा घी पिलाणा ४ आंकमी मिटाणे सल्पयुरिक इथर तथा लाडेनमदद्य २ बूंद थोडे जलमें मिलाकर पिलाणा और जरूर पडे तो तीनचार घंटेसें फेर देणा ५ ईस पगल दही गुलाब जल और बेदाणा पिलाणा ६ मखण और मिरच ७ कत्थेका पाणी ८ चंदलियेका अथवा नींबका रस ९ सहजणेकी छालका रस और दूध १० घी अथवा दही पिलाकरके कराणी.

(हरताल) ये दोनों सोमलका खार है इसवास्ते इनोका गुण.

(मनसिल) भी सोमल जेसा ही है इसवास्ते इलाज भी सोमल जेसा ही करणा १ चूनेका पाणी और तेल पिलाणा२ उलटीकी दवा देणी ३ राई दूध आटा और पाणी.

(पारा)–(मर्क्युरि) पारा अपणे निजस्वरूपमें जहरी नहीं है फक्त पारा खाणेमें आवे तो शरीरमें नहीं मिलकर कुछभी इजाया असर करे विगर दस्तके रस्ते निकल जाता है पारेमें खाणके दोषसें सीसा जसद कथीर वगेरे धातुओंका पारा सत है इस वास्ते उन २ चीजोंका मिलाप है वोही सात कंचुकीरूप सात जहर है सो दुसरे भागमें हम सोधन लिखा है उस मुजब शुद्ध हो जाता है पारा हींगलूमेंसें निकाला भया शुद्ध सब रसोंमे सामान्य तोर डालणेमें विगाड नहीं करता अशुद्ध पारेकी सब बनावटे जहरी होती है जेसें रस कपूर हींगलू रस सींदूर क्यालोमेल व्हाइट प्रेसिपिटट इनोंमें रस कपूर वडा जहर है उसके जहरसें मूं गला अन्न नल और होजरीमें दाह तथा चांदे गिरते हैं उलटी और दस्त होता है दस्तमें खून गिरता है पेटमें दरद होकर पेट फूल जाता है मूं और मसूंढा फूल जाता है लाले झरती है आखर खेंचताण होकर मर जाता है (इलाज)–१ दूधमें गहूंका आटा पकाकर देणा २ दूध गूंदका पाणी अलशीकीचा तथा गहूंके आटेका पटोलिया सब मिलाकर पिलाणा ३ लोहकी पुराणी काटी गुंदके पाणीमें पिलाणा इससे उलटी होणे देणी और एरंडी तेलका जुलाब देणा ४ बंबूलके छालके पाणीका अथवा फिटकडीके कुरले करणा ५ डाकतर लोक मुरगीके ईडोंके सुपेद छिलके ठंढे पाणीके संग मिलाकर ऊपरा ऊपरी पिलाकर उलटी कराया करते हैं ६ और अछा इलाज रस कपूरके जहर ऊतारणेका वतलाते हैं लेकिन् ये इलाज आर्य लोकोंका नहीं छिलके मुसलमीनोंके महोलेमें पडे मिलते हैं ६ जादा घी पिलाकर उलटी कराणी ७ उलटी कराये पीछे मांजू फलका अथवा आंवलेका चूर्ण गरम पाणीसें पिलाणा ८ आंवलीकूं जलमें उकाल कुरले कराणा ९ नागरवेलके रसमें गंधक देणा १० भों पाथरी (छपरी) अथवा करेलीकी जडका रस पिलाणा.

(नीलाथोथा)–(तांबेका जहर)–(व्ह्युविट्रीओल)–(जंगाल)–ये भी तांबेका जहर है कहांइ दगेसें कहांइ भूलसें ये काट खाणेमें आ जाता है काट चढे तांबेके वरतणमें खटाईदार चीज पकणेसें जंगालका जहर आता है (लक्षण)–उलटी पेटमें दरद दस्त तथा किसी वखत खेंचताण होकर मरभी जाता है (इलाज)–पारेके जहर मुजब उलटी देकर जहर निकाल डालणा २ दूध पाणी गहूंका आटा पिलाणा ३ डाक्टर ईडेके छिलके पिलाते हैं ४ नीबूका रस तथा मिश्री ५ कत्थेका पाणी.

(शीसा)–(शुगरलेड)–(चिन्ह)–मूंमें मीठासवाला धातूका स्वाद गलेमें भमराट उलटी किसी वखत खूनकी उलटी दस्त बंध पेटमें चूंक जोरसें हाथ पैरमें खेंच

अथवा अंग गल जाय (इलाज)–१ एप्समसोल्ट पाणीमें मिलाकर पिलाणा उलटी भये पीछे २ गूंदका पाणी दूध चावलोंकी घाट और दुसरी चिकणी चीजें पिलाणी.

(काच)–काचका महीन बुरादा पेटमें जाता है तो जहर जैसा विकार करता है– (लक्षण) के दस्त पेटपर आफरा दरद बुखार प्यास दाह–(इलाज) १ दही दूध अथवा अंबली खूब पिलाकर उलटी कराणी २ नवसादर अथवा गोपीचंदन पिलाणा.

(अफीम)–(ओपियम)–(अफीमके जहरके चिन्ह)–चक्कर आवे शिर फिरे शिरमे दर्द होय नसेमें झोका खाय वतलाणेसे बराबर सुणे नहीं और पीछे आधी बेहोसीमें आवे बहोत जोरसे बतलाणेसें हिलाणेसें या मारणेसें जरा हुसियारीमें आता हैं, फेर पीछे वेहोस हो जाता है फेर किसीभी तरे हुसियारी नहीं आती श्वास धीरे चलता है छाती धडकती नहीं आंख मुंच जाती है आंखकूं उघाडके देखणेसें कीकी छोटी सूईके अणी जेसी भई मालम देती है पसीना आता है होठ मूं काला पडता है दस्त कब्ज जी घभराकरके होय किसी वखत लकवा या खेंचताणभी किसीके होता है जादा वजनमें खाणेसें उसकी जहरी असर कमसेकम आधे घंटेमें मालम देती है निराहार पेट खाणेसें जलदी असरकरता है खाकर नींद लेनेसें जल्दी असर करता है फिरणेसे कम असर करता है कमसे कम ५ ग्रेण याने दोयसे तीन रत्ती खाणेसें सोफीवाजे वखत मर जाता है–(इलाज)–अफीमका जहर उतारणेकूं दो रस्ते हैं एक तो इसतरेकी खाये पीछे जल्दी इलाज होय तो सब पेटमें गया भया तमाम अफीम निकाल डालणा अगर जो कुछ देरी भई होय तो जहरका थोडा या बहोत असर खूनमें मिल गया होय तो अफीमके जहरकुं मिटावे एसी विरुद्ध तासीरकी दवा देणी १ पेटमेंसे जहर निकालणेकूं डाकटरोकी सल्लासें–(स्टम पंप)–का उपयोग करणा पंप हाजर नहीं होय तो इसतरे उलटी कराणी २ गलेमें पींछा फेरकर उलटी कराणी उलटी लाणेवाली दवायें देणी ३ सल्फेट ओफ झिंक–हाजर होय तो २० ग्रेण गरम पाणीमें मिलाकर पिला देणा वो हाजर नहीं होय तो ४ राई १ सें दो चमचा थोडे जलमें मिला पिलाणा– ५ इपीकाक्युआन्हा पाउडर, १५ ग्रेण गरम पाणीमें मिलाकर पिलाणा उलटीकी दरेक दवापर गरम पाणी अथवा निमकका पाणी जादा पिलाणेसें उलटीकूं जादा उत्तेजन मिलता है जो उलटीसें सब जहर बाहर निकल पडेतो रोगी तदन अच्छा हो जाता है और दुसरे किसीभी इलाजकी गरज नहीं रहती उलटी भये बाद भी जहरके ऊपर लिखे चिन्ह जो कभी कायम रहे तो समझणाके बदनमें जहर घुस गया है एसी हालतमें रोगीकूं जागते रखणेका इलाज करणा, (जाग्रत करणेकूं) ६ ठंडे पाणीका छडका आंखोंपर खूब मारणा शिरपर ठंडा पाणी डालणा पुकारके जगाणा हिलाणा चुंटिये फाटणा हरतरे जागते रखणा नींद लगणे देणी नहीं बिछोणेमें पडणे देणाही नहीं ७ सख्त

काफी पाव२ घंटेसे पिलाते जाणा जोरोगी लिसरीज जाय और नाडी बेठ जाय ८ तोला• इकर एमोनीवृंद १० अथवा ९ सालवो लेटाइल ३० से ४० बूंद थोडे जलमें मिलाकर देणा अथवा १० डाकतर लोक जलमें ब्रांडी मिलाकर देकर पांवपर गरम पाणीके बाटलीका शेक कराते हैं, लाडेनम तथा मोरफीया ये अफीमकीही बनावटें हैं, और दवाकीतरे देणेमें आवे तो जादा वजनमें जहरी असर करता है, ११ फिटकडी तथा कपासियेका चूर्ण पिलाणा १२ हींग और पाणी अथवा अरीठेका पाणी पिलाणा.

(जहरकुचीला)-(नक्सवोमिका)-अपणे बजारमें कुचीलेका फल मिलता है देशी वैद्य इसकी गोली चावल वगेरे दिया करते हैं, अंग्रेजीमें मुख्य इसकी दो बणावट हैं, (स्ट्रीकनीया)-(तथा नक्सवोमिका)-पहली बनावट बहोत जहरी है, (कुचीलेके जहरके चिन्ह)-ये जहरके सब चिन्ह धनुर्वातके मिलते हैं, खाये पीछे थोडे मिनटोमें या घंटे भरमें जहरका असर दिखाता है, नसोमें खेंचाताण होता है, (इलाज) उलटी और जुलावकी दवा देणी २ नसोंकू ढीली करणेवाली दवा देणी जेसें अफीमीमसेनी या आरती कपूर क्लोरोफोर्म और क्लोरलहाइड्रेट ३ एक रुमालपर ॥ ड्राम क्लोरोफोर्म छिडक कर दरदीके नाकसे दो इंच अलग धरणा और खेंचाताण होय तहां तक वेर२ इस मुजब करणा ४ महीन कूटा गया कोयला चार कोल पाणीमें वेर२ देणा उसकी पिचकारी मारणी ५ जादा घी पिलाकर उलटी करानी.

(धतूरा)-(स्टेमोनियम)-धतूरेका सब दरखत जहरी है, उसमें बीज जादा है थोडे धतूरेसें जहर चढता नहीं जादासे चढता है, (चिन्ह)-खाये पीछे आधे घंटे पीछे उसका चिन्ह सरू होता है, पहली शिरमें चक्कर आवे गलेमें शोष प्यास आंखोंकी कीकीचोडी दृष्टिका कितनेक अंशमें नाश होता है, आंख तथा चहरा लाल होता है बड बडाता है, कपडेमेंसें कुछ संभालता होय अथवा हवामेंसे कोइ पदार्थ पकडता होय एसा हाथ चाला करता है, आखर बेहोसी आती है, नाडी जल्द होती है, और जहर बहोत चढा होय तो बदन ठंढा होकर मर जाता है, हाथके चाले आंखोकी कीकीचोडी येउस जहरके खास चिन्ह है, (इलाज)-उलटीकी दवा देकर उलटी कराणी तथा दस्तकी दवा देणी २ आधे२ घंटेसें तेज काफी पिलाणी नींद लेणे देणी नहीं ३ समुद्र फल गोमूत्रमें पिलाणा ४ तेल गरम जलमें पिलाणा ५ भात रांधा भया दही घोडावज डालकर पिलाणा.

(वछनाग)-(एकोनाइट) ये बहोत तेज जहर है, ये दरखतकी जड है, वछनागकूं मारवाडमें सींगीमोहरा कहते हैं रंगसे काला होता है, पूरब जिलेमें पीला होता है, वो बहोत जहरी है, (इसके जहरके चिन्ह)-मूं जीभ तथा होठोंपर चमचमाट झणझणाट जलण मूंमेंसे पाणी छूटे उलटी होय शरीरमें कांपणी आंखोंमें अंधारी कानोमें घूंघाट

शरीर शून्य होजाता है, दरदी बेहोस हो जाता है, श्वास धीरे चलता है, नाडी नाताकत और छोटी होजाती है, श्वासकी हवा ठंडी और हाथ पांव ठंडा पडता है, आखर हिचकेके साथ मर जाता है, (इलाज)–१ उलटीका इलाज करणा २ पीछे आधी २ घंटेसे तेज काफी पिलाणी साबू तथा पाणीकी पिचकारी मारकर पेट साफ कराणा.

(भांग)-(गांजा)-(हेम्प)–ये दोनों एकही दरखतकी पैदाश है, भांग उसके पत्ते हैं, गांजा उसका फूल है, इस मुलकवाले गांजेकूं चिलममें पीते हैं, भांग घोटकर पीते हैं, इसके सिवाय चडस माजम ये सब इसकी बनावटे हैं, चरस सुलफा ये इस दरखतका रस है, माजम इसके बीसें पाक बणता है, (जहरी चिन्ह)–आंख और चहरा लाल होजाता है, तोफान करता है, हसता है, गालिये देता है, मारणे दोडता है, पागल जैसा अहवाल होता है, (इलाज)–उलटी कराणी दस्तकी दवा देणी ३ शरीरपर ठंढे पाणीकी धार देणी ४ आमोनिया सुंघाणी ५ सोणे देणा ५ दही अथवा छाछ पाणी अथवा छाछ चावल खिलाणा.

(कणेर)–ये फूलका दरखत जहरी है, जांनवर खाते नहीं है, जडमें जादा जहर है, वो दवामेंभी काम आती है, (जहरके चिन्ह)–उलटी चकर नसा बेहोसी खेंचाताण नाडी नाताकत शीतांग श्वासका रुकणा और मौत (इलाज)–माखणके ऊपरका जल पिलाणा २ दूधमें अथवा दहीमें मिश्री मिलाकर पिलाणा,

(बहेडा)–बहेडेके अंदरकी गुठलीका बीज जहरी है, जादा खाणेमें आवे तो जहरके चिन्ह मालम देते हैं, वो चिन्ह अफीमसें कुछ मिलते गये हैं, (इलाज)–उलटी तथा दस्तकी दवा देकर जहरकुं निकाल डालणा बदनमें गरमी लाणे दवा देणी,

(कडवी बिदाम)–बिदाम जो खाते हैं, उसमें कोइ २ कडवी निकलती है, वो जहरी है, (इलाज)–पीठपर तथा मूंपर ठंढा पाणी छांटणा हिराकसी टींक्चर ओफ स्टील और पाणी उनमान मुजब डाकतर लोक पिलाते हैं,

(तमाखू)–तमाखू दांतोंमें रगडणेसें खाणेमें चिलममें पीणेमें बांधणेमें बदनपर रगडणेसें जादा उपयोग होणेमें हरतरे जहरी असर जनाता है, जिसकूं मावरा नहीं होय उसकूं थोडेमें शिरमें चक्कर आता है, (जहरके चिन्ह)–नाडी जरा जल्द चले चक्कर आवे उलटी होय पीछे नाडी मंद पडे बदन तूटे नाताकती मालम दे शरीर ढीला पडे रक्ताशयकी अगर क्रिया बंध होजाय तो किसी वखत मरभी जाता है, इसका पुराणें जहरी असरसें केइ मरभी चुके हैं, लेकिन् बेकूब लोक इसकूं जहरी नहीं समझते, (इलाज)–उलटी कराणी एरंड तेलका जुलाब देणा मांजू फलका काथ अथवा टेनिक एसिड पिलाणा,

(सुपारी)–नसा चढता है, घी पीना मीश्री पीना ठंडा पाणी पीना,

(जमालगोटा)–इलायची दहीमें पिलाणा, २ धाणा दहीमें मिश्री डाल पिलाणा,
३ दही चावल मिश्री घी डाल खिलाणा.

(भिलावा)–भिलावा खाणेसें अथवा शरीरपर लग जाणेसें खुजली दाह और
पाणी टपकणे लग जाता है, वाहरके इलाजोंसे मिटता हैं, १ सरसूं चंदलिया और
मखणका लेप २ मखण तिल तथा दूधका लेप ३ खोपरेका तेल लगाणा ४ अंबलीके
पत्ते वाफके वांधणा ५ खोपरा तिल घी खाणा इत्यादि भिलावा सोधन प्रकरणमेंभी
केइ उतार देखणा.

(चिरमी)–१ चंदलियेका रस मिश्री डालकर पिलाणा घी पीलाणा.

(आक)–आकका दूध इसकेवास्ते अमलीके पत्ते पीस लेप करणा और इसका
दूध पेटमें गया होय तो घी पिलाणा.

(थोर)–घी पीणा तथा घी लगाणा मिश्री ठंढे जलमें पीणा.

(सराप)–घी बूरा चटाणा सिरपर ठंडा पाणी डालणा ३ सुपेद पेठेके रसमें दही
धाणा मिश्री डाल पिलाणा ५ ककडी खिलाणी.

(वेलाडोना)–(चिन्ह)–मूं तथा गलेमें शोप प्यास गलेका रुकणा वहोत तोफान
करे हसे आंखकी कीकीवडी होय चहरा लाल तथा सूजा भया नाडी धीरी मीट आवे
नीचेका अंग झिल जाय हिचका और मरण मरे पीछे सब वदन सूज जाता है, नाक
कान तथा मूंमेसे खून चलता है.

(इलाज)–उलटी कराणा २ अफीम वेलाडोणेका उतार है, वेलाडोणेका जहर
उतार डालता है, इसवास्ते एक औंस पाणीमें ॥ ड्राम अफीमका अर्क देणा, जहांतक
जहरका असर मिटे नहीं उहांतक दश२ मिन्टसे देणा काफी वेर२ पिलाणा अफीम
नहीं मिले तो

(हाइड्रोस्यानिक एसिड)–वडा सख्त जहर है, वो दवामें वापरते हैं, लेकिन् जो
कभी गफलतसें जादा प्रमाण उपरांत देणेमें आवे तो तत्काल जहर चढता है, इलाज
करणेभी वखत नहीं मिलता (इलाज)–रोगीकूं सुंघाणे नाक आगे कारबोनेट ओफ
अमोनिया धरणा तथा एक प्याला पाणीमें थोडा मिलाकर पिलाणा २ पीठपर वरफ
तथा वरफ जैसा ठंढा पाणी डालणा मूं छातीपर छांटणा इतनेसे जहरकी शांति नहीं
होय तो सल्फेट ओफ आयर्न (हीराकशी) १० ग्रेण एक औंस पाणी और १ ड्राम
टिंक्चर ओफ स्टील तीनोंकों मिलाकर पिलाणा ४ अथवा ऊपरकी मिलावटोंके संग दो
ंम पाणीमें रिपलाया भया कारबोनेट ओफ सोडा २० ग्रेण मिलाकर देणा.

फोसफरस)–इस मुलकमें फोसफरसके जहरका बनाव बहोतही कम बनता है.

तोभी दियासलाई घर२में वापरणमें आती है, उसके आगे फोसफरस होता है, इस-वास्ते वो छोटे बचोके हाथमें नहीं आवे इसकी सावधानी रखणी.

(इलाज)–१ उलटी देणी २ मेग्निस्या १ भाग और क्लोराइन वोटर ८ भाग उसमेंसें एकेक चिमचा दश२ मिन्टसें देणा.

(ओसडझ)–एसेटिक एसिड स्ट्रांग विनीगर (सरका) साइट्रिक एसिड म्युरियाटिक टार्टरिक नाइट्रिक ओग्झेलिक सल्फ्युरिक वगेरे एसिड है, और ये सब दाह करणेवाले जहर है, (इलाज)–१ मेग्निस्या पाणीके संग देणा २ गरम पाणीमें चाक मिलाकर पिलाणा ३ सोडा पाणीमें मिलाकर पिलाणा ४ कारबोलिक एसिडके उतार वास्ते साकरेट ओफ लाइम देणा ५ नींबूका सरबत देणा.

(आल्कलीश)–आमोनिया पोटाश सोडा सालवो लेटाइल ये सब आल्कलीश है, (इलाज)–१ आधा पाणी आधा सिरका २ लेमोनेड अथवा नींबूका रस ३ तेल.

(एन्टीमनी)–(टार्टरइमेटिक)–(इलाज)–करथा अथवा करथेका अर्क पिलाणा २ मेग्निस्या ३ टेनिक एसिड तथा मांजफलका पाणी.

(झिंक)–(सल्फेट ओफ) (इलाज)–१ दूध २ सोडा मेग्निस्या.

(आयर्न)–(सल्फेट ओफ आयर्न)·(इलाज)–सोडा.

(सिल्वर)·(नाइट्रिक सिल्वर)–कोस्टिक–सेंभरका निमक पाणीमें मिलाकर खूब पीणा उलटी करणा.

(सापका जहर)·(इलाज)–१ साप काटे जब झट डंकके ऊपरके भागमें ताणकर डोरी बांधणा पीछे २ डंककूं चूस२के थूक डालते जाणा अथवा काटणे लायक जगे होय तो काट डालणा ३ जो वेसा नहीं बणे तो चकूसे डंककूं कुचर कर खून निकाल डालणा और उसपर गुल देणा अथवा नाइट्रिक या कारबोलिक एसिड धरणा ४ धंदूकका दारू उस डंकपर धरके दियासलाइसे जला देणा ५ सख्तमें सख्त जो दवा हाजर होय सो पिलाणा डाकटर ब्रांडी पिलाते हैं, ६ सालबोलेटाइल आधा २ औंस पाव २ घंटेसे देते जाणा ७ इसीतरे जलमें मिलाकर डाकटर स्पिरिट देते हैं, ८ होजरी तथा रक्ताशयपर राईका पलाष्टर मारणा अथवा टरपेन्टाइनमें डुबाया भया कपडा धरणा ९ रोगीकूं किसीभीतरे नींद नहीं लेणे देणी १० आखर जखमपर पोल्टिस मारणी ११ सुपेद कणेर सुपेद चिरमी आक कडवा तूंबा इनोमेंसे जो मिले उसकूं जलमें घोटकर पिलाणा १२ टंकण अथवा फिटकडीका पाणी पिलाणा १३ घी सहत मखण पींपर आदा मिरच और सींधानिमक एकठाकर खिलाणा.

(वीछुका जहर)·(इलाज)–१ अफीम तथा ईपीकाक्युआन्हा पाउडर सम वजन दोनों नहीं मिले तो ईपीकाक्युआन्हाकी पोटिस कर डंक ऊपर बांधणा २ टार्ट-

रिक एसिड पाणीमें मिले इतने मिलाकर उसमें डूबाया भया कपडा डंकपर धरणा २ वीनीगर याने सरकता पोता धरणा ४ निमक और पाणीका पोता धरणा ५ दस्त साफ लाणे जुलाबकी दवा देणी ६ आकके पत्ते तथा राई पीसके लेप करणा ७ वछनाग जमालगोटा नवसादर तथा हरताल नीलाथोथा दही इसमेंसे हरकोइका लेप करणा ८ धतूरेके पत्तोंका रस लगाणा आंधी झाडेकी जड पीसकर लगाणा और एक जड चबाणा काला वीछु और खारमें पैदा भया विछु वहोत जहरी होता है, उसके डंकपर आकके पत्ते वछनाग तथा राईका लेप करणा.

(चूहेका जहर) जहरी उंदर काटणेसें वदन फूट जाता है वात रक्त जैसे चठे होते है, दाह होता है, (इलाज)-१ धूमस (धूंआ) मजीठ हलदी सींधेनिमकका लेप करणा २ पारा गंधक कपूर सरसूं आकके दूधमें लेप करणा ३ त्रिकटु नींबोली सींधा निमक इनोंका चूर्ण मिश्री सहतमें पिलाणा ४ उंदर कर्णीका रश १।२। तोला पिलाणा वदनके मसलणा ५ सोनामुखीका बहोत दिनोंतक सेवन करणा.

(कुत्तेका जहर)-(हडकवायु)–इसका इलाज सरत वैधीसें कर सके एसा जादा देखणेमें नहीं आया जो कुछ विद्वानोने लिखे हैं उसकूं अजमाणा चहिये १ डंककूं उसी वखत जला देणा २ गुड तेल आकके दूधका लेप ३ शीतल मिरच (अंकोलका) क्वाथ घी डालकर पीलाणा ४ घोडेकी लीदका २ लींडे निचोड ३।४ मिरच डाल पिलाणा ५ भूंपथारीका रस या क्वाथ घी डालके पिलाणा ६ कूकड वेलका रस बहोत दस्त उलटी कराकर जीव जो जहरी पैदा होते हैं, उनोंकों निकाल डालता है, ७ जहर कुचीला हडकवायुके पुराणे विकारकूं निकाल डालता है, इसवास्ते इस बेमारीसे बचे भये रोगीनें कितनेक महीनोंतक लेते जाणा बिलकुल मिटा देगा पतवाणे भये इलाज काले गूलरकी जड धतूरेके फल चावलके धोये पाणीसे देणा धोवणमें पीसणा ९ करंजके बीज हमेस बढाके खाणा निश्चै जहर मिटेगा १० आंधी झाडेकी जड पीस १ तोले भर हमेस सहतमें चटाणा ११ कवार पठेपर सींधानिमक डाल बांधना तीन दिनमें जहर नाश.

(मधुमखी)-(भमरा)-(टांटिया)–१ कूंचीकी नली डंकपर दवा देणेसे डंक ऊपर आकर जहरी पीप उसमेंसे निकल जायगा २ साल्ट्रोलेटाइल विनीगर तथा पाणी अथवा कोलनवाटर लगाणा ३ वजर अथवा तमाखूकूं भिगाकर डंकपर मसलणा ४ मूंके अंदर डंक भया होयतो मूंमें बरफ रखणा ५ और बाहर जोक लगाणी भमरेके घरकी मट्टी तथा त्रिफलाका लेप करणा भमरा भमरी टांटिये इन सबकीडोंके डंकपर ठंडे इलाज और ठंडे पाणीकी धार अच्छी है,

(माकड)–माकडके डंकपर सरका तथा पाणी चुपडणा जो खुरसी चींच पलंगके सांधोंमें टरपेन्टाइन लगादे तो फेर माकड पैदा होयभी नही.

(चींचड)–चींचडका डंक जरा काला लाल रंगका होता है, और आसपासकी जगे जादा फीकी पडी भई होती है, कितनेक बुखार एसे होते हैं, जिसमें चमडी उपस फुट जाती है, लेकिन् चींचडके जहरकूं ऊपर लिखे मुजब पहचाणना चहिये नहीं तो दोनोके सामान्य लक्षण एक होणेसे भूल होणा ताजब नहीं, (इलाज)–सिरका और जल मसलणा.

(जवा)–ये मारवाडके गांमोमें जहां ढोर बैठते हैं उस जगे जमीनमें घुसकर रहते हैं, काटे उस वखत मालम नहीं देता फेर जरा२ खुजाल आती है, तब जो उसकूं विगर खून पूरा पिये उतार दिया जावे तो वडी दाह और खुजली लाल२ वदन हो जाता है, चार पाईपर चढते नहीं, (इलाज)–सिरका पाणी गऊका गोवर या घी मसलणा (पिशु (सुरले) दुक्करकाई इत्यादि सब छोटे जहरी कीडे काटणसें घी और गोवर फायदा करता है, सांपके मलमूत्रसे या उसके मरे कलेवरसें जो कीडे पैदा होते हैं वो वडे जहरी काटणेसे वाजे वखत अदमी मर जाता हैं, दाह तो निश्चैही करता है, घी दूध गोवर प्रायें वहोतसे जहरोंका उतार मसलणे और पिलाणेसें जो प्राणी श्रीकलि कुंड पार्श्वनाथायनमः एसा मनमें जाप करते रहेगा उसकूं अचिंतपणे जहर जंगमका समागम नहीं होगा ये वडी अदभुत महिमा है, जैसें दादा श्रीजिनदत्तसूरि एसा नाम लेणेवालेकों विजलीका भय नहीं होता फेर जंगलमें उतरे भये प्राणियोनें अपणी रक्षा-वास्ते नमि जिनदत्त चले दिसावरा सद्गुरु वाचा बंध चोर विछु सर्प नाहर चारुं झाडा बंध २१ वेर गुण मनवचन काया थिर करके फेर तीन ताली वजा देणा पूर्वोक्त चीजोंसे भय नहीं होगा आर्य वेद या सिद्धांत ये सब आगम सफल आस्तिकोकेवास्ते तत्काल है, नास्तिकोके तो अपणे निज पितामेंभी संदेह होता है कोन जाणे यही था वा अन्य मंत्रविद्या सर्व सत्य है, कर्ता क्रियाकी मूल है, अक्षरोमें अनंत शक्ति है, हंस २ एसा नामोचार करते२ भये चार पहरमें सांप खाया भया एक ब्राम्हणीका लडका जहरसें बच गया असलमें उस लडकेका नाम हंस या उसकी माने मोहकी विकलतासे इस नामका उच्चारण और हस्तपास ये कुदरत कांम दे गई अभी देती है, ये व्याख्या महावीर भगवानके विद्यमान समयमें वणाजो वसुदेवहिंड ग्रंथ उसमें है, जिन महाज्ञानि योकूं अक्षर मिलाणेकी कुदरत याद है, उनोने रचाजो अक्षर विन्यास उसमें अपर वलशक्ति है, नतु सर्वत्र ब्रमलेसर विमलेसर झर२ स्वाहा इस मंत्रसे पीलिया चला जाता है, इत्यादि अनेक उपगारिक मंत्र मौजूद है, सब ग्रंथ गौरवके भयसें नहीं लिख सकते जैसे पदार्थोंके मिलणेसे अनेक चमत्कार विजली गेस तार फोनोग्राफ इत्यादि असंख्य

कुदरते होणा प्रत्यक्ष है, एसेही अक्षरोंकी मिलावट मणी मंत्र और औषधी तीनोंमें अत्यंत कुदरत है, (प्रश्न)–पदार्थोंकी शक्ति प्रत्यक्ष देखते हैं, ऐसी अक्षरोंकी नहीं दिखती, (उत्तर)–अक्षरोंकीभी शक्ति प्रगट देखते हैं, जैसें कोई शत्रु मार २ करता आ रहा है, उसकूं मीठे वचनोंसें नरमाईके संग आजीजी अक्षरोसे किया जावै शांत हो जाता है, अक्षरोसें मित्राई अक्षरोसें दुस्मनी हाथीकूं अगड षत्त इत्यादि अक्षरोसें समझाया जाता है, सुचकारणा छिच कारणा इत्यादि अक्षरों द्वारा सर्व संसारमें प्रत्यक्ष फल असंख्य तरे सिद्ध है, थोडेसे विचारो एक कुत्ता वीस कुत्तोसें मुकाबला करता है, लग २ इत्यादि अक्षर कहणेसें दीर्घ दृष्टी दो अचिंत्य कुदरत अक्षरोंकी मिलावटमें वा एकमें है या नहीं नहीं तो शास्त्रोंपरयकीन केसे लाते हो वोभी सब अक्षर है, झुठी और सची अक्षरोंकी दोनोंतरे मिलावट होती है, वचनात्प्रवृत्ति वचनात् निवृत्ति है, लोकोंकों यथार्थ किया सफल मंत्रभी पदार्थोंकी तरे फायदा देता है, पदार्थभी मिलानेवाले फायदा दिखाते हैं, एसेही अक्षर मंत्रवाले दिखा सकते हैं, बहोत पदार्थोंका मिलाणा उसमें फायदा पश्चिमी विद्वानों इस वखत दिखलाया आगूं वोभी नहीं जाणते थे, इहांवालेभी कालांतरसे भूल गये ः और अभीभी असंख्य बातें इन पदार्थोंसें होणेवाले हैं, वो प्रगट नहीं है, रत्नोंका ब० जाणा मरे भये जिंदे दिखणा असलमें जिंदे नहीं क्योंके सत्ता ईस पीठ इंद्र जालमेंसे सतरे पीठ पश्चिमी विद्वानोके हाथ लगे हैं उसमेंसें अभी बहोतोंका अजमाणा और नई२ कल्पना बाकी है, कुछ आश्चर्य नहीं कभी प्रगट कभी लुप्त कालका धर्म है, हमारे बडे२ अक्षरोंकी शक्तिमें बडे चाकचकारथे आजकाल हमलोक तिरोभावमें हैं, लेकिन् सर्वथा नास्ति नहीं साधना उद्यम बडी चीज है.

(मच्छर)–(डांस)–(डंकी)–ये तीनो डंक मारते हैं, उस डंकमें दाद करणेवाली रसी पीपकूं डाल जाते हैं) उनोके डंकमें छोटा करडा सुपेद दाफड उठ जाता है, अगर किसी अदमीका खून बिगडा भया होता है तो उस जगे सोजा पकणा किसी वखत पीप पडके जखम हो जाता है, (इलाज)–पाणी अथवा पाणी और सिरका मसलणा, (इलाज विछुउ तारणेका) जंगली गोपरी जलाणेसें जब धूंआ निकल चूके तब आकके दूधमें बुझा देणा बाद सुकाकर पीस रख देणा एक दो चिमटी लेयकर तमाखूकी तरे सुंघाणेसें पांच मिनटमें छीके आकर विछू उतर जाता है, विछू काटणेकी जगे पांवा होय तो मोठा देणा छींके बंध करणी होय तो घी सुंघाणा हमने केइ जगे अजमाया है,

किरण १४ मी.

दर्शावरण धातुपुष्टस्तंभन इलाज संकोचन.

जो दवाइयें बदनके मातृ धातुओंकों अच्छीतरे पुष्टिकर अवयवोंकों मजबूत करे यो

पौष्टिक औषधी कहलाती है, एसी वहोत दवाइयां है, उसमेंसें केइयक (रसायण) दवा देखो पृष्ट ३१८) में कितनेक वाजीकर (देखो पृष्ट ३१८) में और कितनेक फक्त धातू वढाणेवाली दवायें जो दवा रसायण और वाजीकर है वो धातुपुष्ट तो हैही इस के सिवाय कितनेक दुसरे वर्ग वीर्य स्तंभक दवायोंका है, जिसकूं लोक धातु पुष्टि समझके खाते हैं, लेकिन् निश्चेमें देखा जाय तो वेसी दवामें फायदा नहीं वाजीकर दवायोंकी तरे दवायेंभी कामकूं पेदा करती है, और वीर्यकूं रोकके रखती है, लेकिन् ये गुण थोडी देरका होणेसें आखरकुं नुकशान करती हैं इस दवायोंमें सच्ची पुष्टि और पोषण देणेका गुण नहीं है, बलके जहांतक इस दवायोंका दो चार पहर अमल रहता है, उहांतक तो चेतन खूबी और अमल उतरे पीछे बदनकुं उलटा ठंढा सुस्त और नाताकत वणा देती है, एसी दवा जादे खाणेलायक नहीं है जो अदमी अपणे बदनकूं निरोग रखणेकाज्ञान धराते होय उनोनें शोखके वास्तेभी एसी स्तंभक दवा लेणेकी आज्ञा हम नहीं दे सकते नाताकत कम अक्कल लोक एसी वीर्य स्तंभक दवायोंकी वहोत खोज किया करते हैं, कोई देणेवाला मिलाके झटले लेते हैं, एसी नुकशांन वाली दवायेंके फंदमें फसके वहोतसे अदमी खराब हो चूके हैं तोभी एसे२ आदमियोंके संतोष दिल जमीके वास्ते इस किरणमें आखर एसे २ वीर्यस्तंभक इलाज लिखे हैं, सो किसी वखत लेणा पडे तो नुकशांन नहीं करे.

(अमृतवटी)–ये सब चीजोसें अवल दरजेकी रसायण वाजीकर और धातु पौष्टिक दवा है, रसायण शब्द फक्त मारी भई धातूओंकोंही मत समझना वनस्पतीयोंमेंभी अनेक चीजें रसायणका गुण धराती है, जैसे गिलोय रुद्रवंती गुग्गल हरडे आंवले जो जीवनीय गणकी दवा मोलेठी वगेरे सब रसायण संज्ञक है, निघंटमें देखणा आजकलकी बेकूब दुनियां अशुद्ध पारे सेंवणे रस कपूरहीकों रसायण समझते हैं,उससे विगडे भये रोगीकूं देख कहते हैं वैद्यजी हमकूं रसायण मत देणा हम हरगिज नहीं लेंगें रसायण शब्दका मायना नहीं समझते इसवास्ते इस शब्दका अर्थ लिखते हैं (जो दवा शरीरके सातों धातुओंकों वहोत मुदत तक ताकत कायम रखे बुढापा और रोगोंको दूर करे उसकूं रसायण कहते हैं, जीवन नाम करके प्रसिद्ध जडी बूंटीमें वणी दवा अहम्मदाबादसें वैद्य जटाशंकर रसायण बेचते हैं अपणे मासिक पत्रमें वहोत तारीफ लिखते हैं, विद्द्वानोंके उपयोगसें बणाइ भई सब दवायें फायदा मंद होती है कभी नुकशांन नही करती जिसकी ऊमर नहीं उसकूं अमृतभी जहर हो जाता है, जैसे नारकीके जीवोंकों कोइ देवता पूर्व भवके प्रेमसें अमृत लेजाके खिलावे तोभी उसकूं हालाहल जहरवत् मालम दे इस दृष्टांत मुजब जाणना.

(दूध)–(पुष्ट)–और वाजीकर वस्तू है, तेज अग्निवालेनें हजम कर पीना और

मध्यम तथा मंद अग्निवालेनें पांच मिन्ट फक्त गरम कर थोडा मीठा डाल पीणा क्योंके जादा मीठा दूधका जोर कम कर देता है, बिदाम पिस्ता तथा दुसरीभी पौष्टिक दवायें डाल करभी पिये जाता है दूधमें केशर जायफल वगेरे स्तंभक दवायें डालणेसें वीर्यकूं स्तंभन करता है, लेकिन् दस्तकी कब्जी करता है, और एसी दवायोंसे आखरमें नुकशांन है, दूधसे वीर्य जल्दी पैदा होता है, दो घंटेमें प्राये हजम हो जाता है, वीर्यकी कमी वालेने दूध पीणेका मावरा रखणा २ गऊके गरम करे भये दूधमें घी बूरा डालकर पीणा रोगी जानवरका दूध पीणा नहीं जो जादा पढे व्याख्यानादि करे वृद्ध बालक दूध पीणे लायक रोगी एसे त्यागी आत्मार्थी साधूकुंभी दूध पीणेका हुकम सूत्रोंमें हैं, स्त्रियोंका रति प्रमोदमें मांनमर्दक दूध है.

(विदारीकंद)–(भूंकोला)–इसका चूर्ण करणा घी बूरेके संग खाणा उसपर बूरा डाला भया दूध पीणा २ इसके चूर्णकूं इसकी रसकी २१ भावना देकर फेर खिलावे तो वहोत फायदा करता है, ३ विदारीकंद गोखरू मुसली आंवले सींधानिमक पींपर इनोकों दूधमें बूरा डालके मिलाके पीणा,

(आंवले)–१ आंवला गोखरू गिलोय सम वजन चुर्ण घी बूरेमें चाटणेसें धातु वृद्धि और पुष्टी होती है, जिसने हथरस लोंडावाजी करणेसें नपुंसकता प्राप्त करी है, वोभी मिटती है, २ आंवलेके चूर्णकों आंवलेकी रसकी २७ भावना देकर छांया सुकाकर उसमेंसें हमेस २ मासा चूर्ण मिश्री संग फाककर दूध पीणा वीर्य वृद्धिवाजीकर हैं, ३ आंवलेका रस घी मिलाकर पीणा ४ त्रिफलाके चूर्णमें लोहभस्म मोलेठीका चूर्ण घी तथा सहत मिला सूर्यास्त होते वखत लेणा इससे कामकी वृद्धि होती है,

(कोंचबीज)–कोंचबीजकूं एक दिन गरम पाणीमें भिगाकर दूसरे दिन छिलके दूरकर सुकाणा पीछे दल कूट चूर्ण कर मिश्रीके संग फाकणा ऊपर धारोष्ण दूध पीणा २ कोंचबीज तालमखाणा अथवा वलबीजका चूर्ण मिला ऊपर मुजब पीणा ३ कोंचबीज गोखरू शतावर बलबीज तालमखाणा आंवलेका चूर्ण दूधमें पीणा सांझकूं ४ कोंचबीज उडद इन दोनोंकों कूट दाल कर खिलाणी ।

(गोखरू)–गोखरूका चूर्ण मिश्री मिलाय फाकणा ऊपर दूध पीणा २ गोखरू संफ मिश्री इनोंकों उकाल दोनों वखत पीणा इससे धातु गिरणा बंध होता है, ३ गोखरूका चूर्ण १ तोला सहतमें मिलाकर बकरीके दूधके संग पीणा इसतरे दो महीना पीणेसें गया पुरुषार्थ पीछा प्राप्त होता है, ४ गोखरूका चूर्ण गऊका घी मिश्री सहत सम वजन मिलाकर उसमेंसें हमेस दो तोला गऊके दूध संग पीणा,

(अहिखरा) तालमखाणा)–१ अहिखर मूसली गोखरू मिश्री गऊके दूधमें पीणा . तालमखाणा १ तोला इलायची दाणा एक तोला सुपेद मिरचका ३।४ दाणा कूट

कर छ पुडी करणी एकेक पुडी रातकूं केलेमें भरके चंद्रमाके उजालेमें धरणा पीछे फजरमें केलेकी छाल उतारकर केला खा जाणा इसतरे २१ दिन करणेसें धातू स्थानकी गरमी दूर होकर धात पुष्ट होता हैं मगजकी गरमी दूर होती है,

(मूसली)–सुपेद मूसली सालम कोंचबीज गोखरू शतावरी आंवलेका चूर्ण १ तो॰ घी तोला १ गऊके पाव दूधमें पीणा सुपेद मूसली गिलोयसत कोंचबीज गोखरू शेमलकी जड अथवा छाल आंवला मिश्री सम वजन चूर्ण ॥ रुपेभर गऊके दूधमें डालकर पीणा इससे कमरमें जादा जोर आता है नामरदी दूर होती है,

(सालम)–१ सालमका चूर्ण दूधमें उकाल थोडा बूरा डाल पीणा २ सालम धोली मूसली काली मूसली गोखरू तालमखाणा चलबीज खारक इनोका ६ मासा चूर्ण १ तोला मिश्री पाव दूधमें पीणा इससे स्वप्न दोष बंध होकर धातु पुष्ट होता है, ३ सालमका पाक तथा मुरब्बा होता है, बहोत तरे इसकी बणावट है,

(शतावर)–१ दूधमें शतावर उकाल बूरा मिलाकर पीणा २ शतावर नागबला चलबीज आसगंध कोंचबीज तालमखाणा गोखरू काली मूसली मोलेठी सम वजन चूर्ण चूर्ण बराबर घी घीसे चोगुणा गऊका दूध सबसे दूणी मिश्री पाक बणाकर खाणेसें काम प्रदीप्त होता है,

(ज्येष्टीमधु) मोलेठी)–एक तोला मोलेठीका चूर्ण घी सहतमें मिला फजर चाटणेसें पुरुषार्थ बढता है,

(आसगंध)–१ आसगंधका चूर्ण घी सहतसे चाटणा २ आसगंध तथा बधायरेका चूर्ण हमेस ॥ तोला गऊके धारोश्न दूधमें पीणा.

(गिलोय)–गिलोय सर्वोत्तम रसायण है, तीनों दोषोंको मिटाणेवाली है, बदनके सब दोषोंको दूर कर बदनमें ताकत भर देती है, १ गिलोय सत्वकूं दूधमें उकाल कर पीणा २ गिलोय सत्व अथवा गिलोयका चूर्ण आंवला गोखरू सम वजन चूर्ण घी मिश्री अथवा घी सहतमें हमेस चाटणेमें परम पुरुषार्थ आता है,

(गूगल) अत्यंत पुष्ट है सब पौष्टिक दवायोंमे गूगलमें विशेष गुन तो ये हेकी आदमी तथा औरतके वीर्यकूं सुधारकर ताकत देता है, उसकी बहोत बनावटें हैं, १ योगराज गूगल २ त्रिफला गुगल किशोर चंद्रप्रभा सिंहनाद वगेरे,

(मोचरस)–१ मोचरस सेमलका गूंद है, उसकी जड तो ४ फूटकर गऊके ताजे दूधमें भिगाकर रातकूं फजरमें मसल छान उसमें १ तोला मिश्री डाल ७ दिन पीणा इससें वीर्य गिरता बंध होता है, २ मोचरसका चूर्ण ॥ तोला मिश्री ४ तोला पाव दूधमें मिलाकर पीणा ३ सेमलका मूल सुकाकर चूर्ण पीसे सेक गऊके दूधमें भिजाकर पीछे उसमें मिश्री बेदाणा बिदाम वगेरे डाल हमेस फजरमें खाना धातुओंकी

सुधार मगजकूं तर करता है, ४ आधा तोला मोचरश ४ तोला मिश्री गऊके दूधमें पीणेसें वीर्य जल्दी वढता है,

(उंठकंटाला)–१ इसके जडके छालका चूर्ण करना पीछे मुगलाई वेदाणा तो १ तथा मिश्री तो २ पाव पाणीमें भिगाकर फजरमें उसका लुआब कपडेसें छाण उसमें उंठकंटालेका चूर्ण ६ मासा डाल फजरमें पीना वीर्य वढे प्रमेह मूत्रकृच्छ्र पेशावके शंग जाती धातू वंध होती है, २ उंठकंटाला गोखरू कोंचवीज दूधमें उकाल कर पीना ३ उंठकंटालेके जडकी छालका चूर्ण दूधमें उकाल मिश्री डाल पीना ४ ओटींगण उंठकंटालेका वीज होता है, एसाही गुण धराता है, इसकी दूधकी पकाई खीर मिश्री डाल पीणेसें धातु पुष्ट मरदीभी करता गिरता धातू वंध होता है धातू गिरणेवाले रोगीनें खटाई हींग मिरच वगेरे गरम चीजें जादा खाणा नहीं औरतकाभी परेज रखणा.

(उडद)–उडदकी उकाली कर उसमें गऊका दूध तथा घी डाल कर पीणा २ शतावर वलवीज कोंचवीज तालमखाणा गोखरू उडद इन चीजोंका चूर्ण ॥ रुपे भर गऊक दूधकूं थोडा गरम कर वूरा डाल पीणा ३ उडदके लड्डू ४ उडदकूं वूरा डाले भये दूधमें मकरोय कर धूपमें सुकाकर दाल करणी उसके वडेकर तलकर खाना काम प्रदीपक है ४ उडद जव गहूंके ऊपरके छिलके दूर कर आटा करना पीछे दूधमें तथा इक्षुके रसमें मकरोय पीछे घीमें दाणा पाड चासणी वूरेकी लड्डू वणाना एक लड्डू खाकर पीपर डाल वूरा डाल गरम कर दूध पीणा ६ उडदका आटा जवका आटा तपखीर विदारी कंदका चूर्ण काली मिरचका चूर्ण वूरा डाल घीमें पुडियें तल फजरमें दूधके संग खाणा.

(माल कांकणी)–१ माल कांगणीके वीज वूरा इलायची सम भाग चूर्ण ४ मासा ४ मासा एरंडीके वीजका मगज फजरमें पाणीके संग खाना इससें मगज ठंढा और आंखोंकी गरमी जाती है.

(महुवा)–१ महुवेकी अंदरकी छालका चूर्ण २।३ मासा हमेस फजर सांझ गऊके घी तथा सहतके संग चाटणा, पाव गऊका ताजा दूध घी वूरा डालकर गरम थोडा कर ऊपरसें पीणा काम वृद्धि करे.

(ईस पूगल)–१ ईसपूगल २ भाग इलायची दाणा १ भाग वूरा तीन भाग रातकूं भिगाकर फजरमें पीणा अथवा चूर्ण फाक दूध पीणा.

(गुलवास)–१ सुपेद गुलवासकी जड गऊके दूधमें घस पीना.

(प्याज) कांदे)–१ सुपेद प्याजका रस सहत डालकर पीणा २ सुपेद कांदेके रसमें भिगाया भया अजवाण १ तोला घी १ तोला वूरा २ तो इनोंकों खाणा २१ दिन दमी आती है, कंदर्प भूषण पाक पाली नग्रमें नग्रसेठ साठ वर्षकी ऊमरमें सोले वर्षकी खाया गर्भ रहे बाद सेठ मर गया लडका भये वाद विरादरीनें दलील १२

वर्ष रखी बाद योधपुर नरेश विजेसिंह लडकेकूं दोडाकर पसीना सूंघा कांदेकी वदवो आई लडका असली ठहरा ये पाक कांदेका रस और मसालेसें वणता है यती वैदनें पुत्रकेवास्तेही वणाके दिया था,

(डाक्टरोंकी ताकतवर दवा कोडलीवर आइल है) उसकी केइ वनावेंटे आती है, १ स्वच्छ कोडलीवर २ माल्टाइन कोडलीवर कोनेनकी तरे वदनके पुराणे विकारमें वापरते हैं, नाताकती मिटाणे पुष्टताइका गुण है लेकिन् जिसकूं सदता है उसके खून भरी जता है ताकत आती है आर्य जैनोंने तथा वैष्णवोनें इस चीजसें वचके रहणा मच्छीकी वनावट है,

(किनाइन)–१ किनाइनमें शक्ति लाणेका गुण है, लेकिन् वो टोनिक तरीकेकी नाताकतीमेंही विशेष करके वापरते हैं, धातु पुष्टि तरीके नहीं वापरणेमें आता क्योंके ये गुण इसमें दिखता नहीं वुखार अथवा वुखारसें आई भई नाताकतीमें वो थोडी२ मात्रामें लेनेसें ताकत लाती है, ताकतके वास्ते जादा करके लोह सारके संग देणेमे आता है, किनाइन मिश्रित लोहकी पतरिये (फेरी साइट्रेट एटकिनाइन) में किनाइन आता है,

(वीर्यस्तंभन इलाज)–१ अफीम लोंग जावंत्री तज अकलकरा और समुद्र शोषके वीज सवका सम भाग चूर्ण चूर्णकी वरावर मिश्री सहतमें घोट वाल २ जितनी गोलिये करणी १ गोली दूधके संग सांझकूं पीणा ऊपरसें फेर गऊका ताजा दूध पीणा। १ कस्तूरी केशर जायफल लोंग अफीम भांग सूंठ इलायची कपड छाणकर एकेक वाल फजर सांझ सहतमें चाट ऊपरसें ताजा दूध पीणा खुरासाणी अजवाण जायफल अजमोद अफीम सम वजन चूर्णकर तीन वर्षका पुराणा गुड डालकर गोलियें वणाणी एक गोली सांझकूं खाना ४ भांग २१ भाग आंवला सींधानिमक उपलेट कायफल पीपर छोटी सूंठ अजमोद अजवाण मोलेठी जीरा साहजीरा धाणा कपूर काचरी काकडासींगी वचनाग केशर तालीसपत्र तज तमालपत्र इलायची और मिरच ये सव मिलाकर २१ भाग भांगके वीज समेत सेकके चूर्ण करना सवसें दूणी मिश्री लडूवणे इस अंदाजन घी तथा सहत मिलाकर चार आनोंसें आधे रुपये भरकी गोली करके यथा शक्ति खानेसें वीर्य स्तंभन तथा वाजीकरण होता है.

(चोपचीणी)–१ चोपचीणी ४८ तोला पीपर पीपरामूल सूंठ मिरच तज अकलकरा लोंग एकेक तोला सवके जितना वूरा इसका पाक करणा उपदंसकी गरमीकूं मिटा कर ताकत देती है २ चोपचीणीका पाक नं० ३७९.

(कोला)–१ कुष्मांडपाक नं० ३८०) २ कुष्मांडावलेह नं० ३६६) मगजकी गरमीतथा दाहकूं मिटाता है, औरतोंके ऋतुधर्मकूं सुधारता है ताकत लाता है.

(हरडे)–चडी हरडेका चूर्ण वूढे आदमीयोंकों रसायनरूप और ताकतवर है, ऋतुओंके अनुपान इस मुजब है, १ ग्रीष्म ऋतूमें तीन वर्षके पुराणे गुडके संग २ प्रावट् ऋतुमें सींधा निमक संग ३ सरद ऋतूमें मिश्री संग ४ हेमंत ऋतूमें सूंठ संग ५ वहोत मेघ या ओलेगिरे हेमंत ऋतूमें एसी शिसर ऋतूमें पींपर संग ६ वशंत ऋतूमें सहत संग हरडेकूं तरुण आते भये ज्वरमें बारे दिनोंतक तथा धातू क्षीण जवान अदमीकूं देणा नहीं सन्निपात ज्वरमें औपधोंके प्रयोगमें देणा सामान्य तोरमुनक्कादाख मिश्री मिलाकर खाणेकूं देणी २ हरडे मधुपक्क आम्लपित्त तथा संग्रहणी मिटाती है पथ्य रोग मुजब करणेसें ३ हरडे पाक तथा अवलेही नं० ३६४) जीर्णज्वर तथा धातूकी क्षीणताकूं मिटाकर ताकत लाती है, ४ हरडेका मुरव्वा मलकी कब्जी मिटाती है, ऋपभ देवके पुत्र वृहदात्रेयनें त्रिफलाके तथा न्यारे २ हरडे वहेडे आंवलेके अनेकानेक गुण लिखे हैं, त्रिफलामेंसे कोइभी फलका विकार होय तो सहत खिलाणी.

(पींपर)–१ पीपर सहत घी दूध मिश्री मिलाकर खाणेसें पुष्टि करती है मंदाग्नि मिटाती है, २ सहत १ भाग घी २ भाग पीपर ४ भाग मिश्री ८ भाग दूध ३२ भाग तज तमालपत्र इलायची नागकेशर चारों मिलाकर ६ भाग इन सबोंका पाक वणाकर खाणेसें धातू क्षीणता बुखार दम फीकास अग्निमंद वगेरे मिटता है, ३ पीपर पाक (नं० ३७५) वर्द्धमान पीपल पृष्ट २९४)

(मेथी)–१ मेथीका आटा तोला ३ अधसेर दूधमें रातका भिगाकर रखणा फजर एक वरतणमें तोला ५ घी डालकर तपाकर उसमें सेकणा दाणा पडे तव लाल सक्कर अथवा गुडका पाक वणाना इससें औरतोंके स्तनमें दूध वढता है ताकत आती है, मेथीकूं घीमें सेक आटा करणा गुडकी चासणीमें लडू वणाना खानेसें कलतर मेटती है, ३ मेथी पाक नं० ३७४

(सूंठ)–१ दूध तोला १४ पाणी तोला २१ उसमें चार मासा सूंठके टुकडे डाल पाणी जले जहांतक उकाल सूंठके टुकडे निकाल उसमें बूरा मासा ४ डालके पीणा इससे श्वेतप्रदर मिटकर ताकत आती है २ सूंठका महीन चूर्ण १ तोला घी २ तोला गरम कर दाणा पटकणा ५ तोला गुडसे पाक करणा फजरमें खाणा इससेवादी कलतर मंदाग्नि आम वगेरे मिटके ताकत आती है, ३ सोभाग्य सूंठका पाक नं० ३७६.

इति श्रीमत् जैनधर्माचार्य संग्रहीते उपाध्याय रामऋद्धि सारगणि विरचिते वैद्यदीपक ग्रंथे निदान चिकित्सा वर्णनो नाम षष्ठप्रकाशः पूर्णमगात् ॥

प्रकाश ७ मा।

प्रकाश सातमा दुसरे भागमें लिखेंगें तथापि सप्तम परिमंगलार्थ थोडी मोदककी [illegible] इहां लिखता हूं.

(ब्राम्ही गुटिका)-ब्राम्ही कस्तूरी जायफल जावंत्री लोंग दालचीनी केशर नाग-केशर अकलकरा चिरायता पींपला मूल पींपर चित्रक मिरच वडी इलायची खैरसार कुलंजन सतावर पोकर मूल तेजवल अभ्रक लोहसार तमालपत्र संखाहोली अजमोद सोवा अजवाण मिनकादाख तोला ३० बीज निकाल कर पीसकर गोली बांधणी,

(मोहरेकी गोली)--वछनाग (काला सींघी मोहरा) १ तोला मिरच काली तोला २ लोंग १ तोला दालचीनी तोला १ जावंत्री १ तोला अकलकरो तो १ संठके काढेमें गोली बांधणी,

(भेरू रस गोली)-हींगूल शुद्ध १ मोहरा शुद्ध १ मिरच १ तेलिया सोहगी शुद्ध १ पींपर १ लोंग १ दालचीणी १ सूंठ रसमें गोली,

(दांतके दरदका मंजन)-नीलाथोथा भुंजाभया तो १ कूठ तो १ मजीठ तो १ करथा तोला १

(साधारण खास गुटिका)-हरडेकी छाल बेहेडेकी छाल आंवला बंबूलकी छाल काली मिरच लूण खैरसार विलायती अनारका छिलका,

(दस्त बंधकी गोली अतीसारपर)-संठ अफीम मोचरस पतीस आंबकी गुठली जीरा जायफल धावडीका फूल नेतरवाला अनारकली पुराणीगिरी अफीम छोतेरेके रशमें गोली,

अब आगे दुसरे भागमें सातमा प्रकाश छपेगा जिसमें सात धातू उपघातू रत्न उप रत्नोंका सोधन मारण अनुपान पथ्यापथ्य सब रोगोंपर रसोंका इलाज अजीर्ण मिटाना इत्यादि अनेक अनुभविक वस्तुओंका संग्रह होगा इस ग्रंथमें भूलचूक होय तो क्षमा करणा माफी मांगता हुं,

अथ ग्रंथ संग्रह कृत्प्रशस्ति-आदिकह्यो श्रीऋषभने, आयुर्धर्मप्रकाश, ताविध श्रीमहा-वीरनें, प्रगट कियो सुविलाश १ चवदे पूर्व मध्य यह, व्याधिहरणको मर्म, ऋषि मुनि जन ग्रंथन रच्यो, वैद्यक ग्रंथ सुधर्म २ ता ग्रंथनकूं देखके अनुभव अतिविस्तार धर्म अर्थ अरु काममें वैद्यक विद्यासार ३ परंपरा जिन वीरके, पट्ट प्रभाकर सूर श्रीजिन कुशल सूरीश्वरू ज्ञान क्रियामें पूर ४ क्षेम कीर्तिगणि राजसें क्षेम धाडवड साख धर्मशील गुरु राजके कुशल निधान सुभाख ५ विक्रम नग्र सुवाशमें उदय भयो ज्यूचंद गंगासिंह नर राजको तेज प्रताप समंद ६ खरतर भट्टारक महा सुगवर कीर्ति सूरिंद शशि सूरज शमचिर रहो सदा करो आनंद ७ विक्रम शत उगणीशमें वर बासठके वर्ष माघ सुदि पंचमदिने ग्रंथ लिख्यो धरहर्ष ८ पाठक प्राणाचार्यनें कर संग्रह यह ग्रंथ रच्यो रामऋद्धिसारगणि सुख मंगलको पंथ ९ इति श्रीमज्जैन धर्माचार्य संगृहीते उपाध्याय श्रीरामऋद्धि सारगणिः कृत वैद्यदीपक ग्रंथे रोग लक्षण चिकित्सा क्रमवर्णनो नाम षष्ठ प्रकाशः वैद्यदीपक ग्रंथस्य प्रथमो भागः सम्पूर्णतामगात् ॥

---

१ सा० श्रीहीरालाल बांठिया बीकानेर.
१ सा० श्रीगेवरचंद पारख बीकानेर.
१ सा० श्रीबुलाकीदास पुगलिया बीकानेर.
१ सा० श्रीमोजराज कोचर मुंहता बीकानेर.
१ सा० श्रीतेजकरण मूलचंद रामपुरिया बीकानेर.
सा० श्रीरेखचंद कोचर मुंहता बीकानेर.
१ सा० श्रीइंदराजमल कोचर मुंहता बीकानेर.
सा० श्रीकनइयालाल डागा जयपुर.
सा० श्रीअमरचंद कोचर मुंहता बीकानेर.
सा० श्रीलखमीचंद कोचर मुंहता बीकानेर.
१ सा० श्रीजसकरण कोचर मुंहता बीकानेर.
१ सा० श्रीसहसकिरण नाहटा बीकानेर.
१ सा० श्रीविरधीचंद नाहटा बीकानेर.
१ सा० श्रीवाघमलजी दूगड बीकानेर.
१ सा० श्रीकिसनचंद दीपचंद बांठिया भीनासर.
१ सा० श्रीकेवलचंद कोचर मुंहता बीकानेर.
सा० श्रीमानसिंघ श्रीमाल अजीमगंज.
सा० श्रीचोथमल मोतीलाल मालू वरोडा.
सा० श्रीरिषभदास माणकचंद तातेड मेडता.
सा० नथमल मूलचंद पारख इंदोर.
१ सा० श्रीकनकमल धाडेवाल इंदोर.
१ सा० श्रीहजारीमल लुणिया कलकत्ता.
१ सा० श्रीकेसरीचंदजी कोठारी कलकत्ता.
१ सा० श्रीसागरमल बोथरा कलकत्ता.
१ सा० श्रीलखमीचंद आसकरण कलकत्ता.
१ सा० श्रीआणंदमल वगसी कलकत्ता.
१ सा० श्रीचूनीलाल बोथरा कलकत्ता.
१ सा० श्रीविसनचंद राखेचा कलकत्ता.
१ सा० श्रीनरायणदास शिववगस कलकत्ता.
१ सा० श्रीकुंदणमल नाहटा कलकत्ता,
१ सा० श्रीजानकीदास किसनलाल अग्रवाल कलकत्ता.